॥ श्रीः ॥

हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला
३०

॥ श्रीः ॥

अमरकोषः

'मणिप्रभा' हिन्दीव्याख्योपेतः

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

THE

HARIDAS SANSKRIT SERIES

30

AMARAKOṢA

(NĀMALIṄGĀNUS'ĀSANA)

Of

AMARASIṀHA

Edited With

Notes and The 'Maṇiprabhā' Hindī commentary

By

Pt. HARAGOVINDA ŚĀSTRĪ

Vyākaraṇa-Sāhityāchārya-Sāhityaratna.

THE

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

VARANAS'I-1

1998

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : षष्ठम्, वि.सं. २०५५

ISBN : 81-7080-019-6

के. ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो. बा. नं. १००८, वाराणसी - २२१००१ (भारत)
फोन : आफिस- ३३३४५८ आवास- ३३४०३२, ३३५०२०

अपरं च प्राप्ति स्थानम्
कृष्णदास अकादमी
पो. बा. नं. १११८
के. ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी - २२१००१ (भारत)
फोन : ३३५०२०

Publisher : Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi-1
Printer : Chowkhamba Press, Varanasi-1
Edition : Sixth, 1998

ISBN : 81-7080-019-6

K. 37/99, Gopal Mandir Lane
Near Golghar (Maidagin)
P.BOX 1008, VARANASI-221001 (India)
Phone : Office : 333458, Resi. : 334032 & 335020

Also can be had from
KRISHNADAS ACADEMY
Post Box No. 1118,
K 37/118, Gopal Mandir Lane,
Varanasi-221001 (India)
Phone : 335020

प्राक्कथन

डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

एम. ए., पी-एच. डी., ए. एफ. आई., प्रिंसिपल टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, भागलपुर

हमारे शास्त्रोंने 'शब्द'को ही साक्षात् ब्रह्म कहा है। शब्द अथवा अनाहत-नादके रूपमें प्राणियोंने ब्रह्मका साक्षात्कार किया है, अतः मानवजीवनमें शब्द तथा उसके अवबोध एवं अनुभूतिकी कितनी महत्ता तथा उपयोगिता है—इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। पशु और मानवमें क्या अन्तर है? बर्बरता और सभ्यतामें क्या भेद है?—व्यक्त, व्युत्पन्न एवं सार्थक शब्द। इसीलिये हमारे आचार्योंने कहा है कि यदि एक भी वर्ण, एक भी शब्द, सम्यग्ज्ञात तथा सुप्रयुक्त हुआ तो इहलोक तथा परलोकमें मनोवाञ्छित फल देनेवाला होता है।

थोड़ी-सी भ्रान्तिसे कितना अनर्थ हो सकता है, यह निम्नलिखित श्लोकसे स्पष्ट परिलक्षित है—

> 'यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र! व्याकरणम्।
> स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत्॥'

अतः यह सिद्ध हुआ कि मानवमात्रको वर्णों तथा शब्दोंका यथावत् ज्ञान होना आवश्यक है।

वेदोंसे लेकर आधुनिक साहित्य तक जो अनगिनत ग्रन्थ निर्मित हुए हैं, वे ही हमारी संस्कृतिकी प्रगतिके प्रतीक हैं। ये ग्रन्थ क्या हैं?—शब्द तथा अर्थका समन्वय—'सम्पृक्त वागर्थ'। इसकी महिमाको इङ्गित करनेके उद्देश्यसे कालिदासने 'पार्वतीपरमेश्वरौ'को 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ'का विशेषण दिया है। मानवकी समस्त भावनाएँ मनमें ही विलीन हो जायँ, यदि उसे उन सार्थक, इतरावबोध्य शब्दोंमें गुम्फित करनेकी क्षमता नहीं हो। यदि आज हमने वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसी, सूर आदिको अमरत्व प्रदान किया है

तो इसका कारण क्या है ?—उनमें उपर्युक्त शब्दचयन तथा शब्दगुम्फनकी क्षमता जनसाधारणकी अपेक्षा अधिक थी ।

कोश तथा व्याकरण—इन दो शास्त्रोंके द्वारा उपर्युक्त शब्दभाण्डारकी सृष्टि तथा उसके चयन एवं समीचीन प्रयोगकी शक्ति आती है, अतः भारतमें अतिप्राचीन कालसे—निघण्टु तथा निरुक्त-समयसे—ही कोशके अध्ययनकी परम्परा चली आ रही है । संस्कृतके प्रत्येक विद्यार्थीको इसी कारण 'अमरकोश' कण्ठस्थ कराया जाता था और अब भी कराया जाता है, यद्यपि धीरे धीरे यह परम्परा कुछ क्षीण होती जा रही है । अब तो जैसे अंग्रेजीके विद्यार्थी पद-पदपर 'डिक्शनरी' उलटते हैं, वैसे ही संस्कृतके विद्यार्थियोंमें भी सस्ते, प्रमादपूर्ण बाजारमें बिकनेवाले कोशोंको उलटनेकी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है । मैं समझता हूँ कि यह प्रवृत्ति घातक है । एक 'अमरकोश'के मुखस्थ कर लेनेसे—या कमसे कम हस्तामलकवत् आवश्यक शब्दपर्यायोंको याद रखनेसे—वाक्य-विन्यास या ग्रन्थनिर्माणमें जो सुविधा होगी, वह कदापि बार-बार आधुनिक ढङ्गके कोशोंको उलटनेसे नहीं हो सकती, उसे तो शब्ददारिद्र्यसे ही मुक्ति नहीं मिलेगी, भावों तथा कल्पनाओंकी ऊँची उड़ान कैसे ले सकेगा ?

'अमरकोश' जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी ग्रन्थकी ऐसी टीका जो न केवल प्रामाणिक हो, किन्तु साथ-साथ सुगम हो तथा हिन्दीके विद्यार्थियों अथवा विद्वानोंके निमित्त उपयोगी हो, स्वागतका विषय है । श्रीहरगोविन्द-शास्त्रीने अत्यन्त परिश्रमसे तथा वैज्ञानिक पद्धतिसे यह टीका निर्मित की है । इसमें उन्होंने अनेकानेक ज्ञातव्य सामग्रीका समावेश किया है । 'परिशिष्ट' तथा 'शब्दानुक्रमणिका'के द्वारा उन्होंने अपनी टीकाके महत्त्वको अभिवृद्ध किया है । हर्षका विषय है कि इसका नवीन संस्करण प्रकाशित हो रहा है । हमें पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत साहित्य तथा वाङ्मयसे प्रेम रखनेवाले सुधी एवं जिज्ञासु इसे अपनायेंगे और तद्द्वारा अपना हितसाधन करेंगे ।

९-३-५७ } धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

भूमिका

अनादिनिधनं शब्दब्रह्म नित्यमुपास्महे ।
व्यवहारक्रमः सृष्टेर्यतश्चलति निर्भरम् ॥ १ ॥

पण्डितप्रकाण्ड श्री अमरसिंह-विरचित अमरकोषको यदि अमरभाषा (संस्कृत) साहित्यका अमरकोष (अक्षय निधि) कहा जाय तो लेशमात्र भी अत्युक्ति नहीं होगी । जिस अमरकोषके द्वारा उक्त पण्डितप्रवरका नाम चिरकालके लिये अमर हो गया है, उस अमरकोषका अनुपम आदर केवल भारतवर्षमें ही नहीं, किन्तु भूमण्डलमात्रमें देखा जाता है । विद्याप्रेमी योरप देशवासी विद्वानोंको अपनी अपनी भाषाओंमें इसका अनुवादकर इससे लाभ उठाना कोई विशेष आश्चर्यकर नहीं है, जितना कि धर्मान्धताके कारण अन्य सम्प्रदायके ग्रन्थोंको अग्नि और जलदेवकी शरण देते हुए मुहम्मद जातिवालोंने भी जब इसका अपनी भाषामें अनुवादकर[1] खुले हृदयसे इसकी उपयोगिताको अङ्गीकार किया, यह हम भारतवासियोंके लिये अत्यन्त ही हर्षप्रद विजय-चिह्न है । सुदूरतम चीनमें भी इसका अनुवाद[2] होना हम भारतीयोंके लिये विशेषरूपेण गौरव की बात है ।

कोषकी आवश्यकता

सर्वप्रथम वैदिक शब्दकोषका निर्माण

जब बृहस्पतिके समान गुरु भी इन्द्रके समान शिष्यको हजारों वर्षोंतक शब्द पारायण करते हुए शब्दसागरका[3] अन्त नहीं पा सके, तब किसका

---

१. इसी कारण 'खालीक बरी, नामक फारसीभाषाके शब्दकोषको पद्यमय उर्दू भाषामें इन लोगोंने रचना की ।

२. 'छठीं शताब्दीमें 'गुणराज' नामक विद्वान्‌ने चीनी भाषामें अमरकोषका अनुवाद किया' यह मैक्समूलरका कथन है । इस बातका ज्यौतिषाचार्य विद्वद्वरेण्य पं० गिरिजाप्रसाद द्विवेदीने 'भट्ट क्षीरस्वामी' शीर्षक लेखमें अन्वेषण किया है ।

३. जैसे कहा भी है—

'इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुः शब्दवारिधेः ।

सामर्थ्य है कि अतिशय विस्तृत शब्दसागरकी चरम सीमाका पता लगावे। हाँ, यह तो अतिप्राचीनकालमें शब्दब्रह्मोपासक मुनियोंका ही सामर्थ्य था कि वे योगाभ्यासके बलसे साक्षात् मन्त्रद्रष्टा होते थे और उन्हें किसी ग्रन्थसे किसी प्रकारकी भी सहायता अपेक्षित नहीं रहती थी, इसी आधारपर 'सर्वे सर्वार्थवाचकाः' (सब शब्द सब अर्थोंके वाचक हैं) यह वैयाकरणोंका सिद्धान्त है। किन्तु परिवर्तनशील संसारमें काल-परिवर्तन होनेके कारण योगाभ्यासका भी क्रमशः ह्रास होता गया और साथ ही साथ साक्षात् मन्त्रद्रष्टृत्व-शक्तिका भी।

इसप्रकार अनिवार्य ह्रासको देखकर भगवान् कश्यपने वेदके कठिन शब्दोंका संग्रहकर सर्वप्रथम 'निघण्टु' नामक कोषकी रचना की। यूथभ्रष्ट गौका गोत्व जिसप्रकार कदापि नष्ट नहीं होता, उसी प्रकार[1] वेदसे निकालकर संगृहीत इन शब्दोंका वेदत्व भी नष्ट नहीं हुआ है, अत एव 'निघण्टु'को भी वेद ही कहते हैं। एवञ्च 'निघण्टु'के वेद होनेसे तद्व्याख्यानभूत निरुक्तमें भी वेदत्व अबाधित ही है। भगवान् प्रजापति कश्यप वेदके उपज्ञाता थे, इस बातको भगवान् व्यासजीने कहा है—

> 'वृषो हि भगवान् धर्मो ख्यातो लोकेषु भारत।
> निघण्टुकपदाख्याने विद्धि मां वृषमुत्तमम्॥
> कपिर्वराहः श्रेष्ठश्च धर्मश्च वृष उच्यते।
> तस्माद् वृषाकपिं प्राह कश्यपो मां प्रजापतिः'॥
>
> (महाभारत मोक्षपर्व अ० ३४२। श्लो० ८६-८७)

निघण्टु ग्रन्थमें 'वृषाकपि' शब्दका निर्वचन (अध्याय ५ खण्ड ६ पद १६) मिलता भी है। किन्तु फिर भी जब योगाभ्यासका पूर्वाधिक ह्रास होनेसे निघण्टुका अर्थ भी लोगोंको अबोध्य प्रतीत होने लगा, तब दयामूर्ति भगवान् 'यास्क'ने समाम्नाय (वेद) भूत उस 'निघण्टु'का भाष्य किया;

प्रकियाँ तस्य कृत्स्नस्य क्षमो वक्तुं नरः कथम्'॥ सारस्वत श्लो० सं २।

१. इसी कारण भगवान् यास्कने निघण्टु ग्रन्थको लक्ष्यकर 'समाम्नायः समाम्नातः स व्याख्यातव्यः' इस वचनके द्वारा यहाँ वेदमात्रविषयक 'समाम्नाय' शब्दका प्रयोग किया है।

जिसका नाम 'निरुक्त' हुआ। इस बातको भी भगवान् व्यासजी स्वयं स्वीकार करते हैं—

'शिपिविष्टेति चाख्यायां हीनरोमा च योऽभवत्।
तेनाविष्टं तु यत्किञ्चिच्छिपिविष्टेति च स्मृतः॥
'यास्को मामृषिरव्यग्रोऽनेकयज्ञेषु गीतवान्।
शिपिविष्ट इति ह्यस्माद् गुह्यनामधरो ह्यहम्॥
स्तुत्वा मां शिपिविष्टेति यास्क ऋषिरुदारधीः।
मत्प्रसादादधो नष्टं 'निरुक्त'मभिजग्मिवान्'॥

(महाभारत मोक्षपर्व अध्याय ३४२ श्लो० ६९-७१)

'शिपिविष्ट' शब्दका निर्वचन निरुक्तमें (अध्याय ५ खण्ड ८ पद ३७) में मिलता भी है। किन्तु निरुक्तनिर्माता कौन यास्क थे, यह विषयान्तर होनेसे इसकी विवेचनाको यहीं छोड़कर अब प्रकृतानुसरण करता हूँ।

लौकिक-शब्दकोषकी रचना

इसप्रकार और भी अधिक तपोबलके ह्रासके साथ-साथ बुद्धिविकाशका भी ह्रास होनेसे लौकिक शब्दोंका अर्थज्ञान भी जब लोगोंको अतिदुरूह एवं अज्ञेय होने लगा, तब लौकिक शब्दकोषोंकी रचना हुई, किन्तु इनमें सर्वप्रथम किस कोषकी रचना हुई, यह पता नहीं चलता; क्योंकि 'शब्दकल्पद्रुमकोष'में ही २९ कोषोंके नाम आये हैं। 'साहसाङ्क, कात्यायन' इत्यादि अनेक कोष ऐसे हैं, जो अब अलभ्य हैं, किन्तु संगृहीत प्राचीन कोषोंमें उनके वचन संस्कृत-साहित्योपासकोंके उपजीव्य हो रहे हैं। इसीतरह 'उत्पलिनी' आदि भी अनेक कोषोंके वचन 'मेदिनीकोष'में संगृहीत जान पड़ते हैं, किन्तु इसप्रकार अनेकानेक कोषोंके रहते हुए भी इस 'अमरकोष'का ही सर्वाधिक प्रचार हुआ, इसमें ग्रन्थकारकी रचना-शैली ही प्रधान हेतु है।

कुछ कोषोंमें केवल नानार्थक शब्दोंका ही संग्रह पाया जाता है तो कुछ कोषोंमें केवल साधारण शब्दोंका ही, इसपर भी इन साधारण-शब्दार्थवाचक कोषोंमें लिङ्गादिका विवरण नहीं है और कुछ तो ऐसे कोष हैं, जिनमें साधारण-साधारण सर्वविध शब्दोंको भरकर उन्हें अत्यन्त दुरूह कर दिया गया है। ऐसा कोई भी कोष नहीं, जो प्रसिद्धतम, साधारण और नानार्थक

(अनेक अर्थवाले) शब्दोंके सुसंग्रहसे परिपूर्ण होता हुआ भी लिङ्गनिर्देशसे अलङ्कृत एवं आबालबोध्य पद्यमय निबद्ध हो । यदि कोई ऐसा कोष है तो 'अमरकोष' ही है । इसके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अन्य कोषोंमें जो न्यूनता या दोष थे, उन सबोंका यथावत् परिमार्जन करते हुए अमरसिंहने बालकोंके भी सुलभतया कण्ठस्थ करने योग्य सरल श्लोकोंमें इस 'अमरकोष'की रचनाकर संसारका बहुत बड़ा उपकार किया ।

अमरसिंहका समय विवेचन

इनके समयके विषयमें अनेक मत हैं । कोई तो इनको—

'धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशङ्कुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य' ॥

इस श्लोकके आधारपर 'विक्रम' नृपतिके नवरत्नोंमें-से कहते हैं । तथा कोई-कोई—

'इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः ।
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टौ हि शाब्दिकाः' ॥

इस श्लोकके आधारपर 'पाणिनि' और 'जैन' अर्थात् समन्तभद्रके मध्य-कालमें ये हुए थे, ऐसा कहते हैं, किन्तु पाणिनिविरचित अष्टाध्यायीके भाष्य-कार भगवान् पतञ्जलिके समकालीन 'चान्द्रव्याकरण'कर्त्ता आचार्य 'चन्द्र'का नाम उक्त श्लोकमें पाणिनिके पहले आनेसे उक्त श्लोकमें क्रम अपेक्षित नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है । अन्य लोग इनको ईस्वीय सन्के छठीं शताब्दीके बतलाते हैं ।

जो कुछ हो 'स्वर्गवर्ग'में देवताओंके पर्यायोंको कहनेके बाद इन्होंने भगवान् 'बुद्ध'के पर्यायवाचक शब्दोंको कहा है, अतः ये 'अमरसिंह' बौद्धमतावलम्बी थे, यह प्रायः सभी विद्वानोंका मत है ।

शोलापुर निवासी स्व० सेठ रावजी सखाराम दोशी महोदयने अमरकोष-सम्बन्धी एक ट्रैक्ट प्रकाशित किया है, उसकी भूमिकामें अनेक युक्तियोंसे उन्होंने प्रमाणित किया है कि अमरकोषकार अमरसिंह बौद्ध नहीं, किन्तु जैनी था । अपने कथनके प्रमाणमें दोशी महोदयका कहना है कि वर्तमानमें उपलभ्यमान अमरकोषमें लगभग एक सौ श्लोक छूट गये हैं या जान-बूझकर

छोड़ दिये गये हैं। 'यस्य ज्ञानदयासिन्धोः······' (१।१।१) श्लोकके पूर्व जिन एवं जैनसम्मत सोलहवें तीर्थङ्करकी वन्दना अमरसिंहने दो श्लोकोंमें की है[1], तथा 'सुरलोको·········त्रिविष्टपम् ।' (१।१।८) के बाद ८०½ श्लोकोंमें अमरसिंहने महावीर आदि तीर्थङ्करों एवं जैनसम्प्रदायसम्मत देवी-देवताओंके पर्यायोंको कहा है। द्वितीय काण्डमें भी प्रायः १०–१२ श्लोकोंका वर्तमान अमरकोषमें छूट जाने या छोड़ दिये जानेकी चर्चा उक्त दोशी महोदयने की है। यद्यपि दोशीमहोदय कथित मङ्गलाचरणके दो श्लोकोंमें-से प्रथम श्लोक वादीभसिंह-विरचित 'गद्यचिन्तामणि' ग्रन्थमें भी मिलता है, अतः यह कहना कठिन है कि यह श्लोक अमरसिंहकी रचना है या वादीभसिंहकी, किन्तु द्वितीय श्लोक अन्यत्र कहीं नहीं उपलब्ध होता और वह श्लोक दोशीजीके कथनानुसार यदि मङ्गलाचरणका ही है तब तो दोशीमहोदयके कथनकी विशेषतः पुष्टि होती है कि अमरसिंह बौद्ध नहीं, किन्तु जैनी ही था।

मेरा विचार था कि उक्त दोशीजीके ट्रैक्टके श्लोकोंको अपने अमरकोषके द्वितीय संस्करणमें भी समाविष्ट करूँ, किन्तु उक्त ट्रैक्टके श्लोकोंमें प्रचुर-मात्रामें अशुद्धियाँ होनेसे वैसा करना उचित प्रतीत नहीं हुआ और दोशीजी महोदयके ट्रैक्टकी मूल प्रति—जो द्रविडप्रान्त-निवासी 'आप्पण्णानाथशास्त्री'से द्रविडाक्षरमें तालपत्रपर लिखित थी—को प्राप्त करनेका प्रयत्न करनेपर भी कृतकार्य न हो सकनेके कारण मुझे अपने विचारको स्थगित कर देना पड़ा।

अमरसिंहने अन्य किसी ग्रन्थकी भी रचना की या नहीं, यह विषय सन्देहास्पद है। जयपुर सं० पाठशालाओंके निरीक्षक साहित्याचार्य पं० भट्ट श्रीतैलङ्ग मथुरानाथ शास्त्रीने 'अमरकोषे टीकाकाराणां कृपा' शीर्षक लेखमें अमरभारतीमें लिखा है कि—'इनके विषयमें यह भी प्राचीन दन्तकथा है कि 'ये अनेक ग्रन्थोंकी रचनाकर उन्हें नावमें रख कहीं अन्यत्र जा रहे थे, किन्तु बौद्धधर्म-

---

1. तद्यथा—जिनस्य लोकत्रयवन्दितस्य प्रक्षालयेत्पादसरोजयुग्मम्।
नखप्रभादिव्यसरित्प्रवाहैः संसारपङ्कं मयि गाढलग्नम् ॥ १ ॥
नमः श्रीशान्तिनाथाय कर्मारातिविनाशिने ।
पञ्चमश्रक्रिणां यस्तु कामस्तस्मै जिनेशिने ॥ २ ॥'इति।

विरोधी आर्योंने 'अमरकोष'के अतिरिक्त सब ग्रन्थोंको पानीमें डुबो दिया' किन्तु यह बात निराधार होनेसे प्रामाणिक नहीं समझी जा सकती।

लिङ्गानुशासनके श्लोकोंको प्रायः पाणिनिसूत्रके आधारपर इन्होंने लिखा है, इससे तथा—

'अमरसिंहस्तु पापीयान् सर्वं भाष्यमचूचुरत्'।

इस श्लोकके आधारपर व्याकरण शास्त्रमें इनका पाण्डित्यप्राखर्य अनावश्यक है, किन्तु उक्त श्लोकद्वारा इनपर भाष्यचौर्यका दोष लगाना ईर्ष्याकृत मालूम पड़ता है, क्योंकि ग्रन्थके प्रारम्भमें ही 'समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः (१।१।२)' इस वचनद्वारा ये उक्त दोषसे मुक्त हो चुके हैं और उक्त दोषाभावमें दूसरी बात यह भी है कि—यदि भाष्यकार 'वसन्त–अवन्त' शब्दोंको पुंल्लिङ्ग लिखते हैं, तो गतानुगतिक या चौर्यदोषके भयसे बादका कोई भी ग्रन्थकार स्त्रीत्व तो लिख नहीं सकता, अतः यदि वह पुंल्लिङ्ग लिखे तब उसपर चौर्यदोषारोपण न कर इन्हें भाष्यमतप्रचारकका श्रेय मिलना ही उचित प्रतीत होता है। इसीप्रकार भानुजिदीक्षितने 'गौतमश्चार्कबन्धुश्च······(१।१।१५) की स्वनिर्मित 'व्याख्यासुधा' टीकामें यद्यपि 'वेदविरुद्धार्थानुष्ठातृत्वाज्जिनशाक्यौ नरकवर्गे वक्तुमुचितौ, तथापि देवविरोधित्वेन बुद्ध्युपारोहादत्रैवोक्तौ' अर्थात् 'वेदविरुद्ध अर्थानुष्ठानके कारण 'जिन और शाक्य'को यद्यपि 'नरकवर्ग'में कहना उचित था, तथापि देवविरोधी होनेसे बुद्धिस्थ होनेके कारण ये यहींपर कहे गये हैं' ऐसा कहा है, किन्तु इस श्लोकके आधारपर जिन बुद्ध भगवान्‌की गणना भगवान् कृष्णके दश अवतारोंमें है, तथा जिन्हें वैष्णवभक्तवरेण्य 'जयदेव'—जैसे श्रेष्ठ विद्वान् भी कृष्णभगवान्‌का अंश [1]मानकर नमस्कार करते हैं, उन 'बुद्ध'के लिये 'नरकवर्गे, देवविरोधित्वेन' इन शब्दोंका प्रयोग करना नितान्त अनुचित प्रतीत होता है।

---

१. 'वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यान् दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः'॥

गीतगोविन्द १।१२॥

अमरकोषके नाम

ग्रन्थकारके नाम के आधारपर १ 'अमरकोष', ग्रन्थकारकृत अन्वर्थ (सार्थक) नाम-करणके—

'समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः।
सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम्' (१।१।२)

तथा ग्रन्थके तीनों काण्डोंके अन्तमें—

'इत्यमरसिंहकृतौ 'नामलिङ्गानुशासने'।'

इस वचनके आधारपर 'नामलिङ्गानुशासन' और ग्रन्थमें तीन काण्ड होनेसे 'त्रिकाण्ड'—ये तीन नाम हैं। देवभाषाशब्दसंग्रह होनेसे कोई-कोई इसे 'देवकोष' भी कहते हैं।

अमरकोषकी टीकायें

'अमरकोष'की उपयोगिता ग्रन्थरचनाके बाद अतिप्राचीन विद्वानोंसे लेकर आधुनिक विद्वानोंके द्वारा की गयी उसकी टीकाओंसे भी सिद्ध होती है। इसपर प्राचीन विद्वानोंकी निम्न टीकायें हैं—

१ व्याख्याप्रदीप	···	अच्युतोपाध्याय।
२ क्रियाकलाप	···	आशाधर।
३ काशिका	···	काशीनाथ।
४ [१]अमरकोषोद्घाटन	···	भट्टक्षीरस्वामी।

१. देवराज 'यज्वा'ने निघण्टुपर भाष्य लिखनेमें भोज और क्षीरस्वामीके नाम लिये हैं। भोजकाल ई० सन् १०१८–१०६० है, क्षी० स्वा० का समय ११ वीं शताब्दीका अन्तिम भाग है। इन्होंने ई० सन् ८८०–९२० कालके राजशेखरका नाम अपनी टीकामें लिया है। 'गणरत्नमहोदधि'में वर्द्धमानने क्षी० स्वा० का नाम लिया है, जो ई० सन् ११४० में हुए थे। क्षी० स्वा० ने उपाध्याय, गौड, श्रीभोज, व्याडि, भागुरि, मालाकार, और कात्य (कात्यायन) आदि कई विद्वानोंके वचन अपने ग्रन्थमें उद्धृत किये हैं। ये बहुत जगह 'अमरकोषोद्घाटन' नामक 'अमरकोष'की टीकामें ग्रन्थकारके शब्दोंका विवेचन भी किये हैं। जैसे—'स्त्री दाराद्यैर्यद्विशेष्यं···(३।१।२) 'अत्र स्त्री दाराद्यम्'

५ बालबोधिनी	...	गोस्वामी ।
*६ अमरकौमुदी	...	नयनानन्द रामचन्द्र ।
७ [1]अमरकोषपञ्जिका	...	नारायणशर्मा ।
८ शब्दार्थसंदीपिका	...	नारायण विद्याविनोद ।
९ सुबोधिनी	...	नीलकण्ठ ।
१० अमरकोषमाला	...	परमानन्द ।
११ अमरकोषपञ्जिका	...	बृहस्पति ।
*१२ मुग्धबोध[]	...	भरतमल्लिक (भरतसेन)
१३ ()व्याख्यासुधा	...	भानुजिदीक्षित द्वितीय
अथवा–रामाश्रमी	...	रामाश्रम ।
*१४ गुरुबालप्रबोधिनी	...	मञ्जुभट्ट ।
१५ सारसुन्दरी	...	मथुरेश विद्यालङ्कार ।
१६ अमरपदपारिजात	...	मल्लिनाथ ।

इति युक्तः पाठः' ऐसा, तथा 'कमनः कामनोऽभिकः' (३।१।२४) यहाँ 'कामनः कमनोऽभिकः' इति तु युक्तः पाठः' ऐसा कहा है। इसीप्रकार इन्होंने और भी कई जगह विवेचना की है। ये भागुरि, तथा मालाकार आदिकी भी अपनी टीकामें भ्रान्ति आदि बतलाये हैं।

१. इसका दूसरा नाम 'पदार्थकौमुदी' भी है, इसको सन् १६१९ ई० में नारायणशर्माने बनाया था।

२. इस निशानवाले टीकाओंके नाम आदिमें थोड़ा-थोड़ा अन्तर है। इन टीकाओंका नाम 'कल्पद्रुम' कोषकी भूमिकाके ६ ठे पेजमें आये हैं तथा अमर-भारती(वर्ष १ अङ्क ६)के 'अमरकोषे टीकाकाराणां कृपा' शीर्षक लेखमें छपा है।

[] गौरांगमल्लिकके पुत्र भरतमल्लिक (भरतसेन) की टीका बहुत विशद है। इसमें बहुत पाठान्तर है। इसमें वोपदेवके व्याकरणानुसार शब्दक्रम है। १८ वीं शताब्दीमें इसके टीकाकारकी सम्भावना की जाती है।

() 'सिद्धान्तकौमुदी'कार भट्टोजिदीक्षित'के पुत्र 'भानुजिदीक्षित'ने १७ वीं शताब्दीमें बघेलवंशी 'कीर्तिसिंह'को प्रार्थनासे यह टीका बनायी।

*१७ बुधमनोहरा ... महादेवतीर्थ ।
*१८ अमरविवेक ... महेश्वर ।
१९ [1]अमरबोधिनी ... मुकुन्दशर्मा ।
२० त्रिकाण्डचिन्तामणि ... रघुनाथचक्रवर्ती ।
*२१ अमरकोषव्याख्या ... राघवेन्द्र ।
२२ [2]त्रिकाण्डविवेक ... रामनाथ ।
२३ वैषम्यकौमुदी ... रामप्रसाद ।
*२४ अमरकोषव्याख्या ... रामशर्मा ।
*२५ अमरवृत्ति ... रामस्वामी ।
२६ प्रदीपमञ्जरी ... रामेश्वरशर्मा ।
*२७ [3]पदचन्द्रिका ... रायमुकुट ।
*२८ अमरव्याख्या ... लक्ष्मणशास्त्री ।
*२९ अमरबोधिनी ... लिंगभट्ट ।
३० पदमञ्जरी ... लोकनाथ ।
*३१ व्याख्यामृत ... शङ्कराचार्य ।
३२ अमरटीका ... श्रीधर ।
३३ [4]टीकासर्वस्व ... सर्वानन्द ।

---

१. यह टीका बोपदेवानुसारिणी है ।

२. सन् १६३३ ई० में यह टीका बनी टीकाकारने भूमिकामें बहुत टीकाकारोंके नाम लिखे हैं ।

३. बंगालके 'राधानगर'में रहनेवाले 'गोविन्द'के पुत्र बृहस्पतिने 'पदचन्द्रिका' (राय मुकुटमणि) बनायी, इसीको लोग रायमुकुट कहते हैं । जो सन् १४३१ ई० में बना था, इसके पूर्व १६ टीकायें थीं । 'बृहस्पति'के पुत्रके '१ विश्राम, २ राम' आदि नाम थे । 'रायमुकुट'में २७० व्यक्तियोंके प्रमापक वचन हैं, यह बात Aufrecht ने लिखी है । २८, १०९-११८ ॥

४. यह टीका १० टीकाओंके आधारपर ११५९ ई० सन् में लिखी गयी है और लगभग क्षी० स्वा० कृत टीकाके बराबर ही है । यह रायमुकुट आदि

३४ अमरपदमुकुर	...	रंगाचार्य ।
*३५ बृहद्वृत्ति	...	×
*३६ ×	...	अप्पय्यदीक्षित ।
*३७ गुरुबालप्रबोधिनी	...	भानुदीक्षित ।
*३८ ×	...	मान्यभट्ट ।
*३९ ×	...	लिंगमसूरि ।
*४० अमरकोषपदविवृति	...	×
*४१ कामधेनु	...	बंगदेशीय कोई विद्वान्

यद्यपि आधुनिक अनेक विद्वानोंने भी इस ग्रन्थपर अनेक संस्कृत तथा हिन्दी टीकायें लिखी हैं, तथापि उनमें प्रत्येक शब्दोंका प्रचलित हिन्दीमें अर्थ, लिंगज्ञान, वचनज्ञान, शब्दके प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध स्वरूप, पाठान्तर, कठिन शब्दोंकी विवेचना, शब्दसे सम्बद्ध विषय या अन्य आवश्यकीय बातोंका समावेश नहीं होनेसे एक बहुत कमी चिरकालसे मेरे हृदयमें खटक रही थी। इसीकी पूर्तिके लिये मैंने संस्कृत और हिन्दीमें इस ग्रन्थराजकी क्रमशः टीका और टिप्पणी लिखकर इसे पूज्यपाद विद्वन्मुकुटमणि दार्शनिकसार्वभौम साहित्य-दर्शनाद्याचार्य माध्वमतावलम्बी श्री १०८ **गोस्वामी दामोदरलालजी** महाराजको दिखलाया। पूज्यपाद गोस्वामीजी महाराजने इस टीकाकी भूरि-भूरि प्रशंसा की, पूज्य गोस्वामीजीकी बतलायी हुई शैलीसे मैंने इस **'मणिप्रभा'** नामक हिन्दी टीका और साथ में **'अमरकौमुदी'** नामक संस्कृत टिप्पणीमें अन्य आवश्यक बातोंका भी समावेश किया। सम्पूर्ण ग्रन्थ में लगभग सौ श्लोक क्षेपकके दिये गये हैं, मूल ग्रन्थमें आनेवाले शब्दोंके अतिरिक्त प्रसिद्ध २ बाहरी शब्द तथा मूल ग्रन्थमें आनेवाले शब्दोंके आंशिक समानाकार बाहरी

बंगदेशीय टीकाकारोंका आधार हुई। इसके बाद किन्तु अन्य बंगदेशीय टीकाकारोंके पूर्व 'सुभूतिचन्द्र या बौद्ध सुभूति' ने कामधेनु टीका बनायी जिसका बंगाली टीकाकर्ताओंने अधिकतर उल्लेख किया है। सन् ११७३ ई० में बनी हुई शरणदेवके 'दुर्घटवृत्ति' में 'सुभूति' का नाम मिलता है।

× इस निशानमें नाम नहीं कहा गया है।

शब्द में भी + ऐसे निशान कर दिये गये हैं, जिससे ग्रन्थकी उपयोगिता अधिक बढ़ गयी है। शीघ्रता आदिके कारण जो बातें छुट गयी थी, उनकी पूर्ति परिशिष्टमें की गयी है। यद्यपि परिशिष्टमें और भी अधिक बातोंको देनेका विचार था, किन्तु ग्रन्थाकारके बहुत बढ़ जानेसे वह विचार छोड़ देना पड़ा। मूल शब्दोंकी सूचीके अतिरिक्त बाहरी समानाकार शब्दोंकी तथा क्षेपक श्लोकोंमें आए हुए शब्दोंकी सूची भी साथमें दी गयी है, जो अन्यत्र किसी अमरकोषमें नहीं पायी जाती। इस प्रकार इस ग्रन्थको यथासाध्य सर्वावश्यकीय विषयोंसे परिपूर्ण बनानेकी भरपूर चेष्टा की गयी है।

आभारप्रदर्शन

इस भूमिकाको पूरा करनेके पहले उन महानुभावोंका मैं अतिशय आभारी हूँ, जिन्होंने इस टीकाके निर्माण करनेमें किसी तरह भी सहायता पहुँचायी है। उनमें सर्वप्रथम जिन ग्रन्थोंसे इस टीकाकी रचनामें सहायता ली गयी है, उन ग्रन्थकारोंके प्रति आभारप्रदर्शनपूर्वक कृतज्ञता अभिव्यक्त करता हूँ।

सम्मतिदाता

१ पूज्यपाद म० म० पं० श्री १०८ गोपीनाथ कविराजजी, प्रिंसिपल गवर्नमेण्ट सं० कालेज, बनारस—आपने अनेक ग्रन्थोंका नाम तथा प्रकरणादिका निर्देशकर टिप्पणी और परिशिष्ट बनानेमें मुझे बहुत सहायता पहुंचायी।

२ पूज्यपाद दार्शनिकसार्वभौम दर्शनसाहित्याचार्य श्री १०८ गोस्वामी दामोदरलालजी शास्त्री—आपको आदिष्ट शैलीद्वारा इस टीकाकी रचना हुई, तथा आपसे अन्य भी अनेक सम्मतियाँ मिलीं।

३ पू० पा० गवर्नमेण्ट सं० कालेजके प्रोफेसर व्याकरणाचार्य श्री गोपालशास्त्रीजी नेने—आपने द्वितीयकाण्ड तक इस टीकाका ३ प्रूफ देखा, तथा अन्यान्य अमूल्य सम्मतियाँ प्रदान की।

४ पं० नारायणदत्तजी त्रिपाठी मारवाड़ी सं० कालेजके प्रधानाध्यापक, व्याकरणाचार्य पोष्टाचार्य स्वर्णपदकप्राप्त—

५ पू० पा० पं० बंशीधरमिश्रजी आरामण्डलान्तर्गत गिरिधरबरांवनिवासी ज्यौतिषाचार्य, पोष्टाचार्य तथा ज्यौतिषतीर्थ—

आप लोगोंसे क्रमशः व्याकरण और ज्यौतिष सम्बन्धी बहुतसी सम्मतियाँ प्राप्त हुईं।

ग्रन्थद्वारा सहायतादाता

१ श्री पं० नन्दविहारीमिश्र आयुर्वेदाचार्य, विशारद, आरामण्डलान्तर्गत गिरिधरपरवनिवासी—आपने 'अमरविवेक' की प्राचीन पुस्तकद्वारा सहायता की।

२ श्री पं० ऋषिनन्दन पाण्डेय व्याकरणशास्त्री, काव्यतीर्थ, अध्यापक सं० पाठ० कसाप, आरा—आपने भाषाटीकासहित अमरकोषकी अतिप्राचीन पुस्तकके द्वारा सहायता की।

३ श्री पं० कृष्णपन्त साहित्याचार्य, अध्यक्ष विश्वनाथ संस्कृत पुस्तकालय, ललिताघाट, काशी—आपने अपने पुस्तकालयसे बहुतसी पुस्तकें समय-समय पर देकर बहुत सहायता की।

इनके अतिरिक्त अन्यान्य जिन महानुभाव विद्वानोंके द्वारा भी मुझे जो कुछ सहायता प्राप्त हुई है, उनका मैं बहुत आभारी होते हुए कृतज्ञता प्रकाश करता हूँ।

टीकाके सहायक ग्रन्थ

'साङ्केतिक चिह्न और शब्दका विवरण' शीर्षक लेखमें आये हुए ग्रन्थोंके अतिरिक्त अग्निपुराण, अत्रिस्मृति, यमस्मृति, हारीतस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृतिकी बालम्भट्टी टीका, आह्निकसूत्रावली, कल्पद्रुमकोश, हिन्दीशब्दसागर, श्रीधरकोष आदि ग्रन्थ तथा अमरकोषकी पी० ख्वा० कृत 'अमरकोषोद्घाटन', महेश्वरकृत 'अमरविवेक', भानुजिद्दीक्षितकृत 'व्याख्यासुधा (रामाश्रमी)' सर्वानन्दकृत 'टीकासर्वस्व', 'संक्षिप्तमाहेश्वरी', तथा एतद्व्याख्यानभूत 'अमरप्रकाश' द्वारा सहायता की गयी है। इनके अतिरिक्त अन्य बहुत ग्रन्थों द्वारा भी यत्र तत्र सहायता की गयी है, उन ग्रन्थकारों और टीकाकारोंका मैं विशेष आभारी हूँ।

अन्तमें 'काशीस्थ चौखम्बा–बनारस–काशी–हरिदास सं० सिरीज़' के अध्यक्ष बाबू 'जयकृष्णदास हरिदास गुप्त' महोदयको अनेक धन्यवाद देता हूँ,

जिन्होंने इस ग्रन्थका प्रकाशनभार लेकर संस्कृत साहित्य ग्रन्थोद्धारमें उत्साहपूर्ण अपनी उदारताका परिचय दिया है।

ग्रन्थ-सम्पादनके समय मानवसुलभ दृष्टिदोषवश एवं टाइपके अतिसूक्ष्माक्षर होनेसे तथा यन्त्र-सम्बन्धी दोषोंसे अर्थात् किसी प्रकारकी यदि अशुद्धि हो गयी हो तो—

'गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः' ॥

इस पद्यके अनुसार क्षीरग्राही हंसके समान विद्वज्जन उन अशुद्धियोंको सुधार कर मुझे अनुगृहीत करेंगे।

इति शम्।

रथयात्रा, सं० १९९४ }

विद्वत्पादाब्जचञ्चरीक—
हरगोविन्दशास्त्री

द्वितीय संस्करण

लोकशङ्कर भगवान् शङ्करकी असीम अनुकम्पासे स्व-प्रथम-प्रयास सम्पादित अमरकोषीय 'मणिप्रभा'के द्वितीय संस्करणको प्रकाशित होते हुए देखकर अनुवादक होनेके नाते मुझे परम प्रसन्नता हो रही है, क्योंकि कविकुल-शिरोमणि महाकवि कालिदास—जैसे विद्वान् भी सूत्रधारके मुखसे—

'आ परितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ॥'

कहलवाते हुए कृतिकी सफलतामें सशङ्क होना अभिव्यक्त करते हैं, तब अपनी कृति—यह भी अध्ययनावस्थाकी प्रथम कृति—होनेके कारण मुझ जैसे अल्पज्ञको अपनी सफलतामें आशङ्कित होना अस्वाभाविक नहीं समझा जा सकता; परन्तु 'मणिप्रभा' युक्त इस अमरकोष ग्रन्थके प्रथम तथा द्वितीय काण्डोंका पाँच-पाँच, संस्करण प्रकाशित होना और इस सम्पूर्ण ग्रन्थके पुनः प्रकाशनार्थ अनेक वर्षोंसे पत्रादिद्वारा प्रेरणा करते रहना इस कृतिकी सफलता को स्पष्टतः अभिव्यक्त करता है ।

इस अमरकोषके ही नहीं, किन्तु 'मणिप्रभा' नामक मेरे राष्ट्रभाषाऽनुवाद-सहित अन्यान्य ग्रन्थों—रघुवंश, शिशुपालवध, नैषधचरित तथा मनुस्मृति आदि—को भी अन्यान्य विद्वज्जनसम्पादित विविध टीकाओं तथा अनुवादोंके रहते हुए भी अपनी नीर-क्षीर-विवेकिताद्वारा जिनलोगोंने अपनी गुणैकपक्ष-पातिताका स्पष्ट परिचय प्रदान किया है, उन परमादरणीय विद्वानोंका आभार मानता हुआ मैं उन्हें भूरिशः धन्यवाद देता हूँ ।

साथ ही वर्तमानमें शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयके प्राचार्य एवं समाज (सोसल)-विभाग, विहार सरकारके भूतपूर्व उपनिर्देशक श्रीमान् माननीय 'डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री' महोदयका भी अत्यन्त आभारी होता हुआ उन्हें अनेकानेक धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ; जिन्होंने मेरी

प्रार्थना स्वीकृतकर इस संस्करणका अपना पाण्डित्यपूर्ण 'प्राक्कथन' लिखनेकी अनुकम्पा की है।

इसके अतिरिक्त प्रायः पैंसठ वर्षोंसे संस्कृत साहित्यके विविध-विषयक ग्रन्थोंका प्रकाशनकर भारतीय आर्ष संस्कृतिके संरक्षण एवं संवर्द्धनके अन्यतम सेवाव्रती, चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय तथा चौखम्बा विद्याभवन, काशीके अध्यक्ष श्रीमान् माननीय सेठ 'जयकृष्ण दासजी गुप्त' महोदयको भी शुभाशीःपूर्वक भूरिशः धन्यवाद देता हूँ; जिन्होंने इस ग्रन्थका पुनर्मुद्रण करके सकल संस्कृतानुरागियोंके लिए इसे सुलभतम मूल्यमें प्रदान करते हुए त्रिवर्गको अर्जित करनेका सफल प्रयास किया है।

इस संस्करणके मुद्रणमें मेरे सुदूर प्रदेशमें रहनेके कारण प्रूफ संशोधन आदि कार्य करनेवाले मित्रवर्गको भी अनेकशः धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

यद्यपि मैंने इस संस्करणमें दृष्टचर त्रुटियोंके निराकरणका पूर्णतया प्रयास किया है, एवं कतिपय स्थलोंमें अनेक विषयोंको विशदकर इस संस्करणको पूर्वापेक्षया अधिक उपयुक्त बनानेका यथाशक्य प्रयत्न किया है; तथापि इसका सम्पादन, अक्षरसंयोजन, संशोधन एवं मुद्रणादि सब कार्य मानवकृत होनेसे और जगत्स्रष्टा ईश्वरके अतिरिक्त प्राणिमात्रको सर्वथा दोषविनिर्मुक्त होना असम्भव होनेसे इस संस्करणमें भी सम्भावित त्रुटियोंके लिए गुणैकपक्षपाती विद्वद्वृन्दसे बद्धाञ्जलि हो क्षमायाचना करता हूँ कि वे जिस प्रकार इसे अपनाकर अन्यान्य ग्रन्थोंको लिखनेके लिए मुझे उत्साहित करनेकी असीम अनुकम्पा की है, उसी प्रकार भविष्यमें भी अनुकम्पा करते रहें।

रामनवमी सं० २०१४	विद्वज्जनवशंवदः— हरगोविन्दशास्त्री

साङ्केतिक चिह्न और शब्दके विवरण

मूलके सङ्केत

' ' इस चिह्नके बीचवाले अंश क्षेपक हैं, उनके अन्तमें ( ) इस कोष्ठके मध्यमें क्रमानुसार पङ्क्तिसंख्या लिखी गई है।

श्लोकोंके पहले या मध्य भागमें दिये गये अङ्क हिन्दी टीकाके प्रतीक हैं।

टीका और टिप्पणीके संकेत

=—सन्दिग्ध ('सु' विभक्तिमें प्रातिपदिकसे भिन्न रूपवाले) शब्दोंके प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप।

+—पाठभेद या मतभेदसे उपलब्ध पर्याय; और ग्रन्थान्तरमें उपलब्ध आंशिक समानाकार (प्रायः मिलते जुलते हुए) या प्रसिद्धतम पर्यायवाचक शब्द।

[ ]—क्षेपक श्लोकोंकी हिन्दी टीका।

उन-उन ग्रन्थोंके काण्ड, वर्ग, श्लोक, परिच्छेद, अध्यायादि जाननेके लिये अङ्क दिये गये हैं।

पु या पु०—पुंलिंग

स्त्री या स्त्री०—स्त्रिलिंग

न या न०—नपुंसकलिंग

त्रि या त्रि०—त्रिलिंग

नि०—नित्य

ए० व०—एकवचन

द्विव०—द्विवचन

ब० व० या बहुव०—बहुवचन

शे०—शेष

म०—मत या मतभेद

उदा०—उदाहरण

स्वा०—स्वामी

क्षी० स्वा०—क्षीरस्वामी

महे०—महेश्वर

भा० दी०—भानुजिदीक्षित

मु०—मुकुट

भा०—भागुरि

प्रा०—प्राच्य

रा० कृ० दी०—रामकृष्णदीक्षित

बु० म०—बुधमनोहर

अ० वि०—अमरविवेक

व्या० सु०—व्याख्यासुधा (रामाश्रमी)

पा० सू०—पाणिनीयसूत्र

लि० सू०—लिंगसूत्र

उ० सू०—उणादिसूत्र

वा०—वार्तिक

यो० सू०—योगसूत्र

अभि० चिन्ता० या अ० चि० म०—अभिधानचिन्तामणि

या० स्मृ० या याज्ञ० स्मृ०—याज्ञवल्क्यस्मृति
मनु या मनुस्मृ०—मनुस्मृति
सा० द०—साहित्यदर्पण
गी०—श्रीमद्भगवद्गीता
वि० पु०—विष्णुपुराण
वै० सि० मं०—वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा
सु० श्रु० क० स्था०—सुश्रुतकल्पस्थान
मा० नि०—माधवनिदान
अने० सं०—अनेकार्थसंग्रह
मे० या मेदि०—मेदिनीकोष
पृ०—पृष्ठ
श्लो०—श्लोक
अ०—अध्याय
चतु० चिन्ता०—चतुर्वर्गचिन्तामणि
दा० खं०—दानखण्ड
वृ० रत्ना०—वृत्तरत्नाकर
वीर० राजप्रक०—वीरमित्रोदयराजप्रकरण
कु० सं०—कुमारसम्भव
वाचस्प०—वाचस्पत्याभिधान
नि० सि०—निर्णयसिन्धु
रघु०—रघुवंश
*, †, ‡, §, इत्यादि चिह्न टिप्पणीके प्रतीक हैं।

देखनेका प्रकार—१ जिस शब्दके बाद जो संकेत है, उसीके साथ उस संकेतका सम्बन्ध है। २ संख्यासहित संकेतका पहलेवाले उतने शब्दोंके साथ सम्बन्ध है। ३ कहीं-कहीं एक ही शब्दमें एकाधिक भी संकेत हैं। ४ नामके अन्तमें लिखी हुई संख्यामें पाठान्तर, कोषान्तर आदिके कोष्ठमध्यगत पर्यायोंकी गणना नहीं है। उदाहरण—'स्वः (= स्वर्, अ०), स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः सुरलोकः (५ पु), द्यौः (= द्यो), द्यौः (= दिव्। २ स्त्री), 'त्रिविष्टपम्' (न। + त्रिविष्टपम्), 'स्वर्ग के ९ नाम हैं", यहाँ पर 'स्वः' के प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप 'स्वर्' है और यह अव्यय है। 'स्वर्ग' आदि पाँच शब्द पुंल्लिंग हैं। पहले 'द्यौः' के प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप 'द्यो' और दूसरेके प्रातिपदिकावस्थाका शुद्ध रूप 'दिव्' है, तथा ये दोनों शब्द 'स्त्रीलिंग' हैं। 'त्रिविष्टप' शब्द नपुंसक है, मतान्तरसे 'त्रिविष्टपम्' यह भी पर्याय है। 'स्वः' आदि ९ नाम 'स्वर्ग' के हैं, इसमें 'त्रिविष्टपम्' की गणना नहीं है। इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये॥

परिशिष्टके संकेत

परिशिष्टमें पहले मूल ग्रन्थमें आये हुए शब्दको देकर उसके काण्डाङ्क, वर्गाङ्क और श्लोकाङ्क दे दिये गये हैं, फिर उस शब्दसे सम्बद्ध विषय लिखकर प्रमापक ग्रन्थके नाम आदि दिये गये हैं ॥

शब्द-सूचीके संकेत

मूल ग्रन्थकी सूची देखनेका प्रकार—पहले शब्द, बादमें क्रमशः 'काण्डाङ्क, वर्गाङ्क और श्लोकाङ्क' दिये गये हैं। जैसे—'अ ३ ४ ११' अर्थात् 'अ' शब्द तृतीय काण्डके चतुर्थ अव्ययवर्गके ग्यारहवें श्लोकमें आया है। (देखिये पृ० ५१७) ॥

क्षेपक और टीकास्थ शब्दकी सूची देखनेका प्रकार—क्षेपक और टीकास्थ शब्दोंकी सूची ११६ पृष्ठसे आरम्भ होकर १४९ पृष्ठोंमें समाप्त हुई है। उनमेंसे जो शब्द क्षेपकमें आये हैं, उन शब्दोंके पहले अध्यायके क्रमसे चलने वाला क्षेपकाङ्क, क्षेपकका शब्द और बादमें मूल ग्रन्थके जिस स्थलमें वह क्षेपकका शब्द आया है, उस मूल ग्रन्थके काण्ड, वर्ग और श्लोकके अङ्क दिये गये हैं; इसमें अर्द्धश्लोककी गणना नहीं है। जैसे—'४१ अंशुमालिन् १ ३ ३०' यहाँ पहले क्षेपकका अङ्क, बादमें क्षेपकका 'अंशुमालिन्' शब्द, फिर प्रथम काण्डके तृतीय 'दिग्वर्ग'के ३० वें श्लोकके बाद वह 'अंशुमालिन्' शब्द मिलेगा। (देखिये पृष्ठ—११)।

कुछ शब्द क्षेपकसे सम्बद्ध होते हुए भी मूल क्षेपकमें नहीं आये हैं, किन्तु क्षेपकसे भी बाहरी हैं; ऐसे शब्दोंमें क्षेपकाङ्कके आगे + ऐसा चिह्न लगाया गया है। जैसे + '४२ + आश्विन १ ४ १३' है, इसे भी इसीप्रकार पृष्ठ ४० में देखिये। यह शब्द क्षेपकमें नहीं आया है, किन्तु क्षेपककी टीकामें आया है ॥

विषयानुक्रमणिका

प्रथमकाण्डे सङ्कलितश्लोकसंख्या २७८॥, द्वितीयकाण्डे सङ्कलितश्लोकसंख्या ७३३॥ तृतीयकाण्डे सङ्कलितश्लोकसंख्या ४८२ एवं सम्पूर्णग्रंथे सङ्कलितश्लोकसंख्या १४९४

चक्रसूची

क्षेपकश्लोकपंक्तिसंख्या

प्रथमकाण्डे क्षेपकपङ्क्तयः	५८	तृतीयकाण्डे क्षेपकपङ्क्तयः	९५
द्वितीयकाण्डे "	३३	एवं सम्पूर्णग्रन्थे	१८६

परिशिष्टसूची

॥ श्रीः ॥

नामलिङ्गानुशासनम्

नाम

अमरकोषः

प्रथमं काण्डम्

१ यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ।
सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

विश्वेषां करणैरगोचरमपि प्रज्ञादृशा पश्यतां
यत्प्रत्यक्षमपश्चिमं कृतिरिह स्वःश्रेयसे योगिनाम् ।
आरभ्याणु महत्तमावधि परं यद्व्यापकं सर्वतो
वन्दे निर्गुणमेव पाणियुगलं बद्ध्वाऽऽनतस्तन्महः ॥ १ ॥
आसृष्टि प्रलयावधि त्रिभुवने विस्तारसिन्धोः परं
यस्या द्रष्टुमपि क्षमो न यदि चेत्पारङ्गतौ का कथा ।
ब्रह्मश्रीशशिवादिभिश्च सततं ज्ञानाय योपास्यते
तां वाचामधिनायिकां भगवतीं श्रीशारदामाश्रये ॥ २ ॥
मन्थाचलाबिलपयोधिविनिस्सृतेन दृष्ट्वा ज्वलज्जगदिदं गरलेन शीघ्रम् ।
पीत्वा हसंस्तदभिरक्षितवान् भृशं यस्तन्नीलकण्ठचरणाम्बुजमाश्रयामि ॥३॥

१ श्री अमरसिंह अपने रचे जानेवाले इस ग्रन्थकी निर्विघ्नतापूर्वक समाप्ति तथा प्रसिद्धि होने के लिये और व्याख्याता तथा अध्येताओं (पढ़नेवालों) के उपदेशके लिये यथाचार[1] किए हुए मङ्गलाचरणको पहले लिखते हैं—'यस्य ज्ञान···' । हे पण्डितो ! अतिगम्भीर, ज्ञान और करुणाके समुद्र, जिसके निर्मल क्षमा आदि गुण हैं; उस अविनाशीकी आपलोग धन और मोक्ष के लिये सेवा करें ॥

---

१. 'प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते' इति न्यायात्। 'मङ्गलादीनि हि शास्त्राणि प्रथन्ते, वीरपुरुषाणि च भवन्ति, आयुष्मत्पुरुषाणि चाध्येतारश्च सिद्धार्था यथा स्युः' इति भाष्योक्तेश्च ॥

१ समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।
सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥
२ प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।

---

१ ग्रन्थ-समाप्तिके लिये इष्टदेव 'जिनदेव' का स्मरण कर श्रोता आदिके उत्साहवर्धनार्थं साभिधेय प्रयोजनको कह रहे हैं-'समाहृत्य···'। नाम और लिङ्गको बतलानेवाले वररुचि आदिके तन्त्रों (कोशों) को एकत्रित कर विस्तार के थोड़ा होनेपर भी अधिक अर्थवाले, प्रत्येक पदकी प्रकृति और प्रत्ययोंको विचारपूर्वक संस्कार कर बनाये हुए वर्गों (प्रकरणों) से सम्पूर्ण नाम (स्वः, स्वर्गः, नाकः, आदि) और लिङ्ग (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) को बतलानेवाले इस शास्त्रको मैं कहता हूँ। त्रिकाण्ड-उत्पलिनी आदि कोशोंमें केवल नाम (पर्याय) बतलाये गये हैं और वररुचि आदिके ग्रन्थोंमें केवल लिङ्ग बतलाये गये हैं; नामलिङ्गानुशासन[1] (अमरकोष) नामक इस शास्त्र (ग्रन्थ) में तो नाम (पर्याय) और लिङ्ग (पुंल्लिङ्ग······) ये सभी बतलाये गये हैं; अतः इसीको पढ़ना चाहिये।

२ अब 'प्रायशः' इत्यादिसे इस ग्रन्थमें लिङ्गादि जाननेका उपाय (परिभाषा) बतलाते हैं—प्रायः रूप (आकार) भेद अर्थात् 'ङीप्, ङीष्, टाप्, विसर्ग और अमादेश' आदिसे [2]लिङ्गों (स्त्रीलिङ्ग, पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) को जानना चाहिये। (उदाहरण—स्त्रीलिङ्ग जैसे—'शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला।' (१।१।३७), यहाँ 'शिवा और सर्वमङ्गला' इन दो शब्दोंके आबन्त होनेसे तथा 'भवानी, रुद्राणी और शर्वाणी' इन तीनों शब्दोंके ङ्यन्त होनेसे 'सु' (प्रथमा विभक्तिके एकवचन) का लोप हो गया है; अतएव 'शिवा······' पाँचों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। क्रमशः पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग जैसे—'······प्रदोषो रजनीमुखम् (१।४।६)' यहाँ 'प्रदोष' शब्दकी

---

१. नाम च लिङ्गं च नामलिङ्गे, तयोरनुशासनमिति नामलिङ्गानुशासनम्। स्वरादिनाम्नां पुंस्त्वादिलिङ्गानां च व्युत्पादकमिति यावत् ॥

२. आदिपदेन यत्र 'वामोरूः' इत्यादावूङ्प्रत्ययः, कृतिरित्यादौ क्तिन्प्रत्ययश्च तस्य ग्रहणम्। एवञ्च 'लक्ष्मीः' इत्यादौ सुलोपाभावे स्त्रीत्वं 'दधि' इत्यादौ सुलोपेऽपि क्लीबत्वमेवेति यथाशास्त्रं व्यवस्था कार्या, नानुमानमात्रेणैव ॥

स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं १ तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

'सु' विभक्तिको रुत्व-विसर्ग होने से 'प्रदोष' शब्द पुंल्लिङ्ग और 'रजनीमुख' शब्दकी 'सु' विभक्तिको अमादेश होनेसे 'रजनीमुख' शब्द नपुंसकलिङ्ग है.) ॥ कहीं-कहीं साहचर्य (पासवाले शब्दके अनुसार) से तीनों लिङ्ग समझना चाहिए। (स्त्रीलिङ्ग जैसे—'तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि (१।३।९)' यहाँ स्त्रीलिङ्गवाले 'सौदामनी' आदि शब्दोंके साहचर्यसे सन्दिग्ध 'तडित् और विद्युत्' ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। पुंल्लिङ्ग जैसे—'स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषः (१।३।१०)' यहाँ 'वज्रनिर्घोष' शब्दके साहचर्यसे 'स्फूर्जथु' शब्द पुंल्लिङ्ग है। नपुंसकलिङ्ग जैसे—'इन्द्रायुधं शक्रधनुः (१।३।१०)' यहाँ 'इन्द्रायुध' शब्दके साहचर्यसे 'शक्रधनुष्' शब्द नपुंसकलिङ्ग है) ॥

१ कहीं-कहीं विशेष रूपसे कहनेपर स्त्रीलिङ्ग, पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग जानना चाहिये। (स्त्रीलिङ्ग जैसे—'द्योदिवौ द्वे स्त्रियाम्······(१।२।१)' यहाँ 'स्त्रियाम्' इस विशेष शब्दसे 'द्यो और दिव्' ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। पुंल्लिङ्ग जैसे—'निधिर्ना शेवधिः······(१।१।७१)' यहाँ 'ना' इस विशेष शब्दसे 'निधि' शब्द पुंल्लिङ्ग है। नपुंसकलिङ्ग जैसे—'रोचिः शोचिरुभे क्लीबे (१।३।३४)' यहाँ 'क्लीबे' इस विशेष शब्दसे 'रोचिष् और शोचिष्' ये दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं)॥

विशेषः—कहीं-कहीं सर्वनाम पदसे और विशेषण पदसे भी तीनों लिङ्ग जानने चाहिए। (सर्वनाम पदसे स्त्रीलिङ्ग जैसे—'दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः (१।३।१)' यहाँ 'ताः' इस स्त्रीलिङ्गवाले सर्वनाम पद से 'दिक्, ककुप्, काष्ठा, आशा और हरित्' ये पाँचों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। सर्वनाम पदसे पुंल्लिङ्ग जैसे—'··········शुचिरयम् (१।४।१६)' यहाँ 'अयम्' इस सर्वनाम पदसे 'शुचि' शब्द पुंल्लिङ्ग है। सर्वनाम पदसे नपुंसकलिङ्ग जैसे—'····विषुवद्विषुवं च तत् (१।४।१४)' यहाँ 'तत्' इस सर्वनाम पदसे 'विषुवत् और विषुव' ये दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं॥ विशेषण पदसे स्त्रीलिङ्ग जैसे—'·······संहूतिर्बहुभिः कृता (१।४।८)' यहाँ 'कृता' इस स्त्रीलिङ्ग विशेषण पदसे 'संहूति' शब्द स्त्रीलिङ्ग है)। विशेष पदसे लिङ्गके अतिरिक्त वचन आदिका भी ज्ञान होता है। (जैसे—'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः·········(१।१।५२) यहाँ 'स्त्रियां और बहुषु' इन दो विशेष शब्दोंके कहनेसे 'अप्सरस्' शब्द केवल स्त्रीलिङ्ग

१ [1]भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न सङ्करः ।

और बहुवचन ही होता है। दूसरा उदाहरण जैसे—'स्वरव्ययं············(१।१।६)' यहाँ 'अव्ययम्' इस विशेष पदसे 'स्वर्' शब्द अव्यय ही है। इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये) ॥

१ इस ग्रन्थमें प्रत्येक शब्दका लिङ्ग मालूम करनेके लिये उन शब्दोंके 'द्वन्द्व, एकशेष और सङ्कर' प्रायः नहीं किये गये हैं, जिनके लिङ्ग पहिले नहीं कहे हैं और भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु जिन शब्दोंके लिङ्ग आदि कहींपर कह दिये गये हैं, उन्हींके 'द्वन्द्व, एकशेष और सङ्कर' किये गये हैं। (क्रमशः उदाहरण—पहला द्वन्द्व जैसे—जातिर्जातञ्च सामान्यं······(१।४।३१)' यहाँ 'जातिसामान्यजातानि' इस तरह और 'कुलिशं भिदुरं पविः' (१।१।४७)' यहाँ 'कुलिशभिदुरपवयः' इस तरह द्वन्द्व नहीं किया गया है; यहाँ पहले उदाहरणमें द्वन्द्व समास करनेपर [2]अन्तिम शब्दका लिङ्ग हो जानेसे 'जाति' शब्द स्त्रीलिङ्ग और 'जात तथा सामान्य' ये दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं, यह मालूम नहीं हो सकता, इसी तरह दूसरे उदाहरणमें भी द्वन्द्व करनेपर 'कुलिश और भिदुर' ये दोनों शब्द नपुंसकलिङ्ग और 'पवि' शब्द पुंल्लिङ्ग है, यह मालूम नहीं पड़ सकता। दूसरा एकशेष जैसे—'ओकः सद्माश्रयश्चौकाः······(३।३।२३३)' यहाँ 'ओकस्' शब्दको 'सद्माश्रयश्चौकसौ' इस तरह और 'नभः खं श्रावणो नभाः (३।३।२३२)' यहाँ 'खश्रावणौ तु नभसी' इस तरह एकशेष नहीं किया गया है; अन्यथा पहले उदाहरणमें 'ओकस्' शब्द 'सद्म' अर्थात् गृह अर्थमें नपुंसक तथा 'आश्रय' अर्थमें पुंल्लिङ्ग है यह मालूम नहीं पड़ सकता, इसी तरह दूसरे उदाहरणमें भी 'नभस्' शब्द 'आकाश' अर्थमें नपुंसकलिङ्ग तथा 'श्रावण महीना' अर्थमें पुंल्लिङ्ग है यह ज्ञान नहीं हो सकता। तीसरा सङ्कर जैसे—'······स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः (१।६।११)' यहाँ पुंल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग क्रमसे

---

१. उपाध्याय-गौड-मालाकार-श्रीभोजास्तु इमं विभिन्नक्रमेण व्याचख्युः, तद्व्याख्या च 'उपाध्यायश्च क्रमादृते·········इत्याद्येश्चार्थसूचनेति' क्षीरस्वामिकृतामरकोशोद्घाटनाख्यव्याख्यायां भा० दी० कृतव्याख्यासुधायाः, पं० शिवदत्तकृतटिप्पण्यां क्षीरस्वाम्यादिमतं, रायमुकुटकृत 'पदचन्द्रिका' रामकृष्णदीक्षितकृत 'पीयूष' व्याख्यां चानुपूर्व्येण विलिख्य पूर्वोक्तटिप्पणीकारमतं च लिखितमिति तत एव सकलं सविस्तरतोऽवधार्य्यम् ॥

२. 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः (पा० सू० २।४।२६)' इति परवल्लिङ्गता स्यादित्याशयः ॥

कुतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमाद्दते ॥ ४ ॥

ही कहे गये हैं—'सङ्कर' अर्थात् मिश्रण करके 'स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिः' इस तरह व्यतिक्रमसे नहीं कहा गया है। 'पीयूषममृतं सुधा (१।१।४८)' यहाँ 'पीयूषन्तु सुधाऽमृतम्' इस तरह सङ्कर अर्थात् संमिश्रण नहीं किया गया है; किन्तु पहले नपुंसकलिङ्गवाले 'पीयूष और अमृत' इन दो शब्दोंको कहनेके उपरान्त ही स्त्रीलिङ्गवाले 'सुधा' शब्दको कहा गया है; इसी तरह 'प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च··· (१।६।१०)' इत्यादिमें भी समझना चाहिये। इस ग्रन्थमें जिन शब्दोंके कहींपर लिङ्ग कहे गये हैं; उन शब्दोंके तो '१ द्वन्द्व, २ एकशेष और ३ सङ्कर' प्रायः किये ही गये हैं। **पहला द्वन्द्व जैसे**—१ 'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः (१।१।५२)'—२ 'यक्षैकपिङ्गैलविल···(१।१।६९)'—३ 'नैर्ऋतो यातुरक्षसी (१।१।६०)'—४ 'गन्धर्वो दिव्यगायने (३।३।१३३)'—५ 'स्यात्किन्नरः किम्पुरुषः (१।१।७१)' इन पाँच वाक्योंसे '१ अप्सरस् , २ यक्ष, ३ रक्षस्, ४ गन्धर्व और ५ किन्नर' इन पाँच शब्दोंके लिङ्ग कह दिये गये हैं; अतः 'विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः (१।१।११)' यहाँ उक्त पाँच शब्दोंका द्वन्द्व किया ही गया है। समान लिङ्गवाले शब्दोंका तो यथावसर द्वन्द्व किया ही गया है;जैसे—'यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः (१।१।६९)' यहाँ 'यक्ष, एकपिङ्ग, ऐलविल, श्रीद और पुण्यजनेश्वर' ये शब्द समानलिङ्ग अर्थात् पुंल्लिङ्ग ही हैं, अतः इनका द्वन्द्व किया ही गया है। **दूसरा एकशेष जैसे**—'पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः (२।६।३१)' इस वाक्यसे 'श्वश्रू और श्वशुर' इन दोनों शब्दोंके लिङ्ग कह दिये गये हैं; अतएव 'श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ (२।६।३७)' यहाँ 'श्वश्रू और श्वशुर' इन दोनों शब्दों का 'एकशेष' किया ही गया है। **तीसरा सङ्कर जैसे**—'श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी·········(१।६।३)' यहाँ पहले स्त्रीलिङ्गवाले 'श्रुतिः' शब्दको कहनेके उपरान्त पुंल्लिङ्गवाले 'वेद और आम्नाय' इन दो शब्दोंको कह कर फिर स्त्रीलिङ्गवाले 'त्रयी' शब्दको कहा गया है। 'प्रायशः' इस शब्दको कहनेसे 'पयः कीलालममृतं······(१।१०।३)'–'दुग्धं क्षीरं पयः समम्(२।९।५१)' इत्यादि वाक्योंसे यद्यपि 'पयस्' शब्दको नपुंसकलिङ्ग कह दिया गया है; तथापि 'पयः क्षीरं पयोऽम्बु च (३।३।२३३)' यहाँ 'अम्बुक्षीरे तु पयसी' इस तरह

१ त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति।
२ निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं—
३ त्वन्ताथादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

एकशेष नहीं करनेपर भी कोई दोष (प्रतिज्ञाहानि) नहीं है। इसी तरह अन्यान्य उदाहरण भी समझने चाहिये)॥

१ तीनों लिङ्ग (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) हैं, यह बतलानेके लिये इस ग्रंथमें **'त्रिषु'**, पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों लिङ्ग हैं, यह बतलानेके लिये **'द्वयोः'** ये शब्द कहे गये हैं। **(पहला तीनों लिङ्ग बतलानेके लिये जैसे—** '······मण्डलं त्रिषु (१।३।१५)' यहाँ 'त्रिषु' शब्द कहनेसे 'मण्डल' शब्दके तीनों लिङ्ग (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) होते हैं। **दूसरा स्त्रीलिङ्ग बतलानेके लिये जैसे—** '······अशनिर्द्वयोः (१।१।४७)' यहाँ 'द्वयोः' शब्दके कहनेसे 'अशनि' शब्द पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग होता है)॥

विशेषः—पुंल्लिङ्ग को बतलाने के लिये **'ना, पुमान्, पुंसि······'** स्त्रीलिङ्ग को बतलानेके लिये **'स्त्री, स्त्रियाम्······'** और नपुंसकलिङ्ग को बतलानेके लिये **'क्लीबम्······'** शब्द कहे गये हैं। इनके उदाहरण स्वयं समझ लेना चाहिये॥

२ जहाँ जिस लिङ्गका निषेध किया गया है, उस निषिद्ध (मना किये हुए) लिङ्गके अतिरिक्त शेष (बाकी) लिङ्ग उस शब्दके होते हैं। (**जैसे**—'संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री······(१।४।२०)' यहाँ 'अस्त्री' इस शब्दसे 'संवत्सर' आदि चार शब्दोंके स्त्रीलिङ्गका निषेध करनेसे उक्त चार शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों में हैं)॥

३ जिस शब्दके अन्तमें 'तु' या आदिमें 'अथ' शब्द हों, ऐसे, '१ नाम-पद, २ लिङ्गपद, ३ सर्वनामपद और ४ अव्ययपद' इन चारोंका पहलेवाले (पूर्वमें रहनेवाले) शब्दोंके साथमें सम्बन्ध नहीं होता है। (क्रमशः उदाहरण—**पहला (नामपद) त्वन्त** ('तु' अन्तवाला) जैसे—'···और्वस्तु वाडवो वडवानलः (१।१।५६)' यहाँ 'और्व' शब्दके आगे (अन्तमें) 'तु' शब्द है; अतः 'और्व' शब्दका सम्बन्ध आगेवाले 'वाडव' ही शब्दके साथ है, पूर्व (पहले) वाले शब्दके साथ नहीं। **दूसरा (लिङ्गपद) त्वन्त जैसे**— 'अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् (१।३।१२)' यहाँ 'पुंसि' इस शब्दके

१. अथ स्वर्गवर्गः

१ स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः ।

अन्तमें 'तु' शब्द है; अत एव 'पुंसि' इस पदका आगेवाले 'अन्तर्धि' शब्दके साथ होनेसे वही (अन्तर्धि शब्द ही) पुंल्लिङ्ग है, पूर्व (पहलेवाला) नहीं। **तीसरा (सर्वनामपद) त्वन्त जैसे**—'गोष्ठं गोष्ठानकं तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् (२।९।१३)' यहाँ 'तत्' इस सर्वनाम पद के आगे 'तु' शब्द होनेसे उसका सम्बन्ध आगेवाले 'गौष्ठीन' शब्दके साथ है, पूर्ववाले 'गोष्ठानक' शब्दके साथ नहीं। **चौथा (अव्ययपद) त्वन्त जैसे**—'वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी (१।२।२)' यहाँ 'वा' इस अव्यय पदके अन्तमें 'तु' शब्द है, अतः 'वा' पदका सम्बन्ध 'पुंसि' के साथ होनेसे 'आकाश और विहायस्' ये ही दो शब्द विकल्पसे पुंल्लिङ्ग होते हैं, पूर्ववाला 'विष्णुपद' शब्द नहीं। इसी तरहसे **पहला (नामपद) अथादि ('अथ' शब्द आदिमें हो ऐसा) जैसे**—'मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञानमविद्या······(१।५।७)' यहाँ 'अज्ञान' शब्दके पूर्वमें (पहले) 'अथ' शब्द रहनेसे वह 'अज्ञान' शब्द आगेवाले 'अविद्या' शब्दका ही पर्याय है, पूर्ववाले 'अपवर्ग' शब्दका नहीं। **दूसरा (लिङ्गपद) अथादि जैसे**—'शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं···(१।४।२६)' यहाँ 'त्रिषु' इस लिंगपदके आदिमें 'अथ' शब्द रहनेसे पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गके अर्थमें प्रयुक्त 'त्रिषु' इस शब्दका आगेवाले 'द्रव्ये' इसके साथ सम्बन्ध होनेसे 'शस्त' शब्द द्रव्य ही अर्थमें त्रिलिंग है, पूर्ववाले शब्दोंका पर्यायवाचक (कल्याणमात्र का वाचक) होनेपर त्रिलिंग नहीं है। इसी तरह तीसरे और चौथे अर्थात् सर्वनामपद और अव्ययपदके भी अथादिका उदाहरण समझना चाहिये) ॥

विशेषः—यहाँ 'अथ' शब्द 'अथो' शब्दका उपलक्षण है, अतः 'अथ'के तुल्य 'अथो' शब्द भी जिसके आदिमें रहे, उसका सम्बन्ध भी पूर्ववाले शब्दके साथ नहीं होता है। (जैसे—'·········साम सान्त्वमथो समौ—' 'भेदोपजापावु·········(२।८।२१)' यहाँ 'समौ'के आदि में 'अथो' शब्दके रहने से 'समौ' इस शब्दका सम्बन्ध आगेवाले 'भेद और उपजाप' इन्हीं शब्दों के साथ होगा, पूर्ववाले 'सान्त्व' शब्द के साथ नहीं)। इसी तरह अन्यत्र भी अन्यान्य उदाहरणोंको स्वयं समझ लेना चाहिये ॥

१ स्वः (=स्वर् अ०), स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः, सुरलोकः

सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

१ अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः ।
सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥
आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ।
आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥
बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ।
वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥
२ आदित्यविश्ववसवस्तुषिताऽऽभास्वरानिलाः ।
महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

(५ पु), द्यौः (= द्यो), द्यौः (= दिव् । २ स्त्री), त्रिविष्टपम् (न । + त्रिपिष्टपम्), 'स्वर्ग' के ९ नाम हैं ॥

१ अमरः, निर्जरः, देवः, त्रिदशः, विबुधः, सुरः, सुपर्वा (=सुपर्वन्), सुमनाः (= सुमनस्), त्रिदिवेशः, दिवौकाः (= दिवौकस् । + दिवोकाः), आदितेयः, दिविषत् (=दिविषद्), लेखः, अदितिनन्दनः, आदित्यः, ऋभुः, अस्वप्नः, अमर्त्यः, अमृतान्धाः (= अमृतान्धस्), बर्हिर्मुखः, क्रतुभुक् (= क्रतुभुज्), गीर्वाणः (+ गीर्बाणः), दानवारिः, वृन्दारकः (२४ पु), दैवतम् (पु न), देवता (स्त्री), 'देवता' के २६ नाम हैं ॥

२ आदित्याः १२, विश्वे १०, वसवः ८, तुषिताः ३६ या ३६, आभास्वराः ६४, अनिलाः ४९, महाराजिकाः २२० या २३६ या ४०००, साध्याः १२, रुद्राः ११, (९ पु) 'गणदेवता' देवताओंके एक-एक गण (समूह) के ९ नाम हैं । इन गणदेवताओंके जितने-जितने भेद होते हैं, वे प्रत्येकके आगे लिख दिये गये हैं[१] ॥

---

१. 'आदित्या द्वादश प्रोक्ता विश्वेदेवा दश स्मृताः ॥
वसवश्चाष्ट संख्याताः षट्त्रिंशत्तुषिता मताः ॥ १ ॥
आभास्वराश्चतुःषष्टिर्वाताः पञ्चाशदूनकाः ॥
महाराजिकनामानो द्वे शते विंशतिस्तथा ॥ २ ॥
साध्या द्वादश विख्याता रुद्रा एकादश स्मृताः ॥' इति ॥
एषां नामानि परिशिष्टे द्रष्टव्यानि ।

१ विद्याधराऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः ।
[1]पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ॥ ११ ॥
२ असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः ।
शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥
३ सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ।
समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥
षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः ।

१ विद्याधराः ('जीमूतवाहन,…'), अप्सरसः (स्त्री, नि० ब०, देवताओंकी स्त्रियाँ घृताची, मेनका, रम्भा,……), यक्षाः (कुबेर,……'), रक्षांसि (= रक्षस्, न । लङ्कावासी, माया करनेवाले), गन्धर्वाः (देवताओंके यहाँ गानेवाले-'तुम्बुरु,……'), किन्नराः (घोड़ेका मुँह तथा आदमीके शरीरवाले और आदमीका मुँह तथा घोड़ेके शरीरवाले), पिशाचाः (मांसभोजी भूतविशेष), [2]गुह्यकाः ('मणिभद्र,……'), सिद्धाः ('विश्वावसु……'), भूताः (शिव के गणविशेष—प्रमथ… । शे० ८ पु), 'देवयोनि' के १० नाम हैं । (इनका प्रयोग तीनों वचनोंमें होता है)॥

२ असुरः (+ आसुरः), दैत्यः, दैतेयः, दनुजः, इन्द्रारिः, दानवः, शुक्रशिष्यः, दितिसुतः, पूर्वदेवः, सुरद्विट् (= सुरद्विष् । १० पु) 'दैत्य' के १० नाम हैं ॥

३ सर्वज्ञः, सुगतः, बुद्धः, धर्मराजः, तथागतः, समन्तभद्रः, [3]भगवान् (= भगवत्), [4]मारजित्, लोकजित्, जिनः, [5]षडभिज्ञः, [6]दशबलः, अद्वयवादी

१. 'सिद्धगुह्यकभूता हि पिशाचा देवयोनयः' इति भागुरिः पपाठेति क्षी० स्वा० ॥

२. 'निधिं रक्षन्ति ये यक्षास्ते स्युर्गुह्यकसंज्ञकाः' ॥ इति ॥

३. 'ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः । वैराग्यस्याथ मोक्षस्य षण्णां भग इतीरणा ॥'
इति पूर्वोक्ताः षड् भगा यस्य स 'भगवान्' इति ॥

४. मारान् कामक्रोधादीन् बौद्धसम्मतान् स्कन्धमार–क्लेशमार–मृत्युमार–देवपुत्रमारांश्च जयतीति मारजित् ।

५. 'दिव्यं चक्षुःश्रोत्रम् १, परचित्तज्ञानम् २, पूर्वनिवासानुस्मृतिः ३, आत्मज्ञानम् ४, वियद्गमनम् ५, कायव्यूहसिद्धिः ६' इति षट्सु—'दानम् १, शीलम् २, क्षान्तिः ३, वीर्यम् ४, ध्यानम् ५, प्रज्ञा ६' इति षट्सु वा अभिज्ञा ज्ञानं यस्य स 'षडभिज्ञः' इति ॥

६. 'दानं १ शीलं २ क्षमा ३ वीर्यं ४ ध्यानं ५ प्रज्ञा ६ बलानि ७ च ॥
उपायः ८ प्रणिधि ९ र्ज्ञानं १० दश बुद्धबलानि वै ॥ १ ॥' इति ॥

मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः १शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥
स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ।
गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥
२ ब्रह्माऽऽत्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः ।
हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयंभूश्चतुराननः ॥ १६ ॥
धाताऽब्जयोनिर्द्रुहिणो विरञ्चिः कमलासनः ।
स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड् विधिः ॥ १७ ॥
३ 'नाभिजन्माण्डजः पूर्वो निधनः कमलोद्भवः (१)
सदानन्दो रजोमूर्तिः सत्यको हंसवाहनः' (२)
४ विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः ।
दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।
पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥

(=अद्वयवादिन्), विनायकः, मुनीन्द्रः, श्रीघनः, शास्ता (=शास्तृ), मुनिः (१८ पु) 'बुद्ध' के १८ नाम हैं ॥

१ शाक्यमुनिः, शाक्यसिंहः, सर्वार्थसिद्धः, शौद्धोदनिः, गौतमः, अर्कबन्धुः, मायादेवीसुतः (७ पु), 'बुद्धके अवान्तरभेद, 'सप्तम बुद्ध' के ७ नाम हैं ॥

२ ब्रह्मा (ब्रह्मन्), आत्मभूः, सुरज्येष्ठः, परमेष्ठी (=परमेष्ठिन्), पितामहः, हिरण्यगर्भः, लोकेशः, स्वयम्भूः, चतुराननः, धाता(=धातृ), अब्जयोनिः, द्रुहिणः (= द्रुघणः), विरञ्चिः(+ विरिञ्चिः), कमलासनः, स्रष्टा (= स्रष्टृ), प्रजापतिः, वेधाः (वेधस्), विधाता (= विधातृ), विश्वसृट् (= विश्वसृज्), विधिः (२० पु), 'ब्रह्मा' के २० नाम हैं ॥

३ [नाभिजन्मा (=नाभिजन्मन्), अण्डजः, पूर्वः, निधनः, कमलोद्भवः, सदानन्दः, रजोमूर्तिः, सत्यकः, हंसवाहनः (९ पु), 'ब्रह्मा' के ९ नाम हैं ॥]

४ विष्णुः, नारायणः (+ नरायणः), कृष्णः, वैकुण्ठः, विष्टरश्रवाः (= विष्टरश्रवस्), दामोदरः, हृषीकेशः, केशवः, माधवः, स्वभूः, दैत्यारिः, पुण्डरीकाक्षः, गोविन्दः, गरुडध्वजः, पीताम्बरः, अच्युतः, शार्ङ्गी (=शार्ङ्गिन्), विष्व-

१. विपश्यी शिखी विश्वभूः ककुच्छन्दश्च काञ्चनः । काश्यपश्च, सप्तमस्तु शाक्यसिंहोऽर्कबान्धवः॥
तथा राहुलसूः सर्वार्थसिद्धो गौतमान्वयः । मायाशुद्धोदनसुतो देवदत्तग्रजश्च सः ॥
(अभि० चिन्ता० २।१४९-१५१)

उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।
पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥
देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।
वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥
विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।
१ 'पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः (३)
जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दनः' (४)
२ वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥
३ बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ।
रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥
नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्को मुसली हली ।
सङ्कर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥
४ मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।
कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥

वसेनः (+ विश्वक्सेनः), जनार्दनः, उपेन्द्रः, इन्द्रावरजः, चक्रपाणिः, चतुर्भुजः, पद्मनाभः, मधुरिपुः, वासुदेवः, त्रिविक्रमः, देवकीनन्दनः, शौरिः (+ सौरिः), श्रीपतिः, पुरुषोत्तमः, वनमाली (=वनमालिन्), बलिध्वंसी (=बलिध्वंसिन्), कंसारातिः, अधोक्षजः, विश्वम्भरः, कैटभजित्, विधुः, श्रीवत्सलाञ्छनः (३९ पु), कृष्ण भगवान् के ३९ नाम हैं ॥

[१ पुराणपुरुषः, यज्ञपुरुषः, नरकान्तकः, जलशायी (=जलशायिन्), विश्वरूपः, मुकुन्दः, मुरमर्दनः (७ पु), कृष्णभगवान् के ७ नाम हैं ॥]

२ वसुदेवः, आनकदुन्दुभिः (२ पु), 'कृष्णके पिता' के २ नाम हैं ॥

३ बलभद्रः, प्रलम्बघ्नः, बलदेवः, अच्युताग्रजः, रेवतीरमणः, रामः, कामपालः, हलायुधः, नीलाम्बरः, रौहिणेयः, तालाङ्कः, मुसली (= मुसलिन् । + मुषली=मुषलिन्), हली (=हलिन्), सङ्कर्षणः, सीरपाणिः, कालिन्दीभेदनः, बलः (१७ पु), 'बलदेव' के १७ नाम हैं ॥

४ मदनः, मन्मथः, मारः, प्रद्युम्नः, मीनकेतनः, कन्दर्पः, दर्पकः, अनङ्गः, कामः, पञ्चशरः, स्मरः, शम्बरारिः (+ सम्बरारिः), मनसिजः, कुसुमेषुः,

शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः ।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २६ ॥
१ 'अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका (५)
नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः (६)
२ उन्मादनस्तापनश्च शोषणः स्तम्भनस्तथा (७)
सम्मोहनश्च कामस्य पञ्चबाणाः प्रकीर्तिताः' (८)
३ ब्रह्मसूर्विश्वकेतुः स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।
४ लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २७ ॥
५ 'इन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा (९)
भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका' (१०)

अनन्यजः, पुष्पधन्वा (=पुष्पधन्वन्), रतिपतिः, मकरध्वजः, आत्मभूः (१९ पु), 'कामदेव' 'प्रद्युम्न' श्रीकृष्णपुत्रके १९ नाम हैं ॥

१ [अरविन्दम् , अशोकम् , चूतम्, नवमल्लिका (स्त्री), नीलोत्पलम् (शे० ४ न), ये ५ 'कामदेवके बाण' हैं ॥]

२ [उन्मादन, तापन, शोषण, स्तम्भन, सम्मोहन, ये क्रमसे पूर्वोक्त ५ 'कामदेवके बाणोंके धर्म' हैं ॥]

३ ब्रह्मसूः, विश्वकेतुः (+ ऋश्यकेतुः, ऋष्यकेतुः, झषकेतुः), अनिरुद्धः, उषापतिः (४पु), 'कामदेवके पुत्र' के ४ नाम हैं । (पहलेवाले दो नाम कामदेवके तथा अन्तवाले दो नाम अनिरुद्धके हैं, ऐसा भी किसी का मत है) ॥

४ लक्ष्मीः, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्रीः, हरिप्रिया (६ स्त्री), 'लक्ष्मी' के ६ नाम हैं ॥

५ [इन्दिरा, लोकमाता (=लोकमातृ), मा, क्षीरोदतनया (+ क्षीराब्धि-

---

१. 'उन्मादनं शोचनं च तथा संमोहनं विदुः ।
शोषणं मारणं चैव पञ्च बाणा मनोभुवः ॥ १ ॥
मदनोन्मादनौ चैव मोहनः शोषणस्तथा ।
सन्दीपनः समाख्याताः पञ्च बाणा इमे स्मृताः ॥ २ ॥'
ईदृशः क्षी० स्वा० पाठः ॥

१ शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सुदर्शनः ।
कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ॥ २८ ॥
२ 'चापः शार्ङ्गं मुरारेस्तु श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम् (११)
अश्वाश्च शैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः (१२)
सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवश्चानुजो गदः' (१३)
३ गरुत्मान् गरुडस्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।
नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ २९ ॥
४ शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।
ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्करश्चन्द्रशेखरः ॥ ३० ॥
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।
मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥
उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।

तनया…), रमा, भार्गवी, लोकजननी, क्षीरसागरकन्यका (८ स्त्री), **'लक्ष्मी'** के ८ नाम हैं ॥]

१ पाञ्चजन्यः (पु)—**'विष्णुका शङ्ख'**, सुदर्शनः (पु न)—**'विष्णुका चक्र'**, कौमोदकी (स्त्री)—**'विष्णुकी गदा'**, नन्दकः (पु)—**'विष्णुकी तलवार'** और कौस्तुभः (पु)—**'विष्णुका मणि'** है ॥

२ शार्ङ्गम् (न)–**'विष्णुका धनुष'**, श्रीवत्सः (पु)–**'विष्णुका चिह्न'**, शैब्यः, सुग्रीवः, मेघपुष्पः, बलाहकः (४ पु), ४ **'विष्णुके घोड़े'**, दारुकः (पु)–**'विष्णुका सारथी'** । उद्धवः (पु)—**'विष्णुका मन्त्री'** और गदः (पु) **'विष्णुका छोटा भाई'** है ॥]

३ गरुत्मान् (=गरुत्मत्), गरुडः, तार्क्ष्यः, वैनतेयः, खगेश्वरः, नागान्तकः, विष्णुरथः, सुपर्णः, पन्नगाशनः (९ पु) **'गरुड'** के ९ नाम हैं ॥

४ शम्भुः, ईशः, पशुपतिः, शिवः, शूली (= शूलिन्), महेश्वरः, ईश्वरः, शर्वः (+ सर्वः), ईशानः, शङ्करः, चन्द्रशेखरः, भूतेशः, खण्डपरशुः, गिरीशः, गिरिशः, मृडः, मृत्युञ्जयः, कृत्तिवासाः (=कृत्तिवासस्), पिनाकी (=पिनाकिन्), प्रमथाधिपः, उग्रः, कपर्दी (=कपर्दिन्), श्रीकण्ठः, शितिकण्ठः, कपालभृत् ,

वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३२ ॥
कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।
हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।
व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥
१ 'अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः' (१४)
२ कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवं धनुः ।
प्रमथाः स्युः पारिषदा ३ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३५ ॥
४ [1]'ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा (१५)
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः' (१६)

वामदेवः, महादेवः, विरूपाक्षः, त्रिलोचनः, कृशानुरेताः (=कृशानुरेतस्), सर्वज्ञः, धूर्जटिः, नीललोहितः, हरः (+हारः), स्मरहरः, भर्गः (+भर्ग्यः), त्र्यम्बकः, त्रिपुरान्तकः, गङ्गाधरः, अन्धकरिपुः, क्रतुध्वंसी (=क्रतुध्वंसिन्), वृषध्वजः, व्योमकेशः, भवः, भीमः, स्थाणुः, रुद्रः, उमापतिः (४८ पु) 'शिव' के ४८ नाम हैं ॥

१ [अहिर्बुध्न्यः, [2]अष्टमूर्तिः, गजारिः, महानटः (४ पु), 'शिव' के ४ नाम हैं ॥]

२ कपर्दः (पु) 'शिवका जटासमूह', अजगवम् (न । +अजकवम्), पिनाकः (पु), २ 'शिवका धनुष' और 'प्रमथाः' (पु) 'शिवके सभासद' हैं ॥

३ ब्राह्मी,······(स्त्री । आदि पदसे 'माहेश्वरी, कौमारी' इत्यादि आगे कहे हुए का संग्रह है) 'लोकमाताएँ' हैं ॥

४ [ब्राह्मी (स्त्री । +ब्रह्माणी), माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा (७ स्त्री), ये ७ 'लोकमातायें' हैं ॥]

---

१. 'ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही वैष्णवी तथा ॥
कौमारी चर्ममुण्डा च काली सङ्कर्षणीति च ॥ १ ॥' इति ॥
'ब्राह्मयाद्या मातरः स्मृताः' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'पृथिवी १ सलिलं २ तेजो ३ वायु ४ राकाश ५ मेव च ॥
सूर्या ६ चन्द्रमसौ ७ सोमयाजी ८ चेत्यष्ट मूर्तयः ॥१॥' इति यादवः ॥

१ विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा ।
२ 'अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा (१७)
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्ट सिद्धयः' (१८)
३ उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी ॥ ३६ ॥
शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला ।
अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाऽम्बिका ॥ ३७ ॥
४ 'आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा (१९)
५ कर्ममोटी तु चामुण्डा ६ चर्ममुण्डा तु चर्चिका' (२०)
७ विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः ।
अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ॥ ३८ ॥
८ कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ।
पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥
बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः ।

---

१ विभूतिः, भूतिः (२ स्त्री), ऐश्वर्यम् (न), 'ऐश्वर्य या सिद्धि' के ३ नाम हैं। (ये आगे कहे हुए 'अणिमा' आदि भेद से ८ प्रकार के हैं) ॥

२ [अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्तिः (५ स्त्री), प्राकाम्यम्, ईशित्वम् , वशित्वम् (३ न), ये ८ 'सिद्धियाँ' हैं ॥]

३ उमा, कात्यायनी, गौरी, काली (+ काला), हैमवती, ईश्वरी (+ ईश्वरा), शिवा (+ शिवी), भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, सर्वमङ्गला, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, मृडानी, चण्डिका, अम्बिका (१७ स्त्री), 'पार्वती' के १७ नाम हैं॥

४ [आर्या, दाक्षायणी, गिरिजा, मेनकात्मजा (४स्त्री) 'पार्वती' के ४ नाम हैं॥]

५ [कर्ममोटी, चामुण्डा (२ स्त्री) 'चामुण्डा' के २ नाम हैं ॥]

६ [चर्ममुण्डा, चर्चिका (+ चण्डिका २ स्त्री), 'चण्डिका'[1] के २ नाम हैं ॥]

७ विनायकः, विघ्नराजः, द्वैमातुरः, गणाधिपः, एकदन्तः, हेरम्बः, लम्बोदरः, गजाननः (८ पु), 'गणेश' के ८ नाम हैं ॥

८ कार्तिकेयः, महासेनः, शरजन्मा (=शरजन्मन्), षडाननः, पार्वतीनन्दनः, स्कन्दः, सेनानीः, अग्निभूः, गुहः, बाहुलेयः, तारकजित्, विशाखः, शिखिवाहनः,

---

१. 'चर्ममुण्डेति चण्डिका' इति क्षीरस्वामिपाठात् ।

षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥

१ "[1]शृङ्गी भृङ्गी रिटिस्तुण्डी नन्दिको नन्दिकेश्वरः" (२१)

२ इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिडौजाः पाकशासनः ।

वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः ॥ ४१ ॥

जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।

सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ४२ ॥

वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः ।

जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः ॥ ४३ ॥

सङ्क्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ।

आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षा३स्तस्य तु प्रिया ॥ ४४ ॥

पुलोमजा शचीन्द्राणी ४ नगरी त्वमरावती ।

षाण्मातुरः, शक्तिधरः, कुमारः, क्रौञ्चदारणः (+ क्रौञ्चदारणः । १७ पु), 'कार्तिकेय' के १७ नाम हैं ॥

१ [शृङ्गी (= शृङ्गिन्), भृङ्गी (= भृङ्गिन्), रिटिः, तुण्डी (=तुण्डिन्), नन्दिकः, नन्दिकेश्वरः (६पु), 'नन्दी' के ६ नाम हैं ॥]

२ इन्द्रः, मरुत्वान् (=मरुत्वत्), मघवा (=मघवन् । वै० मघवान्), बिडौजाः (= बिडौजस्), पाकशासनः, वृद्धश्रवाः (= वृद्धश्रवस्), सुनासीरः (+ शुनासीरः, शुनाशीरः), पुरुहूतः, पुरन्दरः, जिष्णुः, लेखर्षभः, शक्रः, शतमन्युः, दिवस्पतिः, सुत्रामा (= सुत्रामन् । + सूत्रामा), गोत्रभिद्, वज्री (=वज्रिन्), वासवः, वृत्रहा (=वृत्रहन्), वृषा (=वृषन्), वास्तोष्पतिः, सुरपतिः, बलारातिः, शचीपतिः, जम्भभेदी (=जम्भभेदिन्), हरिहयः, स्वाराट् (=स्वाराज्), नमुचिसूदनः, सङ्क्रन्दनः, दुश्च्यवनः, तुराषाट् (=तुरासाह्), मेघवाहनः, आखण्डलः, सहस्राक्षः, ऋभुक्षाः (ऋभुक्षिन् । ३५ पु), 'इन्द्र' के ३५ नाम हैं ॥

३ पुलोमजा, शची (+ सची), इन्द्राणी (३ स्त्री), 'इन्द्राणी' के ३ नाम हैं ॥

४ अमरावती (स्त्री), 'इन्द्रकी नगरी' उच्चैःश्रवाः (= उच्चैःश्रवस् । पु),

---

१. 'भृङ्गी भृङ्गरिटिस्तुण्डिनन्दिनौ नन्दिकेश्वरे ।' इति क्षी० स्वा० ॥

हय उच्चैःश्रवाः सूतो मातलिर्नन्दनं वनम् ॥ ४५ ॥
स्यात् प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः।
१ ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४६ ॥
२ ह्लादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः।
शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ॥ ४७ ॥
३ व्योमयानं विमानोऽस्त्री ४ नारदाद्याः सुरर्षयः।
५ स्यात्सुधर्मा देवसभा ६ पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥
७ मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका।
८ मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ४९ ॥

'इन्द्र का घोड़ा'; मातलिः (पु) 'इन्द्र का सारथि'; नन्दनम् (न) 'इन्द्र का उद्यान'; वैजयन्तः (पु). 'इन्द्र की अटारी'; जयन्तः, पाकशासनिः (२ पु) 'इन्द्र के पुत्र' के २ नाम हैं ॥

१ ऐरावतः, अभ्रमातङ्गः, ऐरावणः, अभ्रमुवल्लभः (४ पु), 'ऐरावत' अर्थात् इन्द्रके हाथीके ४ नाम हैं ॥

२ ह्लादिनी (स्त्री), वज्रम् (पु न), कुलिशम् , भिदुरम् (+ भिदिरम् । २ न), पविः, शतकोटिः, स्वरुः (= स्वरु । + स्वरुः=स्वरुस्), शम्बः (+ सम्बः, शंबः), दम्भोलिः (५ पु), अशनिः (पु स्त्री), 'वज्र' के १० नाम हैं ॥

३ व्योमयानम् (न), विमानः (पु न), 'पुष्पक विमान' या 'देवोंके 'विमानमात्र' के २ नाम हैं ॥

४ नारदः (पु)आदि शब्दसे 'तुम्बुरु, भरत, पर्वत, देवल······) 'देवर्षि' हैं ॥

५ सुधर्मा (= सुधर्मा, सुधर्मन्), देवसभा (२ स्त्री), 'देवसभा' के २ नाम हैं ॥

६ पीयूषम् (+ पेयूषम्), अमृतम् (२ न) सुधा (स्त्री), 'अमृत' के ३ नाम हैं ॥

७ मन्दाकिनी, वियद्गङ्गा, स्वर्णदी, सुरदीर्घिका (४ स्त्री), 'आकाशगङ्गा' के ४ नाम हैं ॥

८ मेरुः, सुमेरुः, हेमाद्रिः, रत्नसानुः, सुरालयः (५ पु), 'सुमेरु पर्वत' के ५ नाम हैं ॥

१ पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥
२ सनत्कुमारो वैधात्रः ३ स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ।
*नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५१ ॥
४ स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।
५ 'घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा (२२)
सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः' (२३)
६ हाहा हूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५२ ॥
७ अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।
कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥

---

१ मन्दारः, पारिजातकः, सन्तानः, कल्पवृक्षः (४ पु), हरिचन्दनम् (पु न), ये ५ 'देवताओं के वृक्ष' हैं ॥

२ सनत्कुमारः (= सनात्कुमारः), वैधात्रः (२ पु), 'सनकादि' के २ नाम हैं । ('आदि' शब्दसे 'सनक, सनन्दन, सनातन' का संग्रह है) ॥

३ स्वर्वैद्यौ, अश्विनीसुतौ, नासत्यौ, अश्विनौ, दस्रौ, आश्विनेयौ (६ पु-नि० द्वि० व०), 'अश्विनीकुमार' के ६ नाम हैं ॥

४ अप्सरसः (स्त्री, नि० ब० व०), 'उर्वशी आदि स्वर्ग की वेश्याओं' का १ नाम है ॥

५ (घृताची, मेनका, रम्भा, उर्वशी, तिलोत्तमा, सुकेशी, मञ्जुघोषा (७ स्त्री), इत्यादि उन 'अप्सराओं' के विशेष नाम हैं) ॥

६ हाहाः (+ हहाः), हूहूः (२ पु), इत्यादि 'देवताओं के यहां गानेवाले गन्धर्व' (पु) हैं । 'आदि शब्दसे 'चित्ररथ, विश्वावसु······' का संग्रह है ॥

७ अग्निः, वैश्वानरः, वह्निः, वीतिहोत्रः, धनञ्जयः, कृपीटयोनिः, ज्वलनः, जातवेदाः (जातवेदस्), तनूनपात् 'बर्हिः (=बर्हिस् , बर्हिष् । + बर्हिः — बर्हि)'

---

* 'भागुरिस्त्वाह—'नासत्यदस्रौ यमजावर्कजावश्विनौ यमौ ॥'
नासत्यसहितौ दस्राविति व्यासेयं न त्वेको नासत्योऽन्यो दस्र इति इति क्षी० स्वा० ॥

बर्हिःशुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः ।
आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥
रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ।
हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥
सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
शुचिरप्पित्तं १ मौर्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥ ५६ ॥
२ वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।
३ त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः ४ सन्तापः संज्वरः समौ ॥ ५७ ॥
५ 'उल्का स्यान्निर्गतज्वाला ६ भूतिर्भसितभस्मनी (२४)

शुष्मा (=शुष्मन् । म० बर्हिःशुष्मा=बर्हिःशुष्मन्), कृष्णवर्त्मा (=कृष्णवर्त्मन्), शोचिष्केशः, उषर्बुधः, आश्रयाशः (+ आशयाशः), बृहद्भानुः, कृशानुः, पावकः, अनलः, रोहिताश्वः (+ लोहिताश्वः), वायुसखः, शिखावान् (= शिखावत्), आशुशुक्षणिः, हिरण्यरेताः (=हिरण्यरेतस्), हुतभुक् (=हुतभुज्), दहनः, हव्यवाहनः, *सप्तार्चिः (=सप्तार्चिष् । + सप्तार्चिः + सप्तार्चि), दमुनाः, (=दमुनस् । + दमूनाः=दमूनस्), शुक्रः, चित्रभानुः, विभावसुः, शुचिः (३२ पु), अप्पित्तम् (न), 'अग्नि' के ३४ नाम हैं ॥

१ और्वः (+ ऊर्वः), वाडवः, वडवानलः (३ पु), 'वडवानल' के ३ नाम हैं ॥

२ ज्वालः, कीलः (२ पु स्त्री), अर्चिः (= अर्चिष्, अर्चिस् । + अर्चिः = अर्चि । स्त्री न), हेतिः, शिखा (२ स्त्री), 'आग की लहर' के ५ नाम हैं ॥

३ स्फुलिङ्गः, अग्निकणः (२ त्रि), 'चिनगारी' के २ नाम हैं ॥

४ सन्तापः, संज्वरः (२ पु), 'अग्नि के ताप' के २ नाम हैं ॥

५ [उल्का (स्त्री), 'निकली हुई ज्वाला' अर्थात् तारा टूटने या लुक का १ नाम है] ॥

६ [भूतिः (पु स्त्री), भसितम्, भस्म (=भस्मन् । २ न), क्षारः

---

*'काली १, कराली २, मनोजवा ३, सुलोहिता ४, सुधूम्रवर्णा ५, स्फुलिङ्गिनी ६, विश्वरुचा ७' इति—
कराली धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता। सुवर्णा पद्मरागा च सप्त जिह्वा विभावसोः॥
वाचस्पत्युक्ता इति वा सप्तार्चिष इत्यकथेयम् ॥

क्षारो रक्षा च १ दावस्तु दवो वनहुताशनः' (२५)
२ धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट्।
कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड् यमः ॥ ५८ ॥
कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः।
३ राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशरः ॥ ५९ ॥
रात्रिञ्चरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः।
यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥
४ प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्पतिः।
५ श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६१ ॥
पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः।
समीर-मारुत-मरुज्जगत्प्राण-समीरणाः ॥ ६२ ॥
नभस्वद्वात-पवन-पवमान प्रभञ्जनाः।

(पु), रक्षा (स्त्री), 'राख' के ५ नाम हैं] ॥

१ [दावः, दवः, वनहुताशनः (३ पु), 'दावाग्नि' के ३ नाम हैं] ॥

२ धर्मराजः, पितृपतिः, समवर्ती (=समवर्तिन्), परेतराट् (—परेतराज्), कृतान्तः, यमुनाभ्राता (=यमुनाभ्रातृ), शमनः, यमराट् (=यमराज्), यमः, कालः, दण्डधरः, श्राद्धदेवः, वैवस्वतः, अन्तकः (१४ पु), 'यमराज' के १४ नाम हैं।

३ राक्षसः, कौणपः, क्रव्यात् (=क्रव्याद्), क्रव्यादः, अस्रपः (+ अस्रपः), आशरः (+ आशिरः), रात्रिञ्चरः, रात्रिचरः, कर्बुरः (+ कर्बरः), निकषात्मजः, यातुधानः (+ जातुधानः), पुण्यजनः, नैर्ऋतः (१३ पु), यातु, रक्षः (=रक्षस् । २ न) 'राक्षस' के १५ नाम हैं ॥

४ प्रचेताः (= प्रचेतस्), वरुणः (+ वरणः), पाशी (=पाशिन्), यादसांपतिः, अप्पतिः (५ पु), 'वरुण' के ५ नाम हैं ॥

५ श्वसनः, स्पर्शनः, वायुः, मातरिश्वा (= मातरिश्वन्), सदागतिः, पृषदश्वः, गन्धवहः, गन्धवाहः, अनिलः, आशुगः, समीरः, मारुतः, मरुत् , जगत्प्राणः (=म० जगत् , प्राणः), समीरणः, नभस्वान् (=नभस्वत्), वातः (+ वातिः), पवनः, पवमानः, प्रभञ्जनः, (२० पु) 'हवा' के २० नाम हैं ॥

१ 'प्रकम्पनो महावातो २ झंझावातः सवृष्टिकः' (२६)
३ प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ॥ ६३ ॥
४ 'हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले (२७)
उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः' (२८)
शरीरस्था इमे ५ रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ।
जवो ६ऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥
सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ।
७ सततानारताश्रान्तसन्तताविरतानिशम् ॥ ६५ ॥
नित्यानवरताजस्रमप्य ८ थातिशयो भरः ।
अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ ६६ ॥
तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च ।

---

१ [प्रकम्पनः (पु), 'आँधी' का १ नाम है] ॥

२ [झंझावातः (पु) 'वर्षाके सहित हवा' अर्थात् झपसी का १ नाम है] ॥

३ प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, व्यानः (५ पु), ये ५ 'शरीरमें रहने वाले वायु' हैं ॥

४ [हृदयमें 'प्राण', गुदामें 'अपान', नाभिमण्डलमें' 'समान', कण्ठदेशमें 'उदान' और सम्पूर्ण शरीरमें 'व्यान' (५ पु) नामक वायु रहता है] ॥

५ रंहः (= रंहस्), तरः (=तरस् । २ न), रयः, स्यदः, जवः (३ पु), 'वेग'के ५ नाम हैं ॥

६ शीघ्रम्, त्वरितम् , लघु, क्षिप्रम्, अरम् , द्रुतम्, सत्वरम्, चपलम् , तूर्णम् , अविलम्बितम् , आशु (११ न), 'शीघ्र' के ११ नाम हैं ॥

७ सततम्, अनारतम्, अश्रान्तम् , सन्ततम्, अविरतम्, अनिशम्, नित्यम्, अनवरतम् , अजस्रम् (९ न) 'नित्य' के ९ नाम हैं। (इनमेंसे 'सतत' शब्दका प्रयोग जहाँ बीच में दूसरा काम नहीं किया जाय, वहीं होता है; जैसे—यह काम सतत करता है अर्थात् निरन्तर करता है) ॥

८ अतिशयः, भरः (२ पु), अतिवेलम्, भृशम्, अत्यर्थम्, अतिमात्रम्, उद्गाढम्, निर्भरम्, तीव्रम्, एकान्तम्, नितान्तम्, गाढम्, बाढम्, दृढम्

१ क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ॥ ६७ ॥
२ कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड् गुह्यकेश्वरः ।
मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥
किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ।
यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ॥ ६९ ॥
३ अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।
कैलासः स्थानमलका पूर्विमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥
४ स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ।

(१२ न), 'अतिशय' अर्थात् अधिकके १४ नाम हैं । (इनमेंसे 'अतिशय' शब्दका प्रयोग जहाँ किसी काम को अनेक बार किया जाय, वहीं होता है ; जैसे—अतिशय करता है अर्थात् बारम्बार करता है) ॥

१ 'शीघ्रम्.........दृढम्' तक शब्दोंका प्रयोग द्रव्यवाचक न रहने पर नपुंसकलिङ्गमें ही होता है और द्रव्यवाचक होनेपर तीनों लिङ्गों में उनका प्रयोग होता है । जैसे पहले उदा०—'भृशं धनम्, भृशं पण्डितः, भृशं पठति, भृशं दृष्टा......' इनमें 'भृशम्' शब्द केवल न० है । दूसरा उदा०—'शीघ्रोऽश्वः, शीघ्रा लक्ष्मीः, शीघ्रं गमनम्.........' इनमें 'शीघ्रम्' शब्द त्रि० है । 'भरः, अतिशयः' इन दोनों शब्दोंका प्रयोग केवल पु० में ही होता है, अर्थात् ये विशेष्याधीन नहीं होते) ॥

२ कुबेरः, त्र्यम्बकसखः, यक्षराट् (= यक्षराज्), गुह्यकेश्वरः, मनुष्यधर्मा (= मनुष्यधर्मन्), धनदः, राजराजः, धनाधिपः, किन्नरेशः, वैश्रवणः, पौलस्त्यः, नरवाहनः, यक्षः, एकपिङ्गः, ऐलविलः (+ ऐडविलः, ऐडविडः) श्रीदः, पुण्यजनेश्वरः (१७ पु) 'कुबेर' के १७ नाम हैं ॥

३ चैत्ररथम् (न) 'कुबेरका उद्यान', नलकूबरः (पु) 'कुबेरका पुत्र', कैलासः (पु) 'कुबेरका निवासस्थान', अलका (स्त्री) 'कुबेरकी नगरी', पुष्पकम् (न) 'कुबेर का विमान' है ॥

४ किन्नरः, किम्पुरुषः, तुरङ्गवदनः, मयुः (४ पु), 'किन्नर' अर्थात् 'कुबेरके दूत' के ४ नाम हैं ॥

१ निधिर्ना शेवधिर्भेदाः २ पद्मशङ्खादयो निधेः ॥ ७१ ॥
३ *'महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ (२९)
मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव' (३०)

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

२. अथ व्योमवर्गः ॥

४ द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् ।
नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥
वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।
५ 'विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् (३१)

---

१ निधिः, शेवधिः (२ पु), 'निधिसामान्य' अर्थात् खजानामात्र के २ नाम हैं ॥

२ पद्मः, शङ्खः (२ पु)······'खजानेके भेद' हैं ॥

३ [महापद्मः, पद्मः, शङ्खः, मकरः, कच्छपः, मुकुन्दः, कुन्दः, नीलः, खर्वः (९ पु), ये ९ 'निधिविशेष' हैं] ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

२. अथ व्योमवर्गः ॥

४ द्यौः (= द्यो), द्यौः (=दिव् । २ स्त्री); अभ्रम्, व्योम (=व्योमन्), पुष्करम्, अम्बरम्, नभः (=नभस्), अन्तरिक्षम्, गगनम्, अनन्तम्, सुरवर्त्म (=सुरवर्त्मन्), खम्, वियत्, विष्णुपदम् (१४ न), आकाशम्, विहायः (=विहायस् । २ पु न); 'आकाश' के १६ नाम हैं ॥

५ [विहायसः, नाकः, द्युः (अ०), तारापथः, अन्तरिक्षम् (न), मेघाध्वा

---

* अयं श्लोकः श्रीहेमचन्द्राचार्यविरचिताभिधानचिन्तामणौ (२।१०७) नाममालायां समुपलभ्यते ॥

'पद्मोऽस्त्रियां महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव' ॥ १ ॥

इत्ययं व्याख्यासुधायाः पाठः ॥

तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाबिलम् (३२)
विहायाः शकुने पुंसि गगने पुंनपुंसकम् (३३)
इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ दिग्वर्गः ॥

१ दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ।
२ प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥
उत्तरा दिगुदीची स्याद् ३ दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।
४ 'अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् (३४)
प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु' (३५)
५ इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥

(=मेघाध्वन् । शे० ४ पु), महाबिलम् (न), विहायः (=विहायस्, पु न । किन्तु पक्षिवाचक होनेपर यह 'विहायस्' शब्द केवल पुंल्लिङ्ग ही है) 'आकाश' के ८ नाम हैं ॥ इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ दिग्वर्गः ॥

१ दिक् (=दिश्), ककुप् (=ककुभ्), काष्ठा, आशा, हरित् (५ स्त्री), 'दिशाओं' के ५ नाम हैं ॥

२ प्राची, अवाची (+अपाची), प्रतीची, उदीची (४ स्त्री), 'पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा' के क्रमशः १—१ नाम हैं ॥

३ दिश्यम् (त्रि), 'दिशामें होने वाले पदार्थ' का १ नाम है । (जैसे = दिश्यो गजः, दिश्या करिणी, दिश्यं वस्त्रम्···············) ॥

४ [अवाचीनम्, उदीचीनम्, प्रतीचीनम् प्राचीनम् (४ त्रि), 'दक्षिण, उत्तर, पश्चिम और पूर्व दिशामें होनेवाले पदार्थ' के क्रमशः १-१ नाम हैं]॥

५ इन्द्रः, वह्निः, पितृपतिः, नैर्ऋतः, वरुणः, मरुत्, कुबेरः, ईशः (८ पु), 'पूर्व दिशा, अग्नि कोण, दक्षिण दिशा, नैर्ऋत कोण, पश्चिम दिशा, वायव्य कोण, उत्तर दिशा और ईशान कोण' के क्रमशः १—१ स्वामी

कुबेर ईशाः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ।

१ 'रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः (३६)
बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः' (३७)

२ [1]'ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

३ [2]'करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥
ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।

हैं । (अर्थात् पूर्व दिशाके स्वामी इन्द्र, अग्निकोण के स्वामी अग्नि, दक्षिण दिशा के स्वामी यमराज,················) ॥

१ रविः, शुक्रः, महीसूनुः (मंगलः), स्वर्भानुः (राहुः), भानुजः (शनिः) विधुः (चन्द्रः), बुधः, बृहस्पतिः (८ पु) 'पूर्व दिशा, अग्नि कोण, आदि आठ दिशाओं' के क्रमशः १—१ ग्रह हैं । (जैसे—पूर्व दिशाका ग्रह 'सूर्य', अग्निकोणका 'शुक्र', दक्षिण दिशाका 'मङ्गल'·········] ॥

२ ऐरावतः, पुण्डरीकः, वामनः, कुमुदः, अञ्जनः पुष्पदन्तः, सार्वभौमः, सुप्रतीकः (८ पु), 'पूर्वदिशा, अग्नि कोण, दक्षिण दिशा, नैर्ऋतकोण, पश्चिम दिशा वायव्यकोण, उत्तर दिशा और ईशान कोण' के क्रमशः १–१ दिग्गज हैं । (अर्थात् पूर्व दिशाका दिग्गज 'ऐरावत', अग्नि कोणका दिग्गज 'पुण्डरीक', नैर्ऋत्यकोणका दिग्गज 'वामन···') ॥

३ अभ्रमुः, कपिला, पिङ्गला, अनुपमा, ताम्रकर्णी, शुभ्रदन्ती (+ शुभदन्ती), अङ्गना (+ अञ्जना), अञ्जनावती (८ स्त्री), 'पूर्व दिशा, अग्नि कोण, दक्षिण कोण आदि आठ दिशाओंकी हथिनी' और 'ऐरावत, पुण्डरीक, वामन आदि आठ दिग्गजोंकी स्त्रियों' के क्रमशः १–१ नाम हैं । (अर्थात् 'पूर्व दिशाकी हथिनी 'अभ्रमु' अग्नि कोणकी हथिनी 'कपिला', दक्षिण दिशाकी

---

१. 'ऐरावतः पुण्डरीकः कुमुदोऽञ्जनवामनाः' इति भागुरिः क्रमं व्यत्यस्तवान् । माऽपि 'ऐरावतः सुप्रतीकः इति' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'करिण्यो···नावती' अयमंशः क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नास्ति, किन्तु टीकायामुपलभ्यते । व्या० सु०, अम० वि० पुस्तके मूल एवास्ति । 'वामना चाञ्जनावती' इति क्षी० स्वा० पाठः ॥

१ क्लीबाऽव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक्स्त्रियाम् ॥ ५ ॥
२ अभ्यन्तरं त्वन्तरालं ३ चक्रवालं तु मण्डलम् ।
४ अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः ॥ ६ ॥
धाराधरो जलधरस्तडित्वान् वारिदोऽम्बुभृत् ।
घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ॥ ७ ॥
५ कादम्बिनी मेघमाला ६ त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।
७ स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च ॥ ८ ॥
८ शम्पाशतह्रदाह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ।
तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि ॥ ९ ॥

हथिनी 'पिङ्गला'……… । इसी तरह ऐरावतकी स्त्री 'अभ्रमु', पुण्डरीककी स्त्री 'कपिला', वामनकी स्त्री 'पिंगला'…………' ॥

१ अपदिशम् (न, अ), विदिक् (= विदिश् स्त्री । + प्रदिक् = प्रदिश्), '**दिशाओंके मध्यभाग**' अर्थात् 'कोण' के २ नाम हैं ॥

२ अभ्यन्तरालम्, अन्तरालम् (२ न) 'बीच' अर्थात् मध्यमभागके २ नाम हैं ॥

३ चक्रवालम्, मण्डलम् (२ न), '**घेरा, गोलाई**' के २ नाम हैं ॥

४ अभ्रम् (न), मेघः, वारिवाहः, स्तनयित्नुः, बलाहकः, धाराधरः, जलधरः (+ पयोधरः), तडित्वान् (= तडित्वत्), वारिदः, अम्बुभृत्, घनः, जीमूतः, मुदिरः, जलमुक् (= जलमुच् । + पयोमुक् = पयोमुच्), धूमयोनिः (१४ पु) '**बादल**' के १५ नाम हैं ॥

५ कादम्बिनी, मेघमाला (२ स्त्री), '**मेघ-समूह**' के २ नाम हैं ॥

६ अभ्रियम् (त्रि), '**मेघमें होनेवाले पदार्थ**' का १ नाम है ॥ (जैसे-अभ्रियो धारापातः, अभ्रियं जलम्, अभ्रिया आपः,………) ।

७ स्तनितम्, गर्जितम्, रसितम्,…………(३ न । 'आदि' शब्दसे ध्वनितम्,…………) '**मेघके गर्जन या तड़पने**' के ३ नाम हैं ॥

८ शम्पा (+ शम्बा), शतह्रदा, ह्रादिनी, ऐरावती, क्षणप्रभा, तडित्, सौदामनी (+ सौदामिनी), विद्युत्, चञ्चला, चपला (१० स्त्री) '**बिजली**' के १० नाम हैं ॥

१ स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो २ मेघज्योतिरिरम्मदः।
३ इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजुरोहितम् ॥ १० ॥
४ वृष्टिर्वर्षं ५ तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ।
६ धारासम्पात आसारः ७ सीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥
८ वर्षोपलस्तु करका ९ मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम्।
१० अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥

---

१ स्फूर्जथुः, वज्रनिर्घोषः (+ वज्रनिष्पेषः। २ पु), 'बिजली गिरने के समयकी आवाज' के २ नाम हैं ॥

२ मेघज्योतिः (= मेघज्योति,—मेघज्योतिः = मेघज्योतिष्), इरंमदः (२ पु०), 'बादलके प्रकाश' के २ नाम हैं। (यह प्रकाशप्रायः प्रातःकाल या सायंकाल बादलके लाल-पीला होनेसे होता है)

३ इन्द्रायुधम्, शक्रधनुः (= शक्रधनुष्), ऋजुरोहितम् (३ न) 'इन्द्र धनुष' के ३ नाम हैं। (म० पहलेवाले दो शब्द पहले अर्थ और 'रोहितम्' यह एक शब्द 'सीधा इन्द्रधनुष' इस अर्थ में है) ॥

४ वृष्टिः (स्त्री), वर्षम् (न) 'वर्षा' के २ नाम हैं ॥

५ अवग्रहः, अवग्राहः (२ पु), 'वर्षाके न होने' अर्थात् 'सूखा पड़ने' के २ नाम हैं ॥

६ धारासम्पातः, आसारः (२ पु), 'लगातार जोरसे वर्षा होने' के २ नाम हैं।

७ सीकरः (पु। + शीकरः) 'पानीके कण' अर्थात 'पानी की छोटी-छोटी बूँदों' का १ नाम है ॥

८ वर्षोपलः (पु), करका (पु स्त्री), 'बनौरी, ओला' के २ नाम हैं। (जो पानी बादलसे भी ऊँचे स्थानमें जाकर बर्फके समान कड़ा और सफेद होकर पानीके साथ गिरता है, जिसे पत्थर पड़ना कहते हैं ॥)

९ दुर्दिनम् (न), 'जब आकाशमें लगातार बादल घिरे रहें, ऐसे समय' का एक नाम है ॥

१० अन्तर्धा, व्यवधा (२ स्त्री), अन्तर्धिः (पु), अपवारणम्, अपिधा-

अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।
१ हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः ॥ १३ ॥
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।
अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः ॥ १४ ॥
द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।
२ कला तु षोडशो भागो ३ बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥
४ भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेंऽशके ।
५ चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना ६ प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥
७ कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।

नम्, तिरोधानम्, पिधानम्, आच्छादनम् (५ न), 'ढाँकने' अर्थात् 'कपड़े आदिसे छिपाने' के ८ नाम हैं ॥

१ हिमांशुः, चन्द्रमाः (= चन्द्रमस्), चन्द्रः, इन्दुः कुमुदबान्धवः, विधुः, सुधांशुः, शुभ्रांशुः,ओषधीशः, निशापतिः, अब्जः, जैवातृकः, सोमः (—सोमा, =सोमन्), ग्लौः,मृगाङ्कः (+ शशाङ्कः), कलानिधिः, द्विजराजः, शशधरः, नक्षत्रेशः, क्षपाकरः (+ निशाकरः । २० पु०), 'चन्द्रमा' के २० नाम हैं ॥

२ कला (स्त्री) 'पूर्ण चन्द्रमाके सोलहवें हिस्से' का १ नाम है। (चन्द्रमाकी *सोलह कलायें हैं, अतः सोलहवें भागको एक कला कहते हैं) ॥

३ बिम्बः (पु न), मण्डलम् (त्रि), 'सूर्य या चन्द्रमाके बिम्ब' के २ नाम हैं ॥

४ भित्तम् (न), शकलम्, खण्डम् (२ पु न), अर्धः (पु) 'खण्ड, टुकड़ा' के ४ नाम हैं; किन्तु 'बराबर का हिस्सा' इस अर्थ में 'अर्ध' शब्द नित्य नपुंसक है ॥

५ चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना (३ स्त्री), 'चाँदनी' के ३ नाम हैं ॥

६ प्रसादः (पु), प्रसन्नता (स्त्री), 'प्रसन्नता' के २ नाम हैं ॥

७ कलङ्कः, अङ्कः (२ पु), लाञ्छनम्, चिह्नम्, लक्ष्म (=लक्ष्मन्),

---

* 'अमृता मानदा पूषा पुष्टिस्तुष्टी रतिर्धृतिः ।
शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरङ्गदा ॥ १ ॥
पूर्णा चाथ पूर्णामृता कलाश्चन्द्रस्य षोडश ।' इति ॥

१ सुषमा परमा शोभा २ शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १७ ॥
३ अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।
प्रालेयं मिहिका चाथ ४ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १८ ॥
५ शीतं गुणे ६ तद्वदर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः ।
तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः ॥ १९ ॥
७ ध्रुव औत्तानपादिः स्या८दगस्त्यः कुम्भसम्भवः ।
मैत्रावरुणिर९स्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी ॥ २० ॥

लक्षणम् (+ लक्ष्मणम् ४ न) 'चिह्न' अर्थात् निशान के ६ नाम हैं ॥

१ सुषमा (स्त्री), 'अधिक शोभा' का १ नाम है ॥

२ शोभा (म० अभिख्या), कान्तिः, द्युतिः, छविः (४ स्त्री) 'शोभा' के ४ नाम हैं ॥

३ अवश्यायः, नीहारः, तुषारः (३ पु), तुहिनम्, हिमम्, प्रालेयम्, (३ न), मिहिका (स्त्री । + महिका), 'पाला पड़ने' अर्थात् 'ओस, हिम' के ७ नाम हैं ॥

४ हिमानी, हिमसंहतिः (२ स्त्री) 'बहुत पाला पड़ने' के २ नाम हैं ॥

५ शीतम् (न) 'यह शब्द 'गुणवाचक' है, अर्थात् शीतलता के अर्थमें नपुंसकलिंग में ही प्रयुक्त होता है' ॥

६ सुषीमः (+ सुषिमः, सुशीमः), शिशिरः, जडः, तुषारः, शीतलः, शीतः, हिमः (७ त्रि), 'ठण्डा गुणवाले द्रव्य' अर्थात् 'ठण्ढी हवा पानी' इत्यादिके ७ नाम हैं । 'तुषार, हिम, शीत इन तीन शब्दोंके निरूढ लक्षणासे द्रव्यादि अर्थात् हवा, पानी इत्यादि भी अर्थ हैं, अतः इन शब्दोंको दोनों जगह (गुण और गुणीके पर्याय में) कहा गया है' ॥

७ ध्रुवः, औत्तानपादिः (२ पु) 'उत्तानपाद' के पुत्र अर्थात् 'मनुके पौत्र ध्रुव' के २ नाम हैं ॥

८ अगस्त्यः (+ अगस्तिः), कुम्भसम्भवः (+ कुम्भजः), मैत्रावरुणिः (+ मैत्रावरुणः । ३ पु), 'अगस्त्य मुनि' के ३ नाम हैं ॥

९ लोपामुद्रा (स्त्री), 'अगस्त्य मुनिकी स्त्री' का १ नाम है ॥

१ नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाऽप्युडु वा स्त्रियाम् ।
२ दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा ३ अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥
४ राधा विशाखा ५ पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ ६ श्रविष्ठया ।
समा धनिष्ठा ७ स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥
८ मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।

---

१ नक्षत्रम्, ऋक्षम्, भम् (३ न), तारा, तारका (२ स्त्री), उडुः (स्त्री न), 'नक्षत्र' के ६ नाम हैं ॥

२ दाक्षायण्यः (स्त्री नि० ब० व०) 'अश्विनी, भरणी……@ सत्ताइस नक्षत्रों' का १ नाम है ॥

३ अश्वयुक् (= अश्वयुज्), अश्विनी (२ स्त्री), 'अश्विनी' के २ नाम हैं ॥

४ राधा, विशाखा (२ स्त्री) 'विशाखा नक्षत्र' के २ नाम हैं ॥

५ पुष्यः, सिध्यः, तिष्यः (३ पु), "पुष्य नक्षत्र' के ३ नाम हैं ॥

६ श्रविष्ठा, धनिष्ठा (२ स्त्री), 'धनिष्ठा नक्षत्र' के २ नाम हैं ॥

७ प्रोष्ठपदाः (+ प्रौष्ठपदाः), भाद्रपदाः (२ पु स्त्री, नि० ब० व०), पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र' के दो नाम हैं ॥

८ मृगशीर्षम्, मृगशिरः (= मृगशिरस् । २ न), आग्रहायणी (स्त्री),

---

१. अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी' मृगः ।
आर्द्रा-पुनर्वसू पुष्य आश्लेषा च ततो मघा ॥ १ ॥
पूर्वाफल्गुनिका ज्ञेया तत उत्तरफल्गुनी ।
हस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा मैत्रभं ततः ॥ २ ॥
ज्येष्ठा मूलं ततः पूर्वोत्तराषाढेऽभिजित्ततः ।
श्रवणश्च धनिष्ठा च ततश्च शततारकाः ॥ ३ ॥
पूर्वोत्तराभाद्रपदे रेवती तदनन्तरम् ।
अष्टाविंशतिराख्यातास्तारका मुनिसत्तमैः' ॥ ४ ॥ इति ।

तत्राभिजिन्मानमाह—
'अभिजिद्भोगमिदं वै वैश्वदेवान्त्यपादमखिलं च तत् ।
आद्याश्चतस्रो नाड्योऽथ हरिभस्यैतस्य रोहिणीविद्धम् ॥ १ ॥' इति ।

अश्विन्यादित्वत्राभिजितः स्वतन्त्रमानमतः सप्तविंशतिरेव नक्षत्राणि मुख्यानीत्यतस्तदेवोक्तमित्यवधेयम् ।

१ इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥
२ बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः ।
जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥ २४ ॥
३ शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।
४ अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २५ ॥
५ रौहिणेयो बुधः सौम्यः ६ समौ सौरिशनैश्चरौ ।
७ तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः ॥ २६ ॥
८ सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ।

'मृगशिरा नक्षत्र' के ३ नाम हैं ॥

१ इल्वलाः (स्त्री, नि० ब० व० । 'इल्वकाः' क्षी० स्वा०), 'मृगशिरा नक्षत्रके शिरोभागमें उदय होनेवाली पाँच ताराओं' का १ नाम है ॥

२ बृहस्पतिः (+ बृहतां पतिः), सुराचार्यः गीष्पतिः (वै० गीर्पतिः), धिषणः गुरुः, जीवः, आङ्गिरसः,वाचस्पतिः (+ वाक्पतिः, वाचां पतिः),चित्रशिखण्डिजः (९ पु), 'बृहस्पति' के ९ नाम हैं) ॥ (ये देवताओंके गुरु हैं) ॥

३ शुक्रः, दैत्यगुरुः, काव्यः, उशनाः (=उशनस्), भार्गवः, कविः (६ पु), 'शुक्राचार्य्य' के ६ नाम हैं (ये दैत्योंके गुरु हैं) ॥

४ अङ्गारकः, कुजः, भौमः, लोहिताङ्गः, महीसुतः (५ पु । इसी तरह 'धरणीसुतः, भूमिसुतः······'), 'मङ्गलग्रह' के ५ नाम हैं ॥

५ रौहिणेयः, बुधः, सौम्यः (३ पु), 'बुध' के ३ नाम हैं ॥

६ सौरिः (+ शौरिः, सूरः), शनैश्चरः (+ शनिः, पङ्गुः, मन्दः···। २ पु), 'शनि' के दो नाम हैं ॥

७ तमः (+ तमस् , न + तमः = तम, पु), राहुः, स्वर्भानुः, सैंहिकेयः, विधुन्तुदः (५ पु) , 'राहु' के ५ नाम हैं ॥

८ चित्रशिखण्डिनः (= चित्रशिखण्डिन्, पु, नि० ब० व०), 'सप्तर्षियों' का एक नाम है । (उनके मरीचि १, अङ्गिरा २, अत्रि ३, पुलस्त्य ४, पुलह ५, क्रतु ६ और वसिष्ठ ७ ये नाम हैं, इन्हींको "चित्रशिखण्डी' कहते हैं) ॥

---

१. मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ।
वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः ॥ १ ॥' इति ॥

१ राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥
२ सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।
भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ।
विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥
द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।
विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषाम्पतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥
भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।
३ 'पद्माक्षस्तेजसांराशिश्छायानाथस्तमिस्रहा (३८)
कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धुस्त्रयीतनुः (३९)
प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः (४०)

---

१ लग्नम् (न), 'राशि' का १ नाम है । 'मेष १, वृष २, मिथुन ३, कर्क ४, सिंह ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिक ८, धनुः ९, मकर १०, कुम्भ ११, और १२ मीन' ये [१]बारह राशियाँ होती हैं ॥

२ सूरः, सूर्यः, अर्यमा (= अर्यमन्), आदित्यः, द्वादशात्मा (= द्वादशात्मन्), दिवाकरः, भास्करः, अहस्करः, ब्रध्नः, प्रभाकरः, विभाकरः, भास्वान् (= भास्वत्), विवस्वान् (= विवस्वत्), सप्ताश्वः हरिदश्वः, उष्णरश्मिः, विकर्तनः, अर्कः, मार्तण्डः (= मार्ताण्डः), मिहिरः (= मिहरः, महिरः) अरुणः, पूषा (= पूषन्), द्युमणिः (= अम्बरमणिः, गगनमणिः,······), तरणिः, मित्रः, चित्रभानुः, विरोचनः, विभावसुः, ग्रहपतिः, त्विषाम्पतिः, अहर्पतिः (वै०- अहःपतिः, अह≍पतिः), भानुः, हंसः, सहस्रांशुः (= चण्डांशुः), तपनः (= तापनः), सविता (= सवितृ,), रविः (३७ पु) 'सूर्य' के ३७ नाम हैं ॥

[पद्माक्षः, तेजसांराशिः, छायानाथः, तमिस्रहा (=तमिस्रहन्), कर्मसाक्षी (= कर्मसाक्षिन्), जगच्चक्षुः (=जगच्चक्षुष्), लोकबन्धुः, त्रयीतनुः, प्रद्योतनः, दिनमणिः, खद्योतः, लोकबान्धवः, इनः, भगः, धामनिधिः, अंशुमाली

---

१. 'मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके ॥
तुला च वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकौ ॥ १ ॥' इति ॥

इनो भगो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः' (४१)
१ माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः ॥ ३१ ॥
२ सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः ।
३ परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥
४ किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिघृष्णयः* ।
भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥
५ स्युः प्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः ।

(= अंशुमालिन्), अब्जिनीपतिः (+ पद्मिनीपतिः १७ पु), 'सूर्य' के १७ नाम हैं] ॥

१ माठरः, पिङ्गलः, दण्डः (३ पु), † 'सूर्यके पार्श्ववर्तियों अर्थात् 'सूर्यके पासमें रहनेवालों' के ३ नाम हैं ।

२ सूरसूतः, अरुणः, अनूरुः, काश्यपिः, गरुडाग्रजः (५ पु), 'सूर्यके सारथि' के ५ नाम हैं ॥

३ परिवेषः (+ परिवेशः), परिधिः (२ पु), उपसूर्यकम् , मण्डलम् (२ न), 'मण्डल' के ४ नाम हैं ('सूर्य और चन्द्रमाके चारों तरफ दिखलाई पड़नेवाले तेजोविशेषको 'मण्डल' कहते हैं') ॥

४ किरणः, उस्रः, मयूखः, अंशुः, गभस्तिः, घृणिः (+ घृणिः), घृष्णिः (+ वृष्णिः, पृश्निः, रश्मिः), भानुः, करः (९ पु), मरीचिः (पु स्त्री), दीधितिः (स्त्री), 'किरण' के ११ नाम हैं ॥

५ प्रभा, रुक् (= रुच्), रुचिः, त्विट् (= त्विष्), भा, भाः (=भास्),

---

* '······घृणिघृष्णयः' '······घृणिपृश्नयः, '······घृणिरश्मयः' इति पाठान्तराणि ।

† 'इन्द्रादयो ह्यष्टादश नामान्तरेणार्कपरिचारकाः, यत्सौर(तन्त्र)म्—

'तत्र शक्रो वामपार्श्वे दण्डाख्यो दण्डनायकः ।
वह्निस्तु दक्षिणे पार्श्वे पिङ्गलो नामतश्च सः ॥ १ ॥
यमोऽपि दक्षिणे पार्श्वे भवेन्माठरसंज्ञया' ॥ इति ।

एवमन्ये याज्ञाद्याः गुरुहरराजसुतादयः । तेषु प्राधान्यात्त्रय एवोक्ताः' इति क्षी० स्वा० ॥ क्वचित् 'नामतश्च सः' इत्यस्य स्थाने 'नामतश्च सः' इति, 'याज्ञाद्याः' इत्यत्र 'यमो याज्ञाद्याः' इति च पाठान्तरम् ॥

रोचिः शोचिरुभे क्लीबे १ प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥
२ कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।
३ तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वद्४मृगतृष्णा मरीचिका ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

४. अथ कालवर्गः ॥

५ कालो दिष्टोऽप्यनेहाऽपि समयोऽप्य१थ पक्षतिः ।

छविः, द्युतिः, दीप्तिः (९ स्त्री), रोचिः (= रोचिष्), शोचिः (= शोचिष् । २ न), 'प्रभा' के ११ नाम हैं ॥

१ प्रकाशः, द्योतः, आतपः (३ पु), 'धूप' अर्थात् 'घाम' के ३ नाम हैं । ('दीप्ति, आतप आदि यद्यपि असाधारण धर्म हैं' तथापि कविलोग इनका प्रयोग सामान्यरूपसे करते हैं, जैसे—'मुखदीप्ति, चन्द्रातपः·········') ॥

२ कोष्णम् , कवोष्णम् , मन्दोष्णम्, कदुष्णम् (४ न), 'थोड़ा गर्म' के ४ नाम हैं। (ये शब्द धर्मिवाचक होनेपर त्रि० हैं, जैसे—'कोष्णं जलम् , कोष्णः प्रस्तरः, कोष्णा शिला,·········' इन उदाहरणोंमें 'जल, प्रस्तर और शिला' शब्द के क्रमशः नपुंसक, पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग होनेसे 'कोष्ण' शब्द भी क्रमशः नपुंसक, पुंल्लिंग और स्त्रीलिङ्गमें प्रयुक्त हुआ है) ॥

३ तिग्मम् , तीक्ष्णम् , खरम् (३ न), 'अधिक गर्म' के ३ नाम हैं ॥

४ मृगतृष्णा, मरीचिका (२ स्त्री), 'मृगतृष्णा' के २ नाम हैं । (गर्मीके दिनोंमें रेतीली जमीनपर सूर्यका ताप लगनेसे जलका जो आभास होता है उसे 'मृगतृष्णा' कहते हैं) ॥

इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

४. अथ कालवर्गः ॥

५ कालः, दिष्टः, अनेहा (+ अनेहस्), समयः (४ पु) 'समय' के ४ नाम हैं ॥

१ पक्षतिः (+ पक्षती), प्रतिपत (= प्रतिपद् । २ स्त्री) 'परिवा तिथि' के २ नाम हैं ॥

प्रतिपद् द्वे इमे स्त्रीत्वे १ तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥
२ घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ।
३ प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषःप्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥
प्रभातं च ४ दिनान्ते तु सायं सन्ध्या पितृप्रसूः ।
५ प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसन्ध्यम्६अथ शर्वरी ॥ ३ ॥
निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।

तिथिः (पु स्त्री), 'प्रतिपत्, द्वितीया आदि तिथियों' का १ नाम है। ('वे प्रतिपत् १, द्वितीया २, तृतीया ३, चतुर्थी ४, पञ्चमी ५, षष्ठी ६, सप्तमी ७, अष्टमी ८, नवमी ९, दशमी १०, एकादशी ११, द्वादशी १२, त्रयोदशी १३, चतुर्दशी १४, और शुक्लपक्ष में पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष में अमावास्या १५, पन्द्रह† तिथियाँ होती हैं') ॥

२ घस्रः (पु), दिनम्, अहः (=अहन्। २ न), दिवसः, वासरः (+ वारः। २ पु न) 'दिन' के ५ नाम हैं ॥

३ प्रत्यूषः (+ प्रत्यूषस्, पु न), अहर्मुखम्, कल्यम् (+ काल्यम्), उषः (= उषस्। + उषा, अ०), प्रत्युषः (= प्रत्युषस्), प्रभातम् (५ न), 'प्रातःकाल' के ६ नाम हैं ॥

४ दिनान्तः (पु), सायम् (अ०, न। + सायः[] पु), सन्ध्या (+ सन्धा), पितृप्रसूः (२ स्त्री), 'सायङ्काल' के ४ नाम हैं ॥

५ त्रिसन्ध्यम् (न । वै० त्रिसन्ध्यी, स्त्री), 'प्रातःकाल, मध्याह्नकाल और सायङ्काल; इन तीनों समयके समूह' का १ नाम है ॥

६ शर्वरी (+ शार्वरी), निशा (+ निट् = निश्), निशीथिनी, रात्रिः

---

* 'व्युष्टं विभातं द्वे क्लीबे पुंसि गोसर्गं इष्यते' इत्यधिकः क्षेपकांशः क्वचित्समुपलभ्यते ।

† 'प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया च ततः परम् ।
चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी ततः ॥ १ ॥
नवमी दशमी चैवैकादशी द्वादशी तथा ।
त्रयोदशी ततो ज्ञेया पुनर्ज्ञेया चतुर्दशी ॥ २ ॥
शुक्ले पञ्चदशी सद्भिः पूर्णिमा समुदीर्यते ।
कृष्णपक्षे तु विबुधैरमावास्या प्रकीर्तिता ॥ ३ ॥ इति ॥

[] तथा च श्रीहर्षे—'आचरदीयं·····साय भूतः' इति नैषध च० २२।५२ ।

विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥
१ तमिस्रा तामसी रात्रिः२ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयाऽन्विता ।
३ आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥
४ गणरात्रं निशा बह्व्यः ५ प्रदोषो रजनीमुखम् ।
६ अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ ७ द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥
८ स पर्वसन्धिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ।

(+ रात्री), त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, तमस्विनी, रजनी(+ रजनिः), यामिनी, तमी (+ तमिः, तमा । १२ स्त्री), 'रात' के १२ नाम हैं ॥

१ तमिस्रा (स्त्री) 'अंधेरी रात' का १ नाम है ॥

२ ज्यौत्स्नी (स्त्री । + ज्योत्स्ना, ज्योत्स्नी), 'उजेली रात' का १ नाम है ॥

३ *पक्षिणी (स्त्री), 'वर्त्तमान और आगेके दिनसे युक्त रात' का १ नाम है । तुल्यन्यायसे वर्त्तमान रात्रि और दूसरी रात्रिके सहित दूसरे दिन का भी यह नाम है ॥

४ गणरात्रम् (न), 'रात्रियोंके समूह' का १ नाम है ॥

५ प्रदोषः (पु), रजनीमुखम् (न), 'रातके पहले हिस्से' के २ नाम हैं ॥

६ अर्धरात्रः, निशीथः (पु २), 'आधीरात' के २ नाम हैं ॥

७ यामः, प्रहरः (२ पु०), 'प्रहर' के २ नाम हैं । (दिन और रातके आठवें हिस्से अर्थात् तीन घण्टेका १ 'प्रहर' होता है') ॥

८ पर्व (=पर्वन् , न । म०, 'पर्व = पर्वन् , सन्धिः, ये दो नाम या 'पर्व-सन्धिः' यह एक नाम) 'प्रतिपद् और पूर्णिमा या अमावास्याके मध्यभाग' का १ नाम है ॥

---

* 'पक्षिणी' पक्षतुल्याभ्यामहोभ्यां वेष्टिता निशा ॥' इति ॥
'पक्षिणी' पूर्णिमायां स्याद्विहङ्ग्यां शाकभेदिनि ।
आगामिवर्तमानाहर्युक्ताभ्यामपि क्षिपाम् ॥ २ ॥
इति मेदिनीकोषात् ॥

१ पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे २ पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥
३ कलाहीने सानुमतिः ४ पूर्णे राका निशाकरे ।
५ अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥
६ सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली ७ सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।
८ उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥

---

१ पक्षान्तः (पु), पञ्चदशी (स्त्री), 'पूर्णिमा या अमावास्या तिथि' के २ नाम हैं ॥

२ पौर्णमासी, पूर्णिमा (२ स्त्री), 'पूर्णिमा' अर्थात् 'शुक्लपक्षकी अन्तिम तिथि' के २ नाम हैं ॥

३ अनुमतिः (स्त्री) 'जिसमें चन्द्रमा की कला कुछ क्षीण हो उस पूर्णिमा' का अर्थात् 'प्रतिपद्युक्त पूर्णिमा' का १ नाम है ॥

४ राका (स्त्री), 'जिसमें चन्द्रमाकी कला परिपूर्ण हो, उस पूर्णिमा' का अर्थात् 'शुद्ध पूर्णिमा' का १ नाम है ॥

५ अमावास्या, अमावस्या (२ स्त्री । + अमावसी, अमावासी, अमामासी, अमामसी, अमा), * दर्शः, सूर्येन्दुसङ्गमः (२ पु), 'अमावास्या' अर्थात् 'कृष्णपक्षकी अन्तिम तिथि' के ४ नाम हैं ॥

६ † सिनीवाली (स्त्री), 'जिसमें चन्द्रमाकी कला पूर्णतया क्षीण नहीं हुई हो, उस अमावास्या' का अर्थात् 'चतुर्दशीयुक्त अमावास्या' का १ नाम है ॥

७ [] कुहूः (स्त्री । + कुहुः), 'जिसमें चन्द्रमाकी कला पूर्णतया क्षीण हो गई हो, उस अमावास्या' अर्थात् 'शुद्ध अमावास्या' का १ नाम है ॥

८ उपरागः, ग्रहः (२ पु), 'सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण' के २ नाम हैं ॥

---

* † [] 'या पूर्वामावास्या सिनीवाली योत्तरा सा कुहूः' इति श्रुतिः । अयमभिप्रायः—चतुर्दश्याश्चरमप्रहरोऽमावस्याया अष्टौ प्रहराश्चेति नवप्रहरात्मकश्चन्द्रस्य क्षयसमयः शास्त्रसम्मतः । तत्र प्रथमप्रहरद्वये चन्द्रस्य सूक्ष्मत्वम्, अन्तिमप्रहरद्वये कृत्स्नक्षयः । अतोऽमावास्यायाः प्रथमप्रहरः 'सिनीवाली' संज्ञकः, अन्तिमप्रहरद्वयं 'कुहू' नामकम्, मध्यमप्रहरपञ्चकं 'दर्श' नामकमित्यवधेयम् ॥

१ सोपप्लवोपरक्तौ द्वा२वग्न्युत्पात उपाहितः ।
३ एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥
४ अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा५त्रिंशत्तु ताः कला ।
६ तास्तु त्रिंशत्क्षण७स्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥
८ ते तु त्रिंशदहोरात्रः ९ पक्षस्ते दश पञ्च च ।

---

१ सोपप्लवः, उपरक्तः (२ पु), 'ग्रहण लगनेपर राहुसे ग्रस्त' (कुछ कटे हुए) सूर्य या चन्द्रमा के २ नाम हैं ॥

२ अग्न्युत्पातः, उपाहितः (२ पु), 'आकाशमें अग्नि-विकार, तारा टूटना, धूमकेतु नामकी ताराका उदय होना और उसके उपद्रव, सूर्य-ग्रहणादिमें आग्नेयमण्डलसे उत्पन्न तेजोविशेष' इनके २ नाम हैं ॥

३ पुष्पवन्तौ (= पुष्पवत् , नि० द्वि० । + पुष्पदन्तौ । म० पुष्पवन्तौ = पुष्पवन्तः) 'सूर्य और चन्द्रमा इन दोनों का १ नाम है ॥

४ निमेषः (पु), 'निमेष' का १ नाम है । आँखके पलक गिरनेमें जितना समय लगे उसे 'निमेष' कहते हैं)। काष्ठा (स्त्री), 'अट्ठारह निमेषके बराबर समय' का 'काष्ठा' यह १ नाम है ॥

५ कला (स्त्री), 'तीस काष्ठाके बराबर समय' का १ नाम है ॥

६ *क्षणः (पु) 'तीस कलाके बराबर समय' का १ नाम है ॥

७ मुहूर्त्तः (पु न) 'बारह क्षण' अर्थात् 'दो घड़ी' के बराबर समय का १ नाम है ॥

८ अहोरात्रः (पु), 'दिन-रात' अर्थात् 'तीस मुहूर्त' या साठ घड़ी का १ नाम है ॥

९ पक्षः (पु), 'पन्द्रह दिन-रात या पक्ष' का १ नाम है ॥

---

* 'यावता समयेन चलितः परमाणुः पूर्वदेशं जह्यादुत्तरदेशमुपसंपद्येत स कालः 'क्षणः' इति पातञ्जलभाष्यम् । तस्य च क्षणस्यातीन्द्रियत्वम् । निमेषस्य चतुर्थो भागः 'क्षणः' इति टीकाकृतः' इति वै० सि० मञ्जूषायां शब्दबुद्ध्यादीनां क्षणिकत्वनिरूपणावसरे कुञ्जिकायामुक्तः क्षणस्त्वतीन्द्रियोऽन्य एवेत्यवधेयम् ॥

१ पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ २ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥
३ द्वौ द्वौ माघादिमासौ स्यादृतु४स्तैरयनं त्रिभिः ।
५ अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ १३ ॥
६ समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् ।

---

१ शुक्लः, कृष्णः (२ पु), ये 'पक्षके दो भेद' हैं । (उसमें उजियाले पक्षको 'शुक्ल' और अँधियारे पक्षको 'कृष्ण' कहते हैं) ॥

२ मासः (पु), दो पक्ष, महीना' का १ नाम है । ('मार्गशीर्ष १, पौष २, माघ ३, फाल्गुन ४, चैत्र ५, वैशाख ६, ज्येष्ठ ७, आषाढ ८, श्रावण ९, भाद्र १०, आश्विन ११ और कार्त्तिक १२ ये बारह महीने होते हैं') ॥

३ ऋतुः (पु), 'ऋतु' का १ नाम हैं । मार्गशीर्ष अर्थात् अगहनसे दो-दो महीनोंके 'हेमन्त' आदि एक-एक *ऋतु होते हैं, इस प्रकार एक वर्षमें ६ ऋतु होते हैं । ('हेमन्त १, शिशिर २, वसन्त ३, ग्रीष्म ४, वर्षा ५ और शरत् ६ ये ६ ऋतु हैं, मार्गशीर्ष (अगहन) और पौषमें 'हेमन्त' १, माघ और फाल्गुनमें 'शिशिर' २, चैत्र और वैशाखमें 'वसन्त' ३, ज्येष्ठ और आषाढमें 'ग्रीष्म' ४, श्रावण और भाद्रमें 'वर्षा' ५ तथा आश्विन और कार्तिक में 'शरत्' ६ ऋतु होते हैं') ॥

४ अयनम् (न), 'अयन' का १ नाम है । यह ३ ऋतु या ६ मासका होता है ।

५ सूर्यके गतिभेदसे यह 'अयन' दो प्रकारका होता है, उसमें जब सूर्यकी गति कुछ उत्तरकी तरफ होती है उसे 'उत्तरायणम्' (न), अर्थात् 'उत्तरायण' और जब सूर्यकी गति कुछ दक्षिणकी तरफ होती है उसे 'दक्षिणायनम्' (न), अर्थात् 'दक्षिणायन' कहते हैं । 'उत्तरायण' में मकरसे मिथुन राशितक और 'दक्षिणायन' में कर्कसे धनु राशितक सूर्यकी संक्रान्ति रहती है') ॥

६ विषुवत् , विषुवम् (+ विषुणम् । २ न), 'जब रात दिन दोनों बराबर हो जाते हैं, उस समय'के २ नाम हैं । ('जब तुला और मेषकी सूर्यसंक्रान्ति होती है, तब दिन रात बराबर होते हैं') ॥

---

* तदुक्तम्—'आदाय मार्गशीर्षाच्च द्वौ द्वौ मासावृतुः स्मृतः' इति ।

१ 'पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी २ मासे तु यत्र सा (४२)
नाम्ना स पौषो ३ माघाद्याश्चैवमेकादशापरे' (४३)
४ मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥
५ पौषे तैषसहस्यौ द्वौ ६ तपा माघेऽथ फाल्गुने।
स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः ८ स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥ १५ ॥

---

१ [पौषी (स्त्री), 'पुष्य नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा' अर्थात् 'पौष मासकी पूर्णिमा' का १ नाम है]।

२ [पौषः (पु), 'पूस महीना' अर्थात् जिसमें 'पौषी' पूर्णिमा हो, उसका १ नाम है] ॥

३ [इसी तरह माघ आदि ग्यारह महीनोंको भी समझना चाहिये, अर्थात् मघा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'माघी' महीना 'माघः' १, पूर्वोत्तरफाल्गुनी नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'फाल्गुनी' मास 'फाल्गुनः' २, चित्रा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'चैत्री' मास 'चैत्रः' ३, विशाखा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'वैशाखी' मास 'वैशाखः' ४, ज्येष्ठा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'ज्यैष्ठी' मास 'ज्येष्ठः' ५, पूर्वोत्तराषाढा नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'आषाढी' मास 'आषाढः' ६, श्रवण नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'श्रावणी' मास 'श्रावणः' ७, पूर्वोत्तराभाद्रपद नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'भाद्रपदी' मास 'भाद्रपदः' ८, अश्विनी नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'आश्विनी' मास 'आश्विनः' ९, कृत्तिका नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'कार्त्तिकी' मास 'कार्त्तिकः' १० और मृग नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा 'मार्गी' मास 'मार्गः' ११ होते हैं, इनमें पूर्णिमाके वाचक 'माघी' आदि ११ शब्द स्त्री० और मासके वाचक 'माघ' आदि ११ शब्द पुं० हैं'] ॥

४ मार्गशीर्षः, सहाः (= सहस्), मार्गः, आग्रहायणिकः (+ आग्रहायणः। ४ पु), 'अगहन महीने' के ४ नाम हैं ॥

५ पौषः, तैषः, सहस्यः (३ पु), 'पौष मास' के ३ नाम हैं ॥

६ तपाः (= तपस्), माघः (२ पु), 'माघ मास' के २ नाम हैं ॥

७ फाल्गुनः, तपस्यः, फाल्गुनिकः (३ पु) 'फाल्गुन मास' के ३ नाम हैं ॥

८ चैत्रः, चैत्रिकः, मधुः (३ पु), 'चैत्र मास' के ३ नाम हैं ॥

१ वैशाखे माधवो राधो २ ज्येष्ठे शुक्रः ३ शुचिस्त्वयम् ।
आषाढे ४ श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥
५ स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ।
६ स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि ७ स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥
बाहुलोर्जौ कार्तिकिको ८ हेमन्तः ९ शिशिरोऽस्त्रियाम् ।
१० वसन्ते पुष्पसमयः सुरभि११र्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥
निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

---

१ वैशाखः, माधवः, राधः (३ पु), 'वैशाख मास' के ३ नाम हैं ॥

२ ज्येष्ठः (+ज्यैष्ठः), शुक्रः, (२ पु), 'ज्येष्ठ मास' के २ नाम हैं ॥

३ शुचिः, आषाढः (+आषाढकः । २ पु), 'आषाढ मास' के २ नाम हैं ॥

४ श्रावणः, नभाः (=नभस्) श्रावणिकः (३ पु), 'श्रावण मास' के ३ नाम हैं ॥

५ नभस्यः, प्रौष्ठपदः, भाद्रः, भाद्रपदः (४ पु), 'भादों मास' के ४ नाम हैं ॥

६ आश्विनः, इषः, आश्वयुजः (३ पु), 'आश्विन मास' अर्थात् 'कार' के ३ नाम हैं ॥

७ कार्तिकः, बाहुलः, ऊर्जः, कार्तिकिकः (४ पु), 'कार्तिक मास' के ४ नाम हैं ॥

८ हेमन्तः (पु । +हेमा,=हेमन् , पु), 'हेमन्त ऋतु' का १ नाम है । ('यह अगहन और पौष मासमें होता है') ॥

९ शिशिरः (पु न), 'शिशिर ऋतु' का १ नाम है । ('यह माघ और फाल्गुन मासमें होता है') ॥

१० वसन्तः, पुष्पसमयः, सुरभिः (+ऋतुराजः । ३ पु), 'वसन्त ऋतु' के ३ नाम हैं । ('यह चैत वैशाख मास में होता है') ॥

११ ग्रीष्मः, ऊष्मकः, (+उष्मकः, उष्णकः, ऊष्णकः, उष्मणः, ऊष्मणः), निदाघः, उष्णोपगमः (+ऊष्णोपगमः), उष्णः (+ऊष्णः), ऊष्मागमः (+उष्मागमः), तपः (७ पु), 'ग्रीष्म ऋतु' के ७ नाम हैं । ('यह ज्येष्ठ और आषाढ मास में होता है') ॥

१ स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा २ अथ शरत्स्त्रियाम् ॥ १९ ॥
३ षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।
४ संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥
५ मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो ६ वर्षेण *दैवतः ।

---

१ प्रावृट् (= प्रावृष्, स्त्री), वर्षाः (स्त्री, नि० ब० व०) 'वर्षा ऋतु' के २ नाम हैं । ('यह श्रावण और भादों मासमें होता है') ॥

२ शरत् (= शरद्, स्त्री), 'शरद् ऋतु' का १ नाम है । ('यह आश्विन और कार्तिक मासमें होता है') ॥

३ मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन महीनेसे हर दो-दो महीनोंमें हेमन्त आदि एक एक ऋतु होते हैं । 'ऋतु' शब्द (पु) है । ('इनका क्रम पृष्ठ ४९ श्लोक १३ में कहा जा चुका है, अतः वहीं से देखिये')॥

४ संवत्सरः (+ परिवत्सरः), वत्सरः, अब्दः (३ पु), हायनः (पु न । म० ४ पु न), शरत् (= शरद्, स्त्री), समाः (स्त्री०, नि० ब० व०), 'वर्ष, साल' के ६ नाम हैं ('यह १२ महीनेका होता है') ॥

५ मनुष्योंके एक महीनेका 'पैत्रः अहोरात्रः' (पु) अर्थात् 'पितरोंकी दिन-रात' होती है । ('उसमें मनुष्योंके कृष्णपक्षमें पितरोंका दिन' और मनुष्योंके शुक्लपक्षमें 'पितरोंकी रात' होती है । जिस मतमें आधीरातके बाद दिनका आरम्भ माना जाता है—जैसा कि अंग्रेजीमें तारीखोंका क्रम है; उसके अनुसार यह कथन ठीक है, वस्तुतः तो मनुष्योंके कृष्णपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धसे शुक्लपक्षकी अष्टमीके पूर्वार्द्धतक 'पितरोंका दिन' और मनुष्योंकी शुक्लपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धसे कृष्णपक्षकी अष्टमीके पूर्वार्द्धतक 'पितरोंकी रात' होती है; इस तरह मनुष्योंकी अमावास्याके अन्तमें 'पितरोंका मध्याह्न' और मनुष्योंकी पूर्णिमाके अन्तमें 'पितरोंकी आधी रात' होती है') ॥

६ मनुष्योंके एक वर्ष या उत्तरायण और दक्षिणायन का 'दैवः अहोरात्र' (पु) अर्थात् 'देवताओंकी एक दिन-रात' होती है । ('इसमें उत्तरायण

---

* 'पित्र्ये रात्र्यहनी मासः प्रविभागस्तु पक्षयोः ।
कर्मचेष्टास्वहः कृष्णः शुक्लः स्वप्नाय शर्वरी ॥ १ ॥' इति मनुः १।६६ ॥

१ दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः—

अर्थात् सूर्यकी मकरसंक्रान्तिसे मिथुनसंक्रान्तितक 'देवताओंका दिन' और दक्षिणायन अर्थात् सूर्यकी कर्कसंक्रान्तिसे धनुसंक्रान्तितक [1]'देवताओंकी रात' होती है। यह भी आधीरातसे दिनारम्भसे गणनानुसार ही है, वस्तुतः तो उत्तरायणके उत्तरार्द्ध अर्थात् सूर्यकी मेषसंक्रान्तिके प्रथम दिनसे दक्षिणायनके पूर्वार्द्ध अर्थात् सूर्यकी कन्यासंक्रान्तिके अन्तिम दिनतक 'देवताओंका दिन' और दक्षिणायनके उत्तरार्द्ध अर्थात् सूर्यकी तुलासंक्रान्तिके प्रथम दिनसे उत्तरायणके पूर्वार्द्ध अर्थात् मीनसंक्रान्तिके अन्तिम दिनतक 'देवताओंकी रात' होती है। इस प्रकार उत्तरायणके अर्थात् सूर्यकी मिथुनसंक्रान्तिके अन्तिम दिनको 'देवताओंका मध्याह्न' और दक्षिणायनके अर्थात् सूर्यकी धनुसंक्रान्तिके अन्तिम दिनको 'देवताओंकी आधीरात' होती है') ॥

१ देवताओंके दो हजार युगका 'ब्राह्मः अहोरात्रः' (पु) अर्थात् 'ब्रह्माकी दिन-रात' होती है। ('देवताओंके ३६० दिन या मनुष्योंके ३६० वर्षका 'दिव्यवर्षम्'(न)अर्थात् 'देवताओंका एक वर्ष' होता है। और बारह हजार दिव्य वर्ष (देवताओंके वर्ष) का [2]'मनुष्योंका चतुर्युग' ('सत्ययुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग') होता है, वही [3]'देवताओंका एक युग' है।

१. 'दैवे रात्र्यहनी वर्षं प्रविभागस्तयोः पुनः।
अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्याद्दक्षिणायनम् ॥ १ ॥ इति मनुः १।६७ ॥

२. 'कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिश्चेति चतुर्युगम्।
प्रोच्यते तत्सहस्रं तु ब्रह्मणो दिनमुच्यते ॥ १ ॥ इति वि० पु०।
कृतं सत्ययुगम्, अन्ये प्रसिद्धाः ॥

३. 'चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणान्तु कृतं युगम्।
तस्य तावच्छती संध्या सन्ध्यांशश्च तथाविधः ॥ १ ॥
इतरेषु ससन्ध्येषु ससन्ध्यांशेषु च त्रिषु।
एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ॥ २ ॥
यदेतत्परिसङ्ख्यातमादावेव चतुर्युगम्।
एतद्द्वादशसाहस्रं 'देवानां युगमुच्यते' ॥ ३ ॥ इति मनुः १।६९-७१॥

—१ कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

२ मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।

देवताओं के इन्हीं दो हजार युगका 'ब्रह्माकी एक दिन-रात' होती है; अर्थात् देवताओंके एक हजार युगका 'ब्रह्माका दिन' और उतने ही (देवताओंके एक हजार युग) की "ब्रह्माकी रात' होती है') ॥

१ वही ब्रह्माकी दिन-रात मनुष्योंका 'कल्पौ' (पु० व० भी होता है), 'कल्प' अर्थात् स्थिति और प्रलयका काल है । ('उसमें ब्रह्माके दिनमें 'मनुष्यों का स्थितिकाल और ब्रह्माकी रातमें 'मनुष्योंका प्रलयकाल' है') ॥

२ देवताओंके एकहत्तर युगका "मन्वन्तरम्' (न), १ 'मन्वन्तर' अर्थात् [2]चौदह मनुओंमेंसे प्रत्येक मनुका स्थितिकाल होता है । (स्वायम्भुव १ स्वारोचिष २, औत्तमि ३, तामसि ४, रैवत ५, आयुष ६, वैवस्वत ७, सावर्णि ८, दक्षसावर्ण ९, ब्रह्मसावर्ण १०, धर्मसावर्ण ११, रौद्रसावर्ण १२, रौच्यसावर्णि १३ और भौत्यसावर्णि १४ ये चौदह मनु हैं' इनमेंसे प्रत्येकके स्थितिकालको 'मन्वन्तर' कहतेहैं । उनमें ६ मनु बीत चुके हैं, सातवाँ 'वैवस्वत' मन्वन्तर बीत रहा है और अन्य सात बाकी हैं । 'पृष्ठ२८ श्लोक११ से यहाँ तक कहे

---

१ 'दैविकानां युगानान्तु सहस्रं परिसङ्ख्यया ।
ब्राह्ममेकमहर्ज्ञेयं तावतीं रात्रिमेव च ॥ १ ॥ इति मनुः १।७२ ॥

२ 'यत्प्राग्द्वादशसाहस्रमुदितं दैविकं युगम् ।
तदेकसप्ततिगुणं मन्वन्तरमिहोच्यते ॥ १ ॥ इति मनुः १।७९ ॥

३ 'मनुः स्वायम्भुवो नाम मनुःस्वारोचिषस्तथा ।
औत्तमिस्तामसिश्चैव रैवतश्चायुषस्तथा ॥ १ ॥
एते तु मनवोऽतीताः सप्तमस्तु रवेः सुतः ।
वैवस्वतोऽयं यस्यैतत्सप्तमं वर्तते युगम् ॥ २ ॥
सावर्णिर्दक्षसावर्णो ब्रह्मसावर्ण इत्यपि ।
धर्मसावर्ण रुद्रस्तु सावर्णो रौच्यभौत्यकौ ॥ ३ ॥ इति वि० पु० ।

हुए कालका मान चक्रमें स्पष्ट है' ॥

• 'अष्टादश निमेषास्तु (१।४।११) इत्यत आरभ्य 'युगानामेकसप्ततिः (१।४।२२) इत्यन्तग्रन्थस्य कालज्ञानात्मको निष्कर्षोऽत्र चक्रे द्रष्टव्यः ॥

ॐ अथ कालमानबोधकचक्रम् ॐ

नेत्रस्पन्दकाल,	१ निमेषः ($\frac{1}{27}$ विपला)	($\frac{2}{135}$ सेकेण्ड)
१८ निमेषाः	१ काष्ठा ($\frac{2}{3}$ विपला)	($\frac{4}{15}$ सेकेण्ड)
३० काष्ठाः	१ कला (२० विपला)	(८ सेकेण्ड)
३० कलाः	१ क्षणः (१० पला)	(४ मिण्ट)
१२ क्षणाः	१ मुहूर्तः (२ घट्यौ)	(४८ मिण्ट)
३० मुहूर्ताः	१ अहोरात्रः (मानुषः)	(२४ घण्टा)
१५ अहोरात्राः	१ पक्षः (मानुषः)	१ पैत्रं दिनं निशा वा
२ पक्षौ	१ मासः (मानुषः)	१ अहोरात्रः (पैत्रः)
१२ मासाः	१ वर्षम् (मानुषम्)	१ अहोरात्रः (दैवः)
३६० दैवाहोरात्राः	३६० मानुषवर्षाणि	१ वर्षम् (दिव्यम्)
१२०० दिव्यवर्षाणि	४३२००० मानुषवर्षाणि	१ कलिमानम्
२४०० ,,	८६४००० ,,	१ द्वापरमानम्
३६०० ,,	१२९६००० ,,	१ त्रेतामानम्
४८०० ,,	१७२८००० ,,	१ सत्ययुगमानम्
एवं १२००० ,,	४३२०००० ,,	मानुषं चतुर्युगमानम् वा दैवं युगम्
१२०००दिव्यवर्षाणि × १००० = १२००००००दिव्यवर्षाणि	४३२०००० मानुषवर्षाणि × १०००= ४३२०००००००० मानुषवर्षाणि	१ दिनम् (ब्राह्मम्)
,,	,,	१ रात्रिः (ब्राह्मी)
१२०००००० + १२०००००० = २४०००००० दिव्यवर्षाणि	४३२०००००००० + ४३२०००००००० = ८६४०००००००० मानुषवर्षाणि	१ अहोरात्रः (ब्राह्मः)
१२०००दिव्यव.=चतुर्युगमानम् × ७१=८५२०००दिव्यवर्षाणि	४३२०००० मानुषवर्षाणि × ७१ = ३०६७२०००० मानुषवर्षाणि	१ मन्वन्तरम्

'गुरुमते तु ३०८५७१४२८ वर्षाणि ६मासाः १५दिवसाः ४घटयः ५१पलाः=१ मन्वन्तरम् [illegible]

१ संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥
२ अस्त्री पङ्कं पुमान् पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् ।
कलुषं वृजिनैनोऽघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥
३ स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।
४ मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसम्मदाः ॥ २४ ॥
स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ।
५ श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ २५ ॥
भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ।
शस्तं ६ चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥
७ मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ ।

---

१ संवर्तः, प्रलयः, कल्पः, क्षयः, कल्पान्तः, (५ पु), 'प्रलय काल' के ५ नाम हैं ॥

२ पङ्कम् (न पु), पाप्मा (= पाप्मन्, पु) पापम् किल्बिषम्, कल्मषम्, कलुषम्, वृजिनम्, एनः (= एनस्), अघम् , अंहः (= अंहस् । + अंघः, अंघस्), दुरितम्, दुष्कृतम् (१० न), 'पाप' के १२ नाम हैं ॥

३ धर्मः (पु न । + धर्मा = धर्मन्, पु), पुण्यम् , श्रेयः (= श्रेयस्), सुकृतम् (३ न) वृषः (पु) 'धर्म' के ५ नाम हैं ॥

४ मुत् (= मुद्), प्रीतिः (२ स्त्री), प्रमदः, हर्षः, प्रमोदः, आमोदः, संमदः, आनन्दथुः, आनन्दः, (७ पु), शर्म (= शर्मन्), शातम् (+ सातम्) सुखम् (३ न), 'हर्ष' के १२ नाम हैं ॥

५ श्वःश्रेयसम् (स्वःश्रेयसम्), शिवम् , भद्रम् (भन्द्रम्), कल्याणम्, मङ्गलम् , शुभम्, भावुकम्, भविकम्, भव्यम्, कुशलम् (+ कुषलम् । १० न), क्षेमम्' शस्तम् (२ न पु) 'कल्याण' के १२ नाम हैं ॥

६ 'पाप, पुण्य' शब्द और 'सुख' शब्दसे 'शस्त' शब्दतक १३ शब्द द्रव्यविशेष में प्रयुक्त होने पर त्रिलिङ्ग होते हैं । (जैसे—'पापो मनुष्यः, पापा नियमता, पापं दैन्यम् । पुण्यः प्रतापः, पुण्या सम्पत् , पुण्यं यशः । कल्याणो बन्धुः, कल्याणी भार्या, कल्याणं नित्यम्·······') ॥

७ मतल्लिका, मचर्चिका (२ नि० स्त्री) प्रकाण्डम् (नि० न । + पु)

प्रशस्तवाचकान्यमू१न्ययः शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥
२ दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ।
३ हेतुर्ना कारणं बीजं ४ निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥
५ क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः ६ प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।
७ विशेषः कालिकोऽवस्था८गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥
९ जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।
१० प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

उद्धः, तल्लजः (२ पु), ये ५ किसी द्रव्यवाचक शब्दके साथ समस्त होकर अन्तमें रहनेसे उसकी श्रेष्ठताको प्रकट करते हैं। इनका स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है। जैसे—'गोमतल्लिका, गोमचर्चिका, गोप्रकाण्डम्, गवोद्धः, गोतल्लजः,......')॥

१ अयः (पु) 'शुभकारक भाग्य' का १ नाम है॥

२ दैवम्, दिष्टम्, भागधेयम्, भाग्यम् (४ न), नियतिः (स्त्री), विधिः (पु), 'भाग्य' के ६ नाम हैं॥

३ हेतुः (पु), कारणम्, बीजम् (२ न), 'कारण' के ३ नाम हैं॥

४ निदानम् (न), 'मूल कारण' का १ नाम है॥

५ क्षेत्रज्ञः, आत्मा (=आत्मन्), पुरुषः (३ पु), 'शरीरकी अधिष्ठात्री देवता' के ३ नाम हैं॥

६ प्रधानम् (न), प्रकृतिः (स्त्री), 'सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुणकी साम्यावस्था' के २ नाम हैं॥

७ अवस्था (स्त्री), 'समयकृत विशेष' अर्थात् 'उम्र'का १ नाम है। (जैसे—लड़कपन, जवानी, बुढ़ापा,......)॥

८ सत्त्वम्, रजः (=रजस्। +रजः=रज, पु), तमः (=तमस्) +तमः,=तम, पु । ३ न), ये ३ 'प्रकृतिके धर्म' हैं। इनका क्रमशः 'सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण' यह १-१ नाम है॥

९ जनुः (=जनुस्), जननम्, जन्म (=जन्मन्। +जन्मः=जन्म, पु। ३ न), जनिः (+पु), उत्पत्तिः (२ स्त्री), उद्भवः (पु), 'उत्पत्ति' अर्थात् 'पैदा होने या जन्म लेने' के ६ नाम हैं॥

१० प्राणी (=प्राणिन्), चेतनः, जन्मी (=जन्मिन्) जन्तुः, जन्युः, शरीरी

१ जातिर्जातं च सामान्यं २ व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।
३ चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥
इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ धीवर्गः ।

४ बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।
प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥
५ धीर्धारणावती मेधा ६ सङ्कल्पः कर्म मानसम् ।
७ 'अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च' (४४)

(= शरीरिन् । ६ पु), 'प्राणी'के ६ नाम हैं ॥

१ जातिः (स्त्री), जातम्, सामान्यम् (२ न), 'जाति'के ३ नाम हैं । ('जैसे—गोत्व, ब्राह्मणत्व, घटत्व,……') ॥

२ व्यक्तिः, पृथगात्मता (२ स्त्री), 'व्यक्ति'के २ नाम हैं । ('जैसे—गौ, मनुष्य, राम, श्याम,……') ॥

३ चित्तम्, चेतः (= चेतस्), हृदयम्, स्वान्तम्, हृत् (= हृद्), मानसम्, मनः (= मनस् । ७ न), 'मन या चित्त' के ७ नाम हैं ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ धीवर्गः ॥

४ बुद्धिः, मनीषा, धिषणा, धीः, प्रज्ञा, शेमुषी, मतिः, प्रेक्षा, उपलब्धिः, चित् (= चिद्), संवित् (= संविद्), प्रतिपत् (= प्रतिपद्), ज्ञप्तिः, चेतना (१४ स्त्री), 'बुद्धि' के १४ नाम हैं ॥

५ मेधा (स्त्री), 'धारणा शक्तिवाली बुद्धि' का १ नाम है ॥

६ संकल्पः (पु), 'संकल्प, मानसिक कर्म' का १ नाम है ॥

७ [अवधानम्, समाधानम्, प्रणिधानम् (३ न), 'समाधान' के ३ नाम हैं] ॥

---

* 'साङ्ख्ये बुद्धिमनोरैक्ये पर्यायाः, वैशेषिकादौ तु चतुर्दशापि बुद्धयर्थाः' इति क्षी० स्वा० ॥

१ चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा सङ्ख्या विचारणा ॥ २ ॥
३ 'विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते' (४५)
४ अध्याहारस्तर्क ऊहो ५ विचिकित्सा तु संशयः ।
सन्देहद्वापरौ ६ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥
७ मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता ८ व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।
९ समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ १० भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥ ४ ॥
११ संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः ।

---

१ चित्ताभोगः, मनस्कारः (२ पु), 'सुखादिमें मनके लगे रहने' के २ नाम हैं ॥

२ चर्चा, सङ्ख्या, विचारणा (३ स्त्री), 'प्रमाणोंके द्वारा किसी विषयके विचार करने' के ३ नाम हैं ॥

३ [विमर्शः (पु) [भावना, वासना (२ स्त्री), 'बीती हुई बात आदिके संस्कार' के ३ नाम हैं] ॥

४ अध्याहारः, तर्कः, ऊहः (३ पु), 'तर्क' के ३ नाम हैं ॥

५ विचिकित्सा (स्त्री), संशयः, सन्देहः, द्वापरः (३ पु), 'सन्देह' के ४ नाम हैं ॥

६ निर्णयः, निश्चयः (२ पु), 'निश्चय' के २ नाम हैं ॥

७ मिथ्यादृष्टिः, नास्तिकता (२ स्त्री), 'नास्तिकपना' के २ नाम हैं। ('ईश्वर या परलोक नहीं हैं, ऐसे ज्ञानको 'नास्तिकपना' कहते हैं') ॥

८ व्यापादः (पु), द्रोहचिन्तनम् (न), 'किसीसे द्रोह करनेका विचार करने' के २ नाम हैं ॥

९ सिद्धान्तः, राद्धान्तः (२ पु), 'सिद्धान्त' के २ नाम हैं। ('वाद-विवादके द्वारा किसी विषयको निश्चय करने या अपने अटल मतको 'सिद्धान्त' कहते हैं') ॥

१० भ्रान्तिः, मिथ्यामतिः (२ स्त्री), भ्रमः (पु), 'भ्रम' के ३ नाम हैं। ('जैसे—शुक्तिमें रजतका, रस्सीमें सर्पका ज्ञान होना 'भ्रम' है') ॥

११ संवित् (= संविद्), आगूः (= आगुर्, 'आगूः, आगुरौ, आगुरः' ऐसे रूप होते हैं। अथवा—आगूः, = आगू, 'आगूः, आग्वौ, आग्वः' इत्यादि

१ अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥
२ मोक्षे धीर्ज्ञानम् ३ अन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।
४ मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥
मोक्षोऽपवर्गो ऽ५थाज्ञानमविद्याऽहम्मतिः स्त्रियाम् ।
६ रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥
गोचरा इन्द्रियार्थाश्च ७ हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।
८ कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि—

'सम्पद्' शब्दके समान रूप होते हैं। (२ स्त्री), प्रतिज्ञानम् (न), नियमः, आश्रवः, संश्रवः (३ पु), 'प्रतिज्ञा' के ६ नाम हैं ॥

१ अङ्गीकारः (+ स्वीकारः), अभ्युपगमः, प्रतिश्रवः, समाधिः (४ पु), 'स्वीकार करने' के ४ नाम हैं ॥

२ ज्ञानम् (न), 'मोक्ष–विषयक बुद्धि' का १ नाम है ॥

३ विज्ञानम् (न), 'शिल्प (कारीगरी), अथवा शास्त्रविषयक बुद्धि' का १ नाम है। (मुकुटने 'मोक्षे' इसको निमित्त सप्तमी मानकर मोक्षनिमित्तक शिल्प-शास्त्र-विषयक बुद्धिको 'ज्ञान' तथा अन्यनिमित्तक शिल्प-शास्त्रविषयक बुद्धिको 'विज्ञान' अर्थ किया है) ॥

४ मुक्तिः (स्त्री), कैवल्यम्, निर्वाणम्, श्रेयः (= श्रेयस्), निःश्रेयसम्, अमृतम् (५ न), मोक्षः, अपवर्गः (२ पु), 'मोक्ष' के ८ नाम हैं ॥

५ अज्ञानम् (न), अविद्या, अहम्मतिः (२ स्त्री), 'अज्ञान' के ३ नाम हैं ॥

६ रूपम् (न), शब्दः, गन्धः, रसः, स्पर्शः (४ पु), ये ५ नेत्रादि एक-एक इन्द्रिय के एक-एक विषय' के नाम हैं। ('नेत्रका विषय 'रूप' जिह्वा का विषय 'रस' नासिकाका विषय 'गन्ध' कानका विषय 'शब्द' और त्वचा अर्थात् चमड़ेका विषय 'स्पर्श' है। इन्हींके गोचरः, विषयः, इन्द्रियार्थः (३ पु), ये ३ सामान्य नाम हैं ॥

७ हृषीकम्, विषयि (= विषयिन्), इन्द्रियम् (३ न), 'इन्द्रियों' के ३ नाम हैं। ('कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय भेदसे इन्द्रिय दो प्रकारके हैं; जिनका विवरण आगे किया जा रहा है') ॥

८ कर्मेन्द्रियम् (न), 'काम करनेवाली इन्द्रियों' का १ नाम है। ('पायु अर्थात् गुदा १, उपस्थ अर्थात् भग या लिङ्ग २, हाथ ३, पैर ४ और वाक् ५ ये कर्मेन्द्रिय अर्थात् काम करनेवाली इन्द्रियाँ हैं। 'मलत्याग करना,

—१ मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

२ तुवरस्तु कषायोऽस्त्री ३ मधुरो लवणः कटुः ।
तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि ४ तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥
५ विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

भोग करना, ग्रहण करना, चलना और बोलना' इनमेंसे 1–1 नाम क्रमशः एक–एक इन्द्रियका[1] है') ॥

१ धीन्द्रियम् (न । + ज्ञानेन्द्रियम्), 'ज्ञानेन्द्रिय' का १ नाम है । ('मन १, कान २, नेत्र ३, जीभ ४, त्वचा ५ और नाक ६, ये ६ ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् ज्ञान करनेवाली इन्द्रियाँ[2] हैं । 'जानना, सुनना, देखना, स्वाद लेना, स्पर्श-ज्ञान करना और सूँघना' इनमें से 1–1 काम क्रमशः 1–1 इन्द्रियका है') ॥

२ तुवरः (+ तूवरः, कुवरः । पु) कषायः, (पु न) 'कषाय' कसाव' के २ नाम हैं । (हर्रेमें 'कषाय' रस होता है) ॥

३ मधुरः, लवणः, कटुः, तिक्तः, अम्लः (+ अंब्लः, अम्लः । ५ पु), 'मीठा, खारा, कडुआ, तीता और खट्टा' ये पाँच और पहिला 'कषाय' ऐसे ६ रस हैं । ('इनमें पानी आदि 'मीठा', नमक, सोरा आदि 'खारा' मिर्च आदि 'कडुआ' नीम, चिरैता आदि 'तीता' और आम, नींबू, इमली आदि 'खट्टे' होते हैं । रसः (पु) है') ॥

४ ये 'तुवर, मधुर' आदि ७ नाम स्वतः रसवाचक रहनेपर पुंलिङ्ग हैं; किन्तु द्रव्यवाचक अर्थात् रसवाले पदार्थके अर्थमें प्रयुक्त होनेपर त्रिलिङ्ग हैं । जैसे—मधुरं जलम्, मधुरा आपः, मधुरो गुडः,........) ॥

५ परिमलः (पु), 'किसी पदार्थके संघर्ष अर्थात् रगड़से

१. तथा च कामन्दकः —'पायूपस्थे पाणिपादौ वाक्चेतीन्द्रियसंग्रहः ।
उत्सर्ग आनन्दादानगत्यालापाश्च तत्क्रियाः ॥ १ ॥' इति ॥

२. तदुक्तम्—'मनः कर्णस्तथा नेत्रं रसना च त्वचा सह ।
नासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥ १ ॥' इति ॥

१ आमोदः सोऽतिनिर्हारी २ वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥
३ समाकर्षी तु निर्हारी ४ सुरभिर्घ्राण तर्पणः ।
इष्टगन्धः सुगन्धिः स्या५दामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥
६ पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो ७ विस्रं स्यादामगन्धि यत् ।
८ शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥
अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ।
हरिणः पाण्डुरः पाण्डुः —

उत्पन्न जनमनोहर गन्धविशेष या बकुलके गन्ध' का १ नाम है ।

१ [1]आमोदः (पु), 'अत्यन्त बढ़िया गन्ध या कस्तूरीके गन्ध' का १ नाम है ॥

२ यहां से 'गुणे शुक्लादयः पुंसि (१।५।१७)' के पूर्वतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं॥

३ समाकर्षी (= समाकर्षिन्), निर्हारी (= निर्हारिन् । २ त्रि), 'दूरस्थ सुगन्धित पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

४ [2]सुरभिः, घ्राणतर्पणः, इष्टगन्धः, सुगन्धिः (४ त्रि), 'सुगन्धि' के ४ नाम हैं (इनमें 'सुरभि' नाम 'चम्पकके गन्ध' का भी है) ॥

५ आमोदी (= आमोदिन्), [3] मुखवासनः (भागुरि म० अगुरुवासनः । २ त्रि), 'मुखको सुगन्धित करनेवाले पान आदि' के २ नाम हैं । ('मुखवासनः' नाम 'कपूरके गन्ध' का भी है') ॥

६ पूतिगन्धिः, दुर्गन्धः (२ त्रि), 'दुर्गन्धि, बदबू' के २ नाम हैं ॥

७ विस्रम् (त्रि), 'बिना पके हुए मांस आदिके गन्ध' का १ नाम है ॥

८ शुक्लः, शुभ्रः, शुचिः, श्वेतः, विशदः, श्येतः, पाण्डरः, अवदातः, सितः, गौरः, वलक्षः (+ अवलक्षः), धवलः, अर्जुनः, हरिणः, पाण्डुरः, पाण्डुः (१६ त्रि), 'सफेद, उजले' के १६ नाम हैं । ('मतान्तरसे 'शुक्ल' आदि १३ नाम 'सफेद' के हैं और अन्तवाले 'हरिणः' आदि ३ नाम 'पाण्डुर' अर्थात् 'कुछ पीलापन लिये हुए सफेद' के हैं') ॥

१-२-३. 'कस्तूरिकायामामोदः कर्पूरे मुखवासनः ।
बकुले स्यात्परिमलश्चम्पके सुरभिस्तथा ॥ १ ॥' इति ॥

—१ ईषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥
२ कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ।
३ पीतो गौरो हरिद्राभः ४ पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥
५ लोहितो रोहितो रक्तः ६ शोणः कोकनदच्छविः ।
७ अव्यक्तरागस्त्वरुणः ८ श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥
९ श्यावः श्यात्कपिशो १० धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।
११ कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥
१२ चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे ।

---

१ ईषत्पाण्डुः, धूसरः (२ त्रि), 'धूसर' के २ नाम हैं ॥

२ कृष्णः, नीलः, असितः, श्यामः, कालः, श्यामलः, मेचकः (७ त्रि), 'काले' के ७ नाम हैं ॥

३ पीतः, गौरः, हरिद्राभः (३), 'पीले' के ३ नाम हैं ॥

४ पालाशः (+पलाशः), हरितः, हरित् (३ त्रि), 'हरे' के ३ नाम हैं ॥

५ लोहितः रोहितः, रक्तः (३ त्रि), 'लाल' के ३ नाम हैं ॥

६ शोणः (त्रि), 'लाल कमलके समान सुर्ख लाल' का १ नाम है ॥

७ अरुणः (त्रि), 'गुलाबी' का १ नाम हैं ॥

८ पाटलः (त्रि), 'सफेदी लिये हुए लाल रंग' का १ नाम है ॥

९ श्यावः, कपिशः (२ त्रि), 'फीके रंग' के २ नाम हैं ॥

१० धूम्रः, धूमलः, कृष्णलोहित, (३ त्रि), 'कालापनसे युक्त लाल' के ३ नाम हैं ॥

११ कडारः, कपिलः, पिङ्गः, पिशङ्गः, कद्रुः, पिङ्गलः (६ त्रि), 'भूरे' के ६ नाम हैं ॥

१२ चित्रम् (आ० वी० म० नपुं०), किर्मीरः (+कर्मीरः), कल्माषः, शबलः, एतः, कर्बुरः (६ त्रि), 'चितकबरे' के ६ नाम हैं । ('कौन २ रंग कैसे होते हैं, यह बात टिप्पणीमें स्पष्ट है' *) ॥

---

*श्वेतादिरागाणां व्यक्तं विवरणं शब्दार्णवे प्रोक्तम् । तद्यथा—
'श्वेतस्तु समपीतोऽसौ रक्तेतरजपारुचिः । बलक्षस्तु सितः श्यामः कन्दलीकुसुमोपमः ॥१॥

१ गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

६. अथ शब्दादिवर्गः ।

२ *ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ।
व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

१ इनमें से 'शुक्ल' आदि सब शब्द गुणवाचक रहनेपर पुंल्लिङ्ग ही होते हैं और गुणिवाचक होनेपर त्रिलिङ्ग होते हैं ('जैसे—शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, शुक्लं वस्त्रम्,………') ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

६. अथ शब्दादिवर्गः ।

२ ब्राह्मी (+गौः, =गो), भारती, भाषा, गीः (गिर् । +गिरा), वाक् (=वाच्), वाणी (+वाणिः), सरस्वती, व्याहारः (पु), उक्तिः (शेष ८ स्त्री), लपितम्, भाषितम्, वचनम्, वचः (=वचस् । ४ न), 'वचन' अर्थात् 'बोलने' के १२ नाम हैं । ('इनमेंसे 'ब्राह्मी' से 'सरस्वती' तक ६ शब्द 'वचनके अधिष्ठात्री देवी' के भी नाम हैं') ॥

अर्जुनस्तु सितः कृष्णलेशवान् कुमुदच्छविः । पाण्डुस्तु पीतभागार्द्धः केतकीधूलिसन्निभः ॥१
धूसरस्तु सितः पीतलेशवान् बकुलच्छविः । मेचकः कृष्णनीलः स्यादतसीपुष्पसन्निभः ॥२
सितपीतहरिद्रक्तः कडारस्तृणवह्निवत् । अयं तद्रक्तपीताङ्गः कपिलो गोविभूषणः ॥४
हरितांशेऽधिकेऽसौ तु पिशङ्गः पद्मधूलिवत् । पिशङ्गस्त्वासितावेऽशांपिशो दीपशिखादिषु ॥५
पिङ्गलस्तु परिच्छायः पिङ्गे शुक्लाङ्गखण्डवत् ॥' इति ॥

१ 'ब्राह्मी गौर्भारती………' इति पाठान्तरम् ॥

१ अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।
३ तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥
४ श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी ५ धर्मस्तु तद्विधिः ।

१ अपभ्रंशः, अपशब्दः (२ पु) 'अपभ्रंश' अर्थात् 'व्याकरण शास्त्रसे नहीं सिद्ध होनेवाले गगरी, घड़ा, इत्यादि भ्रष्ट (असंस्कृत) शब्द' के २ नाम हैं ॥

२ शब्दः (पु), 'व्याकरण आदि शास्त्रोंमें जो वाचक हैं उन'का १ नाम है । ('जैसे—'ओत-प्रोत तन्तुओंका वाचक 'पट' शब्द है, कम्बुग्रीवादि-संस्थान विशिष्टका वाचक 'घट' शब्द है,·········') ॥

३ वाक्यम् (न), 'वाक्य' का १ नाम है । ('तिङन्त समुदाय १, 'सुबन्त-समुदाय २, पद-समुदाय ३, या कारकान्वित क्रिया ४, को 'वाक्य' कहते हैं । क्रमशः उदाहरण—१ तिङन्त-समुदाय जैसे—'पचति, भवति,·········' । २ सुबन्त-समुदाय जैसे—'प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्,······' । ३ पद-समुदाय जैसे—'देवदत्तो गच्छति, ओदनं पचति,······' । ४ कारकान्वित क्रिया जैसे—'रावणं जहि निशितेन शरेण,······') ॥

४ श्रुतिः, वेदः, आम्नायः (२ पु), त्रयी (शेष २ स्त्री), 'वेद' के ४ नाम हैं ॥

५ धर्मः (पु । मुकुट म० [1]'त्रयीधर्मः', पु,) 'धर्म' अर्थात् 'वेदोक्त यज्ञादि

१. 'ऋक्, साम, यजुः' इति प्रत्येकं वेदस्य पर्याय इत्युक्त्वा 'त्रयीधर्मः' इत्येकं 'वेद-विहितयागादिकर्मणः' पर्याय इत्युक्तम्, तत्र च त्रय्या धर्मस्त्रयीधर्मः, तथा त्रय्या विधिर्विधी-यमानो यागादिरिति विग्रहः प्रदर्शितस्तच्चिन्त्यम् । 'विद्या धर्मेण शोभते, धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे (गी. १।१), धर्मान्नो वक्तुमर्हसि (मनु. १।२)। ब्रूहि धर्मानशेषतः (याज्ञ. स्मृ. १।१), धर्मादनिच् केवलात् (पा. सू. ५।४।१२४), इत्याद्यभियुक्तोक्तवचनेषु 'धर्म'शब्दस्यैव दर्शनात् । 'भीमः भीम-सेनः, सत्या, भामा, सत्यभामा', इतिवत्पदैकदेशस्यात्रापि प्रयोग इति तु नाशङ्क्यम् । लोके भीमादीनां पृथक् पृथक् प्रयोगदर्शनेनास्य 'त्रयीधर्म'शब्दस्य क्वापि तथाऽदर्शनेन वैषम्यात् । 'त्रयीधर्म'शब्दस्य प्रयोग उपलब्धे तु प्रतिपाद्यप्रतिपादकभावरूपं सम्बन्धं मत्वा षष्ठीतत्पुरुष-समासो बोध्यः । ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानां द्विजत्वेऽपि ब्राह्मणस्यापि द्विजत्ववदिहापि सामान्य-विशेषरूपेणोभयसम्भवात् '······वेदास्त्रयस्त्रयी (१।३।६)' इत्यनेन पौनरुक्त्यं नाशङ्क्यम् । '······धर्ममस्त्रियाम् (१।४।२४)' इत्यनेनापि न पौनरुक्त्यम् । तत्र धर्मपर्यायाणामत्र च धर्मस्वरूपस्य धर्मप्रमाणस्य चाभिधानेनादोषात् । अधिकन्तु परत्र द्रष्टव्यम् ॥

१ स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥
२ शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गं३मोङ्कारप्रणवौ समौ।
४ इतिहासः पुरावृत्त५मुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥
६ आन्वीक्षिकी—

कर्म'का १ नाम है। ('स्मृतियोंके भी वेदमूलक होनेसे स्मृत्युक्त कर्म भी 'धर्म' ही है') ॥

१ ऋक् (= ऋच्, स्त्री), साम (= सामन्), यजुः (= यजुस् । २ न), अर्थात् 'ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद' ये ३ 'वेद' हैं, इन तीनोंका 'त्रयी' (स्त्री), यह १ नाम है ॥

२ शिक्षा (स्त्री), आदि ('आदि शब्दसे 'कल्प १, व्याकरण २, निरुक्त ३, ज्यौतिष ४ और छन्दः ५, इनका संग्रह है') को 'वेदाङ्गम्'[1] (न) 'वेदाङ्ग' अर्थात् 'वेदोंका अङ्ग' कहते हैं ॥

३ ओङ्कारः (+ॐकारः), प्रणवः, (२ पु), 'वेदारम्भ' अर्थात् 'ओंकार' के २ नाम हैं ॥

४ इतिहासः (पु), 'पुरावृत्तम् (न), 'इतिहास' के २ नाम हैं। ('पूर्व-कालमें बीती हुई कथाको 'इतिहास' कहते हैं, जैसे—'महाभारत,……') ॥

५ उदात्तः (पु), आदि ('आदि पदसे 'अनुदात्त और स्वरित' का संग्रह है'), ३ को 'स्वराः'[2] (पु), अर्थात् 'स्वर' कहते हैं ॥

६ आन्वीक्षिकी[3] (स्त्री), 'गौतम आदिकी रचित तर्कविद्या' का १ नाम है ॥

---

१. तदुक्तम्—'शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः।
छन्दोविचितिरित्येष षडङ्गो वेद उच्यते ॥ १ ॥' इति ॥

२. तदुक्तम्—'उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः।
चतुर्थः प्रचितो नोक्तो यतोऽसौ छान्दसः स्मृतः ॥ १ ॥' इति ॥

३. आन्वीक्षिक्यादयश्चतस्रो विद्याः कामन्दके—
'आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती।
विद्या ह्येताश्चतस्रस्तु लोकसंस्थितिहेतवः ॥ १ ॥' इति ॥

१ दण्डनीतिस्तर्कविद्याऽर्थशास्त्रयोः ।
२ आख्यायिकोपलब्धार्था ३ पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

---

१ दण्डनीतिः (स्त्री), 'बृहस्पति आदिके रचित अर्थशास्त्र' का १ नाम है ॥

२ आख्यायिका, उपलब्धार्था (२ स्त्री), 'आख्यायिका' के २ नाम हैं। ('अनुभूत विषयको प्रतिपादन करनेवाले ग्रन्थको 'आख्यायिका'[1] कहते हैं, हैं, जैसे—'कादम्बरी, वासवदत्ता······') ॥

३ पुराणम् (न), 'पुराण' अर्थात् पांच लक्षणोंसे युक्त ग्रंथ' का १ नाम है। ('सर्ग १, प्रतिसर्ग अर्थात् संहार २, वंश ३, मन्वन्तर ४ और वंशवर्णन ५, इन पांच लक्षणोंसे युक्त ग्रन्थको 'पुराण'[2] कहते हैं। 'पद्मपुराण १, ब्रह्मपुराण ३, शिवपुराण ४, देवीभागवत पुराण ५, नारदपुराण ६, मार्कण्डेयपुराण ७, अग्निपुराण ८, भविष्यपुराण ९, ब्रह्मवैवर्तपुराण १०, लिङ्गपुराण ११, वाराहपुराण १२, स्कन्दपुराण १३, वामनपुराण १४, कूर्मपुराण १५, मत्स्यपुराण १६ गरुडपुराण १७, और ब्रह्माण्डपुराण १८, ये १८ 'पुराण'[3] हैं') ॥

तासां प्रतिपाद्यविषयाश्च विज्ञानादयस्तदाह—

'आन्वीक्षिक्यां तु विज्ञानं धर्माधर्मौ त्रयीस्थितौ ।
अर्थानर्थौ तु वार्त्तायां दण्डनीत्यां नयानयौ ॥ १ ॥' इति ॥

१. 'आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशादिकीर्तनम् ।
अस्यामन्यकवीनाञ्च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित् ॥ १ ॥
कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते ।
आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित् ॥ २ ॥
अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम् ॥' इति ॥ सा द० ६।३३४॥

२. 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥१॥
इति अभि० चिन्ता० 'हैम' २।१६६ ॥

प्रतिसर्गः संहारोऽन्यत्स्पष्टम् । क्वचित् 'वंशानुचरितं चैवे'ति तृतीयपादस्थाने 'भूम्यादेश्चैव संस्थानम् इति पाठभेदः ।

३. तदुक्तं विष्णुपुराणे—

१ प्रबन्धकल्पना कथा २ प्रवह्लिका प्रहेलिका ।

---

१ कथा (स्त्री), 'कथा' अर्थात् '[१]वाक्यविस्तारकी कल्पनावाले ग्रन्थ'का १ नाम है । ('जैसे—'रामायण, कथासरित्सागर, बृहत्कथामञ्जरी,'' ''') ॥

२ प्रवह्लिका (+प्रवल्हिका, प्रवल्ही, प्रश्नदूती, विपादिका),[२] प्रहेलिका (२ स्त्री), 'पहेली, बुझौवल' के २ नाम हैं । (संस्कृतकी पहेली जैसे—'पानीयं पातुमिच्छामि त्वत्तः कमललोचने । यदि दास्यसि नेच्छामि न दास्यसि पिबाम्यहम्' । इस श्लोकमें दोनों 'दास्यसि' पदको दानार्थक मानकर 'दोगी' यह अर्थ करनेपर सन्देह होता है और एक 'दास्यसि' पदको उक्तार्थक तथा दूसरे 'दास्यसि' पदका 'दासी हो' यह अर्थ माननेपर संदेह दूर हो जाता है । हिन्दीकी पहेली जैसे—'सारी लुगड़ी जल गई, जला न एको तागा । घरके लड़के फँस गये, घर खिड़कीसे भागा' ॥ इस पद्यमें 'समूची लुगड़ी अर्थात् कन्थाके जलने पर एक तागाका भी नहीं जलना, चैतन्य गृहवासियोंका फंस जाना और अचैतन्य घरका भाग जाना, ये सब सन्देह उत्पन्न होते हैं; किन्तु 'जल गया' इस शब्दका 'जलमें गया' ऐसा अर्थ करनेपर एक तागाका भी नहीं जलना असन्देहार्थक है, तथा जालमें चैतन्य मछलियोंका फँस जाना और जालके छिद्ररूपी खिड़कीसे पानीरूपी मछलियोंके घरका भाग जाना ऐसा अर्थ करनेसे कोई सन्देह नहीं होता है, इसी तरह प्रत्येक भाषामें 'पहेली' होती है') ॥

अष्टादश पुराणानि पुराणज्ञाः प्रचक्षते । पाद्मं ब्राह्मं वैष्णवञ्च शैवं भागवतं तथा ॥१॥
तथाऽन्यन्नारदीयञ्च मार्कण्डेयञ्च सप्तमम् आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यं नवमं स्मृतम् ॥२॥
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लैङ्गमेकादशं तथा । वाराहं द्वादशञ्चैव स्कान्दञ्चात्र त्रयोदशम् ॥३॥
चतुर्दशं वामनकं कौर्मं पञ्चदशं स्मृतम् । मात्स्यञ्च गारुडञ्चैव ब्रह्माण्डञ्च ततः परम् ॥४॥' इति ॥

प्रत्येकपुराणस्य श्लोकसङ्ख्याविषयादिज्ञानार्थं विष्णुपुराणस्य त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायो द्रष्टव्य इति ।

२. तदुक्तम्—'व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनम् ।
यत्र बाह्यार्थसम्बद्धं कथ्यते सा प्रहेलिका ॥ १ ॥' इति ॥

१ स्मृतिस्तु धर्मसंहिता २ समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥
३ [1]समस्या तु समासार्था ४ किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
५ वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्याद्६थाह्वयः ॥ ७ ॥

---

१ स्मृतिः (स्त्री), 'स्मृति शास्त्र' अर्थात् 'मनु आदिके बनाये हुए धर्म-ग्रन्थ' का १ नाम है । (मनुस्मृति आदि २० या इससे भी अधिक[2] स्मृतियाँ हैं') ॥

२ समाहृतिः (स्त्री) [3]संग्रह (पु), 'संग्रह ग्रन्थ' के २ नाम हैं । ('जैसे—'हितोपदेश, पञ्चतन्त्र,······') ॥

३ समस्या, समासार्था (+असमासार्था' । २ स्त्री), 'समस्या' के २ नाम हैं । ('पद्यपूर्तिके लिये पद्यका थोड़ा अंश जो कहा जाय, उसे 'समस्या' कहते हैं, जैसे—'टटंटटंटंटटटंटटंटः' यह थोड़ा पद्यांश कहा गया है, इसे पूरा करनेपर 'राज्याभिषेके मदविह्वलाया हस्तच्युतो हेमघटो युवत्याः । सोपान-मार्गेषु करोति शब्दं टटंटटंटंटटटंटटंटः' यह पद्य होता है । यह भी प्रत्येक भाषामें होती है') ॥

४ किंवदन्ती, जनश्रुतिः (२ स्त्री), लोगोंमें बातचीतके चलने, शोर हो जाने, लोकनिन्दा या लोकोक्ति' के २ नाम हैं ॥

५ वार्ता, प्रवृत्तिः (२ स्त्री), वृत्तान्तः, उदन्तः (२ पु), 'बात' के ४ नाम हैं ॥

६ आह्वयः (पु), आख्या, आह्वा (२ स्त्री), अभिधानम् , नामधेयम् ,

---

१. 'समस्या त्वसमासार्था·········' इति पाठान्तरम् ॥

२. मनुर्यमो वसिष्ठोऽत्रिर्दक्षो विष्णुस्तथाऽङ्गिराः ।
उशना वाक्पतिर्व्यास आपस्तम्बोऽथ गौतमः ॥ १ ॥
कात्यायनो नारदश्च याज्ञवल्क्यः पराशरः ।
संवर्तश्चैव शङ्खश्च हारीतो लिखितस्तथा ॥ २ ॥' इति ॥
एता विंशतिराख्याता धर्मशास्त्रप्रवर्तकाः ।

क्वचित् 'नारदश्च' इत्यस्य स्थाने 'शातातपश्च'इति पाठः । 'मन्वादिस्मृतयो यास्तु षट्त्रिंशत्परिकीर्तिताः' इति भविष्यपुराणे गुहं प्रति विष्णूक्तेस्तासां षट्त्रिंशत्सङ्ख्या वा बोध्या ॥

३. 'विस्तरेणोपदिष्टानामर्थानां सूत्रभाष्ययोः ।
निबन्धो यः समासेन संग्रहं तं विदुर्बुधाः ॥ १ ॥' इति ॥

आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च।
१ हूतिराकारणाह्वानं २ संहूतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥
३ विवादो व्यवहारः स्या४दुपन्यासस्तु वाङ्मुखम्।
५ उपोद्घात उदाहारः ६ शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥
७ प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च ८ प्रतिवाक्योत्तरे समे।
९ मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यान१०मथ मिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥

नाम (= नामन्। ३ न। + संज्ञा, स्त्री), 'नाम' के ६ नाम हैं ॥

१ हूतिः, आकारणा (२ स्त्री), आह्वानम् (न), 'बुलाने या पुकारने' के ३ नाम हैं।

२ संहूतिः (स्त्री), 'इकट्ठा होकर बहुत लोगोंके पुकारने' का १ नाम है ॥

३ विवादः, व्यवहारः (२ पु), 'विवाद या झगड़ा' अर्थात् 'लेन, देन इत्यादि किसी विरुद्ध विषयोंको लेकर परस्पर विरुद्ध भाषण करने या मुकदमे-बाजी' के २ नाम हैं ॥

४ उपन्यासः (पु), वाङ्मुखम् (न), बातको प्रारम्भ करने' के २ नाम हैं ॥

५ उपोद्घातः, उदाहारः (२ पु), 'कही जानेवाली बातकी सिद्धिके लिये भूमिका बाँधने, या दृष्टान्त आदि देने' के २ नाम हैं ॥

६ शपनम् (न), शपथः (पु) 'शपथ कसम' के २ नाम हैं ॥

७ प्रश्नः, अनुयोगः, (२ पु), पृच्छा (स्त्री), 'प्रश्न' के २ नाम हैं ॥

८ प्रतिवाक्यम् , उत्तरम् (२ न), 'उत्तर, जबाब' के २ नाम हैं ॥

९ मिथ्याभियोगः (पु), अभ्याख्यानम् (न), 'किसीपर झूठा आक्षेप करने' के २ नाम हैं ॥ (जैसे—'कुछ नहीं लिये हुए किसी आदमीपर तुमने अमुक चीज ली है, इत्यादि आक्षेप करना,........') ॥

१० मिथ्याभिशंसनम् (न), अभिशापः (पु । + शापः), 'किसीके ऊपर पापविषयक झूठा सन्देह करने' के २ नाम हैं। ('जैसे—किसीने परदारागमन या मद्यपान इत्यादि नहीं किया है ; किन्तु उसपर परदारागमन या मद्यपान आदि करनेका सन्देह करना,..............') ॥

अभिशापः १ प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।
२ [1]यशः कीर्तिः समज्ञा च ३ स्तवः स्तोत्रं नुतिः स्तुतिः ॥ ११ ॥
४ आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्त५मुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।
७ काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥
७ अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ।
उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥
८ पारुष्यमतिवादः स्याद्—

१ प्रणादः (पु), 'गुणके प्रेमसे कहे हुए शब्द' अर्थात् 'वाहवाही या शाबासी देने' का २ नाम है ॥

२ यशः (= यशस् , न), कीर्त्तिः, समज्ञा (+ समाज्ञा, समज्या । २ स्त्री), 'कीर्ति यश' के ३ नाम हैं । (जीवित व्यक्तिकी ख्यातिको 'यश' तथा मृत व्यक्तिकी ख्यातिको 'कीर्त्ति' कहते हैं, ऐसा मनुस्मृतिके टीकाकार कुल्लूक भट्टने कहा है[2] ॥

३ स्तवः (पु), स्तोत्रम् (न), नुतिः, स्तुतिः (+ प्रशंसा । २ स्त्री), 'स्तुति' के ४ नाम हैं ॥

४ [3]आम्रेडितम् (न), 'एक ही शब्दको दो या तीन बार कहने' का १ नाम है । (जैसे—साँप साँप दौड़ो दौड़ो,······') ॥

५ उच्चैर्घुष्टम् (न), घोषणा (स्त्री), ऊँचे स्वरसे घोषणा कहने' के २ नाम हैं ।

६ काकुः (स्त्री), 'शोक डर या काम इत्यादिके कारण विकृत ध्वनिसे बोलने' का १ नाम हैं । 'जैसे—उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते'······' अर्थात् किसी बुराई करनेवालेसे—'आपने हमारा बड़ा उपकार किया' इत्यादि वचन कहना······') ॥

७ अवर्णः, आक्षेपः, निर्वादः, परीवादः (+ परिवादः), अपवादः (+ अववादः), उपक्रोशः (६ पु), जुगुप्सा, कुत्सा, निन्दा (३ स्त्री), गर्हणम् (न), 'निन्दा, शिकायत' के १० नाम हैं ॥

८ पारुष्यम् (न), अतिवादः (पु), 'कटु वचन या कड़ाईसे बोलने' के २ नाम हैं ॥

१. 'यशः कीर्तिः समज्या च······' इति पाठान्तरम् ।

२. एतदर्थं मनुस्मृतेर्मन्वर्थमुक्तावली (८।१२७) टीका द्रष्टव्या ।

३. तस्य परमाम्रेडितम् (पा० सू० ८।१।२) इत्यनेनेत्यवधेयम् ॥

—१ भर्त्सनं त्वपकारगीः।
२ यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥
३ तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति।
४ स्यादाभाषणमालापः ५ प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥
६ अनुलापो मुहुर्भाषा ७ विलापः परिदेवनम्।
८ विप्रलापो विरोधोक्तिः ९ संलापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥
१० सुप्रलापः सुवचन ११ मपलापस्तु निह्नवः।

१ भर्त्सनम् (न), अपकारगीः (= अपकारगिर्, स्त्री), 'फटकारने' के २ नाम हैं ॥

२ परिभाषणम् (न), 'शिकायत करते हुए दोषको कहने' का १ नाम है ॥

३ आक्षारणा (स्त्री। + न), 'परपुरुषगमन या परस्त्री-गमन-विषयक दोष लगाने' का १ नाम है ॥

४ आभाषणम् (न), आलापः (पु), 'प्रेमसे बात करने' के २ नाम हैं ॥

५ प्रलापः (पु), 'प्रलाप करने, बड़बड़ाने' का १ नाम है ॥

६ अनुलापः (पु), मुहुर्भाषा (स्त्री), 'एक ही विषयको बार-बार कहने' के २ नाम हैं ॥

७ विलापः (पु। + विलपनम्, न), परिदेवनम् (न। + स्त्री), रोते हुए बोलने' के २ नाम हैं ॥

८ विप्रलापः (पु), विरोधोक्तिः (स्त्री), 'परस्पर विरुद्ध बात कहने' के २ नाम हैं ॥

९ संलापः (पु), 'परस्परमें बात करने' का १ नाम है। ('आलाप' एक आदमी भी कर सकता है; किन्तु 'संलाप' एक आदमी नहीं कर सकता, यही आलाप और संलापमें भेद है') ॥

१० सुप्रलापः (पु), सुवचनम् (न), 'मीठे वचन' के २ नाम हैं ॥

११ अपलापः, निह्नवः (२ पु), 'असल विषयको छिपानेके लिये मुकर जाने' के २ नाम हैं ॥

१ [1]"चोद्यमाक्षेपाभियोगौ २ शापाक्रोशौ दुरेषणा (४६)
३ अस्त्री चाटु चटु ४ श्लाघा प्रेमणा मिथ्याविकत्थनम्' (४७)
५ सन्देशवाग्वाचिकं स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥
७ [2]रुषती वागकल्याणी ८ स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।
९ अत्यर्थमधुरं सान्त्वं—

१ [चोद्यम् (न), आक्षेपः, अभियोगः (२ पु), 'आक्षेप' के ३ नाम हैं] ॥

२ [शापः, आक्रोशः (२ पु), दुरेषणा (स्त्री), 'शाप देने' के ३ नाम हैं] ॥

३ [चाटु, चटु (२ पु न), 'मुंहदेखी बात कहने, चापलूसी करने' के २ नाम हैं] ॥

४ [श्लाघा (स्त्री) 'प्रेमसे झूठी स्तुति करने' का १ नाम है] ॥

५ सन्देशवाक् (= सन्देशवाच्, स्त्री), वाचिकम् (न) 'संदेश कहने' के २ नाम हैं ॥

६ यहां से '……त्रिषु तद्वति (१।६।२२) तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

७ रुषती (त्रि । + रुशती, उषती मु० म० । यह 'रुषती' स्त्रीलिङ्गका रूप है, पुंल्लिङ्गमें 'रुषन्' और नपुंसकलिङ्गमें 'रुषत्' रूप होता है । इसी तरह आगे कहे जानेवाले शब्दोंके भी तीनों लिङ्गमें भिन्न २ रूप होंगे, उन्हें स्वयं समझ लेना चाहिये'), 'अशुभ वचन' का १ नाम है ॥

८ कल्या (त्रि । + काल्या), 'शुभ वचन' का १ नाम है ॥

९ सान्त्वम् (त्रि), 'अत्यन्त मधुर वचन' का १ नाम है ॥

१. 'चोद्यमाक्षेप………विकत्थनम्' अयमंशः क्षी० स्वा० टीकायामुपलभ्यते ॥

२. 'रुषती वागकल्याणी……' इति मुकुटसम्मतं पाठान्तरम् । अत्र '(रुषती) हिंस्रेत्यर्थः, न तां वदेद्रुषतीं (गां) पापकोक्याम्, अत एव 'रुषती'ति असभ्यः पाठः' इति क्षी० स्वा० । 'मुकुटस्तु 'उषती'ति पाठे 'उष दाहे' इत्यस्य शत्रन्तस्य 'उषती' इति रूपमाह, तन्न । तस्माच्छपि 'कर्तरि शप्' (पा० सू० ३।१।६८) 'पुगन्तलघु—(पा० सू० ७।३।८६) इति गुणस्य 'शप्श्यनोर्नित्यम्' (पा० सू० ७।१।८१) इति नुमश्च प्रसङ्गात्' इति भा० दी० । तन्नेति भा० दी० प्रतीकमादाय 'गुणस्य संज्ञापूर्वकत्वेन नुम आगमशासनत्वेन तेनैव वारितत्वेनाकिञ्चित्करमेतत् । पीयूषव्याख्यायामपि 'उषती' इति पाठं प्रदर्श्य 'रुशती' इत्येके—इत्युक्तम्' इति शि० द० इत्युक्तम् ॥

—१ सङ्गतं हृदयङ्गमम् ॥ १८ ॥

२ निष्ठुरं परुषं ३ ग्राम्यमश्लीलं ४ सूनृतं प्रिये।

सत्येऽ५थ सङ्कुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

६ लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं ७ निरस्तं त्वरितोदितम्।

८ [1]अम्बूकृतं सनिष्ठीव९मबद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥

१० अनक्षरमवाच्यं स्या११दाहतं तु मृषार्थकम्।

---

१ सङ्गतम्, हृदयङ्गमम् (२ त्रि), 'संगतियुक्त वचन, मौकेकी बात' के २ नाम हैं ॥

२ निष्ठुरम्, परुषम् (२ त्रि), 'निष्ठुर वचन' के २ नाम हैं ॥

३ ग्राम्यम्, अश्लीलम् (२ त्रि), 'भाँड़ आदिके कहे हुए सभ्यता-विरुद्ध वचन' के २ नाम हैं ॥

४ सूनृतम् (त्रि), 'सत्य और प्रिय वचन' का १ नाम है ॥

५ सङ्कुलम्, क्लिष्टम्, परस्परपराहतम् (भा० दी० म० । ३ त्रि), 'विरुद्धार्थक या बेमौकेकी बात' के ३ नाम हैं ॥

६ लुप्तवर्णपदम्, ग्रस्तम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'रोगी, बालक या असमर्थके कहे हुए अधूरे वचन' के २ नाम हैं।

७ निरस्तम्, त्वरितोदितम् (भा० दी० म० । २ त्रि), शीघ्रतासे कहे हुए वचन' के २ नाम हैं ॥

८ अम्बूकृतम्, सनिष्ठीवम् (भा० दी० म० सनिष्ठेवम् । २ त्रि), 'थूकका छींटा निकलते हुए कहे गये वचन' के २ नाम हैं ॥

९ अबद्धम् (+ अबध्यम्), अनर्थकम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'अनर्थक वचन' अर्थात् 'बिना मतलबकी बात' के २ नाम हैं ॥

१० अनक्षरम्, अवाच्यम् (२ त्रि), 'नहीं कहने योग्य वचन' के २ नाम हैं ॥

११ आहतम्, मृषार्थकम् (भा० दी० म० । २ त्रि), 'अत्यन्त झूठे वचन' के २ नाम हैं। (जैसे–बन्ध्याका वह लड़का, आकाशपुष्पका मुकुट पहने हुए, मृगतृष्णाके जलमें स्नानकर, कच्छपीदुग्धको पीनेके उपरान्त, शशशृङ्गके बाणको

---

१. 'अम्बूकृतं सनिष्ठेवमबध्यं स्यादनर्थकम्' इति पाठान्तरम् ॥

१ ¹"सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं २ भणितं रतिकूजितम् (४८)
३ श्राव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम्"(४९)
४ अथ म्लिष्टमविस्पष्टं ५ वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥
६ सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति ।
७ शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ॥ २२ ॥
स्वाननिर्घोषनिर्ह्रादनादनिस्वाननिस्वनाः ।
आरवारावसंरावविरावा ८ अथ मर्मरः ॥ २३ ॥
स्वनिते वस्त्रपर्णानां ९ भूषणानां तु शिञ्जितम् ।

बजाकर अष्टम स्वरसे गान किया तो, उसे परार्द्धसे अधिक रुपया पारितोषिक मिला'………') ॥

१ [सोल्लुण्ठनम्, सोत्प्रासम् (२ त्रि), 'हँसीकी बात'के २ नाम हैं] ॥

२ [भणितम् (+ मणितम्), रतिकूजितम् (२ त्रि), 'रति-कालमें किये हुए शब्द'के २ नाम हैं] ॥

३ [श्राव्यम्, हृद्यम्, (मनोहारि = मनोहारिन्), विस्पष्टम्, प्रकटोदितम् (५ त्रि), 'स्पष्ट वचन' के ५ नाम हैं। (म० से 'श्राव्यम्' आदि ३ नाम 'मनोहर वचन' के हैं और शेष 'विस्पष्टम्' आदि २ नाम उक्तार्थक हैं')] ॥

४ म्लिष्टम्, अविस्पष्टम् (२ त्रि) 'अस्पष्ट वचन' के २ नाम हैं ॥

५ वितथम्, अनृतम् (२ त्रि), झूठे वचन' के २ नाम हैं ॥

६ सत्यम्, तथ्यम्, ऋतम्, सम्यक् (= सम्यञ्च्। ४ त्रि), 'सत्य वचन' के ४ नाम हैं। ये चार शब्द द्रव्यवाचक होनेपर त्रिलिङ्ग होते हैं। ('जैसे-सत्यः पुरुषः, सत्या नारी, सत्यं कुलम्, ………') ॥

७ शब्दः, निनादः, निनदः, ध्वनिः, ध्वानः, रवः, स्वनः, स्वानः, निर्घोषः, निर्ह्रादः, नादः, निस्वानः, निस्वनः, आरवः, आरावः, संरावः, विरावः (१७ पु), 'शब्द' के १७ नाम हैं ॥

८ मर्मरः (पु), 'कपड़े या सूखे पत्तोंके शब्द' का १ नाम है ॥

९ शिञ्जितम् (न। + स्वामी म० 'शिञ्जा'), 'आभूषणके शब्द'का १ नाम है ॥

---

१. 'सोल्लुण्ठनं……प्रकटोदितम्' अयमंशः क्षी० स्वा० टीकायामुपलभ्यते। 'सोल्लुण्ठनं……कूजितम्' इत्येतावन्मात्रोंऽशो भा० दी० व्याख्यातम् ॥

१ निक्वाणो निक्वणः क्वाणः क्वणः क्वणनमित्यपि ॥ २४ ॥
वीणायाः क्वणिते २ प्रादेः प्रक्वाणप्रक्वणादयः।
३ कोलाहलः कलकलः ४ तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥ २५ ॥
५ स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने ६ गीतं गानमिमे समे।
इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

७. अथ नाट्यवर्गः।

७ निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ।

---

१ निक्वाणः, निक्वणः, क्वाणः, क्वणः (४ पु), क्वणनम् (न), 'वीणा आदिके शब्द' के ५ नाम हैं ॥

२ इन 'निक्वाण' आदि शब्दोंके 'प्र' आदि (आदिसे 'उप, सु' इत्यादिका संग्रह है) उपसर्ग जोड़नेसे बने हुए 'प्रक्वाणः' प्रक्वणः' आदि (आदि शब्दसे 'प्रक्वणनम्, उपक्वणः, उपक्वाणः, उपक्वणनम्......' का संग्रह है) शब्द भी उसी अर्थमें होते हैं। ('भा० दी० मतमें 'शिञ्जितम्.......' आदि ५ नाम 'भूषणादिके शब्द' के हैं, 'प्रक्वाण' आदि 'वीणादिके शब्द' के हैं'') ॥

३ कोलाहलः, कलकलः (२ पु०), 'कोलाहल, शोरगुल' के २ नाम हैं ॥

४ वाशितम् (+वासितम् । न), 'पक्षियोंके चहचहाने' अर्थात् शब्द करने'का १ नाम है ॥

५ प्रतिश्रुत् (स्त्री), प्रतिध्वानः (+ प्रतिध्वनिः। पु), प्रतिध्वनित शब्द' के २ नाम हैं। ('ऐसा शब्द पहाड़ आदिकी गुफामें या मन्दिरोंमें होता है') ॥

६ गीतम्, गानम् (२ न), 'गाना' के २ नाम हैं ॥

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

७. अथ नाट्यवर्गः ॥

७ निषादः, ऋषभः, गान्धारः, [२]षड्जः, [३]मध्यमः, धैवतः,

---

१. चिन्त्यमेतत्, 'क्वणो वीणायाञ्च' (पा० सू० ३।३।६५) इति 'च'कारस्य, 'नौ अनुपसर्गे' इत्यनुकर्षणार्थकत्वात् क्षी० स्वा० महे० रा० कृ० दी० क्रमपूर्वव्याख्यानस्यैवौचित्यात् ॥

२ 'नासां कण्ठमुरस्तालुं जिह्वां दन्तांश्च संस्पृशन्।
षड्भ्यः संजायते यस्मात्तस्मात्षड्ज इति स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

३ 'तद्वदेवोत्थितो वायुरुरःकण्ठसमाहतः।
नाभिं प्राप्तो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः' ॥ २ ॥ इति ॥

पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥
१ काकली तु कले सूक्ष्मे २ ध्वनौ तु मधुरास्फुटे।
कलो ३ मन्द्रस्तु गम्भीरे ४ तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥
५ [1]'नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः (५०)
स मन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते' (५१)
६ समन्वितलयस्त्वेकतालो ७ वीणा तु वल्लकी।

---

[2]पञ्चमः (७ पु), ये ७ 'वीणा आदिके तार तथा प्राणियोंके कण्ठसे निकले हुए स्वरोंके भेद' हैं।

१ काकली (+ काकलिः। स्त्री), 'मधुर ध्वनि' का १ नाम है॥

२ कलः (त्रि), 'अस्पष्ट मधुर ध्वनि' का १ नाम है॥

३ मन्द्रः (+ मद्रः। त्रि), 'गम्भीर ध्वनि' का १ नाम है॥

४ तारः (त्रि), 'अत्यन्त ऊँचे शब्द' का १ नाम है॥

५ [मनुष्योंके हृदयमें बाइस प्रकारकी ध्वनियाँ रहती हैं, उनमें कण्ठके बीच वालोंको 'मन्द्रः', (त्रि) 'मन्द्र' और शिरके बीचमें रहनेवालोंको 'तारः' (त्रि), 'तार' कहते हैं] ॥

६ एकतालः (पु), 'गीत और बाजाओंके लयको एक स्वरमें मिलाने' का १ नाम है॥

७ वीणा, वल्लकी, विपञ्ची (३ स्त्री), [3]'वीणा' के ३ नाम हैं॥

---

१. 'नृणामुरसि.........'गीयते' इत्यंशः केवलं महेश्वरव्याख्याते पुस्तके समुपलभ्यते, किन्तु सर्वैरप्यव्याख्यातोऽयमित्यवधेयम्॥

२. 'वायुः समुद्गतो नाभेरुरोहृत्कण्ठमूर्धसु ।
विचरन् पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

अथ प्रसङ्गात्कुतः २ स्थानात्कस्य २ स्वरस्याविर्भाव इत्यत्र नारदोक्तिः प्रदर्श्यते—

'षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम्।
अजाविकौ च गान्धारं क्रौञ्चो वदति मध्यमम् ॥ १ ॥
पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम्।
अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः' ॥ २ ॥ इति ॥

पुष्पसाधारणे काले वसन्तर्तौ इत्यर्थः ॥

३. कस्य २ वीणायाः कानि २ नामानीत्यत्र हैमोक्तं प्रदर्श्यते—

विपञ्ची १ सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥
२ ततं वीणादिकं वाद्य ३ मानद्धं मुरजादिकम् ।
४ ¹वंशादिकं तु सुषिरं ५ कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥
६ चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम् ।

---

१ परिवादिनी (स्त्री), 'सितार' अर्थात् 'सात तारवाली वीणा' का १ नाम है ॥

२ ततम् (न), 'वीणा आदि बाजाओं' का १ नाम है । ('आदि पदसे 'सैरन्ध्री, रावणहस्त, एकतारा, सारंगी, इसराज, बेला, तानपूरा,……' का संग्रह है') ॥

३ आनद्धम् (+ अवनद्धम् । न), 'जो चमड़ेसे मढ़े गये हों, उन मुरज आदि बाजाओं' का १ नाम है । ('जैसे—मुरज, पटह, ढोल, तबला,……') ॥

४ सुषिरम् (+ शुषिरम् । न), 'वंशी आदि बाजाओं' का १ नाम है । ('आदि पदसे 'शङ्ख, मुरली, तुरही, सींगा, बेन……' का संग्रह है') ॥

५ घनम् (न), 'घड़ी, घण्टा आदि बाजाओं' का १ नाम है । ('आदि पदसे 'घण्टी, झाल, झांझ, मंजीरा,…' का संग्रह है') ॥

६ वादित्रम्, आतोद्यम् (२ न), पूर्वोक्त 'तत १, आनद्ध २, सुषिर ३ और घन ४' इन ²'चार प्रकारके बाजाओं' के २ नाम हैं ॥

'शिवस्य वीणा नालम्बी सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥
नारदस्याथ महती गणानान्तु प्रभावती ।
विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।
चाण्डालानां तु कण्डोलवीणा चाण्डालिकाऽपि सा' ॥ इति ॥

अ० चि० म० 'हैम' २ । २०२–२०४ ॥

१. 'वंशादिकं तु शुषिरं………' इति भा० दी० प्राच्यसम्मतं पाठान्तरम्, क्षी० स्वा० महे० सम्मतं तु मूलोक्तमित्यवधेयम् ॥

२. तथा च भरतः—
'ततश्चैवावनद्धं च घनं शुषिरमेव च । चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितम्' ॥१॥ इति ॥

१ मृदङ्गा मुरजा २ भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥
३ स्याद्यशःपटहो ढक्का ४ [1]भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्।
५ आनकः पटहोऽस्त्री ६ स्यात्कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥
७ वीणादण्डः प्रवालः स्यात् ८ ककुभस्तु प्रसेवकः।
९ कोलम्बकस्तु कायोऽस्या १० उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥

---

१ मृदङ्गः, मुरजः (२ पु) 'मृदङ्ग' के नाम हैं।

२ अङ्क्यः, आलिङ्ग्यः, ऊर्ध्वकः (३ पु) ये तीन 'मृदङ्गके भेद हैं। (हरीतकीके समान आकारवाला [2]'अङ्क्य', यवके मध्यभागके समान आकारवाला [3]'ऊर्ध्वक' और गोपुच्छके समान आकारवाला[4] आलिङ्ग्य होता है') ॥

३ यशःपटहः (पु), ढक्का (स्त्री) 'नगाड़ा' के दो नाम हैं ॥

४ भेरी (+ भेरिः, भम्भा। स्त्री), दुन्दुभिः (पु। आनकः, दुन्दुभिः। २ पु) 'दुन्दुभिः' के २ नाम हैं ॥

५ आनकः, पटहः, (२ पु), 'पटह' के २ नाम हैं ॥

६ कोणः (पु), 'वीणा, बेला, सारङ्गी या इसराज आदि बजानेके लिये काठकी बनाई हुई धनुही' का १ नाम है ॥

७ वीणादण्डः (भा० दी० म०), प्रवालः (२ पु) 'वीणादण्ड' के २ नाम हैं ॥

८ ककुभः, प्रसेवकः (२ पु) 'वीणाके नीचेवाले, चमड़ा आदिसे ढके हुए भाण्ड' के २ नाम हैं ॥

९ कोलम्बकः (पु), 'वीणाका ढाँचा' अर्थात् 'ताररहित वीणाके दण्डादि समुदाय' का १ नाम है ॥

१० उपनाहः (पु), निबन्धनम्, (न। भा० दी० म०), जहाँ वीणाका तार बाँधा जाता है, उस जगह' के २ नाम हैं ॥

---

१. '.........भेर्यामानकदुन्दुभी' इति भा० दी० सम्मतः पाठः। तत्र भेर्यानकदुन्दुभिशब्दान् पृथक् २ व्याख्याय 'द्वे भेर्याः' इति तदुक्तिश्चिन्त्या 'त्रीणि भेर्याः' इत्युक्तेरौचित्यात्॥

२. ३. ४. तदुक्तम्—'हरीतक्याकृतिस्त्वङ्क्यो यवमध्यस्तथोर्ध्वकः।
आलिङ्ग्यश्चैव गोपुच्छसमानः परिकीर्तितः' ॥ १ ॥ इति ॥

१ वाद्यप्रभेदा डमरु-मड्डु-डिण्डिम-झर्झराः।
मर्दलः पणवोऽन्ये च २ नर्तकीलासिके समे॥ ८॥
३ विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्व ४ मोघो ५ घनं क्रमात्।
६ तालः कालक्रियामानं ७ लयः साम्य ८ मथास्त्रियाम्॥ ९॥
ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने।
९ तौर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम्॥ १०॥

---

१ डमरुः, मड्डुः, डिण्डिमः, झर्झरः, मर्दलः, पणवः (६ पु), आदि ('आदि पदसे 'गोमुखः, हुडुकः……' का संग्रह है') 'डमरु, मड्डु अर्थात् जलतरङ्ग, डुगडुगी, झांझ, मर्दल, ढोल आदि बाजाओं' का क्रमशः १-१ नाम है॥

२ नर्तकी, लासिका (२ स्त्री। वस्तुतः ये दोनों शब्द त्रिलिङ्ग हैं, किन्तु स्त्रीलिङ्गमें रूपप्रदर्शन के लिये स्त्रीलिङ्ग कहा गया है, पु० में 'नर्तकः' 'लासकः' न० में 'नर्तकम् , लासकम्' ऐसे रूप होते हैं'), 'नाचने वाले' के २ नाम हैं॥ ('जैसे—'कत्थक, छोकड़ा, वेश्या……')॥

३ तत्त्वम् (न), 'विलम्बसे नाचने, गाने और बजाने' का १ नाम है॥

४ ओघः (पु) 'जल्दी २ नाचने, गाने और बजाने' का १ नाम है॥

५ घनम् (न), 'सामान्य समय (मध्यम गति) से नाचने, गाने और बजाने' का १ नाम है॥

६ तालः (पु), 'ताल' अर्थात् 'जिसमें समय और क्रियाकी कमी-बेशीका प्रमाण रहता है, उसका १ नाम है॥

७ लयः (पु), 'लय' अर्थात् 'जिसमें गाने बजाने और हाथ, भ्रू आदि चलाकर भाव दिखलानेके लिये समय और क्रियाकी कमी-बेशीका प्रमाण रहता है उसका १ नाम है॥

८ ताण्डवम् (पु न), नटनम् , नाट्यम्, लास्यम्, नृत्यम् (+ नृत्तम्), नर्तनम् (५ न), 'नाचने' के ६ नाम हैं॥

९ तौर्यत्रिकम्, नाट्यम् (२ न), 'नाचना, गाना और बजाना; इन तीनोंके समुदाय' के २ नाम हैं॥

१ भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेति नर्तकः ।
स्त्रीवेषधारी पुरुषो २ नाट्योक्तौ ३ गणिकाऽज्जुका ॥ ११ ॥
४ भगिनीपतिरावुत्तो ५ भावो विद्वान् ६ थावुकः ।
जनको ७ युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥
८ राजा भट्टारको देव ९ स्तत्सुता भर्तृदारिका ।
१० देवी कृताभिषेकाया ११ मितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

---

१ भ्रकुंसः, भ्रुकुंसः, भ्रूकुंसः (+ भ्रूकुंसः । ३ पु), 'स्त्रीका रूप बनाकर नाचनेवाले पुरुष' के ३ नाम हैं ॥

२ 'नाट्योक्तौ' इस पदका 'अङ्कहारः' (१।७।१६) के पहलेतक अधिकार होनेसे आगे कहे जानेवाले नामोंका प्रयोग नाटकमें ही होगा, अन्यत्र नहीं ॥

३ गणिका, अज्जुका (२ स्त्री) 'वेश्या' के २ नाम हैं ॥

४ आवुत्तः (+ आवृत्तः । पु), 'बहनोई' अर्थात् 'बहनके पति' का १ नाम है ॥

५ भावः (पु), 'विद्वान्' का १ नाम है ॥

६ थावुकः (पु), 'पिता' का १ नाम है ॥

७ युवराजः, कुमारः (२ पु । म० कुमारः, भर्तृदारकः) 'युवराज' के २ नाम हैं ॥

८ भट्टारकः, देवः (२ पु), 'राजा' के २ नाम हैं ॥

९ भर्तृदारिका (स्त्री), 'राजकुमारी' का १ नाम है ॥

१० देवी (स्त्री), 'पटरानी' का १ नाम है ॥

११ [1]भट्टिनी (स्त्री), 'राजाकी दूसरी सामान्य स्त्रियों' का १ नाम है ॥

---

[1]अयमत्र प्रयोगक्रमः—

'गणिकानुचरैरज्जुकेति नाम्ना नृपेण सा । युवराजस्तु सर्वेण कुमारो भर्तृदारकः ॥ १ ॥
भट्टारको वा देवो वा वाच्यो भृत्यजनेन सः । ब्राह्मणेन तु नाम्नैव राजन्नित्यृषिभिः स च ॥ २ ॥
वयस्य राजन्निति वा विदूषक इमं वदेत् । अभिषिक्ता तु राज्ञाऽसौ देवीत्यन्या तु भोगिनी ॥ ३ ॥
भट्टिनीत्यपरैरन्या नीचैर्गोस्वामिनीति सा' ॥ इति ॥

१ अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ २ [1]राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ।
३ अम्बा माताऽथ बाला स्याद्वासू[2]रार्यस्तु मारिषः ॥ २५ ॥
६ अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा ७ निष्ठानिर्वहणे समे ।

---

१ अब्रह्मण्यम् (न), 'सर्वथा अवध्य ब्राह्मण इत्यादिको मारनेके दोषको कहने' का १ नाम है ॥

२ राष्ट्रियः (पु), 'राजाके शाले' का १ नाम है । ('इसे प्रायः नगरके कोतवालीका अधिकार मिलता है') ॥

३ अम्बा, माता (= मातृ । २ स्त्री), 'माता' के २ नाम हैं । ('नाट्योक्तौ' इस शब्दका अधिकार प्रायिक या विधि और नियम[2] है; अत एव नाटकस्थलसे भिन्न स्थलमें भी 'अम्बा, माता' इन शब्दोंका प्रयोग होता है' ॥)

४ बाला, वासूः (२ स्त्री) 'कुमारी' के २ नाम हैं ॥

५ आर्यः, मारिषः (+ मार्षकः । २), 'अपनेसे श्रेष्ठ या सूत्रधारके पार्श्ववर्ती' के २ नाम हैं ॥

६ अत्तिका (+ अत्तिका । स्त्री), 'बड़ी बहन' का १ नाम हैं ॥

७ निष्ठा (स्त्री) [3]निर्वहणम् (न), 'नाटकके 'निर्वहण' नामक पांचवें सन्धि-विशेष या आरम्भ किये हुये विषयको पूरा करने' के २ नाम हैं ॥

---

[1] 'राजशालस्तु' इति महे० सम्मतः पाठः ।

[2] नाट्यातिरिक्तस्थलेऽपि 'अम्बा' शब्दस्य, नाट्यस्थलेऽपि 'मातृ' शब्दस्य प्रयोगोपलब्धेर्नाट्यस्थलेऽम्बाशब्दस्य प्रचुरप्रयोगात्प्रायिकत्वम्, 'भद्रिन्यज्जुकारिके'त्यादीनान्तु नियमः । अत एव—
'अथैषां रूपकादीनामुक्तीर्वक्ष्याम्यशेषतः । कासुचिन्नियमस्तत्र विधिरेव तु कासुचित्' ॥ १ ॥
इति शब्दार्णवोक्तयोर्विधिनियमयोः सङ्गतिरित्यवधेयम् ॥

[3] तदुक्तं साहित्यदर्पणे—
'मुखं १ प्रतिमुखं २ गर्भो ३ विमर्शः ४ उपसंहृतिः ५ ।
इति पञ्चास्य भेदाः स्युः क्रमात्' । सा० द० ६ । ७५–७६ ॥
उपसंहृतिर्निर्वहणमित्यर्थः । एतल्लक्षणञ्चोक्तं सुधाकरेण—
'मुखसन्ध्यादयो यत्र विकीर्णा बीजसंयुताः । महाप्रयोजनं यान्ति तन्निर्वहणमुच्यते' ॥१॥ इति

१ हण्डे २ हञ्जे ३ हलाऽऽह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥
४ अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो ५ व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।
६ निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकऽसात्त्विके ॥ १६ ॥
८ शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः ।

१ हण्डे (अ), 'नीचको बुलाने' का १ नाम है ॥

२ हञ्जे (अ), 'चेटी (दासी) को बुलाने' का १ नाम है ॥

३ हला (अ), 'सखीको बुलाने' का १ नाम है ॥

४ अङ्गहारः, अङ्गविक्षेपः (२ पु) 'नृत्य विशेष' के २ नाम हैं। ('नाट्योक्तौ' इस पदका अधिकार यहाँतक है, अतः आगे कहे जानेवाले शब्दों का प्रयोग नाटकसे भिन्न स्थलमें भी होगा') ॥

५ व्यञ्जकः, अभिनयः (२ पु) 'इशारा आदिसे मनके अभिप्रायको प्रकट करने' के २ नाम हैं ॥

६ आङ्गिकम् (त्रि), 'अङ्गके द्वारा किये गये कटाक्ष आदि' का १ नाम है ॥

७ सात्त्विकम् (त्रि), 'सत्त्वगुणसे उत्पन्न स्तम्भ आदि गुणों' का १ नाम है । ('स्तम्भ १, स्वेद (पसीना) २, रोमाञ्च ३, स्वरभङ्ग ४, वेपथु (कम्पन) ५, वैवर्ण्य ६, अश्रु ७ और प्रलय (मूर्च्छा) ८, ये ८ [1]'सात्त्विक गुण' हैं ॥

८ शृङ्गारः, वीरः, करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, बीभत्सः, रौद्रः

यथा वा साहित्यदर्पणे—
"बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम् । एकार्थमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत्' ॥ १ ॥
इति सा० द० ६ । ८१—८२ ॥

१. तदुक्तम्—'स्तम्भः १ स्वेदोऽ२थ रोमाञ्चः ३ स्वरभङ्गोऽ४थ वेपथुः ५ ।
वैवर्ण्यं६मश्रु७प्रलय८ इत्यष्टौ सात्त्विका गुणाः ॥ १ ॥
इति सा० द० ३ । १३५-१३६ ॥

बीभत्सरौद्रौ च रसाः १ शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥
२ उत्साहवर्धनो वीरः ३ कारुण्यं करुणा घृणा ।
कृपा दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥
हासो हास्यं च ५ बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।
६ विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥
दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ।

(८ पु) ये ८ 'शृङ्गार, वीर आदि' 'रसाः' (पु) अर्थात् 'रस' हैं। ('च' शब्दसे नवम 'शान्तः' (पु) अर्थात् [1]"शान्त' रसका और मुनीन्द्रके मतसे दशम 'वात्सल्यम्' (न) अर्थात् [2]"वात्सल्य' रसका भी संग्रह है') ॥

१ शृङ्गारः, शुचिः, उज्ज्वलः, (३ पु), 'शृङ्गार रस' के ३ नाम हैं ॥

२ उत्साहवर्द्धनः, वीरः, (२ पु), 'वीर रस' के २ नाम हैं ॥

३ कारुण्यम् (न), करुणा, घृणा, कृपा, दया, अनुकम्पा (५ स्त्री), अनुक्रोशः (पु), 'करुण रस या दया' के ७ नाम हैं ॥

४ हसः, हासः (+हासिका, स्त्री । २ पु), हास्यम् (न), 'हास्य रस' के ३ नाम हैं ॥

५ बीभत्सम्, विकृतम् (+वैकृतः । २ त्रि), 'बीभत्स रस' के २ नाम हैं ॥

६ विस्मयः (पु), अद्भुतम्, आश्चर्यम्, चित्रम् (३ त्रि), 'आश्चर्य या अद्भुत रस' के ४ नाम हैं ॥

७ भैरवम्, दारुणम्, भीषणम्, भीष्मम्, घोरम्, भीमम्, भयानकम्,

---

१. साहित्यदर्पणे 'शान्त'स्यापि नवमरसत्वमङ्गीकृतम् । तथथा —
'शृङ्गार १ हास्य २ करुण ३ रौद्र ४ वीर ५ भयानकाः ६ ।
बीभत्सो ७ऽद्भुत ८ इत्यष्टौ रसाः शान्त९स्तथा मतः' ॥ १ ॥
इति सा० द० ३ । १८२ ॥

२. मुनीन्द्रेण 'वात्सल्य'स्यापि दशमरसत्वमङ्गीकृतम् । तथथा—
'स्फुटं चमत्कारितया वत्सलं च रसं विदुः' । इति सा० द० ३ ॥ २७ ।

भयङ्करं प्रतिभयं १ रौद्रं तूग्रममी त्रिषु ॥ २० ॥
चतुर्दश २ दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ।
४ विकारो मानसो भावो५ऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥
६ गर्वोऽभिमानोऽहङ्कारो७मानश्चित्तसमुन्नतिः ।
८ 'दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः' (५२)
९ अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥
रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽवहेलनमसूर्क्षणम् ।

भयङ्करम्, प्रतिभयम्, (९ त्रि), 'भयानक रस' के ९ नाम हैं ॥

१ रौद्रम्, उग्रम्, (२ त्रि), 'उग्र रस' के २ नाम हैं ॥

२ 'अद्भुतम्' यहाँसे लेकर 'उग्रम्' यहाँतक १४ शब्द 'रस'के अर्थमें प्रयुक्त होनेपर पुंल्लिङ्ग हैं और 'रसवाले'के अर्थमें प्रयुक्त होनेपर त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ दरः, त्रासः (२ पु), भीतिः, भीः (+ भिया । २ स्त्री), साध्वसम्, भयम् (२ न), 'डर' के ६ नाम हैं ॥

४ भावः (पु), 'रत्यादिरूप मनके विकार-विशेष' का १ नाम है ॥

५ अनुभावः (पु), 'मनके विकारके प्रकाशक रत्यादिसूचक रोमाञ्च आदि' का १ नाम है ॥

६ गर्वः, अभिमानः, अहङ्कारः (३ पु), 'अभिमान, घमण्ड' के ३ नाम हैं ॥

७ मानः (पु), चित्तसमुन्नतिः (भा० दी० म० । स्त्री), 'मान, चित्तोन्नति' के २ नाम हैं । ('महे० आदिके मतसे १ ही नाम है । 'गर्व' आदि ५ शब्द एकार्थक हैं, यह भी किसी किसी का मत है') ॥

८ [दर्पः, अवलेपः, अवष्टम्भः, चित्तोद्रेकः, स्मयः, मदः (६ पु), 'घमण्ड' के ६ नाम हैं] ॥

९ अनादरः, परिभवः, परीभावः (३ पु), तिरस्क्रिया, रीढा, अवमानना, अवज्ञा (४ स्त्री), अवहेलनम् (+ अवहेला, स्त्री), असूर्क्षणम् (+ सु०, सु० मभो०, महे० 'असूक्षणम्, असुक्षणम्, संसूक्षणम्, संसुक्षणम्' । २ न), 'अनादर' के ९ नाम हैं ॥

१ मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा २ साऽपत्रपाऽन्यतः ॥ २३ ॥
३ क्षान्तिस्तितिक्षा४ऽभिध्या तु [1]परस्य विषये स्पृहा ।
५ अक्षान्तिरीर्ष्या६ऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥
७ वैरं विरोधो विद्वेषो ८ मन्युशोकौ तु शुक्स्त्रियाम् ।
९ पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

१ मन्दाक्षम् (+ मन्दास्यम् । न), ह्रीः, त्रपा, व्रीडा (+ व्रीडः, पु), लज्जा (४ स्त्री), 'लज्जा' के ५ नाम हैं ॥

२ अपत्रपा (स्त्री), 'पिता आदि दूसरेसे लज्जा करने' का १ नाम है ॥

३ क्षान्तिः, तितिक्षा (२ स्त्री), 'दूसरेकी उन्नतिको सहन करने' के २ नाम हैं ॥

४ अभिध्या (स्त्री), 'दूसरेकी सम्पत्ति आदिको चाहने' का १ नाम है ॥

५ अक्षान्तिः, ईर्ष्या (२ स्त्री), 'ईर्ष्या' अर्थात् 'दूसरे की सम्पत्तिको नहीं सहने' के २ नाम हैं ॥

६ असूया (स्त्री), 'औद्धत्यसे किसीके गुण-विषयक काममें भी दोष निकालने' का १ नाम है । ('जैसे—किसीके दयार्द्र होकर पुण्य करनेपर 'यह नामके लिये पुण्य करता है' इत्यादि दोष निकालनेको [2]''असूया' कहते हैं') ॥

७ वैरम् (न), विरोधः, विद्वेषः (२ पु), 'वैर करने' के ३ नाम हैं ॥

८ मन्युः, शोकः (२ पु), शुक् (= शुच्, स्त्री), 'शोक' के ३ नाम हैं ॥

९ पश्चात्तापः, अनुतापः, विप्रतीसारः (+ विप्रतिसारः । ३ पु), 'पछताने' के ३ नाम हैं ॥

१. '.........परस्य विषये स्पृहा' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'असूयाऽन्यगुणर्द्धीनामौद्धत्यादसहिष्णुता ।
दोषोद्घोषभ्रूविभेदाऽवज्ञाक्रोधेङ्गितादिकृत्' ॥ १ ॥ इति सा० द० ३।१६६॥

१ कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट्क्रुधौ स्त्रियौ ।
२ शुचौ तु चरिते शील३मुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥
४ प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहो५ऽथ दोहदम् ।
इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥
कामोऽभिलाषस्तर्षश्च ६ सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ।
७ उपाधिर्ना धर्मचिन्ता ८ पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥
९ स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यान१०मुत्कण्ठोत्कलिके समे ।
११ उत्साहोऽध्यवसायः स्यात् १२ स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥
१३ कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे ।

---

१ कोपः, क्रोधः, अमर्षः, रोषः, प्रतिघः (५ पु), रुट् (= रुष् । + रुषा), क्रुध् (+ क्रुधा । स्त्री), 'क्रोध' के ७ नाम हैं ॥

२ शीलम् (न), 'शील' अर्थात् 'आचरण शुद्ध रखने'का १ नाम है ॥

३ उन्मादः, चित्तविभ्रमः (२ पु), 'पागलपन' के २ नाम हैं

४ प्रेमा (= प्रेमन्, पु), प्रियता (स्त्री), हार्दम्, प्रेम (= प्रेमन् २ न), स्नेहः (पु) 'प्रेम' के ५ नाम हैं ॥

५ दोहदम् (न), इच्छा, काङ्क्षा, स्पृहा, ईहा, तृट् (= तृष्), वाञ्छा, लिप्सा (७ स्त्री), मनोरथः, कामः, अभिलाषः, तर्षः (४ पु), 'इच्छा, चाहना' के १२ नाम हैं । ('म० से 'दोहदम्' यह १ नाम 'गर्भिणीकी इच्छा' का है और शेष १२ नाम उक्तार्थक हैं') ॥

६ लालसा (पु स्त्री), 'लालसा' अर्थात् 'अधिक चाहना' का १ नाम है ॥

७ उपाधिः (पु), धर्मचिन्ता (स्त्री) 'धर्मविषयक चिन्ता' के २ नाम हैं ॥

८ आधिः (पु), 'मानसिक दुःख' का १ नाम है ॥

९ चिन्ता, स्मृतिः (२ स्त्री), आध्यानम् (न), 'याद करने' के ३ नाम हैं ॥

१० उत्कण्ठा, उत्कलिका (२ स्त्री), 'उत्कण्ठा' के २ नाम हैं ॥

११ उत्साहः, अध्यवसायः (२ पु) 'उत्साह' के २ नाम हैं ॥

१२ वीर्यम् (न), 'सामर्थ्ययुक्त उत्साह' का १ नाम है ॥

१३ कपटः (पु न), व्याजः, दम्भः उपधिः (३ पु), छद्म (= छद्मन्),

कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं १ प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥
२ कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।
३ स्त्रीणां विलासविब्वोकविभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥
हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ।

कैतवम्, कुसृतिः, निकृतिः, (२ स्त्री), शाठ्यम् (+ शठनम् । शेष २ न), 'धूर्तता, कपट, दगाबाज़ी' के ९ नाम हैं ॥

१ प्रमादः (पु), अनवधानता (स्त्री), 'असावधानी' के २ नाम हैं ॥

२ कौतूहलम्, कौतुकम्, कुतुकम्, कुतूहलम् (४ न), 'कौतूहल' अर्थात् 'खेल, तमाशा, जादू, ……' के ४ नाम हैं ॥

३ विलासः, विब्वोकः, विभ्रमः (३ पु), ललितम् (न), हेला, लीला (२ स्त्री), ये ६ 'स्त्रियोंके शृङ्गार, भाव अर्थात् रत्यादि और मनोविकारसे उत्पन्न क्रियाविशेष' हैं, इनका 'हावः' (पु) 'हाव' यह १ नाम है। ('नाटकरत्नकोष' में—'लीला १, विलास २, विच्छित्ति ३, विभ्रम ४, किलकिञ्चित ५, मोट्टायित ६, कुट्टमित ७, विब्वोक ८, ललित ९ और विहृत १० ये १० स्त्रियोंकी स्वभावज क्रियाएँ हैं, यह कहा है¹। साहित्यदर्पण' में—'भाव १, हाव २, हेला ३, शोभा ४, कान्ति ५, दीप्ति ६, माधुर्य ७, प्रगल्भता ८, औदार्य ९, धैर्य १०, लीला ११, विलास १२, विच्छित्ति १३, बिब्बोक १४, किलकिञ्चित १५, मोट्टायित १६, कुट्टमित १७, विभ्रम १८, ललित १९, मद २०, विहृत २१, तपन २२, मौग्ध्य २३, विक्षेप २४, कुतूहल २५, हसित २६, चकित २७, और केलि २८, ये २८ जवानीमें स्त्रियोंके सात्विक भावसे उत्पन्न अलङ्कार होते हैं, ऐसा कहा है; उनमें 'भाव' आदि ३ 'आङ्गिक अलङ्कार' हैं, 'शोभा' आदि ७ विना यत्नके उत्पन्न अलङ्कार, हैं और 'लीला' आदि १८ 'स्वभावज अलङ्कार' हैं। पूर्वोक्त २८ अलङ्कारों में 'भाव' आदि १० अलङ्कार पुरुषोंके भी हो सकते हैं, किन्तु स्त्रियोंमें ही इनको

१. तदुक्तं नाटकरत्नकोषे—

'लीला विलासो विच्छित्तिर्विभ्रमः किलकिञ्चितम् ।
मोट्टायितं कुट्टमितं बिब्बोको ललितं तथा ॥ १ ॥
विहृतं चेति मन्तव्या दश स्त्रीणां स्वभावजाः' ॥ इति ॥

१ द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च ॥ ३२ ॥
२ व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च ३ क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।
४ घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्५प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥

अधिक शोभा होती है, ऐसा भी कहा है[1]) ॥

१ द्रवः, केलिः (+केली, स्त्री,), परीहासः (+परिहासः । ३ पु), क्रीडा, लीला (+खेला । स्त्री), नर्म (=नर्मन् न), 'क्रीडामात्र' के ६ नाम हैं ॥

२ व्याजः, अपदेशः (२ पु), लक्ष्यम् (+लक्षम् । न), 'बहाना करने' के ३ नाम हैं ॥

३ क्रीडा, खेला (२ स्त्री), कूर्दनम् (न), 'लड़कपनके खेल' के ३ नाम हैं । (म० प्रथम दो नाम उक्तार्थक और तीसरा नाम 'कूदने' का है ।

४ घर्मः, निदाघः, स्वेदः (३ पु), भा० दी० म० 'घाम' के और मु० म० 'पसीने' के ३ नाम हैं ॥

५ प्रलयः (पु) नष्टचेष्टता (+मूर्च्छा । स्त्री), 'बेहोशी' के २ नाम हैं ॥

---

१. तदुक्तम्—

'यौवने सत्त्वजास्तासामष्टाविंशतिसङ्ख्यकाः ।
अलङ्कारास्तत्र भावहावहेलास्त्रयोऽङ्गजाः ॥ १ ॥
शोभा कान्तिश्च दीप्तिश्च माधुर्यं च प्रगल्भता ।
औदार्यं धैर्यमित्येते सप्तैव स्युरयत्नजाः ॥ २ ॥
लीला विलासो विच्छित्तिर्विब्वोकः किलकिञ्चितम् ।
मोट्टायितं कुट्टमितं विभ्रमो ललितं मदः ॥ ३ ॥
विहृतं तपनं मौग्ध्यं विक्षेपश्च कुतूहलम् ।
हसितं चकितं केलिरित्यष्टादशसंख्यकाः ॥ ४ ॥
स्वभावजाश्च, भावाद्या दश पुंसां भवन्त्यपि ॥'

(इति सा० द० ३।८९–९२॥)

एतेषां लक्षणोदाहरणान्यत्र ग्रन्थविस्तरभिया नोक्तानीत्यतस्तानि सा० द० ३।९३–१२० तमे श्लोके द्रष्टव्यानि ॥

१ अवहित्थाऽऽकारगुप्तिः २ समौ संवेगसंभ्रमौ ।
३ स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः ४ स मनाक्स्मितम् ॥ ३४ ॥
मध्यमः स्याद्विहसितं ६ रोमाञ्चो [1]रोमहर्षणम् ।
७ क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं ८ जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम् ॥ ३५ ॥
९ विप्रलम्भो विसंवादो १० रिङ्गणं स्खलनं समे ।
११ स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥

---

१ अवहित्था (+न), आकारगुप्तिः (२ स्त्री), 'अपने आकारको छिपाने' के २ नाम हैं ॥

२ संवेगः, सम्भ्रमः (२ पु) 'हर्ष आदिके कारण शीघ्रता करने' के २ नाम हैं ॥

३ आच्छुरितकम् (न । काश्य म० 'अवच्छुरितम्') 'साभिप्राय हँसने' का १ नाम है ॥

४ [2]स्मितम् (न), 'साभिप्राय मुस्कुराने' का १ नाम है ॥

५ [3]विहसितम् (न) 'साधारण हँसने' का १ नाम है ॥

६ रोमाञ्चः (पु), रोमहर्षणम् (+लोमहर्षणम्, रोमोद्गमः, उद्धर्षणम्, उल्लासनकम् । 'रोमाञ्च होने' के २ नाम हैं ॥

७ क्रन्दितम् रुदितम्, क्रुष्टम् (३ न) 'रोने' के ३ नाम हैं ॥

८ जृम्भः (त्रि), जृम्भणम् (न) 'जम्हाई' के २ नाम हैं ॥

९ विप्रलम्भः, विसंवादः (२ पु) 'ठगपनेसे बात करने' के २ नाम है ॥

१० रिङ्गणम् (+रिङ्खणम्), स्खलनम् (२न) 'धर्ममार्गसे प्रतिकूल चलने, रेंगने, की जगहके चिकनी होनेसे या अन्य किसी कारणसे पैर फिसल जाने' के ५ नाम हैं ॥

११ निद्रा (स्त्री) शयनम् (न) स्वापः, स्वप्नः, संवेशः (३ पु), 'नींद' के ५ नाम हैं ॥

---

१. '......लोमहर्षणम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'ईषद्विकसितैर्दन्तैः कटाक्षैः सौष्ठवान्वितम् ।
अलक्षितद्विजद्वारमुत्तमानां स्मितं भवेत्' ॥ १ ॥ इति ॥

३. तदुक्तम्—'आकुञ्चितकपोलाक्षं सस्वनं निःस्वनं तथा ।
प्रस्तावोत्थं सानुरागमाहुर्विहसितं बुधाः' ॥ १ ॥ इति ॥

१ तन्द्री प्रमीला २ भ्रकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिः स्त्रियाम् ।
३ अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्ष्णि ४ संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥
स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चा५थ वेपथुः ।
कम्पोऽ६थ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

८. अथ पातालभोगिवर्गः ।

७ अधोभुवनपातालं बलिसद्म रसातलम् ।
नागलोको८ऽथ कुहरं [1]शुषिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥

---

१ तन्द्री (+ तन्द्रिः, तन्द्रा), प्रमीला (२ स्त्री), 'तन्द्रा होने' अर्थात् 'अधिक थकावट आदिके कारण शरीरेन्द्रियोंके शिथिल होने या नींद के आदि और अन्तमें आलस्य होने' के २ नाम हैं ॥

२ भ्रकुटिः, भ्रुकुटिः, भ्रूकुटिः (+ भृकुटिः । ३ स्त्री), 'क्रोध आदिसे भौंहको टेढ़ा करने' के ३ नाम हैं ॥

३ अदृष्टिः (स्त्री), 'क्रूरतापूर्वक देखने' का १ नाम है ॥

४ संसिद्धिः, प्रकृतिः (२ स्त्री), स्वरूपम् (न), स्वभावः, निसर्गः (२ पु), 'स्वभाव' के ५ नाम हैं ॥

५ वेपथुः, कम्पः (२ पु), 'काँपने' के २ नाम हैं ॥

६ क्षणः, उद्धर्षः, महः, उद्धवः, उत्सवः (५ पु), 'उत्सव' के ५ नाम हैं ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

८. अथ पातालभोगिवर्गः ।

७ अधोभुवनम् (+ अधः, अ०), पातालम्, बलिसद्म (= बलिसद्मन्), रसातलम् (४ न), नागलोकः (पु । + अधोलोकः), 'पाताल' के ५ नाम हैं ॥

८ कुहरम् , शुषिरम् (सुषिरम्), विवरम् , बिलम् (+ विलम्),

---

१. ......'सुषिरं विवरं बिलम्' इति पाठान्तरम् ।

छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं [1]वपा शुषिः।
१ गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे २ सरन्ध्रे शुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥
३ अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः।
४ ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं ५ क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ ३ ॥
६ विष्वक्संतमसं ७ नागाः काद्रवेया८स्तदीश्वराः।
शेषोऽनन्तो९वासुकिस्तु सर्पराजो१०ऽथ गोनसे ॥ ४ ॥
तिलित्सः स्या११दजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ।

छिद्रम्, निर्व्यथनम्, रोकम्, रन्ध्रम्, श्वभ्रम् (+ स्वभ्रम् । ९ न), वपा, शुषिः (+ सुषिः । २ स्त्री), 'बिल' के ११ नाम हैं ॥

१ गर्तः (+ गर्ता, स्त्री), अवटः (+ अवटिः, स्त्री । २ पु), 'गढे' के २ नाम हैं ॥

२ शुषिरम् (त्रि । + सुषिरम्), 'छेदवाली चीज' का १ नाम है ॥

३ अन्धकारः (पु न), ध्वान्तम्, तमिस्रम्, तिमिरम्, तमः (= तमस् । + तमसम् । ४ न), 'अन्धकार' के ५ नाम हैं ॥

४ अन्धतमसम् (न), 'बहुत अधिक अन्धकार' का १ नाम है ॥

५ अवतमसम् (न), 'थोड़े अन्धकार' का १ नाम है ॥

६ संतमसम् (न), 'सर्वत्र फैले हुए अन्धकार' का १ नाम है ॥

७ नागाः, काद्रवेयः (२ पु), महे० मतसे 'नाग' के और भा० दी० मतसे 'फणा और पूँछके सहित मनुष्याकार देवयोनि-विशेष' के २ नाम हैं ॥

८ शेषः, अनन्तः (२ पु), 'शेष' अर्थात् 'नागोंके राजा' के २ नाम हैं ॥

९ वासुकिः, सर्पराजः (२ पु), 'वासुकि' अर्थात् 'साँपोंके राजा' के २ नाम हैं ॥

१० गोनसः (+ गोनासः), तिलित्सः (२ पु), 'पनस जातिके साँप या छोटे जातिके सर्प-सामान्य' के २ नाम हैं ॥

११ अजगरः, शयुः, वाहसः (३ पु), 'अजगर साँप' के ३ नाम हैं ॥

---

१. '......वपा शुषिः' इति पाठान्तरम् ।

१ 'अलगर्दो जलव्यालः २ समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥
३ मालुधानो मातुलाहिः ४ निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।
५ सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ॥ ६ ॥
आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ।
कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको बिलेशयः ।
उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥
६ 'लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा (५३)
कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा (५४)

---

१ अलगर्दः (+अलगर्द्दः), जलव्यालः (२ पु), 'डोंड़ साँप, या पानीमें रहनेवाले सब साँप' के २ नाम हैं ॥

२ राजिलः (+राजीलः), डुण्डुभः (मु० म० दुण्डुभः, स्वा० म० दण्डुभः । २ पु), 'दोनों तरफ मुखवाले साँप' के २ नाम हैं। (इसे विष नहीं होता है) ॥

३ मालुधानः, मातुलाहिः (२ पु), 'खट्वाकार चितकबरे साँप' के २ नाम हैं ॥

४ निर्मुक्तः, मुक्तकञ्चुकः (२ पु) 'जिसने केंचुल छोड़ दिया हो उस साँप' के २ नाम हैं ॥

५ सर्पः, पृदाकुः, भुजगः, भुजङ्गः, अहिः, भुजङ्गमः, आशीविषः (+आशीर्विषः), विषधरः, चक्री (=चक्रिन्), व्यालः (+व्याडः), सरीसृपः, कुण्डली (=कुण्डलिन्), गूढपात् (गूढपाद्), चक्षुःश्रवाः (=चक्षुःश्रवस्), काकोदरः, फणी (=फणिन्), दर्वीकरः दीर्घपृष्ठः, दन्दशूकः, बिलेशयः (+बिलेशयः) उरगः, पन्नगः, भोगी (=भोगिन्), जिह्मगः, पवनाशनः, (२५ पु। ये २५ पुल्लिङ्ग हैं, किन्तु स्त्रीलिङ्ग होनेपर इनमें अकारान्तके 'सर्पिणी' भुजगी, इत्यादि रूप बदल जायेंगे), 'साँप' के २५ नाम हैं ॥

६ [लेलिहानः, द्विरसनः (+द्विजिह्वः), गोकर्णः, कञ्चुकी (+कञ्चुकिन्), कुम्भीनसः, फणधरः, हरिः, भोगधरः (८ पु), 'साँप' के ८ नाम ये भी हैं] ॥

---

१. 'अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ' इति पाठान्तरम् ।

१ अहेः शरीरं भोगः स्या२दाशीरप्यहिदंष्ट्रिका' (५५)
३ त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि ४ स्फटायां तु फणा द्वयोः ।
५ समौ कञ्चुकनिर्मोकौ ६ क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥
७ पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः ।
[1]सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥
दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।

---

१ [भोगः (पु), 'साँपके शरीर' का १ नाम है] ॥

२ [आशीः (= आशी । + आशीः, + आशिस् , स्त्री), अहिदंष्ट्रिका (२ स्त्री) 'साँपके दाँत' के २ नाम हैं] ॥

३ आहेयम् (त्रि), 'साँपके विष, हड्डी, शरीर, केंचुल, दाँत, आदि, साँपसे उत्पन्न पदार्थमात्र' का १ नाम है ॥

४ स्फटा (स्त्री । + फटा), फणा (स्त्री पु । + २ स्त्री पु), 'साँपके फणा' के १ नाम हैं ॥

५ कञ्चुकः, निर्मोकः (२ पु) 'साँपके केंचुल' के २ नाम हैं ॥

६ क्ष्वेडः (पु), गरलम् , विषम् (२ न । + २ पु न), 'विष, ज़हर' के ३ नाम हैं ॥

७ काकोलः, कालकूटः, हलाहलः (+ हालाहलम् , हालहलम् । ३ पु न) सौराष्ट्रिकः, (+ सारोष्ट्रिकः), शौक्लिकेयः, ब्रह्मपुत्रः, प्रदीपनः, दारदः, वत्सनाभः (६ पु) 'काकोल, कालकूट आदि स्थावर विष' का १-१ नाम है । ('विषके दो भेद होते हैं—'स्थावर १ और जङ्गम २'[2] । पहले स्थावर-

---

१. 'सारोष्ट्रिकः·········' इति मु० पाठः ॥

२. तदुक्तं श्रीमद्भगवद्धन्वन्तर्युपदिष्टसुश्रुतेन सुश्रुतसंहितायाः कल्पस्थानस्य द्वितीयाध्याये—
'स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते । दशाधिष्ठानमाद्यन्तु द्वितीयं षोडशाश्रयम्' ॥ १ ॥
सुश्रु० क० स्था० २

अन्यच्च माधवनिदानस्य विषरोगनिदानप्रकरणे—
'स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते । मूलाद्यात्मकमाद्यं स्यात्परं सर्पादिसम्भवम्' ॥ २ ॥
मा० नि० विषरोगनिदानप्रकरण

विषके १० भेद होते हैं—मूल १, पत्र २, फल ३, पुष्प ४, त्वक् (छाल) ५, क्षीर (दूध) ६, सार ७, निर्यास (लासा) ८, धातु ९ और कन्द १०[1]। इनमें मूलविषके ८, पत्रविषके ५, फलविषके १२, पुष्पविषके ५, त्वग्विष–निर्यासविष–सारविषके ७, क्षीरविषके ३, धातुविषके २ और कन्दविषके १३ भेद होते हैं। इन ५५ भेदोंके नाम टिप्पणीमें स्पष्ट हैं[2]। ये विष पहाड़, पेड़, पौधा आदि स्थावर पदार्थोंमें होते हैं। जङ्गमविष १६ तरहका होता है—इन भेदोंके नाम टिप्पणीमें स्पष्ट हैं[3]। जङ्गमविष बाघ, सिंह, भेड़िया, स्यार, साँप, बिच्छू, बर्रें, भौंरा, मधुमक्खी, मेंढक, छिपकिली, चूहा आदि जङ्गम जन्तुओंमें पाये

१. सुश्रुते 'दशाधिष्ठानमाद्यन्तु' इत्यनेनाद्यस्य स्थावरविषस्य दशाधिष्ठानान्युक्त्वा तानि नामतो निर्दिशति—

'मूलं १ पत्रं २ फलं ३ पुष्पं ४ त्वक् ५ क्षीरं ६ सारं ७ एव च ।
निर्यासो ८ धातव ९ श्चैव कन्दश्च १० दशमः स्मृतः' ॥ १ ॥

इति सुश्रु० क० स्था० २।२॥

२. तदुक्तं सुश्रुतस्य कल्पस्थानीयतृतीयाध्याये —

'तत्र क्लीतकाश्वमारगुञ्जासुगन्धगर्गरककरघाटविद्युच्छिखाविजयानीत्यष्टौ मूलविषाणि । विषपत्रिकालम्बावरदारुककरम्भमहाकरम्भाणि पञ्च पत्रविषाणि । कुमुद्वतीवेणुकाकरकरम्भमहाकरम्भकर्कोटकरेणुकखद्योतकचर्मरीभगन्धासर्पघातिनन्दनसारपाकानीति द्वादश फलविषाणि । वेत्रकादम्बवल्लिजकरम्भमहाकरम्भाणि पञ्च पुष्पविषाणि । अन्त्रपाचककर्तरीसौरीयककरघाटकरम्भनन्दनवराटकानि सप्त त्वक्सारनिर्यासविषाणि । कुमुदघ्नीस्नुहीजालक्षीरीणि त्रीणि क्षीरविषाणि । फेनाश्मभस्म हरितालञ्च द्वे धातुविषे । कालकूटवत्सनाभसर्षपपालककर्दमकवैराटकमुस्तकशृङ्गीविषप्रपुण्डरीकमूलकहालाहलमहाविषकर्कटकानीति त्रयोदश कन्दविषाणि । इत्येवं पञ्चपञ्चाशत्स्थावरविषाणि भवन्ति' ॥

इति सुश्रु० क० स्था० २। ३—१० ॥

३. तदुक्तं सुश्रुते कल्पस्थानीयतृतीयाध्याये—

'जङ्गमस्य विषस्योक्तान्यधिष्ठानानि षोडश । समासेन मया यानि विस्तरस्तेषु वक्ष्यते' ॥ १ ॥

तत्र दृष्टिनिःश्वासदंष्ट्रानखमूत्रपुरीषशुक्रलालार्तवमुखसन्दंशविशर्धितगुदास्थिपित्तशूकशवानीति' ॥ २ ॥ इति सुश्रु० क० स्था० ३। १–२ ।

१ विषवैद्यो जाङ्गुलिको २ [1]व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

९. अथ नरकवर्गः ।

३ स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।

४ तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥

जाते हैं। किन २ जन्तुओंमें कौन २ विष रहते हैं यह भी टिप्पणीमें स्पष्ट है[2]) ॥

१ विषवैद्यः, जाङ्गुलिकः (२ पु), 'विषको दूर करनेवाले वैद्य' के २ नाम हैं ॥

२ व्यालग्राही (= व्यालग्राहिन् । + व्यालग्राहः), अहितुण्डिकः, (+ आहितुण्डिकः । २ पु), 'साँप पकड़नेवाले या सँपेरा' के २ नाम हैं ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

९. अथ नरकवर्गः ॥

३ नारकः, नरकः, निरयः (३ पुं), दुर्गतिः (स्त्री), 'नरक'के ४नाम हैं ॥

४ तपनः, अवीचिः (+ स्त्री), महारौरवः, रौरवः, संघातः

---

१. '..........व्यालग्राह्याहितुण्डिकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'तत्र दृष्टिनिःश्वासविषास्तु दिव्याः सर्पाः, भौमास्तु दंष्ट्राविषाः । मार्जारश्ववानरमकरमण्डूकपाकमत्स्यगोधाशम्बूकप्रचलाकगृहगोधिकाचतुष्पादकीटास्तथान्ये दंष्ट्रानखविषाः ॥ चिपिटपिच्चटककषायवासिकसर्षपवासिकतोटकवर्चःकीटकौण्डिन्यकाः शकृन्मूत्रविषाः ॥ मूषिकाः शुक्रविषाः । लूताश्च लालामूत्रपुरीषमुखसन्दंशनखशुक्रार्तवविषाः ॥ वृश्चिकविश्वम्भरराजीवमत्स्योच्चिटिङ्गाः समुद्रवृश्चिकाश्चालविषाः ॥ चित्रशिरस्सरावकुर्दिशतदारुकारिमेदकशारिकामुखा मुखसन्दंशविशर्धितमूत्रपुरीषविषाः । मक्षिकाकणभजलायुका मुखसन्दंशविषाः ॥ विषहतास्थिसर्पकण्टकवरटीमत्स्यास्थि चेत्यस्थिविषाणि । शकुलीमत्स्यरक्तराजीवरकीमत्स्याश्च पित्तविषाः ॥ सूक्ष्मतुण्डोच्चिटिङ्गवरटीशतपदीशूकवलभिकाशृङ्गीभ्रमराः शूकतुण्डविषाः ॥ कीटसर्पदेहाः गतासवः शवविषाः । शेषास्त्वनुक्ता मुखसन्दंशविषेष्वेव गणयितव्याः'॥ इति सुश्रु० क० स्था० ३ । ३—१० ॥

[1]संघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः १ सत्त्वास्तु नारकाः ।
प्रेता २ वैतरणी सिन्धुः ३ स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥ २ ॥
४ विष्टिराजूः ५ कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।
६ पीडा बाधा व्यथा [2]दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥

(+ संहारः । ५ पु), कालसूत्रम् (न), आदि ('आदि शब्दसे 'तामिस्रम्, अन्धतामिस्रम्, संजीवनम्, महावीचिः (स्त्री), सम्प्रतापनम् (शेष ४ न), इत्यादिका संग्रह है'), 'भिन्न भिन्न नरक-विशेष' का १—१ नाम है। ('नरक २१ होते हैं, उनके नाम टिप्पणीमें स्पष्ट हैं'[3]) ॥

१ नारकः (भा० दी० म०), प्रेतः (+ परेतः। २ पु), 'नरकके प्राणियों' के २ नाम हैं ॥

२ वैतरणी (स्त्री), 'यमलोकके समीप बहनेवाली वैतरणी नामकी नदी' का १ नाम है ॥

३ अलक्ष्मीः (भा० दी० म०), निर्ऋतिः (२ स्त्री), 'नरककी अशोभा' के २ नाम हैं ॥

४ विष्टिः, आजूः (२ स्त्री), 'बलात्कारसे नरकमें ढकेलने' के २ नाम हैं ॥

५ कारणा, यातना, तीव्रवेदना (३ स्त्री), स्वा० म० 'नरकके दुःख' के और भा० दी० म० 'कठोर दुःख' के ३ नाम हैं ॥

६ पीडा, बाधा (+ आबाधा), व्यथा (३ स्त्री), दुःखम्, आमनस्यम्

---

१. 'संहारः काल.........' इति पाठान्तरम् ।

२. '.........दुःखममानस्यं.......' इति पाठान्तरम् ॥

३. उच्छास्त्रवर्तिनो लुब्धस्य राज्ञः प्रतिग्रहस्वीकारे पर्यायेणैकविंशतिं नरकान् यातीत्युपक्रम्य तेषामेकविंशतिनरकाणां नामान्युक्तानि मनुना । तद्यथा—

'तामिस्रमन्धतामिस्रं महारौरवरौरवौ । नरकं कालसूत्रं च महानरकमेव च ॥ १ ॥
सञ्जीवनं महावीचिं तपनं संप्रतापनम् । संघातं च सकाकोलं कुड्मलं प्रतिमूर्तिकम् ॥ २ ॥
लोहशंकुमृजीषं च पन्थानं शाल्मलीं नदीम् । असिपत्रवनं चैव लोहदारकमेव च' ॥ ३ ॥
इति मनुः ४ । ८८—९० ॥

स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं १ त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ।

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

१०. अथ वारिवर्गः ।

२ समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।
उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान् सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥
रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपाम्पतिः ।
१ तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

(+अमानस्यम्), प्रसूतिजम् , कष्टम् ; कृच्छ्रम् , आभीलम् (९ न), 'दुःख' के ९ नाम हैं । ('वस्तुतस्तु 'पीडा······' ४ 'मानसिक दुःख' के, 'आमनस्यम्,······' २ 'मनोविकार' अर्थात् 'उदासी' के और 'कष्टम्,·········' ३ 'शारीरिक दुःख' के नाम हैं') ॥

१ इनमें 'दुःख' इत्यादि शब्द किसीके विशेषण होनेपर त्रिलिङ्ग होते हैं । ('जैसे—'दुःखा दुर्नृपसेवा, दुःखः पुत्रो ह्यपण्डितः, दारिद्र्यमखिलं दुःखम्,······') ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

१०. अथ वारिवर्गः ।

२ समुद्रः, अब्धिः, अकूपारः, पारावारः (+ पारापारः), सरित्पतिः, उदन्वान् (= उदन्वत्), उदधिः, सिन्धुः, सरस्वान् (= सरस्वत्), सागरः, अर्णवः, रत्नाकरः जलनिधिः, यादःपतिः (+ पाथःपतिः), अपांपतिः (१५ पु), 'समुद्र' के १५ नाम हैं ॥

१ क्षीरोदः, लवणोदः (२ पु), आदि ('आदि शब्दसे 'दध्युदः १, घृतोदः २, सुरोदः ३, इक्षूदः ४, स्वादूदः ५ (५ पु)' इन पाँचोंका संग्रह है') 'क्षीर-समुद्र १, खारा समुद्र २, आदि ('आदि' शब्द से 'दधि-समुद्र १, घृत-समुद्र २, मद्य-समुद्र ३, रस-समुद्र ४, मीठे जलका समुद्र ५, इन पाँचोंका

१ आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।
पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥
[1]कबन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।
अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशम्बरम् ॥ ४ ॥
मेघपुष्पं घनरसस्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।
२ भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचि ५ रथोर्मिषु ॥ ५ ॥
महत्सूल्लोलकल्लोलौ ६ स्यादावर्तोऽम्भसां भ्रमः ।

संग्रह है, इस तरह सब [2] सात 'समुद्र' हैं') का १—१ नाम हैं ॥

१ आपः (= अप्, नित्य स्त्री० ब० व० । + आपः = आपस्, न), वाः (= वार्), वारि (+ वारम्), सलिलम् (+ सरिलम्, सलिरम्), कमलम् , जलम् , पयः (+ पयस्), कीलालम्, अमृतम्, जीवनम्, भुवनम्, वनम् , कबन्धम् (+ कमन्धम् , कम्, अन्धम्), उदकम् (+ दकम्), पाथः (= पाथस्), पुष्करम् , सर्वतोमुखम्, अम्भः (=अम्भस्), अर्णः (=अर्णस्), तोयम्, पानीयम्, नीरम् (+ नारम्, न पु), क्षीरम्, अम्बु, शम्बरम् (संवरम्), मेघपुष्पम् (२५ न), घनरसः (पु + न), 'पानी' के २७ नाम हैं ॥

२ 'आप्यम् , अम्मयम् (२ न)' 'पानी के विकार' अर्थात् 'पानीसे बने पदार्थ बर्फ, शर्बत आदि' के २ नाम हैं ॥

३ भङ्गः, तरङ्गः (२ पु), ऊर्मिः, वीचिः (स्वा० म० नि० स्त्री । २ पु स्त्री), 'पानी के तरङ्ग लहर' के ४ नाम हैं ॥

४ उल्लोलः, कल्लोलः (२ पु), 'बड़ी तरङ्ग' के २ नाम हैं ॥

५ आवर्तः(पु), 'चकोह' भँवर अर्थात् 'पानीके गोलाकार घूमने' का १ नाम है ॥

---

१. केचित्तु 'कमन्धमुदकं······' इति पठित्वा 'कमन्धम्' प्रत्येकं नाम 'कम्, अन्धम्' इति नामद्वयं वेत्याहुः । अत्र 'कबन्धश्च दकम्······' इति च पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तमभिधानचिन्तामणौ हेमचन्द्राचार्येण—

'लवणक्षीरदध्याज्यसुरेक्षुस्वादुवारयः' ।

इति अभि० चि० म० 'हैम' ४ । १४१ ॥

यथा वा—'लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिक्षीरजलकाः समाः' ॥ इत्यन्यत्र ॥

१ पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥
२ [1]चक्राणि पुटभेदाः स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।
३ कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥
४ पारा५वारे परार्वाची तीरे ६ पात्रं तदन्तरम् ।
७ द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥
८ तोयोत्थितं तत्पुलिनं ९ सैकतं सिकतामयम् ।
१० निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शादकर्दमौ ॥ ९ ॥

---

१ पृषत् (न । + पृषन्तिः, पु), बिन्दुः, पृषतः (२ पु), विप्रुट्, (= विप्रुष्, स्त्री । + विप्लुट् = विप्लुष्), 'बूँद' ठोप' के ४ नाम हैं ॥

२ चक्रम् (न । + वक्रम्), पुटभेदः, भ्रमः, जलनिर्गमः (३ पु), महे०, स्वा० म० 'गोलाकार होकर जलके नीचे आने' के ४ नाम हैं । (भा० दी० म० पहलेवाले दो नाम उक्तार्थक और अन्त वाले दो नाम 'जल निकलनेके समुदाय' के और अन्यके म० पहले वाले दो नाम उक्तार्थक तथा अन्तवाले दो नाम 'नीचेसे ऊपरकी तरफ जलके निकलने' अर्थात् 'जमीन फटकर भव फूटने या फौव्वारा छूटने' के हैं) ॥

३ कूलम्, रोधः (= रोधस् । + रोधः, = रोध, पु), तीरम्, प्रतीरम् (४ न), तटम् (त्रि), 'नदी के किनारे' के ५ नाम हैं ॥

४ पारम् (न) 'नदीके उधरवाले किनारे' का नाम १ है ॥

५ अवारम् (न), 'नदीके इधरवाले किनारे' का १ नाम है ॥

६ पात्रम् (न) 'दोनों किनारोंके मध्य भाग' का १ नाम है ॥

७ द्वीपम्, अन्तरीपम् (२ पु न), 'टापू' के २ नाम हैं ॥

८ पुलिनम् (न), 'पानीसे शीघ्र निकले हुए किनारे' का १ नाम है ॥

९ सैकतम्, सिकतामयम् (२ न), 'रेतीले स्थान या किनारे' के २ नाम हैं ॥

१० निषद्वरः, जम्बालः, पङ्कः (पु न), शादः, कर्दमः (शेष ४ पु), 'कीचड़, पङ्क' के ५ नाम हैं ॥

---

१. 'वक्राणि पुटभेदाः.........' इति मा० दी० पाठान्तरम् ।

१ जलोच्छ्वासाः परीवाहाः २ कूपकास्तु विदारकाः।
३ नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये ४ स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥
५ उडुपं तु प्लवः कोलः ६ स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः।
७ आतरस्तरपण्यं स्याद् ८ द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥
९ सांयात्रिकः पोतवणिक् १० कर्णधारस्तु नाविकः।

१—जलोच्छ्वासः, परीवाहः (+परिवाहः। २ पु), 'बढ़े हुए पानीके निकलनेके मार्ग' अर्थात् 'कनवाह' के २ नाम हैं ॥

२—कूपकः; विदारकः, 'सूखीसी नदियोंमें थोड़ी देर में कुछ पानी इकट्ठा होनेके लिये किये गये गढे' के २ नाम हैं। ('शोणभद्र, फल्गु आदि पहाड़ी या बालूदार नदियोंमें गढा करनेसे १०-५ मिनटमें थोड़ा पानी जमा हो जाता है') ॥

३ नाव्यम् (त्रि), 'नावसे पार होने योग्य नदी आदि' का १ नाम है ॥

४ नौः, तरणिः (+तरणी), तरिः (+तरीः, तरी। ३ स्त्री), 'नाव' के ३ नाम हैं ॥

५ उडुपम् (पु न), प्लवः, कोलः (२ पु), महे० म० 'छोटी नाव' के और भा० दी० म० 'तैरनेके लिए घड़ा, कनस्तर, तुम्बी आदिसे बनाये गये साधन-विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ स्रोतः (= स्रोतस्, न। +स्रोतः, = स्रोत, पु; श्रोतः, + श्रोतस्, न), 'सोता' अर्थात् 'पानीके प्राकृतिक बहाव' का १ नाम है ॥

७ आतरः (पु। +आतारः), तरपण्यम् (न), 'खेवाई' अर्थात् 'नावके भाड़े या उतराई' के २ नाम हैं ॥

८ द्रोणी (+द्रोणिः, द्रुणिः), काष्ठाम्बुवाहिनी (भा० दी० म०। २ स्त्री), 'काठकी बनाई गई छोटी नाव' अर्थात् 'डोंगी' के २ नाम हैं ॥

९ सांयात्रिकः, पोतवणिक् (= पोतवणिज्। २ पु), 'नाव या जहाजके व्यापारी' के २ नाम हैं ॥

१० कर्णधारः, नाविकः (२ पु), 'पतवार पकड़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

१ नियामकाः पोतवाहाः २ कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥
३ नौकादण्डः क्षेपणी स्या४दरित्रं केनिपातकः।
५ अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः ६ सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥
७ "यानपात्रं तु पोतो८ऽब्धिभवे त्रिषु समुद्रियम् (५६)
९ सामुद्रिको मनुष्यो१०ऽब्धिजाता सामुद्रिका च नौः" (५७)

१ नियामकः, पोतवाहः (२ पु), 'मगर, मछली आदि दुष्ट जल-जन्तुओंसे जहाजकी रक्षाके लिये जहाजके ऊँचे हिस्सेपर बैठनेवाले' के २ नाम हैं। ('समुद्रगामी बड़े-बड़े जहाजोंमें ऐसे लोग रहते हैं, जिन्हें 'जहाजका कप्तान' कहते हैं') ॥

२ कूपकः, गुणवृक्षकः (२ पु), 'मस्तूल' के २ नाम हैं। ('पाल या गोंद बांधनेके लिए जहाज या नावके बीचमें खड़े किये हुए खम्भेको 'मस्तूल' कहते हैं। किसी २ के मतसे 'नावको बाँधनेवाले खूँटे' के ये २ नाम हैं') ॥

३ नौकादण्डः (पु), क्षेपणी (स्त्री। + क्षेपणिः, क्षिपणिः, क्षिपा), 'डांड़े' के २ नाम हैं ॥

४ अरित्रम्, केनिपातकः (२ पु), 'पतवार' के २ नाम हैं ॥

५ अभ्रिः (स्त्री। + अभ्री), काष्ठकुद्दालः (पु। + काष्ठकूद्दालः), 'जहाज आदिके कतवार आदिको हटानेके लिये काष्ठके बनाये कुदाल' के २ नाम हैं ॥

६ सेकपात्रम्, सेचनम् (२ न), 'नाव, जहाज इत्यादिमें एकत्रित हुए पानीको फेंकनेके लिये चमड़ा आदिके थैले या मशक' के २ नाम हैं। उपलक्षणतया 'पानी भरनेवाले मशकमात्र' के भी ये २ नाम हैं ॥

७ [पोतः (पु), 'जहाज' का १ नाम है] ॥

८ [समुद्रियम् (त्रि), 'समुद्रमें होनेवाले पदार्थ' का १ नाम है] ॥

९ [सामुद्रिकः (पु), 'समुद्रके मनुष्य' का १ नाम है] ॥

१० [सामुद्रिका (स्त्री। + समुद्रिका), 'समुद्रमें आनेवाली नाव' का १ नाम है] ॥

१. यानपात्रं"""च नौः' इत्येषोंऽशः क्षी० स्वा० व्याख्यानुरोधेनात्र मूले एवोपन्यस्तः। तत्र '"""मनुष्योऽब्धिजातादौ नौः समुद्रिका' इति पाठान्तरम् ॥

१ क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धे[२]ऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।
३ त्रिष्वागाधा[४]त्प्रसन्नोऽच्छः [५] कलुषोऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥
६ निम्नं गभीरं गम्भीर[७]मुत्तानं तद्विपर्यये ।
८ अगाधमतलस्पर्शं [९] कैवर्ते दाशधीवरौ ॥ १५ ॥
१० आनायः पुंसि जालं स्या[११]च्छणसूत्रं पवित्रकम् ।
१२ मत्स्याधानी कुवेणी स्या[१३]द्बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥

---

१ अर्द्धनावम् (न), 'नावके आधे हिस्से' का १ नाम है ॥

२ अतिनु (त्रि) 'नावकी अपेक्षा अधिक वेगसे चलनेवाले मनुष्य या पानीके जहाज आदि' का १ नाम है ॥

३ यहाँसे लेकर 'अगाधमतलस्पर्शं……(१।१०।१५)' के पहलेतक 'त्रिषु' शब्दका अधिकार होनेसे सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ प्रसन्नः, अच्छः (+ स्वच्छः । २ त्रि), 'साफ, निर्मल पानी आदि' के २ नाम हैं ॥

५ कलुषः, अनच्छः, आविलः (३ त्रि), 'गन्दे पानी आदि' के ३ नाम हैं ॥

६ निम्नम्, गभीरम्, गम्भीरम् (३ त्रि), 'गम्भीर गहरे'के ३ नाम हैं ॥

७ उत्तानम् (त्रि) 'थाह, या उथला छिछिला' का १ नाम है ॥

८ अगाधम्, अतलस्पर्शम् (२ त्रि), 'अथाह, बहुत गहरे'के २ नाम हैं ॥

९ कैवर्तः, दाशः (+ दासः), धीवरः (३ पु), 'मल्लाह' के ३ नाम हैं ॥

१० आनायः (पु), जालम् (न), 'जाल' के २ नाम हैं ॥

११ शणसूत्रम्, पवित्रकम् (२ न), 'सुतलीके बने हुए जाल' के २ नाम हैं ॥

१२ मत्स्याधानी, कुवेणी (२ स्त्री), 'मछलियोंको पकड़कर रखनेवाले बर्तन' के २ नाम हैं ॥

१३ बडिशम् (+ बलिशम्), मत्स्यवेधनम् (२ न), 'बंशी' अर्थात् 'लोहेके बने हुए मछली फँसानेके साधन-विशेष'के २ नाम हैं । ('जिसमें आटा

१ पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ।
[1]विसारः शकली चाथ २ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥
३ सहस्रदंष्ट्रः पाठीन ४ उलूपी शिशुकः समौ ।
५ नलमीनश्चिलिचिमः ६ प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥
७ क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधान८मथो झषाः ।
९ रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥

या कीड़ा आदि लपेटकर पानीमें फेंककर मछलियाँ फँसाई जाती हैं, उसे 'बंसी' कहते हैं) ॥

१ पृथुरोमा (= पृथुरोमन्), झषः, मत्स्यः, मीनः, वैसारिणः, अण्डजः, विसारः, शकली (= शकलिन् । + शकुली, = शकुलिन् , सकली, = सकलिन् । ८ पु), 'मछली' के ८ नाम हैं ॥

२ गडकः, शकुलार्भकः (२ पु), 'गडक मछली' के २ नाम हैं ॥

३ सहस्रदंष्ट्रः, पाठीनः (२ पु), 'पहिना मछली' अर्थात् 'बहुत दांत वाली पहिनानामक एक प्रकारकी मछली या पोठिया मछलीके २ नाम हैं ॥

४ उलूपी (= उलूपिन्), शिशुकः (२ पु), 'सूँस' के २ नाम हैं ॥

५ नलमीन (+ नडमीनः, तलमीनः), चिलिचिमः (चिलचिमिः । २ पु), 'नरकटमें रहनेवाली एक प्रकारकी मछली–विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ प्रोष्ठी (स्त्री), शफरी (स्त्री । + पु स्त्री), 'सहरी या पोठिया मछली' के २ नाम हैं ॥

७ पोताधानम् (न), 'अण्डेसे निकले हुए मछलियोंके छोटे छोटे बच्चोंके समुदाय' का १ नाम है ।

८ अब मछलियों के 'भेद'को कहते हैं अर्थात् वक्ष्यमाण शब्द पर्याय नहीं हैं ॥

९ रोहितः, मद्गुरः शालः (+ सालः), राजीवः, शकुलः, तिमिः, तिमिङ्गिलः (७ पु), आदि ('आदि पदसे 'तिमिङ्गिलगिलः, मन्दीवर्तः (२ पु), आदिका संग्रह है'), 'रोहू, मोंगरा, शाल, बरारी, शकुल, तिमि,

---

१. 'विसारः शकुली चाथ' इति मा० दी० सम्मतः पाठः, मूलोक्तश्च महे० क्षी० स्वा० सम्मतः पाठ इत्यवधेयम् ॥

तिमिङ्गिलाद्यश्चा१थ यादांसि जलजन्तवः ।
२ तद्भेदाः शिशुमारोद्रशङ्कवो मकरादयः ॥ २० ॥
३ स्यात्कुलीरः कर्कटकः ४ कूर्मे कमठकच्छपौ ।
५ ग्राहोऽवहारो ६ नक्रस्तु कुम्भीरो७ऽथ महीलता ॥ २१ ॥
गण्डूपदः [1]किञ्चुलको ८ निहाका गोधिका समे ।
९ रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूम्नि जलौकसः ॥ २२ ॥

तिमिङ्गिल आदि ('आदि पदसे 'तिमिङ्गिलगिल और नन्दीवर्त' आदिका संग्रह है'), 'मछलियोंके भेद' हैं ॥

१ यादः (=यादस्, न) जलजन्तुः (पु), 'जलमें रहनेवाले जीव' के २ नाम हैं ॥

२ शिशुमारः, उद्रः, शङ्कुः, मकरः, (४ पु), आदि ('आदि पदसे 'जलहस्ती' (=जलहस्तिन्), जलकुक्कुटः, कर्कः, कच्छपः, (४ पु), का संग्रह है') सूँस, ऊद, शङ्कु, मगर, आदि ('आदि शब्दसे 'जलहाथी, जलमुर्गा, केकड़ा, कछुआ' आदिका संग्रह है) जलमें रहनेवाले जीव' हैं ॥

३ कुलीरः (+कुलिरः), कर्कटकः (ककटः, कर्कः, करटकः, करहकः । (२ पु), 'केकड़े' के २ नाम हैं ॥

४ कूर्मः, कमठः, कच्छपः, (३ पु), 'कछुए' के ३ नाम हैं ॥

५ ग्राहः, अवहारः (+अवराहः । २ पु), 'ग्राह' अर्थात् 'घड़ियाल' के २ नाम हैं ॥

६ नक्रः, कुम्भीरः (२ पु), 'नाक' अर्थात् 'ग्राहके भेद, एक तरहके जलचर विशेष' के २ नाम हैं ॥

७ महीलता (स्त्री), गण्डूपदः, किञ्चुलकः (+किञ्चुलुकः, किञ्चिलिकः । २ पु), 'केचुआ' के ३ नाम हैं ॥

८ निहाका, गोधिका (२ स्त्री), 'गोह' के २ नाम हैं ॥

९ रक्तपा, जलौका, जलौकसः (=जलौकस्, [2]प्रायः ब० व० । +जलोका, जलूका, जलजन्तुका, जलोरगी । ३ स्त्री), 'जोंक' के ३ नाम हैं ॥

---

१. '......किञ्चुलुकः......' इति मा० दी०, क्षी० स्वा० पाठः ॥

२. 'जलोरगी जलोका तु जलौका च जलौकसि' इति संसारावर्तोक्तेरत्र बहुवचनस्य प्रायिकत्वम् ।

१ मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः २ शङ्खः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ।
३ क्षुद्रशङ्खाः [१]शङ्खनखाः ४ शम्बूका जलशुक्तयः॥ २३॥
५ भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः।
६ शिली गण्डूपदी ७ भेकी वर्षाभ्वी ८ कमठी [२]डुलिः॥ २४॥
९ मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी—

१ मुक्तास्फोटः (पु), शुक्तिः (स्त्री), 'सितुही, सीप' के २ नाम हैं। ('गजराज, मेघ, सूकर, शङ्ख, मछली, साँप, सीप और बाँस' इनसे मोती निकलती है, किन्तु अधिकतर सीप से ही निकलती है') [३]॥

२ शङ्खः, कम्बुः (२ पु न), 'शङ्ख' के २ नाम हैं॥

३ क्षुद्रशङ्खः, शङ्खनखः (+शङ्खनकः। २ पु) 'छोटे शङ्ख' के २ नाम हैं॥

४ शम्बूकः (पु। +शम्बुकः, शाम्बुकः), जलशुक्तिः (स्त्री। भा० दी० म०), 'घोंघा, घोहना या पानीमें होनेवाली हर तरहकी सीप' के २ नाम हैं॥

५ भेकः, मण्डूकः, वर्षाभूः, शालूरः (+सालूरः), प्लवः, दर्दुरः (६ पु), 'मेढक' के ६ नाम हैं॥

६ शिली, गण्डूपदी (२ स्त्री), 'केंचुएकी स्त्री या केंचुएके भेदकी छोटी जाति-विशेष' के २ नाम हैं॥

७ भेकी, वर्षाभ्वी (२ स्त्री), 'बेंगुची, मेंढककी स्त्री या मेंढकके भेदकी छोटी जाति-विशेष' के २ नाम हैं॥

८ कमठी, डुलिः (+दुलिः। स्त्री) 'कछुई' के २ नाम हैं॥

९ शृङ्गी (स्त्री। +मद्गुरी), 'मगरकी स्त्री' का १ नाम है॥

१. '......शङ्खनकाः......' इति पाठान्तरम्॥

२. '.........दुलिः' इति पाठान्तरम्॥

३. तदुक्तम्—'करीन्द्रजीमूतवराहशंखमत्स्याहिशुक्त्युद्भववेणुजानि। मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषां तु शुक्त्युद्भवमेव भूरि'॥ १॥ इति॥

—१ दुर्नामा दीर्घकोशिका।

२ जलाशयो जलाधारः ३तत्रागाधजलो ह्रदः ॥ २५ ॥

४ आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये।

५ पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥

६ नेमिस्त्रिकाऽस्य ७ वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत्।

८ पुष्करिण्यां तु खातं स्यात् ९अखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥

१० पद्माकरस्तडागोऽस्त्री ११ कासारः सरसी सरः।

---

१ दुर्नामा (= दुर्नामन्, पु। + दुर्नाम्नी, स्त्री), दीर्घकोशिका (स्त्री। + दीर्घकोषिका), 'जोंकके समान एक प्रकारके जलचर-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ जलाशयः, जलाधारः (२ पु), 'तालाब, पोखरा, बावली आदि' के २ नाम हैं ॥

३ ह्रदः (पु), 'अथाह जलवाले तालाब आदि' का १ नाम है ॥

४ आहावः (पु), निपानम् (न), 'सुखपूर्वक गौ आदिके जल पीनेके लिये कूँपके पास बनाये हुए हौज' के २ नाम हैं ॥

५ अन्धुः, प्रहिः, कूपः (३ पु), उदपानम् (न पु), 'कूआँ, इनारा' के ४ नाम हैं ॥

६ नेमिः (भा० दी० म०) त्रिका (२ स्त्री) 'घुरई, गड़ारी' के २ नाम हैं ॥

७ वीनाहः (पु। + विनाहः), 'कूंपके जगत्' का १ नाम है ॥

८ पुष्करिणी (स्त्री), खातम् (न) 'पोखरी, छोटी तलैया' के २ नाम हैं ॥

९ अखातम्, देवखातकम् (२ न), 'अकृत्रिम या देवमन्दिरके आगेवाले पोखरा, तालाब आदि' के २ नाम हैं ॥

१० पद्माकरः, तडागः (+ तडाकः, तटाकः, तटागः। २ पु), 'कमल उत्पन्न होनेवाले अथाह तालाब आदि' के २ नाम हैं ॥

११ कासारः (पु), सरसी (स्त्री), सरः (= सरस् न), 'कृत्रिम (किसी-

१ वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो २ वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥
३ खेयं तु परिखा४ऽऽधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् ।
५ स्यादालवालमावालमावापो६ऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥
तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी [1]ह्रादिनी धुनी ।
[2]स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा ॥ ३० ॥
७ 'कूलङ्कषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती' (५८)
८ गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा ।
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥

के खुदवाये हुए कमल उत्पन्न होनेवाले तालाब आदि' के भा० दी० मतसे) २ नाम हैं। ('पद्माकरः……सरः' 'कमल उत्पन्न होनेवाले जलाशय मात्र' के ५ नाम हैं, यह महे० का मत है') ॥

वेशन्तः (पु), पल्वलम्, अल्पसरः (= अल्पसरस् । २ न), 'पानीके छोटे-छोटे गढे' के ३ नाम हैं ॥

२ वापी (+ वापिः), दीर्घिका (२ स्त्री), 'बावली' के २ नाम हैं ॥

३ खेयम् (न), परिखा (स्त्री), 'किले आदिके चारों ओरकी खाईं' के २ नाम हैं ॥

४ आधारः (पु), 'पानीके बाँध' का १ नाम है ॥

५ आलवालम् (+ अलवालम्), आवालम् (२ न), आवापः (पु), 'थाला' अर्थात् 'गाछी या पौधेको सींचनेके लिये उनके जड़में मिट्टी आदिसे बनाये हुए घेरे' के ३ नाम हैं ॥

६ नदी, सरित्, तरङ्गिणी, शैवलिनी, तटिनी, ह्रादिनी (+ ह्लादिनी), धुनी, स्रोतस्वती (+ स्रोतस्विनी), द्वीपवती, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा (+ अपगा । १२ स्त्री), 'नदी' के १२ नाम हैं ॥

७ [कूलङ्कषा, निर्झरिणी, रोधोवक्रा, सरस्वती ४ स्त्री), 'नदी' के ४ नाम हैं] ॥

८ गङ्गा, विष्णुपदी, जह्नुतनया (+ जाह्नवी), सुरनिम्नगा, भागीरथी,

---

१. '……ह्लादिनी……' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'स्रोतस्विनी……' इति पाठान्तरम् ॥

१ कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।
२ रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥
३ करतोया सदानीरा ४ बाहुदा सैतवाहिनी ।
५ [1]शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्या६द्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥३३॥
७ शोणो [2]हिरण्यवाहः स्यात्—

त्रिपथगा, त्रिस्रोताः (=त्रिस्रोतस्), भीष्मसूः (८ स्त्री), 'गङ्गा नदी' के ८ नाम हैं ॥

१ कालिन्दी, सूर्यतनया, यमुना, शमनस्वसा (=शमनस्वसृ । +यमस्वसा,=यमस्वसृ । ४ स्त्री), 'यमुना नदी' के ४ नाम हैं ॥

२ रेवा, नर्मदा, सोमोद्भवा, मेकलकन्यका (४ स्त्री), 'नर्मदा नदी' के ४ नाम हैं ॥

३ [3]करतोया, सदानीरा (२ स्त्री), 'पार्वतीके विवाह-कालमें कन्यादानके जलसे निकली हुई नदी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ बाहुदा, सैतवाहिनी (२ स्त्री), 'कार्तवीर्यद्वारा निकाली हुई एक नदी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ [4]शतद्रुः (+शितद्रुः), शुतुद्रिः (२ स्त्री) 'सतलज नदी' के २ नाम हैं॥

६ विपाशा, विपाट् (= विपाश् । २ स्त्री), 'विपाशा नदी' के २ नाम हैं ॥

७ शोणः (+शोणभद्रः), हिरण्यवाहः (+हिरण्यबाहुः । २ पु), 'सोन नामक नद' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'शुतुद्रिस्तु शतद्रुः स्यात्…' इति क्षी० स्वा० सम्मते पाठभेदेऽपि मूलोक्त मा० दी०, महे० संमतपाठाच्च नाम्नि भेदः' उभयथापि 'शतद्रुः, शुतुद्रिः' इत्यनयोरेवाभिधानयोर्लाभादित्यवधेयम् ॥

२. '……हिरण्यबाहुः' इति पाठान्तरम् ॥

३. इयं 'करतोया' नदी पूर्वदेशस्था ब्रह्मपुत्रेण सङ्गता पुलस्त्यतीर्थयात्रायां तथैवोक्तेः । प्रथमं कर्कटे देवी त्र्यहं गङ्गा रजस्वला । सर्वा रक्तवहा नद्यः करतोयाऽम्बुवाहिनी' ॥ १ ॥
इति याज्ञवल्क्यस्मृतीयबालम्भट्टीयटीकायां करतोयाऽम्बुवाहिनीत्युक्त्या 'सदानीरा' इत्यन्वर्थं नामेत्यवधेयम् ॥

४. वसिष्ठशापादियं शतधा द्रुतेति पौराणिकीकथाऽनुसन्धानादस्याः 'शतद्रुः' इति नाम जातमिति बोध्यम् ॥

—१ कुल्याऽल्पा कृत्रिमा सरित्।
२ शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा[1] सरस्वती॥ ३४॥
काबेरी सरितोऽन्याश्च ३ सम्भेदः सिन्धुसङ्गमः।
४ द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां ५ त्रिषु तूत्तरौ॥ ३५॥
देविकायां सरय्वां च भवे दाविकसारवौ।
६ सौगन्धिकं तु कह्लारं ७ हल्लकं रक्तसन्ध्यकम्॥ ३६॥
८ स्यादुत्पलं कुवलय९मथ नीलाम्बुजन्म च।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन् ११ सिते कुमुदकैरवे॥ ३७॥

---

१ कुल्या (स्त्री), 'नहर' का १ नाम है॥

२ शरावती, वेत्रवती, चन्द्रभागा (+ चान्द्रभागी, चन्द्रभागी, चान्द्र-भागा, चन्द्रिका), सरस्वती, कावेरी (५ स्त्री), 'शरावती आदि प्रत्येक नदियों' का १-१ नाम है। अन्य भी 'कौशिकी, गण्डकी, गोदा, वेणी, चर्मण्वती, सिन्धु' आदि नदियाँ हैं॥

३ सम्भेदः, सिन्धुसङ्गमः (पु), 'नदियोंके संगम' के २ नाम हैं॥

४ प्रणाली (पु स्त्री। अन्यमतमें स्त्री न), 'पनारे या नाले' का १ नाम है॥

५ दाविकः, सारवः (२ त्रि), 'देविका और सरयू नदीमें होने-वाले पदार्थ' का क्रमशः १-१ नाम है॥

६ सौगन्धिकम्, कह्लारम् (न), 'सायंकालमें फूलनेवाले श्वेतकमल' के २ नाम हैं॥

७ हल्लकम्, रक्तसन्ध्यकम् (२ न) 'लाल कह्लार या त्रिकालमें फूलनेवाले रक्तपुष्प-विशेष' के २ नाम हैं॥

८ उत्पलम्, कुवलयम् (+ कुवम्, कुवलम्। २ न), 'श्वेत कमल या सामान्यतः कमल और कुमुदमात्र' के २ नाम हैं॥

९ नीलाम्बुजन्म (= नीलाम्बुजन्मन्। + नीलाम्बुजम्), इन्दीवरम् (+ इन्दीवारम्। २ न), 'नील कमल' के २ नाम हैं॥

१० कुमुदम्, कैरवम् (२ न) 'श्वेत कमल, कुमुद या कोईं' के २ नाम हैं॥

---

१. '...चान्द्रभागी...' इति, '...चन्द्रभागी...' इति च पाठान्तरम्॥

१ शालूकमेषां कन्दः स्या२द्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।
३ जलनीली तु [1]शेवालं शैवालोऽ४थ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥
कुमुदिन्यां ५ नलिन्यां तु बिसिनीपद्मिनीमुखाः ।
६ वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥
सहस्रपत्त्रं कमलं शतपत्त्रं कुशेशयम् ।
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ।
७ पुण्डरीकं सिताम्भोज८मथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥
रक्तोत्पलं कोकनदं ९ नालो नालम्—

---

१ शालूकम् (न), 'कमलमात्रके कन्द (जड़)' का १ नाम है ॥

२ वारिपर्णी, कुम्भिका (२ स्त्री । +[3]वारिपर्णः, कुम्भिकः, २ पु), 'पुरइन' या जलकुम्भी' के २ नाम हैं ॥

३ जलनीली (स्त्री), शेवालम् (न । +शेवालः, पु) शैवालः (पु । शेवलः, शैवलः), 'सेवाल' के ३ नाम हैं ॥

४ कुमुद्वती, कुमुदिनी (२ स्त्री), 'कोईं' के २ नाम हैं ॥

५ नलिनी (+नडिनी), बिसिनी, पद्मिनी (३ स्त्री), आदि ('आदिसे 'सरोजिनी, कमलिनी, सरपलिनी (३ स्त्री),……' का संग्रह है'), 'कमलिनी या कमल-समूह' के ३ नाम हैं ॥

६ पद्मम् , नलिनम् , अरविन्दम् , महोत्पलम् , सहस्रपत्रम् , कमलम् , शतपत्रम्, कुशेशयम्, पङ्केरुहम्, तामरसम्, सारसम्, सरसीरुहम्, बिसप्रसूनम्, राजीवम्, पुष्करम्, अम्भोरुहम् (१६ पु न), 'कमल' के १६ नाम हैं ॥

७ पुण्डरीकम् , सिताम्भोजम् (२ न), 'श्वेत कमल' के २ नाम हैं ॥

८ रक्तोत्पलम्, कोकनदम् (२ न), 'लाल कमल' के २ नाम हैं ॥

९ नालः (पु), नालम् (न । +नाली, नाला, २ स्त्री), 'कमलके डण्ठल' के २ नाम हैं ॥

---

१. '……शेवलं शेवालोऽथ…' इति पाठान्तरम् ॥

२. '……नाला नालमथास्त्रियाम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कुम्भको वारिपर्णः स्यादित्येके' इति क्षी० स्वा० वचनात् ॥

—१ अथास्त्रियाम् ।
मृणालं बिसमब्जादिकदम्बे २ षण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥
३ करहाटः [1]शिफाकन्दः ४ किञ्जल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।
५ संवर्तिका नवदलं बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥

इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

---

१ मृणालम् , बिसम्, (+ विसम्, बिशम् । २ पु न), 'कमल आदिके डंठल' के २ नाम हैं ॥

२ षण्डम् (न पु) 'कमलके फूल, पत्ती, डण्ठल, जड़ आदि सब अवयवमात्र' का १ नाम है ॥

३ करहाटः, शिफाकन्दः (+ शिफा, स्त्री; कन्दः, पु न । २ पु), 'कमलकी जड़' के दो नाम हैं ॥

४ किञ्जल्कः, केसरः (+ केशरः । २ पु न), 'कमलके 'केसर' (पराग) के २ नाम हैं ॥

५ संवर्तिका (स्त्री), नवदलम् (न), 'कमलके नये पत्ते' के २ नाम हैं ॥

६ बीजकोशः (+ बीजकोषः, बीजकोशः, बीजकोषः), वराटकः (२ पु), 'कमलगट्टे' के २ नाम हैं ॥

इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

---

१. '......शिफा कन्दं......' इति पाठान्तरम् ॥

अथ वर्गोपसंहारः काण्डसमाप्तिश्च ।

३ उक्तं स्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादि सनाट्यकम् ।
पातालभोगि नरकं वारि चैषां च सङ्गतम् ॥ १ ॥
[1]इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

अथ वर्गोपसंहारः काण्डसमाप्तिश्च ।

१ मैंने (अमरसिंह ने) 'स्वर् १, व्योम २, दिक् ३, काल ४, धी ५, शब्दादि ६, नाट्य ७, पातालभोगि ८, नरक ९ और वारि १०' इन [2]दस वर्गों तथा इनके प्रसङ्गसे प्राप्त 'देवता, राक्षस, मेघ, विद्युत्' आदिको कहा है। ('शब्दादि' के 'आदि' शब्दसे रस, गन्ध,···' का संग्रह है') ॥

२ श्रीअमरसिंह के बनाये हुए, नाम (स्वर्, स्वर्ग, नाक,···) और लिङ्ग ('पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और अव्ययादि') को बतलानेवाले 'नामलिङ्गानुशासन' अर्थात् 'अमरकोष' नामक इस ग्रन्थमें 'स्वर्' आदि ('आदि शब्दसे 'व्योम, दिक् , काल,······' १० वर्गोंका और मु० मतसे

---

१. 'इत्यमरसिंहकृतौ······समर्थितः' इत्ययं चरमः श्लोकः काण्डत्रयेऽपि क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नोपलभ्यते, किन्तु तत्कृते 'अमरकोषोद्घाटन' नामके व्याख्याने प्रथमचरमाध्याययोरव्याख्यातो मूलमात्रमेवोपलभ्यते, भा० दी० अव्याख्यातोऽप्ययं प्रथमकाण्डमात्रे महे० व्याख्यात इत्यतो ग्रन्थकृता रचितो न वेति स्वयमनुसंधेयम् ॥

२. 'अत्र गणनया दशानामेव वर्गाणामुपलब्धेः 'उक्तमि'ति प्रतीकमादाय 'अत्रैकादश वर्गाः' इति भा० दी० व्याख्यानं चिन्त्यम् । यद्वा मङ्गलाचरण-प्रतिज्ञा-परिभाषीयाणां श्लोकानामेकं पृथग्वर्गमुररीकृत्य 'अत्रैकादश वर्गा' इति तदुक्तेः सामञ्जस्यमित्यवधेयम् । 'पुण्यपत्तन'— मुद्रिते क्षीरस्वामिकृतामरकोषोद्घाटनाख्यव्याख्याने तु व्योमदिग्वर्गावेकीकृत्यास्मिन् काण्डे नवैव वर्गाः प्रदर्शिताः ॥

३. प्राधान्यादस्मिन् काण्डे स्वर्गीयसाधारणवस्तुनिरूपणात् स्वरादि नाट्यवर्गान्तं 'स्वर्गवर्गः' ततश्च पातालसम्बन्धिपदार्थनिरूपणात्पातालादि वारिवर्गान्तं 'पातालवर्गः' इत्येतौ द्वावेव वर्गौ मुकुटेनोररीकृताविस्यवधेयम् ॥

स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ २ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना' परपर्यायके 'अमरकोषे'
प्रथमः स्वरादिकाण्डः समाप्तः ।

'पातालवर्ग' का संग्रह है') का यह प्रथम काण्ड (भाग) अङ्ग (भेद और उपभेद) के सहित समर्थित होकर सम्पूर्ण हुआ ॥

इति पण्डितप्रवरश्रीरामस्वार्थमिश्रतनुजश्रीहरगोविन्दमिश्र-
विरचितायां मणिप्रभाख्यामरकोषव्याख्यायां प्रथमः
स्वरादिकाण्डः समाप्तः ॥

अथ द्वितीयकाण्डम्

वर्गभेदान् कथयति—

१ वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः।
नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः ॥ १ ॥

१. अथ भूमिवर्गः।

२ भूर्भूमिरचलाऽनन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा।
धरा धरित्री धरणिः क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥

---

१ इस द्वितीय काण्डमें अङ्गों और उपाङ्गोंके सहित 'पृथ्वी, पुर, पर्वत, वनौषधि, मृगादि ('आदि' शब्दसे 'पक्षी, कीट' आदिका संग्रह है अथवा 'मृगादि' शब्द [१]सिंहवाचक है), मनुष्य, ब्रह्म, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र; ये १० वर्ग अर्थात् 'भूमिवर्ग १, पुरवर्ग २, शैलवर्ग ३, वनौषधिवर्ग ४,……'कहे गये हैं। ('भूमिके अङ्ग—'मृत्, शाखा और नगर' आदि तथा उपाङ्ग 'मृत्स्ना आदि; पुरके अङ्ग—'आपण' आदि तथा उपाङ्ग 'विपणी' आदि; पर्वतके अङ्ग—'शिला' आदि तथा उपाङ्ग 'मैनसिल, गेरु' आदि धातु; वनौषधिके अङ्ग—'वृक्ष' आदि तथा उपाङ्ग 'फूल, फल' आदि; मृगके अङ्ग—'रुरु' आदि; तथा उपाङ्ग 'लोम' आदि एवं 'मृगादि'के आदि पदसे संगृहीत पक्षीके अङ्ग—'कीट, पतङ्गा' आदि तथा उपाङ्ग 'चञ्चु, पङ्ख' आदि हैं; इसी तरह अन्यान्य वर्गोंका भी अङ्गोपाङ्ग समझना चाहिये) ॥

१. अथ भूमिवर्गः।

२ भूः (= भू। + भूः, = भूर्, अ०), भूमिः (+ भूमी), अचला, अनन्ता, रसा, विश्वम्भरा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धरणिः (+ धरणी), क्षोणिः (+ क्षोणी,

---

१. 'मृगादि' शब्दस्यायमेवार्थः समुचितः, मृगान् पशूनत्तीति मृगादिरिति व्युत्पत्त्या 'मृगादि' शब्दस्य सिंहपर्यायकामसामञ्जस्यात्। अत एवाग्रे 'सिंहादिवर्ग'कथनं संगच्छतेऽन्यथा मृगादिवर्गकथनस्यौचित्यात् ॥

सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुन्धरा।
गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्माऽवनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥
१ 'विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा (१)
भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा' (२)
२ मृन्मृत्तिका३प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका।
४ उर्वरा सर्वसस्याढ्या ५ स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥
६ ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ ७ स्थलं स्थली।

क्षोणिः, क्षोणी), ज्या (+ इज्या[1]), काश्यपी, क्षितिः' सर्वसहा, वसुमती, वसुधा, उर्वी, वसुन्धरा, गोत्रा, कुः, पृथिवी (+ पृथवी), पृथ्वी, क्ष्मा, अवनिः (+ अवनी), मेदिनी, मही (+ महिः[2] । २७ स्त्री), 'पृथ्वी' के २७ नाम हैं ॥

१ [विपुला, गह्वरी, धात्री, गौः (= गो), इला, कुम्भिनी, क्षमा, भूतधात्री, रत्नगर्भा (+ रत्नवती), जगती, सागराम्बरा (११ स्त्री) 'पृथ्वी' के ११ नाम हैं] ॥

२ मृत् (= मृद्), मृत्तिका (२ स्त्री), 'मिट्टी' के नाम हैं ॥

३ मृत्सा, मृत्स्ना (२ स्त्री), 'अच्छी मिट्टी' के २ नाम हैं ॥

४ उर्वरा (+ ऊर्वरा । स्त्री), उपजाऊ मिट्टी' का १ नाम है ॥

५ ऊषः (पु), क्षारमृत्तिका (स्त्री,) 'खारी मिट्टी' अर्थात् 'खारी मिट्टी, रेह' के २ नाम हैं ॥

६ ऊषवान् (= ऊषवत्), ऊषरः (२ त्रि), 'खारी मिट्टीवाले स्थान' अर्थात् 'ऊसर या रेहचट जमीन' के २ नाम हैं ॥

७ स्थलम् (न), स्थली (स्त्री), 'स्थल' के नाम हैं। ('अकृत्रिम भूमि' का 'स्थली' (स्त्री) यह १ नाम है, 'कृत्रिम भूमि' का 'स्थला' (स्त्री) यह १ नाम है और 'भूमिसामान्य' अर्थात् 'भूमिमात्र' का 'स्थलम्' (न) यह १ नाम है') ॥

---

१. 'इज्या इति मूर्खव्याख्या, 'ज्या मौर्वी 'ज्या वसुन्धरा' इति शाश्वतविरोधात्' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'वीचिः पङ्क्तिर्महिः केलिरित्याद्या ह्रस्वदीर्घयोः' इति वाचस्पत्युक्तेः ॥

१ समानौ मरुधन्वानौ २ द्वे खिलाप्रहते समे ॥ ५ ॥
३ त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।
४ लोकोऽयं भारतं वर्षं—

---

१ मरुः, धन्वा (= धन्वन् । २ पु), 'मरुस्थल' अर्थात् 'मारवाड़ देश या राजपूतानेकी ज़मीन' के २ नाम हैं ॥

२ खिलम् , अप्रहतम् (२ त्रि), 'विना जुति हुई जमीन' के २ नाम हैं ॥

३ जगती (स्त्री), लोकः (पु) विष्टपम् (+ पु, + पिष्टपम्), भुवनम्, [1]जगत् (३ न), 'भूतल जगत्' के ५ नाम हैं ॥

४ [2]भारतम् (+ भारतवर्षम् , भारतवर्षः, पु न । न) 'हिन्दुस्तान' का १ नाम है । ('यह 'हिन्दुस्तान' जम्बूद्वीपका नवमांश है ।[3] वर्ष ९ हैं— भारत १, किंपुरुष, २ हरिवर्ष ३ रम्य ४, हिरण्मय ५, कुरु ६, भद्राश्व ७, केतुमाल ८ और इलावृत्त ९ । इनमें क्रमशः ३ हिमालयके दक्षिण, ३ उत्तर, १-१ पूर्व तथा पश्चिम और १ मध्य भाग में हैं') ॥

---

१. एकं महाभूतं 'पृथवी' पञ्चमहाभूतविषयेन्द्रियात्मकं 'जगत्' इति 'पृथवीजगतो'र्भेदः॥

२. 'उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः' ॥ १ ॥ इति ।
वर्षं स्थानं विदुः प्राज्ञाः इमं लोकं च भारतम्' ॥इति भारविश्च ।

३. तदुक्तम् । जम्बूद्वीपस्थानां नववर्षाणां नामानि —
'स्याद्भारतं किम्पुरुषं हरिवर्षं च दक्षिणाः ।
रम्यं हिरण्मयकुरू हिमाद्रेरुत्तरास्त्रयः ॥ १ ॥
भद्राश्वकेतुमालौ तु द्वौ वर्षौ पूर्वपश्चिमौ ।
इलावृत्तं तु मध्यस्थं सुमेरुर्यत्र तिष्ठति' ॥ २ ॥

इति वाचस्पतिः ॥

एषां सीमां ब्रुवन् क्षी० स्वा० स्वष्टावेव वर्षाण्याह । तथा—
'हिमवान् हेमकूटश्च निषधो मेरुरन्तरे ।
नीलः श्वेतश्च शृङ्गीवान् गन्धमादनमष्टमम् ॥ १ ॥
इति सीमाविच्छिन्नान्यष्टौ वर्षाणि' ॥ इति ॥

—१ शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥

देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य २ उदीच्यः पश्चिमोत्तरः।
३ प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यात् ४ मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥
५ आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं [1]विन्ध्यहिमालयोः।

---

१ [2]प्राच्यः (पु), 'शरावती नदीके पूर्व और दक्षिण वाले देश' का १ नाम है ॥

२ [3]उदीच्यः (पु), 'शरावती नदीके पश्चिम और उत्तर वाले देश' का १ नाम है ॥

३ प्रत्यन्तः, [4]म्लेच्छदेशः (२ पु), म्लेच्छ देश' अर्थात् 'कामरूप आदि' के २ नाम हैं।

४ [5]मध्यदेशः मध्यमः (पु), 'मध्यदेश' के २ नाम हैं ॥

५ [6]आर्यावर्तः (पु), पुण्यभूमिः (स्त्री), 'विन्ध्याचल और हिमालय पहाड़ के बीचवाले देश' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'विन्ध्यहिमागयोः इति पाठान्तरम्।

२, ३. उक्तञ्च काशिकायाम्—

'प्रागुदञ्चौ विभजते हंसः क्षीरोदके यथा।
विदुषां शब्दसिद्ध्यर्थं सा नः पातु शरावती' ॥ १ ॥ इति ॥

४. तदुक्तं—चातुर्वर्ण्यव्यवस्थानं यस्मिन्देशे न विद्यते।
तं म्लेच्छविषयं प्राहुरार्यावर्तमतः परम्' ॥ इति ॥
विषयो देशः।

५. तदुक्तं मनुना—'हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥ (२।२१) ॥
अत्र विनशनं तीर्थविशेषः, परे प्रसिद्धाः ॥

६. तदुक्तं मनुना—'आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः' ॥ १ ॥ इति (२।२२) ॥
तयोर्हिमवद्विन्ध्यपर्वतयोरित्यर्थः ॥

१ नीवृज्जनपदो　२ देशविषयौ　तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥
३ त्रिष्वागोष्ठा४न्नड्प्राये　नड्वान्नड्वल　इत्यपि ।
५ कुमुद्वान्　कुमुदप्राये　६ वेतस्वान्　बहुवेतसे ॥ ९ ॥
७ शाद्वलः　शादहरिते　८ सजम्बाले　तु　पङ्किलः ।
९ जलप्रायमनूपं स्यात् १० पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥

---

१ नीवृत्, जनपदः (+ जानपदः । २ पु), 'मनुष्योंके ठहरनेकी जगह-ग्राम, नगर' के २ नाम हैं ॥

२ देशः, विषयः (२ पु), उपवर्तनम् (न), देश' अर्थात् 'ग्रामके समुदाय' के ३ नाम हैं ॥

३ यहाँसे लेकर 'गोष्ठं गोस्थानकं···' (२।१।१२) के पहलेतक 'त्रिषु'का अधिकार होनेसे सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ नड्वान् (नड्वत्), नड्वलः (२ त्रि), 'नरसल या नरकट जिस देशमें अधिक हों, उस देश' के २ नाम हैं ॥

५ कुमुद्वान् (= कुमुद्वत्, त्रि), 'जिस देशमें कुमुद अधिक हों, उस देश' का १ नाम है ॥

६ वेतस्वान् (= वेतस्वत्, त्रि), 'जिस देशमें बेंत अधिक हों, उस देश' का १ नाम है ॥

७ शाद्वलः (+ शाड्वलः । त्रि), 'नई घासोंसे हरा भरा स्थान या देश' का १ नाम है ॥

८ पङ्किलः (त्रि), 'कीचड़वाले देश या स्थान' का १ नाम है ॥

९ जलप्रायम्, [1]अनूपम् (२ त्रि), 'बहुत जलवाले स्थान या अनेक प्रकारके पेड़ लता और झरनेवाले जङ्गलसे युक्त सब तरहके अन्न पैदा होनेवाले देश' के २ नाम हैं ।

१० कच्छः (पु । + न), 'बहुत पानीवाले स्थानके समान नदी आदिके पासवाले बगीचा इत्यादि' का १ नाम है । ('भा० दी० मतसे 'जलप्रायम्' आदि २ नाम एकार्थक हैं') ॥

---

१. तदुक्तम्—'नानाद्रुमलतावीरुन्निर्झरप्रान्तशीतलैः ।
वनैर्व्याप्तमनूपं स्यात्सस्यैर्व्रीहियवादिभिः' ॥ १ ॥ इति ।

१ स्त्री शर्करा शर्करिलः २ शार्करः शर्करावति ।
देश एवादिमा३वेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥
४ देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसम्पन्नव्रीहिपालितः ।
स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥
५ सुराज्ञि देशे राजन्वान् स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् ।
७ गोष्ठं गोस्थानकं ८ तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥
९ पर्यन्तभूः परिसरः—

---

१ शर्करा (नि० स्त्री), शर्करिलः (त्रि), 'अधिक बालूवाले या छोटे-छोटे कङ्कड़वाले या रेतीले देश' के २ नाम हैं ॥

२ शार्करः, शर्करावान् (= शर्करावत् । २ त्रि), 'बालवाले देश इत्यादि' ('आदि शब्दसे बालूवाले पदार्थ आदिका संग्रह है') के नाम हैं ॥

३ इसी तरह 'सिकता' आदि शब्दसे भी तर्ककर समझना चाहिये । (यथा—'सिकताः (नि० स्त्री । + नि० ब० व०), सैकतिलः (त्रि), 'बालू वाले देश' के २ नाम हैं । सैकतः, सिकतावान् (= सिकतावत् । २ त्रि) बालू वाले देश आदि' के दो नाम हैं') ॥

४ नदीमातृकः, देवमातृकः (१ त्रि), 'नदी और नहर आदिके पानीसे खेत सिंचनेपर अन्न पैदा होनेवाले देश' का तथा वर्षाके पानीसे खेत सींचनेपर अन्न पैदा होनेवाले देश' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

५ राजन्वान् (राजन्वत् , त्रि), 'धर्मात्मा, शीलवान् और सदाचारी राजासे पालित देश' का १ नाम है ॥

६ राजवान् (= राजवत् , त्रि), 'सामान्य राजासे पालित देश' का १ नाम है ॥

७ गोष्ठम् , गोस्थानकम् (२ न) 'गौओंके रहनेके स्थान—गोशाला आदि' के २ नाम हैं ॥

८ गौष्ठीनम् (न),'जहाँ पहले गौ रहती हो, उस स्थान'का नाम है ॥

९ पर्यन्तभूः (स्त्री), परिसरः (पु) नदी और पहाड़ आदिके पासकी भूमि' के २ नाम हैं ॥

—१ सेतुरालौ स्त्रियां पुमान् ।

२ वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुन्नपुंसकम् ॥ १४ ॥

३ अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः ।
सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

४ अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि ।

५ व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥

६ अपन्थास्त्वपथं ७ तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ।

८ प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा ९ कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥

---

१ सेतुः (पु), आलिः (+ आली । स्त्री), 'पुल' के २ नाम हैं ॥

२ वामलूरः, नाकुः (२ पु), वल्मीकम् (+ वाल्मीकम् । पु न), 'बाँबी, बमौट, दिमकाण' अर्थात् 'दीमकों द्वारा इकट्ठी की हुई मिट्टीके ढेर' के ३ नाम हैं ॥

३ अयनम्, वर्त्म (= वर्त्मन् । २ न), मार्गः, अध्वा (= अध्वन्), पन्थाः (= पथिन् । + पथः । ३ पु), पदवी (+ पदविः), सृतिः, सरणिः (+ सारणिः), पद्धतिः (+ पद्धती), पद्या, वर्तनी, (+ वर्तनिः, वर्त्मनिः), एकपदी (+ एकपात् = एकपाद् । ७ स्त्री), 'मार्ग, रास्ते' के १२ नाम हैं ॥

४ अतिपन्थाः (= अतिपथिन्), सुपन्थाः (= सुपथिन्), सत्पथः (३ पु), अच्छे मार्ग' के ३ नाम हैं ॥

५ व्यध्वः, दुरध्वः, विपथः, कदध्वा (= कदध्वन्), कापथः (+ कुपथः । ५ पु[1]), खराब मार्ग' के ५ नाम हैं ॥

६ अपन्थाः (= अपथिन् , पु), अपथम् (न), 'कुमार्ग खराब रास्ते' के २ नाम हैं ॥

७ शृङ्गाटकम्, चतुष्पथम् (२ न), 'चौरास्ता या चौक' के २ नाम हैं ॥

८ प्रान्तरम् (न), जिसमें बहुत दूरतक छाया और पानी नहीं मिले, उस रास्ते' का १ नाम है ।

९ कान्तारम् (पु न), चोर, कण्टक और झाड़ी इत्यादिसे दुर्गम रास्ते' का १ नाम है ॥

---

१. 'विपथं—कापथं' च क्लीबमाहुः, यद्वामनः—('पथः संख्याव्ययादेः') 'सङ्ख्याव्ययपूर्वकस्य पथः क्लीबता' इति क्षी० स्वा० 'विपथकापथ' शब्दयोर्नपुंसकत्वमप्युक्तवान् ॥

१ गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं २ नल्वः [1]किष्कुचतुःशतम् ।
३ घण्टापथः संसरणं ४ तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥
५ [2]द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी (३)
दिवस्पृथिव्यौ ६ गञ्जा तु रुमा स्याल्लवणाकरः’ ( )

[3]इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

---

१ [4]गव्यूतिः (स्त्री । + पु न । गोरुतम्, गोमतम्, २ न), ‘दो कोश लम्बे रास्ते या स्थान’ का १ नाम है ॥

२ [5]नल्वः (पु । + न), ‘चार हजार हाथ लम्बे रास्ते या रस्सी आदि’ का १ नाम है ॥

३ [6]घण्टापथः (पु), संसरणम् (न) ‘राजमार्ग’ के २ नाम हैं ॥

४ [7]उपनिष्करम् (न) ‘गांवके राजमार्ग’ का १ नाम है ॥

५ [द्यावापृथिव्यौ, रोदस्यौ, द्यावाभूमी, रोदसी, दिवस्पृथिव्यौ (५ स्त्री नि० द्वि०), ‘आकाश और पृथ्वीके समुदाय’ के ५ नाम हैं] ॥

६ [गञ्जा, रुमा (२ स्त्री), लवणाकरः (पु), ‘खारा समुद्र’ के ३ नाम हैं] ॥ इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

---

१. ‘किष्कुचतुःशती’ इति क्वाचित्कः पाठः ।

२. अयं क्षेपकः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यते, तत्र ‘दिवस्पृथिव्यौ गञ्जा तु’ इत्यस्य स्थाने ‘दिवस्पृथिव्याः संज्ञेयम्’ इति पाठभेदश्चोक्त इति ज्ञेयम् ॥

३. ‘अङ्गोपाङ्गापेक्षया भूमेः प्राधान्यादाह—‘इति भूमिवर्ग’ इतीत्यवधेयम् ॥

४. तथा च बृहस्पतिः—

‘धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशं, क्रोशद्वयं पुनः । गव्यूतं स्त्री तु गव्यूतिर्गोरुतं गोमतं च तत्’ ॥ १ ॥ इति ‘धनुर्हस्तचतुष्टयम्’ इति ।

‘द्वाभ्यां धनुःसहस्राभ्यां गव्यूतिः पुंसि भाषितः ॥ इति शब्दार्णवः’ इति ॥

एवञ्च—४ हस्ताः = १ धनुः । १०००धनूंषि = १ क्रोशः । २ क्रोशौ वा २००० धनूंषि= १ गव्यूतिः ।

५. ‘नल्वं हस्तशतम्’ इति भा० दी० । ‘किष्कुहस्तस्तेषां चतुःशती ‘नल्वम्’ इति माला । कात्यस्तु—‘नल्वं [विंश] हस्तशतम्’ इति क्षी० स्वा० । ‘नल्वं विंश हस्तशतम्’ इति मुकुटः ॥

६. ‘दशधन्वन्तरो राजमार्गो घण्टापथः स्मृतः’ इति चाणक्य इति ॥

७. ‘बुधैः संसरणं वर्त्म गवादीनामसंकुलम् । पुरोपनिष्करं चोक्तम्’ इति क्षी० स्वा० ॥

२. अथ पुरवर्गः ।

१ पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ।
स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥
तच्छाखानगरं ३ वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।
४ आपणस्तु निषद्यायां ५ विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥
६ रथ्या प्रतोली विशिखा ७ स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।

---

२. अथ पुरवर्गः ।

१ पूः (= पुर्, स्त्री), पुरी, नगरी (२ स्त्री न), पत्तनम् (+ पट्टनम्), पुटभेदनम् ; स्थानीयम् (३ न), निगमः (पु), 'नगर' के ७ नाम हैं । ('जहाँ अनेक तरहके कारीगर व्यापारी आदि बसते हैं उसके 'पूः, पुरी, नगरी' ये ३ नाम हैं, 'जहां राजाके नौकर आदि बसते हैं उसके 'पत्तनम्, पुटभेदनम्' ये २ नाम हैं और खाई या चहारदीवारी आदिसे घिरे हुए नगरके 'स्थानीयम्, निगमः' ये २ नाम हैं' यह भी किसी २ का मत है') ॥

२ शाखानगरम् (न), 'राजधानीके समीपवर्ती छोटे-छोटे नगर' का १ नाम है ॥

३ वेशः, वेश्याजनसमाश्रयः (भा० दी० । २ पु), 'वेश्याओंके वास-स्थान' के २ नाम हैं ॥

४ आपणः (पु), निषद्या (स्त्री) 'बाज़ार, हाट या या ग्राहकोंके खरीदने योग्य वस्तु (सौदा) के रखनेके स्थान' अर्थात् 'गोदाम' के २ नाम हैं ॥

५ विपणिः (+ विपणी), पण्यवीथिका (+ पण्यवीथी । २ स्त्री), 'दुकानोंकी पङ्क्ति या बाज़ारका रास्ता या बाज़ारसे भिन्न सौदा बेचनेके किसी भी स्थान' के २ नाम हैं । ('आपण' आदि ४ नाम 'बाजार' के हैं, यह भी मत है') ॥

६ रथ्या, प्रतोली, विशिखा (३ स्त्री), 'गली' के ३ नाम हैं । ('विपणिः आदि ५ नाम एकार्थक हैं, यह भी मत है') ॥

७ चयः (पु), वप्रम् (न पु), 'धूस' अर्थात् 'किलेके चारों तरफ ऊँचे किये हुये मिट्टीके ढेर' के २ नाम हैं ॥

१ प्राकारो वरण ¹सालः २ प्राचीनं प्रान्ततो वृतिः ॥ ३ ॥
३ भित्तिः स्त्री कुड्य४मेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ।
५ गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥ ४ ॥
²निशान्तवस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् ।
गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्यनिलयालयाः ॥ ५ ॥
६ वासः कुटी द्वयोः शाला सभा ७ संजवनं त्विदम् ।
चतुःशालं ८ मुनीनां तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥

---

१ प्राकारः, वरणः, सालः (+ शालः । ३ पु), **बाँस या काँटा आदि-के घेरे'** के ३ नाम हैं ॥

२ प्राचीनम् (+ प्राचीरम् । न), **'काँटा आदिसे घिरे हुए नगरके समीपवाले स्थान'** का १ नाम है ॥

३ भित्तिः (स्त्री), कुड्यम् (न), **'दीवाल'** के २ नाम हैं ॥

४ एडूकम् (+ एडुकम्, एडोकम् । न), **'मजबूतीके लिये भीतरमें हड्डी, लोहा, लकड़ी या टीन आदि देकर बनाई हुई दीवाल'** का १ नाम है ॥

५ गृहम्, गेहम् , उदवसितम्, वेश्म (= वेश्मन्), सद्म (= सद्मन्) निकेतनम्, निशान्तम्, वस्त्यम् (+ वस्त्यम्, वस्त्यम्) सदनम् (+ सादनम्) भवनम्, अगारम्, मन्दिरम् (१२ न), गृहाः (पु नि० ब० व०), निकाय्यः (+ निकायः), निलयः, आलयः (३ पु), **'मकान'** के १६ नाम हैं ॥

६ वासः (पु), कुटी (कुटिः । पु स्त्री), शाला, सभा (२ स्त्री), **'सभाभवन या बैठकखाना'** के ४ नाम हैं । ('गृहम्, ...' २० नाम 'मकान' ही के हैं, यह भी मत है') ॥

७ संजवनम्, चतुःशालम् (+ चतुःशाला, स्त्री । २ न), **चौतरफा घर-वाले स्थान'** के २ नाम हैं ॥

८ पर्णशाला (स्त्री । + न), उटजः (पु न), **'पत्तोंसे बनाई हुई साधुओं-की कुटी'** के २ नाम हैं ॥

---

१. 'सालः प्राचीरं' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कुलोदवसितं वस्त्यम्' इति वाचस्पत्यनुरोधात्—'निशान्तवस्त्यसदनम्' इत्यपीति क्षी० स्वा० आह ॥

१ चैत्यमायतनं तुल्ये २ वाजिशाला तु मन्दुरा ।
३ आवेशनं [१]शिल्पिशाला ४ प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥
५ मठश्छात्रादिनिलयो ६ गञ्जा तु मदिरागृहम् ।
७ गर्भागारं वासगृह८मरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥
९ [२]"कुट्टिमोऽस्त्री निबद्धा भू१०श्चन्द्रशाला शिरोगृहम्"(५)
११ वातायनं गवाक्षो१२ऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

१ चैत्यम्, आयतनम् (२ न), 'यज्ञस्थान—विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ वाजिशाला, मन्दुरा (२ स्त्री), 'अस्तबल' के २ नाम हैं ॥

३ आवेशनम् (न), शिल्पिशाला (+शिल्पशाला । स्त्री । + न), 'कारीगरोंके घर' के २ नाम हैं ॥

४ प्रपा, पानीयशालिका (+ पानीयशाला । २ स्त्री), 'पौसरा, प्याऊँ, या पानी रखनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥

५ मठः (पु), 'मठ' अर्थात् 'विद्यार्थियों या संन्यासियोंके रहनेकी जगह' के १ नाम हैं ॥

६ गञ्जा (स्त्री), मदिरागृहम् (न), कलवरिया या मदिराके घर' के २ नाम हैं ॥

७ गर्भागारम् , वासगृहम् (२ न), 'घरके बीचके हिस्से' अर्थात् 'तहखाने' के २ नाम हैं ॥

८ अरिष्टम्, सूतिकागृहम् (+ सूतकागृहम् । २ न), 'सौरीके घर' अर्थात् 'जिसमें लड़का पैदा हुआ हो उस घर' के २ नाम हैं । ('किसीके मतसे 'गर्भागारम्,.........' ४ शब्द एकार्थक हैं') ॥

९ [कुट्टिमः (पु न), 'पत्थर या संगमर्मर आदिके बने हुए फर्श' का १ नाम है] ॥

१० [चन्द्रशाला (स्त्री), शिरोगृहम् (न), 'अटारी या घरके ऊपरी छत' के २ नाम हैं] ॥

११ वातायनम् (न), गवाक्षः (पु), 'झरोखे' के २ नाम हैं ॥

१२ मण्डपः (पु न), जनाश्रयः (पु), 'मण्डप' के २ नाम हैं ॥

१. 'शिल्पिशालकम्' इति पाठान्तरम् । 'शिल्पशाला' इति सम्यः पाठ' इति क्षी० स्वा० ॥
२. अयं क्षी० स्वा० व्याख्यायां समुपलभ्यते ॥

१ [1]हर्म्यादि धनिनां वासः २ प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥
३ सौधोऽस्त्री राजसदन४मुपकार्योपकारिका ।
५ स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च ॥ १० ॥
[2]विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ।
६ स्त्र्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥
शुद्धान्तश्चावरोधश्च ७ स्यादट्टः क्षोममस्त्रियाम् ।
८ प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥

---

१ हर्म्यम् (न), आदि ('आदि शब्दसे 'स्वस्तिकम्, अट्टालिकम्, वासगृहम (३ न),······'धनियोंके रहनेके स्थान' का १ नाम है ॥

२ प्रासादः (पु), 'देवताओं और राजाओंके निवासस्थान या कोठे' का १ नाम है ॥

३ सौधः (पु न), राजसदनम् (न), 'राजाके घर' के २ नाम हैं ॥

४ उपकार्या, उपकारिका (२ स्त्री) 'तम्बू, कनात, सामियाना' के २ नाम हैं। ('सौधम्,······' ४ शब्द 'राजगृह' के नाम हैं) ॥

५ स्वस्तिकः, सर्वतोभद्रः, नन्द्यावर्तः, आदि ('आदि' शब्दसे 'रूपकः, वर्द्धमानः,······'), विच्छन्दकः (+ विच्छर्दकः । ४ पु), 'धनियोंके गृहों' के १-१ नाम हैं। ('चारों तरफसे दरवाजा और तोरणवाले घरको 'स्वस्तिक', अनेक मंजिले घरको 'सर्वतोभद्र', गोलाकार घरको 'नन्द्यावर्त' और बड़े तथा सुन्दर घरको 'विच्छन्दक' कहते हैं') ॥

६ अन्तःपुरम्, अवरोधनम् (२ न), शुद्धान्तः, अवरोधः (२ पु), 'रनिवास' के ४ नाम हैं ॥

७ अट्टः (पु), क्षोमम् (+ क्षौमम् । न पु), 'अटारी' के २ नाम हैं ॥

८ प्रघाणः, प्रघणः, अलिन्दः (+ आलिन्दः । ३ पु), 'पटखेहर' अर्थात् 'चौखटकी बाहरी जगह' के ३ नाम हैं ॥

---

१. एतत्पूर्वं 'मत्तालम्बोऽपाश्रयः स्यात्प्रग्रीवो मत्तवारणः' इति क्षेपकः क्षी० स्वा० व्याख्याने उपलभ्यते ॥ २. 'विच्छर्दकप्रभेदा हि' इति पाठान्तरम् ॥

१ गृहावग्रहणी [1]देहल्य २ [3]ङ्गणं ३ चत्वराजिरे ।
३ अधस्ताद्दारुणि शिला ४ नासा दारूपरि स्थितम् ॥ १३ ॥
५ प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात् ६ [4]पक्षद्वारं तु [2]पक्षकम् ।
७ वलीकनीध्रे पटलप्रान्ते ८ऽथ पटलं [5]छदिः ॥ १४ ॥

---

१ गृहावग्रहणी, देहली (२ स्त्री), 'डेहरी या दरवाजेके नीचेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

२ [3]अङ्गणम् (महे० । + अङ्गनम्, भा० दी० स्वा० २।२।०; । + प्राङ्गणम्, प्राङ्गनम्), चत्वरम् , अजिरम् (३ न) 'आँगन चबूतरे' के ३ नाम हैं ॥

३ शिला (+ शिली । स्त्री), 'दरवाजेके दोनों खम्भोंके नीचेवाले काठ लोहे या पत्थर' का १ नाम है ॥

४ नासा (स्त्री), 'दरवाजेके दोनों खम्भोंके ऊपरवाले काष्ठ, लोहे या पत्थर' का १ नाम है ।

५ प्रच्छन्नम्, अन्तर्द्वारम् (२ न), 'खिड़की' के २ नाम हैं ॥

६ [4]पक्षद्वारम्, पक्षकम् (+ पु, क्षी० स्वा० भा० दी० । २ न), 'मुख्य द्वारके बगलवाले द्वार' के २ नाम हैं ॥

७ वलीकम् (+ पु), नीध्रम् , पटलप्रान्तम् (३ न), 'छान्ह ओरी, या घोड़मुँहा' के ३ नाम हैं ॥

८ पटलम् (न), छदिः (= छदिस् , स्त्री [5]क्षी० स्वा०, नपुं० भा० दी०, महे०): 'छावना, छाजन' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'देहल्यङ्गनम्' इति पाठान्तरम् ॥   २. 'पक्षकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. णान्तस्याङ्गणशब्दस्य पृषोदरादित्वात्सिद्धिः । 'अङ्गनं प्राङ्गणे याने कामिन्यामङ्गना मता' इति विश्वमेदिन्युक्तेः, 'अङ्गनं प्राङ्गणे यानेऽप्यङ्गना तु नितम्बिनी' इति अनेकार्थसंग्रहे हेमचन्द्राचार्योक्तेश्च नान्तोऽपि 'अङ्गन' शब्द इत्यवधेयम् । अधिकं व्याख्यासुधाटिप्पणे द्रष्टव्यम् ।

४. 'प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात्पक्षद्वारं तदुच्यते' इति कात्याद 'पक्षद्वार' शब्दः पूर्वान्वयीत्यन्ये' इति भा० दी० । तन्न शोभनम् , 'त्वन्तायादि न पूर्वभाक्' (१।१।४) इति ग्रन्थकारप्रतिज्ञाविरोधात् । 'तोः'स्थाने 'च' पाठमाश्रित्याविरोधोऽपीत्यवधेयम् ॥

५. 'छदिः स्त्रियामेव (लि० सू० ११५) इत्यत्र 'इयं छदिः' इत्यादिना 'छदिः' शब्दसाधुत्वमुक्त्वा 'पटलं छदिः' इत्यमरकोषे 'पटल'साहचर्यात् 'छदिषः' क्लीबतां वदन्तोऽमरव्याख्या-

१ गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि।
२ कपोतपालिकायां तु विटङ्कं पुन्नपुंसकम् ॥ १५ ॥
३ स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः ४ स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका।

१ गोपानसी, [1]वलभी (+ वलभिः, [2]वडभी । २ स्त्री) 'धरन, कैंची या छानेके लिये दिये हुए टेढ़े काष्ठ' के २ नाम हैं ॥

२ कपोतपालिका (स्त्री), विटङ्कम् (न पु), 'कबूतर आदि पक्षियों के लिये लकड़ी आदिके बनाए हुए घर' के २ नाम हैं ॥

३ द्वाः (= द्वार् स्त्री), द्वारम् (न), प्रतीहारः (+ प्रतिहारः । पु), 'दरवाजे' के ३ नाम हैं ॥

४ वितर्दिः (+ वितर्दी), वेदिका (२ स्त्री), 'वेदी चौतरा' के २ नाम हैं ॥

तार उपेक्षया' इति भट्टोजीदीक्षितः। 'छदिः स्त्रियामेव' (लि० सू० १६५) इत्यत्र एवपदमन्तराऽपि सूत्रोक्तया छदिषः स्त्रीत्वे लब्धे 'पटलं छदिः (अमर २।२।१४) इत्यत्र पटलसाहचर्यात्क्लीबत्वसन्देह इति तन्निवारणाय सूत्रे 'एव'कारस्तदुच्यते'ऽमरव्याख्यातार उपेक्षया' इति' इति सुबोधिनीकारः। 'पटलच्छदिषी समे' (अभि० चिन्तामणौ ४।७६) इत्यस्य 'पटयति स्थगयति पटलं त्रिलिङ्गः 'मदिकन्दि—' (उणा० सू० ४६५) इत्यलः, पटं लातीति वा ॥१॥ छाद्यतेऽनेनच्छदिः क्लीबलिङ्गः' 'अर्चिशुचि—' (उ० सू० २६५) इति इस्' 'छदेरिस्मन्—' (पा० सू० ४।२।१२) इति ह्रस्वः' इति व्याख्यानं कृतम्। वाचस्पत्याभिधाने च 'छदिः' स्त्री, छद–कि, 'छदिषि पटले' (चाक), अमरः, 'छदिः स्त्रियाम्' (लि० सू० १३६) पा० छदेरिदन्तताऽस्य' इति, 'छदिष्, न०, छद् इसि 'पटले सान्तं क्लीबं' रायमुकुटः। 'इन्द्रस्य छदिसि' यजु० ५।२८।२ गृहे निघण्टुः, इति चोक्तत्वात् इकारान्तः 'छदि' शब्दः स्त्रीलिङ्गः, सकारान्तश्च 'छदिस्' शब्दः क्लीबलिङ्गः, इत्यायातम्। क्षी० स्वा० मु० क्लीबत्वम् महे० मा० दी० स्त्रीत्वमामनन्ति, तथा व्याख्यासुधाटिप्पणीकाराः पं० शिवदत्ता अपि स्त्रीत्वे ग्रन्थकारप्रतिज्ञाभङ्गापत्त्या लिङ्गस्य कोकामयत्वाङ्गीकारात् 'छदिः स्त्रियाम् (लि० सू० १६५) इत्यस्याकिञ्चित्करत्वेन तस्य क्लीबत्वमेवाङ्गीकृतवन्तः। वस्तुतस्तु वाचस्पत्युक्तयुक्त्या इकारान्त'च्छदि'शब्दस्य स्त्रीत्वाङ्गीकारे सकारान्तच्छदिः' शब्दस्य क्लीबत्वाङ्गीकारे च दीक्षिताविरोधेऽपि नैव ग्रन्थकारप्रतिज्ञाभङ्गः, नापि क्षी० स्वा० मुकुटयोर्विरोध इत्यवधेयम् ॥

१. मुकुटेनास्य पर्यायता नाङ्गीकृता ॥

२. 'ओको गृहं पिटं पाको वडभी चन्द्रशालिका' इति त्रिकाण्डशेषात्,
'शुद्धान्ते वडभी चन्द्रशाले सौधोर्ध्ववेश्मनि' इति रभसाच्च ॥

१ तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं २ पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥
३ कूटं पूर्द्वारि यद्धस्तिनखस्तस्मिन्न४थ त्रिषु ।
कपाटमररं तुल्ये ५ [1]तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥
६ आरोहणं स्यात्सोपानं ७ [2]निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी ।
८ संमार्जनी शोधनी स्यात् ९ [3]संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥
क्षिप्ते १० मुखं निःसरणं ११ सन्निवेशो निकर्षणम् ।

---

१ तोरणः (पु न), बहिर्द्वारम् (न), 'तोरण, बाहरी फाटक' के २ नाम हैं ॥

२ पुरद्वारम्, गोपुरम् (२ न), 'नगरके बड़े फाटक' के २ नाम हैं ॥

३ हस्तिनखः (पु), 'सुखपूर्वक चढ़नेके लिये राजद्वार या नगर-द्वारपर बनाई हुई ढालू जमीन' का १ नाम है ॥

४ कपाटम् (+ कवाटम्), अररम् (अररी (स्त्री), अररिः (पु) । २ त्रि), 'किवाड़' के २ नाम हैं ॥

५ अर्गलम् (न स्त्री), 'किल्ली' के २ नाम हैं ॥

६ आरोहणम् सोपानम्, (२ न), 'सीढ़ी' के २ नाम हैं ॥

७ निश्रेणिः (+ निश्रेणी), अधिरोहिणी (+ अधिरोहणी । २ स्त्री) 'काठकी सीढ़ी' के २ नाम हैं ॥

८ संमार्जनी, शोधनी (२ स्त्री), 'झाड़ू' के २ नाम हैं ॥

९ संकरः (+ संकारः) अवकरः (२ पु), 'कतवार, बहारन' के २ नाम हैं ॥

१० मुखम्, निःसरणम् (२ न), 'घर आदिके प्रधान द्वार' के २ नाम हैं ॥

११ सन्निवेशः (पु), निकर्षणम् (न), 'ठहरने योग्य स्थान' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'तद्विष्कम्भ्यर्गलकम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'निश्रेणिस्त्वधिरोहणी' इति पाठान्तरम् । ३. 'संकारोऽवकरः' इत्यपि पाठान्तरम् ॥

१ समौ संवसथग्रामौ २ वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥
३ [1]ग्रामान्तमुपशल्यं स्यात् ४ सीमसीमे स्त्रियामुभे ।
५ घोष आभीरपल्ली स्यात् ६ पक्कणः शबरालयः ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ शैलवर्गः ।

७ महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्यधरपर्वताः ।
अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

---

१ संवसथः, ग्रामः (२ पु), ग्राम के २ नाम हैं ॥

२ वेश्मभूः (स्त्री), वास्तुः (पु न), 'घरकी जमीन' के २ नाम हैं ॥

३ ग्रामान्तम् (+ पु), उपशल्यम् (२ न), 'गाँवके पासवाली जमीन' के २ नाम हैं ॥

४ सीमा (= सीमन्), सीमा (२ स्त्री), 'सिवान, सीमा, सरहद' के २ नाम हैं ॥

५ घोषः (पु), आभीरपल्लीः (+ आभीरपल्लि । स्त्री), 'अहीरोंके झोपड़े या गाँव' के २ नाम हैं ॥

६ पक्कणः, शबरालयः (२ पु), 'कोल, भील, किरात आदि म्लेच्छ जातियोंके घर' के २ नाम हैं ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ शैलवर्गः ।

७ महीध्रः, शिखरी (= शिखरिन्), क्ष्माभृत् (+ भूभृत्), अहार्यः, धरः, पर्वतः, अद्रिः, गोत्रः, गिरिः, ग्रावा (= ग्रावन्), अचलः, शैलः, शिलोच्चयः, (१३ पु), 'पहाड़' के १३ नाम हैं ॥

---

१. 'ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्' इति पाठान्तरम् ॥

१ लोकालोकश्चक्रवालः २त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ ।
३ अस्तस्तु चरमक्ष्माभृ४दुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥
५ हिमवान्निषधो विन्ध्यो [1]माल्यवान् पारियात्रकः ।
गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥
६ पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।
७ कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं ८ [2]प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥
९ कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः १० स्नुः प्रस्थः [3]सानुरस्त्रियाम् ।

---

१ लोकालोकः, चक्रवालः (+ चक्रवाडः । २ पु), 'सात द्वीपवाली पृथ्वीको घेरे हुए पहाड़' के २ नाम हैं ॥

२ त्रिकूटः, त्रिककुत् (=त्रिककुद् । २ पु), 'त्रिकूट पहाड़' के २ नाम हैं ॥

३ अस्तः, चरमक्ष्माभृत् (२ पु), 'अस्ताचल' के २ नाम हैं ॥

४ उदयः, पूर्वपर्वतः (२ पु), 'उदयाचल' के २ नाम हैं ॥

५ हिमवान् (= हिमवत्), निषधः, विन्ध्यः, माल्यवान् (=माल्यवत्), पारियात्रकः (+ पारियात्रिकः), गन्धमादनम् (न । +पु), हेमकूटः (शेष पु), 'हिमालय, निषध आदि पहाड़ों' का क्रमशः १-१ नाम है । ('अन्य शब्दसे 'मन्दरः, मलयः, सह्यः, चित्रकूटः, मनाकः (५ पु),······' का संग्रह है') ॥

६ पाषाणः, प्रस्तरः, ग्रावा (= ग्रावन्), उपलः, अश्मा (= अश्मन् । ५ पु), शिला, दृषत् (= दृषद् । २ स्त्री), 'पत्थर' के ७ नाम हैं ॥

७ कूटः (पु न), शिखरम्, शृङ्गम् (२ न । + ३ पु न), 'पहाड़की चोटी' के ३ नाम हैं ॥

८ प्रपातः, अतटः (+ तटः), भृगुः (३ पु), 'पहाड़से गिरने योग्य स्थान' के ३ नाम हैं ॥

९ कटकः (पु न), 'पहाड़के मध्यभाग' का १ नाम है ॥

१० स्नुः, प्रस्थः, सानुः ([4] ३ पु न), पहाड़के समतल भूमिके

---

१. 'माल्यवान् पारियात्रिकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'प्रपातस्तु तटो भृगुः' इति पाठान्तरम् । तत्र 'प्रपत्यते यस्मात्तटात्स भृगुरिति विग्रहो ज्ञेयः । मूलपाठे च 'प्रपतत्यस्मादिति प्रपातः, न तटमत्रेत्यतट इत्ये विग्रहो ज्ञेयः ॥

३. 'सानुरस्त्रियौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. क्षीरस्वामिभानुजिदीक्षितौ तु 'स्नुः प्रस्थः सानुरस्त्रियौ' इति पठित्वा 'द्विवाल्मस्योऽ-

१ उत्सः प्रस्रवणं २ वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥
३ दरी तु कन्दरो वा स्त्री ४ देवखातबिले गुहा ।
गह्वरं ५ गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥ ६ ॥
६ [1]"दन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गता गिरेः" (६)
७ खनिः स्त्रियामाकरः स्यात् ८ पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ॥

किसी एक भाग' के ३ नाम हैं ॥

१ उत्सः (पु), प्रस्रवणम् (न) 'पहाड़से गिरे हुए अधिक जलके इकट्ठा होनेवाले स्थान' के २ नाम हैं ॥

२ वारिप्रवाहः (अन्य मतसे), निर्झरः, झरः (३ पु), 'झरना' के ३ नाम हैं । ('अन्य आचार्योंके मतसे 'उत्सः,·········५ नाम 'झरना' के हैं') ॥

३ दरी (स्त्री), कन्दरः (पु स्त्री), 'पहाड़की कन्दरा' के २ नाम हैं ॥

४ देवखातबिलम् (भा० दी० । 'देवखातम्, बिलम्' महे०), गुहा (स्त्री), गह्वरम् (शेष न), 'स्वभाव ही से बने हुए बिल या गुफा' के ३ नाम हैं ॥ ('किसी २ के [2]मतसे 'गुहा, गह्वरम्' ये दो ही नाम हैं') ॥

५ गण्डशैलः (पु), 'पहाड़से गिरी हुई बड़ी २ चट्टान' का १ नाम है ॥

६ [दन्तकः (पु), 'पहाड़के टेढ़े स्थानसे बाहर निकली हुई बड़ी चट्टान' का १ नाम है] ॥

७ खनिः (+ खानिः [3]खनी । स्त्री), आकरः (पु । + गञ्जा स्त्री[4]), 'खान' अर्थात् 'रत्न, धातु और कोयला आदिके निकलनेके स्थानके २ नाम हैं ॥

८ पादः, प्रत्यन्तपर्वतः (२ पु), 'आसपासकी छोटी पहाड़ी' के २ नाम हैं ॥

प्यसी' इत्याहतुः। महेश्वरस्तु त्रयाणामपि स्त्रीत्वाभावमुक्त्वा 'स्नुः' पुंल्लिङ्ग इति सर्वेश्वर' इत्याह ।

१. अयं क्षेपकः क्षी० स्वा० व्याख्यानेऽभिधानचिन्तामणौ (४।१००) च समुपलभ्यते ।

२. तत्कारणं—'देवखाते बिले गुहा' इति, शाश्वतोऽप्याह—'गह्वरं बिलदम्भयोः' (श्लो० ६५६) इति, अभिधानचिन्तामणौ—'दरी स्यात्कन्दरोऽस्त्रातबिले तु गह्वरे गुहा' (४।९९) इति प्रामाण्यादिति विभावनीयम् ॥

३-४. 'स्यादाकरः खनिः खानिर्गञ्जा—' इति (अभि० चिन्ता ४।१०२) उक्तेः ॥

१ उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥
३ धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः।
५ निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

---

१ उपत्यका (स्त्री), 'पहाड़के पासवाली जमीनके नीचेवाले हिस्से' का १ नाम है ॥

२ अधित्यका (स्त्री), 'पहाड़के ऊपरवाले स्थान' का १ नाम है ॥

३ धातुः (पु), 'धातु' अर्थात् 'पहाड़से निकले हुए धातु' का १ नाम है। ('सोना, चाँदी, ताँबा, हरिताल, मैनसिल, गेरु, अञ्जन, कसीस, सीसा, लोहा, हिङ्गुल (सिंगरफ), गन्धक और अभ्रक आदि धातु पहाड़से निकलते हैं'[1]) ॥

४ गैरिकम् (न), 'गेरु' अर्थात् 'पहाड़से निकले हुए लाल रंगके एक धातु-विशेष' का १ नाम है ॥

५ निकुञ्जः, कुञ्जः (२ पु न), 'कुञ्ज' अर्थात् 'लता या झाड़ी आदिसे आच्छादित स्थान-विशेष' के २ नाम हैं ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

---

१. तदुक्तम्—'सुवर्णरूप्यताम्राणि हरितालं मनःशिला।
गैरिकाञ्जनकासीसलोहसीसाः सहिङ्गुलाः ॥ १ ॥
गन्धकोऽभ्रकताम्राद्या धातवो गिरिसम्भवाः ॥' इति ॥
क्वचित्तु—'स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च रङ्गं यसदमेव च।
सीसं लोहं च सप्तैते धातवो गिरिसम्भवाः' ॥ १ ॥
इति सप्त धातव उक्ताः। तत्रैव—
'सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम्।
तुत्थं कांस्यं च रीतिश्च सिन्दूरश्च शिलाजतु' ॥ १ ॥
इति सप्तोपधातवश्च उक्ताः। सविस्तरमेतद्विवरणं चरकादिग्रन्थेषु द्रष्टव्यम् ॥

४ अथ वनौषधिवर्गः।

१ अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्।
२ महारण्यमरण्यानी ३ गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥
४ आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत्।
५ अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥
६ पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम्।
७ स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥
८ वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी ९ लेखास्तु राजयः।

---

४. अथ वनौषधिवर्गः।

१ अटवी (+अटविः। स्त्री), अरण्यम्, विपिनम्, गहनम्, काननम्, वनम्, (+वनी, स्त्री। ५ न), 'वन, जङ्गल' के ६ नाम हैं॥

२ महारण्यम् (न), अरण्यानी (स्त्री), 'बड़े जङ्गल' के २ नाम हैं॥

३ गृहारामः, निष्कुटः (२ पु), 'घरके पासमें लगाये हुए जङ्गल' के २ नाम हैं॥

४ आरामः (पु), उपवनम् (न), 'किसीके लगाये हुए उद्यान या बगीचे' के २ नाम हैं॥

५ वृक्षवाटिका (स्त्री), 'मन्त्रियों या वेश्याओंके उपवन' का १ नाम है॥

६ आक्रीडः (पु। +न), उद्यानम् (न), 'प्रमदाओं या मित्रोंके साथ क्रीडा करने के लिये लगाये हुए साधारण वन या बगीचे' के २ नाम हैं॥

७ प्रमदवनम् (न), 'रानियोंके क्रीडाके लिये लगाये हुए वन या फुलवाड़ी' का १ नाम है॥

८ वीथी (+वीथिः), आलिः (+अलिः), आवलिः (आवली), पङ्क्तिः (+पङ्क्ती), श्रेणी (+श्रेणिः। ५ स्त्री), 'कतार, पङ्क्ति' के ५ नाम हैं॥

९ लेखा १ (+रेखा), राजिः (२ स्त्री), 'रेखा, लकीर' के २ नाम हैं॥

---

१. या सान्तरा सा 'पङ्क्तिः' या च निरन्तरा सा 'रेखा' कथ्यते। यथा—क्षत्रियपङ्क्तिः, ब्राह्मणपङ्क्तिः,………। मसीभस्मादिखचिता रेखा। यथा—भस्मरेखा,…… ॥

१ वन्या वनसमूहे स्यादङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥
३ वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ।
[1]अनोकहः कुटः सालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ॥ ५ ॥
४ वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।
६ [2]ओषध्यः फलपाकान्ताः ७ स्युरवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥
७ वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च—

१ वन्या (स्त्री), 'वन के समूह' का १ नाम है ॥

२ अङ्कुरः (+ अङ्कूरः[3] । पु), अभिनवोद्भित् (= अभिनवोद्भिद् स्त्री, भा० दी० । + प्ररोहः), 'अङ्कुर' के २ नाम हैं ॥

३ वृक्षः, महीरुहः, शाखी (= शाखिन्), विटपी (= विटपिन्), पादपः (+ अङ्घ्रिपः, चरणपः,......), तरुः, अनोकहः, कुटः, सालः (+ शालः), पलाशी (= पलाशिन्), द्रुः, द्रुमः, अगमः, (+ अगच्छः,...... । १२ पु) 'पेड़' के १२ नाम हैं ॥

४ वानस्पत्यः (पु) 'फूलकर फलनेवाले पेड़' का १ नाम है । जैसे–आम, लीची, अमरूद.........') ॥

५ वनस्पतिः,[4] (पु), 'विना फूले फलनेवाले पेड़' का १ नाम है । (जैसे—गूलर, कटहल, पीपल, बड़ ....' । किसीके मतसे उक्त दोनों शब्द 'वृक्षमात्र' के वाचक हैं,) ॥

६ ओषधी (औषधीः । स्त्री), फलकर पकनेके बाद नष्ट होनेवाले उद्भिद्' का १ नाम है । ('जैसे—'धान, चना, जौ, गेहूँ......') ॥

७ अवन्ध्यः (अवन्ध्यः)' फलेग्रहिः (२ त्रि), 'अपने २ समयमें फलनेवाले पेड़ आदि' के २ नाम हैं ॥

८ वन्ध्यः (+ वन्ध्यः), अफलः, अवकेशी (= अवकेशिन् । ३ त्रि),

---

१. 'अनोकहः कुटः शाल' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'ओषधिः फलपाकान्ता स्यादवन्ध्यः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'अङ्कूरश्चाङ्कुरः प्रोक्तः' इति हलायुधः' (अभिधानरत्नमालायां २।३०) इति अमरविवेकपुस्तके 'अङ्कूरश्चाङ्कुरः प्रोक्तः' इति हलायुध' इति व्याख्यासुधापुस्तके किञ्चित्तु तत्र तथाऽनुपलब्धेश्चिन्त्यम् ।

४. 'वनस्पतिः' इत्येकं नाम 'आम्रादिवृक्षस्ये'ति भा० दी० चिन्त्यः । आम्रादिवृक्षस्य पुष्पाज्जातफलोपलक्षितवृक्षत्वात् 'तैरपुष्पाद्वनस्पतिः' इति मूलोक्तिविरोधादित्यवधेयम् ।

—१ फलवान्फलिनः फली।
२ प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥
फुल्लश्चैते विकसिते ३ स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ।
४ [2]स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शङ्कु[5]र्ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥
६ अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ ७ वल्ली तु व्रततिर्लता ।
८ लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥
९ नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।

नहीं फलनेवाले पेड़ आदि' के ३ नाम हैं ॥

१ फलवान् (= फलवत्), फलिनः, फली (= फलिन् । ३ त्रि), 'फले हुए पेड़ आदि' के ३ नाम हैं ।

२ प्रफुल्लः (+ प्रफुल्तः), उत्फुल्लः, संफुल्लः, व्याकोशः (+ व्याकोषः), विकचः, स्फुटः, फुल्लः, विकसितः (८ त्रि), 'फूले हुए पेड़, लता आदि' के ८ नाम हैं ॥

३ 'अवन्ध्य' से 'विकसितः' शब्द तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ स्थाणुः (पु न), ध्रुवः, शङ्कुः (२ पु), 'खुत्थ, ठूँठे पेड़' के ३ नाम हैं ॥

५ क्षुपः (पु), गांछी, या जिसकी डाल आदि छोटी हो, उस पेड़ आदि' का १ नाम है ॥

६ स्तम्बः, गुल्मः (२ पु), 'बिना डालवाले पेड़, आदि' के २ नाम हैं ॥

७ वल्ली (+ वल्लिः, वेल्लिः), व्रततिः (+ व्रतती, प्रततिः), लता (३ स्त्री), 'लता, लत्तर' के ३ नाम हैं । (जैसे—अंगूर, मालती, कद्दू, खीरा,...') ॥

८ वीरुत् (= वीरुध्), गुल्मिनी (२ स्त्री), उलपः (पु), 'बहुत डालों-से युक्त लता' के ३ नाम हैं ॥

९ उच्छ्रायः, उत्सेधः, उच्छ्रयः (३ पु) 'पेड़ आदिकी ऊँचाई' के ३ नाम हैं ॥

१. 'प्रफुल्लोत्फुल्ल....' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'स्थाणुरस्त्री' इति पाठान्तरम् ॥

१ अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः [1]स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥
२ समे शाखालते ३ स्कन्धशाखाशाले ४ शिफाजटे ।
५ शाखाशिफावरोहः स्यान्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥ ११ ॥
६ शिरोऽग्रं शिखरं वा ना ७ मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः ।
८ [2]सारो मज्जा नरि ९ त्वक्स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

---

१ प्रकाण्डः (पु न), स्कन्धः (पु), 'कन्धा, पेड़ आदिकी शाखाकी जड़' के २ नाम हैं ॥

२ शाखा (+ शिखा), लता (२ स्त्री), 'डाल' के २ नाम हैं ॥

३ स्कन्धशाखा, शाला (२ स्त्री), 'सबसे पहले फूटनेवाली डाल' के २ नाम हैं ॥

४ शिफा, जटा (२ स्त्री), 'सोर' अर्थात् 'जमीनके भीतर फैली हुई पेड़की जड़' के २ नाम हैं ॥

५ अवरोहः (पु), 'पेड़की जड़ या पेड़ आदिपर चढ़ी हुई गुडूची आदि लता' का १ नाम है । ('यह महे० और मुकुटका मत है । भा० दी० मतसे 'अवरोहः' (पु), 'डालकी जड़' का १ नाम है तथा 'लता' (स्त्री), 'वृक्षके ऊपर चढ़नेवाली लता' का १ नाम है') ॥

६ शिरः (= शिरस्), अग्रम् (२ नाम क्षी० स्वा० महे० मतसे); शिखरम् (३ न), 'फुनगी' अर्थात् 'पेड़ आदिके सबसे ऊपरके हिस्से' के ३ नाम हैं ॥

७ मूलम् (न), बुध्नः (+ बध्नः), अङ्घ्रिनामकः ('पैरके वाचक सब शब्द । २ पु), 'पेड़ आदिकी जड़' के ३ नाम हैं ॥

८ सारः, मज्जा (= मज्जन् । + मज्जा = मज्जा, स्त्री । + २ पु), 'लकड़ीके बीचका हीर' अर्थात् 'मारिल लकड़ी' के २ नाम हैं ॥

९ त्वक् (= त्वच्, स्त्री), वल्कम्, वल्कलम् (२ पु न), 'पेड़ आदिके छिलके' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'स्यान्मूलाच्छाखावधेस्तरोः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'सारो मज्जा समौ' इति पाठान्तरम् ॥

१ काष्ठं दार्व२विन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित्स्त्रियाम् ।
३ निष्कुहः कोटरं वा ना ४ वल्लरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥
५ पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान् ।
६ पल्लवोऽस्त्री किसलयं ७ विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥
८ [1]वृक्षादीनां फलं सस्यं ९ वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।

---

१ काष्ठम्, दारु (+ दारुः, पु । २ न), 'लकड़ी' के २ नाम हैं ॥

२ इन्धनम्, एधः (= एधस्), इध्मम् (३ न), एधः (पु), समित् (= समिध् । स्त्री), 'जलावन, इंधन' के ५ नाम हैं । ('भा० दी० मतसे 'इन्धनम्,.........' ३ नाम 'जलावन' के और 'एधः, समित्' ये २ नाम 'हवनकी लकड़ी' के हैं') ॥

३ निष्कुहः (+ निष्कुटः । पु), कोटरम् (पु न), 'पेड़के खोढ़रा' के २ नाम हैं ॥

४ वल्लरिः (+ वल्लरी), मञ्जरिः (+ मञ्जरी । २ स्त्री), 'मञ्जरी, बौर, मौंजर' के २ नाम हैं ॥

५ पत्रम्, पलाशम्, छदनम्, दलम्, पर्णम् (५ न), छदः (पु), 'पत्ता' के ६ नाम हैं ॥

६ पल्लवः (+ पु), किसलयम् (२ पु न), 'नये पल्लव' के २ नाम हैं ॥

७ विस्तारः (पु, भा० दी०), विटपः (पु न, महे० क्षी० स्वा०), 'पेड़के फैलाव' के २ नाम हैं । ('पल्लवः, ...' ४ नाम एकार्थक हैं यह भी किसी-किसी का मत[2] है,) ॥

८ फलम् (भा० दी०), सस्यम् (+ शस्यम् । २ न), 'फल' के २ नाम हैं ॥

९ वृन्तम्, प्रसवबन्धनम् (भा० दी० । २ न), 'भेंटी' अर्थात् 'पेड़ आदिके फल या फूलकी जड़' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'वृक्षादीनां फलं शस्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'विटपो न स्त्रियां साम्ये शाखाविस्तारपल्लवे' इति (मेदि० पृ० २०९ श्लो० २२) पान्तवर्गे मेदिनीवचनात्, 'शाखायां पल्लवे साम्ये विस्तारो विटपेऽस्त्रियाम्' इति रभसात्, 'स्कन्धादूर्ध्वं तरोः शाखा कटपो(पो) विटपो मतः' इति कात्यायनोक्तेश्चबोध्यम् ॥

१ आमे फले शलाटुः स्या २ च्छुष्के वानमुभे त्रिषु ॥ १५ ॥
३ क्षारको जालकं क्लीबे ४ कलिका कोरकः पुमान्।
५ [1]स्याद् गुच्छकस्तु स्तबकः ६ कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
७ स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं [2]कुसुमं सुमम्।
८ मकरन्दः पुष्परसः ९ परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥
१० द्विहीनं प्रसवे सर्वं—

---

१ शलाटुः (त्रि), 'कच्चे फल' का १ नाम है ॥

२ वानम् (त्रि), 'सूखे फल' का १ नाम है ॥

३ क्षारकः (पु), जालकम् (न), 'नई कली या कलियोंके समूह' के २ नाम हैं ॥

४ कलिका (स्त्री), कोरकः (पु), 'कोंढ़ी' अर्थात् 'विना खिले हुए फूल' के २ नाम हैं ॥

५ गुच्छकः (+ गुच्छः, गुत्सकः, गुत्सः), स्तबकः (२ पु), महे० मतसे 'कलियोंसे छिपी हुई गांठ' के और भा० दी० मतसे 'शीघ्र खिलनेवाली कली' के और अन्य मतसे 'फूल या फल आदिके गुच्छे' के २ नाम हैं ॥

६ कुड्मलः (+ कुट्मलः), मुकुलः (२ पु न), 'अधखिली कली' के २ नाम हैं ॥

७ सुमनसः (= सुमनस्, नि० स्त्री ब० व० । + ए० व०[3]), पुष्पम्, प्रसूनम्, कुसुमम्, सुमम् (४ न), 'फूल' के ५ नाम हैं ॥

८ मकरन्दः, पुष्परसः (२ पु), 'फूलके रस' के २ नाम हैं ॥

९ परागः (पु), सुमनोरजः (= सुमनोरजस्, न) 'फूलके पराग' के २ नाम हैं ॥

१० पहले कहे हुए शब्दोंका सामान्यतः लिङ्गनिर्देश करनेके उपरान्त 'द्वि-

---

१. 'स्याद्गुत्सकस्तु स्तबकः कुट्मलो' इति पाठान्तरम् ॥

२. कुसुमं समम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सुमनाः पुष्पमालत्योः' (मेदि० पृ० १९० श्लो० ६७) इति सान्तवर्गे मेदिन्युक्तेः, 'पुष्पं सुमनाः कुसुमम्' इति नाममालोक्तेः, '…सुमनाः प्राज्ञदेवयोः। जात्याः पुष्पे……' (अने० सं० २।७६०) इति हैमोक्तेश्चैतदवधेयम् ॥

—१ हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।

२ आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैङ्गुदं फले ॥ १८ ॥

बार्हतं च ३ फले जम्ब्वा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।

४ पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा ५ व्रीहयः फले ॥ १९ ॥

हीन' इस शब्दसे अब विशेषतया लिङ्गनिर्देश करते हैं । आगे कहे जानेवाले पेड़, लता और औषधके वाचक शब्द यदि फूल, फल, जड़ और पत्तेके वाचक हों तो वे नपुंसकलिङ्गमें प्रयुक्त होते हैं । ('जैसे—'चम्पकम्, आम्रम्, सूरणम्' ये तीन शब्द क्रमशः 'चम्पाके फूल, आमके फल और सूरनकी जड़' इन अर्थोंमें प्रयुक्त होनेसे नपुंसकलिङ्ग हुए हैं') ॥

१ ('हरीतक्यादयः' इस शब्दसे उक्त लिङ्गका बाधक वचन कह रहे हैं') फल आदि अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी 'हरीतकी, कर्कटी' आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग ही रह जाते हैं अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होते । ('जैसे—'हरीतकी, कर्कटी, द्राक्षा, बदरी' आदि शब्द क्रमशः 'हर्रे, ककड़ी, दाख और बेरके फल' इस अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी पूर्ववत् स्त्रीलिङ्ग ही हैं, नपुंसकलिङ्ग नहीं हुए हैं')॥

२ आश्वत्थम्, वैणवम्, प्लाक्षम्, नैयग्रोधम्, ऐङ्गुदम्, बार्हतम् (६ न), 'पीपल, बाँस, पाकड़, बट, इङ्गुदी और भटकटैयाके फल' के क्रमशः १-१ नाम हैं ॥

३ जम्बूः (स्त्री), जम्बु, जाम्बवम् (२ न), 'जामुनके फल' के ३ नाम हैं ॥

४ जाती (स्त्री)प्रभृति ('प्रभृति' शब्दसे 'यूथिका, मल्लिका,······'), शब्दके पुष्प अर्थमें प्रयुक्त होनेपर पूर्ववत् लिङ्ग रहते हैं अर्थात् उनका नपुंसकलिङ्ग नहीं होता । 'जैसे—'जाती, यूथिका, मल्लिका, ······ (३ स्त्री), शब्द पहले लतार्थक रहनेपर स्त्रीलिङ्ग होनेसे पुष्पार्थक होनेपर भी स्त्रीलिङ्ग ही रहते हैं')॥

५ व्रीहिः (पु), आदि ('आदि' शब्दसे 'यवः, मुद्गः, माषः, प्रियङ्गुः, गोधूमः, चणकः, ······') शब्दके फल अर्थमें प्रयुक्त होनेपर पूर्ववत् लिङ्ग रहता है अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होता । ('जैसे—'व्रीहिः, यवः, मुद्गः, माषः, प्रियङ्गु······(५ पु), शब्द पहले ओषध्यर्थक रहने पर पुंल्लिङ्ग होनेसे अब फलार्थक होनेपर भी पुंल्लिङ्ग ही रह गये हैं, नपुंसकलिङ्ग नहीं हुए हैं') ॥

१ विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि २ पुष्पे क्लीबेऽपि पाटला ।
३ बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥
अश्वत्थेऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः ।
तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥
५ उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।
६ कोविदारे चमरिकः कुद्दालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥
७ सप्तपर्णो [1]विशालत्वक्शारदो विषमच्छदः ।

---

१ विदारी (स्त्री), आदि ('आदि' शब्दसे 'शालपर्णी, अंशुमती, गम्भारी, ······') शब्दके 'मूल, फल और फूल' अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी पूर्ववत् लिङ्ग रहता है अर्थात् नपुंसकलिङ्ग नहीं होता । (जैसे—विदारी, शालपर्णी, अंशुमती, गम्भारी (४ स्त्री, ······') 'मूल फल और फूल' अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी पहलेवाला स्त्रीलिङ्ग ही रह गया है, नपुंसकलिङ्ग नहीं हुआ है[2]) ॥

२ [3]पाटला (स्त्री न), 'पाटलाके फूल' अर्थमें यह स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग होता है ।

३ बोधिद्रुमः (+ बोधिः), चलदलः, पिप्पलः, कुञ्जराशनः (+ गजाशनः), अश्वत्थः (५ पु) 'पीपलके पेड़' के ५ नाम हैं ॥

४ कपित्थः (+ कपित्थ, कवित्थः), दधित्थः, ग्राही (=ग्राहिन्) मन्मथः, दधिफलः, पुष्पफलः, दन्तशठः (७ पु) 'कैथ' के ७ नाम हैं ॥

५ उदुम्बरः (उडुम्बरः) जन्तुफलः, यज्ञाङ्गः, हेमदुग्धकः (४ पु) 'गूलर' के ४ नाम हैं ॥

६ कोविदारः, चमरिकः, कुद्दालः, युगपत्रकः (४ पु), 'कचनार' के ४ नाम हैं ॥

७ सप्तपर्णः, विशालत्वक् (= विशालत्वच्) शारदः (+ शारदी), विषम-

---

१. 'विशालत्वक् शारदी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'द्विहीने प्रसवे सर्वम्' (२।४।१८) इति स्त्रीत्वबाधनायेमानीत्यवधेयम् ॥

३. यत्तु भा० दी० 'पाटलः कुसुमे वर्णेऽप्याशुव्रीहिश्च पाटला' इति शाश्वतोक्त्या 'पाटला' शब्दस्य पुंस्त्वमप्युक्तम् , तत्तु 'पाटला पाटली स्त्री स्यादस्य पुष्पे पुनर्न ना' (मेदि० पृ० १६६ श्लो० १०९) इति मेदिन्यां पुंस्त्वनिषेधाद्—पाटलन्तु कुङ्कुमश्वेतरक्तयोः । पाटलः स्यादाशुव्रीहिः पाटला पाटलिद्रुमे' (अने० सं० ३।६६४) इति हैमोक्तेश्च चिन्त्यमेवेति विभावनीयम् ॥

१ आरग्वधे [1]राजवृक्षशंपाकचतुरङ्गुलाः ॥ २३ ॥
आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।
२ स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥
३ वरुणो वरणः सेतुस्तिक्तशाकः कुमारकः ।
४ पुन्नागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥
५ पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ।
६ तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुरतिमुक्तकः ॥ २६ ॥
वञ्जुलश्चित्रकृच्चाथ द्वौ पीतनकपीतनौ ।
आम्रातके ८ मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ ॥ २७ ॥

च्छदः (४ पु) 'सतवना, छितवन' अर्थात् 'सात पत्तेवाले वृक्ष-विशेष, सप्तपर्ण के ४ नाम हैं ॥

१ आरग्वधः (+आरग्वधः, अरग्वधः), राजवृक्षः, शंपाकः (+शम्पाकः, संपाकः) चतुरङ्गुलः, आरेवतः, व्याधिघातः, कृतमालः, सुवर्णकः (+सुपर्णकः, सुवर्णः, सुपर्णः, । ८ पु), 'अमलतास' के ८ नाम हैं ॥

२ जम्बीरः, दन्तशठः, जम्भः, जम्भीरः, जम्भलः (+जम्भरः । ५ पु), 'जंबीरी नींबू' के ५ नाम हैं ॥

३ वरुणः, वरणः, सेतुः, तिक्तशाकः, कुमारकः (५ पु) 'वारुण' के ५ नाम हैं ॥

४ पुन्नागः, पुरुषः, तुङ्गः, केसरः (+केशरः), देववल्लभः (५ पु) नाग-केशर वृक्ष' के ५ नाम हैं ॥

५ पारिभद्रः, निम्बतरुः, मन्दारः, परिजातकः (४ पु) 'बकायन' के ४ नाम हैं ॥

६ तिनिशः, स्यन्दनः, नेमिः (+नेमी = नेमिन्), रथद्रुः अतिमुक्तकः, वञ्जुलः, चित्रकृत् (७ पु) 'वञ्जुल, तिनिश' के ७ नाम हैं ॥

७ पीतनः, कपीतनः, आम्रातकः (+अम्रातकः । ३ पु), 'अमड़ा' के ३ नाम हैं ॥

८ मधूकः (मधुकः, मधूलः, मधुलः), गुडपुष्पः, मधुद्रुमः, वानप्रस्थः,

[1] 'राजवृक्षशम्पाकचतुरङ्गुलाः' इति पाठान्तरमिति सुभूत्यादय इति मा० दी० ॥

वानप्रस्थमधुष्ठीलौ १ [1]जलजेऽत्र मधूलकः ।
२ पीलौ गुडफलः स्रंसी ३ तस्मिंस्तु गिरिसम्भवे ॥ २८ ॥
[2]अक्षोटकन्दरालौ द्वा४वङ्कोटे तु निकोचकः ।
५ पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथो६ऽथ वेतसे ॥ २९ ॥
रथाभ्रपुष्पविदुरशीतवानीरवञ्जुलाः ।
७ द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥
८ शोभाञ्जने [3]शिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ।

मधुष्ठीलः (+ मधुष्ठीलः । ५ पु), 'महुआ' के ५ नाम हैं ॥

१ मधूलकः (+ मधूलः । पु), 'पानीमें या पहाड़पर होनेवाले महुए' का एक नाम है । (इसके पत्ते बहुत बड़े २ होते हैं') ॥

२ पीलुः, गुडफलः, स्रंसी (= स्रंसिन् । ३ पु), 'पीलुनामक वृक्षविशेष' के ३ नाम हैं ॥

३ अक्षोटः, कन्दरालः (+ कर्परालः । २ पु), 'पहाड़ी पीलु' के २ नाम हैं ॥

४ अङ्कोटः (+ अङ्कोटः, अङ्कोलः), निकोचकः (+ निकोटकः । २ पु), ढेलानामक वृक्ष-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ पलाशः, किंशुकः, पर्णः, वातपोथः (४ पु), 'पलाश' के ४ नाम हैं ॥

६ वेतसः, रथः, अभ्रपुष्पः (+ रथाभ्रपुष्पः), विदुरः, शीतः (+ न), वानीरः, वञ्जुल (७ पु), 'बेंत' के ७ नाम हैं ॥

७ परिव्याधः, विदुलः, नादेयी (स्त्री), अम्बुवेतसः (+ जलवेतसः । शेष पु), 'जलबेंत' के ४ नाम हैं ॥

८ शोभाञ्जनः (+ शौभाञ्जनः, सोभाञ्जनः, सौभाञ्जनः) शिग्रुः, तीक्ष्ण-गन्धकः, अक्षीवः (+ आक्षीवः, आक्षीरः, सु०), मोचकः (+ मोचः । ५ पु), 'सहिजन' के ५ नाम हैं ॥

---

१. गिरिजेऽत्र मधूककः, इति पाठान्तरम् ॥   २. 'अक्षोटकर्परालौ' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'शिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीरमोचकाः इति पाठान्तरम् ॥

१ रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्यादरिष्टः फेनिलः समौ ॥ ३० ॥
३ बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ।
४ प्लक्षो जटी पर्कटी स्यान्न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥ ३१ ॥
६ गालवः शाबरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ ।
७ आम्रश्चूतो रसालोऽसौ ८ सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३२ ॥
९ [1]'कामाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः' (७)
१० [2]कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।

---

१ मधुशिग्रुः (पु), 'लाल फूलवाले सहिजन' का १ नाम है ॥

२ अरिष्टः (+ रिष्टः) फेनिलः (२ पु), 'रीठा' के २ नाम हैं ॥

३ बिल्वः, शाण्डिल्यः, शैलूषः, मालूरः, श्रीफलः (५ पु), 'बेल' के ५ नाम हैं ॥

४ प्लक्षः, जटी (= जटिन् । + जटि, स्त्री । २ पु), पर्कटी (स्त्री), 'पाकड़' के ३ नाम हैं ॥

५ न्यग्रोधः, बहुपात् (= बहुपाद्), वटः (३ पु), 'वट बरगद' के ३ नाम हैं ॥

६ गालवः शाबरः (+ सावरः), लोध्रः (+ रोध्रः), तिरीटः (+ तरः), तिल्वः, मार्जनः (६ पु), 'लोध' के ६ नाम हैं । ('गालवः, आदि २ नाम 'सफेद लोध' के और 'लोध्रः' आदि ४ नाम 'लोध' के हैं, यह क्षी० स्वा० का मत है') ॥

७ आम्रः, चूतः, रसालः (३ पु), 'आम' के ३ नाम हैं ॥

८ सहकारः, अतिसौरभः (महे० । २ पु०), 'सुगन्धियुक्त आम' के २ नाम हैं ॥

९ [कामाङ्गः, मधुदूतः, माकन्दः, पिकवल्लभः (४ पु), 'आम' के ४ नाम हैं] ॥ ७ ॥

१० कुम्भम् , उलूखलकम् (+ उदूखलकम् , कुम्भोलूखलकम् । २ न), कौशिकः, गुग्गुलुः, पुरः (३ पु), 'गुग्गुलु' के ५ नाम हैं ॥

---

१. 'कामाङ्ग······वल्लभः' अयमंशः क्षी० स्वा० पुस्तके मूल एवेत्यवधेयम् ॥

२. 'कुम्भं चोलूखलकं' इति पाठान्तरम् । तत्र नामद्वयस्वीकारे मूलपाठ एव समीचीन इति ।

१ शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः ॥ ३४ ॥
२ राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नकद्रुर्धनुःपटः।
३ गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥
श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाऽप्यथ द्वयोः।
[1]कर्कन्धूर्बदरी कोलिः ५ कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥

१ शेलुः (+ सेलुः), श्लेष्मातकः, [2]शीतः (+ न), उद्दालः, बहुवारकः (५ पु), 'लसोड़ा' के ५ नाम हैं ॥

२ राजादनम् (+ राजातनम् । + पु । न), प्रियालः (+ पियालः), सन्नकद्रुः (सन्नः, कद्रुः, यह सोमनन्दीके मतसे), धनुःपटः, (+ धनुष्पटः, धनुः = धनुस्, पटः । ३ पु), 'चिरौंजी, पियार' के ४ नाम हैं ॥

३ गम्भारी (+ कम्भारी), सर्वतोभद्रा, काश्मरी (+ काश्मीरी), मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी (६ स्त्री), काश्मर्यः (पु), 'गंभार' के ७ नाम हैं ॥

४ [3]कर्कन्धूः (+ कर्कन्धुः । पु स्त्री), बदरी (+ २ पु स्त्री मुकु०[4]), कोलिः (+ कोली, कोला । स्त्री), 'बेर' के ३ नाम हैं ॥

५ कोलम्, कुवलम्, फेनिलम् , सौवीरम् (+ सौवीर्यम्), बदरम् (५

१. कर्कन्धु (न्धू) र्बदरी कोलिर्घोण्टा कुवलफेनिले ।
सौवीरं बदरं कोलमथ.......' इति क्षी० स्वा० पाठः ॥

२. सङ्ख्यागणनायामुक्तोऽप्ययं शब्दो भा० दी० अव्याख्यातस्संशोधकप्रमादात्त्रुटितो व्याख्यातृत्यक्तो वेति बुधैर्मृग्यम् ॥

३. कर्कं कण्टकं दधातीति विगृह्य 'अन्दूदृम्भूजम्बूकफेलूकर्कन्धूदिधिषूः' (उ० सू० १।९३) इति कूप्रत्ययेऽस्य सिद्धिरिति० भा० दी० । क्षी० स्वा० तु 'कर्को लोहितोऽन्धुः कर्कन्धुः शकन्ध्वादित्वात्पररूपमित्याह । तच्चिन्त्यम् , सिद्धान्तकौमुद्यां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' (वार्ति० ३६३२) इति वार्तिकोदाहरणत्वेनोक्तस्य 'कर्कन्धु' शब्दस्य 'कर्कानां राजविशेषाणामन्धुः कूपः कर्कन्धुः' इति तत्रैव तत्त्वबोधिन्यां दण्डयुक्तेः 'अन्दूदृम्भू—' (उ० सू० १।९३) इति पाणिनिसूत्रस्य च विरोधाद ह्रस्व 'कर्कन्धु' शब्दस्यान्यार्थकत्वादित्यवधेयम् ॥

४. 'अथ द्वयोः' इत्युक्त्या ग्रन्थकारप्रतिज्ञाविरोधाद 'कर्कन्धूबदरी' त्युभौ शब्दौ पुंस्त्रीलिङ्गाविति मुकुटोक्तिश्चिन्त्या । तथा सति 'बदरी कोलकार्पास्योर्बदरन्तु फले तयोः' (अने० संग्र० ३।५८१) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेः 'बदरी कोले, क्लीबं तु तत्फले' (मेदि० पृ० १४९ श्लो० २७) इति मेदिन्युक्तेश्च विरोधस्य दुर्वारत्वादित्यवधेयम् ॥

सौवीरं बदरं घोण्टा १ऽथ स्यात्स्वादुकण्टकः ।
विकङ्कतः स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥
२ ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ।
३ तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥
४ काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ।
५ [1]गोलीढो झाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ॥ ३९ ॥
६ तिलकः क्षुरकः श्रीमान्—

न), घोण्टा (+ घुण्टा । स्त्री), 'बेर के फल या वनबेर[2]' के ६ नाम हैं[3] ॥

१ स्वादुकण्टकः (+ गोपकण्टः), विकङ्कतः (+ वैकङ्कतः), स्रुवावृक्षः, ग्रन्थिलः, व्याघ्रपात् (= व्याघ्रपाद् । + व्याघ्रपादः, व्याघ्रपादपः । ५ पु), 'कटाय' के ५ नाम हैं ॥

२ ऐरावतः, नागरङ्गः (२ पु), नादेयी, भूमिजम्बुका (+ भूमिजम्बूः । २ स्त्री), 'नारङ्गी वृक्ष' के ४ नाम हैं । (प्रथम २ नाम 'नारङ्गी वृक्ष' के और अन्तवाले २ नाम 'भूमिजंबू' अर्थात् 'एक प्रकारके कन्द के हैं, यह भी अन्याचार्यों (गौड) का मत है') ॥

३ तिन्दुकः (+ तिन्दुकी), स्फूर्जकः, कालस्कन्धः, शितिसारकः (+ नीलसारः ४ पु), 'तेंदुआनमक वृक्ष' के ४ नाम हैं ॥

४ काकेन्दुः कुलकः, काकतिन्दुकः, काकपीलुकः (४ पु), 'कुचिला' के ४ नाम हैं ॥

५ गोलीढः (+ गोलिहः), झाटलः, घण्टापाटलिः (+ घण्टा, पाटलिः, क्षी० स्वा०), मोक्षः, मुष्ककः (+ मूषकः । ५ पु), 'काला पाडर या लोध-विशेष' के ५ नाम हैं ॥

६ तिलकः, क्षुरकः, श्रीमान् (=श्रीमत् । ३ पु) 'तिलक वृक्ष' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'गोलीढा झाटको' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'बदरीसदृशाकारो वृक्षःसूक्ष्मफलो भवेत् । अटव्यामेव सा घोण्टा गोपघोण्टेति चोच्यते' ॥१॥ इत्युक्तेर्बदरीसदृशाकारस्य वन्यफलस्ये'ति केचिन्मतेनेदम् ॥

३. कर्कन्ध्वादित्रयं वृक्षार्थकम्, अन्ये फलार्थकाः, घोण्टा त्वुभयस्पृक्-उभयसम्बन्धी' इति० क्षी० स्वा० ॥

—१ समौ पिचुलझावुकौ ।
२ श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी[1] कैडर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥
३ क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।
४ [2]तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥
तूलं च ५ नीपप्रियककदम्बास्तु हलिप्रियः ।
६ वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु ॥ ४२ ॥
७ गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः ।
प्लक्षश्च ८ तिन्तिडी चिञ्चाऽम्लिका९ऽथो[3] पीतसारके ॥ ४३ ॥
सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ।

---

१ पिचुलः, झावुकः (२ पु), 'भाऊ वृक्ष' के २ नाम हैं ॥

२ श्रीपर्णिका (+श्रीपर्णी), कुमुदिका, कुम्भी (३ स्त्री), कैडर्यः (+कैदर्यः, कैटर्यः), कट्फलः (२ पु), 'कायफर' के ५ नाम हैं ॥

३ क्रमुकः, पट्टिकाख्यः, पट्टी (= पट्टिन् । +पट्टी = पट्टी, स्त्री), लाक्षाप्रसादनः (४ पु), 'पठानीलोध' के ४ नाम हैं ॥

४ तूदः (+तूदः), यूपः (+यूपः, मु॰), क्रमुकः, ब्रह्मण्यः (४ पु), ब्रह्मदारु (+ब्रह्मकाष्ठम्), तूलम् (+तूला, गौड मतसे । २ न) 'सहतूत या तूत' के ६ नाम हैं ॥

५ नीपः, प्रियकः, कदम्बः, हलिप्रियः (+हरिप्रियः । ४ पु), 'कदंब वृक्ष' के ४ नाम हैं ॥

६ वीरवृक्षः, अरुष्करः (२ पु), अग्निमुखी (स्त्री), भल्लातकी (त्रि), 'भिलावा' के ४ नाम हैं ।

७ गर्दभाण्डः, कन्दरालः, कपीतनः, सुपार्श्वकः, प्लक्षः (५ पु), 'लाही पीपल' के ५ नाम हैं ॥

८ तिन्तिडी (+तिन्तिली), चिञ्चा, अम्लिका (+आम्लिका, आम्लीका, अम्लीका । ३ स्त्री) 'इमली' के ३ नाम हैं ॥

९ पीतसारकः (+पीतसालकः), सर्जकः, असनः (+आसनः), बन्धूकपुष्पः, प्रियकः, जीवकः (६ पु), 'विजयसार' के ६ नाम हैं ॥

---

1. 'कैटर्यकट्फलौ' इति पाठान्तरम् ॥　　2. 'नूदस्तु यूपः' इति पाठान्तरम् ॥

3. 'पीतसालके' इति पाठान्तरम् ॥

१ [1]साले तु सर्जकार्श्याश्वकर्णकाः सस्यसंवरः ॥ ४४ ॥
२ नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।
३ राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायां४मथ द्वयोः ॥ ४५ ॥
इङ्गुदी तापसतरु५र्भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ ।
६ पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥
७ पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे ८ रोचनः कूटशाल्मलिः ।
९ [2]चिरबिल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥

---

१ सालः (+ शालः, स्यालः), सर्जः (+ सर्जकः), कार्श्यः (+ कार्ष्यः), अश्वकर्णकः, सस्यसंवरः (+ सस्यशंबरः । ५ पु) **'शाल या सखुआ'** के ५ नाम हैं ॥

२ नदीसर्जः, वीरतरुः, इन्द्रद्रुः, ककुभः, अर्जुनः, (५ पु), **'अर्जुन वृक्ष'** के ५ नाम हैं ॥

३ राजादनः (+ न), फलाध्यक्षः (२ पु), क्षीरिका (स्त्री), **'खिरिनीके पेड़'** के ३ नाम हैं ॥

४ इङ्गुदी (स्त्री पु), तापसतरुः (पु), **'इङ्गुदी इङ्गुआके पेड़'**के २ नाम हैं ॥

५ भूर्जः (+ भूजः), चर्मी (= चर्मिन्), मृदुत्वक् (= मृदुत्वच् । + मृदुच्छदः । ३ पु), **भोजपत्रके पेड़'**के ३ नाम हैं ॥

६ पिच्छिला, पूरणी, मोचा (+ मोचनी । ३ स्त्री), [3]स्थिरायुः (= स्थिरायुस्, पु), शाल्मलिः (+ शाल्मली, शाल्मलः । स्त्री पु), **'सेमलके पेड़'**के ५ नाम हैं ॥

७ पिच्छा (स्त्री), शाल्मलीवेष्टः (भा० दी० पु), **'मोचरस'**के २ नाम हैं ॥

८ रोचनः, कूटशाल्मलिः (+ कुशाल्मलिः । २ पु), **'काला सेमर'**के २ नाम हैं ॥

९ चिरबिल्वः (+ चिरिबिल्वः), नक्तमालः (+ रक्तमालः, क्षी० स्वा०), करजः, करञ्जकः (४ पु), **'करञ्ज'** के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'शाके तु सर्जकार्ष्याश्वकर्णकाः सस्यशंबरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'चिरिबिल्वो रक्तमालः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'षष्टिवर्षसहस्राणि वने जीवति शाल्मलिः' इत्युक्तेरस्य स्थिरायुष्ट्वमित्यन्वर्थं नामेत्यवधेयम् ॥

१ प्रकीर्यः पूतिकरजः [1]पूतिकः कलिमारकः ।
२ करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥
३ रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।
४ गायत्री [2]बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥
५ अरिमेदो विट्खदिरे ६ कदरः खदिरे सिते ।
सोमवल्कोऽप्य७थ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥
एरण्ड उरुबूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ।

१ प्रकीर्यः पूतिकरजः (+ पूतीकरजः, पूतीकरञ्जः) पूतिकः (+ पूतीकः), कलिमारकः (+ कलिकारकः । ४ पु), 'काँटेदार करञ्जके पेड़' के ४ नाम हैं ॥

२ षड्ग्रन्थः (पु), मर्कटी, अङ्गारवल्लरी (२ स्त्री) 'करञ्जके भेद' का १-१ नाम है ॥

३ रोही (= रोहिन्), रोहितकः (रोहितः) प्लीहशत्रुः, दाडिमपुष्पकः (+ रक्तपुष्पकः । ४ पु) 'गुलनार या लाल करञ्ज' के ४ नाम हैं ॥

४ गायत्री (स्त्री । गायत्री = गायत्रिन् , पु), बालतनयः (+ बालपत्रः) खदिरः दन्तधावनः (४ पु) 'कत्था, खैर' के ४ नाम हैं ॥

५ अरिमेदः (+ परिमेदः, अहिमेदः, अहिमारः), विट्खदिरः (२ पु) 'बदबू करनेवाले कत्थे' के २ नाम हैं ॥

६ कदरः सोमवल्कः (२ पु), 'सफेद कत्थे' के २ नाम हैं ॥

७ व्याघ्रपुच्छः (+ व्याघ्रदलः) गन्धर्वहस्तकः, एरण्डः, उरुबूकः (+ रुबुः, रुवुः, रुबूकः रुबुकः उरुबूकः उरुबुकः,) रुचकः, चित्रकः, चञ्चुः, पञ्चा-

---

१. 'पूति (ती) कः कलिकारकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः । कण्टकी बालपत्रश्च जिह्मशल्यः क्षितिक्षमः' ॥१॥ इत्युक्त्वा 'बालपत्र' शब्दस्य 'खदिरयवासे' त्यर्थयोरभिमतत्वेन 'बालपुत्र' भ्रान्त्या ग्रन्थकारोऽत्र 'बालतनय' शब्दमुक्तवान् । तस्मादत्र 'बालपत्रश्च खदिरो' इति पाठः समीचीन इति ।

चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो [1]मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥ ५१ ॥
१ अल्पा शमी शमीरः स्या२च्छमी सक्तुफला शिवा।
३ [2]पिण्डीतको मरुबकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥
शल्यश्च मदने ४ शक्रपादपः पारिभद्रकः।
भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥
पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुण्य५थ द्वयोः।
पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥ ५४ ॥
कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी ६ श्यामा तु महिलाह्वया।
लता गोवन्दनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥
विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा।

ङ्गुलः मण्डः (आमण्डः, अमण्डः आदण्डः), वर्द्धमानः, व्यडम्बकः (+ व्य-डम्बरः । + व्यडम्बनः स्वा० । ११ पु), 'एरण्ड, रेड' के नाम हैं ॥

१ शमीरः (पु) 'छोटी शमी' का १ नाम है ॥

२ शमी, सक्तुफला (+ शक्तुफली), शिवा (३ स्त्री) 'शमी' के ३ नाम हैं ॥

३ पिण्डीतकः मरुबकः (+ मरुवकः), श्वसनः, करहाटकः (+ करहाटः), शल्यः, मदनः (६ पु) 'मयनफल' के ६ नाम हैं ॥

४ शक्रपादपः, पारिभद्रकः (+ पारिभद्रः । २ पु) भद्रदारु (+ पु) द्रुकिलिमम् , पीतदारु, दारु (+ २ पु) पूतिकाष्ठम् , देवदारु (६ न) 'देवदारु' के ८ नाम हैं ॥

५ पाटलिः (+ पाटली । स्त्री पु) पाटला, मोघा (+ अमोघा), काचस्थाली (+ काकस्थाली, + काला, स्थाली, २ स्त्री० स्वा०), फलेरुहा, कृष्णवृन्ता, कुबेराक्षी (६ स्त्री), 'पाढ़र' के ७ नाम हैं ॥

६ श्यामा, महिलाह्वया, लता, गोवन्दनी (+ गौः = गौः, वन्दनी[4]), गुन्द्रा, प्रियङ्गुः, फलिनी, फली, विष्वक्सेना, गन्धफली, कारम्भा (११ स्त्री), प्रियकः (पु), 'ककुनी, टाँगुन' के १२ नाम हैं ॥

१. 'मण्डवर्धमानव्यडम्बराः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'पिण्डीतको मरुवकः' इति पाठान्तरम् ॥
३. काला स्थाली फलेरुहा' इति पाठान्तरम् ॥
४. 'वन्दनी पुष्पशोभना । गन्धप्रियङ्गुः कारम्भा लता गौर्वर्णभेदिनी' इतीन्दुक्तेः ॥

१ [1]मण्डूकपर्णपत्त्रोर्णनटकट्वङ्गटुण्टुकाः ॥ ५६ ॥
[2]स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ।
[3]शोणकश्चारलौ २ तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥ ५७ ॥
अमृता च वयस्था च ३ त्रिलिङ्गस्तु बिभीतकः ।
नाक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥
४ अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता ।
हरीतकी हैमवति चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥
५ पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाऽथ ६ द्रुमोत्पलः ।
कर्णिकारः परिव्याधो ७ लकुचो लिकुचो डहुः ॥ ६० ॥

---

१ मण्डूकपर्णः, पत्त्रोर्णः, नटः, कट्वङ्गः, टुण्टुकः (+ टुन्टुक), स्योनाकः, (+ श्योनाकः), शुकनासः, ऋक्षः दीर्घवृन्तः, कुटन्नटः, शोणकः (+ शोनकः, क्ली० स्वा) अरलुः (+ अरटुः । १२ पु), 'सोनापाठा' के ११ नाम हैं ॥

२ [4]तिष्यफला, आमलकी (+ आमला । त्रि), अमृता, वयस्था (+ कायस्था क्ली० स्वा० । शेष स्त्री) 'आँवले' के ४ नाम हैं ॥

३ बिभीतकः (त्रि), अक्षः (बिभीतकाक्षः) तुषः, कर्षफलः, भूतावासः (भूतवासः), कलिद्रुमः (५ पु), 'बहेड़ा' के ६ नाम हैं ॥

४ अभया, अव्यथा, पथ्या, कायस्था (+ वयस्था), पूतना, अमृता, हरीतकी हैमवती, चेतकी, श्रेयसी शिवा (११ स्त्री) 'हर्र' के ११ नाम हैं ॥

५ पीतद्रुः, सरलः (२ पु) पूतिकाष्ठम् (न), 'सरलनामक काष्ठ (वृक्ष)—विशेष' के ३ नाम हैं ॥

६ द्रुमोत्पलः कर्णिकारः, परिव्याधः (३ पु) 'कठचम्पा' के ३ नाम हैं ॥

७ लकुचः लिकुचः डहुः (+ डहूः । ३ पु), 'बड़हर' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'मण्डूकपर्णपत्त्रोर्णनटकट्वङ्गटुन्टुकाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'श्योनाकशुकनास······' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'स्योनकश्चारलौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. तिष्यं मङ्गल्यं फलं यस्याः सा तिष्यफला । तत्रश्चास्याः—
'नित्यमामलके लक्ष्मीर्नित्यं हरितगोमये । नित्यं शंखे च पद्मे च नित्यं शुक्ले च वाससि' ॥
इत्युक्तेरित्यवधेयम् ॥

१ [1]पनसः कण्टकिफलो २ निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः।
३ काकोदुम्बरिका [2]फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥
४ अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः।
[3]पिचुमन्दश्च निम्बेऽ५ऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिंशपा ॥ ६२ ॥
६ कपिला भस्मगर्भा सा—

१ पनसः (+ पणसः, दुर्गा मतसे; + फलसः) कण्टकिफलः (+ कण्टकफलः। २ पु), 'कटहल' के २ नाम हैं ॥

२ निचुलः (+ निचोलः), हिज्जलः (+ इज्जल), अम्बुजः (३ पु), भा० दी० मतसे 'स्थलबेंत' के क्षी० स्वा० तथा महे० मतसे 'जलबेंत' के और अन्य मतसे 'समुद्रफल' के ३ नाम हैं ॥

३ काकोदुम्बरिका, फल्गुः, मलयूः (+ मलपूः मलापूः) जघनेफला (४ स्त्री), 'कठूमर कालागूलर' के ४ नाम हैं ॥

४ अरिष्टः, सर्वतोभद्रः, हिङ्गुनिर्यासः, मालकः, पिचुमन्दः (+ पिचुमर्दः क्षी० स्वा०) निम्बः (६ पु) 'नीम' के ६ नाम हैं ॥

५ पिच्छिला, [4]अगुरु (न), शिंशपा (+ अगुरुशिंशपा, क्षी० स्वा०। शेष स्त्री), भा० दी० मतसे 'शीशम' के ३ नाम हैं ॥

६ कपिला (भा० दी० ने इसे विशेषण माना है, पर्याय नहीं) भस्मगर्भा (२ स्त्री), 'कपिलवर्णवाले शीशम' के २ नाम हैं। (महे० ने पिच्छिला, अगुरुशिंशपा, कपिला, भस्मगर्भा। ४ स्त्री), इन चारोंको पर्यायवाचक कहा है') ॥

१. 'पणसः कण्टकिफलः निचुल इज्जलोऽम्बुजः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'फल्गुर्मलपूर्जघनेफला' इति पाठन्तरम् ॥ ३. 'पिचुमर्दश्च' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'अगुरु, शिंशपा' इति नामद्वयम् '·गुरु क्लीबे शिंशपायां जोङ्गके कथुनि त्रिषु' इति रुद्रः। अगुरुसारा शिंशपा इत्येकमेव नामेति क्षी० स्वा० महे० च। अत्र रुद्र भा० दी० 'अगुरु क्लीबं जोङ्गकशिंशपयोर्वाच्यवल्लघुनि (मेदि० पृ० १४१ श्लो० १४१) इति रान्तवर्गे मेदिन्युक्तेः—अगुरुस्त्वगुरौ लघौ शिंशपायां—' (अने० सं० ३।५२०) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेश्च विरोधेऽपि क्षीकिरयोः पिच्छलशिंशपा'शब्दयोर्मध्ये क्लीबस्य 'अगुरु' शब्दस्य भा० दी० मतेऽङ्गीकारेण 'भेदाख्यानाय—' (१।१।४) इति ग्रन्थकारप्रतिज्ञाविरोध इत्यवधेयम् ॥

—१ शिरीषस्तु कपीतनः ।
भण्डिलोऽप्यर२थ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥
३ एतस्य कलिका गन्धफली स्या४दथ केसरे ।
[1]बकुलो ५ वञ्जुलोऽशोके ६ समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥
७ चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ।
८ जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥
९ श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका ।
जयो—

१ शिरीषः, कपीतनः, भण्डिलः (+ भण्डिरः भण्डीलः, भण्डी = भण्डिन् । ३ पु), 'सिरस' के ३ नाम हैं ॥

२ चाम्पेयः, चम्पकः, हेमपुष्पकः (३ पु) 'चम्पा' के ३ नाम हैं ॥

३ गन्धफली (स्त्री), 'चम्पाकी कली' का १ नाम है ॥

४ केसरः (+ केशरः), बकुलः(+ वकुलः । २ पु), 'मौलसरी'के २ नाम हैं॥

५ वञ्जुलः, अशोकः (२ पु), 'अशोक' के २ नाम हैं ॥

६ करकः, दाडिमः (+ दाडिम्बः, दालिमः, डालिमः । २), 'अनार' के २ नाम हैं ॥

७ चाम्पेयः, केसरः, नागकेसरः, काञ्चनाह्वयः (+ 'सोनेके वाचक सब नाम' । ४ पु), 'नागचम्पा पुष्पवृक्ष' के ४ नाम हैं ॥

८ जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका (५ स्त्री), 'जाही, अरणी या गनियार' के ५ नाम हैं ॥

९ श्रीपर्णम् (न), अग्निमन्थः, कणिका, गणिकारिका (२ स्त्री), जयः (शेष पु), भा० दी० 'जयपर्ण' के ५ नाम हैं । ('जया······१० नाम 'अरणी' के हैं, यह क्षी० स्वा० का मत है[2]') ॥

---

१. 'वकुलो वञ्जुलोऽशोके' इति पाठान्तरम् ॥

२. एतन्मते 'जयादि वैजयन्तिका' वधि स्त्रीलिङ्गशब्दानुक्त्या मध्ये क्लीब'श्रीपर्ण' शब्दस्य पुंलिङ्ग 'अग्निमन्थ' शब्दस्य च कथनान्तरं स्त्रीलिङ्गस्य 'कणिका'दिशब्दद्वयस्य ततश्च भूयोऽपि पुंलिङ्ग 'जय'शब्दस्योक्तत्वेन लिङ्गसाङ्कर्यात् 'भेदाख्यानाय—(१।१।४)' इत्यादिग्रन्थकारप्रतिज्ञाभङ्गापत्तिवारणाय भानुजीदीक्षितः पञ्च नामानि पृथक्चकार । क्षीरस्वामी तु वनौषधिवर्गे

—१ ऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥
२ एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले ।
३ कृष्णपाकफलाविग्नसुषेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥
४ कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्य५थ सिन्दुके ।
[1]सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ॥ ६८ ॥

---

१ कुटजः, शक्रः, वत्सकः (३ पु), गिरिमल्लिका (स्त्री) 'कौरैया' के ४ नाम हैं ॥

२ कलिङ्गम् (+ पु स्त्री) इन्द्रयवम्[2] (+ पु), भद्रयवम्[3] (+ पु । ३ न), 'इन्द्रयव' के ३ नाम हैं ॥

३ कृष्णपाकफलः, अविघ्नः (+ आविघ्नः), सुषेणः, करमर्दकः (४ पु), 'करौंदा, करवन' के ४ नाम हैं ।

४ कालस्कन्धः, तमालः, तापिच्छः (+ तापिञ्छः, तापिच्छः । ३ पु), 'सूर्ती' के ३ नाम हैं ॥

५ सिन्दुकः (+ सिन्धुकः), सिन्दुवारः, इन्द्रसुरसः (+ इन्द्रसुरिसः । ३ पु) निर्गुण्डी (+ निर्गुण्ठी), इन्द्राणिका (२ स्त्री) 'सिंधुआर' के ५ नाम हैं ॥

क्लिष्टसाङ्कर्यदोषस्यानादृतत्वेन दशानामपि नाम्नामेकपर्यायतामाह, तत्र प्रमापकवचनानि चोपन्यस्तानि । तथा—

यदिन्दुः—'अग्निमन्थोऽग्निमथनस्तर्कार्यरणिको जयः ।
अरणिः कणिका सैव तपनो वैजयन्तिकः' ॥ १ ॥ इति ॥

चन्द्रनन्दनश्चाह—
'अग्निमन्थोऽग्निमथनस्तर्कारी वैजयन्तिका ।
वह्निमन्थोऽरणिः केतुर्जयः पावकमन्थनः ॥
तर्कारी वैजयन्ती च वह्निनिर्मन्थनी जया ॥' इति च ।

अत एव–'अग्निमन्थो जयः स स्याच्छ्रीपर्णी गणिकारिका ।
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका' ॥ १ ॥
इति वचनसंगतिः' इत्यवधेयम् ॥

१. 'सिन्दुवारेन्द्रसुरिसौ' इति पाठान्तरम् ॥

२-३. इन्द्रयवं कुटजफलम् , भद्रयवं कुटजबीजम् । यदाह—
फलानि तस्येन्द्रयवं बीजं भद्रयवास्तथा' इति क्षी० स्वा० ॥

१ वेणी [1]खरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ।
२ श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी ३ [2]तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥
[3]भूपदी शीतभीरुश्च ४ सैवास्फोटा वनोद्भवा ।
५ शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥
६ सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्य ७ थ मागधी ।
गणिका यूथिकाऽम्बष्ठा ८ सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥
९ अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।

---

१ वेणी, खरा, गरी (+खरागरी, गरा, अगरी, गरागरी । ३ स्त्री), देवताडः (+देवतालः), जीमूतः (२ पु), 'देवताल' अर्थात् 'बन्दाकी, एक तरहके गुजराती वृक्ष' के ५ नाम हैं ॥

२ श्रीहस्तिनी, भूरुण्डी (२ स्त्री), 'एक तरह के शाक-विशेष' के २ नाम हैं। ('इसके पत्ते हाथीके कान-जैसे बड़े २ होते हैं') ॥

३ तृणशून्यम् (+तृणशूल्यम् । न), मल्लिका, भूपदी, शीतभीरुः (+शतभीरुः । स्त्री), 'छोटी बेला' के ४ नाम हैं ॥

४ आस्फोटा (+आस्फोता । स्त्री), 'जङ्गली बेला' का १ नाम है ॥

५ शेफालिका (+शीफालिका), सुवहा, निर्गुण्डी, नीलिका, (४ स्त्री), 'काली नेवारी' के ४ नाम हैं ॥

६ श्वेतसुरसा, भूतवेशी (२ स्त्री) 'सफेद फूलवाली नेवारी' के २ नाम हैं ॥

७ मागधी, गणिका, यूथिका, अम्बष्ठा (४ स्त्री), 'जूही' के ४ नाम हैं ॥

८ हेमपुष्पिका (स्त्री), 'पीले फलवाली जूही' का १ नाम है ॥

९ अतिमुक्तः, पुण्ड्रकः (+मण्डकः । २ पु), वासन्ती, माधवी, लता, (+माधवीलता । ३ स्त्री), 'वसन्त ऋतुमें फूलनेवाले कुन्द-विशेष, या माधवी' के ४ नाम हैं। ('अतिमुक्तः, पुण्ड्रकः' ये दो 'मल्लिकाके भेद हैं' यह भी किसी २ का मत है') ॥

---

१. 'खरागरी, गरागरी' इति पाठान्तरे ॥ २. 'तृणशूल्यम्' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'भूपदी शतभीरुश्च सैवास्फोता वनोद्भवा' इति पाठान्तरम् ॥

१ सुमना मालती जातिः २ सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥
३ माध्यं कुन्दं ४ रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः ।
५ सहा कुमारी तरणि ६ रम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥
७ तत्र शोणे कुरबक ८ स्तत्र पीते कुरण्टकः ।
९ [1]नीली झिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥
१० [2]सैरेयकस्तु झिण्टी स्यात्—

१ सुमनाः (= सुमनस् । + सुमना = सुमना), मालती, जातिः (३ स्त्री), 'चमेली' के ३ नाम हैं ॥

२ सप्तला, नवमालिका (+ नवमल्लिका । २ स्त्री), 'बसन्ती नेवारी' के २ नाम हैं ॥

३ माध्यम् , कुन्दम् (पु । + २ पु न), 'कुन्द' के २ नाम हैं ॥

४ रक्तकः, बन्धूकः (+ बन्धुकः), बन्धुजीवकः (३ पु), 'दुपहरिया-नामक पुष्पवृक्ष' के ३ नाम हैं ॥

५ सहा, कुमारी, तरणिः (३ स्त्री), 'घीकुआर' के ३ नाम हैं ॥

६ अम्लानः (पु), महासहा (स्त्री), 'कटसरैया' के २ नाम हैं। ('यह काँटेदार होती है') ॥

७ कुरबकः (+ कुरवकः, कुरुब्रकः, कुरुबकः । पु), 'लाल फूलवाली कटसरैया' का १ नाम है ॥

८ कुरण्टकः (+ कुरण्डकः, कुरुण्डकः । पु), 'पीले फूलवाली कटसरैया' का १ नाम है ॥

९ बाणा (+ वाणा । पु स्त्री), दासी (स्त्री), आर्तगलः । (+ अम्लगलः । पु), 'काली कटसरैया' के ३ नाम हैं ॥

१० [3]सैरेयकः (+ सैरीयकः । पु), झिण्टी (स्त्री), 'कटसरैया' के २ नाम हैं ॥

१. 'नीला झिण्टीद्वयोर्बाणा' इति पाठान्तरम् । अत्र सामान्यतः झिण्टया विवरणमनुक्त्वा विशेषनीलादेर्भेदकथनस्य सकलसरणिविरुद्धत्वात्पूर्वं 'सैरेयकस्तु ...... रुणे' इत्यस्य ततश्च 'नीली झिण्टी ... सा' इत्यस्य पाठस्यौचित्यं प्रतिभातीत्यवधेयम् ॥

२. 'सैरीयकस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सैरीयकः सहचरः सैरेयश्च सहाचरः ॥
पीतो रक्तोऽथ नीलश्च कुसुमैस्तं विभावयेत् ॥ १ ॥

—१ तस्मिन्कुरबकोऽरुणे।
२ पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः॥ ७५॥
३ ओड्रपुष्पं[1] जपापुष्पं ४ वज्रपुष्पं तिलस्य यत्।
५ प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः॥ ७६॥
करवीरे ६ करीरे तु क्रकरग्रन्थिलावुभौ।
७ उन्मत्तः कितवो धूर्तो[2] धत्तूरः कनकाह्वयः॥ ७७॥
मातुलो मदनश्चा ८ स्य फले मातुलपुत्रकः।
९ फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके॥ ७८॥
१० समीरणो [3]मरुबकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः।

---

१ कुरबकः (+ कुरवकः। पु), 'लाल कटसरैया' का १ नाम है॥

२ कुरण्टकः (कुरुण्टकः। पु), सहचरी (स्त्री पु), 'पीली कटसरैया' के २ नाम हैं॥

३ ओड्रपुष्पम्, जपापुष्पम् (+ जवापुष्पम्। २ न), 'ओढ़उल, गुड़हल' के २ नाम हैं।

४ वज्रपुष्पम् (न), 'तिलके फूल' का १ नाम है॥

५ प्रतिहासः (+ प्रतीहासः), शतप्रासः, चण्डातः, हयमारकः, करवीरः (५ पु), 'कनइल, कनेर पुष्प-वृक्ष' के ५ नाम हैं॥

६ करीरः, क्रकरः, ग्रन्थिलः (३ पु), 'करील' के ३ नाम हैं। (इनमें पत्ता नहीं होता है[4])॥

७ उन्मत्तः, कितवः धूर्तः, धत्तूरः, (+ धुस्तूरः धुस्तुरः, धूस्तूरः, धुतूरः), कनकाह्वयः (स्वर्णके वाचक सब शब्द), मातुलः, मदनः (७ पु), 'धतूरे' के ७ नाम हैं॥

८ मातुलपुत्रकः (पु), 'धतूरेके फल' का १ नाम है॥

९ फलपूरः, बीजपूरः, रुचकः, मातुलुङ्गकः (४ पु); 'बिजौरा नीबू' के ४ नाम हैं। ('फलपूरः, बीजपूरः' ये दो नाम उक्तार्थक तथा 'रुचकः, मातुलुङ्गकः' ये दो नाम 'मातुलुङ्गक' के हैं, यह भा० दी० का मत है')॥

पीतः कुरण्टको ज्ञेयो रक्तः कुरबकः स्मृतः।
नीलः आर्तगलो दासी बाण ओदनपाक्यपि'॥ २॥ इत्युक्तेरित्यवधेयम्॥

१. 'जवापुष्पम्' इति पाठान्तरम्॥

२. 'धत्तूरः काञ्चनाह्वयः' इति पाठान्तरम्॥ ३. 'मरुवकः' इति पाठान्तरम्॥

४. तथा च वचनम्—'पत्रं नैव यदा करीरविटपे……' इति॥

जम्बीरोऽप्य १ थ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ ॥ ७९ ॥
२ सितेऽर्जकोऽत्र ३ पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ।
४ [1]अर्काह्ववसुकाऽऽस्फोटगणरूपविकीरणाः ॥ ८० ॥
मन्दारश्चार्कपर्णो ५ ऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ ।
६ शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो [2]बुको वसुः ॥ ८१ ॥
७ वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ।
८ वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥
जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ।

(+जम्भीरः । ५ पु), 'मरुवा' के ५ नाम हैं ॥

१ पर्णासः, कठिञ्जरः, कुठेरकः (३ पु), 'पर्णास, या बबई' के ३ नाम हैं ॥

२ अर्जकः (पु), 'सफेद बबई' का १ नाम है ॥

३ पाठी (= पाठिन्), चित्रकः, वह्निसंज्ञकः (अग्निके वाचक सब नाम । ३ पु), 'चीता' के ३ नाम हैं ॥

४ अर्काह्वः (सूर्यके वाचक सब नाम), वसुकः (+वसूकः), आस्फोटः (+आस्फोतः), गणरूपः, विकीरणः (+विकिरणः), मन्दारः, अर्कपर्णः (७ पु), 'एकवन, आक, मन्दार' के ७ नाम हैं ॥

५ अलर्कः, प्रतापसः (२ पु), 'सफेद फूलवाले एकवन' के २ नाम हैं ।

६ [3]शिवमल्ली (= शिवमल्लिन्), पाशुपतः, एकाष्ठीलः, बुकः (+बुक्कः), वसुः (५ पु), 'गुम्मा' के ५ नाम हैं ॥

७ वन्दा, वृक्षादनी, वृक्षरुहा (+वृक्षरोहा), जीवन्तिका (+जीवन्ती । ४ स्त्री), 'बन्दा, बाँदा' के ४ नाम हैं ॥

८ वत्सादनी, छिन्नरुहा, गुडूची (+गुडुची), तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका (+जीवन्ती), सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी (९ स्त्री), 'गिलोय, गुड़ुच' के ९ नाम हैं ॥

---

१. 'अर्काह्ववसुकास्फोतगणरूपविकीरणाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'बुक्को वसुः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'बुकं बिल्वं सधत्तूरं सुमना पाटला तथा । पद्ममुत्पलमोसूर्यमष्टौ पुष्पाणि शङ्करे' ॥१॥ इत्युक्तत्वाच्छिवप्रिया मल्ली 'शिवमल्ली' इति नामेत्यवधेयम् ॥

१ मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रुवा ॥ ८३ ॥
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।
२ पाठाऽम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥
एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ।
३ कटुः [1]कटम्भराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥
मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादिनी ।
४ [2]आत्मगुप्ताजहाऽव्यण्डा कण्डुरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥
ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ।
५ [3]चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शंबरी वृषा ॥ ८७ ॥
प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी [4]रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ।

---

१ मूर्वा (+ मूर्वी), देवी, मधुरसा, मोरटा, तेजनी, स्रुवा (+ स्रवा) मधूलिका, मधुश्रेणी, गोकर्णी, पीलुपर्णी (१० स्त्री) 'मूर्वा' अर्थात् 'चिनार, चुरनहार, धनुषके लिये उपयोगी लताविशेष' के १० नाम हैं ॥

२ पाठा, अम्बष्ठा, विद्धकर्णी (+ अविद्धकर्णी), स्थापनी, श्रेयसी, रसा, एकाष्ठीला, पापचेली, प्राचीना, वनतिक्तिका (१० स्त्री) 'पाठा या पाढ़र' के १० नाम हैं ।

३ कटुः, कटम्भरा (+ कटंवरा, कटम्बरा), अशोकरोहिणी (+ अशोकः, रोहिणी), कटुरोहिणी, मत्स्यपित्ता, कृष्णभेदी (+ कृष्णभेदा), चक्राङ्गी, शकुलादनी (८ स्त्री), 'कुटकी' के ८ नाम हैं ॥

४ आत्मगुप्ता (+ स्वयंगुप्ता), अजहा (क्षी० स्वा०, महे० । + जहा भा० दी०), अव्यण्डा, कण्डुरा (+ कण्डूरा), प्रावृषायणी, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बिः, कपिकच्छुः (+ कपिकच्छूः) मर्कटी (९ स्त्री), 'केवाँच' के ९ नाम हैं ॥

५ चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, द्रवन्ती, शंबरी (+ शम्बरी), वृषा, प्रत्यक्श्रेणी, सुतश्रेणी, रण्डा (+ चण्डा), मूषिकपर्णी (+ मूषिकाह्वया । १० स्त्री) 'मूसाकर्णी' के १० नाम हैं ॥

---

१. कटम्भ(टंव राशोकरोहिणी' इति पाठान्तरम् ॥
२. 'आत्मगुप्ताजहाऽव्यण्डा' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'चित्रोपचित्रा······शम्बरी वृषा' इति पाठान्तरम् । अत्र वृषभ्यां द्रवन्तीभ्रमाद् ग्रन्थकारः 'उपचित्रा'माह इति क्षी० स्वा० ॥ ४. 'चण्डा' इति पाठान्तरम् ॥

१ अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥
प्रत्यक्पर्णी[1] केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ।
२ [2]हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥
अङ्गारवल्ली बालेयशाकबर्बरवर्धकाः ।
३ मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा [3]कालमेषिका ॥ ९० ॥
मण्डूकपर्णी [4]भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ।
४ यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥
रोदनी कच्छुराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।
५ पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी [5]चित्रपर्ण्यङ्घ्रिवल्लिका ॥ ९२ ॥

---

१ अपामार्गः, शैखरिकः (+ शिखरी), धामार्गवः (+ अधामार्गवः), मयूरकः (४ पु), प्रत्यक्पर्णी (+ प्रत्यक्पुष्पी), केशपर्णी (+ कीशपर्णी), किणिही, खरमञ्जरी (४ स्त्री), 'चिचिढ़ा' के ८ नाम हैं ॥

२ हञ्जिका (+ फञ्जिका), ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी (+ भृगुजा), ब्राह्मणयष्टिका, अङ्गारवल्ली (६ स्त्री), बालेयशाकः, बर्बरः, वर्धकः (३ पु), 'ब्रह्मनेटी, भारङ्गी' के ९ नाम हैं ॥

३ मञ्जिष्ठा, विकसा (+ विकषा), जिङ्गी, समङ्गा, कालमेषिका (+ कालमेशिका), मण्डूकपर्णी, भण्डीरी (+ मण्डीरी), भण्डी, योजनवल्ली (+ योजनपर्णी । ९ स्त्री), 'मजीठ' के ९ नाम हैं ॥

४ यासः, यवासः, दुःस्पर्शः, धन्वयासः (+ धनुर्यासः), कुनाशकः (५ पु), रोदनी (+ चोदनी), कच्छुरा, अनन्ता, समुद्रान्ता, दुरालभा (+ दुरालम्भा । ५ स्त्री), 'जवासा' के १० नाम हैं ॥

५ पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अङ्घ्रिवल्लिका (+ अङ्घ्रिपर्णिका मुकु०),

---

१. 'कोशपर्णी' इति पाठान्तरम् । २. 'फञ्जिका' इति मुकुटसंमतं पाठान्तरम् ॥
३. 'कालमेशिका' इति पाठान्तरम् । ४. मण्डीरी भण्डी योजनपर्ण्यपि' इति पाठान्तरम् ॥
५. 'चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका' इति पाठान्तरम् ॥

क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी [1]कलशिर्धावनिर्गुहा ।
१ [2]निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥
प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।
२ नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥
रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी ।
३ अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥
कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफल्यपि ।
४ कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥
[3]उषणा पिप्पली शौण्डी कोलाऽ५थ करिपिप्पली ।
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी [4]वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥

क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी (+ सिंहपुच्छकः, पु), कलशिः (+ कलशी), धावनिः (+ धावनी), गुहा (९ स्त्री), 'पिठिवन' के ९ नाम हैं ॥

१ निदिग्धिका, स्पृशी, व्याघ्री, बृहती, कण्टकारिका (+ कण्टकारी), प्रचोदनी, कुली, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा, राष्ट्रिका (१० स्त्री), 'भटकटैया, रेंगनी' के १० नाम हैं ॥

२ नीली, काला, क्लीतकिका, ग्रामीणा, मधुपर्णिका (+ मधुपर्णी), रञ्जनी (+ रजनी), श्रीफली, तुत्था, द्रोणी (+ तूणी), दोला (+ मेला), नीलिनी (११ स्त्री), 'नील' के ११ नाम हैं ॥

३ अवल्गुजः (पु), सोमराजी, सुवल्लिः, सोमवल्लिका (+ सोमवल्ली), कालमेषी (+ कालमेषी), कृष्णफला, बाकुची (+ वागुची, सुकु०), पूतिफली (६ स्त्री), 'बाकुची, बकुची' के ८ नाम हैं ॥

४ कृष्णा, उपकुल्या, वैदेही, मागधी, चपला, कणा, उषणा (+ ऊषणा), पिप्पली (+ पिप्पलिः), शौण्डी, कोला (१० स्त्री), 'पीपरि' के १० नाम हैं ॥

५ करिपिप्पली (+ करिपिप्पलिः), कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी (४ स्त्री), वशिरः (+ वसिरः । पु), 'गजपीपरि' के ५ नाम हैं ॥

१. 'कलशी धावनी गुहा' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'बृहती तु निदिग्धिका' इति भागुरिवाक्यादत्र ग्रन्थकृद्भ्रान्तः, ययोऽस्मयोर्महान् भेद' इति क्षी० स्वा० ॥

३. 'ऊषणा पिप्पली' इति पाठान्तरम् ॥ ४. 'वसिरः पुमान्' इति पाठान्तरम् ॥

१ [1]चव्यं तु चविका २ काकचिञ्चीगुञ्जे तु कृष्णला।
३ पलङ्कषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥
गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि।
४ विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ॥ ९९ ॥
शृङ्गी [2]महौषधं चा ५ थ क्षीरावी दुग्धिका समे।
६ शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी [3]वरी ॥१००॥
ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी।
अहेरु—

१ चव्यम् (न। +स्त्री), चविका (स्त्री। +न, पु,) 'चाभ, चव्य' के २ नाम हैं। ('ये दो नाम भी पूर्वार्थक हैं, यह भी किसी २ का मत है[4]') ॥

२ काकचिञ्ची (+काकचिञ्चिः, काकचिञ्चा), गुञ्जा, कृष्णला (+रक्तिका। ३ स्त्री), 'गुंजा, लाल घुंघुची, करेजनी' के ३ नाम हैं॥

३ पलङ्कषा, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा (३ स्त्री), स्वादुकण्टकः, गोकण्टकः, गोक्षुरकः, वनशृङ्गाटः (४ पु), 'गोखरू' के ७ नाम हैं॥

४ विश्वा, विषा, प्रतिविषा, अतिविषा, उपविषा, अरुणा, शृङ्गी (७ स्त्री), महौषधम् (न), 'अतीस' के ८ नाम हैं॥

५ क्षीरावी, दुग्धिका (२ स्त्री), 'दुधिया घास' के २ नाम हैं॥

६ शतमूली, बहुसुता, अभीरुः, इन्दीवरी, वरी (+वरा), ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्री, नारायणी, शतावरी, अहेरुः (१० स्त्री), 'शतावर' के १० नाम हैं॥

१. 'चव्यं तु चविकं काकचिञ्चागुञ्जे तु कृष्णला' इति पाठभेदः। चन्द्रनन्दनस्तु सामान्येनाह, करिपिप्पल्या एव पर्यायतामाहेत्यर्थस्तथा हि—

'चव्या कोलाऽथ चविका श्रेयसी गजपिप्पली।
च्यवना कोलवल्ली तु चव्यं कुञ्जरपिप्पली' ॥ १ ॥ इति

एतन्मते स्वन्तस्य पूर्वान्वयित्वप्रसक्त्या 'चव्यं च' इति पाठः समीचीन इत्यवधेयम्॥

२. 'महौषधं' तु विषं नातिविषा। अर्थे तु हि महौषधं (विषं) शुण्ठी लशुनं चेति विषा(षं)शब्दं बुद्ध्वा भ्रान्तोऽयम्' इति क्षी० स्वा० ॥

३. 'वरा' इति पाठान्तरम्। ४. 'चव्यं च' इति पठतां मतेनेदमित्यवधेयम्॥

—१ रथ [1]पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥

दार्वी पचम्पचा दारु हरिद्रा पर्जनीत्यपि ।

२ वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥

३ शुक्ला हैमवती ४ वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका ।

वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

५ [2]आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्ताऽपराजिता ।

६ इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

७ शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः ।

[3]मिश्रेयाऽप्य ८ थ सीहुण्डो वज्रः स्नुक्स्त्रीस्नुही गुडा ॥१०५॥

---

१ पीतद्रुः, कालीयकः (+ कालेयकः), हरिद्रुः (३ पु) दार्वी, पचम्पचा (+ पचम्पचा) दारुहरिद्रा, पर्जनी (४ स्त्री), 'दारुहल्दी' के ७ नाम हैं ॥

२ वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका (५ स्त्री), 'घुड़बच या बच' के ५ नाम हैं ॥

३ हैमवती (स्त्री), 'खुरासानी बच' का १ नाम है ॥

४ वैद्यमाता (= वैद्यमातृ), सिंही, वाशिका (+ वासिका । ३ स्त्री), वृषः, अटरूषः (+ अटरुषः), सिंहास्यः, वासकः, वाजिदन्तकः (५ पु), 'अडूसा, वासक' के ८ नाम हैं ॥

५ आस्फोटा (+ आस्फोता), गिरिकर्णी, विष्णुक्रान्ता, अपराजिता (४ स्त्री) 'अपराजिता' के ४ नाम हैं ॥

६ इक्षुगन्धा (स्त्री), काण्डेक्षुः, कोकिलाक्षः, इक्षुरः, क्षुरः, (४ पु), 'तालमखाना' के ५ नाम हैं ॥

७ शालेयः, शीतशिवः (२ पु), छत्रा, मधुरिका, मिसिः, (+ मिसी, मिशिः, मिशी), मिश्रेया (+ मिश्रेयः, पु । ४ स्त्री), 'सोआ या वनसौंफ' के ६ नाम हैं ॥

८ सीहुण्डः (+ सिहुण्डः, शीहुण्डः), वज्रः (+ वज्रद्रुः । २ पु), स्नुक् (= स्नुह्), स्नुही (+ स्नुहा) गुडा, समन्तदुग्धा (४ स्त्री) 'सेंहुड़' के

---

१. 'पीतद्रुकालेयकहरिद्रवः' इति पाठान्तरम् ॥　　२. 'अस्फोता' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'मिश्रेयोऽप्यथ सीहुण्डो वज्रद्रुः स्नुक् स्नुही गुडा' इति पाठान्तरम् ॥

समन्तदुग्धा१ऽथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला।
तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम्॥ १०६॥
२ [1]बला वाट्यालका ३ घण्टारवा तु शणपुष्पिका।
४ मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च॥ १०७॥
५ सर्वानुभूतिः [2]सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत्।
त्रिभण्डी [3]रोचनी ६ श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका॥ १०८॥
काला मसूरविदलाऽर्द्धचन्द्रा कालमेषिका।
७ मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका॥ १०९॥

१ नाम हैं॥

१ वेल्लम् (न), अमोघा (+ मोघा), चित्रतण्डुला (२ स्त्री), तण्डुलः (+ तन्तुकः, मुकु०), कृमिघ्नः (+ कृमिघ्नी, स्त्री। २ पु) विडङ्गम् (पु न), 'वायविडङ्ग' के ६ नाम हैं॥

२ बलः (+ बला) वाट्यालका (+ वाट्यालकः, । २ स्त्री), 'बरियारा' (औषधविशेष) के २ नाम हैं।

३ घण्टारवा, शणपुष्पिका (२ स्त्री), 'सन, सनई' के २ नाम हैं॥

४ मृद्वीका, गोस्तनी (+ गोस्तना), द्राक्षा, स्वाद्वी, मधुरसा (५ स्त्री) 'दाख, मुनक्का' के ५ नाम हैं॥

५ सर्वानुभूतिः, सरला (+ सरणा, सरवा) त्रिपुटा (त्रिपुटी, त्रसा) त्रिवृता, त्रिवृत्, त्रिभण्डी, रोचनी (+ रेचनी। ७ स्त्री), 'सफेद निशोथ' के ७ नाम हैं॥

६ श्यामा, पालिन्दी (+ पालिन्धी), सुषेणिका, काला, मसूरविदला, अर्द्धचन्द्रा, कालमेषिका (७ स्त्री) 'काला निशोथ' के ७ नाम हैं॥

७ मधुकम्, क्लीतकम्, यष्टिमधुकम् (+ यष्टीमधुकम्। ३ न) मधुयष्टिका (स्त्री), 'मुलहठी, जेठीमधु' के ४ नाम हैं॥

१. 'बला वाट्यालको घण्टारवा' इति पाठान्तरम्॥ २. 'सरणा' इति पाठान्तरम्॥
३. 'रेचनी' इति पाठान्तरम्॥

१ विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा [1]क्रोष्ट्री च या सिता ।
२ अन्या क्षीरविदारी [2]स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥
३ लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ।
४ खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥

१ विदारी, क्षीरशुक्ला, इक्षुगन्धा, क्रोष्ट्री (४ स्त्री), भा० दी० मतसे 'कृष्ण भूमिकूष्माण्ड' के और महे० मतसे 'शुक्ल भूमिकूष्माण्ड' के ४ नाम हैं ॥

२ क्षीरविदारी, महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका (+ ऋष्यगन्धिका । ३ स्त्री), भा० दी० मतसे 'शुक्ल भूमिकूष्माण्ड' के और महे० मतसे 'कृष्ण भूमिकूष्माण्ड' [3]के ३ नाम हैं ।

३ लाङ्गली, शारदी, तोयपिप्पली, शकुलादनी (४ स्त्री), 'जलपीपरि' के ४ नाम हैं ॥

४ खराश्वा, कारवी (२ स्त्री), दीप्यः, मयूरः, लोचमस्तकः (+ लोचमर्कटः । ३ पु), 'अजमोदा' के ५ नाम हैं ॥

१. 'क्रोष्ट्री तु या सिता' इति 'याऽसिता' इति च पाठान्तरे ॥

२. 'स्यान्महाश्वेतर्ष्यगन्धिका' इति पाठान्तरम् ॥

३. या असिता = कृष्णा इतिच्छेदं कृत्वा 'विदारी,…' ४ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य, अन्या सिता = शुक्ला 'क्षीरविदारी,…' ३ शुक्लभूकूष्माण्डस्य' इत्युक्त्वा—'या सिता = शुक्ला 'विदारी,…' ४ 'शुक्लभूकूष्माण्डस्य' तथा 'अन्या या असिता = कृष्णा 'क्षीरविदारी,…' ३ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य' इति मुकुटोक्तं चिन्त्यमिति भा० दी० । क्षी० स्वा० तु 'विदारी…' ३ 'कृष्णभूकूष्माण्डं प्राग्देशेषु विख्यातम्', ततः 'क्रोष्ट्री तु या सिता' इति पाठमुररीकृत्य 'या सिता=शुक्ला सा 'क्रोष्ट्री' इत्युक्त्वा अन्या या असिता = कृष्णा 'क्षीरविदारी,…' ३ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य' इत्येवं विभागत्रयं कृतम् । तत्रेदमवधेयम्—'क्षीरमिव शुक्ले'ति स्वयं प्रदर्शितस्य 'क्षीरशुक्ला' शब्दविग्रहस्य, 'क्रोष्ट्री शृगालिकाक्षीरविदारीलाङ्गलीषु च' (मेदि० पृ० १३४ श्लो० २०) इति मेदिन्युक्तेः 'क्रोष्ट्री क्षीरविदारिका' (अने० संग्र० २।४०६) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेश्च विरोधात् मुकुटोक्तिरेव समीचीना । अत्र च क्षी० स्वा० सम्मतः 'क्रोष्ट्री तु याऽसिता' इति पाठः भा० दी० सम्मतः 'याऽसिता' इति च्छेदश्च समीचीनः प्रतिभाति । एवं सति 'विदारी,…' ३ 'शुक्लभूकूष्माण्डस्य', 'क्रोष्ट्री…' ४ 'कृष्णभूकूष्माण्डस्य' इत्यापातम् । अधिकन्त्वन्यत्र द्रष्टव्यम् ॥

१ गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।
२ योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ ३ वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ ११२ ॥
४ कदली वारणबुसा रम्भा मोचांऽशुमत्फला ।
काष्ठीला ५ मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥
६ वार्ताकी हिङ्गुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ।
७ नाकुली [1]सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥
नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ।

---

१ गोपी (+ गोपा), श्यामा, शारिवा (+ सारिवा), अनन्ता (+ अनन्तमूला), उत्पलशारिवा (५ स्त्री) 'शारिवा, ग्वार' के ५ नाम हैं ॥

२ योग्यम् (न), ऋद्धिः, सिद्धिः, लक्ष्मीः (३ स्त्री), 'सिद्धिनामक औषध-विशेष' के ४ नाम हैं ॥

३ वृद्धिः (स्त्री), पूर्वोक्त (योग्यम्, ऋद्धिः, सिद्धिः, लक्ष्मीः) चार शब्द 'वृद्धिनामक औषध-विशेष' के ५ नाम हैं । ('किसीके मतमें 'योग्यम्,··· वृद्धिः' पाँचों शब्द एक ही पर्याय हैं') ॥

४ कदली (+ कदला, स्त्री, कदलः, पु), वारणबुसा (+ वारणवुसा), रम्भा, मोचा, अंशुमत्फला (+ भानुफला), काष्ठीला (६ स्त्री), 'केला' के ६ नाम हैं ॥

५ मुद्गपर्णी, काकमुद्गा, सहा (३ स्त्री), 'मूंगपर्णी, मुंगौनी, वनमूंग' के ३ नाम हैं ॥

६ वार्ताकी (+ वार्ताकुः, वार्ता, वार्ताकः), हिङ्गुली, सिंही, भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी (+ दुष्प्रधर्षिणी । ५ स्त्री), 'वनभंटा' के ५ नाम हैं ॥

७ नाकुली, सुरसा, रास्ना, सुगन्धा (+ नागसुगन्धा), [2]गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजङ्गाक्षी, छत्राकी, सुवहा (९ स्त्री) 'रास्ना, रासना' के ९ नाम हैं ॥

---

१. 'सुरसा नागसुगन्धा' इति पाठान्तरम् ॥

२. वैद्यास्तु 'नाकुलीगन्धनाकुल्यो'र्भेदमुररीकुर्वन्ति । तथथा—
'नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा भोगगन्धिका । सैव सर्पसुगन्धेति···' इति ।
'अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली ।
सर्पाक्षी नकुलेष्टा च छत्राकी विषमर्दिनी' ॥ १ ॥ इति चेति ॥

१ विदारिगन्धांऽशुमती [1]सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥
२ तुण्डिकेरी समुद्रान्ता [2]कार्पासी बदरेति च ।
३ भारद्वाजी तु सा वन्या ४ शृङ्गी तु [3]ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥
५ गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ।
६ धामार्गवो घोषकः स्याद् ७ महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥
८ [4]ज्योत्स्नी पटोलिका जाली ९ नादेयी भूमिजम्बुका ।
१० स्याल्लाङ्गलिक्यग्निशिखा–

---

१ विदारिगन्धा (+ विदारीगन्धा), अंशुमती, सालपर्णी (+ शालपर्णी), स्थिरा, ध्रुवा (५ स्त्री), **'सरिवन'** के ५ नाम हैं ॥

२ तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, कार्पासी (+ कर्पासी), बदरा (+ वदरा । ४ स्त्री), **'कपास'** के ४ नाम हैं ॥

३ भारद्वाजी (+ भद्रा । स्त्री), **'बनकपास या नर्मा'** का १ नाम है ॥

४ शृङ्गी (स्त्री), ऋषभः (+ वृषभः), वृषः (२ पु), **काकरासिंगी'** के ३ नाम हैं ॥

५ गाङ्गेरुकी, नागबला, झषा, ह्रस्वगवेधुका (४ स्त्री), **'गँगेरन'** के ४ नाम हैं ॥

६ धामार्गवः, घोषकः (२ पु), **'सफेद फूलवाली तरोई'** के २ नाम हैं ॥

७ महाजाली (स्त्री), **'पीले फूलवाली तरोई'** का १ नाम है ॥

८ ज्योत्स्नी (+ ज्यौत्स्नी, जोत्स्नी), पटोलिका, जाली (३ स्त्री), **'चिचिण्डानामक तरकारी'** के ३ नाम हैं ॥

९ नादेयी, भूमिजम्बुका (२ स्त्री), **'भुंइ जामुन'** के २ नाम हैं ॥

१० लाङ्गलिकी, अग्निशिखा (+ अग्निमुखा, अग्निज्वाला । २ स्त्री), **'करिहारी'** के २ नाम हैं ॥

---

१. 'शालपर्णी' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कर्पासी वदरेति च' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'वृषभो वृषः' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'ज्यौत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका' इति पाठान्तरम् । अत्र 'नादेयी भूमिजम्बुके'त्युक्तत्वाऽपि भ्रान्त्या पुनरत्रोक्तेति क्षी० स्वा० ॥

—१ काकाङ्गी काकनासिका ॥ ११८ ॥
२ गोधापदी तु सुवहा ३ मुसली तालमूलिका ।
४ अजश्रृङ्गी विषाणी स्यात् ५ [1]गोजिह्वादार्विके समे ॥ ११९ ॥
६ ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यप्य ७ थ द्विजा ।
हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥
८ [2]एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।
वालुकं चा ९ थ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरू ॥ १२१ ॥
१० [3]बालं ह्रीबेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।

---

१ काकाङ्गी (+काकजङ्घा), काकनासिका (२ स्त्री), 'कौआठोंठी' के २ नाम हैं ॥

२ गोधापदी (+हंसपदी), सुवहा (२ स्त्री), 'लजालू' के २ नाम हैं ॥

३ मुसली, तालमूलिका (२ स्त्री) 'मुसलीकन्द' के २ नाम हैं ॥

४ अजश्रृङ्गी, विषाणी (२ स्त्री), 'मेढासींगी' के २ नाम हैं ॥

५ गोजिह्वा, दार्विका (+दर्विका। २ स्त्री), 'गोभी' के २ नाम हैं ॥

६ ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागवल्ली (३ स्त्री), 'नागबेल, पान' के ३ नाम हैं ॥

७ द्विजा, हरेणुः, रेणुका, कौन्ती, कपिला, भस्मगन्धिनी (+भस्मगन्धा, भस्मगर्भा। ६ स्त्री), रेणुकाबीज' के ६ नाम हैं ॥

८ एलावालुकम् (+एलवालुकम्), ऐलेयम्, सुगन्धि (=सुगन्धिन्) हरिवालुकम्, वालुकम् (५ न), 'एलुआ' के ५ नाम हैं। (यह सीतलचीनी की तरह होता है और इसमें कूठ–सा गन्ध होता है) ॥

९ पालङ्की (स्त्री), मुकुन्दः, कुन्दः (+कुन्दुः), कुन्दुरुः (+कुन्दरः। ३ पु), 'पालक' के ४ नाम हैं ॥

१० बालम् (+वालम्। +न पु), ह्रीबेरम् (+ह्रीवेरम्), बर्हिष्ठम्, उदीच्यम्, केशाम्बुनाम (=केशाम्बुनामन्। 'केश और जलके पर्यायवाचक सब शब्द'। ५ न), नेत्रबाला' के ५ नाम हैं ॥

---

१. 'गोजिह्वादर्विके समे' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'एलवा(वा)लुकमैलवम्' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'वालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

१ कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥
शैलेयं २ तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।
गन्धिनी ३ गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥
महेरणा कुन्दुरुकी सल्लकी [1]ह्लादिनीति च ।
४ अग्निज्वालासुभिक्षे तु [2]धातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥
५ पृथ्वीका [3]चन्द्रवालैला निष्कुटिर्बहुला ६ ऽथ सा ।
सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः ॥ १२५ ॥
७ व्याधिः कुष्ठं [4]पारिभाव्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम् ।

---

१ कालानुसार्यम्, वृद्धम्, अश्मपुष्पम्, शीतशिवम्, शैलेयम् (५ न), 'सिलाजीत' के ५ नाम हैं ॥

२ तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, गन्धिनी (५ स्त्री), 'मुरा, ममोरफली' के ५ नाम हैं ॥

३ गजभक्ष्या (+ गजभक्षा), सुवहा (+ सुस्रवा), सुरभी (+ सुरभिः); रसा (+ सुरभीरसा), महेरणा (+ महेरुणा), कुन्दुरुकी, सल्लकी (+ शल्लकी, सिल्लकी), ह्लादिनी (+ ह्लादा । ८ स्त्री), 'सलई' के ८ नाम हैं ॥

४ अग्निज्वाला, सुभिक्षा, धातकी (+ धातुकी), धातुपुष्पिका (+ धातुपुष्पिका । ४ स्त्री), 'धव' के ४ नाम हैं ॥

५ पृथ्वीका, चन्द्रबाला (+ चन्द्रवाला), एला, निष्कुटिः (+ निष्कुटी), बहुला (५ स्त्री), 'बड़ी इलायची' के ५ नाम हैं ॥

६ उपकुञ्चिका, तुत्था, कोरङ्गी, त्रिपुटा, त्रुटिः (+ त्रुटी । ५ स्त्री), 'छोटी इलायची' के ५ नाम हैं ॥

७ व्याधिः (पु), कुष्ठम्, पारिभाव्यम् (+ पारिभव्यम्), वाप्यम् (व्याप्यम्, आप्यम्), पाकलम्, उत्पलम्, (५ न), 'कूठ' (औषधिविशेष) के ६ नाम हैं ॥

---

१. 'ह्लादिनीति च' इति पाठान्तरम् ॥ २. धातुकी 'धातुपुष्पिका' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'चन्द्रवालेका' इत्यसमीचीनः पाठः । क्षी० स्वा० मा० दी० व्याख्यानोक्तस्य चन्द्रबालेवेति विग्रहस्यैवौचित्यात् ॥

४ 'पारिभव्यं व्याप्यं पाकलमुत्पलम्' इति पाठान्तरम् ॥

१ शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्य २ थ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥
झटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ।
३ प्रपौण्डरीकं पौण्डर्यं ४ मथ तुन्नः कुबेरकः ॥ १२७ ॥
[1]कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षो ५ ऽथ राक्षसी ।
चण्डा धनहरी [2]क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥
६ [3]व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।
७ [4]सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ॥ १२९ ॥
८ धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हट्टविलासिनी ।

---

१ शङ्खिनी, चोरपुष्पी, केशिनी (३ स्त्री), 'शंखाहुलीनामक लताविशेष' के ३ नाम हैं ॥

२ वितुन्नकः (पु), झटामला (+ झटा, अमला), अज्झटा (+ अमलाज्झटा), ताली, शिवा, तामलकी (५ स्त्री), 'भुइँ आँवरा, छोटा आँवरा' के ६ नाम हैं ॥

३ प्रपौण्डरीकम्, पौण्डर्यम् (+ पुण्डर्यम् । २ न), 'पुण्डरीय वृक्ष' के २ नाम हैं ॥

४ तुन्नः, कुबेरकः, कुणिः (+ तुणिः), कच्छः, कान्तलकः, नन्दिवृक्षः (+ नान्दिवृक्षः । ६ पु), 'तून, तूणी' के ६ नाम हैं ॥

५ राक्षसी, चण्डा, धनहरी (३ स्त्री), क्षेमः, दुष्पत्रः (+ दुष्पुत्रः), गणहासकः (+ गणः, हासकः । ३ पु), 'चोरानामक गन्धद्रव्य' के ६ नाम हैं ॥

६ व्याडायुधम् (+ व्यालायुधम्), व्याघ्रनखम्, करजम्, चक्रकारकम् (४ न), 'व्याघ्रनखनामक गन्धद्रव्य, बघनखा' के ४ नाम हैं ॥

७ सुषिरा (+ शुषिरा), विद्रुमलता, कपोताङ्घ्रिः, नटी, नली (५ स्त्री), भा० दी० मतसे 'मालकाँगनी' के ५ नाम हैं ॥

८ धमनी, अञ्जनकेशी, हनुः, हट्टविलासिनी (४ स्त्री), भा० दी० मतसे 'अञ्जनकेशी' के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'तुणिः कच्छः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'क्षेमदुष्पुत्रगणहासकाः' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'व्यालायुधम्' इति पाठान्तरम् ॥ ४ 'शुषिरा' इति पाठान्तरम् ॥

१ शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नख २ मथाढकी ॥ १३० ॥
काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे ।
३ कुटन्नटं [1]दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥
प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च ।
४ ग्रन्थिपर्णं [2]शुकं बर्हं पुष्पं स्थौणेयकुक्कुरे ॥ १३२ ॥
५ मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ।

---

१ शुक्तिः (स्त्री), शङ्खः, खुरः (२ पु), कोलदलम् , नखम् (+ नखी २ न), भा० दी० मतसे 'नखनामक गन्धद्रव्य' के ५ नाम हैं। (महे० मतसे 'सुषिरा……' ७ नाम 'मालकाङ्गनी' के और 'हनुः……' ७ नाम 'नखनामक गन्धद्रव्य' के हैं) ॥

२ आढकी, काक्षी, मृत्स्ना (+ मृत्सा), तुवरिका (+ तूवरिका । ४ स्त्री), मृत्तालकम् (+ मृतालकम्), सुराष्ट्रजम् (२ न), 'रहर, अरहर' (तूवर) के ६ नाम हैं ॥

३ कुटन्नटम् (+ पु न), दाशपुरम् (+ दशपुरम् , दशपूरम्), वानेयम् (+ वन्यम्) परिपेलवम् , प्लवम् , गोपुरम् , गोनर्दम् , कैवर्तीमुस्तकम् (+ कैवर्तिमुस्तकम् , कैवर्तमुस्तकम् । ८ न), 'छोटा नागरमोथा, कैवर्ती-मुस्तक, जलमोथा' के ८ नाम हैं ॥

४ ग्रन्थिपर्णम् , शुकम् , बर्हम् (+ बर्हिः । + शुकबर्हम् क्षी० स्वा०), पुष्पम् (+ बर्हपुष्पम्), स्थौणेयम् , कुक्कुरम् (६ न) 'कुकरौन्दा या गठिवन' के ६ नाम हैं ॥

५ [3]मरुन्माला, पिशुना, स्पृक्का (+ पृक्का), देवी, लता, लघुः, समुद्रा-

---

१. 'दशपुरम्' इति 'दाशपूरम्' इति च पाठान्तरे ॥

२. 'शुकं बर्हपुष्पम् , शुकबर्हपुष्पम् , शुकं बर्हिपुष्पम्' इति पाठान्तराणि ॥

३. ये तु—'स्पृक्का तु ब्राह्मणी देवी मरुन्माला लता लघुः ।
समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिका मरुत् ॥ १ ॥
मुनिर्माल्यवती माला मोहना कुटिला मता' ।
इति वाचस्पत्युक्त्याऽत्रापि 'मरुत्, माला' इति पृथङ् नामनी'त्याहुस्तच्चिन्त्यम् । तथा सति स्वन्तरत्वेन मरुच्छब्दस्यासंग्रहापत्तेरित्यवधेयम्' ॥

समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि ॥ १३३ ॥
१ तपस्विनी जटामांसी जटिला [1]लोमशा मिसी ।
२ त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥
३ कर्चूरको द्राविडकः [2]काल्पको वेधमुख्यकः ।
४ ओषध्यो जातिमात्रे स्यु ५ रजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥
६ शाकाख्यं [3]पत्रपुष्पादि ७ तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ।

न्ता, वधूः (+ बधूः), कोटिवर्षा, लङ्कोपिका (१० स्त्री), 'असवरग, स्पृक्का, अस्परक एक तरहका शाक-विशेष' के १० नाम हैं ॥

१ तपस्विनी, जटामांसी, जटिला, लोमशा, मिसी (+ मिसिः, मिषिः, मिषी, मसिः, मषिः, मषी, मसी, आमिषी । ५ स्त्री), 'जटामांसी' के ५ नाम हैं ॥

२ त्वक्पत्रम् (+ त्वक् = त्वच् , पत्रम्), उत्कटम् , भृङ्गम् , त्वचम् , चोचम् , वराङ्गकम् (६ न), 'दालचीनी के ६ नाम हैं ॥

३ कर्चूरकः (+ कर्बूरकः), द्राविडकः, काल्पकः (काल्यकः), वेधमुख्यकः (४ पु), 'कचूर' के ४ नाम हैं ॥

४ ओषधी (स्त्री), 'जातिमात्र' अर्थात् 'व्रीहि' (धान्य), यव, चना आदि' के अर्थ में प्रयुक्त होता है ॥

५ औषधम् (न) 'जातिसे भिन्न' अर्थात् 'दवा आदि' के अर्थमें प्रयुक्त होता है ॥

६ शाकम् (न), 'साग' अर्थात् 'जिससे फल, फूल आदि ('जड़, शाखा, कन्द···') का बोध हो, उसका १ नाम है । जड़ १, पत्ता २, अङ्कुर ३, अग्रभाग ४, फल ५, शाखा ६, अधिरूढ ७, छाल ८, फूल ९ और कवक १० ये [4]दस प्रकारके 'शाक' होते हैं ॥

७ तण्डुलीयः, अल्पमारिषः (२ पु), 'चौराईके शाक' के २ नाम हैं ॥

१. 'लोमशा मिषी, लोमशा मिशी' इति पाठान्तरे ॥
२. 'काल्यको वेधमुख्यकः' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'पत्रमूलादि' इति पाठान्तरम् ॥
४. तदुक्तम्—
'मूलपत्रकरीराग्रफलकाण्डाधिरूढकम् ।
त्वक्पुष्पं कवकं चैव 'शाकं दशविधं' स्मृतम्' ॥ १ ॥ इति ॥

१ विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥
२ [1]स्यादृक्षगन्धा छगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः ।
जुङ्गो ३ ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥
४ पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।
५ हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥ १३८ ॥
६ [2]तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ।

---

१ विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, फलिनी, शक्रपुष्पिका (५ स्त्री), 'अग्निशिखा, इन्द्रपुष्पी' के ५ नाम हैं ॥

२ ऋक्षगन्धा (+ वृक्षगन्धा, ऋष्यगन्धा), छगलान्त्री (+ छगलाङ्घ्री, छगलाण्डी, छगलाङ्घ्री, छगला, अन्त्री,), आवेगी (३ स्त्री), वृद्धदारकः, जुङ्गः (२ पु), 'विधारा' के ५ नाम हैं ॥

३ ब्राह्मी, मत्स्याक्षी, वयस्था, सोमवल्लरी (+ सोमवल्लरिः । ४ स्त्री), 'ब्राह्मी' के ४ नाम हैं ॥

४ पटुपर्णी, हैमवती, स्वर्णक्षीरी (+ स्वर्णवती), हिमावती (४ स्त्री), 'मकोय' के ४ नाम हैं ॥

५ हयपुच्छी, काम्बोजी, माषपर्णी, महासहा (४ स्त्री), 'माषपर्णी वनउड़द' के ४ नाम हैं ॥

६ तुण्डिकेरी (+ तुण्डकेरी, तुण्डिकेशी), रक्तफला, बिम्बिका, पीलुपर्णी (४ स्त्री), 'कुनुरुन, कुन्दरु' के ४ नाम हैं ॥

तत्र १ मूलम्—मूलकविषादेः, २ पत्रम्—वास्तूकनिम्बादेः, करीरम्—वंशाङ्कुरादेः, ४ अग्रम्—वेत्रादेः, ५ फलम्—कूष्माण्डवार्ताक्यादेः ६ काण्डम्—कमलादेर्नालम् , ७ अधिरूढकम्—'तालास्थिमज्जेति, गौडः' 'क्षेत्रोद्ध(द्धृ) तस्य फलमूलादेः सेकान्नवोद्भिन्नाङ्कुरा अधिरूढम्' इति क्षी० स्वा०; ८ त्वक्—मातुलुङ्गादेः, ९ पुष्पम्—तिन्तिडीकोविदारादेः, कवकम्—छत्राकम् इति । केचित्तु—
'पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा । शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥१॥
इत्युक्तेः षड्विधं शाकमामनन्ति । तत्र संस्वेदजं भूमिच्छत्रम् , अन्ये प्रागुक्ता बोध्याः ॥

१. 'स्याद् वृक्षगन्धा, स्यादृष्यगन्धा' इति तत्रैव 'छागकाण्ड्यावेगी' इति च पाठान्तराणि ॥
२. 'तुण्डकेरी' इति 'तुण्डकेशी' इति च पाठान्तरे ॥

१ ¹बर्बरा कबरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका ॥ १३९ ॥
२ एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा।
३ चाङ्गेरी चुक्रिका ²दन्तशठाऽम्बष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥
४ सहस्रवेधी ³चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि।
५ नमस्कारी ⁴गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥
६ जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया ⁵मधुस्रवा।
७ कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गह्रस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

---

१ बर्बरा (+ बर्बरा, वर्वरा), कबरी (+ कबरी), तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका (५ स्त्री), 'पवई, बवईनामक शाकविशेष' के ५ नाम हैं॥

२ एलापर्णी, सुवहा, रास्ना, युक्तरसा (४ स्त्री), एलापर्णी' के ४ नाम हैं॥

३ चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा, अम्बष्ठा, अम्ललोणिका (+ अम्ललोणिका, अम्लकोलिका। ५ स्त्री), 'नोनी, चूक' (शाकविशेष) के ५ नाम हैं॥

४ सहस्रवेधी (= सहस्रवेधिन्), चुक्रः, अम्लवेतसः (+ अम्लवेतसः), शतवेधी (= शतवेधिन्। ४ पु), 'अमलबेंत' के ४ नाम हैं। ('चाङ्गेरी, आदि ९ शब्द एक पर्याय हैं, यह भी किसी-किसी का मत है)॥

५ नमस्कारी, गण्डकारी (+ गण्डकाली), समङ्गा, खदिरा (+ खदिरी। ४ स्त्री), 'लजालू, छुईमुई' के ४ नाम हैं॥

६ जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा (+ मधुः, स्रवा। ५ स्त्री), 'जीवन्ती' के ५ नाम हैं॥

७ कूर्चशीर्षः, मधुरकः, शृङ्गः, ह्रस्वाङ्गः, जीवकः (५ पु), 'जीवक' के ५ नाम हैं। ('जीवन्ती आदि १० शब्द एक पर्यायवाचक हैं, यह भी किसी-किसी का मत है')॥

---

१. 'बर्बरा कबरी इति पाठान्तरम्॥ २. 'दन्तशठाम्बष्ठाम्लकोणिका' इति पाठान्तरम्॥ ३. 'चुक्रोऽम्लवेतसः' इति पाठान्तरम्॥ ४. 'गण्डकाली समङ्गा खदिरीत्यपि' इति पाठान्तरम्॥ ५. 'मधुःस्रवा' इति पाठान्तरम्॥

१ किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तो २ ऽथ सप्तला ।
[1]विमला सातला भूरिफेना चर्मकषेत्यपि ॥ १४३ ॥
३ वायसोली स्वादुरसा वयस्था ४ ऽथ[2] मकूलकः ।
निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि ॥ १४४ ॥
५ अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा [3]यवानिका ।
६ मूले [4]पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥
७ अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।

---

१ किराततिक्तः (+ चिरातिक्तः, चिरतिक्तः, चिरातिक्तः, किरातः, कैरातः), भूनिम्बः, अनार्यतिक्तः (३ पु), 'चिरायता' के ३ नाम हैं ॥

२ सप्तला, विमला, सातला (+ शातला), भूरिफेना, चर्मकषा (५ स्त्री), 'सेहुड़, थूहर' के ५ नाम हैं ॥

३ वायसोली, स्वादुरसा, वयस्था (३ स्त्री), 'काकोली' के ३ नाम हैं ॥

४ मकूलकः (+ मुकूलकः), निकुम्भः (२ पु), दन्तिका (+ दन्तिका), प्रत्यक्श्रेणी, उदुम्बरपर्णी (+ उदुम्बरपर्णी, उडुम्बरपर्णी । ३ स्त्री), 'दन्तिनामक औषध' के ५ नाम हैं ॥

५ अजमोदा, उग्रगन्धा, ब्रह्मदर्भा, यवानिका (+ यमानिका । ४ स्त्री), 'अजमोदा अजवाइन' के ४ नाम हैं। ('यद्यपि 'यवानिका' को पहले कह चुके हैं, तथापि शाकभेदमें यहाँ पुनः कहते हैं') ॥

६ पुष्करम् , काश्मीरम्, पद्मपत्रम् (+ पद्मवर्णम् । ३ न), 'पुष्करमूल' के ३ नाम हैं ॥

७ अव्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्मचारिणी (५ स्त्री), 'पद्मचारिणी, स्थलकमलिनी' के ५ नाम हैं ॥

---

१. 'विमला शातला' इति पाठान्तरम् ॥ २. मुकूलकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'यमानिका' इति पाठान्तरम् , ४ अत्र 'यवानिका' पुनरुक्ताऽपि, शाकभेदात्पुनरुक्ता, यवानीति मत्वा ग्रन्थकृद् भ्रान्तो वा' इति क्षी० स्वा० ॥

४. 'पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि' अत्र 'पद्मवर्णे'त्यत्र 'पद्मपर्णे'ति लिपिभ्रान्त्या ग्रन्थकारः 'पद्मपत्रे'त्याह' इति क्षी० स्वा० ॥

१ [1]काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥
२ प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः ।
पद्माट [2]उरणाख्यश्च ३ पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥
४ लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरिते ५ ऽथ महौषधम् ।
लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥ १४८ ॥
६ पुनर्नवा तु शोथघ्नी ७ वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।

---

१ काम्पिल्यः (+काम्पिल्लः), कर्कशः, चन्द्रः, रक्ताङ्गः (४ पु), रोचनी (+रेचनी । स्त्री), 'कबीला' के ५ नाम हैं ॥

२ प्रपुन्नाडः (+प्रपुन्नालः, प्रपुनालः, प्रपुनाडः, प्रपुन्नडः), एडगजः (+एलगजः), दद्रुघ्नः (+दद्रूघ्नः, दद्रुहरः), चक्रमर्दकः, पद्माटः, उरणाख्यः ('उरण' अर्थात् मेषके वाचक सब नाम । +उरणाक्षः । ६ पु), 'चकवड़' के ६ नाम हैं ॥

३ पलाण्डुः, सुकन्दकः (२ पु), 'प्याज' के २ नाम हैं ॥

४ लतार्कः, दुद्रुमः (२ पु), 'हरे प्याज' के १ नाम हैं । ('धन्वन्तरि ने इन दोनों को पलाण्डु (प्याज) से अभिन्न[3] माना है') ॥

५ महौषधम्, लशुनम् (+लशूनम् । +पु । २ न), गृञ्जनः, अरिष्टः, महाकन्दः, रसोनकः (४ पु), 'लहसुन' के ६ नाम हैं । ('सुश्रुतकारने इन्हें भी पलाण्डु (प्याज) की जाति[4] मानी है') ॥

६ पुनर्नवा, शोथघ्नी (२ स्त्री) 'गदहपुर्ना' के २ नाम हैं ॥

७ वितुन्नम्, सुनिषण्णकम् (२ न), 'घिस खपरिया' के २ नाम हैं ॥

---

१. काम्पिल्लः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रेचनीत्यपि' इति पाठान्तरम्

२. 'उरणाक्ष' इति पाठान्तरम् ॥

३. तथा चोक्तं धन्वन्तरिणा—

'पलाण्डुर्य(र्य)वनेष्टश्च सुकन्दो मुखदूषकः ।
हरिणोऽन्यपलाण्डुस्तु लतार्को दुद्रुमश्च सः ॥ १ ॥ इति क्षी० स्वा० ॥

४. तदाह सुश्रुते—

'लशुनो दीर्घपत्रश्च पिच्छगन्धो महौषधम् । फरणश्च पलाण्डुश्च लवतकोऽपराजितः ॥ १ ॥
गृञ्जनं यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः । इति क्षी० स्वा० ॥

१ स्याद्वातकः [1]शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यपि ॥ १४९ ॥
२ पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।
३ वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥
४ विष्वक्सेनप्रिया [1]गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि ।
५ मार्कवो भृङ्गराजः स्यात् ६ काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥
७ शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ।
अवाक्पुष्पी कारवी च ८ [2]सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥
तस्यां कटम्भरा राजबला भद्रबलेत्यपि ।

---

१ वातकः, शीतलः (+ शीतकवातकः, । धन्व० २ पु), अपराजिता, शणपर्णी (+ सनपर्णी, असनपर्णी, आसनपर्णी । २ स्त्री), 'पटुआ, पटसन' के ४ नाम हैं ॥

२ पारावताङ्घ्रिः (+ पारावताङ्घ्री), कटभी, पण्या, ज्योतिष्मती (+ ज्योतिष्का), लता, (५ स्त्री), 'मालकांगनी' के ५ नाम हैं ॥

३ वार्षिकम् (न) त्रायमाणा, त्रायन्ती, बलभद्रिका (३ स्त्री), 'त्राय-माणा' के ४ नाम हैं ॥

४ विष्वक्सेनप्रिया, गृष्टिः (+ घृष्टिः) वाराही, बदरा (४ स्त्री), 'वाराही कन्द' के ४ नाम हैं ॥

५ मार्कवः, भृङ्गराजः (+ भृङ्गरजाः = भृङ्गरजस् ; भृङ्गरजः = भृङ्गरज । २ पु), 'भँगराज' के २ नाम हैं ॥

६ काकमाची (+ काचमाची) वायसी (२ स्त्री), 'मकोय, काकप्रिया' के २ नाम हैं ॥

७ शतपुष्पा, सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसिः (+ मिसी), अवाक्पुष्पी, कारवी (७ स्त्री), 'सौंफ' के ७ नाम हैं । ('अन्तवाले २ नाम 'ऊँधावली' के हैं, यह भी किसी किसी का मत है') ॥

८ सरणा (+ सरणी), प्रसारिणी, कटम्भरा (+ कटम्बरा), राजबला, भद्रबला, (५ स्त्री) 'आकाशबेल' (बंवर) के ५ नाम हैं ॥

---

१. शीतलोऽपराजिताशनपर्ण्यपि' इति पाठान्तरम् ॥
'घृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'सरणी' इति तु युक्तः पाठः' इति क्षी० स्वा० ॥

१ जनी जतूका [1]रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥
संस्पर्शा २ ऽथ शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ।
कर्चूरोऽपि पलाशो ३ ऽथ कारवेल्ल: [2]कठिल्लकः ॥ १५४ ॥
सुषवी चा ४ थ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः ।
५ कूष्माण्डकस्तु [3]कर्कारु ६ रुर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ॥ १५५ ॥
७ इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात् ८ तुम्ब्यलाबूरुभे समे ।

---

१ जनी (+जनिः), जतूका (+जतुका), रजनी (जननीः), जतुकृत् , चक्रवर्तिनी, संस्पर्शा (६ स्त्री) 'चकवत' के ६ नाम हैं ॥

२ शटी, गन्धमूली (+गन्धमूला), षड्ग्रन्थिका (३ स्त्री), कर्चूरः (+कर्बुरः, कर्षुरः), पलाशः (२ पु), 'आमाहल्दी' के ५ नाम हैं ॥

३ कारवेल्लः, कठिल्लक (+कटिल्लकः । २ पु), सुषवी (सुसवी, सुषावी । स्त्री), 'करैला' के ३ नाम हैं ॥

४ कुलकम् (न), पटोलः, तिक्तकः, पटुः (३ पु), 'परवल' के ४ नाम हैं ॥

५ कूष्माण्डकः (+कुष्माण्डकः, कूष्माण्डः, कुष्माण्डः), कर्कारुः (२ पु) 'कद्दीमा, तरकारीवाले कोहड़ा' के २ नाम हैं ॥

६ उर्वारुः (+ईर्वारुः, इर्वारुः, ईर्वालुः, एर्वारुः,), कर्कटी (+कर्कटिः । २ स्त्री), 'ककड़ी, कांकर' के २ नाम हैं ॥

७ इक्ष्वाकुः, कटुतुम्बी (२ स्त्री) 'तितलौकी, तीता कद्दू' के २ नाम हैं ॥

८ तुम्बी (+तुम्बिः, तुम्बा, तुम्बः), अलाबूः, (+आलाबूः, आलाबुः, अलाम्बुः, लाबुः, लाबूः, लाबुका । २ स्त्री), 'कद्दू, लौकी'[4] के २ नाम हैं ॥

---

१. 'जननी' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कटिल्लकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कर्कारुरेर्वारुः' इति 'कर्कारुरीर्वारुः' इति च पाठान्तरे । 'एर्वारुः' कटुचिर्भटी, 'उर्वारुकमिव बन्धनात्—' इति श्रुतेः 'उर्वारुकं स्वादुचिर्भटीमाहुः' इति क्षी० स्वा० ॥

४. तद्भेदानाह बृहस्पतिः—

'अलाबूः स्त्री पिण्डफला तुम्बिस्तुम्बी महाफला ।
तुम्बा तु वर्तुलाऽलाबूर्निम्बे तुम्बी तु लाबुका' ॥ १ ॥ इति ॥

१ चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा २ विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥
३ अर्शोघ्नः [1]सूरणः कन्दो ४ गण्डीरस्तु समष्ठिला ।
५ [2]कलम्ब्युपोदिकाऽस्त्री तु मूलकं हिलमोचिका ॥ १५७ ॥
[3]वास्तुकं शाकभेदाः स्यु ६ दूर्वा तु शतपर्विका ।
सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहाऽनन्ता ७ ऽथ सा सिता ॥ १५८ ॥
गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली [4]शकुलाक्षका ।

१ चित्रा, गवाक्षी, गोडुम्बा (३ स्त्री), 'जेठुई काँकर' के ३ नाम हैं ॥

२ विशाला, इन्द्रवारुणी (२ स्त्री), 'इनारुन' के २ नाम हैं ॥

३ अर्शोघ्नः, सूरणः (+ शूरणः), कन्दः (३ पु), 'ओल, सूरन' के ३ नाम हैं ॥

४ गण्डीरः (पु), समष्ठिला (स्त्री), 'गांडरनामक शाक-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ कलम्बी, उपोदिका (+ उपोदका, अपोदका), मूलकम्, (न पु), हिलमोचिका, वास्तुकम् (+ वास्तूकम् । न । शेष स्त्री), 'करमी या करेमुआँ, पोई, मूली या मुरई, हिलसाल और बथुआके साग' का क्रमशः १-१ नाम है । ('यहाँतक शाक-भेदका वर्णन है') ॥

६ दूर्वा, शतपर्विका, सहस्रवीर्या, भार्गवी, रुहा, अनन्ता (६ स्त्री), 'दूब' के ६ नाम हैं ॥

७ गोलोमी, शतवीर्या, गण्डाली, शकुलाक्षका (+ पु । ४ स्त्री), 'सफेद दूब' के ४ नाम हैं, यह भा० दी० का मत है । (प्रथम दो नाम उक्तार्थक और अन्तवाले दो नाम 'दूबके भेद-विशेष' के हैं, यह क्षी० स्वा० का मत है') ॥

---

१. 'शूरणः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कलम्ब्युपोदका' इति भा० दी० पाठः, 'कलम्ब्यपोदका' इति क्षी० स्वा० पाठः, मूलस्थस्तु महे० सम्मत इत्यवधेयम् ॥

३. 'वास्तूकम्' इति पाठान्तरम् । अत्र निर्णयसागरीय व्या० सु० पुस्तके 'वास्तुकम्' इति मूलपाठश्चिन्त्यस्तत्र 'उलूकादयश्च' (उ० सू० ४।४१ इति 'वास्तूक' शब्दस्य सिद्ध्युक्तेः, पुनर्ह्रस्वमध्यस्य 'वास्तुक' शब्दस्य प्रकारान्तरेण सिद्ध्युक्तेश्च स्वोक्तिविरोधात् ॥

४. 'शकुलाक्षकः' इति पाठान्तरम् ॥

१ कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥
२ स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा ३ चूडाला चक्रलोच्चटा ।
४ वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।
५ वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥
६ ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी ७ गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।
८ नडस्तु धमनः पोटगलो ९ ऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥
इक्षुगन्धा पोटगलः—

---

१ कुरुविन्दः, मेघनामा (= मेघनामन् । + मेघके वाचक सब नाम । २ पु), मुस्ता (स्त्री), मुस्तकम् (न पु), 'मोथा' के ४ नाम हैं ॥

२ भद्रमुस्तकः (पु । + भद्रम् , मुस्तकम् ; २ न), गुन्द्रा (स्त्री), 'नागरमोथा' के २ नाम हैं । ('धन्वन्तरिने 'गुन्द्रा और भद्रमुस्तक' में अभेद[1] माना है') ॥

३ चूडाला, चक्रला, उच्चटा (३ स्त्री), 'चूडाला, एक प्रकारके मोथा घास' के ३ नाम हैं ॥

४ वंशः, त्वक्सारः, कर्मारः, त्वचिसारः, तृणध्वजः, शतपर्वा (= शतपर्वन्), यवफलः, वेणुः, मस्करः, तेजनः (१० पु), 'बाँस' के १० नाम हैं ॥

५ कीचकः (पु), 'छिद्रमें हवाके प्रवेश करनेपर बजनेवाले बाँस' का १ नाम है ॥

६ ग्रन्थिः (पु), पर्व (= पर्वन्), परुः (= परुस् । + परु = परुः । २ स्त्री न), 'बाँस आदिके गाँठ या पोर' के ३ नाम हैं ॥

७ गुन्द्रः, तेजनकः, शरः (+ सरः । ३ पु), 'सरकण्डा, सरई' के ३ नाम हैं ॥

८ नडः (+ नलः), धमनः, पोटगलः (३ पु), 'नरसल, नरकट, नरई' के ३ नाम हैं ॥

९ काशः (+ कासः । पु न), इक्षुगन्धा (स्त्री), पोटगलः (पु), 'काशनामक तृण-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

---

१. धन्वन्तरिरभेदमाह—'मुस्तमम्बुधरो मेघो घनो राजकशेरुकः ।
भद्रमुस्तो वराहोऽब्दो गाङ्गेयः कुरुविन्दकः' ॥ १ ॥
इति क्षी० स्वा० ॥

—१ पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ।
२ रसाल इक्षु ३ स्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥
४ स्याद्वीरणं वीरतरं ५ मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।
अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥
लामज्जकं [1]लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।
६ नडादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाकप्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

---

१ बल्वजाः (पु नित्य ब० व० । + ए० व[2]) 'बगई' का १ नाम है । ('काशः,…' ४ नाम एकार्थक हैं, यह भी किसीका मत है') ॥

२ रसालः, इक्षुः (२ पु), 'ईख, गन्ना, ऊख' के २ नाम हैं ॥

३ पुण्ड्रः (+ पौण्ड्रः), कान्तारकः (२ पु), आदि ('आदि शब्दसे 'रसालः, कर्कटकः (२ पु)…का संग्रह है') ये 'ऊखके [3]भेद-विशेष' हैं ॥

४ वीरणम्, वीरतरम् (२ न), 'गाँडर घास' के २ नाम हैं । ('इसीके जड़को 'खश' कहते हैं') ॥

५ उशीरम् (न पु), अभयम्, नलदम्, सेव्यम्, अमृणालम् (+ मृणालम्), जलाशयम्, लामज्जकम्, लघुलयम् (+ लघु, लयम्) अवदाहम्, इष्टकापथम् (+ अवदाहेष्टम्, । ९ न) 'खश' के १० नाम हैं ॥

६ 'नड' आदि और 'गर्मुत्, श्यामाकः (+ श्यामकः । २ पु), अर्थात् क्रमशः 'एक तृण-विशेष और साँवा' और 'प्रमुख' शब्दसे नीवारः, कोद्रवः (२ पु), अर्थात् क्रमशः 'तेनी या तीनी और कोदो' ये 'तृणधान्य' हैं ॥

१. 'लघुलयमवदाहेष्टकापथे' इति। इष्टकापथेत्यत्र 'ग्रन्थकृत्तु सेव्यामृणामृणालयोर्नलदोशीरैकार्थत्वाद् भ्रान्तः' इति क्षी. स्वा. ॥ २. 'एको बल्वज' इति पातञ्जलमहाभाष्योक्तेरित्यवधेयम् ॥

३. इक्षुभेदा यथा— इक्षुः कर्कटको वंशः कान्तारो वेणुनिःसृतः ।
इक्षुरन्यः पौण्ड्रकश्च रसालः सुकुमारकः ॥ १ ॥
अन्यः करङ्कशालिः स्यादिक्षुयोनीक्षुबालिका ।
तथान्य इक्षुगन्धा स्यादिक्षुलः कोकिलाक्षकः' ॥ २ ॥ इति ॥

निघण्टौ त्वन्य एवेक्षुभेदा उक्तास्ते यथा—
पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः । कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षुः सूचिपत्रकः ॥ १ ॥
नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकः । इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥२॥ इति ॥

१ अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्र २ मथ कत्तृणम्।
पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥ १६६ ॥
३ छत्राऽतिच्छत्रपालघ्नौ ४ मालातृणकभूस्तृणे।
५ शष्पं बालतृणं ६ घासो यवसं ७ तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥
८ तृणानां संहतिस्तृण्या ९ नड्या तु नडसंहतिः।
१० तृणराजाह्वयस्तालो ११ नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥ १६८ ॥
१२ घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरो १३ ऽस्य तु।
फलमुद्वेगम्—

---

१ कुशम्(पु न), कुथः, दर्भः (२ पु), पवित्रम् (न), 'कुशा' के ४ नाम हैं॥

२ कत्तृणम् , पौरम् , सौगन्धिकम् , ध्यामम् , देवजग्धकम् , रौहिषम् (६ न), 'रोहिषनामक सुगन्धित घास' के ६ नाम हैं॥

३ छत्रा (स्त्री), अतिच्छत्रः, पालघ्नः (२ पु), 'पानीमें होनेवाले तृण–विशेष' के ६ नाम हैं।

४ मालातृणकम् , भूस्तृणकम् (२ न), 'वचके समान रूप तथा पानीमें होनेवाले तृण–विशेष' के २ नाम हैं। ('यह भा० दी० का मत है। महे० और क्षी० स्वा० के मतसे 'छत्रा,'''भूस्तृण' ५ शब्द एकार्थक हैं') ॥

५ शष्पम् (+ शस्यम्), बालतृणम् (२ न), नई और कोमल घास' के २ नाम हैं॥

६ घासः (पु), यवसम् (न), 'गवत' अर्थात् 'बैल, घोड़ा, आदि पशुओंके खाने योग्य भूसा-घास' के २ नाम हैं॥

७ तृणम् , अर्जुनम् (२ न), 'तृणमात्र' के २ नाम हैं॥

८ तृण्या (स्त्री), 'घासकी ढेरी' का १ नाम है॥

९ नड्या (स्त्री), 'नड–समूह' का १ नाम है॥

१० तृणराजः, तालः (+ तलः। २ पु), 'ताड़' के २ नाम हैं॥

११ नालिकेरः (+ नारिकेरः, नारिकेलः, नालिकेरः, नारीकेलः, ४ पु०; नारिकेलिः, नारीकेली; २ स्त्री), लाङ्गली (= लाङ्गलिन्। + लाङ्गली = लाङ्गली, स्त्री। २ पु), 'नारियल' के २ नाम हैं॥

१२ घोण्टा (स्त्री), पूगः, क्रमुकः, गुवाकः (+ गूवाकः), खपुरः (४ पु), 'सुपारी, कसैलीके पेड़' के ५ नाम हैं॥

१३ उद्वेगम् (न), 'सुपारीके फल' का १ नाम है।

—१ एते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥
खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ।
इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ सिंहादिवर्गः ।

२ सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।
३ 'कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः' (८)
पुण्डरीकः पञ्चनखचित्रकायमृगद्विषः' (९)
४ शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे ५ तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥
६ वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री [1]किरिः किटिः ।

१ हिन्तालः (पु) के सहित पूर्वोक्त तीन शब्द (नारिकेल, ताल, घोण्टा) और खर्जूरः (पु), केतकी, ताली, खर्जूरी (३ स्त्री) को तृणद्रुमः (पु) अर्थात् 'तृणद्रुम' कहते हैं ॥

इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ सिंहादिवर्गः ।

२ सिंहः, मृगेन्द्रः, पञ्चास्यः, हर्यक्षः, केसरी (= केसरिन् । + केशरी = केशरिन्), हरिः (६ पु), 'सिंह' के ६ नाम हैं ॥

३ [कण्ठीरवः मृगरिपुः, मृगदृष्टिः, मृगाशनः, पुण्डरीकः, पञ्चनखः, चित्रकायः, मृगद्विष् । ८ पु), 'सिंह' के ८ नाम हैं] ॥

४ शार्दूलः, द्वीपी (= द्वीपिन्), व्याघ्रः (३ पु), 'बाघ' के ३ नाम हैं ॥

५ तरक्षुः (+ तरक्षः) मृगादनः (२ पु) 'चिता या तेंदुआ बाघ' के २ नाम हैं ('मुकु०' मतसे 'वृक' अर्थात् 'हुँडार भेड़िया' ≈ ये २ नाम हैं') ॥

६ वराहः, सूकरः (+ शूकरः), घृष्टिः (+ गृष्टिः), कोलः, पोत्री (= पोत्रिन्), किरिः, (+ किरः) किटिः, दंष्ट्री (= दंष्ट्रिन्), घोणी (घोणिन्)

१. 'किरः, किटिः' इति पाठान्तरम् ॥

दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥
१ कपिप्लवङ्गप्लवगशाखामृगवलीमुखाः ।
मर्कटो वानरः कीशो वनौका २ अथ भल्लुके ॥ ३ ॥
[1]ऋक्षाच्छभल्लभल्लूका ३ गण्डके खड्गखड्गिनौ ।
४ [2]लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासरसैरिभाः ॥ ४ ॥
५ स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः ।
[3]शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः ॥ ५ ॥
६ ओतुर्विडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।
७ त्रयो गौधारगौधेरगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥

स्तब्धरोमा (=स्तब्धरोमन्), क्रोडः, भूदारः (१२ पु), 'सूअर' के १२ नाम हैं ॥

१ कपिः, प्लवङ्गः (+प्लवङ्गमः), प्लवगः, शाखामृगः, वलीमुखः (वली-मुखः, वलिमुखः) मर्कटः, वानरः, कीशः, वनौकाः (=वनौकस् । ९ पु), 'बन्दर' के ९ नाम हैं ॥

२ भल्लुकः, ऋक्षः, अच्छभल्लः (+अच्छः, भल्लः), भल्लूकः (+भालूकः, भालुकः, भाल्लूकः । ४ पु), 'भालू' के ४ नाम हैं ।

३ गण्डकः, खड्गः, खड्गी (=खड्गिन् । ३ पु) 'गैंड़ा' के ३ नाम हैं ॥

४ लुलायः (+लुलापः), महिषः, वाहद्विषन् (=वाहद्विषत् । +वाहद्विट्=वाहद्विष्), कासरः, सैरिभः (५ पु), 'भैंसा' के १२ नाम हैं ॥

५ शिवा (नि० स्त्री), भूरिमायः, गोमायुः, मृगधूर्तकः, शृगालः (+सृगालः), वञ्चकः (+वञ्चुकः), क्रोष्टा (=क्रोष्टु), फेरुः, फेरवः (+फेरण्डः), जम्बुकः (+जम्बूकः । ९ पु) 'स्यार, शृगाल' के १० नाम हैं ॥

६ ओतुः, विडालः (+बिडालः, बिलालः), मार्जारः, वृषदंशकः, आखुभुक् (=आखुभुज् । ५ पु), 'बिलाव' के ५ नाम हैं ॥

७ गौधारः, गौधेरः, गौधेयः (३ पु), 'गोहरा, चन्दनगोह' अर्थात् 'काले साँप से गोह में पैदा होनेवाला जीवविशेष' 'बिसखपरा' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'ऋक्षाच्छभल्लभालूका' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'लुलापो महिषः' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'सृगालो वञ्चकः क्रोष्टु' इति पाठान्तरम् ॥

१ श्वावित्तु शल्य २ स्तल्लोम्नि शलली शललं शलम् ।
३ वातप्रमीर्वातमृगः ४[1]कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥ ७ ॥
५ मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।
६ ऐणेयमेण्याश्चर्माद्य ७ मेणस्यैणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥
८ कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि ।
समूरुश्चेति ९ हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

१ श्वावित् (= श्वाविध्), शल्यः (२ पु), 'साही' के २ नाम हैं ॥

२ शलली (स्त्री), शललम् , शलम् (२ न), 'साही के काँटे' के ३ नाम हैं ॥

३ वातप्रमीः (+ स्त्री), वातमृगः (२ पु), 'बहुत तेज दौड़नेवाले मृग-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ कोकः, ईहामृगः, वृकः (३ पु), 'भेंड़िया, हुंडार' के ३ नाम हैं ॥

५ मृगः, कुरङ्गः, वातायुः (वानायुः; क्षी० स्वा०; वनायुः), हरिणः, अजिनयोनिः (५ पु), 'मृग, हरिण' के ५ नाम हैं ॥

६ ऐणेयम् (त्रि), 'मृगी के चमड़े, सींग आदि' का १ नाम है ॥

७ ऐणम् (त्रि), 'मृगके चमड़े सींग आदि' का १ नाम है ॥

८ कदली, कन्दली (२ स्त्री । क्षी० स्वा० मतसे कदली = कदलिन् , कन्दली = कन्दलिन् ; २ पु[2]), चीनः, चमूरुः, प्रियकः, समूरुः (४ पु), 'मृगविशेष' के ६ नाम हैं ॥

९ 'कदली, आदि ६ शब्द और आगे कहे जानेवाले 'कृष्णसार' आदिको अजिनयोनिः (पु) 'अजिनयोनि' कहते हैं । (इनके चमड़े का उपयोग होता है) ॥

१. 'कोक ईहामृगो वृकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. कदली हरिणान्तरे । रम्भायां वैजयन्त्यां च—' (अने० सं० ३।६७० इति, 'शिरोऽस्थनि कन्दलन्तु नवाङ्कुरे करध्वनौ ।
उपरागे मृगभेदे कलापे कन्दलीद्रुमे' ॥ १ ॥ (अने० सं० ३।६६८)
इति च त्रिस्वरकान्तवर्गे हेमचन्द्रोक्तेः,
कन्दलं त्रिषु कपालेऽप्युपरागे नवाङ्कुरे । कलध्वनौ कन्दली तु मृगपुष्पभेदयोः ॥ १ ॥
कदला कदली पृश्न्यां कदली कदली पुनः । रम्भावृक्षेऽथ कदली पताकामृगभेदयोः' ॥ २ ॥
(मे० श्लो० ६९—७१) इति कान्तवर्गे मेदिन्युक्तेश्च विरुद्धमेतत् ॥

१ '[1]कृष्णसाररुरुन्यङ्कुरङ्कुशम्बररौहिषाः ।
गोकर्णपृषतैणर्श्यरोहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥
२ गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः ।
३ इत्यादयो मृगेन्द्राद्याः गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥
४ 'अधोगन्ता तु खनको वृकः पुंध्वज उन्दुरः' (१०)
५ उन्दुरुर्मूषकोऽप्याखु ६ गिरिका बालमूषिका ।
७ [2]'छुछुन्दरी गन्धमुखी दीर्घतुण्डी दिवान्धिका' (११)

१ कृष्णसारः (+ कृष्णशारः), रुरुः, न्यङ्कुः, रङ्कुः, शम्बरः (+ संबरः, शंबरः), रौहिषः (+ रोहिषः), गोकर्णः, पृषतः, एणः, ऋश्यः (+ ऋष्यः), रोहितः (+ लोहितः), चमरः (१२ पु), ये १२ 'मृगके भेद' हैं ॥

२ गन्धर्वः (+ गन्धर्वः), शरभः, रामः, सृमरः, गवयः, शशः (६ पु), क्रमशः 'गन्धयुक्त मृगविशेष, लड़ीसरा या एक प्रकारका बन्दर-विशेष, सुन्दरजातीय मृग-विशेष, बहुत भागनेवाला मृग विशेष, नीलगाय या खरहा' का १—१ नाम है ॥

३ ये छ (पूर्वोक्त 'मृगेन्द्र' आदि) और वक्ष्यमाण (आगे कहे जानेवाले) 'गो, महिष' आदि पशुजातिः (स्त्री), 'पशुजाति' हैं अर्थात् इनकी पशुजाति में गणना होती है ॥

४ [अधोगन्ता (= अधोगन्तृ), खनकः, वृकः, पुंध्वजः, उन्दुरः (५ पु), 'चूहा, मूस' के ५ नाम हैं] ॥

५ उन्दुरुः, मूषकः (+ मुषकः), आखुः (३ पु), 'चूहा मूस' के ३ नाम हैं ॥

६ गिरिका, बालमूषिका (२ स्त्री) 'मुसरी छोटी चूहिया' के २ नाम हैं ॥

७ [छुछुन्दरी, गन्धमुखी, दीर्घतुण्डी, दिवान्धिका (४ स्त्री), 'छुछुन्दर' के ४ नाम हैं] ॥

---

१. कृष्णशाररुरुन्यङ्कुरङ्कुसंबररौहिषाः' इति पाठान्तरम् ॥
२. छुछुन्दरी'''दिवान्धिका' इत्यंशः क्षी० स्व० व्याख्यायां समुपलभ्यते ॥

१ सरटः कृकलासः स्यात् २ मुसली [1]गृहगोधिका ॥ १२ ॥
३ लूता स्त्री [2]तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः ।
४ [3]नीलङ्गुस्तु कृमिः ५ कर्णजलौकाः शतपद्युभे ॥ १३ ॥
६ वृश्चिकः शूककीटः स्या७दलिद्रुणौ तु वृश्चिके ।
८ [4]पारावतः कलरवः कपोतो९ऽथ शशादनः ॥ १४ ॥
पत्त्री श्येनः—

---

१ सरटः, कृकलासः (+ कृकलाशः, कृकुलासः । २ पु) 'गिरगिट' के २ नाम हैं ॥

२ मुसली (+मुशली), गृहगोधिका (+गृहगोलिका । २ स्त्री), 'बिछुतिया, छिपकिली' के २ नाम हैं ॥

३ लूता (स्त्री), तन्तुवायः (+तन्त्रवायः), ऊर्णनाभः, मर्कटकः (३ पु), 'मकड़ी' के ४ नाम हैं ॥

४ नीलङ्गुः (+नीलाङ्गुः), कृमिः (+क्रिमिः । २ पु), 'छोटे २ कीड़ों' के २ नाम हैं ॥

५ कर्णजलौकाः (= कर्णजलौकस् । +कर्णजलौका = कर्णजलौका), शतपदी (२ स्त्री), 'गोजर, कनखजुरा' के २ नाम हैं। ('यह वृश्चिकका भेद है') ॥

६ वृश्चिकः, शूककीटः (२ पु), 'ऊनी वस्त्रको काटनेवाले कीड़े' के २ नाम हैं ॥

७ अलिः (+आलिः, आली), द्रुणः (+द्रोणः), वृश्चिकः (३ पु), 'बिच्छू' के ३ नाम हैं ॥

८ पारावतः (+पारापतः), कलरवः, कपोतः (३ पु), 'कबूतर' के ३ नाम हैं। ('क्षी० स्वा० मतसे 'प्रथम नाम' 'घरेलू कबूतर' के और अन्य २ नाम 'जङ्गली कबूतर' के हैं') ॥

९ शशादनः, पत्त्री (=पत्त्रिन्), श्येनः (३ पु), 'बाज पक्षी' के ३ नाम हैं।

---

१. 'गृहगोलिका इति सभ्यः पाठ' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'तन्त्रवायोर्णनाभमर्कटकाः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'नीलाङ्गुस्तु क्रिमिः कर्णजलौका शतपद्युभे' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'पारापतः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ।
२ 'दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो निशाटनः' (१२)
३ व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः ४ खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥
५ लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्याद् ६ अथ चाषः किकीदिविः।
७ कलिङ्कभृङ्गधूम्याटा ८ अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥
दार्वाघाटो ९ अथ [1]सारङ्गः स्तोककश्चातकः समाः।
१० कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥
११ चटकः कलविङ्कः स्यात् १२ तस्य स्त्री चटका १३ तयोः।
पुमपत्ये चाटकैरः—

१ उलूकः, वायसारातिः, पेचकः (३ पु), 'उल्लू' के ३ नाम हैं ॥

२ [दिवान्धः, कौशिकः, घूकः, दिवाभीतः, निशाटनः (५ पु), 'उल्लू' के ५ नाम हैं] ॥

३ व्याघ्राटः, भरद्वाजः (२ पु), 'भर्दूल, भारद्वाज पक्षी' के २ नाम हैं ॥

४ खञ्जरीटः, खञ्जनः (२ पु), 'खँड़रिच पक्षी' के २ नाम हैं ॥

५ लोहपृष्ठः, कङ्कः (२ पु), 'सफेद चील' अर्थात् 'कंकहवा पक्षी, जिसके पंख को बाण में लगाते हैं, उसके' २ नाम हैं ॥

६ चाषः (+ चासः), किकीदिविः (+ किकीदीविः, किकिदिविः, किकिदिवः, किकीदिवीः, किकीदिवः, किकिः, दिवः । २ पु), 'चास (नीलकण्ठ) पक्षी' के २ नाम हैं ॥

७ कलिङ्कः, भृङ्गः, धूम्याटः (३ पु), 'भुचेङ्गा पक्षी' के ३ नाम हैं ॥

८ शतपत्रकः, दार्वाघाटः (२ पु), 'कठखोलवा, कठफोरवा पक्षी' के २ नाम हैं ॥

९ सारङ्गः (+ शारङ्गः), स्तोककः (+ सोककः), चातकः (३ पु) 'चातक पक्षी' के ३ नाम हैं ॥

१० कृकवाकुः, ताम्रचूडः, कुक्कुटः, चरणायुधः (४ पु), 'मुर्गा' के ४ नाम हैं ॥

११ चटकः, कलविङ्कः (२ पु), 'गवरा, चटक पक्षी' के २ नाम हैं। ('यह नर होता है') ॥

१२ चटका (स्त्री), 'गवरैया, चटका पक्षी' का १ नाम है। ('यह मादा होती है') ॥

१३ चाटकैरः (पु) 'गवरा और गवरैयाके पुत्र' का १ नाम है ॥

१. 'शारङ्गस्तोककश्चातकः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ स्त्र्यपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥
२ कर्करेटुः करेटुः स्यात् ३ कृकणक्रकरौ समौ ।
४ वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ १९ ॥
५ काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः ।
ध्वाङ्क्षात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि ॥ २० ॥
६ [1]'स एव च चिरञ्जीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः' (१३)
७ द्रोणकाकस्तु काकोलो ८दात्यूहः कालकण्ठकः ।
९ [2]आतायिचिल्लौ १०दाक्षाय्यगृध्रौ ११कीरशुकौ समौ ॥२१॥

१ चटका (स्त्री), 'गवरा और गवरैया की पुत्री' का १ नाम है ॥

२ कर्करेटुः (+ कर्कराटुः), करेटुः (+ करटुः । २ पु), 'अशुभ बोलनेवाले पक्षि-विशेष, या टिटिहिरी' के २ नाम हैं ॥

३ कृकणः, क्रकरः, (२ पु), ये २ 'अशुभ बोलनेवाली पक्षीके भेद-विशेष' हैं ॥

४ वनप्रियः, परभृतः, कोकिलः, पिकः, (४ पु), 'कोयल' के ४ नाम हैं ॥

५ काकः, करटः, अरिष्टः, बलिपुष्टः, सकृत्प्रजः, ध्वाङ्क्षः आत्मघोषः, परभृत्, बलिभुक् (= बलिभुज्), वायसः (१० पु), 'कौआ' के १० नाम हैं ॥

६ [चिरञ्जीवी (= चिरञ्जीविन्), एकदृष्टिः, मौकुलिः (३ पु), 'कौआ' के ३ नाम हैं] ॥

७ द्रोणकाकः (+ द्रवकाकः, वृद्धकाकः), काकोलः (२ पु), 'डोम-कौआ' के २ नाम हैं ॥

८ दात्यूहः (+ दात्यौहः), कालकण्ठकः (२ पु), जलकौआ, धूँए-सा रंगवाला कौआ' के २ नाम हैं ॥

९ आतायी (= आतायिन् । + आतापी = आतापिन्), चिल्लः (२ पु), 'चील' के २ नाम हैं ॥

१० दाक्षाय्यः, गृध्रः (+ गृद्धः । २ पु), 'गीध' के २ नाम हैं ॥

११ कीरः, शुकः (२ पु), 'तोता, सुग्गा' के २ नाम हैं ॥

१. 'स एव…मौकुलिः' इत्यंशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां वर्तते ॥

२. 'आतापिचिल्लौ' इति पाठान्तरम् ॥

१ क्रुङ् [1]क्रौञ्चोऽ २ थ बकः कह्वः ३ पुष्कराह्वस्तु सारसः ।
४ कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥ २२ ॥
५ कादम्बः कलहंसः स्या ६ दुत्क्रोशकुररौ समौ ।
७ हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः ॥ २३ ॥
८ राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः ।
९ [2]मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते १० धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४ ॥
११ [3]शरारिराटिराडिश्च—

१ क्रुङ् (= क्रुञ्च्), क्रौञ्चः (+ कुञ्चः । २ पु), 'क्रौञ्च, कराकुल पक्षी' के २ नाम हैं ॥

२ बकः, कह्वः (+ कङ्कः २ पु), 'बगुला' के २ नाम हैं ॥

३ पुष्कराह्वः ('कमलके पर्यायवाचक सब शब्द'), सारसः (२ पु), 'सारस' के २ नाम हैं ॥

४ कोकः (+ कुकः), चक्रः, चक्रवाकः, रथाङ्गः ('रथाङ्ग अर्थात् पहियेके वाचक सब शब्द' । ४ पु), 'चकवा' के ४ नाम हैं ।

५ कादम्बः, कलहंसः (२ पु), 'बत्तख पक्षी' के २ नाम हैं ॥

६ उत्क्रोशः, कुररः (२ पु), 'कुरर पक्षी' के २ नाम हैं ॥

७ हंसः, श्वेतगरुत्, चक्राङ्गः, मानसौकाः (= मानसौकस् । ४ पु), 'हंस' के ४ नाम हैं ॥

८ राजहंसः (पु), 'सफेद शरीर और लाल रंगके चोंच-पैरवाले हंस' का १ नाम है ॥

९ मल्लिकाक्षः (+ मल्लिकाख्यः । पु), 'सफेद शरीर और धूएँके समान धूमिल रंगके चोंच-पैरवाले हंस' का १ नाम है ॥

१० धार्तराष्ट्रः (पु), 'सफेद शरीर और काले रंगके चोंच-पैरवाले हंस' का १ नाम है ॥

११ शरारिः (+ शरातिः, शरालिः, शराली, शराटिः, शराडिः), आटिः (+ आतिः, आटी) आडिः (+ आडी । ३ स्त्री), 'आडी पक्षी' के ३ नाम हैं ॥

१. 'कुञ्चोऽथ बकः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'मलिनैर्मल्लिकाख्यास्ते' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'शरारिरातिराटिश्च' इति पाठान्तरम् ॥

—१ बलाका बिसकण्ठिका ।
२ हंसस्य योषिद्वरटा ३ सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २५ ॥
४ जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् ५ परोष्णी तैलपायिका ।
६ वर्वणा मक्षिका नीला ७ सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥
८ पतङ्गिका पुत्तिका स्याद् ९ दंशस्तु वनमक्षिका ।
१० दंशी तज्जातिरल्पा स्याद् ११ गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥

---

१ बलाका, बिसकण्ठिका (+ बिसकण्टिका, क्षी० स्वा० । २ स्त्री), 'बगुला-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ वरटा (+ वरला । स्त्री), 'हंसकी स्त्री' अर्थात् 'हंसिनी'का १ नाम है ॥

३ लक्ष्मणा (+ लक्षणा । स्त्री), 'सारसी' अर्थात् 'सारसकी स्त्री' का १ नाम है ॥

४ जतुका (+ जतूका), अजिनपत्रा (२ स्त्री), 'चमगादड़, बादुर' के २ नाम हैं ॥

५ परोष्णी (+ परोष्ठी), तैलपायिका (२ स्त्री), 'चपड़ानामक कीटविशेष तेलचटा' के २ नाम हैं ॥

६ वर्वणा (+ बर्वणा), मक्षिका (+ मक्षीका), नीला (३ स्त्री), 'नीले रंग की मक्खी' के ३ नाम हैं । (भा० दी० के मतसे प्रथम शब्द उक्तार्थक है और अन्तवाले दो शब्द विशेषण हैं') ॥

७ सरघा, मधुमक्षिका (२ स्त्री), 'मधुमक्खी' के २ नाम हैं ।

८ पतङ्गिका, पुत्तिका (२ स्त्री), 'एक तरहकी 'मधुमक्खी' के २ नाम हैं ॥

९ दंशः (पु), वनमक्षिका (स्त्री), 'दंश, डँस, बड़े मच्छड़' के २ नाम हैं ॥

१० दंशी (स्त्री), 'मस, छोटे मच्छड़' का १ नाम है ॥

११ गन्धोली (स्त्री), वरटा (+ वरटी । पु स्त्री) 'बर्रे, भिर्र, बिर्हिनी, गन्धयुक्त मक्खी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

---

१. यथैतेषां नामभेदपूर्वकं मधुवर्णमाह निमिः—

'माक्षिकं तैलवर्णं स्याद्घृतवर्णं तु पौत्तिकम् ।
भ्रामरन्तु भवेच्छुक्लं क्षौद्रं तु कपिलं भवेत्' ॥ १ ॥ इति ॥

१ भृङ्गारी[1]भीरुका चीरी झिल्लिका च समा इमाः।
२ समौ पतङ्गशलभौ ३ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥
४ मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः।
द्विरेफपुष्पलिड्भृङ्गषट्पदभ्रमरालयः ॥ २९ ॥
५ मयूरो बर्हिणो बर्हो नीलकण्ठो भुजङ्गभुक्।
शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥
६ केका वाणी मयूरस्य ७ समौ चन्द्रकमेचकौ।
८ शिखा चूडा ९ शिखण्डस्तु पिच्छबर्हे नपुंसके ॥ ३१ ॥

१ भृङ्गारी, झीरुका (+ झीरिका, झिरुका, झिरिका, झिरीका, चीरुका), चीरी, झिल्लिका (+ झिल्लीका, झिल्लुका, चिल्लिका, चिल्लका । ४ स्त्री) 'झींगुर' के ४ नाम हैं॥

२ पतङ्गः, शलभः (२ पु), 'फतिंगा, पतंग' के २ नाम हैं॥

३ खद्योतः, ज्योतिरिङ्गणः (२ पु), 'जुगनू' के २ नाम हैं॥

४ मधुव्रतः, मधुकरः, मधुलिट् (= मधुलिह्), मधुपः, अली (=अलिन्), द्विरेफः, पुष्पलिट् (= पुष्पलिह्), भृङ्गः, षट्पदः, भ्रमरः, अलिः (११ पु), 'भौंरा, भ्रमर' के ११ नाम हैं॥

५ मयूरः (+ मयुरः[2]), बर्हिणः, बर्ही (= बर्हिन्), नीलकण्ठः, भुजङ्गभुक् (= भुजङ्गभुज्), शिखावलः, शिखी (= शिखिन्), केकी (= केकिन्), मेघनादानुलासी (= मेघनादानुलासिन् । ९ पु), 'मोर' के ९ नाम हैं॥

६ केका (स्त्री), 'मोरकी बोली' का १ नाम है॥

७ चन्द्रकः, मेचकः[3] (२ पु)), 'मोरकी पूँछमें स्थित नेत्राकार चमकदार चिह्न' के २ नाम हैं॥

८ शिखा, चूडा (२ स्त्री), 'मोरके शिरकी कलँगी या मुकुट' के २ नाम हैं॥

९ शिखण्डः (पु), पिच्छम्, बर्हम् (२ न), 'मोरके पंख' के ३ नाम हैं॥

१. 'चीरुका' इति पाठान्तरम्॥

२. '—मयूरो मयुरो मतः' इति (श्लो० ५) शब्दभेदप्रकाशोक्तेः॥

३. 'बर्हिकण्ठसमं वर्णं मेचकं ब्रुवते बुधाः' इति कात्यः॥

१ खगे   विहङ्गविहगविहङ्गमविहायसः ।
शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥
[1]पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्त्ररथाण्डजाः ।
नगौकोवाजिविकिरविविष्किरपतत्रयः ॥ ३३ ॥
नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसङ्गमाः ।
२ तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥
तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवञ्जीवश्चकोरकः ।

---

१ खगः, विहङ्गः, विहगः, विहङ्गमः, विहायाः (= विहायस्), शकुन्तिः, पक्षी (= पक्षिन्), शकुनिः, शकुन्तः, शकुनः, द्विजः, पतत्री (= पतत्त्रिन्), पत्त्री (= पत्त्रिन्), पतगः, पतन् (= पतत्), पत्त्ररथः, अण्डजः, नगौकाः (= नगौकस्), वाजी (=वाजिन्), विकिरः, विः, विष्किरः, पतत्त्रिः, नीडोद्भवः, गरुत्मान् (= गरुत्मत्), पित्सन् (= पित्सत्), [2]नभसङ्गमः (२७ पु), 'पक्षी, चिड़िया' के २७ नाम हैं ॥

२ हारीतः (+ हरितः), मद्गुः, कारण्डवः, प्लवः, तित्तिरिः (+ तित्तिरः), कुक्कुभः, लावः, जीवञ्जीवः (+ जीवञ्जीवः, जीवाजीवः), चकोरकः, कोयष्टिकः (+ कोयष्टिः, क्षी० स्वा० पाठ), टिट्टिभकः (+ टिटिभकः, टिटिभः । + टिट्टिभः, कोकः; क्षी० स्वा० पाठ), वर्तकः (+ ककरः; क्षी० स्वा० पाठ) वर्त्तिकः (+ वर्तकः; क्षी० स्वा० पाठ । १२ पु), आदि ('आदि शब्दसे 'शारिका' कपिञ्जलः,……), ये 'पक्षि–विशेष' हैं । (उनमें क्रमशः 'हारिल, जलमुर्गा, करडुआ (कौवेके समान काले रङ्गके बड़े २ पैरवाला बत्तखविशेष), जलकौवा,

---

१. पतत्त्रिपत्त्रिपतगपतत्पत्त्ररथाण्डजाः' इति पाठान्तरम् । अत्र 'पतेरत्रिः' (उ० सू०) इति भ्रान्त्या ग्रन्थकृदिदन्तमिमं मन्यत इति क्षी० स्वा० ॥

२. नभसमाकाशं गच्छतीति विग्रहे 'गमश्च' (पा० सू० ३।४।४७) इति खच्प्रत्यये 'नभसङ्गमः' शब्दस्य सिद्धिः । 'नभसं खं मेघवर्त्म विहायसम्' इति निगमात् 'अत्यविचमितमिर-मिलभिनभितपिपतिपनिपणिमहिभ्योऽसच्' (उ० सू० ३९७), इत्यनेन सिद्धोऽदन्तोऽपि 'नभस' शब्दोऽस्तीत्यवधेयम् । सान्तः 'नभः' शब्दपक्षे तु नभसा गच्छतीति विग्रहे 'गमेः सुपि वाच्यः' (वार्तिकः २०११) इति खचि 'वाचंयमपुरन्दरौ च' (पा० सू० ६।३।६९) इति चकारादमागमे 'नभसङ्गम' शब्दसिद्धिर्बोध्या ॥

[1]कोयष्टिकष्टिट्टिभको वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥
१ गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतत्रं च तनूरुहम्।
२ स्त्री पक्षतिः पक्षमूलं ३ चञ्चुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥
४ प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः।
५ [2]पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डं ६ कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥ ३७ ॥
७ पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः।

तीतर, वनमुर्गा, लावा या लवा, मोरके तुल्य पंख वाला पक्षि-विशेष, चकोर, पक्षी-विशेष, टिटिहरी और बत्तख' का १-१ नाम तथा 'बटेर' के २ नाम हैं। ('प्राचीनों के मतसे 'वर्तकः (पु), वर्तिका (स्त्री), मानकर 'बटेर और बटेरकी स्त्री' का क्रमशः १-१ नाम है') ॥

१ गरुत्, पक्षः, छदः (+न। ३ पु), पत्रम्, पतत्रम्, तनूरुहम् (३ न), 'पंख' के ६ नाम हैं ॥

२ पक्षतिः (+पक्षती। स्त्री), पक्षमूलम् (न), 'पंखकी जड़' के २ नाम हैं ॥

३ चञ्चुः (+चञ्चूः), त्रोटिः (+तुण्डम्। २ स्त्री), 'चोंच' ठोर' के २ नाम हैं ॥

४ प्रडीनम्, उड्डीनम्, संडीनम् (३ न), ये ३ 'पक्षियोंकी चालें हैं' इनमें 'तिरछा या अत्यन्त उड़नेका, ऊपर उड़नेका, मिलकर उड़ने' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

५ पेशी (पेशिन्, पु + पेशी = पेशी, स्त्री), कोशः (+कोषः पु न। +पेशीकोशः, पेशीकोषः; क्षी० स्वा०), अण्डम् (न), 'अण्डा' के ३ नाम हैं ॥

६ कुलायः (पु), नीडम् (न पु), 'खोंता, घोसला' के २ नाम हैं ॥

७ पोतः, पाकः, अर्भकः, डिम्भः, पृथुकः, शावकः, शिशुः (७ पु), 'बच्चा' के ७ नाम हैं ॥

---

१. 'कोयष्टिष्टिट्टिभः कोकः ककरो वर्तकादयः' इति क्षी० स्वा० सम्मतः पाठः। अत्र मूलोक्तपाठं मत्वा 'उदीचां तु स्त्रियामित्वम्, प्राचां न (वा० ७।३।४५) इति स्त्रियां रूपद्वयप्रदर्शनाय 'वर्तिका' ग्रहणम्' इति प्राञ्चः। वस्तुतस्तु 'वृतेस्तिकन्' (उ० सू० ३।१४६) इति तिकन्नन्तस्य मूषिकवत्पुंस्यपि 'वर्तिकः' इति रूपकथनमिदम्' इति मा० दी०। पूर्वोक्त क्षी० स्वा० सम्मते पाठे तु नैव रूपद्वयप्रदर्शनमित्यवधेयम् ॥

२. 'पेशीकोषो' इति 'कोषो' इति च पाठान्तरम् ॥

१ स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं २ युग्मं तु युगलं युगम् ॥ ३८ ॥
३ समूहो निवहव्यूहसंदोहविसरव्रजाः ।
स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसञ्चयाः ॥ ३९ ॥
समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः ।
स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥
४ वृन्दभेदाः ५ समैर्वर्गः ६ संघसार्थौ तु जन्तुभिः ।
७ सजातीयैः कुलं ८ यूथं तिरश्चां पुन्नपुंसकम् ॥ ४१ ॥

---

१ स्त्रीपुंसौ (भा० दी० अतसे । नित्य द्विव० पु), मिथुनम्, द्वन्द्वम् (२ न), 'स्त्री और पुरुषकी जोड़ी' के ३ नाम हैं ॥

२ युग्मम्, युगलम् , युगम् (३ न), 'जोड़ा, सम' के ३ नाम हैं ॥ ('मुकुटने 'द्वन्द्व' शब्दको भी इसीका पर्याय मानकर ४ नाम[1] कहा है') ॥

३ समूहः, निवहः, व्यूहः, संदोहः, विसरः, व्रजः, स्तोमः, ओघः, निकरः, व्रातः, वारः, संघातः, सञ्चयः, समुदायः, समुदयः, समवायः, चयः, गणः, (१८ पु), संहतिः (स्त्री), वृन्दम्, निकुरम्बम्, कदम्बकम् (३ न), 'समूह' के २२ नाम हैं ॥

४ अब समूहोंके भेद-विशेष कहते हैं ॥

५ वर्गः (पु), 'एकजातीय प्राणियों या अप्राणियोंके समूह' का १ नाम है । (जैसे—मनुष्यवर्गः, ब्राह्मणवर्गः, शैलवर्गः,......') ॥

६ [2]संघ [3]सार्थः (२ पु), एकजातीय या भिन्नजातीय प्राणिमात्रके समूह' के २ नाम हैं। (जैसे—पशुसङ्घः, पक्षिसङ्घः, वाणिक्सङ्घ...') ॥

७ कुलम् (न), एकजातीय केवल प्राणियोंके समूह' का १ नाम है । (जैसे—'ब्राह्मणकुलम् , ऋषिकुलम् , गोकुलम्,......') ॥

८. [4]यूथम् (न पु), 'एक जातिके तिर्यग्जातीय' (पशुपक्षी आदिके) समूह'

---

१. 'द्वन्द्व' शब्दस्य 'युग्म' पर्यायत्वमनुचितम् । तथा सति '—द्वन्द्वमाहवे । रहस्ये मिथुने युग्मे—' (अने० सं० ३।५२३—५२४) इति हैमात् 'द्वन्द्वं रहस्ये कलहे तथा मिथुनयुग्मयोः' (मेदिनी पृ० १७२ श्लो० १०) इति मेदिन्याश्चाविरोधेऽपि 'स्वन्तावादि न...' (१।१।४) इत्यादिग्रन्थकारप्रतिज्ञाविरोधात् । 'द्वन्द्वयुग्मे तु' इति पाठे तु ग्रन्थकारप्रतिज्ञाऽविरोधान्मुकुटमतस्य सामञ्जस्यमपीत्यवधेयम् ॥

२-३-४. सङ्घसङ्घातपुञ्जौघसार्थयूथकदम्बकाः' इति ।

१ पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम्।
स्यान्निकायः ४ पुञ्जराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥
५ कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे ।
६ गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

का १ नाम है। जैसे—मृगयूथम्, गजयूथम्, बर्हियूथम्,……' ॥

१ समजः (पु), 'केवल पशुओं के समूह' का १ नाम है। (जैसे—गोसमजः,……') ॥

२ समाजः (पु) पशुसे भिन्न जातिवालोंके समूह' का १ नाम है। ('जैसे—'श्रोत्रियसमाजः, ब्राह्मणसमाजः,……'') ॥

३ निकायः (पु), 'एक जातिवालों के समूह' का १ नाम है। (जैसे—ब्राह्मणनिकायः, गोनिकायः, श्रमणनिकायः,……') ॥

४ पुञ्जः (+पिञ्जः), राशिः उत्कर (३ पु) कूटम् (न पु), 'अन्न इत्यादिकी ढेरी' के ४ नाम हैं। ('जैसे—धान्यराशिः, तृणराशिः,……') ॥

५ कापोतम्, शौकम्, मायूरम्, तैत्तिरम् (४ न), आदि ('आदिसे—कौक्कुटम्, काकम्,……''), 'कबूतर, सुग्गा, मोर और तीतर' आदि (आदिसे—मुर्गा और कौआ,……') के समूह' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

६ छेकः, गृह्यकः (२ पु), 'पालतू पशु-पक्षी' अर्थात् 'जलमें पाले हुए तोता, मोर, मैना आदि पक्षी और मृग आदि पशुओं' के २ नाम हैं ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

'निकरनिकायविसरव्रजपुञ्जसमूहसञ्चयाः समुदयसार्थयूथनिकुरम्बकदम्बकपूगराशयः। चयसमवायवृन्दसन्दोहसमाजवितानसंहतिप्रकरघनौघसंघसंघातव्रातकुलोत्कराः स्मृताः' ॥ (अभि० रत्न० ४१९) इति चोक्त्वा भागुरिहलायुधौ सङ्घसार्थयूथपुञ्जानां पर्यायतामाहतुः' इत्यवधेयम् ॥

६. अथ मनुष्यवर्गः ।

१ मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।
२ स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥
३ [1]स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।
प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥
४ विशेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ।
प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥
सुन्दरी रमणी रामा ५ कोपना सैव भामिनी ।
६ वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

६. अथ मनुष्यवर्गः ।

१ मनुष्यः, मानुषः, मर्त्यः, मनुजः मानवः, नरः (६ पु) आ० दी० मतसे 'मनुष्यमात्र' के ६ नाम हैं ॥

२ पुमान् (= पुंस्), पञ्चजनः, पुरुषः, पूरुषः, ना (= नृ । ५ पु), आ० दी० मतसे 'पुरुष' अर्थात् 'मर्द' के ५ नाम हैं । ('महे० मतसे मनुष्यः,… …ना' ये ११ नाम 'मनुष्य' के हैं) ॥

३ स्त्री, योषित् (+ जोषित्, योषिता, जोषिता), अबला (+ अवला), योषा (+ जोषा), नारी, सीमन्तिनी, वधूः प्रतिपद्दर्शिनी, वामा, वनिता, महिला (महेला, महला । ११ स्त्री), 'औरत, जनाना' के ११ नाम हैं ॥

४ अङ्गना, भीरुः (+ भीरूः भीलुः भीलूः) कामिनी, वामलोचना, प्रमदा, मानिनी, कान्ता, ललना, नितम्बिनी, सुन्दरी (+ सुन्दरा), रमणी (+ रमणा), रामा (१२ स्त्री) ये १२ 'स्त्रियोंके भेद–विशेष' हैं ॥

५ कोपना, भामिनी (२ स्त्री), 'क्रोध करनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

६ वरारोहा, मत्तकाशिनी (+ मत्तकासिनी), उत्तमा, [2]वरवर्णिनी (४ स्त्री), 'गुणवती स्त्री के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'स्त्री योषिदबला योषा' इति पाठान्तरम् ॥

२. वरवर्णिनीलक्षणं यथा—

'शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी ग्रीष्मे या सुखशीतला ।
भर्तृभक्ता च या नारी विज्ञेया वरवर्णिनी ॥ १ ॥ इति ॥

१ कृताभिषेका महिषी २ भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।
३ पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥
भार्याजायाऽथपुंभूम्निदाराः४स्यात्तु कुटुम्बिनी ।
पुरन्ध्री ५ सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥
६ [1]कृतसापत्निकाऽध्यूढाऽधिविन्ना७थ स्वयंवरा ।
पतिंवरा च वर्या८ऽथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥
९ कन्या कुमारी—

---

१ महिषी (स्त्री), 'पटरानी' का १ नाम है । ('जैसे -वासवदत्ता,···') ॥

२ भोगिनी (स्त्री), 'पटरानियोंसे भिन्न रानियों' का १ नाम है । ('जैसे-पद्मावती, ······') ॥

३ पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी (+सधर्मिणी, सहचरी), भार्या, [2]जाया (६ स्त्री), दाराः (=दार, पु नि० ब० व० । +[3]दारा = स्त्री), ब्याही हुई स्त्री' के ७ नाम हैं ॥

४ कुटुम्बिनी, पुरन्ध्री (+पुरन्ध्रिः, सु०), 'पति-पुत्रवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

५ सुचरित्रा, सती, साध्वी, पतिव्रता (४ स्त्री) 'पतिव्रता स्त्री' के ४ नाम हैं ॥

६ कृतसापत्निका (+कृतसापत्नका), अध्यूढा, अधिविन्ना (३ स्त्री) 'अनेक विवाह किये हुए पुरुषकी पहली स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

७ स्वयंवरा, पतिंवरा, वर्या (३ स्त्री) 'जिसके लिये स्वयंवर किया गया हो उस कन्या' के ३ नाम हैं ॥

८ कुलस्त्री, कुलपालिका (२ स्त्री) 'कुलीन स्त्री' के २ नाम हैं ॥

९ कन्या, कुमारी (२ स्त्री) 'प्रथम अवस्थावाली या क्वाँरी लड़की' के २ नाम हैं ॥

---

१. कृतसापत्नकाऽध्यूढा—' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः' इति मनुः ॥

३. 'कोका दारा तथा दारा त्रय एते यथाक्रमम् ।
कोडे दारे च दारेषु शब्दाः प्रोक्ता मनीषिभिः' ॥ १ ॥ इत्युक्तेः ॥

१ गौरी तु नग्निकाऽनागतार्तवा ।

२ स्यान्मध्यमा दृष्टरजास्[३]तरुणी युवतिः समे ॥ ८ ॥

४ [१]समाः स्नुषाजनीवध्वश्[५]चिरिण्टी तु स्ववासिनी ।

---

१ [२]गौरी, [३]नग्निका (+ लग्निका) अनागतार्तवा (३ स्त्री), 'जिसे रजोधर्म नहीं हुआ हो उस स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

२ मध्यमा, दृष्टरजाः (= दृष्टरजस् । २ स्त्री), 'जिसे पहली बार रजोधर्म हुआ हो उस स्त्री' २ नाम हैं ॥

३ तरुणी (+ तलुनी), युवतिः (+ युवती । २ स्त्री) 'जवान स्त्री' के २ नाम हैं । (स्त्री १६ वर्षकी अवस्थातक 'बाला' १७ से ३० वर्षकी अवस्था तक 'तरुणी', ३१ से ५५ वर्ष की अवस्थातक 'प्रौढा' और उसके बाद 'वृद्धा' कहलाती है; यहि वृद्धा रतिमें त्याज्य है[४]। यह अवस्थाकथन जब मनुष्य स्वस्थ एवं पूर्णायु होते थे, उस समयके अनुसार उचित प्रतीत होता है) ॥

४ स्नुषा, जनी (+ जनिः) वधूः (३ स्त्री), 'पतोहू' अर्थात् 'पुत्र, भतीजा या शिष्य आदिकी स्त्री' के ३ नाम हैं ॥

५ चिरिण्टी (+ चिरण्टी, चरण्टी, चरिण्टी), स्ववासिनी (+ सुवासिनी । २ स्त्री), 'जिसे जवानीके चिह्न कुछ-कुछ मालूम पड़ रहे हों ऐसी विवाहिता स्त्री' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'समाः स्नुषाजनीवध्वश्चिरण्टी तु सुवासिनी' इति पाठान्तरम् ॥

२–३. अथ प्रसङ्गात्स्त्रीणां संज्ञाविशेषा उच्यन्ते—

'बालेति गीयते नारी यावद्वर्षाणि षोडश ।
गौरी स्वसंजातरजाः श्यामा षोडशवार्षिकी' ॥ १ ॥ इति ॥

'अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी ।
दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला' ॥ १ ॥

इति संवर्तस्मृति १।६६ ॥

अत्र 'अष्टवर्षा भवेद् गौरी नवमे नग्निका भवेत्' इति स्मार्तो विशेषो नादृत इति क्षी० स्वा० ॥

४. अवस्थाभेदेन स्त्रीणां संज्ञा आह—

'यावत्षोडशसंख्यमब्दमुदिता बाला ततस्त्रिंशतं
तावत्स्यात्तरुणीति बाणविशिखैः संख्या तु तावद्भवेत् ।
सा प्रौढेत्यभिधीयते कविवरैर्वृद्धा तदूर्ध्वं स्मृता
निन्द्या कामकलाकलापविषये त्याज्या सदा कामिभिः' ॥ १ ॥ इति ॥

१ इच्छावती कामुका स्याद् २ वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥
३ कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ।
४ पुंश्चली [1]धर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी ॥ १० ॥
स्वैरिणी पांशुला च स्या५दशिश्वी शिशुना विना ।
६ अवीरा निष्पतिसुता ७ विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥
८ आलिः सखी वयस्याऽथ ९ पतिवत्नी सभर्तृका ।

१ इच्छावती, कामुका (२ स्त्री), 'किसी पदार्थको चाहनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

२ वृषस्यन्ती, कामुकी (२ स्त्री) 'बैल-घोड़े की तरह अधिक मैथुनकी इच्छा करनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

३ [2]अभिसारिका (स्त्री) 'रतिके लिये अपने पति या जारके संकेत किये हुए स्थानपर जानेवाली या जार वा पतिको संकेत-स्थानपर बुलानेवाली स्त्री' का १ नाम है ॥

४ पुंश्चली, धर्षिणी (+ चर्षणी, धर्षणी, कर्षणिः) बन्धकी, असती, कुलटा, इत्वरी, स्वैरिणी, पांशुला (+ व्यभिचारिणी । ८ स्त्री), 'व्यभिचारिणी स्त्री' के ८ नाम हैं ॥

५ अशिश्वी (स्त्री) 'वंशहीन स्त्री' का १ नाम है ॥

६ अवीरा (स्त्री) 'पति और पुत्रसे हीन स्त्री' का १ नाम है ॥

७ विश्वस्ता, विधवा (२ स्त्री) 'विधवा स्त्री' के २ नाम हैं ॥

८ आलिः, सखी, वयस्या (३ स्त्री) 'सहेली' के ३ नाम हैं ॥

९ पतिवत्नी, सभर्तृका (२ स्त्री) 'सधवा स्त्री' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'चर्षणी' इति 'धर्षणी' इति च पाठान्तरम् ॥

२. अभिसारिकाया लक्षणान्याहुः । तद्यथा—

'हित्वा लज्जाभये श्लिष्टा मदनेन मदेन च ।
अभिसारयते कान्तं सा भवेदभिसारिका ॥ १ ॥ इति भरतः ॥
'कामार्ताऽभिसरेत्कान्तं सारयेद्वाऽभिसारिका' ॥ दशरूपक २।२७ इति ॥
अभिसारयते कान्तं या मन्मथवशंवदा ।
स्वयं वाऽभिसरत्येषा धीरैरुक्ताऽभिसारिका' ॥ १ ॥ सा० द० ३।११८ इति ॥

१ वृद्धा पलिक्नी २ प्राज्ञी तु प्राज्ञा ३ प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥
४ शूद्री शूद्रस्य भार्या स्या५च्छूद्रा तज्जातिरेव च ।
६ आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥
७ अर्याणी स्वयमर्या स्यात् ८ क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।
९ उपाध्यायाऽप्युपाध्यायी १० स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥
११ आचार्यानी तु पुंयोगे १२ स्यादर्यी—

---

१ वृद्धा, पलिक्नी (२ स्त्री), 'वृद्ध या पके हुए बालवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

२ प्राज्ञी, प्रज्ञा (२ स्त्री), 'किसी विषयको अच्छी तरह स्वयं जाननेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

३ प्राज्ञा, धीमती (+ बुद्धिमती । स्त्री), चतुर स्त्री' के २ नाम हैं ॥

४ शूद्री (स्त्री), किसी भी वर्णमें उत्पन्न हुई शूद्रकी स्त्री' का १ नाम है ॥

५ शूद्रा (स्त्री), 'शूद्र वर्णमें उत्पन्न हुई शूद्रकी या अन्य किसी जातिकी स्त्री' का १ नाम है ॥

६ आभीरी, महाशूद्री (२ स्त्री), 'ग्वालिन या गोपकी स्त्री, महाशूद्र-कुलमें उत्पन्न किसी भी जातिकी स्त्री, अन्य वर्णमें उत्पन्न महाशूद्रकी स्त्री, के २ नाम हैं ॥

७ अर्याणी, अर्या (२ स्त्री), वैश्य कुलमें उत्पन्न स्त्री' के २ नाम हैं ॥

८ क्षत्रिया, क्षत्रियाणी (२ स्त्री), 'क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न स्त्री' के २ नाम हैं ॥

९ उपाध्याया, उपाध्यायी (२ स्त्री), 'स्वयं पढ़ानेवाली स्त्री' का २ नाम हैं ॥

१० आचार्या (स्त्री), 'मन्त्रोंकी स्वयं व्याख्या करनेवाली स्त्री' का १ नाम है ॥

११ आचार्यानी (+ आचार्याणी । स्त्री), 'आचार्यकी स्त्री' का १ नाम है ॥

१२ अर्यी (स्त्री), 'किसी भी जातिमें पैदा हुई वैश्यकी स्त्री' का १ नाम है ॥

—१ क्षत्रियी तथा।
२ उपाध्यायान्युपाध्यायी ३ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ १५ ॥
४ वीरपत्नी वीरभार्या ५ वीरमाता तु वीरसूः।
६ जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥
७ स्त्री नग्निका [1]कोटवी स्यात् ८ दूतीसंचारिके समे।
९ कात्यायन्यर्द्धवृद्धा या [2]काषायवसनाऽधवा ॥ १७ ॥
१० [3]सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका।

१ क्षत्रियी (स्त्री), किसी भी जातिमें उत्पन्न हुई क्षत्रियकी स्त्री' का १ नाम है ॥

२ उपाध्यायानी, उपाध्यायी (२ स्त्री), 'पढ़ानेवालेकी स्त्री' के २ नाम हैं ॥

३ पोटा (स्त्री), 'स्तन और दाढ़ी (स्त्री-पुरुषके इन दो लक्षणों) से युक्त स्त्री या नपुंसक स्त्री' का १ नाम है।

४ वीरपत्नी, वीरभार्या (२ स्त्री), शूरवीरकी पत्नी' के २ नाम हैं ॥

५ वीरमाता (= वीरमातृ), वीरसूः (२ स्त्री), 'शूरवीरकी माता' के २ नाम हैं ॥

६ जातापत्या, प्रजाता, प्रसूता, प्रसूतिका (४ स्त्री) 'प्रसूति' अर्थात् 'जिसे सन्तान पैदा किये थोड़े दिन बीते हों' उस 'जच्चा' स्त्री के ४ नाम हैं ॥

७ नग्निका (भा० दी०), कोटवी (+ कोट्टवी, कौटवी। २ स्त्री) 'नंगी स्त्री' के २ नाम हैं ॥

८ दूती, संचारिका (२ स्त्री), 'दूती' के २ नाम हैं ॥

९ कात्यायनी (स्त्री), 'अधबूढ़, गेरुआ कपड़ा पहनी हुई विधवा स्त्री' का १ नाम है ॥

१० ४ सैरन्ध्री (+ सैरिन्ध्री। स्त्री) 'जो दूसरेके घर रहे, स्वतन्त्र

१. 'कोट्टवी' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कषायवसनाऽधवा' इति पाठान्तरम् ॥

३ 'सैरिन्ध्री' इति पाठान्तरम् ॥

४ सैरन्ध्रीलक्षणं यथा—

चतुःषष्टिकलाऽभिज्ञा शीलरूपादिसेविनी।
प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री परिकीर्तिता ॥ १ ॥ इति कात्यः।

क्षी० स्वा० तु 'परिकीर्तिता' इत्यत्र 'स्ववशेति च' इति पाठमाह ॥

१ असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रेष्याऽन्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥
२ वारस्त्री गणिका [1]वेश्या रूपाजीवा३ऽथ सा जनैः ।
सत्कृता वारमुख्या स्यात् ४ कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥
५ विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञाऽथ रजस्वला ।
[2]स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥
ऋतुमत्यप्युदक्यापि ७ स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।

हो और केश झाड़ना-गूथना आदि शिल्पकार्य करती हो उस स्त्री' का १ नाम है। (जैसे—राजा विराटके यहाँ अज्ञातवास करती हुई द्रौपदी सरन्ध्री का कार्य करती थी) ॥

१ [3]असिक्नी (स्त्री) 'जो वृद्धा नहीं हो, आज्ञा पाकर कहीं आया जाया करे और रनिवासमें रहे उस स्त्री' का १ नाम है ॥

२ वारस्त्री, गणिका, वेश्या (+ वेष्या), रूपाजीवा (+ पण्यस्त्री, पणस्त्री । ४ स्त्री), 'वेश्या' के ४ नाम हैं ॥

३ वारमुख्या (स्त्री), 'सौन्दर्य और गान आदि से बड़े लोगोंके द्वारा प्रतिष्ठा पानेवाली वेश्या' का १ नाम है ॥

४ कुट्टनी, शम्भली (+ सम्भली । २ स्त्री), 'कुटिनी' के २ नाम हैं।

५ विप्रश्निका, ईक्षणिका, दैवज्ञा (३ स्त्री), 'हाथ-पैर आदिकी रेखाओं को देखकर शुभाशुभ लक्षणों को जानने या कहनेवाली स्त्री' के ३नाम हैं॥

६ रजस्वला, स्त्रीधर्मिणी, अविः (+ अवी), आत्रेयी, मलिनी, पुष्पवती (+ पुष्पिता), ऋतुमती, उदक्या (८ स्त्री) 'रजस्वला स्त्री' के ८ नाम हैं ॥

७ रजः (= रजस्), पुष्पम् , आर्तवम् (३ न), 'स्त्रियोंके रज' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'वेष्या' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्त्रीधर्मिण्यपि चात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि' इति स्वा० पाठः । 'अवितॄस्तृतन्त्रिभ्य ईः' (उ० सू० ३।१५८) इति ईप्रत्ययेन सिद्धयुक्तेस्तदग्रे च 'अविं स्त्रीधर्मिणीं विद्यात्' इति कात्यात् 'सर्वधातुभ्य इन्' (उ० सू० ४।११८) इति इन्प्रत्यये ह्रस्वान्ताऽपि अविः इति भानुजिदीक्षितेन स्वयमुक्तत्वान्मूले 'स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी' इति ह्रस्वान्त 'अवि' शब्दपाठः संशोधकप्रमादज एव । व्याख्यातुर्दीर्घान्तस्यैव 'अवि' शब्दस्य प्रथमं साधितत्वेन तत्रैव स्वास्थाप्रदर्शनात् ॥

३. 'असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रेष्याऽन्तःपुरपोषिता' इति मुनिः ॥

१ श्रद्धालुर्दोहदवती २ निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥
३ आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी।
४ गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥
५ पुनर्भूर्दिधिषूरूढा द्विस्तस्या[1] दिधिषुः पतिः।
७ स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥

---

१ श्रद्धालुः, दोहदवती (२ स्त्री), 'गर्भ रहनेपर किसी वस्तु या कार्य को चाहनेवाली स्त्री' के २ नाम हैं ॥

२ निष्कला (+ निष्कली), विगतार्तवा (२ स्त्री), 'रजोधर्मसे हीन (जिसे रजोधर्म कभी न होता हो या वृद्धावस्था के कारण समाप्त हो गया हो) स्त्री' के २ नाम हैं।

३ आपन्नसत्त्वा, गुर्विणी (+ गुर्वी) अन्तर्वत्नी, गर्भिणी (गर्भवती। ४ स्त्री), 'गर्भवती स्त्री' के ४ नाम हैं ॥

४ गाणिक्यम्, गार्भिणम्, यौवतम् (३ न), 'वेश्याओं युवतियों और गर्भिणियोंके समूह' का क्रमशः १-१ नाम है।

५ [2]पुनर्भूः, दीधिषूः (+ दिधीषूः, दिधिषुः, अग्रेदिधिषुः। २ स्त्री), 'दो बार ब्याही हुई स्त्री' के २ नाम हैं ॥

६ दिधिषुः (+ दिधिषूः, स्वा० म०। पु०), 'दो बार ब्याही स्त्रीके पति' का १ नाम है ॥

७ अग्रेदिधिषूः। (+ अग्रेदिधिषुः। पु), 'दो बार ब्याही हुई स्त्रीके द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) वर्णवाले पति' का १ नाम है ॥

---

१. 'दिधिषूः पतिः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं याज्ञवल्क्ये—

'अक्षता च क्षता चैव पुनर्भूर्दिधिषूः पुनः' इति याज्ञ० १। ६७ ॥
'ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेऽनुजा।
सा चाग्रेदिधिषुर्ज्ञेया पूर्वा तु दिधिषुर्मता' ॥ १ ॥ इति ॥
'दिधिषूस्तत्पुनर्भूर्द्विरूढा स्याद्दिधिषुः पतिः।
स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूर्यस्य स्यात्सैव गेहिनी' ॥ १ ॥
अभि० चिन्ता० ३।१८९ इति ॥

१ कानीनः कन्यकाजातः सुतोऽथ सुभगासुतः ।
सौभागिनेयः स्यात् ३ पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥
४ पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्रीयश्च पितृष्वसुः ।
सुतो ५ मातृष्वसुश्चैवं ६ वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥
७ अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः ।
कौलटेरः कौलटेयो ८ भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥
तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।
९ आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः १० स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥
आहुर्दुहितरं सर्वे—

---

१ कानीनः (पु), 'कांरी स्त्रीके पुत्र' का १ नाम है ('जैसे—व्यास, कर्ण,……) ॥

२ सुभगासुतः, सौभागिनेयः (२ पु), 'सौभाग्यवती स्त्रीके पुत्र' के २ नाम हैं ॥

३ पारस्त्रैणेयः (पु), 'परस्त्रीके पुत्र' का १ नाम है ॥

४ पैतृष्वसेयः, पैतृष्वस्रीयः (२ पु), 'फूआका पुत्र अर्थात् फुफेरे भाई' के २ नाम हैं ॥

५ इसी प्रकार 'मौसीका लड़का अर्थात् मौसेरे भाई' के मातृष्वसेयः, मातृष्वस्रीयः (२ पु), २ नाम हैं ॥

६ वैमात्रेयः (+ वैमात्रः), विमातृजः (२ पु), सौतेली माँका लड़का' अर्थात् 'भैमावत भाई' के २ नाम हैं ।

७ बान्धकिनेयः, बन्धुलः, असतीसुतः, कौलटेरः, कौलटेयः (५ पु), 'व्यभिचारिणी स्त्रीके पुत्र' के ५ नाम हैं ॥

८ कौलटिनेयः, कौलटेयः, (२ पु), 'भीख मांगनेके लिये घर २ घूमने-वाली सदाचारिणी स्त्रीके पुत्र' के २ नाम हैं ॥

९ आत्मजः, तनयः, सूनुः, सुतः, पुत्रः (५ पु), 'पुत्र' के ५ नाम हैं ॥

१० दुहिता (= दुहितृ । स्त्री)' और 'आत्मज' आदि ५ शब्द स्त्रीलिङ्ग होने पर (आत्मजा, तनया, सूनुः, सुता, पुत्री । ५ स्त्री), 'लड़की, पुत्री' के ६ नाम हैं ॥

—१ऽपत्यं तोकं तयोः समे ।
२ स्वजाते त्वौरसोरस्यौ ३ तातस्तु जनकः पिता ॥ २८ ॥
४ जनयित्री प्रसूर्माता जननी ५ भगिनी स्वसा ।
६ ननान्दा तु स्वसा पत्युर्७नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥
८ भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।
९ प्रजावती भ्रातृजाया १० मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

१ अपत्यम् , तोकम् (२ न), 'सन्तान' अर्थात् 'लड़के या लड़की' के २ नाम हैं ॥

२ औरसः, १ उरस्यः (+ औरस्यः । २ पु), 'अपने खास लड़के' के २ नाम हैं ॥

३ तातः, जनकः, पिता (= पितृ । ३ पु), 'पिता' के ३ नाम हैं ॥

४ जनयित्री (+ जनित्री), प्रसूः, माता (= मातृ), जननी (+ जननिः । ४ स्त्री), 'माता' के ४ नाम हैं ॥

५ भगिनी, स्वसा (= स्वसृ । २ स्त्री), 'बहन' के २ नाम हैं ॥

६ ननान्दा (= ननान्दृ । + ननन्दा = ननन्दृ, नन्दिनी । स्त्री), 'ननद' अर्थात् 'पतिकी बहन' का १ नाम है ॥

७ नप्त्री, पौत्री, सुतात्मजा (भा० दी० । ३ स्त्री), 'नातिन' अर्थात् 'पुत्रकी या पुत्रीकी लड़की' के ३ नाम हैं ॥

८ याता (= यातृ, स्त्री), 'गोतिनी' अर्थात् 'पतिके भाइयोंकी स्त्री' का १ नाम है ॥

९ प्रजावती, भ्रातृजाया (२स्त्री), 'भाईकी स्त्री भौजाई' के २ नाम हैं ॥

१० मातुलानी, मातुली (+ मातुला । २ स्त्री), 'मामी' अर्थात् 'मामा (पिताका साला) की स्त्री' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्धि यम् । तमौरसं विजानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम्' ॥
मनुः ९।१६६ ॥

इति वचनात्परभार्यायामपि स्वस्माज्जाते पुत्रे नातिव्याप्तिः शङ्क्या । 'औरस १ क्षेत्रज २ दत्तक ३ कृत्रिम ४ गूढोत्पन्न ५ अपविद्ध ६ कानीन ७ सहोढ ८ क्रीत ९ पौनर्भव १० स्वयंदत्त ११ शौद्र (पाराशव) १२' इति दायादादायादबान्धवरूपद्वादशविधपुत्रलक्षणं मनुस्मृतौ (९।१६६–१७८) द्रष्टव्यम् ॥

१ पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः २ श्वशुरस्तु पिता तयोः।
३ पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यात् ४ मातुर्भ्राता तु मातुलः॥ ३१॥
५ श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः ६ स्वामिनो देवृदेवरौ।
७ स्वस्रीयो भागिनेयः स्यात् ८ जामाता दुहितुः पतिः॥ ३२॥
९ पितामहः पितृपिता १० तत्पिता प्रपितामहः।
११ मातुर्मातामहाद्येवं १२ सपिण्डास्तु सनाभयः॥ ३३॥

---

१ श्वश्रूः (स्त्री), 'सास' अर्थात् 'पति या स्त्रीकी माता' का १ नाम है।

२ श्वशुरः (पु), 'ससुर' अर्थात् 'पति या स्त्रीके पिता का १ नाम है॥

३ पितृव्यः (पु), 'चाचा' अर्थात् 'पिताके भाई' का १ नाम है॥

४ मातुलः (पु), 'मामा' अर्थात् 'माताके भाई' का १ नाम है॥

५ श्यालः (+ स्यालः। पु), 'साला' अर्थात् 'स्त्रीके भाई' का १ नाम है॥

६ देवा (= देवृ), देवरः (२ पु), 'देवर' अर्थात् 'पतिके [1]छोटे भाई के २ नाम हैं॥

७ स्वस्रीयः (+ स्वस्रियः, स्वस्रेयः), भागिनेयः (२ पु), 'भांजा' अर्थात् 'बहनके लड़के' के २ नाम हैं॥

८ जामाता (= जामातृ, पु), 'दामाद, जमाई' का १ नाम है॥

९ पितामहः, पितृपिता (= पितृपितृ। २ पु), 'पिताके पिता, दादा, बाबा' के २ नाम हैं॥

१० प्रपितामहः (पु), 'परदादा' अर्थात् पितामहके पिता' का १ नाम है॥

११ मातामहः (पु), 'नाना' अर्थात् 'माताके पिता' का १ नाम है। ("इसी तरह 'प्रमातामहः (पु), 'परनाना' अर्थात् 'नानाके पिता' का १ नाम है")॥

१२ सपिण्डः, सनाभिः (२ पु) '[2]सात पुस्त (पीढ़ी) के भीतरवाले परिवार' के २ नाम हैं॥

---

१. युक्तमिद क्षी० स्वा० मह० मतम्। ग्रंथकारमते तु 'पत्युर्भ्रातृमात्रस्ये'मे नामनी। 'पत्युर्ज्येष्ठो भ्राता श्वशुर एवेति सुभूत्यादयः' इति मा० दी० आह॥

२. तदुक्तं मनुना—"सपिण्डता पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते" इति, मनुः ५। ६०॥

१ समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।
२ सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥
३ ज्ञातेयं ४ बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः ।
५ धवः प्रियः पतिर्भर्ता ६ जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥
७ अमृते जारजः कुण्डो ८ मृते भर्तरि गोलकः ।
९ भ्रात्रीयो भ्रातृजो १० भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरावुभौ ॥ ३६ ॥

---

१ समानोदर्यः, सोदर्यः (+ सोदरः, सहोदरः), सगर्भ्यः, सहजः (४ पु), **'सहोदर भाई'** अर्थात् 'एक मातासे उत्पन्न भाई' के ४ नाम हैं ॥

२ सगोत्रः, बान्धवः, ज्ञातिः, बन्धुः, स्वः (यह सर्वनाम-संज्ञक है), स्वजनः (६ पु), **'सगोत्र, अपने खास खान्दान'** के ६ नाम हैं ॥

३ ज्ञातेयम् (न), **'ज्ञातियोंके धर्म या भाव'** का १ नाम है ॥

४ बन्धुता (स्त्री), **'बन्धुओंके समूह'** का १ नाम है ॥

५ धवः, प्रियः, पतिः, भर्ता (= भर्तृ । ४ पु), **'पति'** के ४ नाम हैं ॥

६ जारः, उपपतिः (२ पु), **'जार'** अर्थात् 'अप्रधान पति' के २ नाम हैं ॥

७ [1]कुण्डः (पु), **'पतिके जीते रहनेपर जारसे पैदा हुए लड़के'** का १ नाम है ॥

८ [2]गोलकः (पु), **'पतिके मरनेपर जारसे पैदा हुए लड़के'** का १ नाम है ॥

९ भ्रात्रीयः (+ भ्रातृव्यः), भ्रातृजः (२ पु), **'भतीजा'** अर्थात् भाईके लड़के का १ नाम है ॥

१० भ्रातृभगिन्यौ (भा० द्वि० मत मे), भ्रातरौ (= भ्रातृ । २ पु नि० द्वि०), **'भाई-बहन'** के २ नाम हैं । ("जब भाई और बहनको एक साथ कहना हो तब इसका प्रयोग होता है । इसी तरह "भार्यापती च तौ" (२ । ६ । ३८) तक जानना चाहिये") ॥

१-२. तदुक्तम्—"परदारेषु जायेते द्वौ सुतौ कुण्डगोलकौ ।
पत्यौ जीवति कुण्डः स्यान्मृते भर्तरि गोलकः" ॥ १ ॥ इति मनुः ३।१७४

१ मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ।
२ श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ ३ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥
४ दम्पती जम्पती जायापती भार्यापती च तौ ।
५ गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च ६ कललोऽस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥
७ सूतिमासो वैजननो ८ गर्भो भ्रूण इमौ समौ ।
९ तृतीयाप्रकृतिः शण्ढः क्लीबः पण्डो [1]नपुंसके ॥ ३९ ॥

१ मातापितरौ (= मातापितृ), पितरौ (= पितृ), मातरपितरौ (= मातरपितृ), प्रसूजनयितारौ (= प्रसूजनयितृ । ४ पु, नि० द्विव०), 'माता और पिताके समुदाय' के ४ नाम हैं ॥

२ श्वश्रूश्वशुरौ, श्वशुरौ (२ पु, नि० द्विव०), 'सास और ससुरके समुदाय' के २ नाम हैं ॥

३ पुत्रौ (पु० नि० द्विव०) 'लड़का और लड़कीके समुदाय' का १ नाम है ।

४ दम्पती, जम्पती (+ २ स्त्री[2]), जायापती, भार्यापती (४ पु, नि० द्विव०), 'पति और पत्नीके समुदाय' के ४ नाम हैं ॥

५ गर्भाशयः, जरायुः, (२ पु), उल्बम् (+ उल्वम् । न), 'गर्भाशय' अर्थात् 'जिसमें गर्भ लिपटा रहता है, उस चर्म' के ३ नाम हैं ॥

६ कललः (पु न), 'वीर्य और शोणितके समुदाय' का १ नाम है । ('किसीके मतसे 'गर्भाशय' आदि २-२ नाम उन अर्थोंमें हैं, और किसीके मतसे ४ नाम एकार्थक हैं') ॥

७ सूतिमासः, वैजननः (२ पु), 'सन्तान पैदा होनेवाले ([3]नवें या दशवें) महीने' के २ नाम हैं ॥

८ गर्भः भ्रूणः (२ पु), 'गर्भ या गर्भस्थ जीव' के २ नाम हैं ॥

९ तृतीयाप्रकृतिः (+ तृतीयप्रकृतिः । स्त्री), शण्ढः (+ षण्ढः, शण्डः,

१. 'नपुंसकम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शाल्मली मथिली मैत्री दम्पती जम्पती च सा' इत्युक्तेरिति बोध्यम् ॥

३. तदुक्तं महर्षिणा याज्ञवल्क्येन—

'नवमे दशमे वापि प्रबलैः सूतिमारुतैः ।
निःसार्यते बाण इव यन्त्रच्छिद्रेण सज्वरः' ॥ १ ॥ याज्ञ० स्मृ० ३।८३ इति ।

भा० दी० तु अस्य तुरीयपादं 'जन्तुश्छिद्रेण सत्वरः' इत्येवमाह ॥

१ शिशुत्वं शैशवं बाल्यं २ तारुण्यं यौवनं समे ।
३ स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं ४ वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥
५ पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ ६ विस्रसा जरा ।
७ स्यादुत्तानशया [1]डिम्भा स्तनपा च स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥
८ बालस्तु स्यान्माणवको—

षण्ढः[2]) क्लीबः, पण्डः (३ पु), नपुंसकम् (न । +पु), 'नपुंसक, हिजड़ा' के ५ नाम हैं ॥

१ शिशुत्वम्, शैशवम्, बाल्यम् (३ न), 'लड़कपन, बाल्यावस्था' के ३ नाम हैं ॥

२ तारुण्यम्, यौवनम् (२ न), 'जवानी, युवावस्था' के २ नाम हैं ॥

३ स्थाविरम्, वृद्धत्वम् (+वार्द्धकम्, वार्द्धक्यम् । २ न), 'बुढ़ापा' के २ नाम हैं ॥

४ वृद्धसंघः (आ० दी० मतसे । पु) वार्द्धकम् (+वार्द्धक्यम् । न), 'वृद्धसमूह' के २ नाम हैं ॥

५ पलितम् (न), 'बाल पकने' अर्थात् 'बुढ़ापा आदिसे दाढ़ी-मूंछ आदिके बालके सफेद होने' का १ नाम है ॥

६ विस्रसा, जरा (२ स्त्री), 'बुढ़ौती' के २ नाम हैं ॥

७ उत्तानशया, डिम्भा, स्तनपा, स्तनन्धयी (४ त्रि), 'दूध पीनेवाली लड़की' के ४ नाम हैं । ('स्त्रीलिङ्गमें रूपप्रदर्शन के लिये स्त्रीत्वको कहा गया है, स्त्रीत्व विवक्षित नहीं है । अतः पुल्लिङ्ग में-उत्तानशयः, डिम्भः, स्तनपः, स्तनन्धयः, (४ पु), 'दूध पीनेवाले लड़के' के ४ नाम हैं; नपुंसकलिङ्गमें 'उत्तानशयम्,······' होता है । इसी तरह आगे जानना चाहिये') ॥

८ बालः, [3]माणवकः (+माणवः । २ त्रि), 'छोटे बच्चे' के २ नाम हैं ॥

१. 'डिम्भ' शब्दः प्राक् (२।५।३८) पक्षिक्रमेणोक्तोऽप्यत्र मानुषक्रमेण पुनरुक्तः ॥

२. 'पण्डः शण्डे—' (अने० सं० २।१२२) इति, 'षण्डः कानन इत्वरे' (अने० सं० २।१२९) इति '—षण्ढौ तु सौविदौ । बन्ध्यपुंसीत्वरे क्लीबे—' (अने० सं० २।१३०-१३१) इति च हेमचन्द्राचार्योक्तेरित्यवधेयम् ॥

३. 'अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरौत्सर्गिकः स्मृतः ।
नकारस्य च मूर्द्धन्यस्तेन सिद्ध्यति माणवः' ॥ १ ॥
एवमुक्तरीत्या निष्पन्नान्माणवशब्दात्स्वार्थे कनि 'माणवक' शब्दसिद्धिर्ज्ञेया ॥

—१ वयस्थस्तरुणो युवा ।
२ प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥
३ वर्षीयान् दशमी ज्यायान् ४ [1]पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।
५ जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः ॥ ४३ ॥
६ अमांसो [2]दुर्बलश्छातो ७ बलवान्मांसलोंऽसलः ।
८ [3]तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

१ वयस्थः, तरुणः, युवा (= युवन् । + युवकः । ३ त्रि), 'नौजवान युवा' के ३ नाम हैं ।

२ प्रवयाः (= प्रवयस्), स्थविरः, वृद्धः, जीनः, जीर्णः, जरन् (=जरत् । ६ त्रि), 'बूढ़े' के ६ नाम हैं ॥

३ वर्षीयान् (= वर्षीयस्), दशमी (= दशमिन्), ज्यायान् (= ज्यायस् । ३ त्रि), 'बहुत बूढे' के ३ नाम हैं ॥

४ पूर्वजः, अग्रियः (अग्रीयः, अग्र्यः, अग्रीमः, अग्रिमः), अग्रजः (३ त्रि), 'बड़े भाई या अपनेसे पहले जन्म हुए' के ३ नाम हैं ॥

५ जघन्यजः, कनिष्ठः (+ कनीयान् = कनीयस्), यवीयान् (= यवीयस् । + यविष्ठः), अवरजः, अनुजः (५ त्रि), 'छोटे भाई या अपनेसे पीछे जन्म हुए' के ५ नाम हैं ॥

६ अमांसः, दुर्बलः, छातः (= शातः । ३ त्रि), 'दुर्बल, कमजोर' के ३ नाम हैं ॥

७ बलवान् (= बलवत्), मांसलः, अंसलः (३ त्रि), 'बलवान्, मजबूत या मोटे' के ३ नाम हैं ॥

८ तुन्दिलः (= तुण्डिलः, तुन्दितः, तुण्डितः, तुन्दिकः, वदरिलः), तुन्दिभः (= तुण्डिभः), तुन्दी (= तुन्दिन् । = तुण्डी = तुण्डिन्), बृहत्कुक्षिः, पिचण्डिलः (= पिचिण्डिलः । ५ त्रि), 'तोंदवाले, बड़े पेटवाले' के ५ नाम हैं ॥

---

१. 'पूर्वजस्त्वग्रीयोऽग्रजः' इति पाठभेदः । किन्त्वत्रच्छन्दोभङ्गोऽपि वर्त्तते ॥

२. 'दुर्बलश्शातः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'तुन्दिकस्तुन्दिकस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचिण्डिकः' इति पाठान्तरम् ॥

१ अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके।
२ केशवः केशिकः केशी ३ वलिनो वलिभः समौ ॥ ४५ ॥
४ [1]विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः ५ खर्वो ह्रस्वश्च वामनः।
६ खरणाः स्यात्खरणसो ७ विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥
८ खुरणाः स्यात्खुरणसः ९ प्रज्ञुः प्रगतजानुकः।

---

१ अवटीटः, अवनाटः, अवभ्रटः, नतनासिकः (४ त्रि), महे० मतसे **'नकचिपटा'** अर्थात् 'चिपटी नाकवाले' के ४ नाम हैं। 'भा० दी० मतसे 'नतनासिकः' शब्दका पर्याय नहीं होने से ३ ही नाम हैं') ॥

२ केशवः (= केशवान् = केशवत्), केशिकः, केशी (= केशिन् । ३ त्रि), **'सुन्दर केशवाले'** के ३ नाम हैं ॥

३ वलिनः, वलिभः (२ त्रि), **'जिसका चमड़ा सिकुड़ गया हो उस'** के २ नाम हैं ॥

४ विकलाङ्गः, अपोगण्डः (= पोगण्डः ! २ त्रि), **'कम या अधिक अङ्गवाले'** के २ नाम हैं ॥

५ खर्वः (= खर्वः, निखर्वः), ह्रस्वः, वामनः (३ त्रि), **'बौना, वामन'** के ३ नाम हैं ॥

६ खरणाः (खरणस्), खरणसः (२ त्रि) **'नुकीली नाकवाले'** के २ नाम हैं ॥

७ विग्रः (+ विखुः, विखः, विख्यः, विख्रः, विखुः), गतनासिकः (= विनासिकः । २ त्रि), **'नकटा'** के २ नाम हैं ॥

८ खुरणाः (=खुरणस्), खुरणसः (२ त्रि), **'पशुके खुरके समान नाकवाले'** के २ नाम हैं ॥

९ प्रज्ञुः (+ प्रज्ञः[2]), प्रगतजानुकः (२ त्रि) **'रोगसे या स्वभावतः विरल अङ्गवाले'** के २ नाम हैं ॥

---

१. 'विकलाङ्गस्तु पोगण्डः खर्वो' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं भानुजिदीक्षितेन —

'प्रज्ञुः संहतजानुः स्यात्प्रज्ञोऽप्यत्रैव दृश्यते ॥' इति साहसाङ्कः, इति ॥

१ ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यात् २ संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥
३ स्यादेडे बधिरः ४ कुब्जे गडुलः ५ कुकरे कुणिः ।
६ पृश्निरल्पतनौ ७ श्रोणः पङ्गौ ८ मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥
९ वलिरः केकरे १० खोडे खञ्ज११स्त्रिषु जराऽवराः ।
१२ जडुलः कालकः पिप्लुः—

१ ऊर्ध्वज्ञुः (+ ऊर्ध्वज्ञः[१]), ऊर्ध्वजानुः (२ त्रि), 'बैठनेपर जिसकी जङ्घा ऊपरको उठी रहती हो उस' के २ नाम हैं ॥

२ संज्ञुः (+ संज्ञः[२]), संहतजानुकः (२ त्रि), 'सटे हुए जङ्घा वाले' के २ नाम हैं ॥

३ एडः, बधिरः (२ त्रि), 'बहरा' के २ नाम हैं ॥

४ कुब्जः (+ न्युब्जः), गडुलः (+ गडुः । २ त्रि), 'कुबड़ा' के २ नाम हैं ॥

५ कुकरः, कुणिः (+ कूणिः । २ त्रि), 'टेढ़े हाथवाले' के २ नाम हैं ,

६ पृश्निः (+ पृष्णिः), अल्पतनुः (२ त्रि) छोटे शरीरवाले, नाटा' के २ नाम हैं ॥

७ श्रोणः, पङ्गुः (२ त्रि), 'पङ्गु' के २ नाम हैं ॥

८ मुण्डः, मुण्डितः (२ त्रि), 'मुण्डन कराये हुये' के २ नाम हैं ॥

९ वलिरः (+ बलिरः), केकरः (+ काचरः, कावरः । २ त्रि), 'ऐंचकर देखनेवाले' अर्थात् 'एक भौंको ऊंचा और एक भौं को नीचाकर देखनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० खोडः (+ खोलः, खोरः), खञ्जः (२ त्रि), 'लँगड़ा' के २ नाम हैं ॥

११ 'जरा' (२।६।४१) शब्दके बादसे यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं । ('इनमें ग्रन्थकारके कथनानुसार सब शब्दोंको प्रायः पुंल्लिङ्गमें देकर लिङ्गनिर्देश में त्रिलिङ्ग लिखा गया है, अतः स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गके रूपको स्वयं समझ लेना चाहिये') ॥

१२ जडुलः (+ जटुलः), कालकः, पिप्लुः (३ पु), 'लहसन' अर्थात् 'जन्म-कालसे ही उत्पन्न शरीरके चिह्न-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

१-२. अत्र मा० दी०—
'संज्ञुः संहतजानौ च भवेत्संज्ञोऽपि तत्र हि ।
ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यादूर्ध्वज्ञोऽप्यूर्ध्वजानुके' ॥ १ ॥ इति साहसाङ्कः, इति ॥

—१ तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥
२ अनामयं स्यादारोग्यं ३ चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।
४ भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥ ५० ॥
५ स्त्री रुग्रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः ।
६ क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च ७ प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥
८ स्त्री क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि ९ [1]कासस्तु क्षवथुः पुमान् ।
१० शोफस्तु श्वयथुः शोथः ११ पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥
१२ किलाससिध्मे—

१ तिलकः, तिलकालकः (२ पु), 'तिल' अर्थात् 'काली तिलके समान देहके चिह्न-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ अनामयम् , आरोग्यम् (२ न), 'नीरोग' के २ नाम हैं ॥

३ चिकित्सा, रुक्प्रतिक्रिया (२ स्त्री), 'चिकित्सा' अर्थात् 'रोगको दूर करनेके लिये दवा आदिके सेवन करने' के २ नाम हैं ॥

४ भेषजम् , औषधम् , भैषज्यम् (३ न), अगदः, जायुः (२ पु), 'दवा' के ५ नाम हैं ॥

५ रुक् (= रुज्), रुजा (२ स्त्री), उपतापः, रोगः, व्याधिः, गदः, आमयः (+ आमः । ५ पु), 'रोग' के ७ नाम हैं ॥

६ क्षयः, शोषः, यक्ष्मा (= यक्ष्मन् । + राजयक्ष्मा = राजयक्ष्मन् । ३ पु), 'राजयक्ष्मा (T. B.) रोग' के ३ नाम हैं ॥

७ प्रतिश्यायः (+ प्रतिश्या), पीनसः (+ आपीनसः । २ पु), 'पीनस रोग' के २ नाम हैं ॥

८ क्षुत् (स्त्री), क्षुतम् (न), क्षवः (पु), 'छींक' के ३ नाम हैं ॥

९. कासः (काशः), क्षवथुः (२ पु), 'खाँसी' के २ नाम हैं ॥

१० शोफः, श्वयथुः, शोथः (३), 'शोथ, सूजन' के ३ नाम हैं ॥

११ पादस्फोटः (पु), विपादिका (स्त्री), 'बिवाय' अर्थात् 'पैरके तलवेमें फटनेवाले रोग-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१२ किलासम् , सिध्मम् (+ सिध्मली । २ न), 'सेहुँआ, सिहुला' के २ नाम हैं ॥

१. 'काशस्तु क्षवथुः पुमान्' इति पाठान्तरम् ॥

—१ कच्छ्वां तु पामा पामा विचर्चिका ।
२ कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया ३ विस्फोटः [१]पिटकः स्त्रियाम् ॥ ५३ ॥
४ व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे ५ नाडीव्रणः पुमान् ।
६ कोठो मण्डलकं ७ कुष्ठश्वित्रे ८ दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥
९ आनाहस्तु विबन्धः स्याद् १० ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ।
११ प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समः ॥ ५५ ॥

१ कच्छूः, पामा (=पामन्, + न), पामा, विचर्चिका (४ स्त्री), 'गीली खुजली या खसरा' के ४ नाम हैं ॥

२ कण्डूः (+ कण्डुः), खर्जूः, कण्डूया (३ स्त्री), 'खाज या खुजलाहट' के ३ नाम हैं ॥

३ विस्फोटः, पिटकः (२ पु स्त्री । स्त्री० में 'विस्फोटा, पिटिका । + पिटिका । + २ त्रि), 'फोड़ा' के २ नाम हैं ॥

४ व्रणः (पु न), ईर्मम्, अरुः (=अरुस् । २ न), 'घाव या व्रण' के ३ नाम हैं ॥

५ नाडीव्रणः (पु), 'नासूर' अर्थात् 'सर्वदा पीब बहानेवाले व्रण-विशेष' का १ नाम है ॥

६ कोठः (पु), मण्डलकम् (न) भा० दी० मतसे 'गजकर्ण रोग' अर्थात् 'जिससे शरीरमें गोले २ चकत्ते पड़ जायँ उस रोग' के २ नाम हैं ॥

७ कुष्ठम्, श्वित्रम् (२ न), भा० दी० मतसे 'सफेद कोढ़' अर्थात् 'चरक फूटने' के २ नाम हैं । ("महे० मतसे 'कोठः,…' ४ नाम 'सफेद कोढ़' ही के हैं") ॥

८ दुर्नामकम्, अर्शः (=अर्शस् । + अर्श । २ न), 'बवासीर' के २ नाम हैं ॥

९ आनाहः, विबन्धः (+ विबन्धः । २ पु), 'जिसमें मल और मूत्र रुक जायं उस रोग' के २ नाम हैं ॥

१० ग्रहणी (+ ग्रहणिः, ग्रहणीरुक्, = ग्रहणीरुज्) प्रवाहिका (२ स्त्री), 'संग्रहणी' के २ नाम हैं ॥

११ प्रच्छर्दिका, वमिः (+ वमी, स्त्री; वमः, पु । २ स्त्री), वमथुः (पु), 'वमन या उल्टी' के ३ नाम हैं ॥

१. "पिटकस्त्रिषु" इति भा० दी० क्षी० स्वा० सम्मतं पाठान्तरम् ॥

१ व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेहभगन्दराः।
२ '"श्लीपदं पादवल्मीकं ३ केशघ्नस्त्विन्द्रलुप्तकः' (१४)
४ अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् ५ पूर्वं शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥
६ रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके।
७ ²वार्तो निरामयः कल्य ८ उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

१ विद्रधिः (स्त्री), ज्वरः, मेहः (+ प्रमेहः), भगन्दरः (३ पु), 'पेट आदि कोमल स्थानमें होनेवाला फोड़ा, ज्वर, प्रमेह और भगन्दर' (गुदाके बगलमें होनेवाला व्रण विशेष) का क्रमशः १—१ नाम है। ये सब 'व्याधि भेद' हैं।

२ [श्लीपदम्, पादवल्मीकम् (२ न), 'पीलपाँव' अर्थात् 'जिसमें पैरके घुटनेके नीचेका हिस्सा फूलकर बहुत मोटा हो जाय, उस रोग' के २ नाम हैं]॥

३ [केशघ्नः, इन्द्रलुप्तकः (२ न), 'टुनकी लगना' अर्थात् 'जिसमें शिर आदिके बाल झड़कर गिर जांय, उस रोग' के २ नाम हैं]॥

४ अश्मरी (स्त्री), मूत्रकृच्छ्रम् (न), 'मूत्रकृच्छ्र' अर्थात् 'जिससे पेशाब करनेमें अत्यन्त कष्ट हो, उस रोग' के २ नाम हैं ॥

५ यहांसे आगे 'शुक्रम्' (२।६।६१) के पहलेवाले सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

६ रोगहारी (= रोगहारिन्), अगदङ्कारः, भिषक् (= भिषज्), वैद्यः, चिकित्सकः (५ पु), 'वैद्य डाक्टर, कविराज, हकीम आदि दवा करने वाले' के ५ नाम हैं। ("क्षी० स्वा० मतसे 'रोगहारी, अगदङ्कारः' ये २ नाम 'औषध' के भी हैं") ॥

७ वार्तः (+ वान्तः), निरामयः, कल्यः (+ नीरोगः। ३ त्रि), महे० मतसे 'नीरोग' के ३ नाम हैं ॥

८ उल्लाघः (त्रि), महे० मतसे 'रोगसे शीघ्र ही छुटे हुए' का १ नाम है। ("भा० दी० मतसे 'वार्तः,……' ४ नाम 'नीरोग' के ही हैं") ॥

१. अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

२. 'वान्तो निरामयः' इति पाठान्तरम्। अत्र मूलपाठ एव युक्तः, अग्रे (नानार्थवर्गे) 'वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिषु' (३।३।७६) इति स्वयं वक्ष्यमाणत्वात्, '—वार्तं स्वारोग्यारोगफल्गुषु' (अने० संग्र० २।१९४) इति हैमोक्तेश्चेत्यवधेयम् ॥

१ ग्लानग्लास्नू २ आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।
आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः ३ समौ पामनकच्छुरौ ॥ ५८ ॥
४ दद्रुणो दद्रुरोगी स्यात् ५ दर्शोरोगयुतोऽर्शसः ।
६ वातकी वातरोगी स्यात् ७ सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥
८ स्युः क्लिन्नाक्षे[1] चुल्लचिल्लपिल्लाः क्लिन्नेऽक्ष्णि चाप्यमी ।
९ उन्मत्त उन्मादवति १० श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥

---

१ ग्लानः, ग्लास्नुः (२ त्रि), 'रोगसे खिन्न' के २ नाम हैं ॥

२ आमयावी (= आमयाविन्), विकृतः, व्याधितः, अपटुः, आतुरः, अभ्यमितः, अभ्यान्तः (+ रोगी = रोगिन् । ७ त्रि), 'रोगी' के ७ नाम हैं ॥

३ पामनः (+ पामरः), कच्छुरः (२ त्रि), 'गीली खुजलीवाले या खसरा रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

४ दद्रुणः (+ दद्रूणः, दर्द्रुणः, दर्द्रूणः), दद्रुरोगी (= दद्रुरोगिन् । + दर्द्रुरोगी = दर्द्रुरोगिन् । २ त्रि), 'दाद रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

५ अर्शोरोगयुतः (भा० दी०), अर्शसः (२ त्रि), 'बवासीर रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

६ वातकी (+वातकिन्), वातरोगी (= वातरोगिन् । २ त्रि), 'वात रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

७ सातिसारः, अतिसारकी (= अतिसारकिन् । + अतीसारकी=अतीसाकिन् । २ त्रि), 'अतिसार रोगवाले' के २ नाम हैं ॥

८ क्लिन्नाक्षः (महे०), चुल्लः, चिल्लः, पिल्लः, (४ त्रि), 'कीचरसे युक्त आँखवाले, के ४ नाम हैं । प्रथम 'क्लिन्नाक्ष' शब्दको छोड़कर शेष ३ नाम (चुल्लम् , चिल्लम् , पिल्लम् ; ३ न), 'कीचरसे युक्त आँख' के हैं । ('चुल्लः, चिल्लः, पिल्लः, ३ त्रि), 'आँखसे कीचर निकलनेवाले रोग-विशेष' के भी ३ नाम हैं') ॥

९ उन्मत्तः, उन्मादवान् (= उन्मादवत् । + उन्मादी = उन्मादिन् । २ त्रि), 'पागल, उन्मादके रोगी' के २ नाम हैं ॥

१० श्लेष्मलः, श्लेष्मणः, कफी (= कफिन् । ३ त्रि), 'कफवाले रोगी' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'चुल्लः चक्षूरोगविशेषः, तद्योगाच्चुल्लं चक्षुः । चुल्लचक्षुष्ट्वाच्चुल्लः पुरुषोऽपीत्यवधेयम् ॥

१ न्युब्जो भुग्ने रुजा २ वृद्धनाभौ [1]तुण्डिलतुण्डिभौ।
३ किलासी सिध्मलो४ऽन्धोऽदृक्५मूर्च्छाले मूर्त्तमूर्च्छितौ॥ ६१॥
६ शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च।
७ मायुः पित्तं ८ कफः श्लेष्मा ९ स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा॥ ६२॥
१० पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम्।
११ उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम्॥ ६३॥

---

१ न्युब्जः (त्रि), 'रोगसे कुबड़ा' का १ नाम है॥

२ वृद्धनाभिः, तुण्डिलः (+ तुन्दिलः), तुण्डिभः (+ तुन्दिभः। ३ त्रि), ढोंढर' अर्थात् 'कब्ज आदिके कारण बढ़े हुए नाभिवाले' के ३ नाम हैं॥

३ किलासी (= किलासिन्), सिध्मलः (२ त्रि), 'सिहुला, सेंहुआ या पपड़ीवाले रोगी' के २ नाम हैं॥

४ अन्धः, अदृक् (= अदृश्। २ त्रि), 'अन्धा, सूर' के २ नाम हैं॥

५ मूर्च्छालः, मूर्त्तः, मूर्च्छितः (३ त्रि), 'मूर्च्छा या मृगी रोगवाले' के ३ नाम हैं॥

६ शुक्रम्, तेजः (= तेजस्), रेतः (= रेतस्), बीजम् (+ वीजम्), वीर्यम्, इन्द्रियम् (६ न), 'वीर्य' अर्थात् 'मनुष्यके शरीरस्थ स्निग्ध तथा श्वेतवर्ण धातु' के ६ नाम हैं॥

७ मायुः (पु), पित्तम् (न), 'पित्त' के २ नाम हैं॥

८ कफः, श्लेष्मा (= श्लेष्मन्। २ पु), 'कफ' के २ नाम हैं॥

९ त्वक् (= त्वच्। + त्वचः, पु: + त्वचा, स्त्री), असृग्धरा (+ असृग्धारा। २ स्त्री), 'चमड़ा' के २ नाम हैं॥

१० पिशितम् तरसम्,[2] मांसम्, पललम्, क्रव्यम्, आमिषम् (६ न), 'मांस' के ६ नाम हैं॥

११ उत्तप्तम्, शुष्कमांसम् (२ न), वल्लूरम् (+ वल्लुरम्। त्रि), 'सूखे मांस' के ३ नाम हैं॥

---

१. 'तुन्दिलतुन्दिभौ' इति पाठान्तरम्। अत्र मूलपाठ एव समीचीनः, यतः 'तुण्डिरुन्न-तनाभिस्तुन्दिस्तु जठरः' इति क्षी० स्वा० उक्त्या वृद्धनाभियुक्तस्यैव पर्यायतौचित्यप्रतीतेः॥

२. अत्र नैरुक्ताः—'मां स भक्षयितामुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम्।
एतन्मांसस्य मांसत्वे निरुक्तं मुनिरब्रवीत्'॥ १॥ इति क्षी० स्वा॥

१ रुधिरेऽसृग्लोहितास्ररक्तक्षतजशोणितम् ।
२ बुक्काऽग्रमांसं ३ हृदयं हृद् ४ मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥
५ पश्चाद् ग्रीवाशिरा मन्या ६ नाडी तु धमनिः [1]शिरा ।
७ तिलकं क्लोम ८ मस्तिष्कं गोर्दं ९ किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥

---

१ रुधिरम् , असृक् (= असृज्), लोहितम् , अस्रम् , रक्तम् , क्षतजम् , शोणितम् (७ न), 'रक्त, खून' के ७ नाम हैं ॥

२ बुक्का (स्त्री । + बुक्का = बुक्कन् , पु । + बुक्का, वृक्का; २ स्त्री), अग्रमांसम् (न । + बुक्काग्रमांसम्, न) 'कलेजा' अर्थात् 'हृदयके भीतरवाले कमलके समानाकार मांस-पिण्ड—विशेष' के २ नाम हैं ॥

३ [2]हृदयम् , हृत् (= हृद् । २ न), 'हृदय' के २ नाम हैं । ("बुक्का······ [3] ४ नाम 'हृदय' के हैं, किसीका यह भी मत है") ॥

४ मेदः (= मेदस् । + मेदः । न) वपा, वसा (२ स्त्री), 'चर्बी' के ३ नाम हैं ॥

५ मन्या (स्त्री), 'गर्दनके पीछेवाली नस' का १ नाम है ॥

६ नाडी, धमनिः (= धमनी), शिरा (+ सिरा । ३ स्त्री), 'नस के ३ नाम हैं ॥

७ तिलकम्, क्लोम (= क्लोमन् । २ न), 'पेटमें जल रहनेके स्थान' के २ नाम हैं ॥

८ मस्तिष्कम् (+ मस्तिकम्), गोर्दम् (+ गोर्दः, पु । २ न), 'दिमाग, मस्तिष्क, माइण्ड' के २ नाम हैं ॥

९ किट्टम् (न), मलम् (पु न), 'नाक, कान आदिके [4]बारह मल' के २ नाम हैं ॥

---

१. "सिरा" इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—"पद्मकोशप्रतीकाशं रुचिरं चाप्यधोमुखम् ।
हृदयं तद्विजानीयाद्विश्वस्यायतनं महत्" ॥ १ ॥ इति ॥

३. 'पद्मकोशप्रतीकाशम्···' इत्यनुरोधादिदमेव समीचीनं प्रतिभाति ॥

४. तदुक्तं मनुना—'वसाशुक्रमसृङ्मज्जा मूत्रविड् घ्राणकर्णविट् ।
श्लेष्माश्रु दूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः' ॥ १ ॥ इति मनुः ५।१३५

१ अन्त्रं पुरीतद् २ गुल्मस्तु प्लीहा पुंस्य ३ थ वस्नसा ।
स्नायुः स्त्रियां ४ कालखण्डयकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥
५ सृणिका स्यन्दिनी लाला ६ दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।
७ 'नासामलं तु सिङ्घाणं ८ पिञ्जूषः कर्णयोर्मलम्' (१५)
९ मूत्रं प्रस्राव १० उच्चारावस्करौ शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥
[1]पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ स्त्रियौ ।

---

१ अन्त्रम् (+ आन्त्रम्), पुरीतत् (२ न), 'आँत' के २ नाम हैं ॥

२ गुल्मः, प्लीहा (= प्लीहन् । + प्लीहा = प्लीहा, स्त्री । २ पु), 'गुल्म रोग' अर्थात् 'हृदय की बायीं कोखमें होनेवाले मांस-पिण्ड-विशेष' के २ नाम हैं ॥

३ वस्नसा, स्नायुः (२ स्त्री), 'प्रत्येक अङ्ग-उपाङ्गके जोड़की नस' के २ नाम हैं ॥

४ कालखण्डम् (+ कालखञ्जम्), यकृत् (२ न), 'यकृत्' अर्थात् 'हृदयकी दाहिनी कोखमें होनेवाले मांस-पिण्ड-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ सृणिका (+ सृणीका), स्यन्दिनी, लाला (३ स्त्री), 'लार' के ३ नाम हैं ॥

६ दूषिका (+ दूषीका । स्त्री), 'कीचड़' का १ नाम है ॥

७ [नासामलम्, सिङ्घाणम् (२ न), 'नकटी, नेटा' अर्थात् 'नाककी मैल' के २ नाम हैं] ॥

८ [पिञ्जूषम् (न), 'खोंट' अर्थात् 'कानकी मैल' का १ नाम है ॥]

९ मूत्रम् (न), प्रस्रावः (पु), 'पेशाब' के २ नाम हैं ॥

१० उच्चारः, अवस्करः (२ पु), शमलम् , शकृत् , पुरीषम् (३ न),

अत्र मा० दी० तु 'कर्णविण्मूत्रविण्नखाः' इत्येवं तद्भिन्नमेव द्वितीयचरणमाहेत्यवधेयम् ॥ प्रसङ्गादेतेषां निर्गमस्थानानि गरुडपुराणोक्तानि लिख्यन्ते—

"द्वारैर्द्वादशभिर्भिन्नं किट्टं देहाद्बहिः स्रवेत् ।
कर्णाक्षिनासिका जिह्वा दन्ता नाभिर्नखा गुदम् ॥
गुह्यं शिरा वपुर्लोम मलस्थानानि चक्षते ॥ इति ग० पु० १५ । १०-११॥

१. "पुरीषं गूथं वर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ स्त्रियौ" इति "गूथं पुरीषं वर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ स्त्रियौ" इति च क्रमशः क्षी० स्वा० मा० दी० सम्मते पाठान्तरे ॥

१ स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री २ कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥
३ स्याच्छरीरास्थ्नि कङ्कालः ४ पृष्ठास्थ्नि तु कशेरुका ।
५ शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री ६ पार्श्वास्थनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥
७ अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनो ८ ऽथ कलेवरम् ।
गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥
कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ।
९ पादाग्रं प्रपदं १० पादः [1]पदङ्घ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

गूथम्, वर्चस्कम् (२ पु न), विष्ठा, विट् (=विश् । + विट् = विष् । २ स्त्री), 'विष्ठा, पाखाना' के ९ नाम हैं ॥

१ कर्परः (पु), कपालः (पु न) 'कपाल' के २ नाम हैं ॥

२ कीकसम् , कुल्यम् , अस्थि (३ न), 'हड्डी' के ३ नाम हैं ॥

३ (+ शरीरास्थि न), कङ्कालः (+ कङ्कः । पु), 'कङ्काल' ठठरी' का १ नाम है ॥

४ (+ पृष्ठास्थि न), कशेरुका (+ कशारुका । स्त्री), 'रीढ़' अर्थात् 'पीठके बीचकी हड्डी' का १ नाम है ॥

५ (+ शिरोऽस्थि न), करोटिः (+ करोटी । स्त्री), 'खोपड़ी' का १ नाम है ॥

६ (+ पार्श्वास्थि, न), पर्शुका (+ पर्शूः । स्त्री), 'पँजड़ी' का १ नाम है ॥

७ अङ्गम् (न), प्रतीकः, अवयवः, अपघनः (३ पु), 'शरीरके अङ्ग' के ४ नाम हैं । ('जैसे—हाथ, पैर, शिर, मुख,……') ॥

८ कलेवरम् , गात्रम् , वपुः (= वपुष्), संहननम् , शरीरम्, वर्ष्म (= वर्ष्मन् । ६ न), विग्रहः, कायः (२ पु), देहः (पु न), मूर्तिः, तनुः (+ तनुः = तनुस्), तनूः (३ स्त्री), 'शरीर, देह' के १२ नाम हैं ॥

९ पादाग्रम् , प्रपदम् (२ न), 'पैरका चौवा' अर्थात् 'पैरके आगेवाले हिस्से' के २ नाम हैं ॥

१० पादः, पत् (= पद् + पदः), अङ्घ्रिः (३ पु), चरणः (पु न), 'पैर' के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'पदोऽङ्घ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम्' इति क्षी० स्वा० व्याख्यानुसारि पाठान्तरम् ॥

१ तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ २ पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः ।
३ जङ्घा तु प्रसृता ४ जानूरुपर्वाऽष्ठीवदस्त्रियाम् ॥ ७२ ॥
५ सक्थि क्लीबे पुमानूरु ६ स्तत्सन्धिः पुंसि वङ्क्षणः ।
७ गुदं त्वपानं पायुर्ना ८ बस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥
९ कटो ना श्रोणिफलकं १० कटिः श्रोणिः ककुद्मती ।
११ पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः १२ क्लीबे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥
१३ कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे ।

---

१ घुटिका (स्त्री), गुल्फः (पु), 'पैरकी घुट्ठी' के २ नाम हैं ॥

२ पार्ष्णिः (पु), 'पैरकी घुट्ठीके नीचेवाले हिस्से' का १ नाम है ॥

३ जङ्घा, प्रसृता (२ स्त्री), 'जंघा' के २ नाम हैं ॥

४ जानु, ऊरुपर्वा (= ऊरुपर्वन् । २ न), अष्ठीवत् (पु न । भा० दी० मतसे ३ पु न), 'घुटना, ठेहुन' के ३ नाम हैं ॥

५ सक्थि (= सक्थिन् न), ऊरुः (पु), 'घुटनेके ऊपरवाले हिस्से' के २ नाम हैं ॥

६ वङ्क्षणः (पु), 'घुटना तथा उसके ऊपरके जोड़' का १ नाम है ॥

७ गुदम् , अपानम् (२ न), पायुः (पु), 'पाखानाके रास्ता' के २ नाम हैं ॥

८ बस्तिः (पु स्त्री) 'मूत्राशय' का १ नाम है ॥

९ कटः (पु), श्रोणिफलकम् (न, भा० दी०), कमरके दोनों बगल' के २ नाम हैं ॥

१० कटिः (+ कटी), श्रोणिः (+ श्रोणी), ककुद्मती (३ स्त्री), 'कमर' के ३ नाम हैं । ('अन्याचार्योंके मतसे 'कटः,……' ५ नाम 'कमर' के हैं') ॥

११ नितम्बः (पु) 'स्त्रियों के चूतड़' का १ नाम है ॥

१२ जघनम् (न), 'स्त्रियोंकी जंघा' का १ नाम है ॥

१३ + कूपकः (पु), कुकुन्दरम् (+ ककुन्दरम् । न) 'चूतड़पर पृष्ठ-वंशके नीचेवाले गढ्ढे' के २ नाम हैं ॥

१ स्त्रियां स्फिचौ [1]कटिप्रोथाऽवुपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥
३ भगं योनिर्द्वयोः ४ शिश्नो मेढ्रो [2]मेहनशेफसी ।
५ मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः ६ पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥
७ [3]पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं ८ स्तनौ कुचौ ।
९ [4]चूचुकं तु कुचाग्रं स्याद् १० न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥

१ स्फिक् (=स्फिच्, स्त्री) कटिप्रोथः (+कटीप्रोथः, कटिः) प्रोथः, प्रोहः । पु), 'कुल्हा' अर्थात् 'कमरमें होने वाले मांस-पिण्ड के २ नाम हैं ॥

२ उपस्थः (पु न)' 'भग और लिंग' अर्थात् 'स्त्री या पुरुषके पेशाब करनेके रास्ता' का १ नाम है ॥

३ भगम् (न), योनिः (पु स्त्री) 'स्त्रीके पेशाब करनेके रास्ता' के २ नाम हैं ॥

४ शिश्नः, मेढ्रः (२ पु), मेहनम्, शेफः (=शेफस्। शेपः =शेपस्, शेफः =शेफ, शेपः =शेप[5] । २ न), 'शिश्न, पुरुषके पेशाब करनेके रास्ता' के ४ नाम हैं ॥

५ मुष्कः, अण्डकोशः (+अण्डकोषः), वृषणः (३ पु), 'अण्डकोश, फोता' के ३ नाम हैं ॥

६ त्रिकम् (न), 'पीठकी रीढ़के आधारपर तीन हड्डियोंके जोड़वाले स्थान-विशेष' का १ नाम है ॥

७ पिचण्डः (+पिचिण्डः), कुक्षिः (२ पु), जठरम् (+पु), उदरम्, तुन्दम् (३ न), 'पेट' के ५ नाम हैं ॥

८ स्तनः, कुचः (+पयोधरः वक्षोजः । २ पु), 'स्तन' के २ नाम हैं ॥

९ चूचुकम् (+चुचुकम् । +पु), कुचाग्रम् (२ न) 'स्तनके ऊपर वाले काले भाग' के २ नाम हैं ॥

१० क्रोडम् (न स्त्री), भुजान्तरम् (+अङ्कम् । न), 'गोदी' के २ नाम हैं ॥

१. 'कटीप्रोथावुपस्थो' इति पाठान्तरम् । पृथङ् नामद्वयमिति मते तु 'कटी प्रोथावुपस्थो' इति पाठान्तरम् ॥ २. मेहनशेपसी' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'पिचिण्डकुक्षी' इति पाठान्तरम् ॥ ४. चुचुकं तु' इति पाठान्तरम् ॥
५. 'शेफशेप' शब्दयोरदन्तत्वादेव 'शेपपुच्छलाङ्गूलेषु शुनः' (वा० ३९०१) इति वार्तिककृतिरन्यथा सान्तत्वे मध्ये विसर्गस्यापि वक्तुमौचित्यम् ॥

१ तद्गुप्र
३ उद्गा
५ स्वपि
७ गुदं
९ कटे
११ पः
१३ ह

१ [illegible]
३ [illegible]
५ [illegible]
७ [illegible]
[illegible] ८ [illegible]
[illegible]

[illegible]), [illegible] ([illegible]
[illegible] ([illegible] '[illegible]' के हैं, [illegible]
[illegible] है') ॥

[illegible] ([illegible]) '[illegible]' का [illegible] नाम है ॥

[illegible] ([illegible]), [illegible] ([illegible]), [illegible] '[illegible]' के [illegible] नाम हैं ॥

[illegible]) '[illegible] के [illegible]' का [illegible] नाम है ॥

[illegible] ([illegible]), [illegible] (+ [illegible]) '[illegible]' के [illegible] ([illegible]), '[illegible]' अर्थात् '[illegible]' [illegible] नाम हैं ॥

[illegible] (+ [illegible]), [illegible] ([illegible] '[illegible]' के [illegible] नाम हैं ॥

[illegible] (+ [illegible]), [illegible] ([illegible]), '[illegible]' के [illegible] नाम हैं ॥

[illegible] (+ '[illegible]) [illegible] (+ [illegible] '[illegible]' के [illegible] नाम हैं ॥

---

१. '[illegible]' [illegible] ॥

२. '[illegible]' [illegible] ॥

३. '[illegible]' [illegible] ॥

१ उरो वत्सं च वक्षश्च २ पृष्ठं तु चरमं तनोः ।
३ स्कन्धो भुजशिरोंऽसोऽस्त्री ४ सन्धी तस्यैव जत्रुणी ॥ ७८ ॥
५ बाहुमूले उभे कक्षौ ६ पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।
७ मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री ८ द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥
भुजबाहू प्रवेष्टो दोः [1]स्यात् ९ कफोणिस्तु कूर्परः ।

१ उरः (= उरस्), वत्सम् , वक्षः (= वक्षस् । ३ न), 'छाती' के ३ नाम हैं । ('क्रोडम् ,·······' ५ नाम 'छाती' के हैं, यह अन्य आचार्योंका मत है') ॥

२ पृष्ठम् (न), 'पीठ' का १ नाम है ॥

३ स्कन्धः (पु), भुजशिरः (= भुजशिरस् , न), अंसः (पु न), 'कन्धे' के ३ नाम हैं ॥

४ जत्रु (न) 'कन्धे के जोड़' का १ नाम है ॥

५ बाहुमूलम् (न), कक्षः (+ कक्षः । पु), 'काँख' के २ नाम हैं ॥

६ पार्श्वम् (न पु), 'कोख' अर्थात् 'काँखके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥

७ मध्यमम् , अवलग्नम् (+ विलग्नम् । २ न), मध्यः (पु न । + ३ पु न[2]) 'शरीरके मध्य भाग' के ३ नाम हैं ॥

८ भुजः, बाहुः (+ बाहः । २ पु स्त्री), प्रवेष्टः, दोः (= दोस् । + दोषा, स्त्री भागु० । २ पु), 'बाँह' के ४ नाम हैं ॥

९ कफोणिः (+ [3]कफणिः, कपोणिः । पु स्त्री) कूर्परः (+ कर्परः । पु) 'केहुनी' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'स्यात्कपोणिस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. '—मध्यमो मध्यजेऽन्यवत् । पुमान् स्वरे मध्यदेशेऽप्यवलग्ने तु न स्त्रियाम्' (मेदि० पृ० ११८ श्लो० ४९-५०) इति 'अवलग्नोऽस्त्रियां मध्ये त्रिषु स्याल्लग्नमात्रके' (मेदि० पृ० १०० श्लो० ५९) इति मेदिन्युक्तेः 'अस्त्री' इत्यस्य त्रिभिः सम्बन्धः समीचीनः प्रतिभातीत्यवधेयम् ॥

३. 'कफोणिः कफणिर्द्वयोः' इति शब्दार्णवात् 'कफणिः कूर्परः स्मृतः'(अभि० रत्न० २ ३७८) इति हलायुधाच्चेत्यवधेयम् ॥

१ अस्योपरि प्रगण्डः स्यात् २ प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥
३ मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः ।
४ पञ्चशाखः [1]शयः पाणि ५ स्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥
६ अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः ७ पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी ।
मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥
८ [2]पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।
९ प्रादेश—

१ प्रगण्डः (पु) 'केहुनीके ऊपरवाले भाग' का १ नाम है ॥

२ प्रकोष्ठः (पु । + न), 'केहुनीके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥

३ करभः (पु), 'हाथकी कलाईसे कनिष्ठातकवाले बाहरी मांसल भाग' का १ नाम है ॥

४ पञ्चशाखः, शयः (+ शमः, शवः), पाणिः (३ पु), 'हाथ' के ३ नाम हैं ॥

५ तर्जनी, प्रदेशिनी (+ प्रदेशनी । २ स्त्री), 'तर्जनी' अर्थात् 'अँगूठेके पासवाली अंगुली' के २ नाम हैं ॥

६ अङ्गुली (+ अङ्गुलिः, अङ्गुरिः, २ स्त्री; अङ्गुलः, पु), करशाखा (२ स्त्री), 'अङ्गुली' के २ नाम हैं ॥

७ अङ्गुष्ठः (पु), प्रदेशिनी (+ प्रदेशनी), मध्यमा, [3]अनामिका, कनिष्ठा (४ स्त्री), अंगूठेसे लेकर कनिष्ठा तकवाली प्रत्येक अङ्गुली' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

८ पुनर्भवः (+ पुनर्नवः), कररुहः (२ पु), नखः, नखरः (+ त्रि । २ पु न), 'नाखून' नँह' के ४ नाम हैं ॥

९ प्रादेशः (पु), 'फैलाये हुए तर्जनी और अँगूठे बीचके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

---

१. 'शमः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशनी' इति पाठान्तरम् । नाममाला तु 'पाणिः शयः शमी हस्तः' इत्युभयं पपाठ' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'पुनर्नवः' इति पाठान्तरम् ॥

३. अनया ब्रह्मणश्शिरश्छेदनादपवित्रत्वेन नामग्रहणायोग्यतया 'अनामिका' इति नाम्नः प्रसिद्धिः । अत एव यज्ञाद्यवसरेऽस्यां दर्भमयं पवित्रं धार्यत इत्यवधेयम् ॥

—१ ताल२गोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥
३ अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः ।
४ पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृताङ्गुलौ ॥ ८४ ॥
५ [1]द्वौ संहतौ सिंहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ।
६ [2]पाणिनिकुब्जः प्रसृति ७ स्तौ युतावञ्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥
८ प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो ९ मुष्ट्या तु बद्धया ।
सरत्निः स्या १० दरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

---

१ तालः (पु), 'फैलाये हुए मध्यमा और अँगूठेके बीचके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

२ गोकर्णः (पु), 'फैलाये हुए अनामिका और अँगूठेके बीचके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

३ वितस्तिः (पु स्त्री), द्वादशाङ्गुलः (भा० दी०, पु), 'बित्ता' अर्थात् फैलाये हुए कनिष्ठा और अँगूठेके बीचके प्रमाण-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ चपेटः (+ चर्पटः, पु, + चपेटा, चपेटिका; २ स्त्री), प्रतलः (+ तलः, तालः), प्रहस्तः (३ पु), 'थप्पड़, चटकन, के ३ नाम हैं ॥

५ सिंहतलः (+ संहतलः, सिंहतालः), प्रतलः (२ पु) 'अङ्गुली फैलाये हुए दोनों हाथोंको सटाने' के २ नाम हैं ॥

६ प्रसृतिः (स्त्री । + प्रसृतः, पु), 'टेढ़े किये (समेटे) हुए हाथ' का १ नाम है ॥

७ अञ्जलिः (पु), 'अञ्जलि' का १ नाम है ॥

८ हस्तः (पु) 'एक हाथ' अर्थात् 'दो बित्ता या चौबीस अङ्गुलके प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

९ रत्निः (+ सरत्निः । पु स्त्री), 'निमूठ (मुट्ठी बाँधकर) हाथसे नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

१० अरत्निः (स्त्री पु), 'कनिष्ठा अङ्गुलीको फैलाये हुए मुट्ठी बांधकर हाथसे नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

---

१. द्वौ संहतौ सिंहतलः प्रतलौ' इति मुकु० सम्मतं पाठान्तरम् । 'द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ' इति च पाठान्तरम् ॥ २. 'पाणिनिकुब्जः' इत्यपपाठः' इति क्षी० स्वा० ॥

१ व्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम्।
२ ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥
३ कण्ठो गलो ४ ऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि।
५ कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा ६ ऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥
७ वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम्।
८ क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥
९ ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी।

---

१ व्यामः (पु), 'दोनों तरफ दोनों हाथोंको फैलाकर नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है ॥

२ पौरुषम् (त्रि), 'पोरसासे नापे हुए प्रमाण-विशेष' का १ नाम है। ('खड़े होकर हाथको ऊपर उठानेपर जो प्रमाण होता है, उसे 'पोरसा' कहते हैं, यह ४½ हाथका होता है') ॥

३ कण्ठः, गलः, (२ पु), 'कण्ठ' के २ नाम हैं ॥

४ ग्रीवा, शिरोधिः, कन्धरा (३ स्त्री), 'गर्दन' के ३ नाम हैं ॥

५ कम्बुग्रीवा (स्त्री), 'शङ्खके समान तीन रेखावाली गर्दन' का १ नाम है ॥

६ अवटुः, घाटा, कृकाटिका (३ स्त्री), 'घाँटी' के ३ नाम हैं। ('भा० दी० मतसे 'गर्दनके ऊपरवाले भाग' के और स्वा० मु० मतसे 'गर्दनके पीछेवाले भाग' के ये ३ नाम हैं') ॥

७ वक्त्रम्, आस्यम्, वदनम्, तुण्डम्, आननम्, लपनम्,[1] मुखम् (७ न), 'मुखके बिल' के और उपचारसे 'मुखमात्र' के ७ नाम हैं ॥

८ घ्राणम् (न), गन्धवहा, घोणा, नासा (+ नसा, नस्या), नासिका (+ कुरथा, शिङ्घाणी। ४ स्त्री), 'नाक' के ५ नाम हैं ॥

९ ओष्ठः, अधरः, रदनच्छदः, (३ पु), दशनवासः (= दशनवासस्, न), 'ओठ' के ४ नाम हैं ॥

---

१. मुखशब्दस्य साधुत्वप्रकारो निरुक्ते प्रोक्तस्तथा हि—
'प्राक्खनो मुडुदात्तश्च ततोऽच्च प्रत्ययो भवेत्।
प्रजासृजा यतः खातं तस्मादाहुर्मुखं बुधाः' ॥ १ ॥ इति ॥

१ अधस्ताच्चिबुकं २ गण्डौ कपोलौ ३ तत्परा हनुः ॥ ९० ॥
४ रदना दशना दन्ता रदाः ५ तालु तु काकुदम् ।
६ रसज्ञा रसना जिह्वा ७ प्रान्तावोष्ठस्य[1] सृक्किणी ॥ ९१ ॥
८ ललाटमलिकं गोधिः ९ ऊर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ।
१० कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं ११ तारकाऽक्ष्णः कनीनिका ॥ ९२ ॥
१२ लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी ।
दृग्दृष्टी—

---

१ चिबुकम् (न), 'ओठ और ठुड्डीके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥

२ गण्डः, कपोलः (+कटः। २ पु), 'गाल' के २ नाम हैं ॥

३ हनुः (स्त्री), 'दाढ़ी, ठुड्डी' का १ नाम है ॥

४ रदनः, दशनः, दन्तः (+दंष्ट्रा, स्त्री), रदः (४ पु), 'दाँत' के ४ नाम हैं ॥

५ तालु, काकुदम् (२ न), 'तालु' के २ नाम हैं ॥

६ रसज्ञा, रसना (+रशना। +न[2]), जिह्वा (+लोला। ३ स्त्री) 'जीभ' के ३ नाम हैं ॥

७ सृक्किणी (=सृक्किणी स्त्री। +सृक्किणी=सृक्विणी स्त्री; सृक्कि=सृक्किन्, =सृक्कि; सृक=सृकन्; सृकम्=सृक, सृक्कि=सृक्किन्, =सृक्कि; सृक्क=सृक्कन्; सृक्कम्=सृक्क; ८ न), 'ओठके दोनों किनारों' का १ नाम है ॥

८ ललाटम्, अलिकम् (=अलीकम्, भालम्। २ न), गोधिः (पु), 'ललाट' के ३ नाम हैं ॥

९ भ्रूः (स्त्री), 'भौंह' का १ नाम है ॥

१० कूर्चम् (न पु), 'दोनों भौंहके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

११ तारका, कनीनिका (भा० दी०, पी० स्वा०। २ स्त्री) 'आँखकी पुतली' के २ नाम हैं ॥

१२ लोचनम् (+विलोचनम्), नयनम्, नेत्रम्, ईक्षणम्, चक्षुः (=चक्षुस्), अक्षि (६ न), दृक् (=दृश्), दृष्टिः (२ स्त्री), 'आँख' के ८ नाम हैं ॥

---

१. "सृक्विणी" इति पाठान्तरम् ॥

२. यथाऽऽह श्रीहर्षः—"विततेन दूने रसने…" इति नैषधः ॥ ३।९४ ॥

—१ वास्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च ॥ ९३ ॥
२ अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ ३ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।
४ कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥
५ उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ।
६ चिकुरः कुन्तलो वालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥
७ तद्वृन्दे कैशिकं कैश्य ८ मलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।
९ ते ललाटे भ्रमरकाः १० काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

---

१ अस्रु, नेत्राम्बु, रोदनम्, अस्रम्, अश्रु (+ बाष्पम् । ५ न), 'आँसू' के ५ नाम हैं ॥

२ अपाङ्गः (पु), 'आँखोंके किनारेवाले भाग' का १ नाम है ॥

३ कटाक्षः (पु), (+ अपाङ्गदर्शनम्, न), 'कटाक्ष' का १ नाम है ॥

४ कर्णः, शब्दग्रहः (२ पु), श्रोत्रम्, श्रुतिः (स्त्री) श्रवणम्, श्रवः (= श्रवस् । शेष ३ न), 'कान' के ६ नाम हैं ॥

५ उत्तमाङ्गम् (+ वराङ्गम्), शिरः (= शिरस् । + शिरः = शिर,[१] पु), शीर्षम् (३ न), मूर्धा (= मूर्धन्, पु); मस्तकः (पु न), 'सिर मस्तक' के ५ नाम हैं ॥

६ चिकुरः (+ चिकूरः, चिहुरः[२]), कुन्तलः, वालः (+ बालः), कचः, केशः, शिरोरुहः (+ शिरसिजः, मूर्धजः । ६ पु), 'केश, बाल' के ६ नाम हैं ॥

७ कैशिकम्, कैश्यम् (२ न), 'केशके समूह' का १ नाम है ॥

८ अलकः, चूर्णकुन्तलः (२ पु), 'अँगूठिया बाल' के २ नाम हैं ॥

९ भ्रमरकः (पु), 'काकुल' अर्थात् 'घुलबुली यानी ललाटपर लटके हुए बाल' का १ नाम है ।

१० [३]काकपक्षः, शिखण्डकः (+ शिखाण्डकः । २ पु), 'काकपक्ष' अर्थात् 'लड़कोंका जूड़ा, जुलुफी, शिखा-सामान्य के २ नाम हैं ॥

---

१. "शिरोवाची शिरोऽदन्तो रजोवाची रजस्तथा" इत्युक्तेरिति बोध्यम् ॥

२. 'कुन्तला मूर्धजाः शस्ताश्चिकुराश्चिहुरास्तथा' इति दुर्गोक्तेः । किन्तु 'चिहुर'शब्दस्य प्राकृत एव बाहुल्येन प्रयोग उपलभ्यते न तु संस्कृत इत्यवधेयम् ॥

३. "क्षत्रियाणां चूडा 'काकपक्ष' इति गौडः" इति क्षी० स्वा० ॥

१ [1]कबरी केशवेशोऽ २थ धम्मिल्लः संयताः कचाः ।
३ शिखा चूडा केशपाशी ४ [2]व्रतिनस्तु जटा सटा ॥ ९७ ॥
५ वेणिः प्रवेणी ६ शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ।
७ पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ॥ ९८ ॥
८ तनूरुहं रोम लोम ९ तद्वृद्धौ [3]श्मश्रु पुंमुखे ।
१० आकल्पवेषौ नेपथ्यं—

---

१ कबरी (+ कवरी । स्त्री), केशवेशः (+ केशवेषः । पु), 'बालके रचना-विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ धम्मिल्लः (पु), 'पटिया, जूड़ा' अर्थात् 'बाँधे हुए स्त्रियोंके बालके रचना-विशेष' का १ नाम है ॥

३ शिखा, चूडा, केशपाशी (३ स्त्री), 'शिखा, चुटिया, चुन्नी'के ३ नाम हैं ॥

४ जटा, सटा (२ स्त्री), 'जटा' अर्थात् 'आपसमें सटे हुए बाल या ऋषियोंकी जटा या जटामात्र' के २ नाम हैं ॥

५ वेणिः (+ वेणी), प्रवेणी (+ प्रवेणिः । २ स्त्री), 'बालकी गुथी हुई चोटी' के २ नाम हैं ॥

६ शीर्षण्यः, शिरस्यः (२ पु), 'निर्मल बाल' के २ नाम हैं ॥

७ पाशः, पक्षः, हस्तः (३ पु), ये तीन शब्द 'कच' शब्दसे परे रहने पर अर्थात् 'कचपाशः,-कचपक्षः, कचहस्तः, (३ पु), या कच (केश) के पर्याय-वाचक शब्दसे परे रहने पर अर्थात् केशपाशः, केशपक्षः, केशहस्तः, बालपाशः, बालपक्षः, बालहस्तः (६ पु), इत्यादि नाम 'केश-समूह' के हैं ॥

८ तनूरुहम् , रोम (= रोमन्), लोम (= लोमन् । ३ न), 'रोएं' के ३ नाम हैं ॥

९ श्मश्रु (+ स्मश्रु । न), 'दाढ़ीके बढ़े हुए बाल' का १ नाम है ॥

१० आकल्पः, वेषः (+ वेशः । २ पु), नेपथ्यम् (न । + पु), 'आभूषण आदिसे उत्पन्न शोभा' के ३ नाम हैं ॥

---

१. "कवरी केशवेषोऽथ" इति पाठान्तरम् ॥

२. "व्रतिनः सा जटा सटा" इति पाठान्तरम् । अत्र 'सा' शब्दः केशार्थकः ।

३. "स्मश्रु पुंमुखे" इति पाठान्तरम् ॥

—१ प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥

२ दशैते त्रिष्व ३ लङ्कर्ताऽलङ्करिष्णुश्च ४ मण्डितः ।
प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥१००॥
५ विभ्राड्भ्राजिष्णुरोचिष्णू ६ भूषणं स्यादलङ्क्रिया ।
७ अलङ्कारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥१०१॥
मण्डनं चा ८ थ [1]मुकुटं किरीटं पुन्नपुंसकम् ।
९ चूडामणिः शिरोरत्नं—

---

१ प्रतिकर्म (+प्रतिकर्मन्), प्रसाधनम् (२ न), 'तिलक, फूल आदिसे सँवारने' के २ नाम हैं। 'आकल्पः……' ५ नाम एकार्थक हैं, यह भी कई एक आचार्यों का मत [2]है') ॥

२ यहाँ से लेकर आगेवाले दश शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ अलङ्कर्ता (+अलङ्कर्तृ), अलङ्करिष्णुः (+मण्डनः । ३ त्रि), 'अलङ्कृत (सुशोभित) करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ मण्डितः, प्रसाधितः, अलङ्कृतः, भूषितः, परिष्कृतः (+परिस्कृतः । ५ त्रि), 'आभूषण इत्यादिसे सुशोभित' के ५ नाम हैं ॥

५ विभ्राट् (+विभ्राज्), भ्राजिष्णुः, रोचिष्णुः (३ त्रि), 'आभूषण इत्यादिसे अधिक शोभनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

६ भूषणम् (न । + भूषा, स्त्री), अलङ्क्रिया (स्त्री), 'आभूषण इत्यादिसे सुशोभित करने' के २ नाम हैं ॥

७ अलङ्कारः, आभरणम्, परिष्कारः (+परिस्कारः । १ ला और ३ रा पु), विभूषणम् (+भूषणम्), मण्डनम् (शेष ३ न), 'आभूषण, गहना, के ५ नाम हैं ॥

८ मुकुटम् (+मकुटम् । न), किरीटम् (पु न), 'मुकुट' के २ नाम हैं ॥

९ चूडामणिः (+शिरोमणिः । पु), शिरोरत्नम् (न), 'शिरोमणि' के २ नाम हैं ॥

---

१. मकुटं किरीटं' इति पाठान्तरम् ॥

२. इदमसत्—वेषो हि वस्त्रालङ्करणप्रसाधनैरङ्गशोभा । प्रसाधनं तु समालम्भनं तिलकपत्रभङ्गादिना (अङ्गशोभा) इति क्षी० स्वा० ॥

—१ तरलो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥
२ बालपाश्या पारितथ्या ३ पत्त्रपाश्या ललाटिका ।
४ कर्णिका तालपत्त्रं स्यात् ५ कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥
६ ग्रैवेयकं कण्ठभूषा ७ लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।
८ स्वर्णैः प्रालम्बिका ९ ऽथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥
१० हारो मुक्तावली ११ देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

---

१ तरलः (+ नायकः । पु) 'हारका सुमेरु' अर्थात् 'हार या माला के बीचवाले बड़े दाने' का १ नाम है ॥

२ वालपाश्या (+ बालपाश्या), पारितथ्या (२ स्त्री), 'स्त्रियोंकी चोटी या जूड़ामें लगानेके लिये सोने आदिकी पट्टी' (भूषण-विशेष) के २ नाम हैं ॥

३ पत्त्रपाश्या, ललाटिका (२ स्त्री), 'बन्दी, बेना आदि ललाटके भूषण' के २ नाम हैं ॥

४ कर्णिका (स्त्री), तालपत्त्रम् (+ ताडपत्त्रम् । न), 'कनफूल, ऐरन, तरकी, झूमक आदि कानके भूषण' के २ नाम हैं ॥

५ कुण्डलम्, कर्णवेष्टनम् (२ न), 'कुण्डल' के २ नाम हैं । ('कुण्डल' और 'कर्णिका'में यह भेद है कि 'कुण्डल'को स्त्री-पुरुष दोनों पहनते हैं और 'कर्णिका' को केवल स्त्रियाँ ही पहनती हैं') ॥

६ ग्रैवेयकम् (+ ग्रैवेयम्, ग्रैवम्, । न), कण्ठभूषा (स्त्री), 'हँसुली, कण्ठा, टीक आदि गलेके आभूषण' के २ नाम हैं ॥

७ लम्बनम् (न), ललन्तिका (स्त्री), 'गलेसे थोड़ा नीचे लटकनेवाले भूषण' के २ नाम हैं ॥

८ प्रालम्बिका (स्त्री), 'गलेसे थोड़ा नीचे लटकनेवाले सुवर्णके भूषण (सोनेकी हलकी सिकड़ी आदि)' का १ नाम है ॥

९ उरःसूत्रिका (स्त्री), 'मोतीके हार' का १ नाम है ॥

१० हारः (पु), मुक्तावली (स्त्री), 'हार' के २ नाम हैं ॥

११ देवच्छन्दः (पु), शतयष्टिका (स्त्री । आ० दो०) 'सौ लड़ीवाले हार' के २ नाम हैं ॥

१ हारभेदा[1] यष्टिभेदाद् गुच्छगुच्छार्द्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥
अर्द्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ।
२ सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥
३ आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम् ।

---

१ गुच्छः (+ गुत्सः, गुत्स्यः), गुच्छार्द्धः (+ गुत्सार्द्धः गुत्स्यार्द्धः), गोस्तनः, अर्द्धहारः, माणवकः (५ पु), एकावली, एकयष्टिका, (२ स्त्री), ये ७ 'हारोंके भेदविशेष' हैं । ('इनमें बत्तीस लड़ीके हारका **गुच्छ**, चौबीस लड़ीके हारका **गुच्छार्द्ध**, चार लड़ीके हारका **गोस्तन**, बारह लड़ीके हारका **अर्द्धहार**, बीस लड़ीके हारका **माणवक** और एक लड़ीके हारका **एकावली, एकयष्टिका** [2]नाम हैं') ॥

२ नक्षत्रमाला (स्त्री), 'सत्ताइस मोतियोंके हार' का १ नाम है ॥

३ आवापकः, पारिहार्यः (२ पु), कटकः, वलयः (२ पु न), **'पहुँची, कड़ा आदि हाथके भूषण'** के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'यष्टिभेदाद् गुत्सगुत्सार्द्धगोस्तनाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. अत्र क्षी० स्वा०—'अन्ये त्वाहुः—'द्वात्रिंशल्लतो गुच्छो गुच्छाच्छादकत्वात् । चत्वारिंशल्लतो गोस्तनो लम्बमानत्वात्, गोपुच्छोऽपि । चतुःपञ्चाशल्लतोऽर्द्धहारो देवच्छन्दार्द्धत्वात् । विंशल्लतो माणवकोऽल्पत्वात्' इति' इत्याह ॥ अभिधानचिन्तामणौ हेमचन्द्राचार्यपादैरुक्ता हारभेदाः प्रसङ्गादुच्यन्ते—

'देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ।
तदर्द्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ॥ १ ॥
अर्द्धं रश्मिः कलापोऽस्य द्वादश त्वर्द्धमाणवः ।
द्विर्द्वादशार्द्धगुच्छः स्यात्पञ्च हारफलं लताः ॥ २ ॥
अर्द्धहारश्चतुःषष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ।
अपि गोस्तनगोपुच्छावद्र्धमद्र्धं यथोत्तरम् ॥ ३ ॥
इति हारयष्टिभेदादेकावल्येकयष्टिका ।
कण्ठिकाऽप्यथ नक्षत्रमाला तत्संख्यमौक्तिकैः' ॥ ४ ॥
इति अभि० चिन्ता० ३।३२२—३२६

अन्ये त्वेवमाहुः—'चतुःषष्टिलतो हारोऽस्माद्धीना यथोत्तरम् ।
रश्मिः कलापो माणवकोऽर्द्धहारोऽर्द्धगुच्छकः ॥ १ ॥
कलापच्छन्दो मन्दरः स्याद् गुच्छः सप्तयष्टिकः' । इति ।

अत्र केचित् 'रश्मिकलापो' इति वा पठित्वैकं नामेत्याहुः । क्रमतयाऽवगमाय चक्रं द्रष्टव्यम् ॥

विविधमतेन हाराणां संज्ञाया यष्टिसंख्यायाश्च बोधकचक्रम्

क्रमागतसंख्या	हारसंज्ञाः	हैमोक्तयष्टि-संख्याः	भा० दी० उक्ताः यष्टिसंख्याः	मही० उक्ताः यष्टिसंख्याः	क्षी० स्वा० मते अन्योक्ता यष्टि-संख्याः	अन्योक्ताः यष्टिसंख्याः
१	देवच्छन्दः	१००	❀	❀	१०८	❀
२	इन्द्रच्छन्दः	१००८	❀	❀	❀	❀
३	विजयच्छन्दः	५०४	❀	❀	❀	❀
४	हारः	१०८	३४	❀	❀	६४
५	रश्मिकलापः	५४	❀	❀	❀	❀
६	अर्द्धमाणवः	१२	❀	❀	❀	❀
७	अर्द्धगुच्छः	२४	२४	२४	❀	२४
८	हारफलम्	५	❀	❀	❀	❀
९	अर्द्धहारः	६४	❀	१२	५४	३२
१०	गुच्छः	३२	३२	३२	३२	७०
११	माणवः	१६	२०	२०	२०	४०
१२	मन्दरः	८	❀	❀	❀	८
१३	गोस्तनः	४	४	४	४०	❀
१४	गोपुच्छः	२	❀	❀	४०	❀
१५	एकावली	१	१	१	१	❀
१६	नक्षत्रमाला	२७ मौ०	२७ मौ०	२७ मौ०	२७ मौ०	❀
१७	रश्मिः	❀	❀	❀	❀	५६
१८	कलापः	❀	❀	❀	❀	४८
१९	कलापच्छन्दः	❀	❀	❀	❀	१६

१ केयूरमङ्गदं तुल्ये २ अङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥
३ साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा स्यात् ४ कङ्कणं करभूषणम् ।
५ स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥
क्लीबे सारसनं चाऽथ ६ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु ।
७ पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥
हंसकः पादकटकः ८ [1]किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ।
९ त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनि :—

१ केयूरम् , अङ्गदम् (२ न), 'बिजायठ, बाजूबन्द, बहरखूटा' के २ नाम हैं ॥

२ अङ्गुलीयकम् (+ अङ्गुरीयकम् । न । + पु[2]), ऊर्मिका (स्त्री), 'अँगूठी' के २ नाम हैं ॥

३ अङ्गुलिमुद्रा (स्त्री,), 'नाम खुदी हुई अँगूठी' का १ नाम है ॥

४ कङ्कणम् , करभूषणम् (२ न), 'कङ्कण, ककना' के २ नाम हैं ॥

५ मेखला, काञ्ची, सप्तकी, रशना (+ रसना, सिञ्जनी । ४ स्त्री), सारसनम् (न), [3]'स्त्रियोंकी करधनी' के ५ नाम हैं । (यद्यपि १ लड़ीवाली करधनीकी 'काञ्ची', ८ लड़ीवालीकी 'मेखला', १६ लड़ीवालीकी 'रशना' और २५ लड़ीवालीकी 'कलाप' संज्ञा अन्य ग्रन्थोंमें कही गयी है, तथापि यहाँ उक्त भेदविशेषका आश्रय नहीं किया गया है) ॥

६ शृङ्खलम् (त्रि), 'पुरुषोंकी करधनी' का १ नाम है ॥

७ पादाङ्गदम् (न) तुलाकोटिः (+ तुलाकोटी । स्त्री), मञ्जीरः (+ मञ्जीलः), नूपुरः (२ पु न), हंसकः, पादकटकः (२ पु), 'पायजेब' के ६ नाम हैं ॥

८ किङ्किणी (+ किङ्किणिः, कङ्किणी), क्षुद्रघण्टिका (२ स्त्री), 'घूघुर' के २ नाम हैं ॥

९ वस्त्रयोनिः (स्त्री), 'जिनके कपड़े बनते हों उन छाल, फल, कृमि और रोएं' का १ नाम है । ('तीसी, केला आदि के छालसे, कपास

१. 'कङ्किणी' इति पाठान्तरम् ॥
२. 'अयं मैथिल्यभिज्ञानं राघवस्याङ्गुरीयकः' (भट्टि ८।११८) इत्युक्तेरिति मुकुटः ॥
३. 'एकयष्टिर्भवेत्काञ्ची मेखला त्वष्टयष्टिका ।
रशना षोडश ज्ञेया कलापः पञ्चविंशकः' ॥ १ ॥
इत्युक्ता भेदास्त्विह नाश्रिता इत्यवधेयम् ॥

१ दश त्रिषु ॥ ११० ॥

२ वाल्कं क्षौमादि ३ फालं तु कार्पासं बादरं च तत् ।

४ कौशेयं कृमिकोशोत्थं ५ राङ्कवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥

आदिके फलसे, रेशमवाले कृमि (कीड़े) के कोएसे और भेंड़, दुम्बा भेंड़ा, मृग आदिके रोएंसे कपड़े बनते हैं; अतः 'ऊन छाल, फल, कृमि और रोएं' का 'वस्त्रयोनिः (स्त्री), यह १ नाम है") ॥

१ यहांसे दश शब्द त्रिलिङ्ग हैं । ("वाल्कम्, क्षौमम्, फालम्, कार्पासम्, बादरम्, कौशेयम्, राङ्कवम्, अनाहतम्, निष्प्रवाणि, तन्त्रकम्' क्षी० स्वा० भा० दी० मतसे ये १० शब्द त्रिलिङ्ग हैं। वाल्कम् क्षौमम् (न[1]) फालम्, कार्पासम्, बादरम्, कौशेयम्, कृमिकोशोत्थम्, राङ्कवम्, मृगरोमजम्, अनाहतम्, निष्प्रवाणि, तन्त्रकम् ('च' शब्दसे इसका संग्रह हुआ है), सुभूति और महेश्वरके मतसे शेष ११ शब्द त्रिलिङ्ग हैं") ॥

२ वाल्कम्, क्षौमम् (+ न । २ त्रि), 'तिसीवट या केले आदिके छालसे बने हुए कपड़े' के २ नाम हैं ॥

३ फालम्, कार्पासम्, बादरम् (+ बादरम् । ३ त्रि), 'कपास इत्यादिके फलसे बने हुए कपड़े' अर्थात् 'सूती कपड़े' के ३ नाम हैं ॥

४ कौशेयम्, कृमिकोशोत्थम् (भा० दी०, क्षी० स्वा० । + कृमिकोषोत्थम् । २ त्रि), 'पीताम्बर आदि रेशमी कपड़ा' अर्थात् 'रेशमवाले कीड़ोंके कोएके बने सूतसे बुने हुए कपड़े' के २ नाम हैं ॥

५ राङ्कवम्, मृगरोमजम् (भा० दी०, क्षी० स्वा० । २ त्रि), 'दुशाला, शाल, अलवान, कम्बल आदि ऊनी कपड़ा' अर्थात् 'मृग (भेंड़ा आदि पशु) के रोएंके बने सूतसे बुने हुए कपड़े' के या 'रङ्कुनामक मृग-विशेषके रोएंके बने सूतसे बुने हुए कपड़े' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'क्षौमं दुकूलं स्याद् द्वे तु' (२।६।११३) इत्यत्र 'दुकूल'शब्दसाहचर्यात् 'क्षौमं' क्लीबमेवेत्याशयः। अत एव 'कृमिकोशोत्थ-मृगरोमज'शब्दयोरपि पर्यायता, 'तन्त्रोक्त'शब्दस्यैकादशसङ्ख्यकता च सिध्यति । स्वा० भा० दी० मते तु 'कृमिकोशोत्थ-मृगरोमज'शब्दयोर्न पर्यायता, 'क्षौम' शब्दश्च त्रिलिङ्ग एव, अत एव 'दश त्रिषु' इति ग्रन्थकारोक्तिः संगच्छते इति बोध्यम् ॥

१ अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ।
२ तस्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२॥
३ पत्त्रोर्णं धौतकौशेयं ४ बहुमूल्यं महाधनम् ।
५ क्षौमं दुकूलं स्याद् ६ द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ॥११३॥
७ स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य [1]दशाः स्युर्वस्तयो द्वयोः ।
८ दैर्घ्यमायाम [2]आरोहः—

१ अनाहतम् (+ अहतम्), निष्प्रवाणि, तन्त्रकम् (भा० दी, क्षी० स्वा० । ३ त्रि), नवाम्बरम् (न), भा० दी० क्षी० स्वा० के मतसे 'जो पहना, धुलाया या फटा हुआ नहीं हो उस कपड़े' के और महेश्वरके मतसे 'कोरे कपड़े' के ४ नाम हैं ॥

२ उद्गमनीयम् (न), 'धुलाये हुए कपड़े' का नाम है । ('धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्' यहाँ पर 'युग' [3]शब्द अविवक्षित है') ॥

३ पत्त्रोर्णम् (न), धौतकौशेयम् (भा० दी० । २ न), 'धुलाये हुए रेशमी कपड़े' के २ नाम हैं ॥

४ बहुमूल्यम्, महाधनम् (भा० दी० । २ न), 'बेशकीमती वस्तु' के २ नाम हैं ॥

५ क्षौमम् (त्रि । + न), दुकूलम् (न), 'पीताम्बर' के २ नाम हैं ॥

६ निवीतम् (+ निवृत्तम्), प्रावृतम् (२ न), 'ढके हुए वस्त्र' के २ नाम हैं ॥

७ दशाः (स्त्री नि० ब० व०), वस्तयः (भा० दी० । स्त्री पु नि० ब० व० । + वर्तयः ; २ एक व० [4]भी हैं), 'कपड़ेकी किनारी, धारी, दस्सी' के २ नाम हैं ॥

८ दैर्घ्यम् (न,) आयामः, आरोहः (+ आनाहः । २ पु), 'कपड़े आदिकी

१. 'दशाः स्युर्वस्तयोर्द्वयोः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'आनाहः' इति पाठान्तरम् ॥

३. युगशब्दस्याविवक्षायां लक्ष्यं यथा—

'गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा' । कुमारसम्भव ७।११ इति ॥

'धौतमुद्गमनीयं च —' इति हलायुधश्च (अभि० रत्न० २।३९६) ॥

'वर्तिवस्ति'शब्दयोरेकवचनत्वञ्चापि । तथा हि हलायुधः —'वर्तिर्वस्तिर्दशाः सिचः' (अभि० रत्न० २।३९६) इति ॥

—१ परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥

२ पटच्चरं जीर्णवस्त्रं ३ समौ [1]नक्तककर्पटौ ।

४ वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥

५ सुचेलकः [2]पटोऽस्त्री स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ।

लम्बाई' के २ नाम हैं ॥

१ परिणाहः (पु), विशालता (स्त्री), 'कपड़े आदिकी चौड़ाई' के २ नाम हैं ॥

२ पटच्चरम्, जीर्णवस्त्रम् (२ न), 'पुराने कपड़े' के २ नाम हैं ॥

३ नक्तकः (+लक्तकः), कर्पटः (२ पु), मुकु० महे० मतमें 'पुराने कपड़ेके टुकड़े' के, भा० दी० मतसे 'रूमाल' अर्थात् 'पसीना आदिको पोंछने-वाले छोटे वस्त्र' के और क्षी० स्वा० मतसे 'दूध, पानी आदिको छाननेवाले कपड़े' के २ नाम हैं ॥

४ वस्त्रम्, आच्छादनम्, वासः (=वासस्), चैलम् (+चेलम्), वसनम्, अंशुकम् (+चीरम्, प्रोतः । ६ न), 'कपड़ामात्र' के ६ नाम हैं ॥

५ सुचेलकः (पु), पटः (पु न । +पु स्त्री क्षी० स्वा० [4]), 'अच्छे कपड़े' के २ नाम हैं ॥

६ वराशिः (+वरासिः । +पु), स्थूलशाटकः (२ त्रि), 'मोटे कपड़े' के २ नाम हैं। ('सुचेलकः,……' ४ शब्द एकार्थक हैं, यह भी आचार्यों का मत है') ॥

---

१. 'लक्तककर्पटौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पटोऽस्त्री ना वराशिः' इति। ३. 'पटोऽस्त्री ना वरासिः' इति च क्वाचित्कं पाठान्तरम् ॥

४. पटोऽस्त्री कर्पटः शाटः सिचयप्रोतकच्चकाः' इति रभसोक्तेः, 'पटश्चित्रपटे वस्त्रेऽस्त्री, प्रियालद्रुमे पुमान्' (मेदि० पृ० ३६ श्लो० १९) इति मेदिन्युक्तेश्च 'अस्त्रीति चिन्त्यम्, द्वयोरदर्शनात्' इति क्षी० स्वा० वचसश्चिन्त्यत्वमुक्तम् भा० दी०। क्षी० स्वा० तु 'अस्त्रीति चिन्त्यम्, द्वयोर्दर्शनात्' इत्येवोक्तत्वात् 'अपटीक्षेपेण' इति कथयच्च भा० दी० उक्तेरेव चिन्त्यत्वम्। 'अम्बरमंशुकमुक्तं वस्त्रं सिचयः पटः पोटः' (अभि० रत्न० २।२९१) इति हलायुधोक्त्या तु 'पट' शब्दस्य पुंस्त्वमात्रमेवायातीत्यवधेयम् ॥

—१ परिणाहो विशालता।
२ पटच्चरं जीर्णवस्त्रं ३ समौ [1]नक्तककर्पटौ
४ वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम्।
५ सुचेलकः [2]पटोऽस्त्री स्याद् ६वराशिः स्थूलशाटकः

लम्बाई' के ३ नाम हैं॥

१ परिणाहः (पु), विशालता (स्त्री), 'कपड़े आदिकी च
२ नाम हैं॥

२ पटच्चरम्, जीर्णवस्त्रम् (२ न), 'पुराने कपड़े' के २ नाम हैं

३ नक्तकः (+ लक्तकः), कर्पटः (२ पु), मुकु० महे० मतसे
कपड़ेके टुकड़े' के, भा० दी० मतसे 'रुमाल' अर्थात् 'पसीना आदि
वाले छोटे वस्त्र' के और क्षी० स्वा० मतसे 'दूध, पानी आदिको छ
कपड़े' के २ नाम हैं॥

४ वस्त्रम्, आच्छादनम्, वासः (= वासस्), चैलम् (+ चेलम्)
अंशुकम् (+ चीरम्, प्रोतः। ६ न), 'कपड़ामात्र' के ६ नाम हैं

५ सुचेलकः (पु), पटः (पु न। + पु स्त्री क्षी० स्वा० [3]
कपड़े' के २ नाम हैं॥

६ वराशिः (+ वरासिः। + पु), स्थूलशाटकः (२ त्रि
कपड़े' के २ नाम हैं। ('सुचेलकः,......' ४ शब्द एकार्थक हैं
आचार्यों का मत है')॥

---

१. 'लक्तककर्पटौ' इति पाठान्तरम्॥

२. 'पटोऽस्त्री ना वराशिः' इति। ३. 'पटोऽस्त्री ना वरासिः' इति च क्वाचित्कं प

४. पटोऽस्त्री कर्पटः शाटः सिचयप्रोतलक्तकाः' इति रभसोक्तेः, 'पटश्चिञ्च
प्रियालद्रुमे पुमान्' (मेदि० पृ० २६ श्लो० १९) इति मेदिन्युक्तेश्च 'अस्त्रीति चि
रदर्शनात्' इति क्षी० स्वा० वचसश्चिन्त्यत्वमुक्तम् भा० दी०। क्षी० स्वा०
चिन्त्यम्, द्वयोर्दर्शनात्' इत्येवोक्तत्वात् 'अपटीक्षेपेण' इति लक्ष्याच्च भा०
चिन्त्यत्वम्। 'अम्बरमंशुकमुक्तं वस्त्रं सिचयः पटः पोटः' (अभि० रत्न० २।
इत्यायुधोक्त्या तु 'पट' शब्दस्य पुंस्त्वमात्रमेवायातीत्यवधेयम्॥

१ निचोलः प्रच्छदपटः २ समौ रल्लककम्बलौ ॥ ११६ ॥
३ अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंऽशुके ।
४ द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥
संव्यानमुत्तरीयं च ५ चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।
६ नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥
७ अर्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम् ।
८ स्यात्त्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥
९ अस्त्री वितानमुल्लोचो—

---

१ निचोलः (+ निचुलः । त्रि), प्रच्छदपटः (२ पु), महे० भा० दी० मतसे 'पालकी आदिके ओहार या सारङ्गी, सितार आदिके गिलाफ' (खोली) के, क्षी० स्वा० मतसे 'रजाई, तोसक, तकिया आदिकी खोली' के और अन्याचार्योंके मतसे 'बुर्का' अर्थात् 'यवन आदिकी स्त्रियाँ पर्देके वास्ते जिसको ओढ़कर पूरे शरीरको छिपाकर बाहर निकलती हैं उस वस्त्र-विशेष'-के २ नाम हैं ।

२ रल्लकः, कम्बलः (२ पु), 'कम्बल' के २ नाम हैं ॥

३ अन्तरीयम्, उपसंव्यानम्, परिधानम्, अधोंऽशुकम् (४ न), 'कमरसे नीचे पहने जानेवाले धोती, पायजामा, साड़ी आदि कपड़ों' के ४ नाम हैं ॥

४ प्रावारः (+ प्रावरः), उत्तरासङ्गः (२ पु), बृहतिका (स्त्री), संव्यानम् , उत्तरीयम् (२ न), 'कमरसे ऊपर धारण करने योग्य दुपट्टा, चादर, पगड़ी आदि कपड़ों' के ५ नाम हैं ॥

५ चोलः (+ चोली, स्त्री), कूर्पासकः (पु न), 'स्त्रियोंकी चोली, कुर्ती आदि' के २ नाम हैं ॥

६ नीशारः (पु), 'रजाई, दुलाई या शीतसे बचनेके लिये ओढ़े जानेवाले वस्त्रमात्र' का १ नाम है ॥

७ अर्धोरुकम् (न), चण्डातकम् (न पु), 'लहँगा' के २ नाम हैं ॥

८ आप्रपदीनम् (त्रि), 'पैरतक लटकनेवाले कपड़े' का १ नाम है ॥

९ वितानम् (न पु), उल्लोचः (पु), 'चँदवा' के २ नाम हैं ॥

१ दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि ।
२ प्रतिसीरा [1]जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥
३ [2]परिकर्माङ्गसंस्कारः स्यात्४न्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।
५ उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे ६ आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥
स्नानं ७ चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकोऽ८थ प्रबोधनम् ।
अनुबोधः ९ पत्त्रलेखा [3]पत्त्राङ्गुलिरिमे समे ॥ १२२ ॥

---

१ दूष्यम् (+ दूश्यम् । न), आदि ('आदि' शब्दसे 'पटकुटी' (स्त्री), पटवासः (= पटवासस्), पटगृहम्, पटकुड्यम् (३ न), इत्यादिका संग्रह है'), 'कपड़ेके घर, डेरा, रावटी, तम्बु आदि' का नाम है ॥

२ प्रतिसीरा, जवनिका (+ यमनिका), तिरस्करिणी (+ तिरस्कारिणी, तिरस्करणी । ३ स्त्री), 'कनात, पर्दा' के ३ नाम हैं ॥

३ परिकर्म (= परिकर्मन् । + प्रतिकर्म = प्रतिकर्मन् । न), अङ्गसंस्कारः (पु), 'कुङ्कुम आदिसे शरीरके संस्कार करने' के २ नाम हैं ॥

४ मार्ष्टिः, मार्जना, मृजा (३ स्त्री) 'झाड़ पोंछकर शरीरको साफ करने' के ३ नाम हैं ॥

५ उद्वर्तनम् , उत्सादनम् (+ उच्छादनम् । २ न), उबटन, बेशन, साबुन आदिसे शरीरको मलने' के २ नाम हैं ॥

६ आप्लावः, आप्लवः (२ पु), स्नानम् (न), 'स्नान करने' के ३ नाम हैं ॥

७ चर्चा (स्त्री), चार्चिक्यम् (न), स्थासकः (पु), शरीरमें चन्दन आदि लगाने' के ३ नाम हैं ॥

८ प्रबोधनम् (न), अनुबोधः (पु), 'निकले हुए गन्धको फिरसे लाने' के २ नाम हैं । ('जैसे—'कस्तूरीके गन्धके निकल जानेपर मदिरा छोड़नेसे उसका गन्ध फिर आ जाता है') ॥

९ पत्त्रलेखा, पत्त्राङ्गुलिः (२ स्त्री), 'कस्तूरी, केसर, मेंहदी या चन्दन आदिसे गाल या स्तनादिपर पत्ते, फूल आदिकी चित्रकारी करने' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'यमनिका' इति पाठान्तरम् । २. प्रतिकर्माङ्गसंस्कारः' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'पत्राङ्गुलिरिमे स्त्रियौ' इति पाठान्तरम् ॥

१ तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ।
द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियामथ कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥
२ काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतने ।
रक्तसंकोचपिशुनं [1]धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥
३ लाक्षा राक्षा जतु क्लीबे यावोऽलक्तो द्रुमामयः ।
४ लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञ५मथ जायकम् ॥ १२५ ॥
[2]कालीयकं च कालानुसार्यं चाथ समार्थकम् ।
[3]वंशिकागुरुराजार्हलोहकृमि (क्रि)मिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥

---

१ तमालपत्रम्, तिलकम्, चित्रकम्, विशेषकम् (२ रा ४ था पुं न । शेष न), 'कस्तूरी, चन्दन, भस्म आदिसे टीका (तिलक) लगाने' के ४ नाम हैं ॥

२ कुङ्कुमम्, काश्मीरजन्म (= काश्मीरजन्मन्), अग्निशिखम् , वरम् , बाह्लीकम् (+ बाह्लिकम्, बह्लीकम्, बह्लिकम्), पीतनम् , रक्तम् (+ असृक्संज्ञम् ; खूनके पर्यायवाचक नाम), संकोचम्, पिशुनम्, धीरम् (+ वीरम्) लोहितचन्दनम् (११ न) 'केसर, कुङ्कुम' के ११ नाम हैं ॥

३ लाक्षा, राक्षा (+ रक्ता । २ स्त्री), जतु (न), यावः, अलक्तः, द्रुमामयः [4](३ पु), लाही, लाक्षा, लाख, महावर' के ६ नाम हैं ॥

४ लवङ्गम् , देवकुसुमम् , श्रीसंज्ञम् (श्री अर्थात् लक्ष्मीके पर्यायवाले सब नाम । ३ न), 'लौंग' के ३ नाम हैं ॥

५ जायकम् , कालीयकम् (+ कालेयकम्), कालानुसार्यम् (३ न), 'पीला चन्दन, जायकनामक गन्धद्रव्य' के ३ नाम हैं ॥

६ वंशिकम् (+ वंशकम्), अगुरु (+ पु । + अगरु), राजार्हम् , लोहम् (+ पु), कृमि(क्रि)मिजम् , जोङ्गकम् (६ न), भा० दी० मतसे 'अगर' के ६ नाम हैं ॥

---

१. 'वी(धी)रलोहितचन्दनम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कालेयकं च' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'वंशकागरुराजार्हलोहकृमि(क्रि)मिजजोङ्गकम्' इति पाठान्तरम् ॥
४. धन्वन्तरिस्त्वेवमाह—
'लाक्षा पलङ्कषा राक्षा दीप्तिश्च कृमिजं जतु ।
कृतघ्नानङ्गमाता च द्रुमव्याधिरलक्तकः' ॥ १ ॥ इति ॥

१ [1]कालागुर्वगुरु २ स्यात्तु मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ।
३ यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥
बहुरूपोऽप्यथ ४ वृक्षधूपकृत्रिमधूपकौ ।
५ तुरुष्कः पिण्डकः [2]सिह्लो यावनोऽप्यथ ६ पायसः ॥ १२८ ॥
श्रीवासो वृकधूपोऽपि [3]श्रीवेष्टसरलद्रवौ ।
७ मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी च—

१ कालागुरु, अगुरु (+ अगरु । २ न), भा० दी० मतसे 'काला अगर' के २ नाम हैं। ('महे० मतसे 'वंशिकम्, ········', ७ नाम 'अगर' के हैं') ॥

२ मङ्गल्या (स्त्री), 'बेलाके फूलके समान सुगन्ध देनेवाले अगर' का १ नाम है ॥

३ यक्षधूपः (+ धूपः), सर्जरसः, रालः (+ राला, स्त्री, अरालः), सर्वरसः, बहुरूपः (५ पु), 'राल, धूप' के ५ नाम हैं ॥

४ वृक्षधूपः, कृत्रिमधूपः (२ पु), 'अनेक सुगन्धित पदार्थोंको मिलाकर बनाये हुए धूप' के २ नाम हैं ॥

५ तुरुष्कः, पिण्डकः, सिह्लः (सिह्लः), यावनः (४ पु), 'लोहबान' के ४ नाम हैं ॥

६ पायसः, श्रीवासः (+ श्रीः), वृकधूपः (+ वृकः), श्रीवेष्टः (+ श्रीविष्टः) सरलद्रवः (५ पु), 'सरल देवदारुके गोंदसे बने हुए सुगन्धित द्रव्य विशेष' के ५ नाम हैं ॥

७ मृगनाभिः (+ नाभिः [4]), मृगमदः (+ मृगः [5], मदः [6], २ पु), कस्तूरी (स्त्री), 'कस्तूरी' के ३ नाम हैं ॥

१. 'कालागुर्वगुरु स्यात्तन्मङ्गल्या' इति पाठान्तरम् । अत्र पक्षे यन्मल्लिगन्धि अगुरु तत्तु 'मङ्गल्या' स्यादित्येव सम्बन्धो बोध्यः, तत्र मूलपाठ एव समीचीन इत्यवधेयम् ॥

२. 'सिह्लो यावनोऽप्यथ' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'श्रीपिष्टसरलद्रवौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'मुख्यराट्क्षत्रियये नाभिः पुंसि प्राण्यङ्गके द्वयोः ।
चक्रमध्ये प्रधाने च स्त्रियां कस्तूरिकामदे' ॥ १ ॥
इति रभसोक्तेः नाभिशब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

५. 'मृगनाभिर्मृगमदः मृगः कस्तूरिकापि च' इत्युक्तेर्मृग शब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

६. 'मदो रेतसि कस्तूर्यां गर्वे हर्षेभदानयोः' (मेदिनी पृ० ७९ श्लो० १२) इत्युक्तेः मदशब्दस्यापि पर्यायतेत्यवधेयम् ॥

१—अथ कोलकम् ॥ १२९ ॥

कक्कोलकं कोशफलम्२मथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।
घनसारश्चन्द्रसंज्ञः [1]सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥
३ गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम् ।
४ तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥
५ तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ।
कुचन्दनं चाऽथ जातीकोषजातीफले समे ॥ १३२ ॥

---

१ कोलकम् (+ कोरकम्), कक्कोलकम्, कोशफलम् (+ कोषफलम् । ३ न) 'कङ्कोल' के ३ नाम हैं ॥

२ कर्पूरम् (पु न), घनसारः, चन्द्रसंज्ञः (चन्द्रमाके पर्यायवाचक सब शब्द), सिताभ्रः (+ सिताभः । ३ पु), हिमवालुका (स्त्री), 'कपूर' के ५ नाम हैं ॥

३ गन्धसारः, मलयजः (२ पु), भद्रश्रीः (स्त्री), चन्दनः (पु न), 'मलयागिरि चन्दन' के ४ नाम हैं ॥

४ तैलपर्णिकम्, गोशीर्षम्, (२ न); हरिचन्दनम् (पु न), 'सफेद ठण्डा चन्दन, कमलके समान गन्धवाले चन्दन और कपिल या पीले वर्ण-वाले चन्दन' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

५ तिलपर्णी (स्त्री), पत्राङ्गम् रञ्जनम्, रक्तचन्दनम्, कुचन्दनम् (४ न), 'लाल चन्दन' के ५ नाम हैं ॥

६ जातीकोषम् (+ जातिकोशम् , जातीकोषः, कोषः[2]), जाती-फलम् (+ फलम्[3] । २ न)' 'जायफल' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'सिताभो हिमवालुका' इति पाठान्तरम् ॥

२. '—कोशः कोष इवाण्डजे कुड्मले चषके दिव्येऽर्थचये यं निशिम्बयोः । जाती-कोशेऽसिपिधाने—' (अने० संग्र० २।५४६—५४७), इति, '—अथ जनिषु जातिः सा-मान्यगोत्रयोः ॥ मालत्यामामलक्यां च चुल्ल्यां काम्पिल्लजन्मनोः । जातीफले छन्दसि च' (अने० संग्र० २।१६८—१६९) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेः जाति-कोष-कोशशब्दानां पर्या-यतेत्यवधेयम् ॥

३. 'फलं हेतुकृते जातीफले फलकसस्ययोः' (अभि० चिन्ता० २।४९९) इति हेमचन्द्रा-चार्योक्त्या 'फल' शब्दस्यापि पर्यायत्वमित्यवधेयम् ॥

१ कर्पूरागुरुकस्तूरीकक्कोलैर्यक्षकर्दमः ।
२ गात्रानुलेपनी वर्त्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥
३ चूर्णानि वासयोगाः स्युर्भावितं वासितं त्रिषु ।
५ संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥
६ माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि—

---

१ 'यक्षकर्दमः (पु), 'कपूर, अगर, कस्तूरी और कङ्कोल; इन चारोंको बराबर-बराबर देकर बनाये हुए लेप-विशेष' का १ नाम है ॥

२ गात्रानुलेपनी, वर्त्तिः (२ स्त्री), 'वर्णकम्, विलेपनम् (२ न), 'लेप करनेके लिये पीसे या घिसे हुए गन्धद्रव्य विशेष' के ४ नाम हैं। ('क्षी० स्वा० मत से दो-दो शब्द एकार्थक हैं'[२] ॥

३ चूर्णम् (न), वासयोगः (पु), 'कपड़े आदिको सुवासित करनेके योग्य चूर्ण किये हुए गन्धद्रव्य-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ भावितम्, वासितम् (२ त्रि), 'सुवासित कपड़ा आदि' के २ नाम हैं। ('क्षी० स्वा० मतसे गन्धद्रव्य अर्थात् इतर आदिसे सुगन्धित किये हुए कपड़े आदिको 'भावित' और केतकी, केवड़ा या गुलाब आदि से सुगन्धित किये हुए कपड़े आदिको 'वासित' कहते हैं') ॥

५ अधिवासनम् (न), 'गुलाबजल या सुगन्धित फूल आदिसे पान, तिल आदिका सुवासित करने' का १ नाम है ॥

६ माल्यम् (न), माला, स्रक् (= स्रज्। २ स्त्री), 'शिरसे धारण की हुई माला' के ३ नाम हैं। ('यहाँ 'मूर्ध्नि' शब्दके अविवक्षित होनेसे

---

१. तदुक्तं व्याडिना—

'कर्पूरागुरुकस्तूरीकक्कोलघुसृणानि च।
एकीकृतमिदं सर्वं यक्षकर्दम इष्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

धन्वन्तरिस्तु भिन्नमेवाह। तथा—

'कुङ्कुमागुरुकस्तूरीकर्पूरं चन्दनं तथा।
महासुगन्धमित्युक्तं नामतो यक्षकर्दमः ॥ १ ॥ इति ॥

२. गात्रानुलेपनी वर्तिर्विगन्धस्य विलेपनम्।
वर्णकश्चाथ विच्छित्तिः स्त्री कषायोऽङ्गरागके' ॥ १ ॥

इति रभसोक्तिमनुसृत्येदमित्यवधेयम् ॥

—१ केशमध्ये तु गर्भकः।

२ प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि ३ पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

४ प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात् ५ कण्ठाद्वैकक्षिकं तु तत्।

यत्तिर्यक्क्षिप्तमुरसि ६ शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

७ रचना [1]स्यात्परिस्यन्द ८ आभोगः परिपूर्णता।

९ उपधानं तूपबर्हः १० शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥

शयनं ११ मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वया समाः।

'मालामात्र' के भी ये ३ नाम हैं') ॥

१ गर्भकः (पु), 'केशके बीचमें लगायी हुई माला' का १ नाम है ॥

२ प्रभ्रष्टकम् (न), 'शिखा या चोटीसे लटकती हुई माला' का १ नाम है ॥

३ ललामकम् (न), 'ललाटपर धारण की हुई माला, मुण्डमाला' का १ नाम है ॥

४ प्रालम्बम् (न), 'गलेमें सीधे लटकती हुई माला' का १ नाम है ॥

५ वैकक्षिकम् (न), 'जनेऊकी तरह तिर्छी पहनी हुई माला' का १ नाम है ॥

६ आपीडः, शेखरः (२ पु), 'शिखामें रक्खी हुई माला' के २ नाम हैं ॥

७ रचना (स्त्री), परिस्यन्दः (+ परिस्पन्दः । पु), 'माला आदि को बनाने (गूथने)' के २ नाम हैं ॥

८ आभोगः (पु), परिपूर्णता (स्त्री), 'सेवा-शुश्रूषा आदि सब प्रकारके उपचारोंसे परिपूर्ण होने' के २ नाम हैं ॥

९ उपधानम् (न), उपबर्हः (पु), 'तकिया' के २ नाम हैं ॥

१० शय्या (स्त्री), शयनीयम् , शयनम् (२ न), 'शय्या, बिछौना' के ३ नाम हैं। ('भा० दी० मतसे 'तोसक आदि' के ये ३ नाम हैं') ॥

११ मञ्चः, पर्यङ्कः, पल्यङ्कः (३ पु), खट्वा (स्त्री), 'पलँग, खटिआ आदि' के ४ नाम हैं। (किसी २ के मतसे 'मञ्च' यह १ नाम 'मचान या

---

१. 'स्यात्परिस्पन्दः' इति पाठान्तरम् ॥

१ गेन्दुकः कन्दुको २ दीपः प्रदीपः ३ पीठमासनम् ॥ १३८ ॥
४ समुद्गकः संपुटकः ५ प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।
६ प्रसाधनी कङ्कतिका ७ पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९ ॥
८ दर्पणे [1]मुकुरादर्शौ ९ व्यजनं तालवृन्तकम् ।

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

ऊँचे सिंहासन आदि' का और 'पर्यङ्कः, पल्यङ्कः' ये २ नाम 'पलँग, मसहरी आदि' के तथा 'खट्वा' यह एक नाम 'खटिया' का है) ॥

१ गेन्दुकः (+ गिन्दुकः, गेण्डुकः, गण्डूकः), कन्दुकः (२ पु), 'गेंद' के २ नाम हैं ॥

२ दीपः, प्रदीपः (+ स्नेहाशः, कज्जलध्वजः, दशेन्धनः, गृहमणिः, दोषातिलकः शिखातरुः, दीपवृक्षः, ज्योत्स्नावृक्षः ;[2] ८ पु । २ पु) 'चिराग' के २ नाम हैं ॥

३ पीठम्, आसनम् (२ न), 'आसन' के २ नाम हैं ॥

४ समुद्गकः, संपुटकः (२ पु), 'डब्बा सम्पुट' के २ नाम हैं ॥

५ प्रतिग्राहकः (वै० प्रतिग्रहः), पतद्ग्रहः (२ पु), 'उगलदान, पिकदान' के २ नाम है ॥

६ प्रसाधनी, कङ्कतिका (२ स्त्री), 'कङ्घी' के २ नाम हैं ॥

७ पिष्टातः, पटवासकः (२ पु), 'बुक्का' के २ नाम हैं ॥

८ दर्पणः, मुकुरः (+ मकुरः, मकुरः), आदर्शः (+ आत्मदर्शः । ३ पु), 'शीशा-आइना' के ३ नाम हैं ।

९ व्यजनम्, तालवृन्तकम् । (+ तालवृन्तम् । २ न), 'पंखा' के २ नाम हैं ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

---

१. 'मकुरादर्शौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं त्रिकाण्डशेषे—'—दीपस्तु स्नेहाशः कज्जलध्वजः ।
दशेन्धनो गृहमणिः दोषातिलक इत्यपि ॥ १ ॥
शिखातरुर्दीपवृक्षो ज्योत्स्नावृक्षोऽपि—' इति ॥

७ अथ ब्रह्मवर्गः ।

१ सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।
वंशोऽन्ववायः सन्तानो २ वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥
३ विप्रक्षत्रियविट्शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ।
४ [1]राजबीजी राजवंश्यो ५ बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥
६ [2]महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।
७ ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥
आश्रमोऽस्त्री—

---

७. अथ ब्रह्मवर्गः ।

१ सन्ततिः (स्त्री), गोत्रम् , जननम् , कुलम् (३ न), अभिजनः, अन्वयः, वंशः, अन्ववायः, सन्तानः (५ पु), 'वंश, कुल, खान्दान' के ९ नाम हैं ॥

२ वर्णः (पु), 'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये ४ [3]'वर्ण' हैं ॥

३ चातुर्वर्ण्यम् (न), 'ब्राह्मण आदि पूर्वोक्त चार वर्णोंके समुदाय' का १ नाम है ॥

४ राजबीजी (= राजबीजिन्), राजवंश्यः (२ पु), 'राजकुलमें उत्पन्न व्यक्ति' के २ नाम हैं ॥

५ बीज्यः, कुलसंभवः (२ पु), 'कुलमें उत्पन्न व्यक्ति' के २ नाम हैं ॥

६ महाकुलः (+ माहाकुलः), कुलीनः (+ कुल्यः, कौलेयकः), आर्यः, सभ्यः, सज्जनः, साधुः (६ पु), 'सज्जन, उत्तम कुलमें उत्पन्न व्यक्ति' के ६ नाम हैं ॥

७ ब्रह्मचारी (= ब्रह्मचारिन्), गृही (= गृहिन्), वानप्रस्थः, भिक्षुः (४ पु), ये चार 'आश्रम' शब्दवाच्य हैं अर्थात् आश्रमः (पु न), 'ब्रह्मचर्याश्रमः, गृहस्थाश्रमः, वानप्रस्थाश्रमः, संन्यासाश्रमः (४ पु न), ये ४ 'आश्रम' हैं।

---

१. राजबीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'माहाकुलकुलीनार्य—' इति पाठान्तरम् ॥

३. तदुक्तं याज्ञवल्क्येन—
'ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाद्यास्त्रयो द्विजाः' । इति याज्ञ० १।१० ॥

—१ द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।
विप्रश्च ब्राह्मणो[2]ऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥
३ विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः सन् सुधीः कोविदो बुधः ।
धीरो मनीषी [1]ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पण्डितः कविः ॥ ५ ॥
धीमान् सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ।
दूरदर्शी दीर्घदर्शी—

---

१ द्विजातिः (+ द्विजः), [2]अग्रजन्मा (= अग्रजन्मन्), भूदेव (+ महीसुरः, भूसुरः,...), वाडवः, विप्रः, ब्राह्मणः (६ पु), 'ब्राह्मण' के ६ नाम हैं ॥

२ [3]षट्कर्मा (= षट्कर्मन्, पु), 'यज्ञ करना, पढ़ना, दान देना, यज्ञ कराना, पढ़ाना और दान लेना; इन[4] ६ कर्मोंसे युक्त ब्राह्मण' का १ नाम है ॥

३ विद्वान् (= विद्वस्), विपश्चित्, दोषज्ञः, सन् (= सत्); सुधीः, कोविदः, बुधः, धीरः, मनीषी (= मनीषिन्), ज्ञः, प्राज्ञः (+ प्रज्ञः), संख्यावान् (= संख्यावत्), पण्डितः, कविः, धीमान् (= धीमत्), सूरिः (+ सूरी = सूरिन्), कृती (= कृतिन्), कृष्टिः, लब्धवर्णः, विचक्षणः, दूरदर्शी (= दूरदर्शिन् । + दूरदृक् = दूरदृश्), दीर्घदर्शी (+ दीर्घदर्शिन् । २२ पु), 'विद्वान्' के २२ नाम हैं ॥

---

१. 'ज्ञः प्रज्ञः' इति पाठान्तरम् ॥

२. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' इति श्रुतेरित्यवधेयम् ॥

३. तदुक्तम्—'इज्याऽध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा ।
प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्मा विप्र उच्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

४ ब्राह्मणानां षट् कर्माण्याह मनुः—
'अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा ।
दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्' ॥ १ ॥ इति मनुः १।८८

—१ श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥
२ [1]मीमांसको जैमिनीये ३ वेदान्ती ब्रह्मवादिनि (१६)
४ वैशेषिके स्यादौलूक्यः ५ सौगतः शून्यवादिनि (१७)
६ [2]नैयायिकस्त्वक्षपादः—

१ [3]श्रोत्रियः, छान्दसः (२ पु), 'वेद पढ़नेवाले ब्राह्मण' के २ नाम हैं ॥

२ [मीमांसकः, जैमिनीयः (२ पु), 'मीमांसक' अर्थात् 'मीमांसा शास्त्रको जाननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

३ [वेदान्ती (= वेदान्तिन्), ब्रह्मवादी (= ब्रह्मवादिन् । २ पु), 'वेदान्ती' अर्थात् 'वेदान्त शास्त्र जाननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

४ [वैशेषिकः, औलूक्यः (२ पु), 'कणादिसम्मत द्रव्य आदि ('द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव') [4]'सात पदार्थोंको माननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

५ [सौगतः शून्यवादी (= शून्यवादिन् । २ पु), 'संसारका कारण शून्य (कोई नहीं) है, इस सिद्धान्तको माननेवाले नास्तिक' के २ नाम हैं] ॥

६ [नैयायिकः, अक्षपादः (+ आक्षपादः । २ पु), 'गौतमसम्मत प्रमाण आदि ('प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय,

१. 'मीमांसको……………साङ्ख्यकापिलौ' इत्येष क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

२. 'नैयायिकस्त्वाक्षपादः' इति पाठ' क्षी० स्वा० व्याख्योक्तः ॥

३. तदुक्तं हेमाद्रिणा चतुर्वर्गचिन्तामणौ दानखण्डस्य तृतीयप्रकरणे —
'एकां शाखां सकल्पां वा षड्भिरङ्गैरधीत्य वा ।
षट्कर्मनिरतो विप्रः श्रोत्रियो नाम धर्मवित्' ॥ १ ॥
इति च० चिन्ता० पृ० २७ ॥

४. तथा चाह विश्वनाथः—
'द्रव्यं गुणस्तथा कर्म सामान्यं च विशेषकम् ।
समवायस्तथाऽभावः पदार्थाः सप्त कीर्तिताः ॥ १ ॥
इति सिद्धा० मुक्ता० १।१ ॥

—१ स्याद्स्याद्वादिक आर्हंकः (१८)
२ चार्वाकलौकायतिकौ ३ [1]सत्कार्ये साङ्ख्यकापिलौ (१९)
४ उपाध्यायोऽध्यापकोऽ५ऽथ स्यान्निषेकादिकृद् गुरुः।

वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान') [2]सोलह पदार्थोंको माननेवाले नैयायिक' के २ नाम हैं ॥

१ [स्याद्वादिकः, आर्हंकः (+ आर्हतः। २ पु), 'मोक्ष है तो हो और नहीं है तो न हो इस सिद्धान्तको माननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

२ [चार्वाकः, लौकायतिकः (२ पु), 'बौद्ध' अर्थात् 'बुद्धदेवके मतानुयायी' के २ नाम हैं] ॥

३ [साङ्ख्यः, कापिलः (२ पु), 'कपिलमुनिसम्मत सांख्यशास्त्रके सिद्धान्तको माननेवाले' के २ नाम हैं] ॥

४ [3] उपाध्यायः, अध्यापकः (२ पु), 'उपाध्याय' अर्थात् 'वेदके एकदेशको या वेदाङ्गोंको वृत्तिके लिये पढ़ानेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ [4] गुरुः (पु), 'गुरु' अर्थात् 'निषेकादि संस्कारको सविधि करके अन्नादिसे पालन करते हुए पढ़ानेवाले' का १ नाम है ॥

------

१. 'सत्कार्यौ' इति पाठः क्षी० स्वा० व्याख्ययोक्तः ॥

२. तदुक्तम्—'प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयवतर्कनिर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः' इति न्या० द० १। १ ॥

३. उपाध्यायलक्षणमुक्तं मनुना—

'एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः।
योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते' ॥ १ ॥ इति मनुः २।१४१ ॥

[४.] गुरुलक्षणमुक्तं मनुना—

'निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि।
सम्भावयति चान्नेन स विप्रो गुरुरुच्यते' ॥ १ ॥ इति मनुः २।१४२ ॥

१ मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य २ [1]आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥ ७ ॥
यष्टा च यजमानश्च ३ स सोमवति दीक्षितः ।
४ इज्याशीलो यायजूको ५ यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥
६ [2]स गीर्पतीष्ट्या स्थपतिः ७ सोमपीथी तु सोमपाः ।
८ सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

---

१ [3]आचार्यः (पु), 'आचार्य' अर्थात् 'मन्त्रोंकी व्याख्या करनेवाले या शिष्यका यज्ञोपवीत संस्कारकर कल्प और रहस्यके सहित वेदको पढानेवाले ब्राह्मण' का १ नाम है ॥

२ व्रती (= व्रतिन्), यष्टा (यष्टृ), यजमानः (पु), 'यजमान' अर्थात् 'यज्ञ करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ दीक्षितः (पु), 'सोमवत्' (अग्निष्टोमादि) यज्ञमें ऋत्विजोंको आदेश देनेवाले यजमान' का १ नाम है ॥

४ इज्याशीलः, यायजूकः (२ पु), 'बारबार यज्ञ करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ यज्वा (= यज्वन् पु), 'विधिपूर्वक यज्ञ किये हुए' का १ नाम है ॥
६ स्थपतिः (पु), 'बृहस्पतिके मन्त्रसे यज्ञ करनेवाले' का १ नाम है ॥
७ सोमपीथी (= सोमपीथिन् । + सोमपीती = सोमपीतिन्), सोमपाः (+ सोमपः । २ पु), 'सोमयज्ञ करनेवाले' के २ नाम हैं ॥
८ सर्ववेदाः (= सर्ववेदस् पु), 'यज्ञमें सर्वस्व दक्षिणा देनेवाले' का १ नाम है । ('विश्वजित् आदि यज्ञोंमें सर्वस्व दक्षिणा दी जाती है, जैसे—

---

१. 'आदिष्टी इति पाठान्तरम् ॥
२. 'स तु गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः सोमपीती तु सोमपाः' इति पाठान्तरम् ॥
आचार्यलक्षणमुक्तं मनुना—
'उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः ।
सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते' ॥ १ ॥ इति मनुः २।१४० ॥

१ अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती २ गुरोस्तु यः।
लब्धानुज्ञः समावृत्तः ३ सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥
४ छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये ५ शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः।
६ एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥
७ सतीर्थ्यास्त्वेकगुरव८श्चितवानग्निमग्निचित् ।

[1]रघुने विश्वजित् यज्ञकर सर्वस्व दक्षिणा दी थी। विश्वजित् आदि यज्ञका यह नाम है, यह भा० दी० का मत चिन्त्य है') ॥

१ [2]अनूचानः (पु), 'व्याकरण आदि ६ अङ्गोंके सहित वेदको पढ़नेवाले' का १ नाम है ॥

२ समावृत्तः (पु), 'गुरुकी आज्ञा पाकर गृहस्थाश्रममें रहनेके लिये गुरुकुलसे लौटे हुए ब्रह्मचारी' का १ नाम है ॥

३ सुत्वा (सुत्वन् पु), 'यज्ञके अन्तमें अवभृथनामक स्नान किये हुए' का १ नाम है ॥

४ छात्रः, अन्तेवासी (= अन्तेवासिन्), शिष्यः (३ पु), 'शिष्य, छात्र' के ३ नाम हैं ॥

५ शैक्षाः, प्राथमकल्पिकाः (२ पु। बहुवचन अविवक्षित होनेसे एकवचन भी होता है।) 'अध्ययनको प्रथम आरम्भ किये हुए ब्रह्मचारी आदि' के २ नाम हैं ॥

६ सब्रह्मचारिणः (= सब्रह्मचारिन्, पु) 'आपसमें समान वेद, समान व्रत और समान आचारवाले ब्रह्मचारियों का १ नाम है ॥

७ सतीर्थ्यः, एकगुरुः (भा० दी०। २), 'सहपाठी, एक गुरुसे पढ़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ अग्निचित् (पु), 'अग्निहोत्री' का १ नाम है ॥

१. यथाऽऽह रघुवंशे कविकुलकमलदिवाकरः कालिदासः—
'स विश्वजितमाजह्रे यज्ञं सर्वस्वदक्षिणम्' इति रघुवंशः ४। ८६ ॥

२. तदुक्तं हेमाद्रिणा चतुर्वर्गचिन्तामणौ दानखण्डस्य परिभाषाख्ये तृतीयप्रकरणे—
'वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञः शुद्धात्मा पापवर्जितः।
शेषं श्रोत्रियवत्प्राप्तः सोऽनूचान इति स्मृतः' ॥ १ ॥
इति चतु० चिन्ता० दा० खं० पृ० २८ ॥

१ पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् ॥ १२ ॥
२ उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्यात् ३ ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।
४ यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥
५ पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ।
६ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

---

१ ऐतिह्यम् (न), इतिह (अव्य०), 'परम्परागत उपदेश' के २ नाम हैं ॥

२ उपज्ञा (स्त्री), 'गुरूपदेशके विना उत्पन्न सर्वप्रथम ज्ञान' का १ नाम है । ('जैसे—वाल्मीकिकी उपज्ञा 'रामायण' है और पणिनि की उपज्ञा 'अष्टाध्यायी सूत्रपाठ' है') ॥

३ उपक्रमः (पु), 'गुरु आदिसे ज्ञान प्राप्तकर आरम्भ करने'-का १ नाम है ॥

४ यज्ञः, सवः, अध्वरः, यागः, सप्ततन्तुः, मखः, क्रतुः (७ पु), 'यज्ञ' के ७ नाम हैं ॥

५ पाठः (पु), 'वेदादिपाठ करने'को 'ब्रह्मयज्ञः' (पु); होमः (पु), 'हवन करने'को 'देवयज्ञः' (पु); अतिथीनां सपर्या, (स्त्री), 'अन्न, जलपान, शय्यादि देकर अतिथियोंके सत्कार करने'को 'नृयज्ञः' (पु); तर्पणम् (न), 'अन्न, जल, पिण्डदान, श्राद्ध, आदिसे पितरोंको सन्तुष्ट करने'को 'पितृयज्ञः' (पु); बलिः (पु), 'बलिवैश्वदेव अर्थात् काकादिको बलि देने या बलिदान करने'को 'भूतयज्ञः' (पु), कहते हैं ॥

६ ये (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, अतिथियज्ञ, पितृयज्ञ और भूतयज्ञ) ५ महायज्ञः (पु), अर्थात् "'पञ्चमहायज्ञ' हैं ॥

---

१. तदुक्तं मनुना—'अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् ।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ १ ॥
पञ्चैतान्यो महायज्ञान्—'　　　इति मनुः ३।७०—७२ ॥

१ समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः।
आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः॥ १५॥
२ प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहात् ३ सदस्या विधिदर्शिनः।
४ सभासदः सभास्तारः सभ्याः सामाजिकाश्च ते॥ १६॥
५ अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात्।

---

१ समज्या, परिषत् (= परिषद्। + पर्षत् = पर्षद्), गोष्ठी, सभा, समितिः, संसत् (= संसद्), आस्थानी (७ स्त्री), आस्थानम् (न), सदः (= सदस् न स्त्री), "सभा' के ९ नाम हैं। ('सम्प्रति सभा शब्दका सामान्यतः व्यवहार किया जाता है') ॥

२ प्राग्वंशः (पु), 'हवनशालाके पूर्व तरफ यजमानको बैठनेके लिये बनाये हुए स्थान या गृह-विशेष'का १ नाम है॥

३ सदस्यः (पु), 'यज्ञमें न्यूनाधिक विधिको देखनेवाले ऋत्विग्विशेष' का १ नाम है॥

४ सभासत् (= सभासद्), सभास्तारः, सभ्यः, सामाजिकः (४ पु), 'सभासद' के ४ नाम हैं॥

५ अध्वर्युः, उद्गाता (= उद्गातृ), होता (= होतृ। ३ पु), 'यजुर्वेद, सामवेद और ऋग्वेद जाननेवाले' का क्रमशः १—१ नाम है॥

महर्षियाज्ञवल्क्येनाप्युक्तम्—
'बलिकर्मस्वधाहोमस्वाध्यायातिथिसत्क्रियाः। भूतपित्रमरब्रह्ममनुष्याणां महामखाः'॥ १॥
इति याज्ञ० स्मृतिः १।१०२॥
यथा वा—'पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः।
एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः'॥ १॥ इति॥
१. यथाऽऽह सभालक्षणं मनुः—
'यस्मिन्देशे निषीदन्ति विप्रा वेदविदस्त्रयः।
राज्ञश्चाधिकृतो विद्वान् ब्राह्मणस्तां सभां विदुः'॥ १॥ इति मनुः ८।११॥

१ आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥
२ वेदिः परिष्कृता भूमिः ३ समे स्थण्डिलचत्वरे ।
४ चषालो यूपकटकः ५ कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १८ ॥
६ यूपाग्रं तर्म ७ निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ।
८ [1]दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥

---

१ [2] आग्नीध्र, ऋत्विक् (= ऋत्विज्), याजकः (३ पु), यज्ञ करनेवाला यजमान धन आदिसे जिसका वरण करे उन आग्नीध्र आदि (ब्रह्मा, उद्गाता, होता, अध्वर्यु,······१७[3]) यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणों' के ३ नाम हैं ॥

२ वेदिः (+ वेदी । स्त्री), 'यज्ञके लिये डमरु-तुल्याकार बनाई हुई या साफ की हुई भूमि' का १ नाम है ॥

३ स्थण्डिलम्, चत्वरम् (२ न), 'यज्ञके लिये साफ किये गये स्थान-विशेष' के २ नाम हैं । ('सम्प्रति चत्वर शब्दको चबूतरा के अर्थमें भी प्रयुक्त किया जाता है'

४ चषालः, यूपकटकः (मा० दी० । २), 'यज्ञ-स्तम्भके ऊपर वलयाकार (गोल) बनाये हुए काष्ठ-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ कुम्बा (स्त्री), 'चण्डाल, अन्त्यज आदि यज्ञको न देख सकें, इस निमित्तसे यज्ञभूमिके चारों तरफ बनाये हुए घेरे का १ नाम है ॥

६ यूपाग्रम् , तर्म (= तर्मन् । २ न) 'यज्ञ-स्तम्भके ऊपरी भाग' के २ नाम हैं ॥

७ अरणिः (पु स्त्री) 'जिसको परस्परमें रगड़कर यज्ञार्थ अग्नि निकाली जाय, उस काष्ठ-विशेष' का १ नाम है ॥

८ दक्षिणाग्निः, गार्हपत्यः, आहवनीयः (३ पु), ये ३ [4]'अग्निके भेद' हैं॥

---

१. 'कश्चित्तु त्रयाणां द्वन्द्वः पठ्यत' इति मा० दी० ॥

२. तथा हि कात्यः–'वृताः कुर्वन्ति ये यज्ञमृत्विजस्ते–' इति ॥

३. 'आद्यशब्दात् 'पोतृप्रशास्तृब्राह्मणाच्छंस्यच्छावाग्ग्रावस्तुद्ब्रह्ममैत्रावरुणप्रतिप्रस्थातृ-प्रतिहर्त्रुन्नेतृनेष्टृसुब्रह्मण्याः' इत्थं सप्तदशर्त्विजः' इति क्षी० स्वा० ॥

४. ब्राह्मणसर्वस्वे हलायुधेन पञ्चाग्नय उक्तास्तथा हि–

'आवसथ्याहवनीयौ दक्षिणाग्निस्तथैव च ।
अन्वाहार्यो गार्हपत्य इत्येते पञ्च वह्नयः ॥ १ ॥ इति ॥

१ अग्नित्रयमिदं त्रेता २ प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।
३ समूह्यः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥
४ यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ।
तस्मिन्नानाय्यो ५ ऽथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥ २१ ॥
६ ऋक्सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने ।
७ गायत्रीप्रमुखं छन्दो—

१ त्रेता (स्त्री), 'दक्षिणाग्नि, गार्हपत्याग्नि और आहवनीयाग्नि इन तीन अग्नियोंके समुदाय' का १ नाम है ॥

२ प्रणीतः (पु), 'मन्त्रसे संस्कृत अग्नि' का १ नाम है ॥

३ समूह्यः, परिचाय्यः उपचाय्यः (३ पु), 'यज्ञ-सम्बन्धी अग्निका स्थान-विशेष, या स्थान विशेषकी अग्नि' के ३ नाम हैं ॥

४ आनाय्यः (पु), 'गार्हपत्यनामक अग्निसे लाकर मन्त्रसे संस्कृत दक्षिणाग्नि' का १ नाम है ॥

५ अग्नायी, स्वाहा, हुतभुक्प्रिया (+ अग्निप्रिया । ३ स्त्री), 'अग्निकी स्त्री, स्वाहा' के ३ नाम हैं ॥

६ सामिधेनी, धाय्या (२ स्त्री), 'अग्निमें समिधा (लकड़ी) छोड़कर अग्निको जलानेमें प्रयोग किये जानेवाले मन्त्र' के २ नाम हैं ॥

७ छन्दः (= छन्दस् , न), 'गायत्री आदि छन्द' का १ नाम है । (उक्था १, अत्युक्ता २, मध्या ३, प्रतिष्ठा ४, सुप्रतिष्ठा ५, गायत्री ६, उष्णिक् ७, अनुष्टुप् ८, बृहती ९, पङ्क्ति १०, त्रिष्टुप् ११, जगती १२, अतिजगती १३, शक्वरी १४, अतिशक्वरी १५, अष्टि १६, अत्यष्टि १७, धृति १८ अतिधृति १९, कृति २०, प्रकृति २१, आकृति २२, विकृति २३, संस्कृति २४, अतिकृति २५, उत्कृति २६, ये छब्बीस [1]छन्द होते हैं । किसी २ ने 'गायत्री······उत्कृति' तक २१ ही छन्द माने हैं') ॥

१. वृत्तरत्नाकरे केदारेण छन्दोलक्षणमुक्तम् । तथा हि—
'आरभ्यैकाक्षरात्पादादेकैकाक्षरवर्धितैः ।
पृथक् छन्दो भवेत्पादैर्यावत्षड्विंशतिं गतम्' ॥ १ ॥ इति वृ० र० १।१७

१ हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
२ आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः ।
३ [1]धुवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
४ पृषदाज्यं सदध्याज्ये ५ परमान्नं तु पायसम् ।
६ हव्य ७ कव्ये [2]दैवपित्र्ये अन्ने—

---

१ चरुः (पु), 'अग्निमें हवन किये जानेवाले अन्न' का १ नाम है ॥

२ आमिक्षा (+ आमीक्षा सु० । स्त्री), 'औंटे हुए गर्म दूधमें दही छोड़नेपर उत्पन्न विकार-विशेष या छाँछ' का १ नाम है ॥

३ धुवित्रम् (+ धवित्रम् । न), 'यज्ञ में आग सुलगाने के वास्ते मृगचर्मके बने हुए पंखे' का १ नाम है ॥

४ पृषदाज्यम् (+ पृषातकम् । न) 'दही मिले हुए घी' का १ नाम है ॥

५ परमान्नम् , पायसम् (२ न), 'खीर, हविष्य' के २ नाम हैं ॥

६ हव्यम् (न), 'देवान्न' अर्थात् 'हवनके द्वारा देवताओंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥

७ कव्यम् (न), 'पित्र्यान्न' अर्थात् 'ब्राह्मण-भोजनादिके द्वारा पितरोंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥

तेषां नामानि च तेनैवोक्तानि । तथा हि—

'उक्ताऽत्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठाऽन्या सुपूर्विका ।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पङ्क्तिरेव ॥ १ ॥
त्रिष्टुप् च जगती चैव तथाऽतिजगती मता ।
शक्वरी सातिपूर्वा स्यादष्ट्यत्यष्टी ततः स्मृते ॥ २ ॥
धृतिश्चातिधृतिश्चैव कृतिः प्रकृतिराकृतिः ।
विकृतिः संस्कृतिश्चापि तथाऽतिकृतिरुत्कृतिः' ॥ ३ ॥

इति वृत्तरत्नाकरः १।१९-२१ ॥

गङ्गादासरछन्दोमञ्जर्यान्तु 'उक्ता-अत्युक्ता-शक्वरी'णां स्थाने 'उक्था' अत्युक्था, शर्करी' इत्येवं नामान्याह ॥

१. 'धवित्रं—' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'दैवपित्र्ये' इति पाठान्तरम् ॥

१ हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
२ आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः ।
३ [1]धुवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
४ पृषदाज्यं सदध्याज्ये ५ परमान्नं तु पायसम् ।
६ हव्य ७ कव्ये [2]दैवपित्र्ये अन्ने—

---

१ चरुः (पु), 'अग्निमें हवन किये जानेवाले अन्न' का १ नाम है ॥

२ आमिक्षा (+ आमीक्षा मु० । स्त्री), 'औंटे हुए गर्म दूधमें दही छोड़नेपर उत्पन्न विकार-विशेष या छाँछ' का १ नाम है ॥

३ धुवित्रम् (+ धवित्रम् । न), 'यज्ञ में आग सुलगाने के वास्ते मृगचर्मके बने हुए पंखे' का १ नाम है ॥

४ पृषदाज्यम् (+ पृषातकम् । न) 'दही मिले हुए घी' का १ नाम है ॥

५ परमान्नम् , पायसम् (२ न), 'खीर, हविष्य' के २ नाम हैं ॥

६ हव्यम् (न), 'देवान्न' अर्थात् 'हवनके द्वारा देवताओंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥

७ कव्यम् (न), 'पित्र्यान्न' अर्थात् 'ब्राह्मण-भोजनादिके द्वारा पितरोंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥

तेषां नामानि च तेनैवोक्तानि । तथा हि—

'उक्ताऽत्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठाऽन्या सुपूर्विका ।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पङ्क्तिरेव ॥ १ ॥
त्रिष्टुप् च जगती चैव तथाऽतिजगती मता ।
शक्वरी सातिपूर्वा स्यादष्ट्यत्यष्टी ततः स्मृते ॥ २ ॥
धृतिश्चातिधृतिश्चैव कृतिः प्रकृतिराकृतिः ।
विकृतिः संस्कृतिश्चापि तथाऽतिकृतिरुत्कृतिः' ॥ ३ ॥

इति वृत्तरत्नाकरः १।१९-२१ ॥

गङ्गादासच्छन्दोमञ्जर्यां तु 'उक्ता-अत्युक्ता-शक्वरी'णां स्थाने 'उक्था' अत्युक्था, शर्करी' इत्येवं नामान्याह ॥

१. 'धवित्रं—' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'दैवपित्र' इति पाठान्तरम् ॥

—१ पात्रं स्रुवादिकम् ॥ २४ ॥
२ ध्रुवोपभृज्जुहू ३ र्ना तु स्रुवो भेदाः ¹स्रुचः स्त्रियः ।
४ उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥
५ परम्पराकं ²शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।
६ वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥
७ सान्नाय्यं हवि ८ रग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।
९ दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे १० तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥

---

१ पात्रम् (न), 'स्रुवा आदि (चमस, प्रोक्षणी, प्रणीता, सूर्प, व्यजन, उलूखल, मुसल, ग्रह, ······) बर्तन' का १ नाम है ॥

२ ध्रुवा, उपभृत्, जुहूः (३ स्त्री), ये ३ 'स्रुवाके भेद' हैं ॥

३ +स्रुवः (पु), स्रुक् (= स्रुच् । +स्रुः । स्त्री), 'स्रुवा' अर्थात् 'अग्निमें घी डालनेवाले काष्ठनिर्मित यज्ञ-पात्र-विशेष' के २ नाम हैं ॥

४ उपाकृतः (पु), 'वेदमन्त्रसे अभिमन्त्रित कर यज्ञमें मारे हुए पशु' का १ नाम है ॥

५ परम्पराकम्, शमनम् (+शसनम्, ससनम्), प्रोक्षणम् (३ न), 'यज्ञमें पशुको मारने' के ३ नाम हैं ॥

६ प्रमीतः, उपसंपन्नः, प्रोक्षितः (३ त्रि), 'यज्ञमें मारे हुए पशु' के ३ नाम हैं ॥

७ सान्नाय्यम्, हविः (= हविष्, भा० दी० । २ न), 'हवन करने योग्य हविष्य आदि पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

८ हुतम् (भा० दी०), वषट्कृतम् (२ त्रि), 'अग्निमें हवन किये हुए हविष्य आदि पदार्थ' के २ नाम हैं ॥

९ अवभृथः (पु), 'यज्ञके अन्तमें किये जानेवाले यज्ञ-समाप्ति-सूचक स्नान-विशेष' का १ नाम है ॥

१० यज्ञियम् (त्रि), 'यज्ञके योग्य पदार्थ' का १ नाम है । ('जैसे— 'ब्राह्मण, हविष्यादि अन्न, स्थान······') ॥

---

१. 'स्रुवः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शसनम्' इति शुद्धः पाठः इति क्षी० स्वा० । 'ससनम्' इत्यन्य इति भा० दी० ॥

१इष्टं १थ क्रतुकर्मेष्टं २ पूर्तं खातादि कर्म यत् ।
३ अमृतं ४ विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥
५ त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।
विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥
प्रादेशनं निर्वपण-मपवर्जनमंहतिः ।

---

१ [1]इष्टम् (न), 'यज्ञ कार्य, दान देने' का १ नाम है ॥

२ [2]पूर्तम् (न), 'बावली, कुआँ, तालाब आदि खुदवाने तथा औषधालय, देवालय आदि बनवाने' का १ नाम है ॥

३ [3]अमृतम् (न), 'यज्ञसे बचे हुए हविष्य' का १ नाम है ॥

४ [4]विघसः (पु), 'ब्राह्मण, अतिथि आदिके भोजनके बाद बचे हुए अन्न' का १ नाम है ॥

५ त्यागः (पु), विहापितम्, दानम्, उत्सर्जनम् (+ उत्सर्गः, पु), विसर्जनम्, विश्राणनम्, वितरणम्, स्पर्शनम्, प्रतिपादनम्, प्रादेशनम्, निर्वपणम्, अपवर्जनम् (११ न) अंहतिः (स्त्री), 'दान देने' के १३ नाम हैं ॥

---

१. हेमाद्रौ दानखण्डे शङ्खोक्तमिष्टलक्षणं यथा—
'अग्निहोत्रं तपः सत्यं वेदानां चैव पालनम् । आतिथ्यं वैश्वदेवं च इष्टमित्यभिधीयते ॥ १ ॥
एकाग्निकादौ यत्कर्म त्रेतायां यच्च हूयते । अन्तर्वेद्यां च यद्दानमिष्टं तदभिधीयते' ॥ २ ॥
इति हेमा० दा० खं० पृ० २१ ॥

२. हेमाद्रौ दानखण्डे शङ्खोक्तं पूर्तलक्षणम्—
'रोगिणां परिचर्या च पूर्तमित्यभिधीयते' । इति
व्यासोक्तम्—'पुष्करिण्यस्तथा वाप्यो देवतायतनानि च ।
अन्नदानमथारामाः पूर्तमित्यभिधीयते ॥ १ ॥ इति ।
नारदोक्तम्—
'ग्रहोपरागे यद्दानं सूर्यसंक्रमणेषु च ।
द्वादश्यादौ तु यद्दानं तदेतत्पूर्तमुच्यते' ॥१॥ इति हेमा० दा० खं० पृ० २१ ॥

३-४. अमृतविघसयोर्लक्षणं मनुराह । तद्यथा—
'विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः ।
विघसो भुक्तशेषं तु यज्ञशेषं तथाऽमृतम्' ॥ १ ॥ इति मनुः ३ । २८५ ॥

१ मृतार्थं [1]तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥
२ पितृदानं निवापः स्यात् ३ श्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।
४ अन्वाहार्यं मासिकें ५ ऽशोऽष्टमोऽह्नः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥
६ पर्येषणा परीष्टिश्च ७ न्वेषणा च गवेषणा ।

---

१ और्ध्वदेहिकम् (+ और्ध्वदैहिकम् । न) 'मरे हुएके उद्देश्यसे मरने के दिनसे एकादशाह तक दिये हुए पिण्ड-दान आदि' का १ नाम है ॥

२ पितृदानम् (न), निवापः (पु), 'सपिण्डीकरणके बाद पितरोंके उद्देश्यसे दिये हुए पिण्ड-दान' का १ नाम है ॥

३ श्राद्धम् (न), 'श्राद्ध' अर्थात् 'पितरोंके उद्देश्यसे शास्त्रानुसार किये जानेवाले पिण्डदान आदि कार्य' का १ नाम है ॥

४ [2]अन्वाहार्यम् (न), मासिकः (पु, भा० दी०); 'अमावस्याको किये जानेवाले मासिक श्राद्ध' के २ नाम हैं ॥

५ [3]कुतपः (+ कुतुपः । पु न), 'दिनका आठवाँ हिस्सा, सप्तम मुहूर्त (१४ घटी) के उपरान्त तथा नवम मुहूर्त (१७-१८ घटी) के मध्यका श्राद्ध योग्य समय विशेष' का १ नाम है ॥

६ पर्येषणा, परीष्टिः (२ स्त्री), महे० मतसे 'श्राद्धमें ब्राह्मणोंकी सेवा करने' के २ नाम हैं ॥

७ अन्वेषणा, गवेषणा (२ स्त्री), महे० मतसे 'धर्मान्वेषण करने' के २ नाम हैं । ('भा० दी० मतसे 'पर्येषणा..........' ४ नाम 'धर्मादिके खोज करने' के हैं') ॥

---

१. 'तदहर्दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदाह मनुः—'पितृयज्ञं तु निर्वर्त्य विप्रश्चेन्दुक्षयेऽग्निमान् ।
पिण्डान्वाहार्यकं श्राद्धं कुर्यान्मासानुमासिकम् ॥ १ ॥
पितॄणां मासिकं श्राद्धमन्वाहार्यं विदुर्बुधाः ।
तच्चामिषेण कर्तव्यं प्रशस्तेन प्रयत्नतः' ॥२॥ इति मनुः ३।१२२-१२३॥

३. कुतपलक्षणं यथा—
'मुहूर्तात्सप्तमादूर्ध्वं मुहूर्तान्नवमादधः । स काल: कुतपो ज्ञेयः.......' इति ॥
'दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति भास्करे ।
स कालः कुतपो यत्र पितृभ्यो दत्तमक्षयम्' ॥ १ ॥ इति स्मृतिरिति । क्षी० स्वा० ॥

१　सनिस्त्वध्येषणा २ ³याञ्चाऽभिशस्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥
३　षट् तु त्रिष्व ४ र्घ्यमर्घार्थे ५ पाद्यं पादाय वारिणि ।
६　क्रमादातिथ्यातिथेये　अतिथ्यर्थेऽत्र　साधुनि ॥ ३३ ॥
८　स्युरावेशिक　आगन्तुरतिथिर्ना　गृहागते ।
९　²'प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्च—

१ सनिः, अध्येषणा (२ स्त्री), 'गुरु' पिता, माता आदि श्रेष्ठ जनोंकी सेवा करने और प्रार्थनापूर्वक गुरु आदि श्रेष्ठ जनोंको किसी काममें प्रवृत्त करने' के २ नाम हैं ॥

२ याञ्जा, अभिशस्तिः (+अभिषस्तिः), याचना, अर्थना (४ स्त्री), 'याचना करने, माँगने' के ४ नाम हैं ॥

३ यहां से ६ शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ अर्घ्यम् (त्रि), 'अर्घ (अर्घ्य देने) के लिये जल' का १ नाम है ॥

५ पाद्यम् (त्रि), 'पाद्य (पैर धोने) के लिये जल' का १ नाम है ॥

६ आतिथ्यम् (त्रि), 'अतिथियों के निमित्त वस्तु' का १ नाम है ॥

७ आतिथेयम् (त्रि), 'अतिथियोंके विषयमें सज्जन (अच्छा व्यवहार करनेवाले), का १ नाम है ॥

८ आवेशिकः, आगन्तुः (२ त्रि), ³अतिथिः (+अतिथिः पु; अतिथी स्त्री), 'अतिथि' के ३ नाम हैं ॥

९ [प्राघूर्णिकः, प्राघुणकः (+आवेशिकः । २ पु), 'अभ्यागत' के २ नाम हैं] ॥

---

१. 'याञ्चाऽभिषस्ति—' इति पाठान्तरम् ॥

२. प्राघूर्णिकः.........गौरवम्' इत्यंशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

३. अतिथिलक्षणान्युच्यन्ते—

तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे त्यक्ता येन महात्मना ।
सोऽतिथिः सर्वभूतानां शेषानभ्यागतान्विदुः' ॥ १ ॥ इति यमः ॥

कचित्तु —'शेषः प्राघुणिकः स्मृतः' इति तुरीयपादः ॥

'दूराच्चोपगतं श्रान्तं वैश्वदेव उपस्थितम् ।
अतिथिं तं विजानीयान्नातिथिः पूर्वमागतः' ॥ १ ॥ इति व्यासश्च ॥
'अध्वनीनोऽतिथिर्ज्ञेयः श्रोत्रियो वेदपारगः' इति याज्ञ० १।१११ ॥

—१ अभ्युत्थानं तु गौरवम्' (२०)

२ पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्याऽर्चार्हणाः समाः ॥ ३४ ॥
३ वरिवस्या तु शुश्रूषा [1]परिचर्याप्युपासना।
४ व्रज्याऽटाट्या पर्यटनं ५ चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥ ३५ ॥
६ उपस्पर्शस्त्वाचमन ७ मथ मौनमभाषणम्।
८ [2]'प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः (२१)
[3]वाल्मीकश्चा ९ थ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः (२२)

१ [अभ्युत्थानम् , गौरवम् (२ न), 'अभ्युत्थान' अर्थात् 'बड़े लोगोंके आनेपर उठकर अगवानी करने' के २ नाम हैं] ॥

२ पूजा, नमस्या, अपचितिः, सपर्या, अर्चा, अर्हणा (६ स्त्री), 'पूजा' के ६ नाम हैं ॥

३ वरिवस्या, शुश्रूषा, परिचर्या (+ उपचर्या, परेष्टिः), उपासना (+ न। ४ स्त्री), 'शुश्रूषा करने' के ४ नाम हैं ॥

४ व्रज्या, अटाट्या (+ अटा, अट्या, मह०। २ स्त्री), पर्यटनम् (+ भ्रमणम्। न), 'घूमने' के ३ नाम हैं ॥

५ चर्या (+ ईर्या मुनि०। स्त्री), 'ध्यान' मौन इत्यादि योगमार्गोंमें स्थित होने' का १ नाम है ॥

६ उपस्पर्शः (पु), आचमनम् (न), 'आचमन करने' के २ नाम हैं ॥

७ मौनम् , अभाषणम् (२ न), मौन या चुप रहने' के २ नाम हैं ॥

८ [प्राचेतसः, आदिकविः, मैत्रावरुणिः (मैत्रावरुणः), वाल्मीकः (+ वाल्मीकिः, वल्मीकः, वल्मिकः। ४ पु), 'वाल्मीकि मुनि' के ४ नाम हैं] ॥

९ [गाधेयः, विश्वामित्रः, कौशिकः (+ कौषिकः। ३ पु), 'विश्वामित्र मुनि' के ३ नाम हैं] ॥

१. 'परिचर्याप्युपासनम्' इति पाठान्तरम्।
२. 'प्राचेतसः............सुतः' अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यते ॥
३. 'वाल्मीकिश्चाथ' इति पाठान्तरम् ॥

१ व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः' (२३)
२ आनुपूर्वी स्त्रियां [1]वावृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥ ३६ ॥
पर्यायश्चा ३ तिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः।
४ नियमो व्रतमस्त्री ५ तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥
६ [2]औपवस्तं तूपवासो ७ विवेकः पृथगात्मता।
८ स्याद् ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्धि ९ रथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥
पाठे ब्रह्माञ्जलिः—

१ [व्यासः, द्वैपायनः, पाराशर्यः, सत्यवतीसुतः (४ पु), 'व्यास मुनि' के ४ नाम हैं ॥

२ आनुपूर्वी (स्त्री। + आनुपूर्व्यम्), आवृत् , परिपाटी (+ परिपाटिः। २ स्त्री), अनुक्रमः, पर्यायः (२ पु) 'क्रम' अर्थात् 'सिलसिला' के ५ नाम हैं ॥

३ अतिपातः, पर्ययः, उपात्ययः, (३ पु), 'बिना क्रम' अर्थात् 'बेसिलसिला' के ३ नाम हैं ॥

४ नियमः (पु), व्रतम् (न पु), 'नियम या व्रत' के २ नाम हैं ॥

५ पुण्यकम् (न), 'उपवासादि (सान्तपन, कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, प्राजापत्य, चान्द्रायण आदि) शास्त्र-विहित व्रत' का १ नाम है ॥

६ औपवस्तम् (+ औपवस्त्रम् , उपवस्तम् । न), उपवासः (+ उपोषितम् , उपोषणम् । पु), 'उपवास, उपास' के २ नाम हैं ॥

७ विवेकः (पु), पृथगात्मता (भा० दी०, स्त्री), 'प्रकृति और पुरुषके भेद-ज्ञान या भावोंके पृथक् स्वरूप-ज्ञान' के २ नाम हैं ॥

८ ब्रह्मवर्चसम् (न), वृत्ताध्ययनर्द्धिः (भा० दी०, स्त्री) 'ब्रह्मवर्चस' अर्थात् 'सदाचार और वेदाभ्यासकी वृद्धि या सम्पत्ति' के २ नाम हैं ॥

९ [3]ब्रह्माञ्जलिः (पु), 'वेदादि पढ़नेके पहले और अन्तमें

१. 'वावृत्परिपाटिरनुक्रमः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'औपवस्त्रम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. यथाऽऽह मनुः—'ब्रह्मारम्भेऽवसाने च पादौ ग्राह्यौ गुरोः सदा।
संहत्य हस्तावध्येयं स हि ब्रह्माञ्जलिः स्मृतः ॥ १ ॥
व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुपसंग्रहणं गुरोः।
सव्येन सव्यः स्प्रष्टव्यो दक्षिणेन च दक्षिणः' ॥ २ ॥ इति मनुः २।७१-७२

—१ पाठे [1]विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः।

२ ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं ३ कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥

४ मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पो ५ ऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः।

२ संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ॥ ४० ॥

७ समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे।

व्यस्त हाथसे (दहने हाथसे दहिना और बायें हाथसे बायाँ) गुरुके पैरको छूकर प्रमाण करने' का १ नाम है ॥

१ ब्रह्मबिन्दुः (पु), 'वेदादि पढ़नेके समय मुखसे निकले हुए जल-कण (थूकमिश्रित जल की छोटी २ बूँद)' का १ नाम है ॥

१ ब्रह्मासनम् (न) 'ध्यान और योगके आसन' का १ नाम है ॥

३ कल्पः, विधिः, क्रमः (३ पु) 'शास्त्रोक्त विधि' के ३ नाम हैं ॥

४ [2]मुख्यः (पु), 'शास्त्रोक्त प्रधान विधि' का १ नाम है ॥

५ [3]अनुकल्पः (पु), 'शास्त्रोक्त गौण (अप्रधान, अभाव पक्षीय) विधि' का १ नाम है ॥

५ उपाकरणम् (न), 'संस्कारके साथ २ वेदको ग्रहण करने' का १ नाम है ॥

७ पादग्रहणम्, अभिवादनम् (२ न), [4]'अपने नामको कहते हुए प्रणाम करने' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'विप्लुषो ब्रह्मबिन्दव' इति पाठान्तरम् ॥

२. यथा 'व्रीहिभिर्यजेत' इति श्रुतौ व्रीहिश्रवणात् 'व्रीहिभिरेव यजेत नान्येन द्रव्येण' इति श्रुत्यर्थात् व्रीहिकरणमुपादानं प्रधानमतो व्रीहिभिर्यागकरणं मुख्यः कल्पः ॥

३. व्रीहिकाभावे नित्यनैमित्तिकादिविधिक्षयो मा भूदित्यतो ' ' इति श्रुत्या नीवारेणापि यागो विधीयत इति नीवारकरणकमुपादानमप्रधानमतो नीवारेण यागकरणमनुकल्पः ॥

४. तदाह मनुः—

'अभिवादात्परं विप्रो ज्यायांसमभिवादयेत्।

असौ नामाहमस्मीति स्वं नाम परिकीर्तयेत्' ॥ १ ॥ इति मनु २।१२२ ॥

१ भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥
२ तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी ३ वाचंयमो मुनिः ।
४ तपःक्लेशसहो दान्तो ५ वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥
६ ऋषयः सत्यवचसः—

१ भिक्षुः, परिव्राट् (=परिव्राज् । +परिव्राजकः), कर्मन्दी (=कर्मन्दिन्), पाराशरी (=पाराशरिन्), मस्करी (=मस्करिन् । ५ पु), 'संन्यासी' के ५ नाम हैं ॥

२ तपस्वी (=तपस्विन्), तापसः, पारिकाङ्क्षी (=पारिकाङ्क्षिन् । ३ पु), 'तपस्वी' के ३ नाम हैं ॥

३ वाचंयमः, मुनिः (२ पु), 'मुनि' के २ नाम हैं । ('किसी किसी के मतसे ये २ नाम भी 'संन्यासी' के ही पर्याय हैं) ॥

४ तपःक्लेशसहः (भा० वी०), दान्तः (२ पु), **'तपस्या के क्लेश को सहनेवाले'** के २ नाम हैं ॥

५ वर्णी (=वर्णिन्), [१]ब्रह्मचारी (=ब्रह्मचारिन्), **'ब्रह्मचारी'** के २ नाम हैं ॥

६ ऋषिः, सत्यवचाः (=सत्यवचस् । २ पु), **'ऋषि-सामान्य'** के २ नाम हैं । (श्रुतर्षि १, काण्डर्षि २, परमर्षि ३, महर्षि ४, राजर्षि ५, ब्रह्मर्षि ६ और देवर्षि ७; ये [२]सात **'ऋषियोंके भेद'** हैं) ॥

'आत्मनाम गुरोर्नाम नामातिकृपणस्य च । श्रेयस्कामो न गृह्णीयाज्ज्येष्ठापत्यकलत्रयोः' ॥ १ ॥

इति वचनेन यद्यपि श्रेयस्कामुकस्यात्मनामग्रहणं निषिद्धन्तथापि जन्मद्वादशे दिने तत्पित्रादिकृतनाक्षत्रनामपरम् । विस्तरतस्तु वैयाकरणलघुमञ्जूषायां स्मृत्यन्तरे वा प्रपञ्चितमत्र विस्तरभयान्न लिखितमिति तत एवावधार्यम् ॥

१. तदुक्तम्—'कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ।
सर्वथा मैथुनत्यागः ब्रह्मचर्यं तदुच्यते' ॥ १ ॥

एतत्कर्मसम्पन्नो 'ब्रह्मचारी' भवति ।

२. ऋषयः सप्तविधाः । ते यथा—श्रुतर्षिः पवित्रकथादिश्रवणकर्ता १, काण्डर्षिः वेदानां प्रधानकाण्डस्योपदेष्टा २, परमर्षिः मुनिभेलप्रभृतयः ३, महर्षिः व्यासादयः ४, राजर्षिः विश्वामित्रादयः ५, ब्रह्मर्षिः वसिष्ठादयः ६, देवर्षिः नारदादयः ७ इति ॥

—१ [1]स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती।
२ ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते ॥ ४३ ॥
३ यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ।
स्थाण्डिलश्चा ४ थ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः ॥ ४४ ॥
५ पवित्रः प्रयतः पूतः ६ [2]पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः।

१ स्नातकः, आप्लुतः, (+ आप्लवव्रती = आप्लवव्रतिन्, आप्लुतव्रती = आप्लुतव्रतिन्। पु), 'स्नातक' अर्थात् 'वेदव्रतको समाप्त होनेपर गुरुकी आज्ञासे समाप्ति-सूचक स्नान-विशेष (समावर्तन) किये हुए ब्रह्मचारी' के २ नाम हैं। ('स्नातकके ३ भेद हैं—वेदको समाप्तकर और व्रतको विना समाप्त किये समावर्तन संस्कारवाला विद्यास्नातक १, व्रतको समाप्तकर और वेदको विना समाप्त किये समावर्तन संस्कारवाला व्रतस्नातक २, तथा वेद और विद्या दोनों को समाप्तकर समावर्तन संस्कारवाला विद्याव्रतस्नातक ३ [3]) ॥

२ निर्जितेन्द्रियग्रामः (भा० दी०), यती (= यतिन्), यतिः (३ पु), 'जितेन्द्रिय' के ३ नाम हैं ॥

३ स्थण्डिलशायी (= स्थण्डिलशायिन्), स्थाण्डिलः (२ पु), 'स्थण्डिल (विना साफ सुथरा की हुई अकृत्रिम भूमि) पर सोनेवाले व्रती' के २ नाम हैं ॥

४ विरजस्तमाः (= विरजस्तमस्), द्वयातिगः (२ पु), 'सत्त्वगुणी' के २ नाम हैं ॥

५ पवित्रः, प्रयतः, पूतः (३ पु), 'पवित्र' के ३ नाम हैं ॥

६ [4]पाखण्डः (+ पाषण्डः), सर्वलिङ्गी (= सर्वलिङ्गिन्। २ पु), 'पाखण्डी' अर्थात् 'दुष्ट शास्त्रमें स्थित बौद्ध आदि क्षपणक (संन्यासी)' के २ नाम हैं ॥

१. 'स्नातकस्त्वाप्लवव्रती' इति 'स्नातकस्त्वाप्लुतव्रती' इति च पाठान्तरे ॥
२. 'पाषण्डाः इति पाठान्तरम् ॥
३. एतत्सर्वं याज्ञवल्क्यस्मृतावाचाराध्याये (१।११०) मिताक्षरायां सुस्पष्टम् ॥
४. तदुक्तम्—'पालनाच्च त्रयीधर्मः पाशब्देन निगद्यते।
तं खण्डयन्ति ते यस्मात्पाखण्डास्तेन हेतुना' ॥ १ ॥ इति ॥

१ पालाशो दण्ड आषाढो व्रते २ राम्भस्तु वैणवः ॥ ४५ ॥
३ अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी ४ व्रतिनामासनं [1]वृषी ।
५ अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री ६ भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥ ४६ ॥
७ स्वाध्यायः स्याज्जपः—

---

१ [2]आषाढः (आषाढकः, आषाढः । पु), 'ब्रह्मचर्यावस्थामें ब्राह्मणसे धारण किये हुए पलाशके दण्ड' का १ नाम है ॥

२ राम्भः (पु), 'ब्रह्मचर्यावस्थामें धारण किये हुए बाँसके दण्ड' का १ नाम है ॥

३ कमण्डलुः (पु न), कुण्डी (स्त्री), 'कमण्डलु' के २ नाम हैं ॥

४ वृषी (+ वृसी । स्त्री), 'ब्रह्मचारी आदि व्रतियोंके आसन' का १ नाम है ॥

५ अजिनम्, चर्म (= चर्मन् । २ न), कृत्तिः (स्त्री), 'मृगादिके चमड़े' के ३ नाम हैं ॥

६ भैक्षम् (त्रि), 'भिक्षामें मिले हुए पदार्थ' का १ नाम है ॥

७ स्वाध्यायः, जपः (२ पु), 'नियमसे वेदादिके अभ्यास करने' के २ नाम हैं । 'जप ३ प्रकारका होता है—वाचिक १, उपांशु २ और मानस ३ । इनको उत्तरोत्तर श्रेष्ठ[3] कहा गया है') ॥

---

१. 'वृसी' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'ब्राह्मणो बैल्वपालाशौ क्षत्रियो वटखादिरौ ।
पैलवौदुम्बरौ वैश्या दण्डानर्हन्ति धर्मतः' ॥ १ ॥

इति मनुः २।४५॥

३. हारीतोक्ता जपभेदास्तेषां लक्षणानि चात्र प्रदर्श्यन्ते—
'……त्रिविधो जपयज्ञः स्यात्तस्य तत्त्वं निबोधत ॥
वाचिकश्चाप्युपांशुश्च मानसश्च त्रिधाऽऽकृतिः । त्रयाणामपि यज्ञानां श्रेष्ठः स्यादुत्तरोत्तरः ॥
यदुच्चनीचोच्चरितैः शब्दैः स्पष्टपदाक्षरैः । मन्त्रमुच्चारयेद्वाचा जपयज्ञस्तु वाचिकः ॥

—१ सुत्याऽभिषवः सवनं च सा।
२ सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम् ॥ ४७ ॥
३ दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक्।
४ शारीरसाधनापेक्षं नित्यं यत् कर्म तद्यमः ॥ ४८ ॥
५ नियमस्तु स तत् कर्म नित्यमागन्तुसाधनम्।

---

१ सुत्या (स्त्री), अभिषवः (पु), सवनम् (न), 'सोमलता (यज्ञौषधि) को कूटने' के ३ नाम हैं ॥

२ अघमर्षणम् (त्रि), 'सब पापोंको नाश करनेवाले जप' (ऋचा आदि)' का १ नाम है ॥

३ दर्शः, पौर्णमासः (२ पु), 'अमावास्या और पूर्णिमाको होनेवाले यज्ञ' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

४ यमः (पु), जीवनभर शरीरसे करने योग्य संयम' का १ नाम है। ('अहिंसा १, सत्य २, अस्तेय (किसीकी कोई वस्तु बिना दिये या पूछे न लेना) ३, ब्रह्मचर्य ([1]आठ प्रकारके मैथुनका त्याग) ४ और अपरिग्रह (हिंसादि अनेक दोषोंको देखकर दान नहीं लेना ५) ये पाँच यम[2] हैं') ॥

५ नियमः (पु), 'नियम' अर्थात् 'जो कार्य जीवन पर्यन्त नहीं हो सके किन्तु विशेष २ समयपर किया जाय उस कार्य' का १ नाम है। ('शौच अर्थात्

शनैरुच्चारयेन्मन्त्रं किञ्चिदोष्ठौ प्रचालयेत्। किञ्चिच्छ्रवणयोग्यः स्यात्स उपांशुर्जपः स्मृतः ॥ धिया पदाक्षरश्रेण्या अवर्णमपदाक्षरम्। शब्दार्थचिन्तनाभ्यां तु तदुक्तं मानसं स्मृतम्' ॥
इति हारीतस्मृतिः ४।४०-४४

१. अष्टाङ्गमैथुनलक्षणं यथा—

'स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्।
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च ॥ १ ॥
एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः'। इति ॥

२. 'तदुक्तं भगवत्पतञ्जलिना—'तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः' इति यो० सू० २।३० ॥

१ 'क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु' (२४)

२ उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ॥ ४९ ॥

३ प्राचीनावीतमन्यस्मिन् ४ निवीतं कण्ठलम्बितम् ।

मिट्टी जल आदिसे बाहरी और पञ्चगव्य-पान आदिसे भीतरी पवित्रता १, सन्तोष २, तप (चान्द्रायण, कृच्छ्र, सान्तपन आदि व्रत) ३, स्वाध्याय (वेदादिका अध्ययन) ४, ईश्वरप्रणिधान (परमेश्वरकी पूजा आदि) ५, 'ये पाँच नियम[1] हैं) ॥

१ [क्षौरम् , भद्राकरणम् , मुण्डनम् (३ न), वपनम् (त्रि), 'मुण्डन कराने' के ४ नाम हैं] ॥

२ उपवीतम् , ब्रह्मसूत्रम् (भा० दी० । × यज्ञसूत्रम् २ न) 'बायें कन्धेके ऊपरसे दाहिने तरफ नीचेकी ओर लटकते हुए जनेऊ' के २ नाम हैं । ('उपवीत जनेऊको धारण करनेवालेका [2]उपवीती (= उपवीतिन् पु), यह १ नाम है') ॥

३ प्राचीनावीतम् (न), 'दाहिने कन्धेके ऊपरसे बायीं तरफ नीचेको लटकते हुए जनेऊ' का १ नाम है । ('प्राचीनावीत जनेऊको धारण करने वालेका [3]प्राचीनावीती (= प्राचीनावीतिन् पु) यह १ नाम है') ॥

४ निवीतम् (न) 'मालाकी तरह गर्दनसे सीधे नीचे की ओर लटकते हुए जनेऊ' का १ नाम है । ('निवीत जनेऊको धारण करनेवाले का [4]निवीती (= निवीतिन् पु) यह १ नाम है') ॥

---

१. तदुक्तं भगवत्पतञ्जलिना—'शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः' इति यो० सू० २। ३२ ॥

२–३–४. उपवीति-प्राचीनावीति-निवीतिनां लक्षणमाह मनुस्तथथा—

'उद्धृते दक्षिणे पाणावुपवीत्युच्यते द्विजः ।
सव्ये प्राचीन आवीती निवीती कण्ठसज्जने' ॥ १ ॥ मनुः २।६३ ॥

छन्दोगपरिशिष्टे च—

'ब्रह्मसूत्रेऽत्र सव्येंऽसे स्थिते यज्ञोपवीतिता ।
प्राचीनावीतिताऽसव्ये कण्ठस्थे तु निवीतिता' ॥ १ ॥ इति ॥

१ अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैवं २ स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम् ॥ ५० ॥
३ मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः [1]पित्र्यं ४ मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् ।
५ स्याद् ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ॥ ५१ ॥
६ देवभूयादिकं तद्वत् ७ कृच्छ्रं सान्तपनादिकम् ।
८ संन्यासवत्यनशने पुमान् प्रायोऽथ वीरहा ॥ ५० ॥
नष्टाग्निः—

१ दैवम् (न), [2]'देवतीर्थ' अर्थात् 'हाथकी अङ्गुलियोंके आगेवाले भाग' का १ नाम है ॥

२ कायम् (न), [3]'कायतीर्थ' अर्थात् 'हाथकी कनिष्ठा अङ्गुलीके नीचे-वाले भाग' १ नाम है ॥

३ पित्र्यम् (+ पैत्र्यम् , पैत्रम् । न), [4]'पितृतीर्थ' अर्थात् 'हाथके अँगूठे और तर्जनी अङ्गुलीके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

४ ब्राह्मम् (न), [5]'ब्रह्मतीर्थ' अर्थात् 'हाथके अँगूठेके मूलभाग' का १ नाम है ॥

५ ब्रह्मभूयम् , ब्रह्मत्वम् , ब्रह्मसायुज्यम् (न), 'मोक्ष' अर्थात् ब्रह्ममें लीन हो जाने' के ३ नाम हैं ॥

६ देवभूयम् (न) आदि (देवत्वम् , देवसायुज्यम् ; २ न), 'देवतामें लीन हो जाने' के ३ नाम हैं ।

७ [6]कृच्छ्रम् (न) 'सान्तपन आदि (चान्द्रायण, पराक और प्राजा-पत्य आदि) व्रत' का १ नाम है ॥

८ प्रायः (पु), 'संन्यास-पूर्वक भोजनको छोड़ने' का १ नाम है ॥

९ वीरहा (= वीरहन् । + विरहा=विरहन्), नष्टाग्निः (२ पु), 'प्रमादसे जिस अग्निहोत्रीकी आग बुझ गयी हो उस अग्निहोत्री'के २ नाम हैं

१. 'पैत्र्यम्' इति पाठान्तरम् ॥

२–३–४–५. ब्राह्म-काय-दैव-पित्र्य-तीर्थानां लक्षणान्याह मनुः । तथा हि—

'अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्षते ।
कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः' ॥ १ ॥ इति मनुः २।५९ ॥

६. भेदपुरःसरकृच्छ्रभेदास्तद्विधिश्च याज्ञवल्क्यस्मृतौ (३।३१५—३२५), मनुस्मृतौ ११।२११—२२५) च द्रष्टव्याः ।

—१ कुहना लाभान्मिथ्येर्यापथकल्पना ।
२ व्रात्यः संस्कारहीनः स्यात्[3]अस्वाध्यायो निराकृतिः ॥ ५३ ॥
४ धर्मध्वजी लिङ्गवृत्ति[5]रवकीर्णी क्षतव्रतः ।
६ सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ॥ ५४ ॥
अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ।
७ परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥ ५५ ॥

---

१ कुहना (स्त्री), 'दम्भसे ध्यान-मौनादि धारण करने, धनलाभसे मिथ्या धर्माचरण करने' का १ नाम है ॥

२ [1]व्रात्यः, संस्कारहीनः (भा० दी० । २ पु), 'यथोचित समयपर यज्ञोपवीत संस्कारसे हीन द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य)' के २ नाम हैं ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्यका गर्भाधानसे क्रमशः १६, २२ और २४ वर्षकी अवस्थातक यज्ञोपवीत नहीं होने पर उन्हें 'व्रात्य' कहते हैं) ॥

३ अस्वाध्यायः (भा० दी०), निराकृतिः (२ पु), 'वेदको नहीं पढ़नेवाले' के २ नाम हैं । ('व्रात्यः,……' ४ नाम एकार्थक हैं, यह भी कई एक आचार्योंका मत है') ॥

४ धर्मध्वजी (= धर्मध्वजिन्), लिङ्गवृत्तिः (२ पु), 'भिक्षा आदि मिलनेके लिये जटा-भस्मादि धारणकर झूठा साधु बनने' के २ नाम हैं ॥

५ अवकीर्णी (= अवकीर्णिन्), क्षतव्रतः (भा० दी० । २ पु), 'नियमसे चलनेवाला ब्रह्मचर्यादि व्रत जिसका बीच ही में भग्न हो गया हो उस ब्रह्मचारी-आदि व्रती' के २ नाम हैं ॥

६ अभिनिर्मुक्तः, अभ्युदितः (२ पु), 'जिसके सोते रहनेपर सूर्योदय हो और जिसके सोते रहने पर सूर्यास्त हो उस'का क्रमशः १-१ नाम है ॥

७ परिवेत्ता (= परिवेत्तृ, पु), 'बड़े भाईके अविवाहित (बिना ब्याह किये हुए) रहनेपर विवाहित (ब्याह किये हुए) छोटे भाई' का १ नाम है ॥

---

१. व्रात्यलक्षणमाह मनुस्तद्यथा—

'आषोडशाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते ।
आद्वाविंशात्क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ १ ॥
अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः ।
सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः ॥ २ ॥ इति मनुः २।३८—३९

१ परिविक्तिस्तु तज्ज्यायान् २ विवाहोपयमौ समौ।
तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥
३ [1]व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम्।
४ त्रिवर्गो धर्मकामार्थै५श्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥
६ सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं ७ जन्याः स्निग्धा वरस्य ये।

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

---

१ [2]परिविक्तिः (पु), 'जिसका छोटा भाई विवाहित हो उस अविवाहित बड़े भाई' का १ नाम है ॥

विवाहः, उपयमः, परिणयः, उद्वाहः, उपयामः (५ पु), पणिपीडनम् (+ पाणिग्रहणम्, करपीडनम्,······। न) 'विवाह' के ६ नाम हैं ॥

३ व्यवायः, ग्राम्यधर्मः (२ पु), मैथुनम्, निधुवनम्, रतम् (३ न), 'मैथुन' अर्थात् 'स्त्रीके साथ सम्भोग करने'के ५ नाम हैं ॥

४ त्रिवर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म और काम के समुदाय' का १ नाम है ॥

५ चतुर्वर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म और काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

६ चतुर्भद्रम् (न), 'सुदृढ़ अर्थ, धर्म, काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

७ जन्याः (पु), 'समान अवस्थावाले वर (दुलहा) के प्रेमी या वधूकी पालकी ढोनेवाले' का १ नाम है ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

---

१. 'व्यवायो ग्राम्यधर्मश्च रतं निधुवनं च सा' इति केचित्पठन्ति' इति महेश्वरः ॥

२. परिवेत्तृपरिवित्त्योर्लक्षणं यथा—
येऽग्रजेष्वकृतेषु कुर्वते दारसंग्रहम्। ज्ञेयास्ते परिवेत्तारः परिविक्तिस्तु पूर्वजः ॥१॥ इति ॥

१ परिविक्तिस्तु तज्ज्यायान् २ विवाहोपयमौ समौ।
तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥
३ [1]व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम्।
४ त्रिवर्गो धर्मकामार्थैः ५ चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥
६ सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं ७ जन्याः स्निग्धा वरस्य ये।

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

---

१ [2]परिविक्तिः (पु), 'जिसका छोटा भाई विवाहित हो उस अविवाहित बड़े भाई' का १ नाम है ॥

विवाहः, उपयमः, परिणयः, उद्वाहः, उपयामः (५ पु), पणिपीडनम् (+ पाणिग्रहणम्, करपीडनम्,······ । न) 'विवाह' के ६ नाम हैं ॥

३ व्यवायः, ग्राम्यधर्मः (२ पु), मैथुनम्, निधुवनम्, रतम् (३ न), 'मैथुन' अर्थात् 'स्त्रीके साथ सम्भोग करने'के ५ नाम हैं ॥

४ त्रिवर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म और काम के समुदाय' का १ नाम है ॥

५ चतुर्वर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म और काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

६ चतुर्भद्रम् (न), 'सुदृढ़ अर्थ, धर्म, काम और मोक्षके समुदाय' का १ नाम है ॥

७ जन्यः (पु), 'समान अवस्थावाले वर (दुल्हा) के प्रेमी या वधूकी पालकी ढोनेवाले' का १ नाम है ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

---

१. 'व्यवायो ग्राम्यधर्मश्च रतं निधुवनं च सा' इति केचित्पठन्ति' इति महेश्वरः ॥

२. परिवेत्तृपरिविक्त्योर्लक्षणं यथा—
येऽग्रजेष्वकृतोद्वाहेषु कुर्वते दारसंग्रहम्। ज्ञेयास्ते परिवेत्तारः परिविक्तिस्तु पूर्वजः ॥१॥ इति ॥

८. अथ क्षत्रियवर्गः ।

१ मूर्द्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।
२ राजा राट् पार्थिवक्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥
३ राज्ञि तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।
४ चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपः—

८ अथ क्षत्रियवर्गः ।

१ मूर्द्धाभिषिक्तः (+ मूर्द्धावसिक्तः), राजन्यः, [1]बाहुजः, क्षत्रियः, विराट (= विराज् । ५ पु), 'क्षत्रिय' के ५ नाम हैं ॥

२ राजा (= राजन्), राट् (= राज्), पार्थिवः क्ष्माभृत् (+ क्ष्माभुक् = क्ष्माभुज्, महीभुक् = महीभुज्, ······), नृपः, भूपः (+ महीपः, भूपतिः, भूपालः, महीपतिः, महीपालः ······), महीक्षित् (+ अधिपः, नराधिपः, नरेशः ······ । ७ पु), 'राजा' के ७ नाम हैं ॥

३ अधीश्वरः (= अप्रतिरथः । पु), 'सब तरफके राजाओंको वशमें करनेवाले राजा'का १ नाम है ॥

४ चक्रवर्ती (= चक्रवर्तिन्), सार्वभौमः (२ पु), चक्रवर्ती राजा' अर्थात् 'समुद्र-पर्यन्त पृथ्वीकी रक्षा करनेवाले राजा' के २ नाम हैं । ('१ भरत २ सगर, ३ मघवा, ४ सनत्कुमार, ५ शान्ति, ६ कुन्थु, ७ अर (ये तीनों जिन थे), ८ कार्तवीर्य, ९ पद्म, १० हरिषेण, ११ जय और १२ ब्रह्मदत्त, ये [2]बारह राजा भारतवर्षमें चक्रवर्ती हुए हैं, ये सब इक्ष्वाकु वंशमें उत्पन्न थे') ॥

---

१. 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः—' इति श्रुतेः ॥

२. तदुक्तं हेमचन्द्राचार्यैः—

'चक्रवर्ती सार्वभौमस्ते तु द्वादश भारते ॥
आर्षभिर्भरतस्तत्र सगरस्तु सुमित्रभूः । मघवा वैजयिरथाश्वसेननृपनन्दनः ॥
सनत्कुमारोऽथ शान्तिः कुन्थुररो जिना अपि । सुभूमस्तु कार्तवीर्यः पद्मः पद्मोत्तरात्मजः ॥
हरिषेणो हरिसुतो जयो विजयनन्दनः । ब्रह्मसूनुर्ब्रह्मदत्तः सर्वेऽपीक्ष्वाकुवंशजाः' ॥
[अभि० चिन्ता० ३।३५५–३५८ ॥

—१ अन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

२ येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः।
शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राड३थ राजकम् ॥ ३ ॥
४ राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात्।
५ मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो६ऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

---

१ मण्डलेश्वरः (पु), 'मण्डल (इसके [1]बारह प्रकृति अर्थात् भेद होते हैं) या देशको शासन करनेवाले राजा' का १ नाम है ॥

१ सम्राट् (= सम्राज्, पु) भा० दी० मतसे 'जिसने राजसूय यज्ञ किया हो, मण्डल (इसकी बारह प्रकृतियाँ होती हैं) का स्वामी हो और सब राजाओंको जीतकर अपने वशमें कर लिया हो उस राजा' का और किसी २ के मतसे पूर्वोक्त १-१ गुणोंसे भी युक्त राजा' का १ नाम है ॥

३ राजकम् (न), 'राजसमूह' का १ नाम है ॥

४ राजन्यकम् (न), 'क्षत्रियोंके समुदाय' का १ नाम है ॥

५ मन्त्री (= मन्त्रिन्), धीसचिवः अमात्यः (+ सामवायिकः। ३ पु) 'मन्त्री' अर्थात् 'बुद्धिविषयक सहायता देनेवाले मन्त्री' के ३ नाम हैं ॥

६ कर्मसचिवः (पु) 'प्रत्येक काममें सहायता देनेवाले मन्त्री' का १ नाम है ॥

---

१. मण्डलस्य द्वादश प्रकृतयो भवन्ति। ता यथा—१ विजेतुमभ्युद्यतो विजिगीषुः २ सहज-कृत्रिम-स्वभूम्यनन्तरत्रिविधोऽरिः, ३ असंहतयोररिविजिगीष्वोर्निग्रहे समर्थो मध्यमः, ४ अरिविजिगीषुमध्यमानामसंहतानां निग्रहे समर्थ उदासीनः, ५ विजिगीषुमित्रम्, ६ अरिमित्रम्, ७ विजिगीषुमित्रमित्रम्, ८ अरिमित्रमित्रम्, ९ पार्ष्णिग्राहः, १० आक्रन्दः, ११ पार्ष्णिग्राहासारः, १२ आक्रन्दासारश्चेति। सविस्तरमेतद्विवरणं वीरमित्रोदयस्य राजनीतिप्रकाशे द्वादशराजमण्डलप्रकरणस्य ३२० तमे पृष्ठे द्रष्टव्यम् ॥

एत एव द्वादश राजमण्डलभेदाः क्षीरस्वामिभिरुक्तास्तथा हि—

'अरिर्मित्रमरेर्मित्रं मित्रमित्रमतः परम्।
तथाऽरिमित्रमित्रञ्च विजिगीषोः पुरः स्मृताः ॥ १ ॥
पार्ष्णिग्राहस्तथाऽऽक्रन्द आसारश्च तयोः पृथक्।
मध्यमोऽप्युदासीन इति द्वादश राजकम्' ॥ २ ॥ इति ॥

१ महामात्राः प्रधानानि २ पुरोधास्तु पुरोहितः ।
३ द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विपाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥

---

१ महामात्रः (पु), प्रधानम् (न । +पु) 'प्रधान मन्त्री, राजाके खास सलाहकार' के २ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे 'कर्मसचिवः' आदि २ नाम 'काममें सहायता देनेवाले मन्त्रि' के ही हैं') ॥

२ पुरोधाः (=पुरोधस्), पुरोहितः (+सौवस्तिकः । २ पु) 'पुरोहित' के २ नाम हैं ॥

३ [1]प्राड्विपाकः, अक्षदर्शकः (+आक्षदर्शकः, अक्षपटलिकः । २ पु), 'व्यवहार (मुकदमे) को देखनेवाले' अर्थात् 'न्यायाधीश' के २ नाम हैं । ('व्यवहारके [1]प्रधान अट्ठारह भेद होते हैं')

---

१. नानामतेन प्राड्विपाकलक्षणान्युच्यन्ते—

'विवादानुगतं पृष्ट्वा पूर्ववाक्यं प्रयत्नतः ।
विचारयति येनासौ प्राड्विपाकस्ततः स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

क्वचित्—सस्भ्यस्तत्प्रयत्नतः' इत्येवं द्वितीयः पादः ॥

अन्यच्च—'विवादे पृच्छति प्रश्नं प्रतिप्रश्नं तथैव च ।
नयपूर्वं प्राग्वदति प्राड्विपाकस्ततः स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

१. मनुरष्टादश व्यवहारानाह—

'तेषामाद्यमृणादानं निक्षेपोऽस्वामिविक्रयः ।
सम्भूय च समुत्थानं दत्तस्यानपकर्म च ॥ १ ॥
वेतनस्यैव चादानं संविदश्च व्यतिक्रमः ।
क्रयविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः ॥ २ ॥
सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके ।
स्तेयं च साहसं चैव स्त्रीसंग्रहणमेव च ॥ ३ ॥
स्त्रीपुंधर्मो विभागश्च द्यूतमाह्वय एव च ।
पादान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविह' ॥ ४ ॥

इति मनुः ८।४-७ ॥

'एषामेव प्रभेदोऽन्यः शतमष्टोत्तरं भवेत् ।
क्रियाभेदान्मनुष्याणां शतशाखं निगद्यते' ॥ १ ॥

इति नारदोक्त्याऽस्यानेकधा भेदास्ते इह विस्तरभयान्नोच्यन्ते ॥

१ [1]प्रतीहारो द्वारपालद्वास्थद्वास्थितदर्शकाः ।
२ रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थो ३ऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥
४ स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे ५ गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
६ [2]भौरिकः कनकाध्यक्षो ७ रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥ ७ ॥
८ अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जनः ।
९ सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥
१० [3]शण्ढो वर्षवरस्तुल्यौ—

१ प्रतीहारः (+ प्रतिहारः), द्वारपालः, द्वास्थः (+ द्वाःस्थः), द्वास्थितः (+ द्वाःस्थितः), दर्शकः (+ द्वास्थितदर्शकः द्वास्थोपस्थितदर्शकः, दौवारिकः ५ पु), 'द्वारपाल, ड्योढ़ीदार' के ५ नाम हैं ॥

२ रक्षिवर्गः, अनीकस्थः (२ पु), 'राज आदिके अङ्गरक्षक' के २ नाम हैं ॥

३ अध्यक्षः, अधिकृतः (२ पु), 'अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

४ स्थायुकः (पु), 'एक ग्रामके अध्यक्ष' का १ नाम है ॥

५ गोपः (पु), 'बहुत ग्रामोंके अध्यक्ष' का १ नाम है ॥

६ भौरिकः (+ हैरिकः) कनकाध्यक्षः (२ पु), 'सुवर्णके अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

७ रूप्याध्यक्षः नैष्किकः (२ पु), 'टकसाल' (रुपया आदि सिक्का ढालनेके कारखाने) के अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

८ अन्तर्वंशिकः (+ अन्तर्वंशिकः । पु), 'रनिवासमें नियुक्त पुरुष' का १ नाम है ॥

९ सौविदल्लः, कञ्चुकी (+ कञ्चुकिन्), स्थापत्यः, सौविदः (४ पु), 'कञ्चुकी' अर्थात् 'राजाओंके रनवासमें या रनिवासमें पहरी रक्षाके लिये बेंतकी पतली छड़ी लिये हुए आने-जानेवाले वृद्ध पुरुष' के ४ नाम हैं ॥

१० शण्ढः (+ षण्ढः), [4]वर्षवरः (२ पु), 'नपुंसक, जनखा' के २ नाम हैं ॥

१. प्रतिहारो द्वारपालो द्वास्थोपस्थितदर्शकः' इति पाठान्तरम् ॥
२. 'हैरिकः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. षण्ढो' इति पाठान्तरम् ॥
४. वर्षवरलक्षणं यथा—

—१ सेवकार्थ्यनुजीविनः ।

२ विषयानन्तरो राजा शत्रुर्३मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥
४ उदासीनः परतरः ५ पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।
६ रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥
द्विड्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः ।
अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥
७ वयस्यः स्निग्धः सवया ८ अथ मित्रं सखा सुहृत् ।

---

१ सेवकः, अर्थी (= अर्थिन्), अनुजीवी (= अनुजीविन् । + अनुचरः ३ पु), 'सेवक, नौकर' के ३ नाम हैं ॥

२ शत्रुः (पु), 'अपने देश (राज्य) के समीपवाले देशके राजा' का १ नाम है ॥

३ मित्रम् (न), 'पूर्वोक्तसे भिन्न राजा' का १ नाम है ॥

४ उदासीनः (पु), 'उदासीन' अर्थात् 'पूर्वोक्त शत्रु और मित्रके लक्षणसे भिन्न राजा' का १ नाम है ॥

५ पार्ष्णिग्राहः (पु), 'राजाके युद्धादि-यात्रामें पीछेसे किलेपर चढ़ाई करनेवाले या योद्धाके पीछेसे रक्षा करनेवाले राजा' का १ नाम है ॥

६ रिपुः, वैरी (= वैरिन् ,) सपत्नः, अरिः, द्विषन् (= द्विषत्), द्वेषणः, दुर्हृद्, द्विट् (= द्विष्), विपक्षः, अहितः, अमित्रः, दस्युः, शात्रवः, शत्रुः, अभिघाती (= अभिघातिन् । + अभियातिः), परः, अरातिः, प्रत्यर्थी (= प्रत्यर्थिन्), (परिपन्थी (= परिपन्थिन् । १९ पु), 'वैरी' के १९ नाम हैं ॥

७ वयस्यः, स्निग्धः, सवयाः (= सवयस् । ३ पु), 'समान अवस्थावाले मित्र' के ३ नाम हैं ॥

८ [1]मित्रम् (न), [2]सखा (= सखि), [3]सुहृत् (= सुहृद् । + साप्तपदीनः । २ पु), 'मित्र, दोस्त' के ३ नाम हैं ॥

'ये त्वनपसत्त्वाः प्रथमाः क्लीबाश्च स्त्रीस्वभाविनः ।
जात्या न दुष्टाः कार्येषु ते वै वर्षवराः स्मृताः' ॥ १ ॥ इति ॥

१-२-३. 'अत्यागसहनो बन्धुः सदैवानुगतः सुहृत् ।
एकक्रियं भवेन्मित्रं समप्राणः सखा स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

१ सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥
३ यथार्हवर्णः [1]प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः।
चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥
५ सांवत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञगणकावपि।
स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥
६ तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः ७ सत्री गृहपतिः समौ।
८ [2]लिपिकारोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥
९ [3]लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ।

---

१ सख्यम्, साप्तपदीनम् (+ सौहृदम्, सौहार्दम्, सौहृद्यम्, आजर्यम्, मैत्री। २ न), 'दोस्ती, मित्रता' के २ नाम हैं ॥

२ अनुरोधः (पु), अनुवर्तनम् (न), 'अनुकूल रहने' के २ नाम हैं ॥

३ यथार्हवर्णः, प्रणिधिः, अपसर्पः (+ अवसर्पः), चरः, स्पशः, चारः, गूढपुरुषः (७ पु), 'गुप्तचर, खोफिया' के ७ नाम हैं ॥

४ आप्तः, प्रत्ययितः (२ त्रि), 'विश्वासपात्र पुरुषादि' के २ नाम हैं ॥

५ सांवत्सरः, ज्यौतिषिकः (+ ज्योतिषिकः), दैवज्ञः, गणकः, मौहूर्तिकः, मौहूर्तः, ज्ञानी (= ज्ञानिन्), कार्तान्तिकः (८ पु), 'ज्यौतिषि' के ८ नाम हैं ॥

६ तान्त्रिकः, ज्ञातसिद्धान्तः (२ पु), 'सिद्धान्तको ठीक २ जाननेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ सत्री (= सत्रिन्), गृहपतिः (२ पु), 'अन्नादिको सर्वदा दान करनेवाले गृहस्थ' के २ नाम हैं ॥

८ लिपिकारः (+ लिपिकरः, लिबिकरः, लिपिङ्करः, लिबिङ्करः), अक्षरचणः, अक्षरचुञ्चुः, लेखकः, (४ पु), 'लेखक, कातिब' के ४ नाम हैं ॥

९ लिपिः (+ लिपी), लिबिः (स्त्री), 'लिखे हुए अक्षर चित्रादि' के २ नाम हैं। ('मही० के मतसे 'लिखितम्, अक्षरसंस्थानम् (+ लिखिताक्षरसंस्थानम्, अक्षरविन्यासः। २ न), इन शब्दोंके भी पर्याय होने से ४ नाम यथार्थक हैं') ॥

---

१. 'प्रणिधिरवसर्पश्चरः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'लिबिकरः' इति 'लिपिङ्करः' इति पाठान्तरे ॥
३. 'लिखिताक्षरसंस्थाने' इति पाठान्तरम् ॥

१ स्यात्संदेशहरो दूतो २ दूत्यं तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥
३ अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।
४ [1]स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥
राज्याङ्गानि प्रकृतयः ५ पौराणां श्रेणयोऽपि च ।
६ सन्धिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥
षड् गुणाः—

१ संदेशहरः, दूतः (२ पु), 'दूत, सदेश पहुंचानेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ दूत्यम् (+ दौत्यम् । न), 'दूतके काम या भाव' का १ नाम है ॥

३ अध्वनीनः, अध्वगः, अध्वन्यः, पान्थः, पथिकः (५ पु), 'पथिक' राही, मुसाफिर' के ५ नाम हैं ॥

४ स्वामी (=स्वामिन्), अमात्यः, सुहृत् (=सुहृद्), कोशः (+ कोषः । ४ पु), राष्ट्रम्, दुर्गम्, बलम् (३ न), 'राजा, मन्त्री, मित्र, खजाना, राज्य, किला और सेना' का वाचक क्रमशः १-१ शब्द है, इन सातोंके 'राज्याङ्गम् (न), प्रकृतिः (स्त्री)' ये २ नाम हैं अर्थात् राजा आदि,…७[2] 'राज्याङ्ग और प्रकृति' कहलाते हैं ॥

५ पौराणां श्रेणयः (स्त्री), अर्थात् 'नगरवासियोंको भी राज्याङ्ग और प्रकृति' कहते हैं; इस तरह 'राज्याङ्ग या प्रकृति' के[3] ८ भेद हैं ॥

६ सन्धिः, विग्रहः, यानम् , आसनम् , द्वैधम् (३ न), आश्रयः (शेष ३ पु), ये ६[4] 'नीति जाननेवालोंके गुण' हैं। ('प्रसङ्गवश इनके

१. अयमेव श्लोको हेमचन्द्राचार्यरचितेऽभिधानचिन्तामणौ (३।३७८) समुपलभ्यते ॥

२. राज्याङ्गस्य सप्ताङ्गत्वं कामन्दक उक्तम् । तथा हि—

'स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रञ्च दुर्गं कोषो बलं सुहृत् ।
परस्परोपकारीदं सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते' ॥ १ ॥ इति ॥

३. 'अमात्याद्याश्च पौराश्च सद्भिः प्रकृतयः स्मृताः'। इति कात्यात् राज्यस्याष्टाङ्गत्वमपि सिद्ध्यति ॥

४. षड्गुणा मनुना उक्तास्तथा हि—

'सन्धिं च विग्रहं चैव यानमासनमेव च ।
द्वैधीभावं संश्रयं च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा' ॥ १ ॥ इति मनुः, ७।१६०॥

[1]लक्षण कहते हैं—सुवर्णादि, धन, हाथी, घोड़ा आदि देकर वैरीसे मेल करनेको **सन्धि** १, शत्रुके राज्यादिको लूटने या अग्नि आदि लगाकर वैर या युद्ध करनेको **विग्रह** २, जीतनेकी इच्छासे चढ़ाई या युद्धयात्रा करनेको **यान** ३, अपने पक्षके दुर्बल होनेसे किला आदिको पुष्ट तथा सुरक्षितकर चुप-चाप बैठ जानेको **आसन** ४, बलवान्के साथ मित्रता और दुर्बलके साथ वैर करनेको या आधी सेनाके साथ चढ़ाई करनेको **द्वैध** ५, तथा शत्रुसे पीड़ित होकर अपनी रक्षाके लिये उदासीन या मध्यम राजाके शरणमें जानेको **आश्रय** ६ कहते हैं; इनके भी[2] अनेक भेद होते हैं') ॥

---

१. एतेषां लक्षणानि वीरमित्रोदयस्य **राजनीतिप्रकाश** उक्तानि । तथा हि—

'पणबन्धः स्मृतः' सन्धिरपकारस्तु **विग्रहः** ।
जिगीषोः शत्रुविषये **यानं** यात्राऽभिधीयते ॥ १ ॥
विग्रहेऽपि स्वके देशे स्थिति**रासन**मुच्यते ।
बलार्द्धेन प्रयाणं तु **द्वैधीभावः** स उच्यते ॥ २ ॥
उदासीने मध्यमे वा संश्रयात्**संश्रयः** स्मृतः' ।

इति वीरमित्रोदयः पृ ३२४ ।

२. सन्ध्यादीनां भेदानाह मनुस्तथा हि—

'सन्धिं तु द्विविधं विद्याद्राजा विग्रहमेव च ।
उभे यानासने चैव द्विविधः संश्रयः स्मृतः ॥ १ ॥
समानयानकर्मा च विपरीतस्तथैव च ।
तदात्वायतिसंयुक्तः **सन्धिर्ज्ञेयो** द्विलक्षणः ॥ २ ॥
स्वयंकृतश्च कार्यार्थमकाले काल एव वा ।
मित्रस्य चैवापकृते द्विविधो **विग्रहः** स्मृतः ॥ ३ ॥
एकाकिनश्चात्ययिके कार्ये प्राप्ते यदृच्छया ।
संहतस्य च मित्रेण द्विविधं **यान**मुच्यते ॥ ४ ॥
क्षीणस्य चैव क्रमशो दैवात्पूर्वकृतेन वा ।
मित्रस्य चानुरोधेन द्विविधं स्मृत**मासनम्** ॥ ५ ॥
बलस्य स्वामिनश्चैव स्थितिः कार्यार्थसिद्धये ।
द्विविधं कीर्त्यते **द्वैधं** षाड्गुण्यगुणवेदिभिः ॥ ६ ॥
अर्थसम्पादनार्थं च पीड्यमानस्य शत्रुभिः ।
साधुषु व्यपदेशार्थं द्विविधः **संश्रयः** स्मृतः ॥ ७ ॥

इति मनुः ७ १६२–१६८ ॥

विस्तरभियाऽन्यत्रोक्ता एतेषां भेदोपभेदा नोक्यन्त इति तेऽन्यतो द्रष्टव्याः ॥

१—शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
२ क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥
३ स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोषदण्डजम् ।
४ भेदो दण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥

---

१ शक्तिः (स्त्री), 'शक्ति' अर्थात् 'सामर्थ्य' 'प्रभाव, उत्साह और मन्त्र (गुप्त सलाह)' से होती है अर्थात् प्रभावज, उत्साहज और मन्त्रज' ये ३ शक्तियाँ हैं । ('कोष और दण्ड बल प्रभावज शक्ति १, विक्रम-बल उत्साहज शक्ति २, और सन्धि आदि षड्गुण तथा सामादि उपायका यथावत् प्रयोग मन्त्रज शक्ति ३, है') ॥

२ क्षयः (पु), स्थानम् (न), वृद्धिः (स्त्री), क्रमशः कृषि आदि [1]अष्टवर्गकी कमी होनेको क्षय, सामान्य रहने (कमी-बेशी नहीं होने) को स्थान और बढ़नेको वृद्धि कहते हैं । ये ही तीनों (क्षयः, स्थानम् , वृद्धिः), नीति जाननेवालोंका त्रिवर्ग है; त्रिवर्गः (पु), है ॥

३ प्रभावजः, प्रतापः (२ पु), 'प्रताप' अर्थात् 'खजाने तथा शासनसे उत्पन्न तेज' के २ नाम हैं ॥

४ भेदः, दण्डः (पु), साम (= सामन्), दानम् (२ न), क्रमशः वैरीके मन्त्री आदिको गुप्तचर आदिके द्वारा फोड़कर अपने पक्षमें लाकर शत्रुको वशमें करनेको भेद १, अपराधियोंके शासन करनेको दण्ड २, मीठे वचन या अन्यान्य उपायोंसे क्रोध दूर करनेको साम ३ और किसी वस्तुके देनेको दान ४ कहते हैं । ये ही चारो (भेदः, दण्डः, साम दानम्), नीति जाननेवालों के उपाय [2] हैं, उपायः (पु) है । ('१ भेदके तीन, २ दण्डके दो चार,

---

१. अष्टवर्गो यथा—कृषिर्वणिक्पथो दुर्गः सेतुः कुञ्जरबन्धनम् ।
खन्याकरबलादानं शून्यानां च विवेचनम्' ॥ १ ॥ इति ॥

२. तदुक्तं याज्ञवल्क्येन—
'उपायाः साम दानं च भेदो दण्डस्तथैव च ॥ इति याज्ञ० स्मृ० १।३४६ ।
मनुं प्रति मत्स्येनोपायस्य सप्तविधत्वमुक्तं तथा हि—
'साम भेदस्तथा दानं दण्डश्च मनुजेश्वर । उपेक्षा च तथा माया इन्द्रजालं च पार्थिव ॥१॥
प्रयोगाः कथिताः सप्त तन्मे निगदतः शृणु' वीर० राज० प्रक० पृ० २८० ॥

१ साहसं तु दमो दण्डः २ साम सान्त्वम् ३ अथो समौ ।
भेदोपजापौ ४ उपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥

---

३ साम के चार और ४ दानके पाँच भेद होते हैं १)

१ साहसम् (न) दण्डः, दमः (२ पु) 'दण्ड' के ३ नाम हैं ॥

२ साम (= सामन्), सान्त्वम् (२ न), 'साम शान्त करने' के २ नाम हैं ॥

३ भेदः, उपजापः (२ पु), 'भेद' के २ नाम हैं ॥

४ उपधा (स्त्री), 'मन्त्री आदिके धर्म, धन काम और भयादिको जाननेके लिये उनकी राजाद्वारा परीक्षा करने' का १ नाम है ॥

---

१. भेदस्त्रिधा तथा हि—

'स्नेहरागापनयनं संहर्षोत्पादनं तथा ।
संतर्जनं च भेदज्ञैर्भेदस्तु त्रिविधो मतः' ॥ १ ॥ इति ॥

नारदेन दण्डस्य द्वैविध्यं मनुना च चतुर्विधत्वमुक्तम् । तद् क्रमशः प्रदर्श्यते—

'शारीरश्चार्थदण्डश्च दण्डश्च द्विविधो मतः ।
शारीरस्ताडनादिस्तु मरणान्तः प्रकीर्तितः ॥ १ ॥
काकिन्यादिस्त्वर्थदण्डः सर्वस्वान्तस्तथैव च' । इति नारदोक्तम् ।

'वाग्दण्डं प्रथमं कुर्याद्धिग्दण्डं तदनन्तरम् ।
तृतीयं धनदण्डं तु वधदण्डमतः परम्' ॥ १ ॥ इति मनुः ८।१२९ ॥

अग्निपुराणे साम्नश्चतुर्विधत्वमुक्तन्तथा हि—

'चतुर्विधं स्मृतं साम उपकारानुकीर्तनम् ।
मिथः सम्बन्धकथनं मृदुपूर्वं च भाषणम् ॥ १ ॥
आयतेर्दर्शनं वाचा तथा (वा) इमिति चार्पणम् । इति ॥

दानस्य पञ्चविधमुक्तमग्निपुराणे, तथा हि—

'यः संप्राप्तधनोत्सर्ग उत्तमाधममध्यमः ।
प्रतिदानं तदा तस्य गृहीतस्यानुमोदनम् ॥ १ ॥
द्रव्यदानमपूर्वं च तथैवेष्टप्रवर्तनम् ।
देयं च प्रतिमोक्षश्च दानं पञ्चविधं स्मृतम्' ॥ २ ॥

एतेषामुपायानां प्रयोगकालादिकं विविधसम्मतभेदप्रकाराश्चात्र ग्रन्थविस्तरभिया नोल्लिखिताः । ते वीरमित्रोदयस्य राजनीतिप्रकाशे पृ० २७८ तमे द्रष्टव्याः ॥

१ पञ्च त्रिष्व २ षडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ।
३ विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥
रहश्चोपांशु चालिङ्गे ४ रहस्यं तद्भवे त्रिषु ।
५ [1]समौ विस्रम्भविश्वासौ ६ भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥२३॥
७ अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् ।
८ युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २४ ॥
न्याय्यं च त्रिषु षट् ९ संप्रधारणा तु समर्थनम् ।
१० अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥
शिष्टिश्चाज्ञा च—

---

१ यहाँसे ५ शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

२ अषडक्षीणः (त्रि), 'केवल दो आदमियोंकी की हुई गुप्त सलाह' का १ नाम है ॥

३ विविक्तः, विजनः, छन्नः, निःशलाकः (४ त्रि), रहः (= रहस् न), रहः (= रहः), उपांशु (२ अव्य०), 'एकान्त' के ७ नाम हैं ॥

४ रहस्यम् (त्रि), 'रहस्य, छिपाने योग्य, सलाह आदि' का १ नाम है ॥

५ विस्रम्भः (+ विश्रम्भः), विश्वासः (२ पु), 'विश्वास' के २ नाम हैं ॥

६ भ्रेषः (पु), 'अनुचित' का १ नाम है ॥

७ अभ्रेषः, न्यायः, कल्पः (३ पु), देशरूपम्, समञ्जसम् (२ न), 'न्याय' के ५ नाम हैं ॥

८ युक्तम्, औपयिकम्, लभ्यम्, भजमानम्, अभिनीतम्, न्याय्यम् (६ त्रि) 'न्याययुक्त कार्य या द्रव्यादि' के ६ नाम हैं ॥

९ संप्रधारणा (स्त्री), समर्थनम् (न), 'उचित और अनुचितका विचारकर निश्चय करने' के २ नाम हैं ॥

१० अववादः, निदेशः निर्देशः, (३ पु), शासनम् (न), शिष्टिः, आज्ञा (२ स्त्री), 'आज्ञा, हुक्म' के ६ नाम हैं ॥

---

१. 'समौ विश्रम्भविश्वासौ' इति पाठान्तरम् ॥

—१ संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः।
२ आगोऽपराधो मन्तुश्च ३ समे तूद्दानबन्धने॥ २६॥
४ द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो ५ भागधेयः करो बलिः।
६ घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री ७ प्राभृतं तु प्रदेशनम्॥ २७॥
८ उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा।
९ [1]यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत्॥ २८॥
१० तत्कालस्तु तदात्वं स्या११दुत्तरः काल आयतिः।

---

१ संस्था, मर्यादा, धारणा, स्थितिः (४ स्त्री), 'उचित मार्गपर रहने' के ४ नाम हैं॥

२ आगः (= आगस् न), अपराधः, मन्तुः (२ पु), 'अपराध, कसूर' के ३ नाम हैं॥

३ उद्दानम्, बन्धनम् (२ न), 'बाँधने या कैद करने' के २ नाम हैं॥

४ द्विपाद्यः (पु), 'दुगुने दण्ड' का १ नाम है॥

५ भागधेयः, करः, बलिः (३ पु) 'कर मालगुजारी' के ३ नाम हैं॥

६ शुल्कः (पु न), 'घाट जङ्गल और नदी आदिकी आमदनीसे दिये जानेवाले राज-भाग (टैक्स)' का १ नाम है॥

७ प्राभृतम्, प्रदेशनम् (२ न), 'मित्रादिको खुश करनेके लिये दिये जानेवाले पदार्थ' के २ नाम हैं॥

८ उपायनम्, उपग्राह्यम् (२ न), उपहारः (पु), उपदा (स्त्री), भा० दी० मतसे 'राजाको दिये जानेवाले भेंट, नजराना' के ४ नाम हैं। प्राभृतम्,......... 'देवता, राजा, मित्रादिको खुश करनेके लिये दिये जानेवाले भेंट' के ६ नाम हैं॥

९ यौतकम् (+ यौतुकम्। न), सुदायः (पु) हरणम् (न), 'यज्ञोपवीत आदिमें दी हुई भिक्षा या दामादको दिये जानेवाले दहेज' के ३ नाम हैं॥

१० तत्कालः (पु), तदात्वम् (न), 'वर्तमान काल, बीतते हुए समय' के २ नाम हैं॥

११ आयतिः (स्त्री), 'आनेवाले समय, भविष्यत्काल' का १ नाम है॥

---

१. 'यौतुकादि' इति पाठान्तरम्॥

१ सांदृष्टिकं फलं सद्यः २ उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥
३ अदृष्टं वह्नितोयादि ४ दृष्टं स्वपरचक्रजम्।
५ महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥
६ प्रक्रिया त्वधिकारः स्या ७ च्चामरं तु प्रकीर्णकम्।
८ नृपासनं यत्तद्भद्रासनं ९ सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
हैमं १० छत्रं त्वातपत्रं—

---

१ सांदृष्टिकम् (न), 'व्यापार आदिके बाद शीघ्र मिलनेवाले फल' का १ नाम है ॥

२ उदर्कः (पु), 'भविष्यमें होनेवाले फल' का १ नाम है ॥

३ अदृष्टम् (न), 'आगसे जलने, पानीसे बह जाने आदि' (आदि पदसे 'व्याधि, दुर्भिक्ष, मरण, बहुत वर्षा, सूखा, मृग, मूषक' का संग्रह है) के भय' का १ नाम है ॥

४ दृष्टम् (न), 'अपने राज्यमें चोर, जङ्गल आदिका भय तथा दूसरे राज्यसे दाह और चढ़ाई आदिके भय' का १ नाम है।

५ अहिभयम् (न), 'अपने पक्ष (मन्त्री आदि) से होनेवाले राजा आदिके भय' का १ नाम है। (१ 'पक्षके ७ भेद हैं') ॥

६ प्रक्रिया (स्त्री), अधिकारः (पु), 'व्यवस्थाको ठीक करने' के २ नाम हैं ॥

७ चामरम् (+ चमरम् ; चमरः पु, चामरा स्त्री), प्रकीर्णकम् (२ न), 'चँवर' के २ नाम हैं ॥

८ नृपासनम् , भद्रासनम् (२ न), 'मणि आदिके बने हुए राजाके आसन' के २ नाम हैं ॥

९ सिंहासनम् (न), 'सुवर्णके बने हुए राजाके सिंहासन' का १ नाम है ॥

१० छत्रम् , आतपत्रम् (२ न), 'छाता' के २ नाम हैं ॥

---

१. पक्षः सप्तधा, तथा हि—

'निजोऽथ मैत्रश्च समाश्रितश्च सम्बन्धतः कार्यसमुद्भवश्च।
भृत्या गृहीतो विविधोपचारैः पक्षं बुधाः सप्तविधं वदन्ति' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ राङ्कस्तु नृपलक्ष्म तत् ।
२ भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो ३ भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥
४ निवेशः शिबिरं षण्ढे ५ सज्जनं तूपरक्षणम् ।
६ हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥
७ दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ।
मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥
इभः स्तम्बेरमः पद्मी ८ यूथनाथस्तु यूथपः ।

१ नृपलक्ष्म (=नृपलक्ष्मन्, न), 'राजाके छाते' का १ नाम है ॥

२ भद्रकुम्भः, पूर्णकुम्भः (२ पु), 'मङ्गलके लिये जलसे भरे हुए घड़े' के २ नाम हैं ॥

३ भृङ्गार (पु), कनकालुका (स्त्री), 'भारी, झथहर (स्वर्णके पात्र-विशेष), के २ नाम हैं ॥

४ निवेशः (पु), शिबिरम् (=शिबिरम् । न), 'सेनाके ठहरनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥

५ सज्जनम्, उपरक्षणम् (२ न), 'सेनाकी रक्षाके वास्ते नियम किये हुए पहरे' के २ नाम हैं ॥

६ सेनाङ्गम् (न), 'हाथी, रथ, घोड़ा और पैदल ये ४ सेनाके[१] अङ्ग' हैं । ('नाव, जहाज आदिका रथमें, किरात, मल्लाह आदिका पैदलमें और ऊँट आदिका हाथी में अन्तर्भाव होनेसे उनका पृथक् ग्रहण नहीं किया गया है')

७ दन्ती (=दन्तिन्), दन्तावलः, हस्ती (=हस्तिन्), द्विरदः, अनेकपः, द्विपः, मतङ्गजः, गजः, नागः, कुञ्जरः, वारणः, करी (=करिन्), इभः, स्तम्बेरमः, पद्मी (=पद्मिन् । +सामजः, सिन्धुरः, कुम्भी=कुम्भिन् । १५ पु), 'हाथी' के १५ नाम हैं । ('यहांसे श्लो० ४३ तक गजप्रकरण है') ॥

८ यूथनाथः, यूथपः (२ पु), 'झुण्डके स्वामी' के २ नाम हैं ॥

१. तदुक्तं हेमचन्द्राचार्यैः—

'गजो वाजी रथः पत्तिः सेनाङ्गं स्याच्चतुर्विधम्' ॥

इति अभि० चिन्ता० ३।४१५ ॥

१ मदोत्कटो मदकलः २ कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥
३ प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः ४ समावुद्धान्तनिर्मदौ ।
५ [1]'राजवाह्यस्त्वौपवाह्यः ६ सन्नाह्यः समरोचितः' (२५)
७ हास्तिकं गजता वृन्दे ८ करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥
९ गण्डः कटो १० मदो दानं ११ वमथुः करशीकरः ।
१२ कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसः—

१ मदोत्कटः, मदकलः (२ पु), 'मतवाले हाथी' के २ नाम हैं ॥

२ कलभः (+ करभः), करिशावकः (पु), 'तीस वर्षसे कम उम्रवाले हाथीके बच्चे' के २ नाम हैं ॥

३ प्रभिन्नः, गर्जितः, मत्तः (३ पु), 'जिसका मद गिर रहा हो उस हाथी' के ३ नाम हैं ॥

४ उद्धान्तः, निर्मदः (२ पु), 'जिसका मद गिरकर समाप्त हो गया हो उस हाथी' के २ नाम हैं ॥

५ [राजवाह्यः, औपवाह्यः (+ उपवाह्यः । २ पु), 'राजाके चढ़ने योग्य हाथी' के २ नाम हैं] ॥

६ [सन्नाह्यः, समरोचितः (२ पु), 'लड़ाईके योग्य हाथी' के २ नाम हैं] ॥

७ हास्तिकम् (न), गजता (स्त्री), 'हाथियोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

करिणी, धेनुका, वशा (३ स्त्री), 'हथिनी' के ३ नाम हैं ॥

९ गण्डः (भा० दी०), कटः (२ पु), 'हाथीके गाल' के २ नाम हैं ॥ ('उपलक्षण होनेसे प्राणिमात्रके गालके भी ये दो नाम हैं') ॥

१० मदः (पु), दानम् (न), 'हाथीके मद' के २ नाम हैं ॥

११ वमथुः, करशीकरः (२ पु), 'हाथीके सूंड़से निकले हुए पानीके छींटे' के २ नाम हैं ॥

१२ कुम्भः (पु),'हाथीके मस्तकके ऊपरवाले दोनों मांस-पिण्डों' का १ नाम है ॥

१. अयं क्षेपकांशः क्षीरस्वामिव्याख्याने दृश्यते ॥

—१ तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥
२ अवग्रहो ललाटं[1] स्यात्३दीषिका त्वक्षिकूटकम् ।
४ अपाङ्गदेशो निर्याणं ५ कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥
६ अधः कुम्भस्य वाहित्थं ७ प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।
८ आसनं स्कन्धदेशः स्यात् ९ पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

---

१ [2]विदुः (पु), 'हाथीके मस्तकके ऊपरवाले दोनों मांसपिण्डोंके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

२ अवग्रहः (+ अवग्राहः । पु), 'हाथीके ललाट' का १ नाम है ॥

३ ईषिका (+ ईषीका, इषिका, इषीका । स्त्री), अक्षिकूटकम् (न) 'हाथीकी आँखके गोलाकार भाग' के २ नाम हैं ॥

४ निर्याणम् (न), 'हाथीकी आँखके किनारेवाले भाग' का १ नाम है ॥

५ चूलिका (स्त्री), 'हाथीकी कनपट्टी' (कानकी जड़वाले भाग)' का १ नाम है ॥

६ वाहित्थम् (न), 'हाथीके शिरके ऊपरवाले दोनों मांस-पिण्डके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥

७ प्रतिमानम् (न), हाथीके दोनों दाँतोंके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥

८ आसनम् (न), 'हाथीका कन्धा' अर्थात् 'हाथीवानके बैठनेकी जगह' का १ नाम है ॥

९ पद्मकम् , बिन्दुजालकम् (भा० दी० । + विन्दुजालकम् । २ न), 'हाथियोंके मुखमें कमलाकार छोटे २ लाल चिह्न-विशेष' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'स्यादिषीकाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. यदाह पालकाप्यः—

'तत्र रक्षाविताने द्वे विदू द्वौ श्रवणे गतौ ।
प्राक्च पश्चाच्च तिर्यक्च षड्भेदाङ्कुशवारणा' ॥ १ ॥

'तत्रारक्षविताने' इत्येवं पाठभेदः अभि० चिन्ता० (४।२९२) व्याख्याने समुपलभ्यते ॥

१ पक्षभागः पार्श्वभागो २ दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।
३ द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४० ॥
४ [1]तोत्रं वेणुकं ५ मालानं बन्धस्तम्भे ६ ऽथ शृङ्खले ।
अन्दुको निगडोऽस्त्री स्याऽदङ्कुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥
८ दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात् ९ कल्पना सज्जना समे ।
१२ प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

---

१ पक्षभागः, पार्श्वभागः (भा० दी० । २ पु), 'हाथीके पार्श्वभाग' (बगल)' के २ नाम हैं ॥

२ दन्तभागः (पु), 'हाथीके आगेवाले भाग' का १ नाम है ॥

३ गात्रम् , अवरम् , (+ अवरम् , अपरम् । २ न), 'हाथीके आगेवाले जङ्घा आदि पूर्वार्द्ध शरीर और पीछेवाले जङ्घा आदि परार्द्ध शरीर' के १—१ नाम हैं ॥

४ तोत्रम् , वेणुकम् (+ वैणुकम् । २ न), 'हाथीको मारनेवाले डण्डे या चाबुक आदि' के २ नाम हैं ॥

५ आलानम् (न), 'हाथीको बाँधनेवाले खूँटे' का १ नाम है ॥

६ शृङ्खलम् (त्रि[2]), अन्दुकः (+ अन्दूः स्त्री । पु), निगडः (पु न), 'हाथीकी बेड़ी' (बाँधनेवाली सिकड़ी)' के ३ नाम हैं ॥

७ अङ्कुशः (पु न), सृणिः (+ शृणिः । स्त्री), 'अङ्कुश' के २ नाम हैं ॥

८ दूष्या (+ चूष्या, चूषा मुकु०), कक्ष्या, वरत्रा (३ स्त्री), 'हाथीके कसनेवाले रस्से' के ३ नाम हैं ॥

९ कल्पना, सज्जना (स्त्री), 'गेरू आदिसे हाथीकी सजावट करने' के २ नाम हैं ॥

१० प्रवेणी (+ प्रवेणः । स्त्री), आस्तरणम् (न), वर्णः, परिस्तोमः (+ वर्णपरिस्तोमः । २ पु), कुथः (पु स्त्री), 'हाथीके झूले' के ५ नाम हैं ॥

---

१. 'तोत्रं वैणुकमालानं बन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खला' इति पाठान्तरम् ॥

२. तथा च मेदिनी—'शृङ्खला पुंस्कटीवस्त्रबन्धे च निगडे त्रिषु' इति मे० पृ० १६८ ॥

१ वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं २ वारी तु गजबन्धनी ।
३ घोटके [1]वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥
वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ।
४ आजानेयाः कुलीनाः स्यु ५ र्विनीताः साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥
६ [2]वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ।
७ ययुरश्वोऽश्वमेधीयो ८ जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

---

१ वीतम् (न) 'लड़नेमें असमर्थ हाथी-घोड़े' का १ नाम है ॥

२ वारी, गजबन्धनी (भा० दी० । २ स्त्री), 'हाथीखाना' अर्थात् 'हाथी बाँधनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥

३ घोटकः (+ घोटः), वीतिः (+ पीतिः), तुरगः, तुरङ्गः, अश्वः, तुरङ्गमः, वाजी (= वाजिन्), वाहः, अर्वा (= अर्वन्), गन्धर्वः, हयः, सैन्धवः, सप्तिः (१३ पु), 'घोड़े'के १३ नाम हैं । ('यहाँसे श्लो० ५० तक 'अश्वप्रकरण है') ॥

४ [3]आजानेयः (पु), 'अच्छे घोड़े' का १ नाम है ॥

५ विनीतः, साधुवाही (+ साधुवाहिन् भा० दी० । २ पु); 'अच्छी २ चालसे शिक्षित घोड़े' के २ नाम हैं ॥

६ वनायुजः (+ वानायुजः), पारसीकः, काम्बोजः, बाह्लिकः (+ वाह्लिकः, वाह्लीकः, बाह्लीकः । ४ पु) 'वनायु, पारस, काम्बोज और बाह्लिक देशोंमें पैदा होनेवाले घोड़े' के क्रमशः १-१ नाम हैं । (किसी-किसी के मतसे प्रथम दो नाम 'पारसी घोड़े' के और अन्तवाले दो नाम उक्तार्थक हैं) ॥

७ ययुः, अश्वमेधीयः (भा० दी० । २ पु), 'अश्वमेध यज्ञमें छोड़े जानेवाले घोड़े' के २ नाम हैं ॥

८ जवनः (+ प्रजवी = प्रजविन्), जवाधिकः (भा० दी० । २ पु), 'बहुत तेज चलनेवाले घोड़े' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'पीतितुरग—' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'वानायुजाः' इति पाठान्तरम् ॥

३. अश्वशास्त्रे आजानेयलक्षणमुक्तन्तया हि—

'शक्तिभिर्भिन्नहृदयाः स्खलन्तश्च पदे-पदे ।
आजानन्ति यतः संज्ञामाजानेयास्ततः स्मृताः' ॥ १ ॥ इति ॥

१ पृष्ठ्यः स्थौरी २ सितः कर्को ३ रथ्यो वोढा रथस्य यः ।
४ बालः किशोरो ५ वाम्यश्वा वडवा ६ वाडवं गणे ॥ ४६ ॥
७ त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।
८ कश्यं तु मध्यमश्वानां ९ हेषा ह्रेषा च निस्वनः ॥ ४७ ॥
१० निगालस्तु गलोद्देशो ११ वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।
१२ आस्कन्दितं [1]धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥

---

१ पृष्ठ्यः, स्थौरी (= स्थौरिन् । २ पु), 'अन्न आदि जिसपर लादा जाय उस घोड़े' के २ नाम हैं ॥

२ कर्कः (पु), 'सफेद घोड़े' का १ नाम है ॥

२ रथ्यः (पु), 'रथमें चलनेवाले घोड़े' का १ नाम है ॥

४ किशोरः (पु), 'बछेड़ा' अर्थात् 'बच्चे घोड़े' का १ नाम है । ('उपलक्षणतया 'किशोर' शब्द मनुष्यादिके बालकका भी वाचक है') ॥

५ वामी, अश्वा, वडवा (३ स्त्री), 'घोड़ी' के ३ नाम हैं ॥

६ वाडवम् (न), 'घोड़ियोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

७ आश्वीनम् (त्रि), 'एक दिनमें घोड़ेसे चलने योग्य रास्ता या देशादि' का १ नाम है ॥

८ कश्यम् (न), 'घोड़ेके मध्य भाग' का १ नाम है ॥

९ हेषा, ह्रेषा (२ स्त्री), 'हिनहिनाहट, घोड़ेकी बोली' के २ नाम हैं ॥

१० [2]निगालः, गलोद्देशः (भा० दी० । २ पु), 'घोड़ेकी गर्दनके पीछेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

११ अश्वीयम् (+ आश्वीयम्), आश्वम् (२ न), 'घोड़ोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

१२ आस्कन्दितम् (+ उत्तेरितम् , उपकण्ठम्), धौरितकम् (+ धोरितकम् , धोरितम् , धौर्यम् , धारणम्), रेचितम् (+ उत्तेजितम्) वल्गितम् ,

---

१. 'धोरितकं' इति पाठान्तरम् ॥

२. अश्वशास्त्रे निगाललक्षणमुक्तन्तथा—

'घण्टाबन्धसमीपस्थो निगालः कथ्यते बुधैः' इति ॥

गतयोऽमूः पञ्च धारा १ घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।
२ कविका तु खलीनोऽस्त्री ३ शफं क्लीबे खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥
४ पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गूले ५ वालहस्तश्च वालधिः ।
६ त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥

प्लुतम् (५ न), घोड़ोंके सरपट दौड़ने, दुलकी चलने, पोइया चलने, उछाल मारकर चलने और चौकड़ी मारकर चलने' का क्रमशः १–१ नाम है । 'धारा' (स्त्री) 'घोड़ोंके पूर्वोक्त पांच 'चालों' का १ नाम है ॥

१ घोणा (स्त्री), प्रोथम् (पु न), भा० दी० मतसे 'घोड़ेके चक्कर लगाने' के २ नाम हैं और महे० मतसे 'घोड़ेकी नाक' का 'प्रोथम्' यह १ नाम है ॥

२ कविका (+ कवी, कवियम् न । स्त्री), खलीनः (पु न), 'घोड़ेकी लगाम' के २ नाम हैं ॥

३ शफम् (न), खुरः (+ क्षुरः । पु), 'घोड़ेकी सूम' (खुर)' के २ नाम हैं ॥

४ पुच्छः (पु न), लूमम् , लाङ्गूलम् (+ लाङ्गुलम् । २ न), 'घोड़ेकी दुम (पूंछ)' के ३ नाम हैं ॥

५ वालहस्तः, वालधिः (२ पु), 'घोड़ेकी पूंछके बालवाले अगले भाग' के २ नाम हैं ॥ (यद्यपि 'शफ आदि शब्द अश्वप्रकरणमें कथित है, तथापि इन (शफम्,······वालधिः) शब्दों का प्रयोग गौ आदि पशुओंके भी खुर आदि अर्थत्रयमें होता है) ॥

६ उपावृत्तः, लुठितः (२ त्रि), 'थकावट दूर करनेके लिए जमीनपर लोटे हुए घोड़े' के २ नाम हैं ॥

---

१. अत्र क्षी० स्वा० 'क्रमस्त्वन्यथा । यथाहुः—
'धोरितं वल्गितं धारा प्लुतमुत्तेजितं क्रमात् । उत्तेरितं चेति पञ्च शिक्षयेत्तुरगं गतम् ॥ १ ॥
धोरितं गतिमात्रे यद्योजितं वल्गितं पुरः । अग्रकायसमुल्लासात्कुञ्चितास्यं नतत्रिकम् ॥ २ ॥
पूर्वापरोन्नमनतः क्रमादारोपणं प्लुतम् । उत्तेजितं मध्यवेगं योजनं श्लथवल्गया ॥ ३ ॥
उत्तेरितेति वेगान्धो न शृणोति न पश्यति' इति' ॥

इत्याह 'हेमचन्द्राचार्यैरप्यन्यथैव क्रमो लिखितः' सोऽभिधानचिन्तामणौ (४।२११–२१५) द्रष्टव्यः ॥

'शिशुपालवध'स्य व्याख्यायां 'सर्वङ्कषा' यां मल्लिनाथेन–'अश्वशास्त्रे तु संज्ञान्तरेणोक्ताः– 'गतिः पुला चतुष्का च तद्वन्मध्यजवा परा । पूर्णवेगा तथा चान्या पञ्च धाराः प्रकीर्तिताः' एकैका त्रिविधा धारा हयशिक्षाविधौ मता । लघ्वी मध्या तथा दीर्घा ज्ञात्वैता योजयेत् क्रमात्' इति । 'अव्याकुलं'—(५।६०) श्लोकस्य व्याख्यानेऽश्वगतीनां भिन्नानि नामानि ।

१ याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
२ असौ [1]पुष्यरथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥
३ कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।
४ क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद् ५ गन्त्री कम्बलिवाह्यकम् ॥ ५२ ॥
६ शिबिका याप्ययानं स्याद् ७ दोला प्रेङ्खादिका स्त्रियाम् ।
८ उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५३ ॥
९ पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।
१० रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

---

१ शताङ्गः, स्यन्दनः, रथः (३ पु), 'लड़ाईके रथ' के ३ नाम हैं ॥ ('यहाँसे आगे श्लोक ६१ तक 'रथ-प्रकरण' है') ॥

२ पुष्यरथः (+ पुष्परथः ।), 'यात्रा, उत्सव आदि में चढ़नेके लिये बनाये हुए रथ' का १ नाम है ॥

३ कर्णीरथः (पु), प्रवहणम्, डयनम् (+ हयनम् । २ न), 'स्त्रियोंके चढ़नेके लिये पर्दा आदिसे आड़ किये हुए रथ' के ३ नाम हैं ॥

४ अनः (= अनस्, न), शकटः (पु न), 'गाड़ी' के २ नाम हैं ॥

५ गन्त्री (स्त्री), कम्बलिवाह्यकम् (भा० दी० । + गन्त्रीकम्, बलिवाह्यकम् । न), 'छोटी गाड़ी' के २ नाम हैं ॥

६ शिबिका (+ शीविका । स्त्री), याप्ययानम् (न), 'पालकी' के २ नाम हैं ॥

७ दोला (+ दोली), प्रेङ्खा, आदि ('शयनखट्वा,……' । २ स्त्री), 'झूला, हिंडोला' के २ नाम हैं ॥

८ द्वैपः, वैयाघ्रः (२ त्रि), 'बाघके चमड़ेसे मढ़े हुए रथ' के २ नाम हैं ॥

९ पाण्डुकम्बली (+ पाण्डुकम्बलिन्, त्रि), 'पाण्डु (धूसर) कम्बलसे मढ़े या ढके हुए रथ' का १ नाम है ॥

१० काम्बलः, वास्त्रः (२ त्रि), आदि 'कम्बल और कपड़े आदिसे ढके हुए रथ' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

---

१. 'पुष्परथश्चक्रयानं' इति पाठान्तरम् ॥

१ त्रिषु द्वैपादयो २ रथ्या रथकट्या रथव्रजे ।
३ धूः स्त्री क्लीबे यानमुखं ४ स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥
५ चक्रं रथाङ्गं ६ तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।
७ पिण्डिका नाभि ८ रक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः ॥ ५६ ॥
९ रथगुप्तिर्वरूथो ना १० कूबरस्तु युगन्धरः ।
११ अनुकर्षो दार्वध रथं—

---

१ 'द्वैप' (२।८।५३) आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

२ रथ्या, रथकट्या (२ स्त्री), रथव्रजम् (भा० दी०, पु न), 'रथोंके समूह' के ३ नाम हैं ॥

३ धूः (= धुर् , स्त्री), यानमुखम् (न), 'रथके धूरा' के २ नाम हैं ॥

४ रथाङ्गम् (न), अपस्करः (पु), 'रथके 'अवयव' के २ नाम हैं ॥

५ चक्रम् , रथाङ्गम् , (२ न), 'रथ, गाड़ी आदिके पहिये' के २ नाम हैं ॥

६ नेमिः (+ नेमी । स्त्री), प्रधिः (पु), 'हाल, रथके पहियेके ऊपर वाले परिधि' के २ नाम हैं ॥

७ पिण्डिका (+ पिण्डी), नाभिः (+ नाभी । २ स्त्री), 'पहियेके बीचवाले भाग (जिसमें चारों तरफ से काठ जुड़े रहते हैं)' के २ नाम हैं ॥

८ अणिः (पु स्त्री), 'धूरामें लगानेवाली किल्ली' का १ नाम है ॥

९ रथगुप्तिः (स्त्री), वरूथः (पु), 'लड़ाईमें शत्रुके प्रहारसे बचनेके लिये रथमें लगाये हुए लोहा आदिके पर्दे' के २ नाम हैं ॥

१० कूबरः, युगन्धरः (२ पु), 'जुआ, फड़, रथमें घोड़ा आदि जोते जानेवाले काष्ठ या जुएके काठको बांधे जानेवाले स्थान' के २ नाम हैं ॥

११ अनुकर्षः (+ अनुकर्षा = अनुकर्षन् । पु), 'रथके नीचेवाले काष्ठ' के २ नाम हैं ॥

---

१. इयं महेश्वरोक्तिमुकुटानुरोधेन । सामान्येन रथाङ्गस्याक्षयुगचक्रादिकमपस्करः, इति । अग्रे रथाङ्गत्वेन गतार्थस्यापि 'चक्रम्' इति विशेषतो नामान्तरप्रतिपादनाय 'तस्यान्ते नेमिः' इत्युक्तये च रथाङ्गस्यानुवादः' इति चोक्तवान् । भानुजिदीक्षितस्तु 'रथारम्भकं चक्रादन्यद्' इति क्षीरस्वामिग्रन्थानुरोधात् 'चक्रभिन्नस्य रथारम्भकचक्रस्य' इमे द्वे नामनी'त्युक्तवान् ॥

—१ प्रासङ्गो ना [1]युगाद्युगः ॥ ५७ ॥
२ सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम्।
३ परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥
४ आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः।
५ नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ ५९ ॥
[2]सव्येष्ठदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः।
६ रथिनः स्यन्दनारोहा—

१ प्रासङ्गः (प्रसङ्ग्यः पु), महे० मतसे 'रथ आदिके जुआठ, फड़' का और [3]भा० दी० मतसे 'नये बछवाको पहले पहल शिक्षा देनेके लिये उसके कन्धेपर रक्खे जानेवाले काष्ठ' का १ नाम है ॥

२ वाहनम्, यानम्, युग्यम्, पत्रम्, धोरणम् (५ न) 'वाहनमात्र' अर्थात् 'हाथी, घोड़ा, इत्यादि (श्लो० ३३) से लेकर डोला (श्लो ५३) तक सब' के ये ५ नाम हैं ॥

३ वैनीतकम् (+प्रावन्धिकम् । न पु), 'परम्परावाली सवारी, कहाँर आदिके द्वारा बारी २ से ढोई जानेवाली पालकी, डोली आदि' का १ नाम है ॥

४ आधोरणः, हस्तिपकः, हस्त्यारोहः, निषादी (=निषादिन् । ४ पु) 'हाथीवान' के ४ नाम हैं। ('किसी २ के मत से २-२ शब्द एकार्थक हैं') ॥

५ नियन्ता (=नियन्तृ), प्राजिता (प्राजितृ), यन्ता (=यन्तृ), सूतः, क्षत्ता (=क्षत्तृ), सारथिः, सव्येष्ठः (सव्येष्ठा = सव्येष्ठृ), दक्षिणस्थः (८ पु), 'रथके परिवार' अर्थात् 'रथ हाँकनेवाला ड्राइवर, कोचवान, गाड़ीवान, बग्गीवान, एक्कावान और पीछे चढ़नेवाले जो दौड़कर आगेकी भीड़को हटाकर फिर पीछे चढ़ जाते हैं, इत्यादि' के ८ नाम हैं ॥

६ रथी (=रथिन्), स्यन्दनारोहः (२ पु) 'रथपर चढ़कर लड़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'युगान्तरम्' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'सव्येष्ठृदक्षिणस्थौ' इति पाठान्तरम् ॥
३. इदं भानुजिदीक्षितोक्तिः 'युगान्तरम्' इति पाठमङ्गीकृत्येत्यवधेयम् ॥

—१ अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥
२ भटा योधाश्च योद्धारः ३ सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।
४ सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥
५ बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।
६ परिधिस्थः परिचरः ७ सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥
८ कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री ९ यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ।
बध्नन्ति [1]तत्सारसनमधिकाङ्गो१०ऽथ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥
शीर्षण्यं च शिरस्त्रे—

---

१ अश्वारोहः, सादी (=सादिन् । २ पु), 'घुड़सवार' के २ नाम हैं ॥

२ भटः, योधः, योद्धा (= योद्धृ । ३ पु), 'लड़नेवाले वीर' के ३ नाम हैं ॥

३ सेनारक्षः, सैनिकः (२ पु), 'सेनाके पहरेदार' के २ नाम हैं ॥

४ सैन्यः, सैनिकः (२ पु), 'सैनिक' अर्थात 'सेनामें रहनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ साहस्रः, सहस्री (= सहस्रिन् । २ पु), 'एक हजार योद्धाओंवाले सूबेदार आदि' के २ नाम हैं ॥

६ परिधिस्थः, परिचरः (२ त्रि), 'अपराधी सैनिकोंको दण्ड देनेके लिये राजा से नियुक्त पुरुष' के २ नाम हैं ॥

७ सेनानीः, वाहिनीपतिः (२ पु), 'सेनापति' के २ नाम हैं ॥

८ कञ्चुकः (पु), वारबाणः (पु न), 'शत्रुके प्रहारसे बचनेके लिये लोहे आदिके बनाये हुए सन्नाह, झूल' के दो नाम हैं ॥

९ सारसनम् (न), अधिकाङ्गः (+ अधिपाङ्गः, विपाङ्गः । पु), 'झूल (कवच) को स्थिर रहनेके लिये कमरमें कसनेकी पट्टी आदि' के २ नाम हैं ॥

१० शीर्षकम् , शीर्षण्यम् , शिरस्त्रम् (३), 'लड़ाई के समय पहने जानेवाले टोप, या टोपीमात्र' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'तत्सारसनमधिपाङ्गोऽथ' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अथ तनुत्रं वर्म दंशनम् ।
उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥
२ आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।
३ सन्नद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥
४ त्रिष्वामुक्तादयो ५ वर्मभृतां कावचिकं गणे ।
६ [1]पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥
पद्गश्च पदिकश्चाऽथ पादातं पत्तिसंहतिः ।
८ शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

---

१ तनुत्रम्, वर्म (= वर्मन्), दंशनम् (३ न), उरश्छदः, कङ्कटकः, जगरः (+ जागरः । ३ पु), कवचः (पु न), 'कवच' के ७ नाम हैं ॥

२ आमुक्तः, प्रतिमुक्तः, पिनद्धः, अपिनद्धः, (४ त्रि), भा० दी० महे० आदिके मतसे 'पहने हुए कवच' के और मु० मतसे 'पहनेहुए वस्त्रादि' के ४ नाम हैं ॥

३ सन्नद्धः, वर्मितः, सज्जः, दंशितः, व्यूढकङ्कटः (५ त्रि), 'कवच आदिको पहनकर लड़ाईके लिये तैयार मनुष्य' के ५ नाम हैं ॥

४ 'आमुक्त' आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

५ कावचिकम् (न), 'कवच पहने हुए पुरुषादिके झुण्ड' का १ नाम है ॥

६ पदातिः (+ पदातः, पादातिः, पादातः), पत्तिः, पदगः, पादातिकः (+ पादातिगः, पादाविकः), पदाजिः, पद्गः, पदिकः (७ पु), 'पैदल' के ७ नाम हैं ॥

७ पादातम् (न), पत्तिसंहतिः (भा० दी०, स्त्री), 'पैदलके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

८ शस्त्राजीवः, काण्डपृष्ठः (+ काण्डस्पृष्टः मु०), आयुधीयः, आयुधिकः (४ त्रि), 'हथियारकी नौकरीसे जीविका चलानेवाले' के ४ नाम हैं ॥

---

१. पदातिपत्तिपदगपादाविकपदाजयः' इति पाठान्तरम् ॥

१ कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुङ्खवत्।
२ अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः॥ ६८॥
३ धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः।
४ स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः ५ शाक्तीकः शक्तिहेतिकः॥ ६९॥
६ याष्टीकपारश्वधिकौ [1]यष्टिपर्श्वधहेतिकौ।
७ नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्यात् ८ समौ प्रासिककौन्तिकौ॥ ७०॥
९ चर्मी फलकपाणिः स्यात्—

---

१ कृतहस्तः, सुप्रयोगविशिखः, कृतपुङ्खः (३ त्रि), 'बाण चलानेमें निपुण' के ३ नाम हैं॥

२ अपराद्धपृषत्कः (त्रि), 'निशाना चुके हुए' का १ नाम है॥

३ धन्वी (= धन्विन्), धनुष्मान् (= धनुष्मत्), धानुष्कः, निषङ्गी (= निषङ्गिन्), अस्त्री (=अस्त्रिन् + शस्त्री = शस्त्रिन्), धनुर्धरः (६ त्रि), 'धनुष धारण करनेवाले' के ६ नाम हैं॥

४ काण्डवान् (=काण्डवत्), काण्डीरः (२ त्रि), 'बाण धारण करनेवाले' के २ नाम हैं॥

५ शाक्तीकः, शक्तिहेतिकः (२ त्रि), 'शक्तिनामक शस्त्र धारण करनेवाले' के २ नाम हैं॥

६ याष्टीकः, पारश्वधिकः (२ त्रि), 'लाठी और फरसा धारण करनेवाले' का क्रमशः १-१ नाम है॥

७ नैस्त्रिंशिकः, असिहेतिः (भा० दी० । २ त्रि), 'तलवार धारण करनेवाले' के २ नाम हैं॥

८ प्रासिकः, कौन्तिकः (२ त्रि) 'प्रास और कुन्त (भाला) धारण करनेवाले' का क्रमशः १-१ नाम है, ('किसीके मतसे दोनों शब्द एकार्थक हैं')॥

९ चर्मी (= चर्मिन्), फलकपाणिः (२ त्रि), 'चर्मनामक हथियार (ढाल) धारण करनेवाले' के २ नाम हैं॥

---

१. 'पर्श्वधः परशौ न दृष्टः, अतः 'यष्टिस्वधितिहेतिकौ' इति काश्मीराः पठन्ति' इति क्षी० स्वा०। किन्तु'—कुठारस्तु परशुः पर्शुपरश्वधौ। पर्श्वधः स्वधितिश्च' (अभि० चिन्ता० ३ ४५०) इति हेमचन्द्राचार्योक्तेरुक्तहेतुदानमकिञ्चित्करम्॥

—१ पताकी वैजयन्तिकः ।

२ अनुप्लव [1]सहायश्चानुचरोऽभिसरः समाः ॥ ७१ ॥

३ पुरोगाग्रेसर-प्रष्ठा-ग्रतःसर-पुरःसराः ।

पुरोगमः पुरोगामी ४ मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥

५ जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यौ ६ जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ ।

७ तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥

८ जय्यो यः शक्यते जेतुं ९ जेयो जेतव्यमात्रके ।

---

१ पताकी (=पताकिन्), वैजयन्तिकः (२ त्रि), 'पताका धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ अनुप्लवः, सहायः, अनुचरः, अभिसरः (+अभिचरः । ४ त्रि), 'अनुचर' के ४ नाम हैं ॥

३ पुरोगः, अग्रेसरः (+अग्रसरः), प्रष्ठः, अग्रतःसरः, पुरःसरः, पुरोगमः, पुरोगामी (=पुरोगामिन् । ७ त्रि), 'आगे चलनेवाले' के ७ नाम हैं ॥

४ मन्दगामी (=मन्दगामिन्), मन्थरः (२ त्रि) 'धीरे २ चलने वाले' के २ नाम हैं ॥

५ जङ्घालः (+जङ्घिलः), अतिजवः (+अतिबलः । २ त्रि), 'बहुत तेज चलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ जङ्घाकरिकः, जाङ्घिकः (२ त्रि), 'धौड़ाहा, डाँक ढोनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ तरस्वी (=तरस्विन्), त्वरितः, वेगी (=वेगिन्), प्रजवी (=प्रजविन्), जवनः, जवः (६ त्रि), 'शीघ्रता करनेवाले' के ६ नाम हैं ॥

८ जय्यः (त्रि) 'जीते जा सकनेवाले' का १ नाम है । ('जैसे—रामेण रावणो जय्यः' अर्थात् 'राम रावणको जीत सकते हैं' इस वाक्यमें रामका रावण जय्य हुआ, ...') ॥

९ जेयः (त्रि), 'जीतने योग्य' का १ नाम है । (जैसे—'जेयं मनः इन्द्रियं वा' अर्थात् 'मन या इन्द्रिय जीतने योग्य है' इस वाक्यमें मन और इन्द्रिय जेय हैं ......') ॥

---

१. 'सहायश्चानुचरोऽभिचरः' इति पाठान्तरम् ॥

१ जैत्रस्तु जेता २ यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७४ ॥
सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि ।
३ ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य [1]ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥
४ स्यादुरस्वानुरसिलो ५ [2]रथिको रथिरो रथी ।
६ कामङ्गाम्यनुकामीनो ७ ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥
८ शूरो वीरश्च विक्रान्तो ९ जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।

---

१ जैत्रः, जेता (=जेतृ । २ त्रि), 'विजयशील, जीतनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ अभ्यमित्र्यः, अभ्यमित्रीयः, अभ्यमित्रीणः (३ त्रि), 'अपने पराक्रमसे शत्रुका सामना करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ ऊर्जस्वलः, ऊर्जस्वी (=ऊर्जस्विन् । २ त्रि), 'बहुत बलवान्' के २ नाम हैं ॥

४ उरस्वान् (=उरस्वत्), उरसिलः (२ त्रि), 'चौड़ी छातीवाले' के २ नाम हैं ॥

५ रथिकः (+रथिनः), रथिरः, रथी (=रथिन् । ३ त्रि), 'रथके स्वामी' के ३ नाम हैं ॥

६ कामङ्गामी (=कामङ्गामिन् । +कामगामी = कामगामिन्), अनुकामीनः (२ त्रि), मतलब भर (यथेष्ट) चलने वाले' के २ नाम हैं । (महे० मतसे पहले शब्दका पर्यायवाचक नहीं होनेसे १ ही नाम है) ॥

७ अत्यन्तीनः (त्रि), 'अत्यन्त चलनेवाले' का १ नाम है ॥

८ शूरः, वीरः, विक्रान्तः (३ त्रि), 'पहलवान, बहादुर' के ३ नाम हैं ॥

९ जेता (=जेतृ), जिष्णुः, जित्वरः (३ त्रि), 'सर्वदा विजय करनेवाले' के ३ नाम हैं । ('जैसे—रामचन्द्र, इन्द्र और अर्जुन आदि') ॥

---

१. 'ऊर्जोऽतिशयान्वितः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'रथिनो रथिको रथी' इति मा० दी० महे० सम्मतः पाठः । मूलस्थः क्षी० स्वा० मुकु० सम्मतः । 'रथिन इत्यपपाठ' इति च क्षी० स्वा० आह ॥

१ सांयुगीनो रणे साधुः २ शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥
३ ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीकिनी चमूः ।
वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥
४ व्यूहस्तु बलविन्यासो ५ भेदा दण्डादयो युधि ।
६ प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः ७ सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

---

१ सांयुगीनः (त्रि), 'लड़ाईमें चतुर' का १ नाम है ॥

२ 'शस्त्राजीव' शब्द (श्लो० ६७) से यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ ध्वजिनी, वाहिनी, सेना, पृतना, अनीकिनी, चमूः, वरूथिनी (७ स्त्री), बलम्, सैन्यम्, चक्रम् (३ न), अनीकम् (न पु), 'सेना, पल्टन' के ११ नाम हैं ॥

४ [1]व्यूहः (पु), 'व्यूह' अर्थात् आदि 'लड़ाईमें सेनाको रखनेके कायदे, मोर्चाबन्दी का १ नाम है ॥

५ दण्डः (पु) आदि ('भोग, मण्डल, असंहत, उरस्य, अचल, दृढ, चक्रव्यूह, मकर, पताका, सर्वतोभद्र,······[2]का संग्रह है'), 'व्यूह' अर्थात् 'लड़ाईमें सेनाको रखने के कायदे मोर्चाबन्दी' के पृथक् १–१ नाम हैं ॥

६ प्रत्यासारः (+ प्रत्यासरः), व्यूहपार्ष्णिः (२ पु), 'व्यूहके पीछेवाले सेना-भाग' के २ नाम हैं ॥

७ सैन्यपृष्ठः (महे०), प्रतिग्रहः (+ परिग्रहः, पतद्ग्रहः । २ पु), 'सेनाके पीछेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

---

१. व्यूहलक्षणं यथा—

'मुखे रथा हयाः पृष्ठे तत्पृष्ठे च पदातयः ।
पार्श्वयोश्च गजाः कार्या व्यूहोऽयं परिकीर्तितः ॥ १ ॥ इति ॥

२. व्यूहस्य कतिचिद्भेदान् सलक्षणमाह कामन्दकिस्तथा हि—

'तिर्यग्वृत्तिस्तु दण्डः स्याद्भोगोऽन्वावृत्तिरेव च ।
मण्डलः सर्वतो वृत्तिः पृथग्वृत्तिरसंहतः' ॥ १ ॥ इति ।

क्षी० स्वा० व्यूहनामान्याह । तथा हि—यदाहुः—

'दण्डो मण्डलभोगौ चाप्युरस्यश्चाचलो दृढः ।
व्यूहास्तेषां विशेषाः स्युश्चक्रव्यूहादयोऽपि च' ॥ १ ॥ इति' इति ॥

१ एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका।
२ पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥
सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः।
अनीकिनी ३ दशानीकिन्यक्षौहिणी—

१ [1]पत्तिः (स्त्री), 'पत्ति' अर्थात् जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों उस सेना-विशेष' का १ नाम है ॥

२ सेनामुखम् (न), गुल्मः, गणः (२ पु), वाहिनी, पृतना, चमूः, अनीकिनी (४ स्त्री), 'पत्ति आदि (सेनामुखं, गुल्मः,………) के तिगुना करनेपर सेनामुख आदि (गुल्मः, गणः,………अनीकिनी) संज्ञा सेना-विशेषकी होती है' अर्थात् ३ पत्ति (३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ पैदल), को सेनामुख; ३ सेनामुख (९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल) को गुल्म; ३ गुल्म (२७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े और १३५ पैदल) को 'गण' कहते हैं। इसी प्रकार 'वाहिनी, पृतना, चमू और अनीकिनी'में भी तिगुना समझना चाहिये ॥

३ [2]अक्षौहिणी (स्त्री), भा० दी० घी० स्वा० आदिके मतसे 'दस अनी-

---

१. भारतोक्तं पत्तिलक्षणं यथा—
'एको गजो रथश्चैको नराः पञ्च पदातयः। त्रयश्च तुरगास्तज्ज्ञैः पत्तिरित्यभिधीयते' ॥१॥ इति॥
यद्वा—'एको हस्ती एकश्च रथवरस्त्रय एव च तुरङ्गाः।
पञ्चैव च पदातय एषा पत्तिर्ज्ञातव्या' ॥ १ ॥ इति॥

२. अक्षौहिणीप्रमाणं यथा—
'अक्षौहिण्यामित्यधिकैः सप्तत्या ह्यष्टभिः शतैः।
संयुक्तानि सहस्राणि गजानामेकविंशतिः ॥१॥ (२१८७० गजाः)
एवमेव तु संख्यानं रथानां कीर्तितं बुधैः। (२१८७० रथाः)
पञ्चषष्टिसहस्राणि षट् शतानि दशैव तु ॥ २ ॥
संख्यातास्तुरगास्तज्ज्ञैर्विना रथतुरङ्गमैः। (६५६१० अश्वा रथाश्वान् विना)
नृणां शतसहस्राणि सहस्राणि तथा नव ॥ ३ ॥
शतानि त्रीणि चान्यानि पञ्चाशच्च पदातयः' (१०९३५० पदातयः) इति ॥

किनी (२१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल) संख्यावाले सेना-विशेष' का १ नाम है। ('महे० ने तो-'दशानीकिनी' (स्त्री), तीन अनीकिनी (६५६१ हाथी, ६५६१ रथ, १९६८३ घोड़े और ३२८०५ पैदल) संख्यावाले सेना-विशेष'का १ नाम और 'अक्षौहिणी' (स्त्री) 'तीन दशानीकिनी (१९६८३ हाथी, १९६८३ रथ, ५९०४९ घोड़े और ९८४१५ पैदल) संख्यावाले सेना-विशेष' का १ नाम है, ऐसा कहा है। किन्तु टिप्पणीमें लिखे हुए भरतादि-वाक्यप्रमाण-विरुद्ध होनेसे महे० का मत[1] ठीक नहीं है।[2] 'महाक्षौहिणी' (स्त्री), 'हाथी, रथ, घोड़े और पैदलको मिलाकर १३२१२४९०० संख्यावाली सेना विशेष'का एक नाम है। पत्तिसे लेकर महाक्षौहिणीतक सबके अलग २ प्रमाण स्पष्टतया[3] चक्र में देखिये') ॥

भारतेऽक्षौहिणी मानं यथा —

'अक्षौहिण्याः प्रमाणन्तु खाङ्गाष्टैकद्विकैर्गजैः ॥
रथैरेतैर्हयैस्त्रिघ्नैः पञ्चघ्नैश्च पदातिभिः' ॥ १ ॥ इति ॥

'अङ्कानां वामतो गतिः' इत्यभियुक्तोक्तेः २१८७० गजाः, इयन्मिता एव रथाश्च, एतत्त्रिगुणिताः (२१८७० × ३ = ६५६१०) अश्वाः, गजसंख्यापञ्चगुणिताः (२१८७० × ५ = १०९३५०) पदातय' इति भारताशयः। हेमचन्द्राचार्यैरप्यक्षौहिणीमानं पूर्वोक्तसंख्याक्रमेणाङ्गीकृतम्, किन्तु पत्त्यादिक्रमो भिन्नस्तद्यथा —

'एकेभैकरथा त्र्यश्वा-पत्तिः पञ्चपदातिका। सेना सेनामुखं गुल्मो वाहिनी पृतना चमूः ॥ १ ॥
अनीकिनी च पत्तेः स्यादिभाद्यैस्त्रिगुणैः क्रमात् । दशानीकिन्यक्षौहिणी—' ॥ २ ॥

इति अभि० चिन्ता ३ । ४१२—४१३ ॥

१. भानुजिदीक्षितमतमेवात्र समीचीनम्, 'अक्षौहिण्या……पदातयः' इति स्वटीकायां प्रमाणत्वेनोपन्यस्तसार्द्धत्रयश्लोकविरोधेन व्याघातात्, भरतहेमचन्द्राचार्योक्तिविरोधाच्च ॥

२. महाक्षौहिणीप्रमाणं यथा—

'खद्वयं निधिवेदाक्षिचन्द्राक्ष्यग्निहिमांशुभिः ।
महाक्षौहिणिका प्रोक्ता संख्यागणितकोविदैः' ॥ १ ॥ इति ॥

३. सकलनिष्कर्षोऽत्र चक्रे द्रष्टव्यः—

चम्पूरामायणे 'अलक्षत स……' (युद्धकाण्डे श्लो० ७९) इत्यस्यानन्तरं 'तत्क्षण……यातुधानपतिः' इति गद्यस्य टीकायां लिखितमक्षौहिणीप्रमाणमन्यदेव, तद्यथा—

'प्रयुतं नवसाहस्रं पञ्चाशत्त्रिशतं भटाः । पादातं षष्टिसाहस्रं षट्छती दश वाजिनः ॥
एकविंशतिसाहस्र-शतानामेकसप्ततिः । द्विरदाः स्यन्दना यत्र साक्षौहिण्युच्यते बुधैः ॥ इति ॥

मङ्गलकोषे त्वेवमुक्तम्—

'नवनागसहस्राणि नागे नागे शतं रथाः । रथे-रथे शतं चाश्वा अश्वे-अश्वे शत नराः ॥' इति ॥

—१ अथ संपदि ॥ ८१ ॥

संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च—

1 संपत् (= संपद् । + सम्पदा), सम्पत्तिः, श्रीः, लक्ष्मीः (४ स्त्री), 'सम्पत्ति' के ४ नाम हैं ॥

पत्त्यादिसेनाविशेषे गजरथादिसंख्याबोधकचक्रम् ।

क्रमिकसंख्या	हैमोक्तसेना-विशेषसंज्ञाः	अमरोक्तसेना-विशेषसंज्ञाः	गजसंख्या	रथसंख्या	अश्वसंख्या (रथाश्वान् विहाय)	पदातिसंख्या	सर्वसङ्कलनं
१	पत्तिः	पत्तिः	१	१	३	५	१०
२	सेना	सेनामुखम्	३	३	९	१५	३०
३	सेनामुखम्	गुल्मः	९	९	२७	४५	९०
४	गुल्मः	गणः	२७	२७	८१	१३५	२७०
५	वाहिनी	वाहिनी	८१	८१	२४३	४०५	८१०
६	पृतना	पृतना	२४३	२४३	७२९	१२१५	२४३०
७	चमूः	चमूः	७२९	७२९	२१८७	३६४५	७२९०
८	अनीकिनी	अनीकिनी	२१८७	२१८७	६५६१	१०९३५	२१८७०
९	•	दशानीकि० (महेश्वरम-तेनेदम्)	६५६१	६५६१	१९६८३	३२८०५	६५६१०
१०	•	अक्षौहिणी (महेश्वरम-तेनेदम्)	१९६८३	१९६८३	५९०४९	९८४१५	१९६८३०
११	अक्षौहिणी	अक्षौहिणी (भानुजिदी-क्षितमतेनेदं)	२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०९३५०	२१८७००
१२	•	महाक्षौहिणी (महेश्वर-व्याख्योक्ता)	१३२१२४९०	१३२१२४९०	३९६३७४७०	६६०६२४५०	१३२१२४९००

—१ विपत्त्यां विपदापदौ ।

२ आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रम् ३ अथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥
धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।
इष्वासोऽ४ प्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥
५ कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुन्नपुंसकौ ।
६ कोटिरस्याटनी ७ गोधे तले ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥
८ लस्तकस्तु धनुर्मध्यं ९ मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।
१० स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

---

१ विपत्तिः, विपत् (= विपद् । + विपदा), आपत् (= आपद् । + आपत्तिः, आपदा । ३ स्त्री), 'आपत्ति' के ३ नाम हैं ॥

२ आयुधम्, प्रहरणम्, शस्त्रम्, अस्त्रम् (४ न), 'हथियार' के ४ नाम हैं ॥

३ धनुः (= धनुस् । + धनुः पु, धनूः स्त्री), चापः (२ पु न), धन्व (= धन्वन् । + धन्वम्), शरासनम्, कोदण्डम्, कार्मुकम् (४ न), इष्वासः (+ आसः । पु), 'धनुष' के ७ नाम हैं ॥

४ कालपृष्ठम् (न), 'कर्णके धनुष' का १ नाम है ॥

५ गाण्डीवः, गाण्डिवः (२ पु न), 'अर्जुनके धनुष' के २ नाम हैं ॥

६ कोटिः (+ कोटी), अटनी (+ अटनिः । २ स्त्री), 'धनुषके दोनों छोर (किनारे), के २ नाम हैं ॥

७ गोधा (स्त्री), तलम् (न), 'दस्ताना' अर्थात् 'धनुषकी तांतके चोटसे बचनेके लिये हाथमें पहिननेके लिए जो चमड़े आदि का बनाया जाता है उसके' २ नाम हैं ॥

८ लस्तकः (पु), धनुर्मध्यम् (भा० दी० न), 'धनुषके बीचवाले भाग' के २ नाम हैं ॥

९ मौर्वी, ज्या, शिञ्जिनी (३ स्त्री), गुणः (पु), 'धनुषकी डोरी, या तांत' के ४ नाम हैं ॥

१० प्रत्यालीढम्, आलीढम् (२ न), आदि ('आदिसे 'समपादम्,

१ लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च २ शराभ्यास उपासनम्।
३ पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥
[1]कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः।
४ प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः ५ पक्षो वाजस्त्रिषूत्तरे ॥ ८७ ॥
६ निरस्तः प्रहिते बाणे—

विशाखम्, मण्डलम् (३ न), का संग्रह है') 'धनुषधारियोंके बैठनेके [2]पांच आसन विशेष (तरीके), हैं। ('इनमें—बांये जङ्घेको आगे बढ़ाकर उठाने और दाहिनी जङ्घेको पीछे खींचकर समेटनेको प्रत्यालीढ १, दहने जङ्घेको आगे बढ़ाकर उठाने और बांये जङ्घेको पीछे खींचकर समेटनेका आलीढ २, दोनों पैरोंको बराबर रखनेको समपाद ३, दोनों पैरोंको फैलानेको वैशाख ४ और दोनों पैरोंको गोलाई के समान रखनेको मण्डल ५, कहते हैं') ॥

१ लक्षम्, लक्ष्यम्, शरव्यम् (३ न), 'निशाने' के ३ नाम हैं ॥

२ शराभ्यासः (पु), उपासनम् (न), 'बाण चलानेका अभ्यास करने' के २ नाम हैं ॥

३ [3]पृषत्कः, बाणः, विशिखः, अजिह्मगः, खगः, आशुगः, कलम्बः, मार्गणः, शरः (+ सरः), पत्री (= पत्रिन्), रोपः (११ पु), इषुः (पु स्त्री), 'बाण' के १२ नाम हैं ॥

४ प्रक्ष्वेडनः (+ प्रक्ष्वेदनः), नाराचः (२ पु), 'लोहेके बाण' के २ नाम हैं ॥

५ पक्षः, वाजः, (२ पु), 'बाणमें लगे हुए पङ्ख (कङ्कपत्र), के २ नाम हैं ॥

६ निरस्तः (त्रि), 'धनुषसे छोड़े हुए बाण' का १ नाम है ॥

---

१. 'कलम्बमार्गणसराः' इति पाठान्तरम् ॥

२. भरते (रभसे) न तु धनुर्धराणां षट् स्थितिप्रकारा उक्तास्तथा हि—

'वैष्णवं समपादं च वैशाखं मण्डलं तथा।
प्रत्यालीढमथालीढं स्थानान्येतानि षण्नृणाम्' ॥ १ ॥ इति ॥

३. पृषत् षट्कमस्येति विग्रहः। ते च षड् धनुर्वेद उक्तास्तथा हि—

'पुङ्खः शरस्तथा शल्यं पक्षस्त्रायुःततूनि च'। इति ॥

—१ विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ ।

२ तूणोपासङ्गतूणीर-निषङ्गा इषुधिर्द्वयोः　॥ ८८ ॥
तूण्यां ३ खड्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः ।
कौक्षेयको मण्डलाग्रः [1]करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥
४ त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्याद् ५ मेखला तन्निबन्धनम् ।
६ फलकोऽस्त्री फलं चर्म ७ संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥
८ द्रुघणो मुद्गरघनौ ९ [2]स्यादीली करवालिका ।

---

१ विषाक्तः दिग्धः, लिप्तकः (३ त्रि), 'विषमें बुझाये हुए बाण' के ३ नाम हैं ॥

२ तूणः, उपासङ्गः, तूणीरः, निषङ्गः (४ पु), इषुधिः (पु स्त्री), तूणी (स्त्री), 'तरकस' अर्थात् 'चमड़े आदिके बने हुए धनुषधारियोंके पीठपर बाँधे जानेवाले, बाण रखनेके थैले' के ६ नाम हैं ॥

३ खड्गः, निस्त्रिंशः, चन्द्रहासः, असिः, रिष्टिः (+ ऋष्टिः), कौक्षेयकः, मण्डलाग्रः, करवालः (+ करपालः), कृपाणः (९ पु), 'तलवार' के ९ नाम हैं ॥

४ त्सरुः (पु), 'तलवार आदिकी मूठ' का १ नाम है ॥

५ मेखला (स्त्री), 'तलवारको लटकानेके लिये चमड़े आदिकी बनी हुई कमरमें कसी जानेवाली पेटी, लड़ाईमें तलवार हाथसे छूट न जाय इस वास्ते कलाईपर बाँधे हुए चमड़े आदि या तलवार के म्यान' का १ नाम है ॥

६ फलकः (पु न), फलम्, चर्म (= चर्मन् । २ न), 'ढाल' के ३ नाम हैं ॥

७ संग्राहः (पु) 'ढालकी मूठ' का १ नाम है ॥

८ द्रुघणः (+ द्रुघनः), मुद्गरः, घनः (३ पु), 'मुद्गर' के ३ नाम हैं ॥

९ ईली (+ इलिः, ईलिः, इली), करवालिका (+ करपालिका । २ स्त्री), एक तरफ धारवाली छोटी तलवार या गुप्ती' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'करपालः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्यादिलिः करवालिका' इति 'करपालिका' इति च पाठान्तरे ॥

१ भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ २ परिघः परिघातनः ॥ ९१ ॥
३ द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च [1]परश्वधः ।
४ स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥
५ वा पुंसि शल्यं ६ शङ्कुर्ना [2]६सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम् ।
७ प्रासस्तु कुन्तः ८ कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥ ९३ ॥
९ सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसंनहनार्थकः ।

---

१ भिन्दिपालः (+ भिण्डिपालः), सृगः (२ पु), **'नलिका नामक हथियार और गुलेल'** अर्थात् 'छोटे २ पत्थर या कंकड़ फेंकनेके वास्ते रबड़ या चमड़ेके बने हुए साधन विशेष, या ढेलबांस' के २ नाम हैं ॥

२ परिघः, परिघातनः (२ पु), **'लोहा मढ़ी हुई लाठी'** के २ नाम हैं ॥

३ कुठारः (पु स्त्री), स्वधितिः, परशुः, परश्वधः (+ परस्वधः, पर्श्वधः । ३ पु) **'फरसा, कुल्हाड़ी'** के ४ नाम हैं ।

४ शस्त्री, असिपुत्री, छुरिका (+ चुरिका), असिधेनुका (४ स्त्री), **'छूरी'** के ४ नाम हैं ॥

५ शल्यम् (न पु), शङ्कुः (पु), 'बाण के नोक (अगले भाग)' के २ नाम हैं ॥

६ सर्वला (+ शर्वला । स्त्री), तोमरः (पु न) **'तोमर, गुर्ज या गड़ाँसे'** के २ नाम हैं ॥

७ प्रासः (+ प्राशः), कुन्तः (२ पु), **'भाला'** के २ नाम हैं ॥

८ कोणः (पु), पालिः (+ पाली), अश्रिः (+ अश्री), कोटिः (+ कोटी । ३ स्त्री), 'तलवार आदि हथियारोंके **किनारे या नोक'** के ४ नाम हैं ॥

९ सर्वाभिसारः, सर्वौघः (२ पु), सर्वसंनहनम् (न), **'चतुरङ्गिणी सेना को तैयार करने'** के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'परस्वधः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'शर्वला' इति पाठान्तरम् ॥

१ [1]लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां[3] राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥
२ यत्सेनयाऽभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ।
३ यात्रा व्रज्याऽभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥
४ स्यादासारः [2]प्रसरणं ५ प्रचक्रं चलितार्थकम् ।
६ अहिताम्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥

---

१ [3]लोहाभिसारः (+लोहाभिहारः । पु), 'लड़ाईके लिये तैयार शस्त्रधारियों या राजाओंकी आरती या आरतीके बादवाले कृत्य-विशेष या युद्धयात्राके पहले की जानेवाली हथियारोंकी पूजा' का १ नाम है ॥

२ अभिषेणनम् (न), 'वैरीके सामने सेना-सहित जाने' का १ नाम है ॥

३ यात्रा, व्रज्या (२ स्त्री), अभिनिर्याणम्, प्रस्थानम्, गमनम् (३ न), गमः (पु), 'यात्रा, प्रस्थान, जाने' के ६ नाम हैं ॥

४ आसारः (पु), प्रसरणम् (+प्रसरणी, प्रसरणिः । न) 'सेनाके सब तरफ फैल जाने' के २ नाम हैं । (किसी २ के मतसे 'पीछेसे आने-वाली सेना' को आसारः और 'घास, भूसा, जल, अन्न और इन्धन आदि इकट्ठा करनेके लिये सेनासे बाहर फैलनेको प्रसरणम् कहते हैं[4]' ॥

५ प्रचक्रम् , चलितम् (२ न), 'यात्रा की हुई सेना' के २ नाम हैं ॥

६ अभिक्रमः (+अतिक्रमः । पु), 'निडर होकर वैरीके सामने योद्धाके गमन करने' का १ नाम है ॥

---

१. 'लोहाभिहारो' इति 'नीराजनो विधिः' इति 'नीराजनाद्विधिः' इति च पाठान्तराणि ॥

२. 'प्रसरणी' इति पाठान्तरम् ॥

३. विधिर्लोहाभिसारस्तु राज्ञां नीराजनोत्तरः' इत्युक्तेर्नीराजनादनन्तरं कर्मलोहाभिसारः, इति मुनिः । 'लोहाभिसारस्तु विधिः परो नीराजनान्नृपैः' इति दुर्गोऽपि तथैव । अत एव 'नीराजनाद्विधिः' इत्येके पठन्ति' इति क्षी० स्वा० ॥

४. अनयोर्भिन्नार्थत्वादेव—

'निरुद्धवीवधासारप्रसारा इव गा व्रजम्' इति माघः (२।६४)' इति क्षी० स्वा० ॥

१ वैतालिका [1]बोधकरा२श्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।
३ स्युर्मागधास्तु [2]मगधा ४ बन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥
५ संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ।
६ रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांशुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥
७ चूर्णं क्षोदः ८ समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।

---

१ [3]वैतालिकः, बोधकरः (२ पु), 'राजाको जगानेके लिये प्रातः काल या विशिष्ट अवसरों पर राजाके स्तुतिपाठ करनेवाले बन्दी, भाट' के २ नाम हैं ॥

२ चाक्रिकः (+ चक्रिकः), [4]घाण्टिकः (+ घटिकः । २ पु), 'घण्टा बजानेवाले या घड़ियारी नामक बाजाको बजानेवाले बन्दी-विशेष' के २ नाम हैं ॥

३ मागधः, मगधः (+ मधुकः मु० । २ पु), 'राजाकी वंशावलीको वर्णन करनेवाले बन्दी' के २ नाम हैं ॥

४ बन्दी (= बन्दिन्), स्तुतिपाठकः (२ पु), 'राजाकी स्तुति करनेवाले बन्दी' के २ नाम हैं । (क्षी० स्वा० के मतसे 'मागधः,······' ४ नाम एकार्थक अर्थात् 'बन्दीमात्र' के हैं ॥

५ संशप्तकः (पु), 'शपथ देने या स्वयं प्रतिज्ञा करनेके कारण लड़ाईसे नहीं लौटनेवाले योद्धा' का १ नाम है ॥

६ रेणुः (पु स्त्री), धूलिः (+ धूली । स्त्री), पांशुः (+ पांसुः । पु), रजः (= रजस् न), 'धूल' के ४ नाम हैं ॥

७ चूर्णम् (न । + पु), क्षोदः (पु), 'महीन धूल' के २ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे 'रेणुः,······' ६ नाम 'धूलमात्र' के हैं') ॥

८ समुत्पिञ्जः, पिञ्जलः (२ पु), 'अधिक व्याकुल सेना' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'बाधकराश्चक्रिका घटिकार्थकाः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'मधुका' इति मुकुटसम्मतं पाठान्तरम् ॥

३-४. तदुक्तम्—

'वैतालिकाश्च कथ्यन्ते कविभिः सौखशायिकाः ।
राज्ञः प्रबोधसमये घण्टाशिल्पास्तु घाण्टिकाः' ॥ १ ॥ इति ॥

१ पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥
२ सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ।
३ अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥
४ आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्सम्भावनाऽऽत्मनि ।
५ अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहङ्कारः ॥ १०१ ॥
६ द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च ।
शक्तिः पराक्रमः प्राणो ७ विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥
८ वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।
९ युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥

---

१ पताका, वैजयन्ती (२ स्त्री), केतनम् (न), ध्वजम् (न पु), 'पताका, झण्डे' के ४ नाम हैं। (किसीके मतसे प्रथम दो नाम उक्तार्थक और अन्तवाले दो नाम 'पताकाके दण्ड' के हैं) ॥

२ वीराशंसनम् (न), 'लड़ाईके अत्यन्त भयङ्कर मैदान' का १ नाम है ॥

३ अहंपूर्विका (स्त्री), 'मैं पहले पहुंचा-मैं पहले पहुंचा ऐसे कहते हुए स्पर्द्धासे योद्धाओंके दौड़ने' का १ नाम है ॥

४ आहोपुरुषिका (स्त्री), 'अभिमानपूर्वक अपनेमें सामर्थ्यका प्रकट करने' का १ नाम है ॥

५ अहमहमिका (स्त्री), 'आपसमें अहङ्कार करने' का १ नाम है ॥

६ द्रविणम् , तरः (= तरस्), सहः (= सहस् । + सहः = सह पु, सहा स्त्री), बलम् , शौर्यम् , स्थाम (= स्थामन्), शुष्मम् (+ शुष्मा = शुष्मन्, पु न । ७ न), शक्तिः (स्त्री), पराक्रमः, प्राणः (+ ओजः = ओजस्, ऊर्जः = ऊर्जस् । २ पु), 'पराक्रम, बल' के १० नाम हैं ॥

७ विक्रमः (पु), अतिशक्तिता (स्त्री), 'अधिक बल' के २ नाम हैं ॥

८ वीरपानम् (+ वीरपाणम् । न), 'लड़ाईमें जानेके समय या लड़ाईसे लौटनेपर उत्साह को बढ़ानेके लिये मदिरादि-पान करने' का १ नाम है ॥

९ युद्धम् , आयोधनम् , जन्यम् , प्रधनम् , प्रविदारणम् , मृधम् ,

मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं [1]सांपरायिकम् ।
अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥
[2]संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ।
अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥
समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः ।
१ नियुद्धं बाहुयुद्धे२ऽथ तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥
३ क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात् ४करिणां घटना घटा ।
५ क्रन्दनं योधसंरावो ६ बृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥

आस्कन्दनम्, संख्यम्, समीकम्, सांपरायिकम् (+संपरायकम् । १० न), समरः, अनीकः, रणः (३ पु न), कलहः, विग्रहः, संप्रहारः, अभिसंपातः, कलिः, संस्फोटः (+संस्फेटः, संफेटः), संयुगः, अभ्यामर्दः (+अभिमर्दः), समाघातः, संग्रामः, आहवः, समुदायः (१३ पु), संयत् (+पु), समितिः, आजिः, समित्, युत् (=युध् । ५ स्त्री), 'लड़ाई, युद्ध' के २१ नाम हैं ॥

१ नियुद्धम्, बाहुयुद्धम् (२ न), 'कुश्ती, दङ्गल' के २ नाम हैं ॥

२ तुमुलम्, रणसंकुलम् (भा० दी० । २ न), 'खूब जमकर लड़ाई होने या व्याकुल होने' के २ नाम हैं ॥

३ क्ष्वेडा (+क्ष्वेला । स्त्री), सिंहनादः (पु), 'लड़ाईमें सिंहके समान गर्जने' के २ नाम हैं ॥

४ घटना (भा० दी०), घटा (२ स्त्री), 'हाथियोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

५ क्रन्दनम् (न), योधसंरावः (भा० दी०, पु), 'स्पर्द्धासे प्रतिपक्ष-वाले योद्धाओंको ललकारने या बुलाने' के २ नाम हैं ॥

५ बृंहितम्, करिगर्जितम् (२ न), 'हाथियोंके गर्जने' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'संपरायकम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फेटसंयुगाः' इति युक्तः पाठः' इति क्षी० स्वा० । 'संफेट' इति तु भरत' इति ॥

१ विस्फारो धनुषः स्वानः २ पटहाडम्बरौ समौ ।
३ प्रसभं तु बलात्कारो हठोऽथ ४ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥
५ अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ।
६ मूर्च्छा तु कश्मलं मोहो ७ऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥
८ अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं ९ विजयो जयः ।
१० वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥
११ प्रद्रावोद्द्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः ।
अपक्रमोऽपयानं च—

---

१ विस्फारः (पु), 'धनुषके टङ्कार' का १ नाम है ॥

२ पटहः, आडम्बरः (२ पु), 'नगाड़ा या दमदमा' के २ नाम हैं ॥

३ प्रसभम् (न), बलात्कारः, हठः (२पु) 'जबर्दस्ती करने' के ३ नाम हैं ॥

४ स्खलितम् , छलम् (२ न), 'कपट करने' अर्थात् युद्धके नियमको तोड़कर' छल करने के २ नाम हैं ॥

५ अजन्यम् (न), उत्पातः, उपसर्गः (२ पु), उत्पात' के ३ नाम हैं ॥

६ मूर्च्छा (स्त्री), कश्मलम् (न), मोहः (पु), 'बेहोशी, मूर्च्छा' के ३ नाम हैं ॥

७ अवमर्दः (पु), पीडनम् (न), 'अन्नादिसे परिपूर्ण देशको राजा के शत्रु द्वारा पीड़ित करने' के २ नाम हैं ॥

८ अभ्यवस्कन्दनम् (+ अवस्कन्दनम्), अभ्यासादनम् (+ धाटिः, धाटी । २ न) भा० दी० के मतसे 'मारकर शक्तिहीन' करने के और महे० के मतसे 'छापा मारने' अर्थात् कपटसे एकाएक आक्रमण करने' के २ नाम हैं । (' + सौप्तिकम् (न) 'रातमें छापा मारने' का १ नाम है') ॥

९ विजयः, जयः (२ पु), 'जीतने' के २ नाम हैं ॥

१० वैरशुद्धिः (स्त्री), प्रतीकारः (पु) वैरनिर्यातनम् (न), शत्रुताको दूर करने' के ३ नाम हैं ॥

११ प्रद्रावः, उद्द्रावः, संद्रावः, संदावः, विद्रवः, द्रवः, अपक्रमः (७ पु), अपयानम् (न), लड़ाईमें पीठ दिखलाने (भागने)' के ८ नाम हैं ॥

—१ रणे भङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥

२ पराजितपराभूतौ त्रिषु ३ नष्टतिरोहितौ ।

४ प्रमापणं निबर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ १११ ॥

प्रवासनं परासनं निषूदनं निर्हिंसनम् ।

निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥

निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।

निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥

उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च ।

[1]आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥

५ [2]'व्यापादनं विशमनं कदनं च निशुम्भनम्' (२६)

---

१ भङ्गः ([3]आ० दी०,) पराजयः (२ पु), 'हारने' के २ नाम हैं ॥

२ पराजितः (+ जितः), पराभूतः (+ परिभूतः, अभिभूतः । १ त्रि), 'लड़ाईमें हारे हुए' के २ नाम हैं ॥

३ नष्टः, तिरोहितः (२ त्रि), 'लड़ाईसे भागकर छिपे हुए' के २ नाम हैं ॥

४ प्रमापणम् , निबर्हणम् (+ निर्बर्हणम्), निकारणम् , विशारणम् (+ विश्वरणम् , निशारणम्), प्रवासनम् , परासनम्, निषूदनम् (+ निसूदनम्), निर्हिंसनम् , निर्वासनम्, संज्ञपनम्, निर्ग्रन्थनम् (+ निर्गन्थनम्), अपासनम्, निस्तर्हणम्, निहननम्, क्षणनम्, परिवर्जनम्, निर्वापणम्, विशसनम् , मारणम्, प्रतिघातनम् (+ प्रविघातनम्), उद्वासनम् , प्रमथनम् , क्रथनम्, उज्जासनम् (२४ न), आलम्भः, पिञ्जः, विशरः, घातः, उन्माथः (+ उन्मथः), वधः (६ पु), 'मारने' के ३० नाम हैं ॥

५ [व्यापादनम्, विशसनम्, कदनम् , निशुम्भनम् (४ न) 'मारने' के ४ नाम हैं] ॥

---

१. 'आलम्भपिञ्जविशरघातोन्मथवधा' इति पाठान्तरम् ॥

२. अयमंशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यते इति क्षेपकरूपेणात्र निहितः ॥

३. 'भङ्गशब्दस्य रणेऽन्वयित्वादिदमसत् ॥

१ स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।
अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११६ ॥
२ [१]'प्रमयोऽस्त्री दीर्घनिद्रा हिंसा संस्था प्रमीलनम्' (२७)
३ परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ।
मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते ४ चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥
५ कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।
६ श्मशानं स्यात्पितृवनं ७ कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥
८ प्रग्रहोपग्रहौ बन्द्यां—

---

१ पञ्चता (+ पञ्चत्वम् न । स्त्री), कालधर्मः (+ कालः), दिष्टान्तः, प्रलयः, अत्ययः, अन्तः, नाशः (६ पु), मृत्युः (पु स्त्री), मरणम् (न), निधनः (पु न), 'मृत्यु' के १० नाम हैं ॥

२ [प्रमयः (पु न), दीर्घनिद्रा, हिंसा, संस्था (३ स्त्री), प्रमीलनम् (न), 'मरने' के ५ नाम हैं] ॥

३ परासुः, प्राप्तपञ्चत्वः, परेतः, प्रेतः, संस्थितः, मृतः, प्रमीतः (७ त्रि), 'मरे हुए' के ७ नाम हैं ॥

४ चिता, चित्या, चितिः (३ स्त्री), 'चिता' के ३ नाम हैं ॥

५ [२]कबन्धः (+ रुण्डः । पु न), 'धड़, विना शिरके शरीर' का १ नाम है ॥

६ श्मशानम् , पितृवनम् (+ पितृकाननम् , प्रेतवनम् , करवीरम् । २ न), 'श्मशान' के २ नाम हैं ॥

७ कुणपः (पु), शवः (पु न), 'मुर्दे' के २ नाम हैं ॥

८ प्रग्रहः, उपग्रहः (२ पु), बन्दी (+ वन्दी । स्त्री), महे० मतसे 'कैदी, बँधुआ, गिरफ्तार' के और भा० दी० मतसे 'बन्दीगृह (कोत, हवालात), के ३ नाम हैं । (यहाँ महे० का मत ठीक प्रतीत होता है' ॥

---

१. अयमंशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यते इति क्षेपकरूपेणात्र निहितः ॥

२. कबन्धलक्षणं यथा—

'युद्धे योद्धृषु शूरेषु सहस्रं कृत्तमूर्धसु ।
तदावेशात्कबन्धः स्यादेको मूर्धा क्रियान्वितः' ॥ १ ॥ इति ॥

उपचारात्सामान्यतः शिरोहीनकलेवरेऽपि कबन्धशब्दव्यवहार इत्यवधेयम् ॥

—१ कारा स्याद्बन्धनालये ।
२ पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं ३ जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥
४ आयुर्जीवितकालो ना ५ ¹जीवातुर्जीवनौषधम् ।

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

९. अथ वैश्यवर्गः ।

६ ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।
७ आजीवो जीविका वार्ता ²वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

---

१ कारा (स्त्री), बन्धनालयम् (भा० दी०, न), 'जेल' के २ नाम हैं ॥

२ असवः (= असु), प्राणाः (२ पु नित्य ब० व०) 'प्राण' के २ नाम हैं ॥

३ जीवः (पु), असुधारणम् (भा० दी०, न), 'जीने, प्राणको धारण करने' के २ नाम हैं ॥

४ आयुः (= आयुस् न), जीवितकालः (भा० दी०, पु), 'उम्र, आयु' के २ नाम हैं ॥

५ जीवातुः (पु न), जीवनौषधम् (भा० दी०, न), 'जिलानेवाली दवा' के २ नाम हैं। (जैसे—लक्ष्मणजीके लिये संजीवनी बूटी……) ॥

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

९. अथ वैश्यवर्गः ।

६ ऊरव्यः, ³ऊरुजः, अर्यः, वैश्यः, भूमिस्पृक् (= भूमिस्पृश्), विट् (= विश् । ६ पु), 'वैश्य' के ६ नाम हैं ॥

७ आजीवः (पु), जीविका, वार्ता, वृत्तिः (३ स्त्री), वर्तनम् (+ वेतनम्), जीवनम् (२ न), 'जीविका वेतन' के ६ नाम हैं ॥

---

१. 'जीवातुर्जीवितौषधम्' इत्युपाध्यायाः' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'वृत्तिर्वेतनजीवने' इति पाठान्तरम् ॥

३ 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ऊरू तदस्य यद्वैश्यः' इति श्रुत्युक्तेः ॥

१ त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः।
२ [१]सेवा श्ववृत्ति[२]रनृतं कृषि[३]रुञ्छशिलं त्वृतम्॥२॥
५ द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते।
६ सत्यानृतं वणिग्भावः स्यात्—

---

१ कृषिः (स्त्री), पाशुपाल्यम्, वाणिज्यम् (+वणिज्यम्, वणिज्या, कुसीदम्। न), 'खेती, पशुपालन और व्यापार' ये ३ 'वृत्तिः' (स्त्री) [३]'वैश्योंकी वृत्तियाँ' हैं॥

२ सेवा (भा० दी०), [४]श्ववृत्तिः (२ स्त्री), 'सेवा' के २ नाम हैं॥

३ अनृतम् (+प्रमृतम्। भा० दी, न) [५]कृषिः (स्त्री), 'खेती' के २ नाम हैं॥

४ [६]उञ्छशिलम् (+उञ्छः, शिलम्, शिलोञ्छम्), ऋतम् (२ न), 'गृहस्थके खलिहान या खेतसे सब अन्न उठाकर ले जानेके बाद १-१ दाना चूंगने (बीनने), के २ नाम हैं॥

५ मृतम्, [७]अमृतम् (२ न), 'याचना करनेपर और बिना याचना किये मिली हुई वस्तु' का क्रमशः १-१ नाम है॥

६ [८]सत्यानृतम्, वणिग्भावः (भा० दी० न। +वाणिज्यम्, वणिज्यम्, वणिज्या। पु), 'व्यापार' के २ नाम हैं॥

---

१. 'ऋतामृताभ्यां जीवेत्तु मृतेन प्रमृतेन वा। सत्यानृताभ्यामपि वा न श्ववृत्त्या कदाचन॥१॥
इति मनूक्ताः (४।४) षड् वृत्तीरुपक्रम्याह—सेवेति।
२. 'प्रमृतम्' इति सभ्यः पाठ' इति क्षी० स्वा०।
३. तदुक्तं भगवता श्रीकृष्णेन—
'कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्' इति गीता १८।४४॥
४. तदुक्तम्—'शुनो वृत्तिः स्मृता सेवा गर्हितं तद् द्विजन्मनाम्।
हिंसादोषप्रधानत्वादनृतं कृषिरुच्यते'॥१॥ इति।
'सेवा श्ववृत्तिराख्याता तस्मात्तां परिवर्जयेत्' इति मनुः ४।६॥
५-६-७. तदुक्तं मनुना—
ऋतमुञ्छशिलं ज्ञेयममृतं स्यादयाचितम्।

—१ ऋणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥

उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका।

३ याच्ञयाऽऽप्तं याचितकं ४ निमयादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

५ उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्।

६ कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

७ क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः।

८ क्षेत्रं व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवो हि यत् ॥ ६ ॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि तत्।

१ ऋणम्, पर्युदञ्चनम् (२), उद्धारः (पु), 'कर्ज' के ३ नाम हैं ॥

२ अर्थप्रयोगः (पु), कुसीदम् (+ कुषीदम्, कुशीदम्। न), वृद्धिजीविका (स्त्री), 'ब्याज, सूद' के ३ नाम हैं ॥

३ याचितकम् (न), 'याचना करनेसे मिले हुए पदार्थ' का १ नाम है॥

४ आपमित्यकम् (न), 'बदलेमें मिले हुए' का १ नाम है ॥

५ उत्तमर्णः, अधमर्णः (२ त्रि), 'कर्ज देनेवाले और लेनेवाले' का क्रमशः १–१ नाम है ॥

६ कुसीदिकः (+ कुशीदिकः, कुषीदिकः) वार्धुषिकः, वृद्ध्याजीवः, वार्धुषिः (+ वार्द्धुषी = वार्द्धुषिन्। ४ त्रि), 'कर्ज देकर सूदसे जीविका चलानेवाले'के ४ नाम हैं ॥

७ क्षेत्राजीवः, कर्षकः (+ कार्षकः), कृषिकः, कृषीवलः (४ त्रि), 'किसान गृहस्थ' के ४ नाम हैं ॥

८ व्रैहेयम्, शालेयम्, यव्यम्, यवक्यम्, षष्टिक्यम् (५ त्रि), 'व्रीही, शालि (एक प्रकारका उत्तम धान), टूंड़वाला जौ, बिना टूंड़वाला जौ और साठी (साठ दिनमें तैयार होनेवाला धान-विशेष) के पैदा होने योग्य खेतों' का क्रमशः १–१ नाम है ॥

मृतं तु याचितं भैक्षं प्रमृतं कर्षणं स्मृतम्' ॥ ९ ॥

सत्यानृतं तु वाणिज्यं तेन चैवापि जीव्यते ॥' इति मनुः ४ । ५–६ ॥

१. 'व्रीहिशाल्युद्भवक्षमम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'हितम्' इत्युपाध्यायः' इति क्षी० स्वा० ॥

१ तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभङ्गा द्विरूपता ॥ ७ ॥
३ मौद्गीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षमम् ।
४ 'शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम्' (२८)
५ बीजाकृतं 'तूसकृष्टे ६ सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥
७ त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।
८ द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥

---

१ तिल्यम्, तैलीनम् (२ त्रि), 'तिल पैदा होने योग्य खेत' के २ नाम हैं ॥

२ + माष्यम्, + माषीणम्; + उम्यम्, + औमीनम्; + अणव्यम्, + आणवीनम्; + भङ्ग्यम्, + भङ्गीनम् (८ त्रि), 'उड़द, तीसी' (अलसी), 'चीना और सनई पैदा होने योग्य खेत' के क्रमशः २-२ नाम हैं ॥

३ मौद्गीनम्, कौद्रवीणम् (२ त्रि), आदि (+ गोधूमीनम्, कालायीनम्, कौलत्थीनम्, प्रैयङ्गवीणम्, चाणकीनम् (५ त्रि)'......, 'मूंग और कोदो आदि (गेहूं, मटर, कुरथी, चीना और चना,...) पैदा होने योग्य खेत' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

४ [शाकशाकटम्, शाकशाकिनम् (२ त्रि), 'साग पैदा होने योग्य खेत आदि (देश, स्थान, समय आदि)' के २ नाम हैं] ॥

५ बीजाकृतम्, उप्तकृष्टम् (भा० दी० । + उपकृष्टम् १ त्रि), 'बीज बोनेके बाद जोते हुए खेत' के २ नाम हैं ॥

६ सीत्यम् (+ शीत्यम्), कृष्टम्, हल्यम् (३ त्रि), 'जोते हुए खेत' के ३ नाम हैं ॥

७ त्रिगुणाकृतम्, तृतीयाकृतम्, त्रिहल्यम्, त्रिसीत्यम् (+ त्रिशीत्यम् । ४ त्रि), 'तीन बार जोते हुए खेत' के ४ नाम हैं ॥

८ द्विगुणाकृतम्, द्वितीयाकृतम्, द्विहल्यम्, द्विसीत्यम् (+ द्विशीत्यम्), शम्बाकृतम् (५ त्रि), 'दो बार जोते हुए खेत' के ५ नाम हैं । ('किसीके

---

१. 'तूपकृष्टम्' इति पाठान्तरम् ।

१ द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।
२ खारीवापस्तु खारीक ३ उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥
४ पुन्नपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्र ५ मस्य तु ।
केदारकं स्यात्कैदार्यं [1]क्षैत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥
६ लोष्टानि लेष्टवः पुंसि ७ कोटिशो लोष्टभेदनः ।
८ प्राजनं तोदनं तोत्त्रं ९ खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥
१० दात्रं लवित्रम्—

मतसे 'शम्बाकृतम्' यह १ नाम 'अच्छी तरह सीधा जोतनेके बाद तिर्छी जोते हुए खेत' का नाम है') ॥

१ द्रौणिकः, आढकिकः (२ त्रि), आदि (प्रास्थिकः, कौडविकः; २ त्रि), 'एक द्रोण और एक आढक आदि (एक प्रस्थ (सेर) एक कुडव (छटाक) आदि) बोने आदिके योग्य खेत आदि (उतना पकाने या रखने योग्य बर्तन या उतना खाने योग्य मनुष्यादि,······)' का क्रमशः १-१ नाम है ॥

२ खारीकः (खारीवापः भा० दी०) (त्रि), 'एक खारी बोनेके योग्य खेत' का १ नाम है ॥

३ 'उत्तमर्ण' (श्लो० ५) शब्दसे यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

४ वप्रः (पु न), केदारः (पु), क्षेत्रम् (न), 'खेत, क्यारी'के ३ नाम हैं ॥

५ कैदारकम् (+कैदारम्), कैदार्यम् , क्षैत्रम् (भा० दी० +क्षेत्रम् महे०), कैदारिकम् (४ न), 'खेतोंके समूह' के ४ नाम हैं ॥

६ लोष्टम् (न । +पु), लेष्टुः (पु), 'ढेला' के २ नाम हैं ॥

७ कोटिशः (+कोटीशः), लोष्टभेदनः (२ पु), 'ढेलोंको फोड़नेवाली मुंगरी के या हेंगा' अर्थात् 'काष्ठ या दो बाँसोंसे बनाये गये पटेला' के २ नाम हैं ॥

८ प्राजनम् (+प्रवयणम्), तोदनम्, तोत्त्रम् (३ न), 'चाबुक-पैना' के ३ नाम हैं ॥

९ खनित्रम् , अवदारणम् (२ न), 'खन्ता' अर्थात् 'कुदाल, फरसा, रामा, खंता आदि जमीन खोदनेवाले हथियार' के २ नाम हैं ॥

१० दात्रम् , लवित्रम् (२ न) 'हँसुआ' के २ नाम हैं ॥

१. 'क्षैत्रम्' इति महेश्वरसम्मतं पाठान्तरम् ॥

—१ आबन्धो योत्रं योक्त्रमथो[1] फलम् ।
[2] निरीशं कुटकं फालः कृषको ३ लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥
गोदारणं च सीरोऽथ ४ शम्या स्त्री युगकीलकः ।
५ ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात् ६ सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥
७ पुंसि [3]मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।
८ आशुर्व्रीहिः पाटलः स्यात्—

---

१ आबन्धः (पु) योत्रम्, योक्त्रम् (२ न), 'जोती, जोता' अर्थात् 'जुवामें बांधी जानेवाली रस्सी' के २ नाम हैं ॥

२ फलम्, निरीशम् (+ निरीषम्), कुटकम् (+ कूटकम् । ३ न), फालः, कृषकः (+ कृषिकः पु, कृषिका स्त्री । २ पु), 'फार' के ५ नाम हैं । ('किसीके मतसे प्रथमवाले ३ नाम जिसमें फारको गाड़ा जाता है उस काष्ठके और अन्तवाले २ नाम उक्तार्थक हैं') ॥

३ लाङ्गलम् , हलम् (+ हालः), गोदारणम् (३ न), सीरः (+ शीरः । पु), 'हल' के ४ नाम हैं ॥

४ शम्या (स्त्री), युगकीलकः (पु), 'सइला, जुआठकी कील' के २ नाम हैं ॥

५ ईषा (ईशा । स्त्री), लाङ्गलदण्डः (भा० दी०, पु), 'हरिश' के २ नाम हैं ॥

६ सीता (+ शीता), लाङ्गलपद्धतिः (भा० दी० । स्त्री), 'हराई' अर्थात् 'हलके चलानेसे पड़ी हुई लकीर' के २ नाम हैं ॥

७ मेधिः (+ मेथिः । पु), खलेदारु (भा० दी० पु न) 'मेंह' अर्थात् 'दँवनी करनेके समय बैलोंके रस्सी बांधे जानेवाले बड़े खूँटे' के २ नाम हैं ॥

८ आशुः (+ न) व्रीहिः (+ आशुव्रीहिः पु), पाटलः (+ पाटलिः । २ पु), 'साठी' अर्थात् 'साठ दिनमें तैयार होनेवाले धान' के ३ नाम हैं ॥

---

१. अत्र 'हलम्' इति पाठमुक्त्वा 'इतो हलप्रकरणमारभ्यमित्यर्थः' इति क्षी० स्वा० आह ॥
२. 'निरीशं कूटकं फालः कृषिकः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'मेथिः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ [1]शितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥

२ तोक्मस्तु तत्र हरिते ३ कलायस्तु सतीनकः।
हरेणुखण्डिकौ चास्मिन् ४ कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥
५ मङ्गल्यको मसूरोऽथ [2]मकुष्टकमयुष्टकौ।
वनमुद्गे ७ सर्षपे तु द्वौ [3]तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥
८ सिद्धार्थस्त्वेष धवलो ९ गोधूमः सुमनः समौ।
१० स्याद्यावकस्तु [4] कुल्माष ११ श्चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

---

१ शितशूकः (+ सितशूकः), यवः (२ पु), 'जौ' के २ नाम हैं ॥

२ तोक्मः (पु), 'हरे जौ' का १ नाम है ॥

३ कलायः, सतीनकः (+ सातीनकः), हरेणुः, खण्डिकः (४ पु), 'मटर, कर्विलि' के ४ नाम हैं ॥

४ कोरदूषः, कोद्रवः (+ काद्रवः । २ पु), 'कोदो' के २ नाम हैं ॥

५ मङ्गल्यकः, मसूरः (+ मसुरः, मसूरा, मसुरा; २ स्त्री । २ पु), 'मसूर' के २ नाम हैं ॥

६ मकुष्टकः (+ मकुष्ठकः, मकुष्टः, मुकुष्टः, मकूष्ठकः, मुकुष्टकः), मयुष्टकः (+ मयुष्ठकः, मयष्टकः, मपष्ठकः, मपष्ठः, मपुष्ठकः, मपुष्ठः) वनमुद्गः (३ पु), 'वनमूंग या मोठ नामक अन्न-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

७ सर्षपः (+ सरिषपः), तन्तुभः (+ तुन्तुभः), कदम्बकः (३ पु), 'सरसों' के ३ नाम हैं ॥

८ सिद्धार्थः (+ रक्षोघ्नः, भूतनाशनः । पु), 'सफेद सरसों' का १ नाम है ॥

९ गोधूमः सुमनः (२ पु), गेहूँ' के २ नाम हैं ॥

१० यावकः कुल्माषः (+ कुल्मासः । २ पु), 'अधसूखे जौ' के और रक्षितके मतसे 'बिना टूँड़वाले जौ' के २ नाम हैं ॥

११ चणकः, हरिमन्थकः (+ हरिमन्थः, हरिमन्थजः । २ पु), 'चना' के २ नाम हैं ॥

---

१ सितशूकयवौ' इति पाठान्तरम् ॥ २. मकुष्ठकमयुष्ठकौ' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'तुन्तुभकदम्बकौ' इति पाठान्तरम् ॥
४. 'कुल्मासश्चणकः' इति मुकुटपाठः' इति मा० दी० ॥

१ द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ।
२ क्षवः[1] क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥
३ स्त्रियौ कङ्गुप्रियङ्गू द्वे ४ अतसी स्यादुमा क्षुमा ।
५ मातुलानी तु भङ्गायां ६ व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥
७ किंशारुः [2] सस्यशूकं स्यात् ८ कणिशं सस्यमञ्जरी ।
९ धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः—

१ तिलपेजः, तिलपिञ्जः (+जर्तिलः । २ पु), 'बिना तेलवाली तिल' के २ नाम हैं ॥

२ क्षवः, क्षुताभिजननः (+ क्षुधाभिजननः । २ पु), राजिका, कृष्णिका (+कृष्णका), आसुरी (+ सुरी, असुरी । ३ स्त्री), 'राई' काला सरसो' के ५ नाम हैं ॥

३ कङ्गुः (+कङ्गुः, कङ्गुः कङ्गूः), प्रियङ्गुः (२ स्त्री), 'ककुनी' अर्थात् 'टांगुन' के २ नाम हैं ॥

४ अतसी, उमा, क्षुमा (३ स्त्री), 'तीसी, अलसी' के ३ नाम हैं ॥

५ मातुलानी, भङ्गा (२ स्त्री), 'भांग' के २ नाम हैं ॥

६ अणुः (पु), 'चीना' का १ नाम है ॥

७ किंशारुः (पु), सस्यशूकम् (+ शस्यशूकम् । भा० दी०, न । + पु सुकु०), 'टूंड़' के २ नाम हैं ॥

८ कणिशम् (+ कणिषम् । न । + पु), सस्यमञ्जरी (+ शस्यमञ्जरी । भा० दी०, स्त्री, 'धान आदिके बाल' के २ नाम हैं ॥

९ धान्यम् (न), व्रीहिः, स्तम्बकरिः (२ भा० दी० । २ पु), 'धान्य-मात्र' के ३ नाम हैं । ('धान्य [3]सत्रह प्रकारके होते हैं') ॥

१. क्षुधाभिजननः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शस्यशूकं स्यात्कणिशं शस्यमञ्जरी' इति पाठान्तरम् ॥

३. क्षी० स्वा० व्याख्याने सप्तदश धान्यान्युक्तानि, तथा हि—

'व्रीहिर्यवो मसूरो गोधूमो मुद्गमाषतिलचणकाः ।
अणवः प्रियङ्गुकोद्रवमयुष्टकाः शालिराढक्यः ॥ १ ॥
द्वौ च कुलायकुलत्थौ शणः सप्तदशानि धान्यानि' ॥ इति ॥

—१ स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥
२ नाडी नालञ्च काण्डोऽस्य ३ पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।
४ [1]कडङ्गरो बुसं क्लीबे ५ धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥
६ शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे ७ शमी[2] शिम्बा ८ त्रिषूत्तरे ।
[3]ऋद्धमावसितं धान्यं ९ पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

---

१ स्तम्बः, गुच्छः (भा० दी० । २ पु), 'तृण यवादिके गुच्छे' के २ नाम हैं ॥

२ नाडी (स्त्री), नालम् (न), 'यवादिके डण्ठल' के २ नाम हैं ॥

३ पलालः (पु न), 'पुआल' का १ नाम है ॥

४ कडङ्गरः (+ कडङ्करः । पु), बुसम् (+ बुषम् । न), 'पुआले आदिके भूसे' के २ नाम हैं ॥

५ धान्यत्वक् (= धान्यत्वच्, भा० दी०, स्त्री), तुषः (पु), 'धानके भूसे' के २ नाम हैं ॥

६ शूकः (पु न). 'धान्य या तृण आदिके चिकने और नुकीले टूंड़ आदि' का १ नाम है । ('धान्य-तृणसे पृथक् बिच्छू आदिके डङ्कका भी यह वाचक है, अत एव इसका किशारु (श्लो० २१ में उक्त) शब्दसे अलग निर्देश है') ॥

७ शमी (+ शमिः), शिम्बा (+ शिम्बिः, शिम्बी, सिम्बा, सिम्बिः, सिम्बी । २ स्त्री), 'छीमी, फली' अर्थात् 'मटर, केराव आदिकी हेंढ़ी' के २ नाम हैं ॥

८ ऋद्धम (+ रिद्धम्), आवसितम् (+ अवसितम् । २ त्रि). 'हवामें ओसाकर इकट्ठा करने योग्य धान आदि अन्न' के २ नाम हैं ॥

९ पूतम् , बहुलीकृतम् (२ त्रि), ओसाये हुए धान आदि अन्नकी राशि' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'कडङ्करः' इति हरदत्तपाठः' इति महे० भा० दी० ॥

२. 'सिम्बा' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'रिद्धमावसितं' इति पाठान्तरम् ॥

१ माषादयः शमीधान्ये २ शूकधान्ये यवादयः ।
३ शालयः कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥
४ तृणधान्यानि नीवाराः ५ स्त्री [1] गवेधुर्गवेधुका ।
६ [2]अयोग्रं मुसलोऽस्त्री ७ स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥
८ प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री ९ चालनी तितउः पुमान् ।
१० [3]स्यूतप्रसेवौ—

---

१ [4] शमीधान्यम् (न), 'उरद आदि (मसूर, मूंग,......) अन्न' का १ नाम है ॥

२ शूकधान्यम् (न), 'टूँड़वाले जौ आदि (गेंहू, धान,...), अन्न' का १ नाम है ॥

३ शालिः (पु), 'कलम (जड़हन धान), साठी आदि धान' का १ नाम है ॥

४ तृणधान्यम् (न), नीवारः (पु) 'तीनी, सांवा, कोदो आदि' का १ नाम है ॥

५ गवेधुः (+ गवेडुः, मुकु०), गवेधुका (२ स्त्री), 'मुनियोंके अन्न विशेष' के २ नाम है ॥

६ अयोग्रम् (+ अयोनिः), मुसलः (२ पु न) 'मुसल' के २ नाम हैं ॥

७ उदूखलम्, उलूखलम् (२ न), 'ओखली' के २ नाम हैं ॥

८ प्रस्फोटनम् (न), शूर्पम् (+ सूर्पम् । पु न), 'सूप' के २ नाम हैं ॥

९ चालनी (स्त्री । + चालनम् न), तितउः (पु । + न), 'चालनी' के २ नाम हैं ॥

१० स्यूतः (+ स्योनः मुकु०), प्रसेवः (२ पु), 'बोरा या कपड़े आदिके थैले' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'गवेडु—' इति मुकुटः ॥ २. 'अयोनिः' इत्येके पेठुः' इति क्षी० स्वा० ॥

३. 'स्योनप्रसेवौ' इति पाठान्तरम् ॥

४. तथा च रत्नकोषः—'माषो मुद्गो राजमाषः कुलत्थश्चणकस्तिलः ।
काकाण्डश्चीवर इति शमीधान्यगणः स्मृतः' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ ¹कण्डोलपिटौ २ कटकिलिञ्जकौ ॥२६॥
समानौ ३ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे।
४ पौरोगवस्तदध्यक्षः ५ सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥
६ आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः।
७ आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार ८ इमे त्रिषु ॥ २८ ॥
९ ²अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका।
१० अङ्गारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥
हसन्यपि—

१ कण्डोलः, पिटः (+ पिटकः; पिण्डः क्षी० स्वा० । २ पु), 'बाँस या बेंत आदिके बने हुए दौरी, डाली, ओड़ा आदि' के २ नाम हैं ॥

२ कटः, किलिञ्जकः (२ पु), 'बाँसकी बनी हुई झाँपी आदि' के २ नाम हैं॥

३ रसवती (स्त्री), पाकस्थानम्, महानसम् (२ न), 'रसोइया घर, पाकशाला' के ३ नाम हैं ॥

४ पौरोगवः (त्रि), 'पाकशालाके मालिक' का १ नाम है ॥

५ सूपकारः, बल्लवः (२ त्रि), क्षी० स्वा० के मतसे 'व्यञ्जन' (तरकारी, कढ़ी आदि) बनानेवाले रसोइयादार' के २ नाम हैं ॥

६ आरालिकः, आन्धसिकः, सूदः, औदनिकः, गुणः (५ त्रि), क्षी० स्वा० के मतसे 'रसोइयादार, पाचक' के ५ नाम हैं। भा० दी० महे० आदिके मतसे 'सूपकारः' आदि ७ नाम 'रसोइयादार' के ही हैं ॥

७ आपूपिकः, कान्दविकः, भक्ष्यकारः (+ भक्षकारः, भक्ष्यङ्कारः । ३ त्रि), 'पुआ, पुड़ी, कचौड़ी आदि बनानेवाले, हलवाई' के ३ नाम हैं ॥

८ 'पौरोगव' (श्लो० २७) शब्दसे यहाँतक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

९ अश्मन्तम् (+ अश्वन्तः, पु), उद्धानम्, (उष्मानम्, उद्धानम्, उद्धा-नम् । २ न), अधिश्रयणी, चुल्लिः (+ चुल्ली), अन्तिका (+ अन्दिका, अन्ती । ३ स्त्री), 'चुल्ही' के ५ नाम हैं ॥

१० अङ्गारधानिका (+ अङ्गारधानी, अङ्गारपात्री), अङ्गारशकटी, हसन्ती (+ हसन्तिका), हसनी (४ स्त्री), 'बोरसी, 'अँगीठी' के ४ नाम हैं ॥

१. 'कण्डोलपिण्डौ' इति पाठान्तरम् ॥
२. 'अस्वन्त उष्मानं' इति 'अश्मन्तमुद्धानं' इति च पाठान्तरे ॥

—१ अथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम् ।
२ क्लीबेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ३ ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥
४ [1]अलिञ्जरः स्यान्मणिकः ५ कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।
६ पिठरः [2]स्थाल्युखा कुण्डं ७ कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥
घटः कुटनिपा ८ वस्त्री [3]शरावो वर्धमानकः ।
९ [4]ऋजीषं पिष्टपचनं—

---

१ अङ्गारः (पु न), अलातम्, उल्मुकम् (२ न), भा० दी० के मतसे 'अङ्गार' के ३ नाम हैं। तथा मुकु० और महे० के मतसे पहला नाम 'अङ्गार' का और अन्तवाले दो नाम 'लुआठ' के हैं ॥

२ अम्बरीषम् (न । + पु), भ्राष्ट्रः (पु), 'खापर' अर्थात् 'चना आदि-को भूंजनेके बर्तन' या भाड़ 'भंसार' के २ नाम हैं ॥

३ कन्दुः (+ कन्दूः । पु स्त्री), स्वेदनी (स्त्री), 'मदिरा बनानेके बर्तन या भट्ठी' के २ नाम हैं ॥

४ अलिञ्जरः (+ अलञ्जरः) मणिकः (२ पु), 'कुण्डा, भाँड़' के २ नाम हैं ॥

५ कर्करी, आलुः (+ आलूः), गलन्तिका (+ गलन्ती । ३ स्त्री), 'गड़ुआ, हथहर या झंझरा' के ३ नाम हैं ॥

६ पिठरः (पु । + न), स्थाली, उखा (+ उषा २ स्त्री), कुण्डम् (न), 'तसला' बटुआ, बटलोही' के ४ नाम हैं ॥

७ कलशः (+ कलसः । त्रि), घटः (पु स्त्री), कुटः, निपः (२ पु न) 'घड़े' के ४ नाम हैं ॥

८ शरावः (+ सरावः । पु न), वर्द्धमानकः (पु), 'ढकना, कसोरा' के २ नाम हैं ॥

९ ऋजीषम् (+ ऋचीषम्), पिष्टपचनम् (२ न), 'तावा' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'अलञ्जरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्थाल्युषा कुण्डं कलसस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'सरावः' इति दन्त्यादिरपि—' इति मुकुटः' इति भा० दी० ॥

४. 'ऋचीषं' इति पाठान्तरम् ॥

—१ कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

२ कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं ३ सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ।

४ सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥

५ दर्विः कम्बिः खजाका च ६ [1]स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ।

७ अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रु ८ रस्य तु नालिका ॥ ३४ ॥

कलम्बश्च कडम्बश्च—

---

१ कंसः (पु न), पानभाजनम् (+ कोशिका, पारी, मल्लिका, चषकः । न), 'दूध आदि पीनेका प्याला, ग्लास आदि' के २ नाम हैं ।

२ कुतूः (स्त्री), स्नेहपात्रम् (भा० दी०, न), 'कुप्पा' अर्थात् 'तेल रखने-के लिये चमड़ेके बने हुए बड़े बर्तन' के २ नाम हैं ॥

३ कुतुपः (पु), 'कुप्पी' अर्थात् 'तेल रखनेके लिये चमड़ेके बने हुए छोटे बर्तन' का १ नाम है ॥

४ आवपनम्, भाण्डम्, पात्रम्, अमत्रम्, भाजनम् (५ न), 'बर्तन' के ५ नाम हैं ॥

५ दर्विः (+ दर्वी), कम्बिः (+ कम्बी), खजाका (३ स्त्री), 'कलछुल' के ३ नाम हैं ॥

६ तर्दूः (+ तन्दूः । स्त्री), दारुहस्तकः (पु), 'डब्बू' अर्थात् 'भात-दाल आदि परोसनेके उपयोगी बर्तन' के २ [2]नाम हैं ॥

७ शाकम् (न पु), हरितकम् (न), शिग्रुः (पु) 'भाजी, साग' के ३ नाम हैं ॥

८ नालिका (+ नाडिका, नाली । [3]पुक्कृ० स्त्री) कलम्बः, कडम्बः (पु), 'सागके डंठल' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'स्यात्तन्दूर्दारुहस्तकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पञ्चापि (दर्व्यादयो दारुहस्तकान्ताः) पर्यायाः । चक्रहेमा ('दर्वी फणातर्द्वोः') तुरो-षात्' इति भा० दी० । किन्तु हेमचन्द्रकृतेऽनेकार्थसंग्रहे '—दर्वी फणातर्वोः' (अने० संग्र० २।५२४) इत्युपलम्भात्, तेनैव विरचितेऽभिधानचिन्तामणौ 'कम्बिः दर्विः खजाकाऽथ स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः' (अभि० चिन्ता० ४.८७) इत्युक्तेश्च तदसदित्यवधेयम् ॥

३. 'नालं काण्डे मृणाले च नाली शाके कलम्बके' (अने० संग्र० २।४९४) इति

—१ [1]वेसवार उपस्करः।

२ तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्लमथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥
मरीचं कोलकं [2]कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।
४ जीरको जरणोऽजाजी [3]कणा ५ कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥
सुपवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।
६ आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्या ७ दथ छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥

१ [4]वेसवारः (+ वेषवारः), उपस्करः (२ पु), 'छौंक देनेके लिये जीरा आदि फोरन या मसाला' के २ नाम हैं ॥

२ तिन्तिडीकम् , चुक्रम् , वृक्षाम्लम् (+ वृक्षाम्लम् । ३ न), 'चूक, अमचुर' के ३ नाम हैं ॥

३ वेल्लजम् , मरीचम् (+ मरिचम्), कोलकम् , कृष्णम् , ऊषणम् , (+ उषणम्), धर्मपत्तनम् (+ धार्मपत्तनम् । ६ न) 'मिर्च' के ६ नाम हैं ॥

४ जीरकः, जरणः (२ पु), अजाजी, कणा (२ स्त्री), 'सफेद जीरा' के ४ नाम हैं ॥

५ सुपवी, कारवी, पृथ्वी (+ पृथ्वीका), पृथुः, काला, (+ कालिका, उपकालिका), उपकुञ्चिका, (+ कुञ्चिका, कुञ्ची । ६ स्त्री), 'काला जीरा' के ६ नाम हैं ॥

६ आर्द्रकम् , शृङ्गवेरम् , (२ न), 'अदरख, आदि' के २ नाम हैं ॥

७ छत्रा (स्त्री), वितुन्नकम् , कुस्तुम्बुरु (+ कुस्तुम्बुरी), धान्याकम्

हैमोक्तेः 'नाला न ना पद्मदण्डे च नाली शाककडम्बके' इति (मेदि० पृ० १५९ । श्लो० २८) मेदिन्युक्तेश्चेत्यवधेयम् ॥

१. 'वेषवारः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कृष्णमुषणं धार्मपत्तनम्' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कणा कृष्णा तु पिप्पली' इत्येके पेठुः' इति क्षी० स्वा० ॥

४. तदुक्तमात्रेयसंहितायाम् —

'चित्रकं पिप्पलीमूलं पिप्पलीचव्यनागरम् ।
धान्याकं रजनीश्वेततण्डुलाश्च समांशकाः ॥ १ ॥
वेसवार इति ख्यातः शाकादिषु नियोजयेत्' ॥ इति ॥

अथवा—'२० पलानि हरिद्रायाः, १० पलानि धान्याकस्य, ५ पलानि शुद्धजीरकस्य, २½ पलानि मेथिकायाः, एतच्चतुष्टयं भर्जितमेव ग्राह्यम् ; २ पलानि मरीचस्य, ½ पलं रामठस्य । एतत्सर्वमेकत्र संमर्दितं वेसवार इत्युच्यते' इत्यन्ये' इति मदे० मा० दी० ॥

कुस्तुम्बुरु च[1] धान्याक१मथ शुण्ठी महौषधम् ।
स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥
२ आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि च ।
अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च[2] काञ्जिके ॥ ३९ ॥
३ सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिङ्गु रामठम् ।
४ [3]तत्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका कबरी पृथुः ॥ ४० ॥
५ निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।
६ सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं [4]वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

(+धन्याकम्, धान्यकम्, धन्यम्, धनीयकम्, धनेयकम्, धन्या । ३), 'धनियाँ' के ४ नाम हैं ॥

१ शुण्ठी (+शुण्ठिः । स्त्री), महौषधम्, विश्वम् (न स्त्री), नागरम्, विश्वभेषजम् (शेष न), 'सोंठ' के ५ नाम हैं ॥

२ आरनालकम् (+आरनालम्) सौवीरम्, कुल्माषम्, अभिषुतम् (+कुल्माषाभिषुतम्), अवन्तिसोमम्, धान्याम्लम् (+धान्याम्ब्लम्), कुञ्जलम्, काञ्जिकम् (+काञ्चिकम् । ८ न), 'कांजी' के ७ नाम हैं ॥

३ सहस्रवेधि (=सहस्रवेधिन्), जतुकम्, बाह्लीकम् (+बह्लिकम्), हिङ्गु, रामठम् (५ न), 'हींग' के ५ नाम हैं ॥

४ +स्वक्पत्री, कारवी, पृथ्वी, बाष्पिका (+बाष्पीका), कबरी (+कवेरी), पृथुः (६ स्त्री), 'हींगके पेड़के पत्ते' के ६ नाम हैं ॥

५ निशाख्या (+'निशा' अर्थात् रातके वाचक सब नाम), काञ्चनी, पीता, हरिद्रा, वरवर्णिनी (५ स्त्री), 'हल्दी' के ५ नाम हैं ॥

६ अक्षीवम् (+अक्षिवम्), वशिरम् (+वसिरम्) 'समुद्री नमक' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'धान्यकमथ' इति मा० दी० 'धन्यक' इति मुकु० सम्मते पाठान्तरे ॥
२. 'काञ्चिके' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'त्वक्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पीका कवेरी इति पाठान्तरम् ॥
४. 'सिर' इति पाठान्तरम् ॥

१ सैन्धवोऽस्त्री[1] शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ।
२ रौमकं [2]वसुकं ३ पाक्यं बिडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥
४ सौवर्चलेऽक्षरुचके ५ तिलकं तत्र मेचके ।
६ मत्स्यण्डी फाणितं ७ खण्डविकारः शर्करा सिता ॥ ४३ ॥
८ कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्याद्९रसाला तु मार्जिता ।

१ सैन्धवः (पु न), शीतशिवम् (+ सितशिवम्), माणिमन्थम् (+ माणिबन्धम्), सिन्धुजम् (३ न), 'सेंधा नमक, या सिन्धुदेशमें पैदा होनेवाले नमक' के ४ नाम हैं ॥

२ रौमकम्, वसुकम् (+ वस्तकम् । २ न), 'साँभर नमक' के २ नाम हैं ॥

३ पाक्यम्, बिडम् (+ विडम् । २ न), 'खारा नमक या खरिया नमक' के २ नाम हैं ।

४ सौवर्चलम्, अक्षम्, रुचकम् (३ न), 'सोचर नमक' के ३ नाम हैं ॥

५ तिलकम् (न), 'काला नमक' का १ नाम है ॥

६ मत्स्यण्डी (स्त्री), फाणितम् (न), 'राब' के २ नाम हैं ॥

७ खण्डविकारः (पु), शर्करा, सिता (२ स्त्री), 'मिश्री, चीनी, शक्कर' के ३ नाम हैं । ('भा० दी० मतसे 'मत्स्यण्डी,……' ३ नाम 'राब' के और 'शर्करा, सिता' ये २ नाम 'चीनी आदि' के हैं । अन्याचार्यों के मतमें 'मत्स्यण्डी,………' ५ नाम एकार्थक हैं') ॥

८ कूर्चिका, क्षीरविकृतिः (भा० दी० । + किलाटी । २ स्त्री, 'मावा, खोवा' के २ नाम हैं ॥

९ [3]रसाला, मार्जिता (+ शिखरिणी । २ स्त्री), 'दही, खाँड़ (चीनी), घी, मिर्च और सोंठसे बनाई हुई चटनी' के २ नाम हैं, इसे गुजराती लोग 'सिखरन या सिकरन' कहते हैं) ॥

१. 'सितशिवं माणिबन्धं' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'वस्तकं पाक्यं विडं' इति पाठान्तरम् ॥

३. तथा च सूद (पाक) शास्त्रम्—

'अर्धाढकः सुचिरपर्युषितस्य दध्नः खण्डस्य षोडश पलानि शशिप्रभस्य ।
सर्पिः पलं मधु पलं मरिचं द्विकर्षं शुण्ठ्याः पलार्द्धमपि चार्द्धपलं चतुर्णाम् ॥ १ ॥
सूक्ष्मे पटे ललनया मृदुपाणिघृष्टा कर्पूरधूलिसुरभीकृतपात्रसंस्था ।
एषा वृकोदरकृता सरसा रसाला यास्वादिता भगवता मधुसूदनेन' ॥ २ ॥ इति ॥

१ स्यात्तेमनं तु निष्ठानं २ त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥
३ शूलाकृतं भटित्रं स्याच्छूल्य४मुख्यं तु पैठरम् ।
५ [१]संस्कृतं सर्पिषा दध्ना सार्पिष्कं दाधिकं क्रमात् (२९)
६ उदलावणिकं तत्स्यादुदश्विल्लवणाम्भसा' (३०)
७ प्रणीतमुपसंपन्नं ८ प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥
९ स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं १० संमृष्टं शोधितं समे ।

---

१ तेमनम्, निष्ठानम् (२ न), 'दही-बारा, कढ़ी आदि' के २ नाम हैं।

२ यहाँसे आगे 'वासित' (श्लो० ४६) शब्द तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं॥

३ शूलाकृतम् , भटित्रम् , शूल्यम् (३ त्रि), 'लोहे के छड़ से पकाये हुए मांस' के ३ नाम हैं॥

४ उख्यम्, पैठरम् (२ त्रि), 'बटुएमें पकाये हुए भात आदि' के २ नाम हैं॥

५ [सार्पिष्कम् , दाधिकम् (१ त्रि), 'घी और दही में बनाये हुए पदार्थ' का क्रमशः १-१ नाम है]॥

६ [उदलावणिकम् (त्रि), 'पानी और नमक में बनाये हुए पदार्थ' का १ नाम है]॥

७ प्रणीतम्, उपसंपन्नम् (२ त्रि), 'रस आदिमें बनाये हुए रसिआव आदि पदार्थ या तैयार भोजनमात्र' के २ नाम हैं॥

८ प्रयस्तम् सुसंस्कृतम् (२ त्रि) 'परिश्रमसे पकाये (बनाये) हुए उत्तमोत्तम भोज्य पदार्थ' के २ नाम हैं॥

९ पिच्छिलम् , विजिलम् (+ विज्जिलम् , विज्जलम् , विजिविलम् , विजिपिलम् , विज्जनम्, । २ त्रि), 'रसदार तरकारी, पतली दही आदि' के २ नाम हैं॥

१० संमृष्टम्, शोधितम् (२ त्रि), 'केश, कीड़ा आदि चुनकर साफ किये हुए अन्नादि' के २ नाम हैं॥

---

१. 'संस्कृतं......लवणाम्भसा' इत्ययमंशः क्षी० स्वा० व्याख्याने 'शूल्योख्य' शब्दयोर्मध्ये एव पठ्यते इत्यतोऽस्य प्रकृतोपयोगितयाऽयं मया मूले क्षेपकरूपेण स्थापितः॥

१ चिक्कणं मसृणं स्निग्धं २ तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥
३ आपक्वं पौलिरभ्यूषो ४ लाजाः पुंभूम्नि [1]चाक्षताः ।
५ पृथुकः स्याच्चिपिटको ६ धाना [2]भ्रष्टयवे स्त्रियः ॥ ४७ ॥
७ पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात् ८ करम्भो दधिसक्तवः ।
९ भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिविः ॥ ४८ ॥
१० भिस्सटा दग्धिका—

---

१ चिक्कणम्, मसृणम्, स्निग्धम् (३ त्रि), 'चिकने पदार्थ' के ३ नाम हैं।

२ भावितम्, वासितम् (२ त्रि), 'हींग आदिसे सुवासित व्यञ्जनादि' के २ नाम हैं ॥

३ आपक्वम् (न), पौलिः, अभ्यूषः (+अभ्योषः, अभ्युषः । ३ पु), 'होरहा, मुरमुरा, ऊमी, हावुस आदि अधपके (तपाये हुए) पदार्थ' के ३ नाम हैं ॥

४ लाजाः (+स्त्री), अक्षताः (२ पु नि० ब० व०), 'लावा, खील' अर्थात् 'भूंजे हुए धान आदि' के २ नाम हैं। ('किसी २ के मतसे 'लाजाः' यह १ नाम उक्तार्थक है और 'अक्षताः' यह १ नाम 'देवताओंको चढ़ानेके योग्य चावल' का है') ॥

५ पृथुकः, चिपिटकः (+चिपिटः । २ पु), 'चिउड़ा' के २ नाम हैं ॥

६ धानाः (स्त्री नि० ब० व०), 'भुने हुए जौ' अर्थात् 'फरही या बहुरी' का १ नाम है ॥

७ पूपः, अपूपः, पिष्टकः (३ पु), 'पूआ, मालपूआ आदि' के ३ नाम हैं ॥

८ करम्भः (+कारम्भः । पु), दधिसक्तवः (भा० दी०, नि० ब० व०), 'दहीसे युक्त सत्तू' के २ नाम हैं ॥

९ भिस्सा (स्त्री), भक्तम्, अन्धः (=अन्धस्), अन्नम् (३ न), ओदनः (पु न), दीदिविः (पु । +स्त्री), 'भात' के ६ नाम हैं ॥

१० भिस्सटा, दग्धिका (२ स्त्री), 'जले हुए भात आदि' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'चाक्षतम्' इति मुकुटः' इति भा० दी० ॥ २. 'भृष्टयवे' इति पाठान्तरम् ॥

—१ सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम्।
२ [1]मासराचामनिस्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥
३ यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा।
४ [2]'स्रक्षणाऽभ्यञ्जने तैलं ५ कृसरस्तु तिलौदनः' (३१)
६ गव्यं त्रिषु गवां सर्वं ७ गोविट् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥
८ तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री ९ दुग्धं क्षीरं पयः समम्।
१० पयस्यमाज्यदध्यादि ११ [3]द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥

---

१ सर्वरसाग्रम् (मा० दी०), मण्डम् (२ नपु), 'माड़' के २ नाम हैं ॥

२ मासरः, आचामः, निस्रावः (+ विस्रावः मुकु० । ३ पु), 'भातके मांड़' के ३ नाम हैं ॥

३ यवागूः, उष्णिका, श्राणा, विलेपी, तरला (५ स्त्री), 'लपसी, हलुआ' के ५ नाम हैं। (थोड़े गर्मपानी में पकाये गये चावल को 'अन्न', चौगुने पानी में 'विलेपी', चौदहगुने पानी में 'मण्ड', छगुने पानी मे 'यवागू', और अठारहगुने पानी मे 'यूष' संज्ञाएँ 'भैषज्यरत्नावली' में कही गयी है; तथापि उक्त भेद यहां विवक्षित नहीं हैं[4]) ॥

[स्रक्षणम्, अभ्यञ्जनम्, तैलम् (३ न), 'तेल' के ३ नाम हैं] ॥

५ [कृसरः (+ कृशरः, त्रिसरः २ पु । १ स्त्री), + तिलौदनः (२ पु), 'तिलयुक्त अन्न या खिचड़ी' के २ नाम हैं] ॥

६ गव्यम् (त्रि), 'गायके दूध, दही, घी, गोबर आदि' का १ नाम है ॥

७ गोविट (= गोविष् स्त्री), गोमयम् (न पु), 'गोबर' के २ नाम हैं ॥

८ करीषः (पु न), 'सूखे गोबर' अर्थात् 'गोहरी, गोइंठा, गोंइठा, उपला, कँड़ा आदि' का १ नाम है ॥

९ दुग्धम्, क्षीरम् पयः (= पयस् । + गोरसः, ऊधस्यम्, सोमजम्, स्तन्यम् । ३ न), 'दूध' के ३ नाम हैं ॥

१० पयस्यम् (त्रि) 'दूधसे बने हुए दही, खोवा, मक्खन, घी आदि पदार्थ' का १ नाम है ॥

११ द्रप्सम् (+ द्रप्स्यम्, द्रप्सम्, पतलम् न), 'पतले दही' का १ नाम है ॥

---

१. मासराचामविस्रावा' इति मुकुटः' इति मा० दी० ॥

२. अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने मूलरूपेणोपलभ्यते ॥

३. 'द्रप्स्यम्' इति मुकुटः' इति मा० दी० ॥

४. तदुक्तं भैषज्यरत्नावल्यां सप्तचत्वारिंशत्पृष्ठे चौ० सं० पुस्तकालयमुद्रिते 'अन्नं पञ्चगुणे साध्यं विलेपी च चतुर्गुणे। मण्डश्चतुर्दशगुणे यवागूः षड्गुणेऽम्भसि ॥ अष्टादशगुणे तोये यूषः शार्ङ्गधरेरितः ॥' इति ॥

१ घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्धृतम् ।
३ तत्तु हैयङ्गवीनं यद्ध्योगोदोहोद्भवं घृतम् ॥ ५२ ॥
४ दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ।
५ तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥
६ मण्डं दधिभवं मस्तु ७ पीयूषोऽभिनवं पयः ।

---

१ घृतम् , आज्यम् , हविः (=हविस् । + हविष्यम्), सर्पिः (= सर्पिस् । ४ न), 'घी' के ४ नाम हैं ॥

२ नवनीतम् , नवोद्धृतम् (२ न), 'मक्खन' के २ नाम हैं ॥

३ हैयङ्गवीनम् (न), 'नैनू' अर्थात् 'एक दिनके बासी दूधसे निकाले हुए मक्खन' का १ नाम है ॥

४ दण्डाहतम् , कालशेयम् , अरिष्टम् (३ न), गोरसः (पु), 'मथनीसे महे (मथन किये) हुए गोरस' के ४ नाम हैं ॥

५ तक्रम् , उदश्वित् (+उदश्वितम्), मथितम् (३ न), 'चौथाई पानी, आधा पानी और बिना पानीवाले दही' के क्रमशः १—१ नाम हैं। ('धन्वन्तरिने 'दुगुने पानीवाले दहीका 'श्वेतरसम्', आधे पानीवाले दहीका 'उदश्वितम्', तिहाई पानीवाले दहीका 'तक्रम्' और बिना पानीवाले दहीका 'मथितम्' नाम है' ऐसा कहा है[1]") ॥

६ मस्तु (न), भा० दी० के मतसे 'कपड़ेमें बांधकर निकाले हुए दहीके पानी' का और महे० के मतसे 'दहीकी छाल्ही' (जमे हुए दहीकी, मलाई, ऊपरी भाग)' का १ नाम है ॥

७ पीयूषः (+पेयूषम् । पु । +न), 'थोड़े दिनकी या [2]सात दिन तककी ब्याई हुई गायके दूध' अर्थात् 'फेनुस' का १ नाम है ॥

---

१. तदुक्तं धन्वन्तरिणा—'द्विगुणाम्बु श्वेतरसमर्द्धोदकमुदश्वितम् ।
तक्रं त्रिभागमिश्राम्बु केवलं मथितं स्मृतम्' ॥ १ ॥ इति ॥

२. 'पीयूषं सप्तदिवसावधिक्षीरे तथाऽमृते' (मेदि०पृ० १८३ श्लो० ४१) इति मेदिन्युक्तेः तथैव विश्वकोषोक्तेश्च 'सप्त दिवसावधिप्रसूताया गोः पयसः 'पीयूष' संज्ञा; अतः परन्तु क्षीरादिसंज्ञैव । हलायुधस्तु 'ऊधस्यं क्षीरं स्याद् दुग्धं स्तन्यं पयश्च पीयूषम्' (अभि० रत्न० २।११९) इति 'पीयूष' शब्दस्य सामान्यतः क्षीरपर्यायतामेवाहेत्यवधेयम् ॥

१ अशनाया बुभुक्षा क्षुद् २ ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥
३ सपीतिः स्त्री तुल्यपानं ४ सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
५ उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो ६ जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥
जेमनं *लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ।
७ सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः ८ फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥
९ कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।
१० गोपे गोपालगोसङ्ख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥

---

१ अशनाया, बुभुक्षा, क्षुत् (= क्षुध् । + क्षुधा, प्सा । ३ स्त्री), 'भूख' के ३ नाम हैं ॥

२ ग्रासः, कवलः (२ पु), 'ग्रास, कौर' के २ नाम हैं ॥

३ सपीतिः (स्त्री), तुल्यपानम् (न), 'साथ में पान करने' के २ नाम हैं ॥

४ सग्धिः (स्त्री), सहभोजनम् (न), 'साथमें भोजन करने' के २ नाम हैं ॥

५ उदन्या, पिपासा, तृट् (= तृष् । + तृषा, तृष्णा । ३ स्त्री), तर्षः (पु) 'प्यास' के ४ नाम हैं ॥

६ जग्धिः (स्त्री), भोजनम्, जेमनम् (+ जमनम्, जवनम् । २ न), लेहः (+ लेपः), आहारः, निघासः (+ निघसः), न्यादः (+ अभ्यवहारः पु, प्रत्यवसानम्, खादनम्, अशनम्, भक्षणम् । ४ पु), 'भोजन' के ७ नाम हैं ॥

७ सौहित्यम्, तर्पणम् (२ न), तृप्तिः (स्त्री,) 'तृप्ति, अघाने' के ३ नाम हैं ॥

८ फेला (+ फेली, पिण्डोलिः । स्त्री), भुक्तसमुज्झितम् (न), 'खाकर छोड़े हुए जूठे' के २ नाम हैं ॥

९ कामम्, प्रकामम्, पर्याप्तम्, निकामम्, इष्टम्, यथेप्सितम् (६ क्रियाविशेषण), 'इच्छानुसार, काफी, मतलबभर' के ६ नाम हैं ॥

१० गोपः, गोपालः, गोसंख्यः, गोधुक् (= गोदुह् । + गोदुहः), आभीरः (+ अभीरः), वल्लवः (६ पु), 'अहीर, गोप, ग्वाला' के ६ नाम हैं ॥

---

* 'लेह आहारो निघसो' इति पाठान्तरम् ॥

१ गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं २ द्वौ गवीश्वरे ।
गोमान्गोमी ३ गोकुलं तु गोधनं स्याद् गवां व्रजे ॥ ५८ ॥
४ त्रिष्वाशितङ्गवीनं तद् गावो यत्राशिताः पुरा ।
५ उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥
अनड्वान्सौरभेयो गौ६रुक्ष्णां संहतिरौक्षकम् ।
७ गव्या गोत्रा गवां ८ वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥ ६० ॥
९ [1]वृषो महान्महोक्षः स्याद् १० वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ।
११ उत्पन्न उक्षा जातोक्षः १२ सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥

१ पादबन्धनम् (न), 'गाय, बैल, घोड़े, गदहे, आदि बांधे जाने वाले पशुओं' का १ नाम है ॥

२ गवीश्वरः, गोमान् (= गोमत्), गोमी (= गोमिन् । ३ पु), 'साँड़' के ३ नाम हैं ॥

३ गोकुलम्, गोधनम् (२ न), 'गौओंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

४ आशितङ्गवीनम् (त्रि), 'गौओंके चराने या खिलानेके पुराने स्थान' का १ नाम है ॥

५ उक्षा (= उक्षन्) भद्रः, बलीवर्दः (+ बलिवर्दः, वलीवर्दः), ऋषभः, वृषभः, वृषः, अनड्वान् (= अनडुह्), सौरभेयः, गौः (= गो । + शक्करः, शाक्करः, शाक्वरः, ककुद्मान् = ककुद्मत् । ९ पु), 'बैल' के ९ नाम हैं ॥

६ औक्षकम् (न), 'बैलोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

७ गव्या, गोत्रा (२ स्त्री), 'गायोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

८ वात्सकम् , धैनुकम् (२ न), 'बछवों तथा धेनुओं (नई व्याई हुई गायों) के झुण्ड' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

९ महोक्षः (पु), 'बड़े डीलवाले बैल' का १ नाम है ॥

१० वृद्धोक्षः, जरद्गवः, (२ पु), 'बूढ़े बैल' के २ नाम हैं ॥

११ जातोक्षः (पु), 'बछवेकी अवस्थाको छोड़कर जवान हुए बैल' का १ नाम है ॥

१२ तर्णकः (पु), 'शीघ्र पैदा हुए बछवे' का १ नाम है ॥

१. 'उक्षा महान्' इति पाठान्तरम् ॥

१ शकृत्करिस्तु वत्सः स्याद्दम्यवत्सतरौ समौ ।
३ आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः ४ षण्डो[1] गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥
५ [2]स्कन्धदेशे स्वस्य वहः ६ सास्ना तु गलकम्बलः ।
७ स्यान्नस्तितस्तु[3] नस्योतः ८ प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥
९ युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।
१० खनति तेन तद्वोढास्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

---

१ शकृत्करिः, वत्सः (२ पु), 'छोटे बछवे' के २ नाम हैं ॥

२ दम्यः, वत्सतरः (२ पु), 'जोतने के योग्य तैयार हुए बछवे के २ नाम हैं ॥

३ आर्षभ्यः (पु) 'साँड़ बनाने योग्य बछवे' का १ नाम है ॥

४ षण्डः (+ शण्डः), गोपतिः, इट्चरः (+ इत्वरः । ३ पु), 'स्वच्छन्द घूमनेवाले साँड़' के ३ नाम हैं ॥

५ वहः (पु), 'बैलके कन्धे' का १ नाम है ॥

६ सास्ना (स्त्री), गलकम्बलः (पु), 'लार' अर्थात् गाय-बैलों के गलेमें लटकनेवाले चमड़े' के २ नाम हैं ॥

७ नस्तितः, नस्योतः (+ नस्तोतः । २ पु), 'नाथे हुए गौ आदि' के २ नाम हैं ॥

८ प्रष्ठवाट् (= प्रष्ठवाह् । + पष्ठवाड् = पष्ठवाह्), युगपार्श्वगः (२ पु), 'पहले पहल बछवेको हलमें चलना सिखलानेके लिये जुआठमें बाँधे हुए काठ' के २ नाम हैं ॥

९ युग्यः, प्रासङ्ग्यः, शाकटः (३ पु), 'जुआठको ढोनेवाले बैल, दमन करने (हलमें चलना सिखलाने) के लिये पहले पहल कन्धे पर रक्खे हुये काठको ढोनेवाले बैल और गाड़ीको खींचनेवाले बैल' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

१० हालिकः, सैरिकः (२ पु), 'हलसे खोदे जानेवाले, हलको ढोनेवाले, हलवाहा (हलको चलानेवाला) हलमें चलनेवाले बैल' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'गोपतिरित्वरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'स्कन्धप्रदेशस्तु' इति 'स्कन्धदेशस्त्वस्य' इति च पाठान्तरम् ॥

३. 'नस्तोतः पष्ठवाड्' इति पाठान्तरम् ॥

१ धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरन्धराः ।
२ उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥
३ स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ।
४ माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥
अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्या५दुत्तमा गोषु*नैचिकी ।
६ वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥
७ द्विहायनी द्विवर्षा गौरेकाब्दा त्वेकहायनी ।

---

१ धूर्वहः धुर्यः, धौरेयः, धुरीणः, धुरन्धरः (५ पु), 'धुरा (भार) को ढोनेवाले बैल' के ५ नाम हैं ॥

२ एकधुरीणः, एकधुरः, एकधुरावहः (३ पु), 'सिर्फ एक तरफ (दहने या बायें) चलनेवाले बैल' के ३ नाम हैं ॥

३ सर्वधुरीणः, सर्वधुरावहः (भा० दी० । २ पु), 'दहने और बायें दोनों तरफ चलनेवाले बैल' के २ नाम हैं ॥

४ माहेयी (+ मही), सौरभेयी (+ सुरभिः), गौः (+ गो), उस्रा, माता (= मातृ), शृङ्गिणी, अर्जुनी, अघ्न्या, रोहिणी (९ स्त्री), 'गाय' के ९ नाम हैं ॥

५ नैचिकी (+ नौचिकी । स्त्री), 'उत्तम गाय' का १ नाम है ॥

६ शबली, धवला (२ स्त्री), आदि ('कृष्णा, कपिला, पाटला; ३ स्त्री, ………) 'वर्ण' (रंग) आदि (प्रमाण और शरीर आदि) के भेदसे 'चितकबरी, धावर, आदि (काली, कपिल या कइल और पाटल या लाल, ………) 'गायों' का क्रमशः १—१ नाम है । ('प्रमाण भेदसे जैसे—' 'दीर्घा, ह्रस्वा, खर्वा (३ स्त्री), …… । शरीर-भेदसे जैसे—पिङ्गाक्षी, लम्बकर्णी, तीक्ष्णशृङ्गी, (३ स्त्री), ……') ।

७ द्विहायनी, द्विवर्षा (भा० दी०), एकाब्दा (भा० दी०), एकहायनी, चतुरब्दा (भा० दी०), चतुर्हायणी, त्र्यब्दा (भा० दी०), त्रिहायणी (८ स्त्री),

---

* 'नौचिकी' इति पाठान्तरम् ॥

चतुरब्दा चतुर्हायण्येवं त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥

१ वशा वन्ध्या२ऽवतोका तु स्रवद्गर्भा३ऽथ सन्धिनी ।
आक्रान्ता वृषभेणा४ऽथ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥

५ काल्योपसर्या प्रजने ६ * प्रष्ठौही बालगर्भिणी ।

७ स्यादचण्डी तु सुकरा ८ बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥

९ चिरप्रसूता बष्कयिणी—

'दो वर्ष, एक वर्ष, चार वर्ष और तीन वर्षकी उम्रवाली गौ' के क्रमशः २—२ नाम हैं ॥ (उपलक्षणसे मानवादि के लिए भी इन शब्दोंका प्रयोग होता है) ॥

१ वशा, बन्ध्या (+ वन्ध्या । २ स्त्री), 'बाँझ (बच्चा नहीं पैदा करनेवाली) गौ आदि' के २ नाम हैं ॥

२ अवतोका (+ वतोका), स्रवद्गर्भा (२ स्त्री), 'अकस्मात् जिसका गर्भ गिर गया हो उस गौ आदि' के २ नाम हैं ॥

३ सन्धिनी (स्त्री), वाही (साँड़के साथ संगम की) हुई गाय' का १ नाम है ॥

४ वेहद् (= वेहत्), गर्भोपघातिनी (आ० दी० । + वृषोपगा । २ स्त्री), 'साँड़के साथ संयोगकर गर्भको नष्ट की हुई गाय' के २ नाम हैं ॥

५ काल्या (अन्य मतसे), उपसर्या (२ स्त्री), 'उठी हुई (साँड़के साथ मैथुन करनेकी इच्छा करनेवाली) 'गाय' के २ नाम हैं ॥

६ प्रष्ठौही (+ पष्ठौही), बालगर्भिणी (भा० दी० । २ स्त्री), 'आँकर (पहले पहल गर्भ धारण की हुई), 'गाय' के २ नाम हैं ॥

७ अचण्डी, सुकरा (+ सुशकरी । २ स्त्री), सूधी गाय' के २ नाम हैं ॥

८ बहुसूतिः, परेष्टुका (२ स्त्री), 'बहुत बच्चा पैदा की हुई गाय' के २ नाम हैं ॥

९ चिरप्रसूता, बष्कयिणी (+ बष्कयणी, बष्कयणी । २ स्त्री) 'बकेना (बहुत दिनों की ब्याई हुई) गाय' के २ नाम हैं ॥

---

* 'पष्ठौही' इति पाठान्तरम् ॥

—१ धेनुः स्यान्नवसूतिका ।
२ सुव्रता सुखसंदोह्या ३ पीनोघ्नी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥
४ द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा ५ धेनुष्या बन्धके स्थिता ।
६ समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥
७ ऊधस्तु क्लीबमापीनं ८ समौ शिवककीलकौ ।
९ न पुंसि दाम संदानं १० पशुरज्जुस्तु[1] दामनी ॥ ७३ ॥

---

१ धेनुः, नवसूतिका (+ नवसूतिः । २ स्त्री), 'थोड़े दिनोंकी ब्याई हुई गाय' के २ नाम हैं ॥

२ सुव्रता, सुखसंदोह्या (+ सुखसंदुह्या । २ स्त्री), 'बिना झंझट किये दुही जानेवाली गाय' के २ नाम हैं। ('इसी तरह 'दुःखदोह्या, करटा (२ स्त्री), 'दुःख (मुश्किल) से दुही जानेवाली गाय' के २ नाम हैं') ॥

३ पीनोघ्नी, पीवरस्तनी (२ स्त्री), 'मोटे २ स्तनवाली गाय' के २ नाम हैं ॥

४ द्रोणक्षीरा, द्रोणदुग्धा (२ स्त्री), 'एक द्रोण (२५६ पल = १०२४ भर करीब १३ सेर तथा आयुर्वेदिक तौलसे १६ सेर) दूध देनेवाली गाय' के २ नाम हैं ॥

५ धेनुष्या (+ पीतदुग्धा । स्त्री), 'बंधक रक्खी हुई गाय' का १ नाम है ॥

६ समांसमीना (स्त्री), 'बनपुरही' (प्रतिवर्ष बच्चा देनेवाली) गाय' का १ नाम है ॥

७ ऊधः (= ऊधस्), आपीनम् (२ न), 'गायके थन' के २ नाम हैं ॥

८ शिवकः, कीलकः (२ पु), गौओंको बांधनेके खूँटे' के २ नाम हैं ॥

९ दाम (= दामन् न स्त्री), संदानम् (न), भा० दी० के मतसे 'नोय' अर्थात् 'दूहनेके समय गायोंके पैरको बांधनेवाली रस्सी' के और महे० के मतसे 'पगहा' के २ नाम हैं ॥

१० पशुरज्जुः, दामनी (+ बन्धनी । २ स्त्री), भा० दी० के मतसे 'पगहा' अर्थात् 'पशुको बांधनेकी रस्सी के और महे० के मतसे 'दँवरी' अर्थात् 'धान आदिकी दँवनीके समय अनेक पशुओंको बांधनेवाली रस्सी—जिसका एक छोर मेंढ़ में लगे रहनेसे चारो ओर घूमा करता है'—के और अन्य आचार्योंके मतसे 'पशुओंके छान' अर्थात् 'पैर बांधनेकी रस्सी' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'बन्धनी' इति पाठान्तरम् ॥

१ वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके।
२ [1]कुठरो दण्डविष्कम्भो ३ मन्थनी गर्गरी समे॥ ७४॥
४ उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः ५ करभः शिशुः।
६ करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः॥ ७५॥
७ अजा छागी ८ [2]शुभच्छागबस्तच्छगलका अजे।
९ मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके॥ ७६॥
१० उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम्।

१ वैशाखः, मन्थः, मन्थानः, मन्थाः (= मथिन्), मन्थनदण्डकः (+ खजकः, क्षुब्धः। ५ पु), 'मथनीके डण्डे' के ५ नाम हैं॥

२ कुठरः (+ कुटरः), दण्डविष्कम्भः (२ पु), 'जिसमें मथनीके डण्डेको बांधकर दही महा जाता है उस खम्भे आदि' के २ नाम हैं॥

३ मन्थनी, गर्गरी (+ कलशी। २ स्त्री), 'कहतरी' अर्थात् 'जिसमें दहीको महा जाता है उस पात्र' के २ नाम हैं॥

४ उष्ट्रः, क्रमेलकः, मयः, महाङ्गः (+ दासेरकः, दाशेरः, दीर्घजङ्घः, दीर्घग्रीवः, रवणः, धूम्रकः, कण्टकाशनः। ४ पु), 'ऊँट' के ४ नाम हैं॥

५ करभः (पु), 'ऊँटके तीन वर्षतकके उम्रवाले बच्चे' का १ नाम है॥

६ शृङ्खलकः (पु), लकड़ीकी बनी हुई सिकड़ीसे बांधे हुए ऊँटके बच्चे' का १ नाम है॥

७ अजा, छागी (२ स्त्री) 'बकरी, छेर' के २ नाम हैं॥

८ शुभः (+ स्तभः, तुभः), छागः (छगः), बस्तः (+ वस्तः), छगलकः (+ छगलः), अजः (५ पु), 'बकरा, खस्सी' के ५ नाम हैं॥

९ मेढ्रः (+ मेण्ढकः), उरभ्र, उरणः, ऊर्णायुः, मेषः, वृष्णिः, एडकः, (+ हुडुः, हुडः। ७ पु) 'भेंड़े' के ७ नाम हैं॥

१० औष्ट्रकम्, औरभ्रकम्, आजकम् (३ न), 'ऊँटों, भेंड़ों और बकरों-के झुण्ड' का क्रमशः १-१ नाम है॥

---

१. 'कुटरः' इति पाठान्तरम्॥

२. 'शुभच्छागबस्तच्छगलकाः' इति 'स्तभच्छागबस्तच्छगलकाः' इति पाठान्तरे॥

१ चक्रीवन्तस्तु वालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥
२ वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥
३ विक्रेता स्याद्विक्रयिकः ४ क्रायकक्रयिकौ समौ ।
५ वाणिज्यं तु वणिज्या स्याद् ६ मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥
७ नीवी परिपणो मूलधनं ८ लाभोऽधिकं फलम् ।
९ [1]परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥

---

१ चक्रीवान् (= चक्रीवत्), वालेयः (+ बालेयः), रासभः, गर्दभः, खरः (+ क्रूरः, शङ्कुकर्णः, वैशाखनन्दनः । ५ पु), 'गदहे' के ५ नाम हैं ॥

२ वैदेहकः, सार्थवाहः, नैगमः (+ निगमः), वाणिजः, वणिक् (= वणिज्), पण्याजीवः, आपणिकः, क्रयविक्रयिकः (८ पु), 'बनियाँ, व्यापारी' के ८ नाम हैं ॥

३ विक्रेता (= विक्रेतृ), विक्रयिकः (२ पु), 'बेचनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ क्रायकः, क्रयिकः (+ क्रेता = क्रेतृ । २ पु), 'खरीददार' के २ नाम हैं ॥

५ वाणिज्यम् (न), वणिज्या (स्त्री), 'व्यापार' के २ नाम हैं ॥

६ मूल्यम् (न), वस्नः, अवक्रयः (२ पु), 'कीमत, दाम' के ३ नाम हैं ॥

७ नीवी (+ नीविः । स्त्री), परिपणः, मूलधनम् (न) 'व्यापार-में लगाये हुए मूलधन' के ३ नाम हैं ॥

८ लाभः (पु), अधिकम् , फलम् (१ भा० दी० । २ न), 'मुनाफा, फायदा, लाभ' के ३ नाम हैं ॥

९ परिदानम् (+ प्रतिदानम् । न), परीवर्तः (+ परिवर्तः) नैमेयः (+ वैमेयः), निमयः (+ विमयः । ३ पु), 'किसी पदार्थादिको अदल-बदल करने' के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'प्रतिदानम्' इति पाठान्तरम् ॥

१ पुमानुपनिधिर्न्यासः २ प्रतिदानं तदर्पणम्।
३ क्रये प्रसारितं क्रय्यं ४ क्रेयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥
५ विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं ६ क्रय्यादयस्त्रिषु।
७ क्लीबे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥
८ विपणो विक्रयः ९ संख्याः सङ्ख्येये ह्यादश त्रिषु।

---

१ उपनिधिः, न्यासः (+ निक्षेपः । २ पु), 'थाती, धरोहर रखने' के २ नाम हैं ॥

२ प्रतिदानम् (न), 'धरोहर (थाती), को वापस करने' का १ नाम है ॥

३ क्रय्यम् (त्रि), 'सौदा' अर्थात् 'ग्राहकोंको खरीदने के लिये दूकानपर फैलाई हुई वस्तु' का १ नाम है ॥

४ क्रेयम् (त्रि), 'खरीदने योग्य वस्तु' का १ नाम है ॥

५ विक्रेयम् , पणितव्यम् , पण्यम् (३ त्रि), 'बेचने योग्य वस्तु' के ३ नाम हैं ॥

६ 'क्रय्य आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

७ सत्यापनम् (+ सत्यापना स्त्री । न), सत्यङ्कारः (पु), सत्याकृतिः (स्त्री), 'साई, बयाना, एडवान्स, पेशगी' के ३ नाम हैं ॥

८ विपणः, विक्रयः (२ पु), 'बेचने' के २ नाम हैं ॥

९ 'एकः, द्वौ, त्रयः,···नवदश' भा० दी० के मतसे 'एक, दो, तीन,··· नवदश (उन्नीस) संख्या' का, और 'एकः, द्वौ, त्रयः,······अष्टादश' महे०, मुकु०, सी० स्वा० आदिके मतसे 'एक दो, तीन,······अट्ठारहतक संख्या' का वाचक क्रमशः १-१ शब्द है। ये (एक, द्वि,······) शब्द गिने जानेवाले वस्तुके वाचक रहने-पर त्रिलिङ्ग होते हैं। ('जैसे—'एको ब्राह्मणः, एका ब्राह्मणी, एकं वस्त्रम् ; द्वौ ब्राह्मण्यौ, द्वे ब्राह्मण्यौ, द्वे वस्त्रे;······', इन वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्द क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' हैं। अत एव 'एक और द्वि' शब्दका भी क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग' में प्रयोग हुआ है। मूलमें 'हि' शब्द के अवधारणार्थक होनेसे सामानाधिकरण्य (एको ब्राह्मणः, द्वौ ब्राह्मणौ, त्रयो ब्राह्मणाः; एका ब्राह्मणी, द्वे ब्राह्मण्यौ, तिस्रो ब्राह्मण्यः;

१ विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः सङ्ख्येयसङ्ख्ययोः ॥ ८३ ॥

एकं वस्त्रम्, द्वे वस्त्रे, त्रीणि वस्त्राणि;······') से ही व्यवहार होता है; वैय-धिकरण्य ('एको ब्राह्मणस्य, द्वौ ब्राह्मणयोः, त्रयो ब्राह्मणानाम्; एका ब्राह्म-ण्याः, द्वे ब्राह्मण्योः, तिस्रो ब्राह्मणीनाम्; एकं वस्त्रस्य, द्वे वस्त्रयोः; त्रीणि वस्त्रा-णाम्,······') से व्यवहार नहीं होता है[१] । इसमें भी 'एकः' द्वौ, त्रयः, चत्वारः' अर्थात् 'एक, द्वि, त्रि और चतुर्' (एक, दो, तीन और चार संख्याके वाचक) शब्दोंके तीनों लिङ्गोंमें भिन्न २ रूप होते हैं और 'पञ्च, षट्,···अष्टादश' अर्थात् 'पञ्चन्' षष्,······अष्टादशन्' (पांच, छः······अठारह संख्याके वाचक) शब्दके रूप तीनों लिङ्गोंमें एक समान होते हैं। ('क्रमशः उदाहरण । पहला (तीनों लिङ्गोंमें भिन्न रूपवाले शब्द) जैसे—'एको ब्राह्मणः, एका ब्राह्मणी, एकं वस्त्रम्, द्वौ ब्राह्मणौ, द्वे ब्राह्मण्यौ, द्वे वस्त्रे; त्रयो ब्राह्मणाः; तिस्रो ब्राह्मण्यः, त्रीणि वस्त्राणि;चत्वारो ब्राह्मणाः, चतस्रो ब्राह्मण्यः, चत्वारि वस्त्राणि' इन वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्दके क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' होनेसे 'एक, द्वि, त्रि और चतुर्' शब्दोंका क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग' में प्रयोग हुआ है' । दूसरा (तीनों लिङ्गोंमें समान लिङ्गवाले शब्द) जैसे—'पञ्च ब्राह्मणाः, पञ्च ब्राह्मण्यः, पञ्च वस्त्राणि,·········;' इन वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्दके क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग' होनेपर भी 'पञ्चन्' शब्दका प्रयोग तीनों लिङ्गोंमें समान ही हुआ है, भिन्न २ नहीं; इसी तरह 'षट्, सप्तन्,···अष्टादश' (छ, सात,······ अट्ठारह' संख्याके वाचक) शब्दोंके भी तीनों लिङ्गोंमें समान ही रूप होते हैं। विशेषः—ये सब लिङ्ग भेद केवल संस्कृतमें ही होते हैं, हिन्दी आदिमें नहीं')॥

१ 'एकोनविंशतिः, विंशतिः,······परार्द्धम्' ('उन्नीस, बीस;······परार्द्ध'

१. 'दश (अष्टादश) न्तसंख्यावाचिनः शब्दाः प्रायः संख्येयवचना एव, क्वचित्तेषां संख्यावाचकत्वमपि । यथा—'द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने' (पा० सू० १ । ४ । २२) इति 'बहुषु बहुवचनम्' (पा० सू० १ । ४ । २१) इति च । 'कयोर्द्वयोः, केषां बहूनाम्' (पात० भाष्य १ । ४ । २१) इति पातञ्जलभाष्याक्कचिदवृत्तावपि; किन्तु सत्यपि प्रयोगे तत्रापि (अवृत्तावपि) संख्येयगतद्वित्वादि संख्यायामारोप्य संख्यावाचकेभ्योऽपि द्विवचनाद्येव, उक्तभाष्यानुरोधादिति सर्वतन्त्रस्वतन्त्राः काशीनाथशास्त्रिचरणाः ॥

१ सङ्ख्यार्थे द्विबहुत्वे स्तस्तासु चानवतेः स्त्रियः ।
२ पङ्क्तेः शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

संख्याके वाचक) शब्द संख्या (गिनती) और संख्येय (गिनी जानेवाली वस्तु) के अर्थमें प्रयुक्त होनेपर एकवचन ही होते हैं । ('क्रमशः उदाहरण । पहला (संख्या अर्थमें) जैसे—'ब्राह्मणानां विंशतिः, शतम्, सहस्रं······वा' इस वाक्यमें 'ब्राह्मण' शब्दके बहुवचन रहनेपर भी 'विंशति, शत, सहस्र, ······' शब्दका एकवचनमें ही प्रयोग हुआ है । दूसरा (संख्येय अर्थात् गिनने योग्य वस्तुके अर्थमें) जैसे—'एकोनविंशतिः, शतं, सहस्रं, लक्षं वा ब्राह्मणाः, ······' इस वाक्यमें 'ब्राह्मण' शब्द के बहुवचन होनेपर भी 'एकोनविंशति, शत, सहस्र, लक्ष,······' शब्दों का 'एकवचन' में ही प्रयोग हुआ है; बहुवचनमें नहीं') ॥

१ 'एकोनविंशतिः,······परार्द्धम्' ('उन्नीस'······परार्द्ध'—तक संख्याके वाचक) शब्द संख्याके अर्थमें 'द्विवचन और बहुवचन' भी होते हैं । ('जैसे—'द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः; एकं शतम्, द्वे शते, त्रीणि शतानि;······' इन वाक्योंमें 'विंशति और शत' शब्दका तीनों वचन (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन) में प्रयोग हुआ है । इसी तरह अन्यान्य (एकविंशति, द्वाविंशति, ···शत, सहस्र,···परार्द्ध) शब्दोंके विषयमें भी जानना चाहिये') ॥

२ 'विंशतिः,······नवनवतिः' (बीस,···निन्नानवे' तक संख्या-वाचक) शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग हैं । (जैसे—विंशत्या पुरुषैः कृतम्, सप्ततिर्वस्त्राणि, नवत्या नदीनां जलम्,······' इन वाक्योंमें 'पुरुष, वस्त्र और नदी' शब्दके क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग' होनेपर भी विंशति (बीस), सप्तति (सत्तर), नवति, (नब्बे)' शब्दोंका प्रयोग केवल 'स्त्रीलिङ्ग' में ही हुआ है, अन्य लिङ्गों (नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग) में नहीं' ॥

३ पङ्क्तिः (स्त्री), शतम्, सहस्रम् (२ न), आदि ('आदि पदसे 'अयुतम् (न पु), लक्षम् (न स्त्री), प्रयुतम् (न पु), कोटिः (स्त्री), अर्बुदम् (न पु), अब्जम् (+ वृन्दम्), खर्वम्, निखर्वम्, महापद्मम् (+ महाम्बुजम्), शङ्कुः (पु स्त्री), जलधिः (+ वार्द्धिः, वारिधिः,········। पु),

१ यौतवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् ।

अन्त्यम् , मध्यम् , परार्द्धम् (शेष न), का संग्रह है'), 'दहाई (दश), सैकड़ा और हजार आदि (आदिसे 'दश हजार' लाख, दश लाख, करोड़, दश करोड़, अरब, दश अरब, खर्व, दश खर्व, नील, दश नील, पद्म, दश पद्म, शङ्ख, दश शङ्ख') संख्या (गिनती)' का क्रमशः १-१ नाम है । ये क्रमशः उत्तरोत्तर (पहलेकी अपेक्षा दूसरे) दशगुने[1] होते हैं । (जैसे—दश पङ्क्ति = शतम् (सौ), दश शत = सहस्रम् (हजार), इत्यादि समझना चाहिये') ॥

१ [2]यौतवम् (+ पौतवम्), द्रुवयम्, पाय्यम्, मानम् (भा० दी० । ४ न), 'नापना, तौलना, प्रमाण' के ४ नाम हैं । ('यह 'तुला (तराजू), अङ्गुलि (हाथ, फूट, गज, बाँस आदि), प्रस्थ (पौवा, सेर, पसेरी आदि) के भेदसे तीन प्रकार' का होता है; उनमेंसे १-१ का क्रमशः 'उन्मानम्, परिमाणम्, प्रमाणम्, (३ न)' यह १-१ नाम है । 'हेमचन्द्राचार्यने तो

---

१. तदुक्तं भास्करीयलीलावत्याम्—

'एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः ।
अर्बुदमब्जं खर्वनिखर्वमहापद्मशङ्कवस्तस्मात् ॥ १ ॥
जलधिश्चान्त्यं मध्यं परार्द्धमिति दशगुणोत्तरं संज्ञाः ।
संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैः' ॥ २ ॥

क्षी० स्वा० तु स्वव्याख्यायां 'प्रयुत-लक्ष'शब्दयोः, 'अर्बुद-कोटि'शब्दयोश्च परस्पर पर्यायतां 'अन्त्यं मध्यं परार्द्धम्' इत्यत्र 'मध्यम् अन्त्यं परार्द्धम्, इति व्यत्यासं चाहुस्तथा—

'एकदशशतसहस्राण्ययुतं प्रयुताख्यलक्षमथ नियुतम् ।
अर्बुदकोटिन्यर्बुदपद्मं खर्वं निखर्वमिति दशभिः ॥ १ ॥
गुणनान्महाब्जशङ्कू समुद्रमध्यान्तमथ परार्द्धं च ।
स्वहतं परार्द्धममितं तत्स्वहतं पूर्यते संख्या' ॥ २ ॥ इति ॥

एतद्विषये मतान्तरदिदृक्षुभिः चतुर्वर्गचिन्तामणेर्दानखण्डस्य १२८ पृष्ठे हेमचन्द्राचार्यविरचितेऽभिधानचिन्तामणौ (३ । ५३७—५३८) च द्रष्टव्यम् ॥

२. तदुक्तम्—

ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं परिमाणं तु सर्वतः ।
आयामस्तु प्रमाणं स्यात्संख्या भिन्ना तु सर्वतः' ॥ १ ॥ इति ॥

मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थै१र्गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥
२ ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री ३ पलं कर्षचतुष्टयम् ।
४ सुवर्णबिस्तौ हेम्नोऽक्षे ५ कुरुबिस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥
६ तुला स्त्रियां पलशतं ७ भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।
८ आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

पौतवम्, द्रुवयम्, पाय्यम्, (३ न)' 'तराजूसे तौलने' का, 'सेर–पौवा, छटाक आदिसे तौलने' का, और 'हाथ, अङ्गुल, गज, फूट आदिसे नापने' का क्रमशः १–१ नाम है' ऐसा कहा है'') ॥

१ आद्यमाषकः (पु), पांच गुञ्जा (रत्ती)' अर्थात् 'एक आना भर' का १ नाम है ॥

२ अक्षः (पु), कर्षः (पु न), 'सोलह आद्यमाषक (आनाभर)' अर्थात् 'एक रुपया भर' के २ नाम हैं ॥

३ पलम् (न), 'चार कर्ष (रुपया) भर' का १ नाम है ॥

४ सुवर्णः (+ न) बिस्तः (२ पु), 'एक मोहर' अर्थात् 'अस्सी रत्ती भर या १६ आने भर सुवर्ण' के २ नाम हैं ॥

५ कुरुबिस्तः (पु), 'एक पल (चार मोहर भर या तीन सौ बीस रत्ती भर) सुवर्ण' का १ नाम है । (उपचारसे सुवर्णसे भिन्न अर्थमें भी 'पल,······'शब्दोंका प्रयोग होता है) ॥

६ तुला (स्त्री), 'सौ पल' अर्थात् '४०० रुपया भर या नम्बरी एक पसेरी भर' का १ नाम है ॥

७ भारः (पु), 'बीस तुला' अर्थात् '२० पसेरी या ढाई मन' का १ नाम है । ('यही एक आदमीका बोझ होता है') ॥

८ आचितः (पु । + न) 'दश भार अर्थात् '२५ मन' का १ नाम है । यह एक गाड़ीका बोझ होता है ॥

---

१. तदुक्तमभिधानचिन्तामणौ हेमचन्द्राचार्यपादैः—
'तुलाद्यैः पौतवं मानं द्रुवयं कुडवादिभिः । पाय्यं हस्तादिभि—' इति ३।५४७ ॥

१ कार्षापणः कार्षिकः स्यात् २ कार्षिके ताम्रिके पणः ।
३ अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥
[1]कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।

---

१ कार्षापणः, कार्षिकः (२ पु), 'रुपये' के २ नाम हैं ॥

२ पणः (पु) 'पैसे' का १ नाम है । ('श्लो० ८५ से यहाँतक 'तुलामान' कहा गया, पहले (२।६।८३–८७) में 'अङ्गुलिमान' कह चुके हैं; अब क्रमप्राप्त 'प्रस्थमान' कह रहे हैं') ॥

३ आढकः, द्रोणः (२ पु न), खारी (+ खारः पु । स्त्री), वाहः, निकुञ्चकः, कुडवः (+ कुडपः मुकु०; कुडपः), प्रस्थः (४ पु), इत्यादि (मानी, अश्विका, प्रवर्तः, सूर्पः, …), 'आढक आदि तौल-विशेष' का क्रमशः १-१ नाम है । ('इनका सविस्तर वर्णन[2] टिप्पणी और चक्र में स्पष्ट है') ॥

---

१. 'कुटपः' इत्यपीति मुकुटः' इति मा० दी० ॥

२. शार्ङ्गधरसंहितायां तुलामानविवरणं विस्तरतो निर्दिष्टमदत्र प्रदर्श्यते —

'न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां ज्ञायते क्वचित् ॥
अतः प्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया ।
त्रसरेणुर्बुधैः प्रोक्तः त्रिंशता परमाणुभिः ॥ १ ॥
त्रसरेणुस्तु पर्यायनाम्ना वंशी निगद्यते ।
जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः ॥ २ ॥
तस्य त्रिंशत्तमो भागः परमाणुः स कथ्यते ।
जालान्तरगतैः सूर्यकरैर्वंशी विलोक्यते ॥ ३ ॥
षड्वंशीभिर्मरीचिः स्यात्ताभिः षड्भिस्तु राजिका ।
तिसृभी राजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते बुधैः ॥ ४ ॥
यवोऽष्टसर्षपैः प्रोक्तो गुञ्जा स्यात्तच्चतुष्टयम् ।
षड्भिस्तु रक्तिकाभिः स्यान्माषको हेमधान्यकौ ॥ ५ ॥
माषैश्चतुर्भिः शाणः स्याद्धरणः स निगद्यते ।
टङ्कः स एव कथितस्तद्द्वयं कोल उच्यते ॥ ६ ॥
क्षुद्रको वटकश्चैव द्रङ्क्षणः स निगद्यते ।
कोलद्वयं च कर्षः स्यात्स प्रोक्तः पाणिमानिका ॥ ७ ॥
अक्षः पिचुः पाणितलं किञ्चित्पाणिश्च तिन्दुकम् ।
बिडालपदकं चैव तथा षोडशिका मता ॥ ८ ॥

करमध्यं हंसपदं सुवर्णं कवलग्रहः।
उदुम्बरं च पर्यायैः कर्ष एव निगद्यते ॥ ९ ॥
स्यात्कार्षाभ्यामर्द्धपलं शुक्तिरष्टमिका तथा।
शुक्तिभ्यां च पलं ज्ञेयं मुष्टिराम्रं चतुर्थिका ॥ १० ॥
प्रकुञ्चः षोडशी बिल्वं पलमेवात्र कीर्त्यते।
पलाभ्यां प्रसृतिर्ज्ञेया प्रसृतश्च निगद्यते ॥ ११ ॥
प्रसृतिभ्यामञ्जलिः स्यात्कुडवोऽर्द्धशरावकः।
अष्टमानं च स ज्ञेयः कुडवाभ्यां च मानिका ॥ १२ ॥
शरावोऽष्टपलं तद्वज्ज्ञेयमत्र विचक्षणैः।
शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुष्प्रस्थैस्तथाढकम् ॥ १३ ॥
भाजनं कंसपात्रं च चतुःषष्टिपलं च तत्।
चतुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशो नल्वणोर्मणः ॥ १४ ॥
उन्मानश्च घटो राशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञकाः।
द्रोणाभ्यां शूर्पकुम्भौ च चतुष्षष्टिशरावकाः ॥ १५ ॥
शूर्पाभ्यां च भवेद् द्रोणी वाहो गोणी च सा स्मृता।
द्रोणीचतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभिः ॥ १६ ॥
चतुःसहस्रपलिका षण्णवत्यधिका च सा।
पलानां द्विसहस्रं च भारः एकः प्रकीर्तितः ॥ १७ ॥
तुला पलशतं ज्ञेया सर्वत्रैवैष निश्चयः। इति।

माषादि खार्यन्तं मानं श्लोकेनैकेनोपसंहरति—

माषटङ्काक्षबिल्वानि कुडवः प्रस्थमाढकम् ॥
राशिर्गोणी खारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणाः'। इति च शार्ङ्ग० सं० १।१।१४-३१

तेनैवोत्तररीत्या मागधमानमुक्त्वा कालिङ्गमानमुक्तम्। तद्यथा—

'यवो द्वादशभिर्गौरसर्षपैः प्रोच्यते बुधैः।
यवद्वयेन गुञ्जा स्यात्त्रिगुञ्जो वल्ल उच्यते ॥ १ ॥
माषो गुञ्जाभिरष्टाभिः सप्तभिर्वा भवेत्क्वचित्।
स्याच्चतुर्माषकैः शाणः स निष्कष्टङ्क एव च ॥ २ ॥
गद्याणो माषकैः षड्भिः कर्षः स्याद्दशमाषकः।
चतुष्कर्षैः फलं प्रोक्तं दशशाणमितं बुधैः ॥ ३ ॥
चतुष्पलैश्च कुडवं प्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः' ॥ इति—

एतयोः (मागध-कलिङ्गमानयोः) मागधमानस्य प्राशस्त्यं निर्दिशति—

'कालिङ्गं मागधं चेति द्विविधं मानमुच्यते।
कालिङ्गान्मागधं श्रेष्ठं मानं मानविदो विदुः' ॥ इति च शार्ङ्ग० सं० १।१।३९-२

अथ तुलामानबोधकचक्रम् ।

अथ मागधमानम् ।

१	१ परमाणुः	१/३० त्रसरेणुः	१३	२ शुक्ती	१ पलम् (४ भरी)
२	३० परमाणवः	१ त्रसरेणुः	१४	२ पले	१ प्रसृतिः
३	६ त्रसरेणवः	१ मरीचिः	१५	२ प्रसृती	१ कुडवः (¼ सेर)
४	६ मरीचयः	१ राजिका(राई)	१६	२ कुडवौ	१ मानिका (½ सेर)
५	३ राजिकाः	१ सर्षपः(सरसो)	१७	२ मानिके	१ प्रस्थः (१ सेर)
६	८ सर्षपाः	१ यवः (जौ)	१८	२ प्रस्थाः	१ आढकः
७	४ यवाः	१ गुञ्जा (रत्ती)	१९	४ आढकाः	१ द्रोणः
८	६ गुञ्जाः	१ माषः (मासा)	२०	२ द्रोणौ	१ शूर्पः
९	४ माषाः	१ शाणः	२१	२ शूर्पौ	१ द्रोणी
१०	२ शाणौ	१ कोलः	२२	४ द्रोण्यः	१ खारी
११	२ कोलौ	१ कर्षः (रुपया)	२३	२००० पलानि	१ भारः (२½ मन)
१२	२ कर्षौ	१ शुक्तिः	२४	१०० पलानि	१ तुला(पसेरी=ऽ५सेर)

अथ कलिङ्गमानम् ।

१	११ श्वेतसर्षपाः	१ यवः	६	६ माषाः	१ गद्याणः (½ तोला)
२	२ यवौ	१ गुञ्जा	७	१० माषाः	१ कर्षः (१ भरी)
३	२ गुञ्जाः	१ वल्लः	८	४ कर्षाः	१ पलम्
४	८ वा ७ गुञ्जाः	१ माषः (मासा)	९	४ पलानि	१ कुडवः
५	४ माषाः	१ शाणः		शेषं सर्वं मागधमानवद्बोध्यम् ।	

देशादिभेदेनैतन्मानस्य विविधा भेदाः सन्ति । ते चात्र विस्तारभयान्नोल्लिखितास्तज्जिज्ञासुभिः 'मनुस्मृतौ (८।१३१-१३७), याज्ञवल्क्यस्मृतौ (१।३६२-३६४), चतुर्वर्गचिन्तामणौ (हेमाद्रौ) दानखण्डे (पृ० १२६-१३०), विष्णु-कात्यायन-नारद-अगस्ति-विष्णुगुप्त-भविष्यपुराणविष्णुधर्मोत्तर-वराहपुराण-पद्मपुराण-गोपथब्राह्मण-स्कन्दपुराणोक्ता मानभेदा द्रष्टव्याः ।

१ पादस्तुरीयो भागः स्याद्२ंशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥
३ द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु।
हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविभवा अपि ॥ ९० ॥
४ *स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते।
५ ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं ६ रूप्यं तद्द्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥
७ गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः।
८ शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागः—

---

१ पादः (पु), 'चौथाई भाग' का १ नाम है ॥

२ अंशः, भागः, वण्टकः (३ पु), 'भाग, हिस्सा' के ३ नाम हैं ॥

३ द्रव्यम्, वित्तम्, स्वापतेयम्, रिक्थम्, ऋक्थम्, धनम्, वसु, हिरण्यम्, द्रविणम्, द्युम्नम् (१० न), अर्थः, राः (= रै । + पु स्त्री), विभवः (३ पु), 'धन' के १३ नाम हैं ॥

४ कोशः (+ कोषः । पु), हिरण्यम् (न), 'सोना-चांदी' अर्थात् 'सिक्का बने हुए और विना सिक्का बने हुए सोना-चांदीमात्र' के २ नाम हैं ॥

५ कुप्यम् (न), 'सोना-चांदीसे भिन्न तांबा आदि धातु' का १ नाम है ॥

६ रूप्यम् (न), 'सिक्का बने हुए सोना, चांदी, तांबा, गिल्टी आदि' का १ नाम है। (सोना जैसे—असर्फी गिन्नी आदि। चांदी जैसे—रुपया, अठन्नी, आदि। तांबा जैसे—पैसा, धेला, पाई आदि। गिल्टी जैसे—चवन्नी, दुअन्नी, एकन्नी') ॥

७ गारुत्मतम्, मरकतम् (२ न), अश्मगर्भः, हरिन्मणिः (२ पु), 'पन्ना या मरकत मणि' के ४ नाम हैं ॥

८ शोणरत्नम् (न), लोहितकः, पद्मरागः (२ पु) 'पद्मराग मणि, लाल' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'स्यात्कोषश्च' इति। पाठान्तरम् ॥

—१ अथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥

मुक्ताऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुन्नपुंसकम् ।
३ रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥
४ स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।

---

१ मौक्तिकम् (न), मुक्ता (स्त्री), 'मोती' के २ नाम हैं ॥

२ विद्रुमः (पु), प्रवालः (पु न), 'मूँगे' के २ नाम हैं ॥

३ रत्नम् (न), मणिः (+ मणी । पु स्त्री), 'रत्न, मणि' अर्थात् 'पन्ना, लाल, हीरा, मोती आदि जवाहरात' के २ नाम हैं । ('सोना १, चांदी २, मोती ३, लाजावर्त ४ और मूंगा ५, अथवा—'सोना १, हीरा २, नीलमणि ३, पद्मराग (लाल) ४ और मोती ५, ये 'पञ्चरत्न'[1] हैं । मोती १, सोना २, वैडूर्यमणि (सूर्यकान्त) ३, पद्मरागमणि (लाल) ४, पुखराज ५, गोमेदमणि ६, नीलमणि ७, पन्ना ८ और मूंगा ९, ये नव 'महारत्न'[2] हैं । 'हीरा १, मोती २, सोना ३ चांदी ४, चन्दन ५, शङ्ख ६, चर्म ७ और वस्त्र ८, ये आठ 'रत्नकी जातियाँ[3] हैं') ॥

४ स्वर्णम् , सुवर्णम् , कनकम् , हिरण्यम् , हेम (= हेमन्), हाटकम् ,

---

१. तदुक्तम्—

'सुवर्णं रजतं मुक्ता राजावर्त्तं प्रवालकम् ।
रत्नपञ्चकमाख्यातं शेषं वस्तु प्रचक्षते ॥' १ ॥ इति ॥

अथवा—

'कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ।
एतानि पञ्चरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः' ॥ १ ॥ इति ॥

२. तदुक्तम्—

'मुक्ताफलं हिरण्यं च वैडूर्यं पद्मरागकम् ।
पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा ॥ १ ॥
प्रवालयुक्तान्युक्तानि महारत्नानि वै नव' ॥ इति ॥

३. तदुक्तं वाचस्पतिना—

'हीरकं मौक्तिकं स्वर्णं रजतं चन्दनानि च ।
शङ्खश्चर्म च वस्त्रं चेत्यष्टौ रत्नस्य जातयः' ॥ १ ॥ इति ॥

तपनीयं[1] शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥
चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।
रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥
१ अलङ्कारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ।
२ दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥
३ रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथ४ताम्रकम् ।
शुल्वं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्टोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥

तपनीयम् , शातकुम्भम् (शातकौम्भम्),[2] गाङ्गेयम् , भर्म (= भर्मन् ।+ भर्मः = भर्म पु), कर्बुरम् (+ कर्बुरम्), चामीकरम् , जातरूपम् , महारजतम् , काञ्चनम् , रुक्मम् , कार्तस्वरम् , [3]जाम्बूनदम् (१८ न), अष्टापदः (पु न । + कलधौतम् , अर्जुनम् , कल्याणम् , भूत्तमम् ४ न···), 'सुवर्ण' के १९ नाम हैं ॥

१ शृङ्गीकनकम् (+ शृङ्गी स्त्री, शृङ्गि = शृङ्गि, कनकम् ; २ न । न), 'भूषण बने हुए सोने' का १ नाम है ॥

२ दुर्वर्णम् , रजतम् , रूप्यम् ; खर्जूरम् (+ खर्जुरम्), श्वेतम् (+ कलधौतम् , तारम् ; हंस, चन्द्रमा और कुमुदके पर्यायवाचक सब शब्द । ५ न), 'चांदी' के ५ नाम हैं ॥

३ रीतिः (+ रीती, रिरी, रीरी । स्त्री), आरकूटः (पु न), 'पीतल' के २ नाम हैं ॥

४ ताम्रकम् (+ ताम्रम्), शुल्वम् (+ शुल्बम्), म्लेच्छमुखम् , द्व्यष्टम् , वरिष्टम् , उदुम्बरम् (+ औदुम्बरम् , रक्तम् । ६ न), 'तांबा' के ६ नाम हैं ॥

---

१. 'शातकौम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम्' इति पाठान्तरम् ॥

२. गङ्गाया अपत्यं गाङ्गेयम् । तदुक्तं वायुपुराणे—

'यं गर्भं सुषुवे गङ्गा पावकाद्दीप्ततेजसम् ।
तदुल्बं पर्वते न्यस्तं हिरण्यं समपद्यत' ॥ १ ॥ इति ॥

३. तदुक्तम्—'तीरमृत्तद्रसं प्राप्य सुखवायुविशोषिता ।
जाम्बूनदाख्यं भवति सुवर्णं सिद्धभूषणम्' ॥ १ ॥ इति ॥

१ लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।
अश्मसारो २ऽथ मण्डूरं[1] सिंहाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥
३ सर्वं च तैजसं लोहं ४ विकारस्त्वयसः कुशी ।
५ क्षारः काचो ६ऽथ चपलो रसः सूतश्च[2] पारदे ॥ ९९ ॥
७ गवलं माहिषं शृङ्ग ८मभ्रकं गिरिजामले ।

---

१ लोहः (+ लौहः । पु न), शस्त्रकम् (+ शस्त्रम्), तीक्ष्णम् , पिण्डम् , कालायसम् (+ कृष्णायसम् , कृष्णामिषम्), अयः (=अयस् । ५ न), अश्मसारः (+ गिरिसारम् , शिलासारम् । पु । + न), 'लोहे' के ७ नाम हैं ॥

२ मण्डूरम् , सिंहाणम् (+ सिंहानम् , सिंघानम् , शिङ्घाणम् । २ न), 'मण्डूर' अर्थात् 'लोहेकी मैल' के २ नाम हैं ॥

३ लोहम् (+ लौहम् । न), 'सब तरह के धातु (तैजस पदार्थ)' का १ नाम है । ('सुवर्ण १, चाँदी २, ताँबा ३, पीतल ४, काँसा ५, राँगा ६, सीसा ७ और लोहा ८, ये आठ 'लोहेके भेद' [3]होते हैं') ॥

४ कुशी (स्त्री), लोहेके बने हुए हथियार, बर्तन आदि वस्तु या फार' का एक नाम है ॥

५ क्षारः, काचः (२ पु), 'काँच' के २ नाम हैं ॥

६ चपलः, रसः,[4] सूतः, पारदः (+ पारतः । ४ पु), 'पारा' के ४ नाम हैं ॥

७ गवलम् (न), 'भैंसे की सींग' का १ नाम है ॥

८ अभ्रकम् , गिरिजामलम् (+ गिरिजम् , अमलम् । २ न), 'अभ्रक' के २ नाम हैं ॥

---

१. सिंघानमपि' इति पाठान्तरम् ॥	२. 'पारते' इति पाठान्तरम् ॥

३. तदुक्तम्—'सुवर्णं रजतं ताम्रं रीतिः कांस्यं तथा त्रपु ।
सीसं कालायसं चैवमष्टौ लोहानि चक्षते' ॥ १ ॥

४. पारतस्तु मनाक् पाण्डुः सूतस्तु रहितो मलात् ।
पारदस्तु मनाक् शीतः सर्वे तुल्यगुणाः स्मृताः' ॥ १ ॥
इति शब्दार्णवोक्तभेदाविवक्षयोक्तिरियमित्यवधेयम् ॥

१ स्रोतोञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥
२ तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके।
३ कर्परी[1] दार्विका काथोद्भवं तुत्थं ४ रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥
रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं—

---

१ स्रोतोञ्जनम्, सौवीरम्, कापोताञ्जनम् (+ कापोतम्), यामुनम् (४ न), 'सुर्मा' के ४ नाम हैं ॥

२ तुत्थाञ्जनम् (+ तुत्थम्), शिखिग्रीवम्, वितुन्नकम्, मयूरकम् (४ न), 'तूतिया' के ४ नाम हैं ॥

३ कर्परी, दार्विका (२ स्त्री), तुत्थम् (+ तुत्थम् । न), 'घिसकर तैयार किये हुये अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं ॥

४ रसाञ्जनम्, रसगर्भम्, तार्क्ष्यशैलम् (३ न), 'रसाञ्जन' अर्थात् 'नेत्रमें लगानेके अञ्जन-विशेष'के ३ नाम हैं। ('महे० के मतसे 'तुत्थाञ्जनम्,……… कर्परी' 'तूतिया' के ५ नाम और 'रसाञ्जनम्,……' दारुहल्दीके क्वाथ (काढा) के समभाग बकरीके दूधमें तूतियाको घिसकर तैयार किये हुए अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं। क्षी० स्वा० के मतसे 'तुत्थाञ्जनम्,……… 'तूतिया' के ५ नाम और 'दार्विकाथोद्भवम्, तुत्थरसाञ्जनम्,………' ४ नाम (भा० दी० के कथनानुसार ५ नाम) द्वितीय अर्थमें हैं। धन्वन्तरि और हेमचन्द्राचार्यके[2] तो भिन्न ही क्रम हैं') ॥

---

१. 'दार्विकाक्काथोद्भवं तुत्थरसाञ्जनम्' इति क्षी० स्वा०, 'दार्विकाक्काथोद्भवं तुत्थं रसाञ्जनम्' इति महे० सम्मतः पाठः, मूलस्थो भा० दी० सम्मतः पाठः ॥

२. तथा च धन्वन्तरिः—

'अञ्जनं मेचकं कृष्णसौवीरं स्यात्सुवीरजम्। कापोतकं यामुनं च स्रोतोऽञ्जनमुदाहृतम् ॥१॥ इति॥

तदुक्तं हेमचन्द्राचार्यैरभिधानचिन्तामणौ—

'अथ तुत्थं शिखिग्रीवं तुत्थाञ्जनमयूरके। मूषातुत्थं कांस्यनीलं हेमतारं वितुन्नकम् ॥ १ ॥
स्यात्तु कर्परिकातुत्थममृतासङ्गमञ्जनम्। रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं तुत्थे दार्वीरसोद्भवे' ॥ २ ॥

इति अभि० चिन्ता० ४।११८-११९ ॥

—१ गन्धाश्मनि तु [1]गन्धिकः ।
सौगन्धिकश्च २ चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥
३ रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पुष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।
४ पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके ॥ १०३ ॥
५ गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।
६ [2]बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥
७ [3]हिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः ८ सिन्दूरं नागसंभवम् ।
९ नागसीसकयोगेष्टवप्राणि—

---

१ गन्धाश्मा (=गन्धाश्मन्), गन्धिकः (+गन्धकः), सौगन्धिकः (३ पु), 'गन्धक' के ३ नाम हैं ॥

२ चक्षुष्या, कुलाली, कुलत्थिका (३ स्त्री), 'काला सुर्मा' के ३ नाम हैं ॥

३ रीतिपुष्पम् , पुष्पकेतु, पुष्पकम् (+पौष्पकम्), कुसुमाञ्जनम् (+पुष्पाञ्जनम् । ४ न), 'तपाये हुए पीतलसे निकली हुई मैल के द्वारा बनाये हुए सुर्मे' के ४ नाम हैं ॥

४ पिञ्जरम् , पीतनम् (+पीतकम् , गौरम्), तालम् , आलम् (+अलम्), हरितालकम् (+हरितालम् । ५ न), 'हरताल' के ५ नाम हैं ॥

५ गैरेयम् , अर्थ्यम् , गिरिजम् , अश्मजम् , शिलाजतु (५ न), 'शिलाजीत' के ५ नाम हैं ॥

६ बोलः, गन्धरसः (+रसगन्धः) प्राणः, पिण्डः (+पिटः), गोपरसः (+गोपः, रसः, गोसः मुकु० । ५ पु), 'गन्धरस' के ५ नाम हैं ॥

७ डिण्डीरः (+हिण्डीरः, हिण्डिरः), अब्धिकफः, फेनः (३ पु), 'समुद्रफेन' के ३ नाम हैं ॥

८ सिन्दूरम् , नागसंभवम् (+नागजम् , श्रृङ्गारभूषणम् , चीनपिष्टम् । २ न), 'सिन्दूर' के २ नाम हैं ॥

९ नागम् , सीसकम् (+सीसम् सीसपत्रम्), योगेष्टम् , वप्रम् (+वध्रम् मुकु० । ४ न), 'सीसा' के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'गन्धकः' इति पाठान्तरम् ॥   २. 'गोपरसाः' इति मुकुटः' इति मा० दी० ॥

३. 'हिण्डीरोऽब्धिकफः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥

[1]रङ्गवङ्गे २ अथ पिचुस्तूलोऽ३थ कमलोत्तरम् ।
स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥
४ मेषकम्बल ऊर्णायुः ५ शशोर्णं शशलोमनि ।
६ मधु क्षौद्रं माक्षिकादि ७ मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥
८ मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ।
९ नैपाली कुनटी गोला—

---

१ त्रपुः पिच्चटम्, रङ्गम्, वङ्गम् (+ स्वर्गम्, आलानम् । ४ न), 'रांगा' के ४ नाम हैं ॥

२ पिचुः, तूलः (+ पिचुतूलः, पिचुकः । २ पु), 'रूई कपास' के २ नाम हैं॥

३ कमलोत्तरम्, कुसुम्भम्, वह्निशिखम्, महारजनम् (४ न), 'कुसुम (बरें) के फूल' के ४ नाम हैं ॥

४ मेषकम्बलः, ऊर्णायुः (२ पु) 'भेंड़के बालके कम्बल'के २ नाम हैं ॥

५ शशोर्णम्, शशलोम (= शशलोमन् । २ न), 'खरगोश के रोंएं'के २ नाम हैं ॥

६ मधु, क्षौद्रम्, [2]माक्षिकम्, आदि (+ भ्रामरम्, छात्रकम्, पौत्तिकम्, सारघम्,··· । ३ न), 'मधु शहद' के ३ नाम हैं ॥

७ मधूच्छिष्टम्, सिक्थकम् (२ न), 'शहदसे निकाले हुए मोम' के २ नाम हैं ॥

८ मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्वा, नागजिह्विका (+ नागजिह्वा, शिला । ४ स्त्री), 'मनसिल' के ४ नाम हैं ॥

९ नैपाली (+ शिला), कुनटी, गोला (३ स्त्री), 'नेपाली मैनसिल' के ३ नाम हैं। ('भा० दी० आदिके मतसे 'मनःशिला·······' ७ नाम 'मैनशिल' के ही हैं' ॥

---

१. रङ्गवङ्गेऽथ पिचुकः' इत्यत्र पाठे तु 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' (पा० सू० १।१।११) इति प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या —' (पा० सू० ६।१।१२५) इति प्राप्तप्रकृतिभावाभावो राजनिमौलिकयैरत्यवधेयम् ॥

२. माक्षिकं तैलवर्णं स्याद् घृतवर्णं तु पौत्तिकम् ।
विज्ञेयं भ्रामरं श्वेतं क्षौद्रं तु कपिलं स्मृतम्' ॥ २ ॥

इति निम्युक्तभेदाविवक्षयैवमुक्तिरित्यवधेयम् ॥

—१ यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥
पाक्योऽथ २ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
३ सौवर्चलं स्याद्रुचकं ४ त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥
५ शिग्रुजं श्वेतमरिचं ६ मोरटं मूलमैक्षवम् ।
७ ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥
८ गोलोमी भूतकेशो ना ९ पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।
१० त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं ११ त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

---

१ यवक्षारः, यवाग्रजः, पाक्यः (३ पु) 'जवाखार' के ३ नाम हैं ॥

२ सर्जिकाक्षारः, कापोतः, सुखवर्चकः (३ पु) 'सज्जीखार' के ३ नाम हैं ॥

३ सौवर्चलम् , रुचकम् (२ न), 'क्षार-भेद या सोचरक्षार' के २ नाम हैं । 'भा० दी० आदिके मतसे 'सर्जिकाक्षारः,.........' ५ नाम 'सज्जीखार' के ही हैं') ॥

४ त्वक्क्षीरी (+तुकाक्षीरी, तुकाशुभा, वांशी), वंशरोचना (+वंशलोचना, वंशजा । २ स्त्री), 'वंशलोचन' के २ नाम हैं ॥

५ शिग्रुजम् , श्वेतमरिचम् (२ न), 'सहिजनके बीज' के २ नाम हैं ॥

६ मोरटम् (न), 'ऊख (गन्ने) की जड़' का १ नाम है ॥

७ ग्रन्थिकम् , पिप्पलीमूलम् , चटकाशिरः (=चटकाशिरस् । +चटकाशी, शिरः = शिर पु । ३ न), 'पिपरामूल' के ३ नाम हैं ॥

८ गोलोमी (स्त्री), भूतकेशः (पु), 'जटामाँसी' के २ नाम हैं ॥

९ पत्राङ्गम् , रक्तचन्दनम् (२ न), 'रक्तसार' अर्थात् 'लाल चन्दनके समान एक काष्ठ-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१० त्रिकटु, त्र्यूषणम् (+त्र्युषणम्), व्योषम् (३ न), 'त्रिकटु' अर्थात् 'पिपल, सोंठ और मिर्चके समुदाय' के ३ नाम हैं ॥

११ त्रिफला (+ तृफला, वरा । स्त्री), फलत्रिकम् (न)' 'त्रिफला' अर्थात् 'आँवला, हरें और बहेड़े के समुदाय' के २ नाम हैं ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

१०. अथ शूद्रवर्गः ।

१ शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।
२ आचण्डालात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥
३ शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ।
५ शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो ६ मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥
७ माहिष्योऽर्याक्षत्रिययोः ८ क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ।

१०. अथ शूद्रवर्गः ।

१ शूद्रः, अवरवर्णः, [1]वृषलः,[2] जघन्यजः (+पद्यः, पज्जः । ४ पु), 'शूद्र' के ४ नाम हैं ॥

२ संकीर्णः (+वर्णसङ्कर । पु), 'वर्णसङ्कर' अर्थात् 'भिन्न २ जातिवाले माता-पिताके संश्लेषसे उत्पन्न 'अम्बष्ठ, करण' आदि जाति-विशेष' का १ नाम है॥

३ करणः (पु), 'शूद्रवर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

४ अम्बष्ठः (पु), 'वैश्य वर्णकी स्त्री और ब्राह्मण वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

५ उग्रः (पु), 'शूद्र वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

६ मागधः (पु), 'क्षत्रिय वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

७ माहिष्यः (+माहिषः । पु), 'वैश्य वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

८ क्षत्ता (= क्षत्तृ पु), 'क्षत्रिय वर्णकी स्त्री और शूद्र वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'बढ़ई' का १ नाम है ॥

---

१. तदुक्तं नारदेन—
'वृषो हि भगवान् धर्मस्तस्य यः कुरुते लवम् । वृषलं तं विजानीयात्—' इति ॥
मनुरपि (८।१६) 'लव' स्थाने 'ह्यलम्' इति पठित्वा तदेवाह ॥

२. '—पद्भ्यां शूद्रो अजायत' इति श्रुत्युक्तेरित्यवधेयम् ॥

१ ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥
३ रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य सम्भवः ।
४ स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

---

१ सूतः (पु), 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'सारथिका काम करनेवाले' का १ नाम है ॥

२ वैदेहकः (वैदेहः, विदेहः । पु), 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

३ रथकारः (पु), 'करणी स्त्री (शूद्र वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न कन्या) और माहिष्य जातिके पुरुष (वैश्य वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न पुत्र) से उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है ॥

४ चण्डालः (+ चाण्डालः । पु) 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और शूद्र वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'चाण्डाल' का १ नाम है । ('इन सब (श्लो० २-४ के [1]प्रमाण टिप्पणी में स्पष्ट हैं और सुगमतया जाति-ज्ञानके लिये चक्र देखिये') ॥

---

१. याज्ञवल्क्यस्मृतौ पूर्वोक्ता अन्याश्च सङ्करजातय उक्तास्तथा हि—

'विप्रान्मूर्द्धावसिक्तस्तु क्षत्रियायां विशः स्त्रियाम् ।
अम्बष्ठः शूद्र्यां निषादो जातः पाराशवोऽपि वा ॥ १ ॥
वैश्याशूद्र्योस्तु राजन्यान्माहिष्योग्रौ सुतौ स्मृतौ ।
वैश्यात्तु करणः शूद्र्यां विन्नास्वेष विधिः स्मृतः ॥ २ ॥
ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतो वैश्याद्वैदेहिकस्तथा ।
शूद्राज्जातस्तु चाण्डालः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ ३ ॥
क्षत्रिया मागधं वैश्याच्छूद्रात्क्षत्तारमेव च ।
शूद्रादायोगवं वैश्या जनयामास वै सुतम् ॥ ४ ॥
माहिष्येण करण्यां तु रथकारः प्रजायते ।
असत्सन्तस्तु विज्ञेयाः प्रतिलोमानुलोमजाः' ॥ ५ ॥

इति याज्ञ० स्मृति० १ । ९१-९५ ॥

एतद्भिन्नानां वर्णसङ्कराणामुत्पत्तिमूलं कर्माणि च मनुस्मृतौ (१० । ८—५२), औशनसीस्मृतौ, गौतमस्मृतेश्चतुर्थाध्याये, वसिष्ठस्मृतेरष्टादशाध्याये च सविस्तरं द्रष्टव्यम् ॥

९ कारुः शिल्पी २ संहतस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ।

---

१ कारुः, शिल्पी (= शिल्पिन् । २ पु), 'कारीगर' के २ नाम हैं। ('बढ़ई १, कुम्हार २, नाई ३, धोबी ४ और चमार ५ ये पांच[१] 'शिल्पी' हैं) ॥

२ श्रेणिः (पु स्त्री), 'एक जातिके कारीगरोंके समूह' का १ नाम है ॥

अनुलोमज-प्रतिलोमजजात्युत्पत्तिबोधचक्रम् ।

संख्या	पितृजातेः	मातृजातौ जातः	पुत्रजातिः
१	विप्रात्	क्षत्त्रियायाम्	मूर्द्धाभिषिक्तः
२	,,	वैश्यायाम्	अम्बष्ठः
३	,,	शूद्रायाम्	निषादःपाराशवो वा
४	क्षत्त्रियात्	वैश्यायाम्	माहिष्यः
५	,,	शूद्रायाम्	उग्रः
६	वैश्यात्	,,	करणः
७	क्षत्त्रियात्	ब्राह्मण्याम्	सूतः
८	वैश्यात्	,,	वैदेहकः
९	शूद्रात्	,,	चण्डालः
१०	वैश्यात्	क्षत्त्रियायाम्	मागधः
११	शूद्रात्	,,	क्षत्ता
१२	,,	वैश्यायाम्	आयोगवः
१३	माहिष्यात्	करण्याम्	रथकारः

१. तदुक्तम्—

'तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा।
पञ्चमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः' ॥ १ ॥ इति ॥

१ [1]कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी २ मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥
३ कुम्भकारः कुलालः स्यात् ४ पलगण्डस्तु लेपकः ।
५ [2]तन्तुवायः कुविन्दः स्यात् ६ तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥
७ रङ्गाजीवश्चित्रकरः ८ शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
९ पादूकृच्चर्मकारः स्याद् १० व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
११ नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः ।

---

१ कुलकः (+कुलिकः), कुलश्रेष्ठी (=कुलश्रेष्ठिन् । २ पु), 'खानदानी (कुलीन) कारीगर' के २ नाम हैं ॥

२ मालाकारः, मालिकः (२ पु), 'माली' के २ नाम हैं ।

३ कुम्भकारः, कुलालः (२ पु), 'कुम्हार' के २ नाम हैं ।

४ पलगण्डः, लेपकः (२ पु), 'मकान आदिमें चूना आदि लगानेवाले जाति-विशेष' के २ नाम हैं ॥

५ तन्तुवायः (+तन्त्रवायः, तन्त्रवापः), कुविन्दः (+कुपिन्दः २ पु), 'जुलाहा' अर्थात् 'कपड़ा बुननेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ तुन्नवायः, सौचिकः (२ पु), 'दर्जी' के २ नाम हैं ॥

७ रङ्गाजीवः, चित्रकरः (२ पु), 'रंगसाज' अर्थात् 'कपड़ेको रंगने या छापकर चित्रकारी आदि करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ शस्त्रमार्जः असिधावकः (२ पु), 'सान चढ़ानेवाले या शस्त्रों की सफाई और मरम्मत आदि करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ पादूकृत् (+पादकृत्, पादुकाकृत्), चर्मकारः (२ पु), 'चमार' के २ नाम हैं ॥

१० व्योकारः, लोहकारकः (+लोहकारः, अयस्कारः, अयस्करः । २ पु) 'लुहार' के २ नाम हैं ॥

११ नाडिन्धमः, स्वर्णकारः, कलादः, रुक्मकारकः (+रुक्मकारः, मुष्टिकः, हैममुष्टिकः । ४ पु), 'सुनार' के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'कुलिकः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'तन्त्रवायः' इति 'तन्त्रवापः' इति पाठान्तरे ॥

१ स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः २ शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥
३ तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा [1]रथकारश्च काष्ठतट् ।
४ ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः ५ कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥
६ क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्त्तिनापितान्तावसायिनः ।
७ निर्णेजकः स्याद्रजकः ८ शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥
९ जाबालः स्यादजाजीवो—

---

१ शाङ्खिकः, काम्बविकः (२ पु), 'शङ्खकी चूड़ी आदि बनानेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ शौल्विकः ताम्रकुट्टकः (२ पु) 'तमेड़ा' अर्थात 'ताँबेके बर्तन आदि बनानेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ तक्षा (= तक्षन्), वर्धकिः, त्वष्टा (= त्वष्टृ), रथकारः काष्ठतट् (= काष्ठतक्ष् । + स्थपतिः । ५ पु), 'बढ़ई' के ५ नाम हैं ॥

४ ग्रामाधीनः (भा० दी०), ग्रामतक्षः (२ पु), 'गाँवके बढ़ई' के २ नाम हैं ॥

५ कौटतक्षः, अनधीनकः (भा० दी० । २ पु), 'स्वतन्त्र बढ़ई' के २ नाम हैं ॥

६ क्षुरी (= क्षुरिन् । + क्षुरमर्दी = क्षुरमर्दिन्), मुण्डी (= मुण्डिन् । + मुण्डिः, मुण्डकः), दिवाकीर्त्तिः, नापितः, अन्तावसायी (= अन्तावसायिन् । + चण्डिलः । ५ पु) 'हज़ाम' के ५ नाम हैं ॥

७ निर्णेजकः, रजकः (२ पु), 'धोबी' के २ नाम हैं ॥

८ शौण्डिकः मण्डहारकः (+ सुराजीवी = सुराजीविन् , कल्यपालः, पानवणिक = पानवणिज् , ध्वजः, वारिवासः । २ पु), 'कलवार या मद्य बनानेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ जाबालः, अजाजीवः (२ पु), 'गँडेरिये या भेंड़िहारे' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'रथकारस्तु' इति पाठान्तरम् , अत्र पाठे 'स्वन्ताथादि न पूर्वभाक्' (१ । १ । ५) इति पूर्वप्रतिज्ञाविरोधात् 'रथकार' शब्दस्य 'तक्षणः' पर्यायता न स्यादित्यवधेयम् ॥

—१ [1]देवाजीवस्तु देवलः ।
२ स्यान्माया शाम्बरी ३ मायाकारस्तु [2]प्रतिहारकः ॥ ११ ॥
४ शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः ।
भरता इत्यपि नटा ५ श्चारणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥
६ मार्दङ्गिका मौरजिकाः ७ पाणिवादास्तु पाणिघाः ।
८ वेणुध्माः स्युर्वैणविका ९ वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ १३ ॥
१० जीवान्तकः शाकुनिको ११ द्वौ वागुरिकजालिकौ ।

---

१ देवाजीवः (+ देवाजीवी = देवाजीविन्), देवलः, (२ पु), 'पण्डा, पुजारी आदि' के २ नाम हैं ॥

२ माया, शाम्बरी (२ स्त्री), 'जादू' के २ नाम हैं ॥

३ मायाकारः, प्रतिहारकः (+ प्रतिहारकः, प्रातिहारिकः । २ पु), 'जादूगर' के २ नाम हैं ॥

४ शैलाली (= शैलालिन्), शैलूषः, जायाजीवः, कृशाश्वी (= कृशाश्विन्), [3]भरतः (+ भारतः), नटः (६ पु), 'नट' के ६ नाम हैं ॥

५ चारणः, कुशीलवः (२ पु) 'कत्थक' के २ नाम हैं ॥

६ मार्दङ्गिकः मौरजिकः (२ पु), 'मृदङ्ग बजानेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ पाणिवादः, पाणिघः (२ पु), 'हाथकी ताली बजाकर मृदङ्ग, तबला आदि बाजाओंके अनुकरणको करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ वेणुध्मः, वैणविकः (२ पु), 'वंशी या मुरली बजानेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ वीणावादः, वैणिक (२ पु), 'वीणा बजानेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० जीवान्तकः, शाकुनिकः (२ पु), 'बहेलिये या चिड़ियोंको मारनेवाले' अर्थात् 'चिड़ीमार' के २ नाम हैं ॥

११ वागुरिकः, जालिकः (२ पु), 'जालसे पशु-पक्षी, मछली आदिको फँसानेवाले' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'देवाजीवी तु' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'प्रातिहारकः' इति पाठान्तरम् ॥

३. यथाह बृहस्पतिः—'कृशाश्वेन च यत्प्रोक्तं नटसूत्रमधीयते ।
रङ्गावतारी शैलूषो नटो भरतभारतौ' ॥ १ ॥ इति ॥

१ वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥
२ भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ।
३ वार्तावहो वैवधिको ४ भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥
५ विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।
[1]निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥
६ भृत्ये [2]दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।
नियोज्यकिङ्करप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥
७ [3]पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ।
८ मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

---

१ वैतंसिकः, कौटिकः, मांसिकः (३ पु), 'मांस बेचनेवाले वधिक आदि' के ३ नाम हैं ॥

२ भृतकः, भृतिभुक् (=भृतिभुज्), कर्मकरः, वैतनिकः (४ पु), 'मजदूर या वेतन लेनेवाले नौकर' के ४ नाम हैं ॥

३ वार्तावहः, वैवधिकः (+ विवधिकः, वीवधिकः । २ पु), 'काँवर या बहँगी ढोनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ भारवाहः, भारिकः (+ भारी = भारिन् । २ पु), 'बोझ ढोनेवाले कुली आदि' के २ नाम हैं ॥

५ विवर्णः, पामरः, नीचः, प्राकृतः, पृथग्जनः, निहीनः, अपसदः (+ अपशदः), जाल्मः, क्षुल्लकः (+ खुल्लकः), इतर (१० पु), 'नीच' के १० नाम हैं ॥

६ भृत्यः, दासेरः, दासेयः, दासः (+ दाशः), गोप्यकः, चेटकः (+ चेडकः), नियोज्यः, किङ्करः, प्रैष्यः (+ प्रेष्यः), भुजिष्यः, परिचारकः (११ पु), 'नौकर, भृत्य' के ११ नाम हैं ॥

७ पराचितः, परिस्कन्दः (+ परिष्कन्दः, परिस्कन्नः, परिष्कन्नः), परजातः (+ पराजितः), परैधितः (४ पु), 'दूसरेके द्वारा पालित' के ४ नाम हैं ॥

८ मन्दः, तुन्दपरिमृजः (+ तुन्दपरिमार्जः,) आलस्यः, शीतकः, अलसः (+ आलसः), अनुष्णः (६ पु), 'आलसी' के ६ नाम हैं ॥

---

१. 'निहीनोऽपशदो' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'दासेरदासेयदाश—' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'पराचितपरैधिताः' इति पाठान्तरम् ॥

१ दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ।
२ चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनङ्गमाः ॥ १९ ॥
निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।
३ भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥
४ व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ।
५ कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥
शुनको भषकः श्वा स्यात् ६ अलर्कस्तु स योगितः ।
७ श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः ८ सरमा शुनी ॥ २२ ॥

---

१ दक्षः, चतुरः, पेशलः, पटुः, सूत्थानः, उष्णः (+ निरालसः । ६ पु), 'चालाक, चतुर' के ६ नाम हैं ॥

२ चण्डालः, प्लवः, मातङ्गः, दिवाकीर्त्तिः, जनङ्गमः (+ जलङ्गमः), निषादः, [1]श्वपचः (+ श्वपाकः), अन्तेवासी (= अन्तेवासिन्), चाण्डालः, पुक्कसः (+ पुष्कसः, बुक्कसः । १० पु), 'चाण्डाल' के १० नाम हैं ॥

३ किरातः, शबरः (+ शवरः), पुलिन्दः (+ पुलिङ्गः । ३ पु), ये तीन 'म्लेच्छजातिः (स्त्री), [2] 'म्लेच्छ (चाण्डाल) के जाति-विशेष' हैं ॥

४ व्याधः, मृगवधाजीवः, मृगयुः, लुब्धकः (४ पु), 'व्याध' के ४ नाम हैं ॥

५ कौलेयकः, सारमेयः, कुक्कुरः (+ कुकुरः, कुर्कुरः), मृगदंशकः (+ मृगदंशः), शुनकः (+ शुनः, शुनिः), भषकः, श्वा (= श्वन् । + श्वानः, कपिलः, शिवारिः, मण्डलः, कृतज्ञः । ७ पु), 'कुत्ते' के ७ नाम हैं ॥

६ अलर्कः (पु), 'पागल या रोगी कुत्ते' का १ नाम है ॥

७ विश्वकद्रुः (पु), 'शिकारी कुत्ते' का १ नाम है ॥

८ सरमा, शुनी (स्त्री), 'कुतिया' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'श्वपचो डोम्बः बुक्कसो मृतपः' इत्यवान्तरभेदोऽत्र न विवक्षित इत्यवधेयम् ॥

२. तदुक्तम्—'गोमांसभक्षको यस्तु लोकबाह्यं च भाषते ।
सर्वाचारविहीनोऽसौ म्लेच्छ इत्यभिधीयते' ॥ १ ॥ इति ॥

१ विट्चरः सूकरो ग्राम्यो २ वर्करस्तरुणः पशुः ।
३ आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ॥
४ दक्षिणारुर्लुब्धयोगाद्दक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।
५ चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥
प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ।
६ चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं ७ लोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥
८ वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ।
९ उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद् १० वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

---

१ विट्चरः (पु), 'ग्रामके सूअर' का १ नाम है ॥

२ वर्करः (पु); 'जवान पशु' का १ नाम है ॥

३ आच्छोदनम् , मृगव्यम् (+ मृगव्या स्त्री । २ न), आखेटः (पु), मृगया (+ पापर्द्धिः । स्त्री), 'शिकार' के ४ नाम हैं ॥

४ दक्षिणेर्मा (= दक्षिणेर्मन् पु), 'व्याधके मारनेसे दहने भागमें घाववाले मृग आदि पशु' का १ नाम है ॥

५ चौरः (+ चोरः, चोरटः), ऐकागारिकः, स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोषकः, प्रतिरोधी (= प्रतिरोधिन् । + प्रतिरोधकः), परास्कन्दी (= परास्कन्दिन्), पाटच्चरः, मलिम्लुचः (+ पारिपन्थिकः, रात्रिचरः । १० पु), 'चोर' के १० नाम हैं ॥

६ चौरिका (+ चोरिका । स्त्री), स्तैन्यम् , चौर्यम् , स्तेयम् (३ न), 'चोरी' के ४ नाम हैं ॥

७ लोप्त्रम् (+ लोत्रम् , लोतम् , चोरितम् । न), 'चोरीके धन या वस्तु आदि' का १ नाम है ॥

८ वीतंसः (+ वितंसः । पु) 'फन्दा' अर्थात् 'पशु-पक्षियोंको फँसानेके लिये जाल आदि साधन-विशेष' का १ नाम है ॥

९ उन्माथः (पु), कूटयन्त्रम् (+ पाशयन्त्रम् । न), 'पशु-पक्षियोंको फँसानेवाले यन्त्र-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१० वागुरा, मृगबन्धनी (२ स्त्री), 'पशु या मृगको फँसानेके जाल-विशेष' के २ नाम हैं ॥

१ [1]शुल्बं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।
२ उद्घाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥
३ पुंसि वेमा [2]वायदण्डः ४ सूत्राणि नरि तन्तवः ।
५ वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये ६ पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥ २८ ॥
७ [3]पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता ।
८ [4]'स्यात्सालभञ्जिका स्तम्भे—

१ शुल्बम् (+ सुम्बम् , शुम्बम् , शुम्बम् , ३ न; शुल्बा, सुल्बी, २ स्त्री), वराटकम् (+ वटाकरः । + पु । २ न), रज्जुः (स्त्री), वटी (त्रि । + स्त्री), गुणः (+ वटीगुणः त्रि । पु), 'रस्सी' के २ नाम हैं ॥

२ उद्घाटनम् (+ उद्घाननम्), घटीयन्त्रम् (२ न), 'कुएँसे पानी निकालेवाले पुरवट मोट, रँहट आदि साधन' के २ नाम हैं ॥

३ वेमा (= वेमन् । + न), वायदण्डः (+ वापदण्डः । २ पु), 'जुलाहोंके शास्त्र-विशेष' अर्थात् 'जिससे कपड़ा बुनते समय सूत बराबर किया जाता है उस हथियार' के २ नाम हैं ॥

४ सूत्रम् (न), तन्तुः (पु । + सूत्रतन्तुः), 'सूत' के २ नाम हैं ॥

५ वाणिः, व्यूतिः (+ व्युतिः । २ स्त्री), 'कपड़े आदिको बुनने' के २ नाम हैं ॥

६ [5]पुस्तम् (न), 'मिट्टी, कपड़े या चमड़े आदिसे लीपने या पुतली बनाने' का १ नाम है ॥

७ पाञ्चालिका (+ पञ्चालिका), पुत्रिका (२ स्त्री), 'हाथी-दाँत या कपड़े आदिकी पुतली' के २ नाम हैं ॥

८ [सालभञ्जिका (+ सालभञ्जी । स्त्री), 'लकड़ीकी पुतली' का १ नाम है]॥

१. 'शुल्बं वराटकः' इति 'सुम्बं वटाकरः' इति च पाठान्तरे, द्वितीयं पाठान्तरं 'स्वामि' सम्मतमिति मा० दी० । परन्तेन तथा पाठान्तरानुक्ते मा० दी० चिन्त्यः ।

२. 'वापदण्डः' इति पाठान्तरम् ॥ ३. 'पञ्चालिका' इति पाठान्तरम् ॥

४. 'स्यात्सालभञ्जिका······त्रिषु' इत्ययमंशः मा० दी० क्षी० स्वा० मूले नोपलभ्यते, किन्तु क्षी० स्वा० व्या.ख्याने मूलेरूपेणोपलभ्यते । 'जतुत्रपु······त्रिषु' इत्युत्तरार्द्धं तु मही० व्याख्याने मूले चोपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

५. तदुक्तम्—'मृदा वा दारुणा वाथ वस्त्रेणाप्यथ चर्मणा ।
लोहरत्नैः कृतं वापि पुस्तमित्यभिधीयते' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ लेप्येनाञ्जलिकारिका (३२)

२ जतुत्रपुविकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु (३३)

३ पिटकः पेटकः [1]पेटा मञ्जूषा४ऽथ [2]विहङ्गिका ॥ २९ ॥

भारयष्टि५स्तदालम्बि शिक्यं काचो६ऽथ पादुका।

पादूरुपानत्स्त्री ७ सैवानुपदीना पदायता ॥ ३० ॥

८ नध्री वध्री वरत्रा स्या९दश्वादेस्ताडनी कशा।

१० चाण्डालिका तु [3]कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ ३१ ॥

---

१ [अञ्जलिकारिका (स्त्री), 'लेप्यमयी पुतली' का १ नाम है] ॥

२ जातुषम्, त्रापुषम् (२ त्रि), 'लाह और राँगेकी पुतली' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

३ पिटकः, पेटकः (२ पु), पेटा (+पेडा मुकु०, पीडा क्षी० स्वा०), मञ्जूषा (२ स्त्री), 'पेटी, झँपोली, बक्स आदि' के ४ नाम हैं। 'क्षी० स्वा० के मतसे पहलेवाले २ नाम 'छोटी झाँपी' के और अन्तवाले २ नाम 'बड़े झाँपी, बक्स आदि' के हैं) ॥

४ विहङ्गिका (+विहङ्गमा), भारयष्टिः (२ स्त्री), 'बहँगीके डण्डे' के २ नाम हैं ॥

५ शिक्यम् (न) काचः (पु), 'बहँगीके डण्डेमें लटकते हुए सिकहर' के २ नाम हैं ॥

६ पादुका, पादूः, उपानत् (= उपानह् । +पादत्राणम् ३ स्त्री), 'जूता खड़ाऊँ, बूट, सिलेपड़, चट्टी आदि' के ३ नाम हैं ॥

७ अनुपदीना (स्त्री) 'पैतावा या पूरे पैरके जूते'(बूट)'का १ नाम है ॥

८ नध्री, वध्री, वरत्रा (३ स्त्री), 'चमड़ेकी रस्सी' के ३ नाम हैं ॥

९ कशा (स्त्री) 'कोड़ा या चाबुक' का १ नाम है ॥

१० चाण्डालिका (+चण्डालिका), कण्डोलवीणा (+कण्टोलवीणा, कण्डोली), चण्डालवल्लकी (३ स्त्री), 'चण्डाल आदि नीचोंके किंगरी नामक बाजा' के ३ नामक हैं ॥

---

१. 'पाडा' इति 'पेडा' इति च क्रमशः क्षी० स्वा० मुकु० संमतं पाठान्तरम् ॥

२. 'विहङ्गमा' इति मुकुटसंमतं पाठान्तरम् ॥ ३. 'कण्टोलवीणा' इति पाठान्तरम् ॥

१ नाराची स्यादेषणिका २ शाणस्तु निकषः कषः ।
३ व्रश्चनः [1]पत्रपरशु ४ रीषिका तूलिका समे ॥ ३२ ॥
५ तैजसावर्तनी मूषा ६ भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।
७ [2]आस्फोटनी वेधनिका ८ कृपाणी कर्त्तरी समे ॥ ३३ ॥
९ वृक्षादनी वृक्षभेदी १० टङ्कः [3]पाषाणदारणः ।
११ क्रकचोऽस्त्री करपत्रम्—

---

१ नाराची, एषणिका (२ स्त्री), 'सोना-चाँदी तोलनेवाले काँटे' के २ नाम हैं ॥

२ शाणः, निकष, कषः (३ पु), 'कसौटी या सान' के ३ नाम हैं ॥

३ व्रश्चनः (+ वृश्चनः), पत्रपरशुः (२ पु), 'सोना-चाँदी आदि काटनेकी छेनी आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

४ ईषिका (+ एषिका, इषिका, इषीका), तूलिका (+ तुलिः । २ स्त्री), 'कूँची, चित्रमें रंग भरनेकी कलम' के २ नाम हैं ॥

५ तैजसावर्तनी (+ आवर्तनी), मूषा (+ मूषी, मुषा, मुषी । २ स्त्री), 'सोना-चाँदी गलानेकी घरिया (मिट्टीके पात्र-विशेष)' के २ नाम हैं ॥

६ भस्त्रा, चर्मप्रसेविका (+ चर्मप्रसेवकः पु । २ स्त्री), 'भाथी' के २ नाम ॥

७ आस्फोटनी (+ लास्फोटनी); वेधनिका (+ वेधनी । २ स्त्री), 'मोती-मणि आदि छेदनेवाली बर्मी' के २ नाम हैं ॥

८ कृपाणी, कर्त्तरी (२ स्त्री), 'सोना चाँदी आदि काटनेवाली कैंची' के २ नाम हैं ॥

९ वृक्षादनी (स्त्री), वृक्षभेदी (= वृक्षभेदिन् पु), 'काष्ठ काटनेवाले बसूला, बटाली आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

१० टङ्कः (+ तङ्कः । पु न), पाषाणदारणः (+ पाषाणदारकः । पु), 'पाषाण तोड़नेवाले टांकी, छेनी, घन आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

११ क्रकचः (पु न), करपत्रम् (न), 'लकड़ी चीरनेवाले आरा, शाह या आरी आदि हथियार' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'पत्रपरशुरेषिका' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'लास्फोटनी' इति मुकुटः इति मा० दी० ॥
३. 'पाषाणदारकः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ आरा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥
२ सूर्मी स्थूणायःप्रतिमा ३ शिल्पं कर्म कलादिकम्।
४ प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ॥ ३५ ॥
प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधि ५ रुपमोपमानं स्यात्।
६ वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक् ॥ ३६ ॥
साधारणः समानश्च ७ स्युरुत्तरपदे त्वमी।
निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ॥ ३७ ॥
८ कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम्।

---

१ आरा, चर्मप्रभेदिका (२ स्त्री), 'चमड़ा काटनेवाले हथियार' के २ नाम हैं॥

२ सूर्मी (+ सूर्मिः), स्थूणा, अयःप्रतिमा (३ स्त्री), 'लोहेकी मूर्त्ति' के ३ नाम हैं॥

३ शिल्पम् (न), 'कला (कारीगरी) आदि कौशलके काम' का १ नाम है॥

४ प्रतिमानम्, प्रतिबिम्बम् (२ न), प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृतिः, अर्चा (५ स्त्री), प्रतिनिधिः (पु), 'प्रतिमा, फोटो, तस्वीर' के ८ नाम हैं॥

५ उपमा (स्त्री), उपमानम् (न), 'उपमा, मिसाल' के २ नाम हैं। ('किसी २ के मतसे 'प्रतिमानम्,······' ७ नाम एकार्थक हैं')॥

६ समः, तुल्यः, सदृक्षः; सदृशः, सदृक् (= सदृश्), साधारणः, समानः (७ त्रि), 'सदृश, समान, बराबर' के ७ नाम हैं॥

७ निभः, संकाशः, नीकाशः, प्रतीकाशः, उपमा, आदि (+ भूतः, रूपः, कल्पः, देशः, देशीयः। ५ त्रि), ये, ५ शब्द किसी शब्दके उत्तरमें रहनेपर उसके सदृश अर्थको कहते हैं'। ('जैसे-'राजनिभः, राजसंकाशः,······' अर्थात् 'राजाके समान'। उत्तरपद शब्द समासमें रूढ है. अत एव 'चन्द्रेण निभः' यहांपर यद्यपि 'चन्द्र' शब्दके उत्तरमें 'निभ' शब्द है, तथापि सदृश अर्थका बोध नहीं करता')॥

८ कर्मण्या (+ भर्मण्या), विधा, भृत्या, भृतिः (४ स्त्री,) भर्म (= भ-

भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ॥ ३८ ॥
१ सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्वरुणात्मजा ।
गन्धोत्तमाप्रसन्नेराकादम्बर्यः परिस्रुता ॥ ३९ ॥
मदिरा कश्यमद्ये चाप्य २ वदंशस्तु भक्षणम् ।
३ शुण्डा पानं मदस्थानं ४ मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ४० ॥
५ मध्वासवो माधवको मधु[1] माध्वीकमद्वयोः ।
६ मैरेयमासवः सीधुः—

र्मन्), वेतनम्, भरण्यम्, भरणम्, मूल्यम् (५ न), निर्वेशः, पणः (२ पु), 'वेतन तनख़ाह या मज़दूरी' के ११ नाम हैं ॥

१ सुरा, हलिप्रिया, हाला, परिस्रुत्, वरुणात्मजा (+ वारुणी), गन्धोत्तमा, प्रसन्ना इरा, कादम्बरी, परिस्रुता (+ परिस्रुता), मदिरा (+ मदिष्ठा, स्वादुरसा । ११ स्त्री), कश्यम्, मद्यम् (+ कश्यम्, हारहूरम्, कपिशायनम् । २ न), 'मदिरा, शराब' के १३ नाम हैं ॥

२ अवदंशः (+ उपदंशः, चक्षणम्, चर्वणम् । पु), 'मदिरा पीनेके समय रुचि बढ़नेके लिये नमकीन चना आदि चबाने' का १ नाम है ॥

३ शुण्डा (स्त्री), पानम् (+ शुण्डापानम्), मदस्थानम् (२ न), 'मदिरा पीनेके स्थान' के ३ नाम हैं ॥

४ मधुवारः, मधुक्रमः (२ पु), 'मदिरा पीनेके बारी' के २ नाम हैं ॥

५ मध्वासवः, माधवकः (२ पु), मधु, माध्वीकम् (+ मार्द्वीकम् । २ न), 'महुएके शराब' के ४ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे प्रथम २ नाम उक्तार्थक और अन्तवाले २ नाम 'दाखके शराब' के हैं ॥

६ [2]मैरेयम् (न), आसवः (पु), सीधुः (+ शीधुः । पु न), ऊख (गन्ना) के रस या शाक आदिसे बने हुए मदिरा' के ३ नाम हैं ॥

१. 'मार्द्वीकमद्वयोः' इति भा० दी० सम्मतं 'मार्द्वीकमद्ययोः इति च क्षी० स्वा० सम्मतं पाठान्तरम् । 'अत्र 'मद्य'स्योक्तत्वात् 'अद्वयोः' इत्येवं पाठः' इत्ययुक्तम्, सामान्यविशेषरूपत्वेनादोषात्' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'शीधुरिक्षुरसैः पक्वैरपक्वैरासवो भवेत् । मैरेयं धातकीपुष्पगुडधानाम्लसंहितम्' ॥१॥ इति माधवोक्तभेदाविवक्षयेयमुक्तिः ॥

—१ मेदको जगलः समौ ॥ ४१ ॥
२ सन्धानं स्यादभिषवः ३ किण्वं पुंसि तु[1] नग्नहूः ।
४ [2]कारोत्तरः सुरामण्ड ५ आपानं पानगोष्ठिका ॥ ४२ ॥
६ चषकोऽस्त्री पानपात्रं ७ सरकोऽप्यनुतर्षणम् ।
८ [3]धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूतकृत्समाः ॥ ४३ ॥
९ स्युर्लग्नकाः प्रतिभुवः १० सभिका द्यूतकारकाः ।

---

१ मेदकः, जगलः (२ पु), 'मदिराके काढ़े या मदिरा बनानेके लिये पीसे हुए पदार्थ विशेष' के २ नाम हैं ॥

२ सन्धानम् (न), अभिषवः (पु) 'मदिरा बनाने' के २ नाम हैं ॥

३ किण्वम् (न), नग्नहूः (+ नग्नहुः । पु), 'चावल आदिको उबाल (औंट) कर तैयार किये हुए मदिराके बीज' के २ नाम हैं ॥

४ कारोत्तरः (+ कारोत्तमः), सुरामण्डः (भा० दी० । २ पु), मदिराके माँड़ (ऊपरी हिस्सा)' के २ नाम हैं ॥

५ आपानम् (न), पानगोष्ठिका (+ पानगोष्ठी । स्त्री), 'मदिरा पीनेके जमाव (अड्डा), के २ नाम हैं ॥

६ चषकः (पु न), पानपात्रम् (न), 'मदिरा पीनेके प्याले के २ नाम हैं ॥

७ सरकः (पु न), अनुतर्षणम् (न), 'मदिरा पीने या परोसने (बाँटने), के २ नाम हैं । 'मुकु० के मतमे 'चषकः,……' ४ नाम 'मदिरा पीनेके प्याले' के ही हैं') ॥

८ धूर्तः (+ धार्तः), अक्षदेवी (= अक्षदेविन्); कितवः, अक्षधूर्तः, द्यूतकृत् (५ पु), 'जुवाड़ी या जुवा खेलनेवाले' के ५ नाम हैं ॥

९ लग्नकः, प्रतिभूः (२ पु), 'मध्यस्थ, बीचवान, जामिनदार' के २ नाम हैं ॥

१० सभिकः, द्यूतकारकः (२ पु), 'नालदार' अर्थात् 'जुवा खेलानेवाले के २ नाम हैं ॥

---

१. 'नग्नहुः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'कारोत्तमः' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'धार्तोऽक्षदेवी' इति पाठान्तरम् ॥

१ द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ॥ ४४ ॥
२ पणोऽक्षेषु ग्लहो ३ऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ।
४ परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम् ॥ ४५ ॥
५ अष्टापदं शारिफलं ६ प्राणिद्यूतं समाह्वयः ।
७ उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ॥ ४६ ॥

---

१ द्यूतः (पु न), अक्षवती (स्त्री), कैतवम् (न), पणः (पु), 'जुआ' के ४ नाम हैं ॥

२ पणः, ग्लहः (२ पु), 'जुएमें दावपर रक्खे हुए रुपया आदि' के २ नाम हैं ॥

३ अक्षः, देवनः, पाशकः (+ प्राशकः । ३ पु), 'पाशा' के ३ नाम हैं ॥

४ परिणायः (पु न), 'शारी (गोटी) को चलने' के २ नाम हैं ॥

५ अष्टापदम् (पु न), शारिफलम् (न), बिसात' अर्थात् 'गोटियोंको रखने (खेलनेके समय बिछाने) के लिये कपड़े या काष्ठके बने हुए आधार—विशेष' के २ नाम हैं ॥

६ प्राणिद्यूतम् (भा० दी० । न),[1] समाह्वयः (पु), 'बाजी रखकर पशु-पक्षियों (मुर्गा, तीतर, भेंडा आदि) को लड़ाने' के २ नाम हैं ॥

७ ग्रन्थकार 'उक्ता—' इस श्लोकसे सब लिङ्गवाले शब्दोंके सब लिङ्गोंके नहीं कहनेके दोषका निवारण करते हैं । इस 'शूद्रवर्ग' में अवयवार्थक (मार्दङ्गिक, मौरजिक आदि) शब्द काव्य, पुराण और कोषोंमें प्रायः पुंलिङ्गमें ही उपलब्ध होनेके कारण यहाँ भी वे पुंलिङ्गमें ही कहे गये हैं, वे (मार्दङ्गिक मौरजिक आदि) शब्द उसके धर्म और योग आदिके वशसे अन्य जातिमें वृत्ति होने पर तदनुसार (वृत्तिके अनुसार) स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक भी होते हैं, ऐसा जानना चाहिये । और अवयवार्थको छोड़कर समुदायमें शक्त (कुम्भकार कुलाल, करण आदि) जो शब्द यहाँ (शूद्रवर्गमें) केवल पुंलिङ्गमें ही कहे गये हैं, वे (कुम्भकार, कुलाल, करण आदि) शब्द शूद्र आदि शब्दोंके समान

---

१. तदुक्तम्—

'अप्राणिभिः कृतं यत्तु लोके तद् द्यूतमुच्यते ।
प्राणिभिः क्रियते यत्तु स विज्ञेयः समाह्वयः' ॥ १ ॥ इति ॥

ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते।

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

अथ काण्डसमाप्तिः—

१ [1]इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने।
द्वितीयकाण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना'परपर्यायके
अमरकोषे' द्वितीयो भूम्यादिकाण्डः समाप्तः ॥

स्त्रीवाचक होनेपर[2] स्त्रीलिङ्गमें और नपुंसकमें वृत्ति होनेपर नपुंसकलिङ्गमें प्रयुक्त होते हैं, ऐसा समझना चाहिये। ('उदाहरण क्रमशः। यौगिक शब्द, तीनो लिङ्गमें जैसे—मार्दङ्गिकः पुरुषः, मार्दङ्गिका स्त्री, मार्दङ्गिकं कुलम्; मौरजिकः पुरुषः, मौरजिकी स्त्री, मौरजिकं कुलम्;……। रूढ शब्द, तीनों लिङ्गों में जैसे—कुम्भकारः पुरुषः, कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कुलम्; कुलालः पुरुषः, कुलाली स्त्री, कुलालं कुलम्, करणः पुरुषः, करणी स्त्री, करणं कुलम्;……। इसी प्रकार अन्यान्य शब्दोंके उदाहरणको समझना चाहिये') ॥

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

अथ काण्डसमाप्तिः—

१ श्री अमरसिंहके बनाये हुए नाम (भूः, भूमिः, अचला……) और लिङ्ग (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) को बतलानेवाले 'नामलिङ्गानुशासन' अर्थात् 'अमरकोष' नाम इस ग्रन्थमें 'भूमि आदि ('आदि शब्दसे पुर, शैल, वनौषधि, आदि १० वर्गोंका संग्रह है') वर्गोंवाला यह दूसरा काण्ड (भाग) अङ्ग (मूल, शाखा, नगर, आदि और उपाङ्ग मृत्सा आदि) के सहित समर्थित होकर सम्पूर्ण हुआ ॥

इति पण्डितप्रवरश्री'रामस्वार्थमिश्र' तनुजश्री 'हरगोविन्दमिश्र' विरचितायां 'मणिप्रभा'ख्या'मरकोष' व्याख्यायां द्वितीयो भूम्यादिकाण्डः समाप्तः ॥

---

१. अयं क्षेपकश्लोकः क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नोपलभ्यते, महे० मा० दी० पुस्तकयोर्मूलमात्रमुपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

२. 'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् (पा० सू० ४।१।६३) इत्यनेनेति ज्ञेयम् ॥

अथ तृतीयकाण्डम्

वर्गभेदान् कथयति—

१ विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ।
लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये [1]वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

---

१ सर्वसाधारण होनेसे 'सामान्यकाण्ड' नामक इस प्रकरणमें विशेष्य (स्त्री, दारा, कलत्र आदि पहले कहे हुए शब्द) के अधीन लिङ्ग और वचन-वाले 'सुकृती साधु……' शब्दोंसे विशेष्यनिघ्नवर्ग १, आपसमें भिन्न-जातीय अर्थवाले 'कर्मपरायण,……' शब्दोंसे संकीर्णवर्ग २, अनेक अर्थवाले 'नाक, लोक,……' शब्दोंसे नानार्थवर्ग ३, 'आङ्……अव्यय शब्दोंसे अव्ययवर्ग ४, और प्रत्यय अर्थात् 'टाप्, ङीप्, घञ्, क,……' के द्वारा लिङ्गबोधक शब्दोंसे लिङ्गादिसंग्रहवर्ग ५, कहता हूँ। विशेष्यनिघ्न आदि ५ वर्गोंके क्रमशः उदाहरण। १ विशेष्यनिघ्नवर्ग जैसे—'सुकृतिनी साध्वी पुण्यवती वा स्त्री,……। २ संकीर्णवर्ग जैसे—'कर्मपरायण,……आदि शब्दोंसे 'कारीगरी, आदि किसी काममें लगे हुएका बोध होता है। ३ नानार्थ-वर्ग जैसे—'नाक, लोक,……' यहाँ पहलेवाले 'नाक, शब्दके 'स्वर्ग और आकाश' तथा दूसरे 'लोक' शब्दके 'संसार और जन' ये २-२ अर्थ हैं। ४ अव्ययवर्ग जैसे—'आङ्' के 'थोड़ा' मर्यादा और वाक्य, ये ३ अर्थ हैं। ५ लिङ्गादिसंग्रहवर्ग जैसे—'शेफालिका, अजा,……शब्दोंमें 'टाप्' आदि प्रत्ययोंसे स्त्रीलिङ्गका बोध होता है')। इन ५ वर्गोंके पूर्वोक्त स्वर्गादि वर्ग ही संश्रय हैं अर्थात् ये विशेष्यनिघ्न आदि वर्ग स्वतन्त्र नहीं हैं। अथवा—हेतुभूत विशेषणादिसे ये ५ वर्ग इस सामान्यकाण्डमें अवान्तरवर्ग (जैसे—नानार्थवर्गमें-कान्तादिवर्ग, अव्ययवर्गमें—अनेकार्थ एकार्थवर्ग, और लिङ्गादिसंग्रहवर्गमें—स्त्री-लिङ्गादिवर्ग) का संश्रय करते हैं ॥

---

१. 'वर्गसंग्रह' इत्येके पेठुः। सामान्यकाण्डे ये पञ्च वर्गाः स 'वर्गसंग्रह' इति योजना' इति क्षी० स्वा० ॥

परिभाषा—

१ 'स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः।
गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः॥ २॥

१. अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः।

२ सुकृती पुण्यवान् धन्यो—

---

१ जिस प्रकार स्त्रीलिङ्ग, पुंल्लिङ्ग आदिके सहित (स्त्री, दारा, कलत्र,······ शब्द) पदोंसे स्त्री, दारा, कलत्र आदि जो विशेष्य हैं, उनके भेदक गुण (सुकृती, साधु,······') द्रव्य (दण्ड,······) और क्रिया (पढ़ना, पढ़ाना, पकाना, बोलना,······) से युक्त शब्द वैसे ही होते हैं अर्थात् प्रथम काण्डमें प्रायः रूप आदिके भेदसे लिङ्गका ज्ञान होता है, किन्तु इस (सामान्य) काण्डमें जो शब्द कहे गये हैं, वे शब्द 'गुण, द्रव्य और क्रिया' से युक्त विशेष्योंके अधीन हैं। ('तीनोंके क्रमशः उदाहरण। १ गुणयुक्त जैसे—सुकृतिनी, साध्वी पुण्यवती वा स्त्री; सुकृतिनः, साधवः, पुण्यवन्तो वा दाराः; सुकृति, साधु, पुण्यवत् वा कलत्रम्;·········। २ द्रव्ययुक्त जैसे—दण्डिनी स्त्री, दण्डिनो दाराः, दण्डि कलत्रम्;·········। ३ क्रियायुक्त जैसे—'अध्यापिका स्त्री, अध्यापका दाराः, अध्यापकं कलत्रम्;······। इन उदाहरणोंमें 'स्त्री, दारा और कलत्र' शब्दोंके क्रमशः 'स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' होनेसे गुणयुक्त 'सुकृती, साधु,······' शब्द, द्रव्ययुक्त 'दण्डि,······' शब्द और क्रियायुक्त 'अध्यापिका,······' शब्द भी क्रमशः 'स्त्रीलिङ्ग, पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग'में ही प्रयुक्त होते हैं। इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये')॥

१. अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः।

१ सुकृती (=सुकृतिन्), पुण्यवान् (पुण्यवत्), धन्यः (३ त्रि), 'भाग्यवान्' के ३ नाम हैं॥

---

१. 'दाराद्यम्' इति पाठो युक्तः। 'स्त्रीदाराद्यै'रित्येके, स्त्रीपुन्नपुंसकैरित्यर्थ' इति क्षी० स्वा०।

—१ महेच्छस्तु महाशयः ।
२ हृदयालुः * सुहृदयो ३ महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥
४ प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।
वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥
५ पूज्यः प्रतीक्ष्यः ६ सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।
७ [1]दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥
८ [2]स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ।
९ जैवातृकः स्यादायुष्मान्—

---

१ महेच्छः, महाशयः (२ त्रि), बड़े एवं उन्नत अभिप्रायवाले' के २ नाम हैं ।

२ हृदयालुः (+ हृदयिकः), सुहृदयः (सुहृदयः । २ त्रि), 'अच्छे स्वभाववाले' के २ नाम हैं ॥

३ महोत्साहः, महोद्यमः (+ उद्यमवान् = उद्यमवत् । २ त्रि), 'उद्यमी' के २ नाम हैं ॥

४ प्रवीणः, निपुणः, अभिज्ञः, विज्ञः, निष्णातः, शिक्षितः, वैज्ञानिकः (+ विज्ञानिकः), कृतमुखः, कृती (= कृतिन्), कुशलः (+ कृतकर्मा = कृतकर्मन् , कृतार्थः, कृतकृत्यः, कृतहस्तः । १० त्रि), 'शिक्षित, ज्ञानी, लोकचतुर' के १० नाम हैं ॥

५ पूज्यः, प्रतीक्ष्यः (२ त्रि), 'पूजा करने योग्य' के २ नाम हैं ॥

६ सांशयिकः, संशयापन्नमानसः (२ त्रि), 'सन्देहयुक्त' के २ नाम हैं ॥

७ दक्षिणीयः (+ दक्षिणेयः), दक्षिणार्हः, दक्षिण्यः (+ दाक्षिण्यः । ३ त्रि), 'दक्षिणा देने योग्य ब्राह्मणादि' के ३ नाम हैं ॥

८ वदान्यः (+ वदन्यः), स्थूललक्ष्यः (+ स्थूललक्षः), दानशौण्डः, बहुप्रदः (४ त्रि) 'बहुत दान करने वाले' के ४ नाम हैं ॥

९ जैवातृकः, आयुष्मान् (= आयुष्मत् । २ त्रि), 'बहुत उम्रवाले' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'सहृदयः' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'दक्षिणेयो दक्षिणार्हस्तत्र दाक्षिण्य इत्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'स्युर्वदान्यस्थूललक्षदानशौण्डाः' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥
२ परीक्षकः कारणिको ३ वरदस्तु [1]समर्धकः।
४ हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥
५ दुर्मना विमना अन्तर्मनाः ६ स्यादुत्क उन्मनाः।
७ दक्षिणे सरलोदारौ ८ सुकलो दातृभोक्तरि ॥ ८ ॥
९ तत्परे [2]प्रसितासक्ता १० विष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः।

१ अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् (= शास्त्रविद्। २ त्रि), 'शास्त्र पढ़े हुए' के २ नाम हैं ॥

२ परीक्षकः, कारणिकः (आक्षपटलिकः। २ त्रि), 'परीक्षा करने-वाले या मठादिमें ब्राह्मण आदिकी परीक्षाकर दान आदि देनेवाले दानाध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥

३ वरदः, समर्धकः (+ समर्धुकः। २ त्रि), वर देने वाले' के २ नाम हैं ॥

४ हर्षमाणः, विकुर्वाणः, प्रमनाः (= प्रमनस्), हृष्टमानसः (४ त्रि), 'प्रसन्न चित्तवाले' के ४ नाम हैं।

५ दुर्मनाः (= दुर्मनस्), विमनाः (= विमनस्), अन्तर्मनाः (= अन्त-र्मनस्। ३ त्रि), 'उदास चित्तवाले' के ३ नाम हैं ॥

६ उत्कः, उन्मनाः (= उन्मनस्। + सोत्कण्ठः, उत्कण्ठितः, उत्सुकः। २ त्रि), 'उत्सुक' के २ नाम हैं ॥

७ दक्षिणः, सरलः, उदारः (३ त्रि), 'सरल स्वभाववाले' के ३ नाम हैं ॥

८ सुकलः (त्रि), 'दिल खोलकर देने और खानेवाले' का १ नाम है ॥

९ तत्परः, प्रसितः आसक्तः (३ त्रि), 'तैयार, काममें लगे हुए' के ३ नाम हैं ॥

१० इष्टार्थोद्युक्तः, उत्सुकः (२ त्रि), 'अपने इष्टसिद्धिके लिये काममें लगे हुए' के २ नाम हैं। ('अन्याचार्योंके मतसे 'तत्परः,……' ५ नाम एकार्थक हैं। पाठभेदसे 'तत्परः……' ३ और 'आविष्टः' ये ४ नाम पूर्वार्थक और 'उद्युक्तः, उत्सुकः' ये २ नाम 'उत्सुक' के हैं') ॥

१. समर्धुकः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'प्रसितासक्ताविष्टा उद्युक्तं इति पाठान्तरम् ॥

१ प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥
२ गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहतलक्षणौ ।
३ इभ्य आढ्यो धनी ४ स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥
अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिबृढोऽधिपः ।
५ अधिकर्द्धिः समृद्धः स्याद् ६ कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥
स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ।
७ वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥
८ [1]निर्वार्यः कार्यकर्ता यः सम्पन्नः सत्त्वसम्पदा ।

---

१ प्रतीतः, प्रथितः, ख्यातः (+ विख्यातः, प्रसिद्धः), वित्तः, विज्ञातः, विश्रुतः (६ त्रि), 'मशहूर, प्रसिद्ध' के ६ नाम हैं ॥

२ कृतलक्षणः, आहतलक्षणः (आहितलक्षणः । २ त्रि), 'विद्या, शिल्प आदि किसी गुणसे प्रसिद्ध' के २ नाम हैं ॥

३ इभ्यः, आढ्यः, धनी (= धनिन् + धनिकः । ३ त्रि), 'धनी' के ३ नाम हैं ॥

४ स्वामी (= स्वामिन्), ईश्वरः, पतिः, ईशिता (ईशितृ), अधिभूः, नायकः, नेता (= नेतृ), प्रभुः (विभुः), परिबृढः, अधिपः (१० त्रि), 'स्वामी, मालिक' के १० नाम हैं ॥

५ अधिकर्द्धिः, समृद्धः (२ त्रि), 'बहुत समृद्धिवाले' के २ नाम हैं ॥

६ कुटुम्बव्यापृतः, अभ्यागारिकः (२ त्रि), उपाधिः (नि० पु), 'परिवारके पालन-पोषणमें लगे हुए' के ३ नाम हैं ॥

७ सिंहसंहननः (त्रि), 'सुडौल तथा सुन्दर शरीरवाले' का १ नाम है ॥

८ निर्वार्यः (दिर्वार्यः । त्रि),[2] 'सत्त्वसंपत्ति (सुख-दुःखमें बराबर उत्साह) से काम में लगनेवाले' का १ नाम है ॥

---

१. 'निर्वार्यः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'व्यसनेऽभ्युदये वापि अविकारि सदा मनः ।
तत्तु सत्त्वमिति प्रोक्तं नयविद्भिर्बुधैः किल' ॥ १ ॥ इति ॥

१ अवाचि मूकोऽथ[1] मनोजवसः पितृसन्निभः ॥ १३ ॥
३ सत्कृत्यालङ्कृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ।
४ लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान् ५ स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥
६ स्याद्दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः ।

---

१ अवाक् (=अवाच्), मूकः (२ त्रि), 'गूंगे' के २ नाम हैं ॥

२ मनोजवसः (+मनोजवः, मनोजवाः = मनोजवस्), पितृसन्निभः (२ त्रि), 'ज्ञान, पद या अवस्थादिके कारण पिताके समान पूज्य व्यक्ति' के २ नाम हैं ॥

३ कूकुदः (+कुकुदः । त्रि), 'कन्याको भूषण वस्त्रादिसे अलङ्कृतकर विद्वान् वरको बुलाकर कन्यादान करनेवाले' का १ नाम है। ('इस तरह 'ब्राह्म-विवाह' में होता है । ब्राह्म १, दैव २, आर्ष ३, प्राजापत्य ४, आसुर ५, गान्धर्व ६, राक्षस ७ और पैशाच ८, ये आठ प्रकार के विवाह[2] होते हैं') ॥

४ लक्ष्मीवान् (=लक्ष्मीवत्), लक्ष्मणः, श्रीलः (+श्लीलः), श्रीमान् (=श्रीमत् । ४ त्रि), 'श्रीमान्' के ४ नाम हैं ॥

५ स्निग्धः, वत्सलः (२ त्रि), 'स्नेह करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ दयालुः, कारुणिकः, कृपालुः, सूरतः (+सुरतः । ४ त्रि), 'दया करनेवाले' के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'मनोजवः स' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं मनुना—'ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः ।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ १ ॥

तत्र 'ब्राह्मविवाह'लक्षणम्—

आच्छाद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम् ।
आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः' ॥१॥ इति च मनुः ३।२१,२७॥

अधिकं द्रष्टुमिच्छुकैर्मनुस्मृतौ (३।२१-३४), शङ्खस्मृतौ (४।२—९), याज्ञवल्क्यस्मृतौ (१।५८-६१), चतुर्वर्गचिन्तामणेः (हेमाद्रेः) दानखण्डे (पृ० ६६५-६४८) च द्रष्टव्यम् ॥

१ स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥
२ परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ।
३ अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥
४ खलपूः स्याद्बहुकरो ५ दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।
६ जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात् ७ कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥
८ कर्मक्षमोऽलङ्कर्मीणः ९ क्रियावान् कर्मसूद्यतः ।
१० स कार्मः कर्मशीलो यः—

---

१ स्वतन्त्रः, अपावृतः, स्वैरी (=स्वैरिन् । स्वैरः) स्वच्छन्दः, निरवग्रहः (+ निर्यन्त्रणः, निरङ्कुशः, स्वाधीनः, यथाकमी = यथाकामिन् । ५ त्रि), 'स्वतन्त्र' के ५ नाम हैं ॥

२ परतन्त्रः, पराधीनः, परवान् (=परवत्), नाथवान् (= नाथवत् । ४ त्रि), 'पराधीन' के ४ नाम हैं ॥

३ अधीनः, निघ्नः, आयत्तः, अस्वच्छन्दः, गृह्यकः (५ त्रि), 'वश' अधीन' के ५ नाम हैं । ('एक आचार्यके मतसे 'परतन्त्रः,'……' ९ नाम 'पराधीन' के ही हैं') ॥

४ खलपूः बहुकरः (२ त्रि), 'खलिहान या जमीनको साफ करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ दीर्घसूत्रः (+ दीर्घसूत्री = दीर्घसूत्रिन्), चिरक्रियः (२ त्रि), 'दीर्घसूत्री' अर्थात् 'काममें बहुत देर लगानेवाले, के २ नाम हैं ॥

६ जाल्मः, असमीक्ष्यकारी (= असमीक्ष्यकारिन् । २ पु), 'बिना विचारे काम करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ कुण्ठः (त्रि), 'थोड़ा काम करनेवाले' अर्थात् 'काम करनेमें मन्द' का १ नाम है ॥

८ कर्मक्षमः, अलङ्कर्मीणः (२ त्रि), 'काम करनेमें समर्थ' के २ नाम हैं ॥

९ क्रियावान् (= क्रियावत् । त्रि), 'काममें लगे या तैयार रहनेवाले' का १ नाम है ॥

१० कार्मः, कर्मशीलः, (२ त्रि), महे० के मतसे 'सर्वदा काममें लगे रहनेवाले' के और भा० दी० के मतसे 'बिना फलकी इच्छा किये काम करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

—१ कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥
२ [1]भरण्यभुक्कर्मकरः ३ कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।
४ अपस्नातो मृतस्नात ५ आमिषाशी तु शौष्कलः ॥ १९ ॥
६ बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ।
७ परान्नः परपिण्डादो ८ भक्षको घस्मरोऽद्मरः ॥ २० ॥
९ आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते ।
१० उभौ त्वात्मम्भरिः कुक्षिम्भरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

१ कर्मशूरः, कर्मठः (२ त्रि), 'आरम्भ किये हुए कामको यत्नपूर्वक पूरा करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ [2]भरण्यभुक् (= भरण्यभुज् । + कर्मण्यभुक् = कर्मण्यभुज्), कर्मकरः (२ त्रि), 'मजदूर या मूल्य लेकर काम करनेवाले नौकर आदि' के २ नाम हैं ॥

३ कर्मकारः (त्रि), 'बिना वेतन आदि लिये काम करनेवाले' का १ नाम है । (जैसे—स्वयंसेवक, श्रमदानी,……) ॥

४ अपस्नातः, मृतस्नातः (२ त्रि), 'मरे हुए परिवार आदिके उद्देश्यसे स्नान किये हुए' के २ नाम हैं ॥

५ आमिषाशी (= आमिषाशिन्), शौष्कलः (+ शाष्कलः, शुष्कलः । २ त्रि), 'मांस खानेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ बुभुक्षितः क्षुधितः, जिघत्सुः, अशनायितः (४ त्रि), 'भूखे हुए' के ४ नाम हैं ॥

७ परान्नः, परपिण्डादः (२ त्रि), 'दूसरेके अन्नको खाकर जीनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ भक्षकः, घस्मरः, अद्मरः (३ त्रि), 'बहुत खानेवाले' के ३ नाम है ॥

९ आद्यूनः, औदरिकः (२ त्रि), 'अत्यन्त भूखे हुए' के २ नाम हैं ॥

१० आत्मम्भरिः, कुक्षिम्भरिः (+ उदरम्भरिः । २ त्रि), 'पेटू' अर्थात् 'अपने पेट भरनेसे मतलब रखनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१. 'कर्मण्यभुक्कर्मकरः' इति पाठान्तरम् ॥

२. अयं प्राक् (२।१०—१५) श्लोकोऽपि पर्यायान्तरकथनायैव पुनरप्युक्तः ॥

१ सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी २ [1]गृध्नुस्तु गर्धनः ।
लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक् ३ समौ लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥
४ [2]सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्या५दविनीतः समुद्धतः ।
६ मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबाः ७ कामुके कमिताऽनुकः ॥ २३ ॥
कम्रः कामयिताऽभीकः [3]कमनः कामनोऽभिकः ।
८ [4]छेको विदग्धे ९ व्यसनिपञ्चभद्रावुपप्लुते (१)

१ सर्वान्नीनः, सर्वान्नभोजी (= सर्वान्नभोजिन् । २ त्रि), 'सब जातिके अन्नको खानेवाले औघड़ परमहंस आदि' के २ नाम हैं। (ऐसा पहले होता था, किन्तु वर्तमानमें तो स्पर्शास्पर्शका विचार अत्यन्त शिथिल होने से ऐसे ही व्यक्तियोंकी संख्या अधिक हो गयी है) ॥

२ गृध्नुः (+ गृध्नः), गर्धनः, लुब्धः, अभिलाषुकः, तृष्णक् (= तृष्णज् । + तृष्णकः । ५ त्रि), भा० दी० के मतसे 'लोभी' के ५ नाम हैं। ('महे० आदिके मतसे गृध्नुः,……' २ नाम 'आकाङ्क्षा करनेवाले' के और 'लुब्धः,……' ३ नाम 'अभिलाष करनेवाले' के हैं) ॥

३ लोलुपः, लोलुभः (२ त्रि), 'अत्यन्त लोभी' के २ नाम हैं ॥

४ सोन्मादः (+ उन्मदः, सून्मदः), उन्मदिष्णुः (२ त्रि), 'पागल' के २ नाम हैं ॥

५ अविनीतः, समुद्धतः (+ निर्मर्यादः । २ त्रि), 'उद्धत' के २ नाम हैं ॥

६ मत्तः, शौण्डः, उत्कटः (+ वर्द्धिष्णुः), क्षीबः (+ क्षीबा = क्षीबन् । ४ त्रि), 'मतवाले' के ४ नाम हैं ॥

७ कामुकः, कमिता (= कमितृ), अनुकः, कम्रः, कामयिता (= कामयितृ), अभीकः, कमनः, कामनः, अभिकः (९ त्रि), 'कामी' के ९ नाम हैं ॥

८ [छेकः, विदग्धः (२ त्रि), 'विदग्ध, चतुर' के २ नाम हैं] ॥

९ [व्यसनी (= व्यसनिन्), पञ्चभद्रः, उपप्लुतः (+ विप्लुतः । ३ त्रि), 'व्यसनी' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'गृध्नस्तु' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'उन्मदस्तून्मदिष्णुः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'कामनः कमनोऽभिकः' इति तु युक्तः पाठः' इति क्षी० स्वा० ॥

४. 'छेको……विटः' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमुपलभ्यते, इत्यतोऽस्य प्रकृतोपयोगितयात्र क्षेपकरूपेण मया निहितः ॥

१ वेश्यापतिर्भुजङ्गः स्यात् २ षिङ्गः पल्लविको विटः' (२)
३ विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः ॥ २४ ॥
४ वश्यः प्रणेयो ५ निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः।
६ धृष्टे 'धृष्णग्वियातश्च ७ प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥
८ स्यादधृष्टे तु शालीनो ९ विलक्षो विस्मयान्विते।
१० अधीरे कातर११स्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥

---

१ [वेश्यापतिः (+ गणिकापतिः), भुजङ्गः (२ पु), 'वेश्याके पति' अर्थात् 'रण्डीबाज' के २ नाम हैं] ॥

२ [षिङ्गः, पल्लविकः (+ पल्लवकः), विटः (+ न । ३ पु), 'षिड' के ३ नाम हैं] ॥

३ विधेयः, विनयग्राही (= विनयग्राहिन्), वचनेस्थितः, आश्रवः (४ त्रि), 'आज्ञाकारी' के ४ नाम हैं। (किसी २ आचार्यके मतसे प्रथम दो नाम जिसे विनय सिखलाया जाय उसके तथा अन्तवाले दो नाम आज्ञाकारीके हैं) ॥

४ वश्यः, प्रणेयः (२ त्रि), 'वशमें रहनेवाले' के २ नाम हैं। ('किसी २ के मतसे 'विधेयः,......' ६ नाम एकार्थक हैं ') ॥

५ निभृतः, विनीतः, प्रश्रितः (३ त्रि), 'विनीत' के ३ नाम हैं ॥

६ धृष्टः, धृष्णक् (= धृष्णज् । + धृष्णुः) वियातः (३ त्रि), 'ढीठ' के ३ नाम हैं ॥

७ प्रगल्भः, प्रतिभान्वितः (२ त्रि), 'प्रतिभाशाली' (नवीन २ बुद्धिवाले [२]) के २ नाम हैं ॥

८ अधृष्टः, शालीनः (२ त्रि), 'सलज्ज' अर्थात् 'जो ढीठ नहीं हो उस' के २ नाम हैं ॥

९ विलक्षः, विस्मयान्वितः (२ त्रि), 'आश्चर्यसे युक्त' के २ नाम हैं ॥

१० अधीरः, कातरः (२ त्रि) 'भूख, प्यास या भय आदिसे व्याकुल' के २ नाम हैं ॥

११ त्रस्तः (= त्रस्नुः), भीरुः, भीरुकः, भीलुकः (+ दरितः । ४ त्रि), 'डरे हुए या डरनेवाले' के ४ नाम हैं ॥

---

१. 'धृष्णुर्वियातश्च' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता' ॥ इति ॥

१ आशंसुराशंसितरि २गृहयालुर्ग्रहीतरि ।
३ श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते ४पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥
५ लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णु ६ वन्दारुरभिवादके ।
७ शरारुर्घातुको हिंस्रः ८ स्याद्वर्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥
९ उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता १०ऽलङ्करिष्णुस्तु मण्डनः ।
११ भूष्णुर्भविष्णुर्भविता १२ वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥
१३ निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्यात्—

---

१ आशंसुः, आशंसिता (=आशंसितृ । २ त्रि), 'अपने मनोरथको पूरा करनेकी इच्छावाले' के २ नाम हैं ॥

२ गृहयालुः, ग्रहीता (=ग्रहीतृ । २ त्रि), 'लेने (ग्रहण करने) वाले' के २ नाम हैं ॥

३ श्रद्धालुः, (त्रि), 'श्रद्धा करनेवाले' का १ नाम है ॥

४ पतयालुः, पातुकः (२ त्रि), गिरनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ लज्जाशीलः, अपत्रपिष्णुः (२ त्रि), लज्जा करनेवाले के २ नाम हैं ॥

६ वन्दारुः, अभिवादकः (२ त्रि), 'प्रणाम (वन्दनी आदि) करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ शरारुः, घातुकः, हिंस्रः (३ त्रि), हिंसा करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

८ वर्धिष्णुः, वर्धनः (२ त्रि), 'बढ़नेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ उत्पतिष्णुः, उत्पतिता (=उत्पतितृ । २ त्रि), 'उछलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० अलङ्करिष्णुः, मण्डनः (२ त्रि), 'अलंकृत करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

११ भूष्णुः, भविष्णुः, भविता (= भवितृ । ३ त्रि) 'होनहार' के ३ नाम हैं ॥

१२ वर्तिष्णुः, वर्तनः (२ त्रि), 'वर्तने (व्यवहारमें आने) वाले' के २ नाम हैं ॥

१३ निराकरिष्णुः, क्षिप्नुः (+ क्षिष्णुः । २ त्रि), 'निकालने या बहिष्कार करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

—१ सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ।
२ ज्ञाता तु विदुरो विन्दुः ३ विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥
४ विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसारिणि ।
५ सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥
६ क्रोधनोऽमर्षणः कोपी ७ चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ।
८ जागरूको जागरिता ९ घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥
१० स्वप्नक्शयालुर्निद्रालु ११ र्निद्राणशयितौ समौ ।

---

१ सान्द्रस्निग्धः (सा० पुं०), मेदुरः (२ त्रि), 'घन, गझिन या चिकने' के २ नाम हैं ॥

२ ज्ञाता (= ज्ञातृ), विदुरः, विन्दुः (३ त्रि), 'जाननेवाले' के ३ नाम हैं ॥

३ विकासी (= विकासिन् । + विकाशी = विकाशिन्), विकस्वरः (+ विकश्वरः । २ त्रि), 'खिलने (फूलने) वाले फूल आदि' के २ नाम हैं ॥

४ विसृत्वरः, विसृमरः, प्रसारी (= प्रसारिन्), विसारी (= विसारिन् । ४ त्रि), 'फैलनेवाली लता आदि' के ४ नाम हैं ॥

५ सहिष्णुः, सहनः, क्षन्ता (= क्षन्तृ), तितिक्षुः, क्षमिता (= क्षमितृ), क्षमी (= क्षमिन् । ६ त्रि), 'क्षमा करनेवाले' के ६ नाम हैं ॥

६ क्रोधनः (+ क्रोधी = क्रोधिन्), अमर्षणः, कोपी (= कोपिन् । + रोषणः, कोपनः । ३ त्रि) 'क्रोध करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

७ चण्डः, अत्यन्तकोपनः (२ त्रि), 'बहुत क्रोध करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

८ जागरूकः, जागरिता (= जागरितृ । २ त्रि), 'जागनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ घूर्णितः, प्रचलायितः (२ त्रि), 'घूर्णित' अर्थात् निद्रा या नशा आदिसे व्याकुल होकर झूमनेवाले' के २ नाम हैं ॥

१० स्वप्नक् (= स्वप्नज्), शयालुः (२ त्रि), 'सोनेवाले' के २ नाम हैं ॥

११ निद्राणः (+ निद्रितः), शयितः (+ सुप्तः । २ त्रि) 'सोये हुए' के २ नाम हैं ॥

१ पराङ्मुखः पराचीनः २ स्यादवाङप्यधोमुखः ॥ ३३ ॥
३ देवानञ्चति देवद्र्यङ् ४ विश्वद्र्यङ् विष्वगञ्चति ।
५ यः सहाञ्चति सध्र्यङ् स ६ स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्चति ॥ ३४ ॥
७ वदो वदावदो वक्ता ८ वागीशो वाक्पतिः समौ ।
९ वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी १० वावदूकोऽतिवक्तरि ॥ ३५ ॥
११ स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ।
१२ दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ—

---

१ पराङ्मुखः (+विमुखः), पराचीनः (२ त्रि), 'विमुख'के २ नाम हैं ॥

२ अवाङ् (=अवाच्), अधोमुखः (+अवाचीनः । २ त्रि), 'नीचे मुख करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ देवद्र्यङ् (=देवद्र्यच् त्रि), 'देवताओंकी पूजा करनेवाले' का १ नाम है ॥

४ विष्वद्र्यङ् (=विष्वद्र्यच् । +विश्वद्र्यङ् = विश्वद्र्यच् । त्रि), 'सब तरफ जाने या पूजा करनेवाले' का १ नाम है ॥

५ सध्र्यङ् (=सध्र्यच् त्रि), 'साथ २ चलने रहने या पूजा करनेवाले' का १ नाम है ॥

६ तिर्यङ् (=तिर्यच्), 'तिरछा (टेढ़ा) चलनेवाले' का १ नाम है ॥

७ वदः, वदावदः, वक्ता (=वक्तृ । ३ त्रि), 'बहुत बोलनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

८ वागीशः, वाक्पतिः (२ त्रि), 'सुन्दर बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

९ वाचोयुक्तिपटुः (+वाचोयुक्तिः, पटुः), वाग्मी (=वाग्मिन् । २ त्रि) 'युक्तियुक्त बोलनेवाले या नैयायिक आदि' के २ नाम हैं ॥

१० वावदूकः, अतिवक्ता (=अतिवक्तृ । २ त्रि), 'चतुरतासे अधिक बोलनेवाले' के २ नाम हैं । (भा॰ दी॰ के मतसे 'वाचोयुक्तिपटुः,……') ४ नाम एकार्थक हैं ॥

११ जल्पाकः, वाचालः, वाचाटः, बहुगर्ह्यवाक् (बहुगर्ह्यवाच् । ४ त्रि), 'निष्प्रयोजन अधिक बोलनेवाले' के ४ नाम हैं ॥

१२ दुर्मुखः, मुखरः, अबद्धमुखः (३ त्रि) 'अप्रिय बोलनेवाले' के ३ नाम हैं ॥

—१ [1]शक्लः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥
२ लोहलः स्यादस्फुटवाग् ३ गर्ह्यवादी तु कद्वदः ।
४ समौ कुवादकुचरौ ५ स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥
६ रवणः शब्दनो ७ नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।
८ जडोऽज्ञः—

१ शक्लः (+शक्तः, शक्रः), प्रियंवदः (२ त्रि), 'प्रिय बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ लोहलः, अस्फुटवाक् (=अस्फुटवाच् । २ त्रि), 'अस्पष्ट बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ गर्ह्यवादी (= गर्ह्यवादिन्), कद्वदः (+दुर्वाक् = दुर्वाच् । २ त्रि) 'बुरा बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

४ कुवादः, कुचरः (२ त्रि), 'दोषयुक्त या दोषारोपण करते हुए बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

५ असौम्यस्वरः, अस्वरः (२ त्रि), 'कौवे आदिकी तरह रूखे स्वरसे बोलनेवाले' के २ नाम हैं ॥

६ शब्दनः, रवणः (२ त्रि), 'विशेष शब्द करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ नान्दीवादी (= नान्दीवादिन्), नान्दीकरः (२ त्रि), नान्दी[2] (स्तुति-विशेष) को करनेवाले या नाटकके आरम्भमें मङ्गलपाठ करनेवाले पात्र' के २ नाम हैं ॥

८ [2]जडः, अज्ञः (२ त्रि), 'जड़, मूर्ख' के २ नाम हैं ॥

१. 'शक्तः' इति क्षी० स्वा० 'शक्लः' इति सर्वधरस्य संमतः पाठः ॥

२. नान्दीलक्षणं भरत आह । तद्यथा—

'आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रवर्तते ।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति कीर्तिता' ॥ १ ॥

जडलक्षणं यथा—

'इष्टं वाऽनिष्टं वा सुखदुःखे वा न चेह यो मोहात् ।
विन्दति परवशगः स भवेदिह जडसंज्ञकः पुरुषः' ॥ १ ॥ इति ॥

—१ * एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥
२ तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको ३ नग्नोऽवासा दिगम्बरे ।
४ निष्कासितोऽवकृष्टः स्याद् ५ अपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ३९ ॥
६ [2]आत्तगर्वोऽभिभूतः स्याद् ७ दापितः साधितः समौ ।
८ प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥
९ [3]निकृतः स्याद्विप्रकृतो १० विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।

---

१ एडमूकः (+ अनेडमूकः । त्रि), 'बोलने और सुननेमें अशिक्षित, बहरे, गूंगे' के २ नाम हैं ॥

२ तूष्णींशीलः, तूष्णीकः (२ त्रि), 'चुप रहनेवाले' के २ नाम हैं ॥

३ नग्नः, अवासाः (= अवासस् । + विवासाः = विवासस्), दिगम्बरः (३ त्रि), 'नंगे' के ३ नाम हैं ॥

४ निष्कासितः (+ निष्कामितः), अवकृष्टः (२ त्रि), 'निकाले हुए' के २ नाम हैं ॥

५ अपध्वस्तः, धिक्कृतः (२ त्रि), 'धिक्कारे हुए' के २ नाम हैं ॥

६ आत्तगर्वः (+ आत्तगन्धः), अभिभूतः (२ त्रि), 'टूटे हुए अभिमानवाले' के २ नाम हैं । ('किसी २ के मतसे 'अपध्वस्तः,......' ४ नाम एकार्थक हैं') ॥

७ दापितः (+ दायितः), साधितः (२ त्रि), 'जिससे धन आदि दिलाया गया हो उसके या दिलाये हुए धन आदि' के २ नाम हैं ॥

८ प्रत्यादिष्टः, निरस्तः, प्रत्याख्यातः, निराकृतः (४ त्रि), 'अनादरके साथ निकाले या हटाये हुए' के ४ नाम हैं ॥

९ निकृतः (+ निःकृतः), विप्रकृतः (२ त्रि), 'अनादर पाये हुए' के २ नाम हैं ॥

१० विप्रलब्धः, वञ्चितः (२ त्रि), 'ठगे गये' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'जडोऽजडेऽनेडमूकस्तु' इति पाठान्तरम् ॥
२. 'आत्तगन्धोऽभिभूतः स्याद्दायितः' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'निःकृतः' इति पाठान्तरम् ॥

१ मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥
२ अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो ३बद्धे कीलितसंयतौ ।
४ आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात् ५ कान्दिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥
६ आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते ७ संकसुकोऽस्थिरे ।
८ व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ ९ विहस्तव्याकुलौ समौ ॥ ४३ ॥
१० विक्लवो विह्वलः ११ स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।
१२ कश्यः कशार्हे—

---

१ मनोहतः, प्रतिहतः, प्रतिबद्धः, हतः (४ त्रि), 'काम पूरा न होनेसे टूटे हुए मनवाले (हतोत्साह, मनटूट)' के ४ नाम हैं ॥

२ अधिक्षिप्तः, प्रतिक्षिप्तः (२ त्रि), 'जिससे डाह' (ईर्ष्या) करता हो उसीके सामने तिरस्कृत' के २ नाम हैं ॥

३ बद्धः, कीलितः, संयतः (३ त्रि), 'रस्सी आदिसे बाँधे हुए' के ३ नाम हैं ॥

४ आपन्नः, आपत्प्राप्तः (२ त्रि), 'दुःखमें पड़े हुए' के २ नाम हैं ॥

५ कान्दिशीकः, भयद्रुतः (२ त्रि), 'भयसे भागे हुए' के २ नाम हैं ॥

६ आक्षारितः, क्षारितः, अभिशस्तः (३ त्रि), 'चोरी या मैथुन आदि बुरे कामके विषयमें झूठा (बिना किये भी) लोकापवाद पाये हुए' के ३ नाम हैं ॥

७ संकसुकः, अस्थिरः (२ त्रि), 'स्थिर नहीं रहनेवाले' के २ नाम हैं ।

८ व्यसनार्तः, उपरक्तः (२ पु) 'व्यसनसे दुःखी' के २ नाम हैं ॥

९ विहस्तः, व्याकुलः (२ त्रि), 'व्याकुल' (शोक आदिके कारण कर्तव्य (अपने करने योग्य काम), के निश्चयको नहीं करनेवाले) के २ नाम हैं ॥

१० विक्लवः, विह्वलः (२ त्रि), 'विह्वल' (शोकादि के कारण अपने शरीरको सँभालनेमें असमर्थ) के २ नाम हैं ॥

११ विवशः, अरिष्टदुष्टधीः (२ त्रि); 'मृत्युकाल समीप होनेसे अस्थिर बुद्धिवाले' के २ नाम है ॥

१२ कश्यः, कशार्हः (२ त्रि), 'कोड़ेसे मारने योग्य मनुष्य, घोड़े आदि' के २ नाम हैं ॥

—१ सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते ॥ ४४ ॥
२ द्वेष्ये त्वक्षिगतो ३ वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ।
४ विष्यो विषेण यो वध्यो ५ मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥
६ [1]शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा ७ चपलश्चिकुरः समौ ।

---

१ [4]आततायी (=आततायिन् त्रि), 'आततायी' अर्थात् 'मारनेके लिये तैयार' का १ नाम है ॥

२ द्वेष्यः, अक्षिगतः (२ त्रि), 'आँखों में गड़े हुए' अर्थात् 'वैर करने योग्य' के २ नाम हैं ॥

३ वध्यः, शीर्षच्छेद्यः (२ त्रि), 'मारने योग्य, या शिर काट लेने योग्य' के २ नाम हैं ॥

४ विष्यः (त्रि), 'विष खिलाकर मारने योग्य' का १ नाम है ॥

५ मुसल्यः (त्रि), 'मुसलसे मारने योग्य' का १ नाम है ॥

६ शिश्विदानः, अकृष्णकर्मा (=अकृष्णकर्मन् । २ त्रि), 'पुण्य कर्म करनेवाले' के (तथा पाठभेदसे—'शिश्विदानः, कृष्णकर्मा (=कृष्णकर्मन् । २ त्रि), 'पाप कर्म करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

७ चपलः, चिकुरः (२ त्रि), 'चपल या दोषको बिना विचारे ही मारनेके लिए तैयार' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'शिश्विदानः कृष्णकर्मा' इति पाठान्तरम् ॥

४. वधस्योपलक्षणतयाऽन्येऽपि संग्राह्यास्त आततायिनो यथा—

'अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः ।
क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते आततायिनः' ॥ १ ॥ इति ॥

यथा वा—

'उद्यतासिर्विषाग्निश्च शापोद्यतकरस्तथा ।
आथर्वणेन हन्ता च पिशुनश्चापि राजनि ॥ १ ॥
भार्यातिक्रमकारी च रन्ध्रान्वेषणतत्परः ।
एवमाद्यान्विजानीयात्सर्वानेवाततायिनः' ॥ २ ॥

इति याज्ञ० स्मृति० ३।२१ मिताक्षरा ॥

१ दोषैकदृक्पुरोभागी २ निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥
३ कर्णेजपः सूचकः स्यात् ४ पिशुनो दुर्जनः खलः ।
५ नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो ६ धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥
७ अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः ।
८ कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥
९ निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ।
१० [1]वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

---

१ दोषैकदृक् (= दोषैकदृश्), [2]पुरोभागी (= पुरोभागिन् । २ त्रि) 'केवल दोषको ही देखनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ निकृतः, अनृजुः, शठः (३ त्रि), 'शठ' के ३ नाम हैं ॥

३ कर्णेजपः, सूचकः (२ त्रि), 'चुगलखोर' के २ नाम हैं ॥

४ पिशुनः, दुर्जनः, खलः (३ त्रि) 'आपसमें फूट करानेवाले' के ३ नाम हैं। (हेमचन्द्राचार्यने 'कर्णेजप,…' सब पर्यायोंको एकार्थक माना है) ॥

५ नृशंसः, घातुकः, क्रूरः, पापः (४ त्रि) 'क्रूर' के ४ नाम हैं ॥

६ धूर्तः, वञ्चकः (२ त्रि), 'ठग' के २ नाम हैं ॥

७ अज्ञः, मूढः, यथाजातः, मूर्खः, वैधेयः, बालिशः (+ मातृमुखः, मातृशासितः, अमेधाः = अमेधस् । ६ त्रि), 'मूर्ख' के ६ नाम हैं ॥

८ कदर्यः, कृपणः, क्षुद्रः, किंपचानः, मितंपचः (+ किंपचः, अनमितंपचः, कीनाशः, दृढमुष्टिः । ५ त्रि), 'कृपण, कंजूस' के ५ नाम हैं ॥

९ निःस्वः, दुर्विधः, दीनः, दरिद्रः, दुर्गतः (+ दुःस्थः, अकिञ्चनः, कीकटः । ५ त्रि) 'दरिद्र' के ५ नाम हैं ॥

१० वनीयकः (+ वनीपकः), याचनकः, मार्गणः, याचकः, अर्थी (= अर्थिन् । + तर्कुकः । ५ त्रि), 'याचक, माँगनेवाले' के ५ नाम हैं ॥

---

१. 'वनीपकः' इति पाठान्तरम् ॥

२. '[illegible]—

'दोषैकग्राहिहृदयः पुरोभागीति कथ्यते' इति क्षी० स्वा० ॥

यथा—……'कर्णेजपस्तु दुर्जनः। पिशुनः सूचको नीचो द्विजिह्वो मत्सरी खलः ॥'

इति अभि० चि० ३।४४

१ अहङ्कारवानहंयुः २ शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।
३ दिव्योपपादुका देवा ४ नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥
५ स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः ६ पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ।
७ उद्भिदस्तरुगुल्माद्याः—

१ अहङ्कारवान् (=अहङ्कारवत्), अहंयुः (२ त्रि), 'अहङ्कार (घमण्ड) करनेवाले' के २ नाम हैं ॥

२ शुभंयुः, शुभान्वितः (२ त्रि) 'शुभयुक्त' के दो नाम हैं ॥

३ 'दिव्योपपादुकः (त्रि), 'स्वर्गीय देवता आदि' को कहते हैं ॥

४ जरायुजः (त्रि), 'गर्भसे उत्पन्न होनेवाले मनुष्य, गौ आदि को कहते हैं ॥

५ स्वेदजः (त्रि), 'पसीनेसे उत्पन्न होनेवाले खटमल, डंस, मशा, चीलर आदि' को कहते हैं ॥

६ अण्डजः (त्रि), 'अण्डेसे उत्पन्न होनेवाले पक्षी, साँप, मछली, मगर, चींटी आदि' को कहते हैं ॥

इति प्राणिवर्गः[2] ।

७ उद्भित् (= उद्भिद् त्रि), 'पेड़, लता, झाड़ी, घास, आदि' को कहते हैं । ('इस तरह अयोनिज १, जरायुज २ स्वेदज ३, अण्डज ४ और उद्भिज्ज ५, ये ५ 'भूतों (जीवों) की सृष्टि' हैं; इनके चौदह अवान्तर भेद[3] होते हैं') ॥

१. नरकव्यावृत्तये दिव्यपदम् । मातापित्रादिदृष्टकारणनिरपेक्षा अदृष्टसहकृतेभ्योऽणुभ्यो जाता ये देवास्ते दिव्योपपादुका उच्यन्ते' इति भा० दी० । हेमचन्द्राचार्यैः 'यथोपपादुका देवनारका' (अभि० चिन्ता० ४-४२३) इति देवनारकसामान्यतया 'दिव्योपपादुक'शब्द उक्तः॥

२. 'प्राणिनां विशेष्यनिघ्नतासूचक' इति यावत् प्रोच्यमानवर्गान्तर्गत एकत्रयम् ॥

३. तथा च क्षीरस्वामी—'इत्थमयोनिजजरायुजस्वेदजाण्डजोद्भिज्जत्वेन पञ्चधा भूतसर्गः । एषामेवा (वा) न्तरभेदाच्चतुर्दशविधत्वम् । यदाहुः—

'अष्टविकल्पो दैवस्तिर्यग्योनिश्च पञ्चधा भवति ।
मानुष्य एकविधः समासाद्भौतिकः सर्गः ॥ १ ॥
पैशाचो राक्षसो याक्षो गान्धर्वः शाक्र एव च ।
सौम्यश्च प्राजापत्यश्च ब्राह्मोऽष्टौ देवयोनयः ॥ २ ॥ 'इति' ॥

—१ उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥

२ सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ।
कान्तं[१]मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥

३ [२]तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।

४ अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥

५ [३]निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः ।

---

१ उद्भित् (= उद्भिद्), उद्भिज्जम् (२ त्रि), उद्भिदम् (न) **'पेड़, लता, झाड़ी, घास आदि पौधों'** के ३ नाम हैं ॥

२ सुन्दरम्, रुचिरम्, चारु, सुषमम्, साधु, शोभनम्, कान्तम्, मनोरमम् (+ मनोहरम्), रुच्यम्, मनोज्ञम्, मञ्जु, मञ्जुलम् (+ मनोहारि = मनोहारिन्, हारि = हारिन्, वल्गु, अभिरामम्, बन्धुरम् । १२ त्रि), **'सुन्दर, मनोहर'** के १२ नाम हैं ॥

३ आसेचनकम् (+ असेचनकम् । त्रि), **'जिसके देखते रहनेसे मन तृप्त नहीं हो ऐसे अत्यन्त सुन्दर पदार्थ'** का १ नाम है ॥

४ अभीष्टम्, अभीप्सितम्, हृद्यम्, दयितम्, वल्लभम्, प्रियम् (६ त्रि), **'प्रिय, अभीष्ट'** के ६ नाम हैं ॥

५ निकृष्टः, प्रतिकृष्टः (+ अपकृष्टः), अर्वा (= अर्वन्), रेफः (+ रेपः), याप्यः (+ याव्यः), अवमः, अधमः, कुपूयः (+ कपूयः), कुत्सितः, अवद्यः,

---

हेमचन्द्राचार्य्यैरष्टौ जीवोत्पत्तिस्थानान्युक्तानि । तथा हि —

'अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पोतजाः कुञ्जरादयः ।
रसजा मद्यकीटाद्या नृगवाद्या जरायुजाः ॥
यूकाद्याः स्वेदजा मत्स्यादयः संमूर्च्छनोद्भवाः ।
खञ्जनाद्यास्तूद्भिदोऽथौपपादुका देवनारकाः ॥
प्रसवोनय इत्यष्टौ—' इति अभि चिन्ता० ४।४२१—४२३ ॥

१. 'मनोहरम्' इति पाठान्तरम् ॥
२. 'तदसेचनकम्' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेपयाप्यावमाधमाः' इति पाठान्तरम् ॥

कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकाः समाः ॥ ५४ ॥
१ मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ।
२ पूतं पवित्रं मेध्यं च ३ वीध्रं तु[1] विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥
४ निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।
५ असारं फल्गु ६ शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥
७ क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।
मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवराध्यवत् ॥ ५७ ॥
पराध्याग्र्यप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमग्रियम् ।
८ श्रेयाञ्छ्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

खेटः, गर्ह्यः, अणकः (+ आणकः । १२ त्रि) 'खराब नीच' के १२ नाम हैं ॥

१ मलीमसम् , मलिनम् (+ म्लानम्), कच्चरम्, मलदूषितम् (+ कश्मलम् । ४ त्रि), 'मैले गन्दे' के ४ नाम हैं ॥

२ पूतम्, पवित्रम्, मेध्यम् (+ पावनम् । ३ त्रि), 'पवित्र' के ३ नाम हैं ॥

३ वीध्रम्, विमलार्थकम् (+ विमलात्मकम् भा० दी० । २ त्रि), 'स्वभावतः पवित्र' के २ नाम हैं ॥ (यथा—तीर्थजल, अग्नि,······) ॥

४ निर्णिक्तम् , शोधितम् , मृष्टम् , निःशोध्यम् , अनवस्करम् (५ त्रि), 'साफ किये हुए' के २ नाम हैं ॥

५ असारम् , फल्गु (२ त्रि), 'निर्बल, निस्तत्त्व, निःसार' के २ नाम हैं ॥

६ शून्यम् (+ शुन्यम्) वशिकम् , तुच्छम् , रिक्तकम् (+ रिक्तम् ४ । त्रि), 'तुच्छ खाली' के ४ नाम हैं ॥

७ प्रधानम् (नि० न), प्रमुखः, प्रवेकः, अनुत्तमः, उत्तमः, मुख्यः, वर्यः, वरेण्यः, प्रवर्हः, अनवराध्यः, पराध्यः, अग्र्यः, प्राग्रहरः, प्राग्र्यः, अग्र्यः, अग्रीयः, अग्रियः (१६ त्रि), 'मुखिया प्रधान' के १७ नाम हैं ॥

८ श्रेयान् (= श्रेयस्), श्रेष्ठः, पुष्कलः, सत्तमः, अतिशोभनः (५ त्रि)

---

१. विमलात्मकम्' इति पाठान्तरम् ॥

१ स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जराः।
सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि [1]श्रेष्ठार्थगोचराः॥ ५९॥
२ अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने।
३ विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत्॥ ६०॥
वड्रोरुविपुलं ४ पीनपीव्नी तु स्थूलपीवरे।
५ स्तोकाल्पक्षुल्लकाः ६ सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु॥ ६१॥

'बहुत शोभनेवाले' के ५ नाम हैं। (अन्याचार्यों के मतसे प्रधानम्,...... २१ नाम 'शोभन[2]' के हैं)॥

१ व्याघ्रः, पुङ्गवः, ऋषभः, कुञ्जरः, सिंह, शार्दूलः, नागः (७ पु), आदि (+ मुखः,...... । पु,) 'उत्तरपद (शब्दके आगे) में रहनेपर पूर्व शब्द के श्रेष्ठार्थ' को कहते हैं। ('जैसे—'नरव्याघ्रः, नरपुङ्गवः, पुरुषर्षभः,...) यहाँपर 'नर' शब्दके बाद में 'व्याघ्र और पुङ्गव' शब्द, तथा 'पुरुष' शब्दके बाद में 'ऋषभ' शब्द है, अतः 'नरमें श्रेष्ठ, पुरुषोंमें श्रेष्ठ' यह अर्थ होता है')॥

२ अप्राग्र्यम् (+ उपाग्रम् । त्रि), अप्रधानम् उपसर्जनम् (२ नि० न), 'अप्रधान' के २ नाम हैं॥

३ विशङ्कटम्, पृथु, बृहत्, विशालम्, पृथुलम्, महत्, वड्रम्, उरु, विपुलम् (९ त्रि), 'बड़े विशाल' के ९ नाम हैं॥

४ पीनम्, पीव (= पीवन्), स्थूलम्, पीवरम् (४ न), 'मोटे' के ४ नाम हैं॥

५ स्तोकः, अल्पः, क्षुल्लकः (३ त्रि), 'थोड़े' के ३ नाम हैं॥

६ सूक्ष्मम्, श्लक्ष्णम्, दभ्रम्, कृशम्, तनु, (५ त्रि), मात्रा, त्रुटिः

---

१. 'श्रेष्ठार्थवाचकाः' इति पाठान्तरम्॥

२. 'वर्यं प्रधानं मुख्यमनुत्तमं सत्तमं प्रवर्हणं च' इति नाममालायां (सत्तमस्य)। 'अग्रं प्राग्रहरं श्रेष्ठं मुख्यवर्यप्रवर्हणम्' इति त्रिकाण्डशेषे च श्रेष्ठस्य पाठात् एकविंशतिरेव शोभनस्य' इत्यन्ये' इति भा० दी०॥

स्त्रियां मात्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणवः ।
१ अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥
२ प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु ।
'पुरुहूः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥
३ परः शताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात् ।
४ गणनीये तु गणेयं ५ संख्यातं गणितं ६ मथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥
विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् ।
'समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके ॥ ६५ ॥

(+ त्रुटी । २ नि० स्त्री), लवः, लेशः, कणः, अणुः (३ नि० पु), **'पतले'** के ११ नाम हैं । ('भा० दी० के मत से 'स्तोकः,······' १४ नाम **'सूक्ष्म'** के ही हैं') ॥

१ अत्यल्पम् (भा० दी०), अल्पिष्ठम्, अल्पीयः (= अल्पीयस्) कनीयः (= कनीयस्), अणीयः (= अणीयस् । ५ त्रि), **'बहुत कम'** के ५ नाम हैं ॥

२ प्रभूतम्, प्रचुरम्, प्राज्यम्, अदभ्रम्, बहुलम्, बहु, पुरुहूः (+ पुरुहम्, पुरहम्), पुरु, भूयिष्ठम्, स्फारम् (+ स्फिरम्), भूयः (=भूयस्) भूरि (१२ त्रि), **'बहुत' काफी'** के १२ नाम हैं ॥

३ परःशतम् (त्रि), आदि (परःसहस्रम्, परोऽयुतम्, परोलक्षम्,···), **'सौ आदि** (हजार, दश हजार, लाख,······) **से अधिक'** का १ नाम है ॥

४ गणनीयम्, गणेयम् (१ त्रि), **'गिनती करने योग्य पदार्थ'** के २ नाम हैं ॥

५ संख्यातम्, गणितम् (२ त्रि), **'गिने हुए'** के २ नाम हैं ॥

६ समम् ('यह केवल इसी सम्पूर्ण अर्थ में सर्वनामसंज्ञक हैं') सर्वम्, विश्वम्, अशेषम्, कृत्स्नम्, समस्तम्, निखिलम्, अखिलम्, निःशेषम्, समग्रम्, सकलम्, पूर्णम् (+ पूर्वम्), अखण्डम्, अनूनकम् (+ अनूनम् । १४ त्रि), **'सम्पूर्ण पूरे समूचे'** के १४ नाम हैं ॥

---

१. 'पूरुहु पुरु' इति 'पुरुहं पुरु' इति च पाठान्तरे ॥

१. 'समग्रसकलाखण्डपूर्वादि स्यादनूनके' इति क्षी० स्वा० पाठान्तरम् ॥

१ घने निरन्तरं सान्द्रं २ पेलवं विरलं तनु ।
३ समीपे निकटासन्नसन्निकृष्टसनीडवत् ॥ ६६ ॥
[1]सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् ।
[2]उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥
४ संसक्ते [3]त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ।
५ नेदिष्ठमन्तिकतमं ६ स्याद् दूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥
७ दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरं ८ दीर्घमायतम् ।
९ वर्त्तुलं निस्तलं वृत्तं—

---

१ घनम्, निरन्तरम्, सान्द्रम् (३ त्रि), 'घन गझिन' के ३ नाम हैं ॥

२ पेलवम्, विरलम्, तनु (३ त्रि) 'विरल, फरक २ वाले' में ३ नाम हैं ॥

३ समीपः, निकटः, आसन्नः, सन्निकृष्टः, सनीडः, सदेशः, अभ्याशः (+अभ्यासः), सविधः, समर्यादः, सवेशः, उपकण्ठः, अन्तिकः, अभ्यर्णः, अभ्यग्रः (१४ त्रि), अभितः (अव्य०), 'समीप, नजदीक' के १५ नाम हैं ॥

४ संसक्तम्, अव्यवहितम्, अपदान्तरम् (+ अपटान्तरम् (३ त्रि), 'सटे (मिले) हुए' के ३ नाम हैं ॥

५ नेदिष्ठम् (+ नेदीयः = नेदीयस्), अन्तिकतमम् (२ त्रि), 'बहुत समीपवाले' के २ नाम हैं ।

६ दूरम्, विप्रकृष्टकम् (+ विप्रकृष्टम् । २ त्रि), 'दूरवाले' के २ नाम हैं ॥

७ दवीयः (दवीयस्), दविष्ठम्, सुदूरम् (३ त्रि), 'बहुत दूरवाले' के ३ नाम हैं ॥

८ दीर्घम्, आयतम् (२ त्रि), 'लम्बे' के २ नाम हैं ॥

९ वर्त्तुलम्, निस्तलम्, वृत्तम् (३ त्रि), गोलाकार' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'सदेशाभ्याससविध—' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्राभिपतिता अमी' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'त्वव्यवहितमपटान्तरमित्यपि' इति पाठान्तरम् ॥

—१ बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥
२ उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे ३ ऽथ वामने ।
न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्यु ४ रवाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥
५ अरालं वृजिनं जिह्ममूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ।
आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥
६ ऋजावजिह्मप्रगुणौ ७ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।
८ शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥
९ स्थास्नुः स्थिरतरः स्थेया१०नेकरूपतया तु यः ।
कालव्यापी स कूटस्थः—

---

१ बन्धुरम् (+ बन्धूरम्), उन्नतानतम् (२ त्रि), **'ऊँच-खाल, ऊँचे-नीचे'** के २ नाम हैं ॥

२ उच्चः, प्रांशुः, उन्नतः, उदग्रः, उच्छ्रितः, तुङ्गः (+ उत्तुङ्गः, उद्धुरः । ६ त्रि), **'ऊँचे'** के ६ नाम हैं ॥

३ वामनः, न्यङ् (= न्यच्), नीचः, खर्वः, ह्रस्वः (५ त्रि), **'वामन, नीचे, छोटे'** के ५ नाम हैं ॥

४ अवाग्रम् , अवनतम् , आनतम् (३ त्रि), **'नीचे की ओर झुके हुए'** के ३ नाम हैं ॥

५ अरालम् , वृजिनम् , जिह्मम्, ऊर्मिमत् , कुञ्चितम् , नतम् , आविद्धम् , कुटिलम् , भुग्नम् , वेल्लितम् , वक्रम् (+ भङ्गुरम् । ११ त्रि), **'टेढ़े'** के ११ नाम हैं ॥

६ ऋजुः, अजिह्मः, प्रगुणः (३ त्रि), **'सीधे'** के ३ नाम हैं ॥

७ व्यस्तः, अप्रगुणः, आकुलः (३ त्रि), **'घबड़ाये हुए, आकुल'** के ३ नाम हैं ॥

८ शाश्वतः (+ शाश्वतिकः), ध्रुवः, नित्य , सदातनः, सनातनः (५ त्रि), **'नित्य'** अर्थात् 'सर्वदा स्थिर रहनेवाले' के ५ नाम हैं ॥

९ स्थास्नुः, स्थिरतरः, स्थेयान् (= स्थेयस् । ३ त्रि), **'अत्यन्त स्थिर'** के ३ नाम हैं ॥

१० कूटस्थः (त्रि), **'सदा एक समान रहनेवाले'** (आकाश, आत्मा आदि) का १ नाम है ॥

—१ स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

२ चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसमिङ्गं चराचरम्।

३ चलनं कम्पनं कम्प्रं ४ चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥

चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे।

५ अतिरिक्तः समधिको ६ दृढसन्धिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥

७ [1]कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम्।

जरठं मूर्तिमन्मूर्तं ८ प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥

९ पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ।

---

१ स्थावरः, जङ्गमेतरः (२ त्रि), '**स्थावर (नहीं चलनेवाले) पहाड़, पेड़, लता आदि**' के २ नाम हैं ॥

२ चरिष्णु, जङ्गमम् , चरम् , त्रसम् , इङ्गम् , चराचरम् (६ त्रि), '**चल (चलने-फिरनेवाले) मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग आदि**' के ६ नाम हैं ॥

३ चलनम् , कम्पनम् , कम्प्रम् (३ त्रि), महे० के मतसे '**काँपने (हिलने) वाले**' के ३ नाम हैं ॥

४ चलम् , लोलम् , चलाचलम् , चञ्चलम् , तरलम् , पारिप्लवम् , परिप्लवम् (७ त्रि), महे० के मतसे '**चल**' अर्थात् 'चलनेवाले' के ७ नाम हैं। (भा० दी० के मतसे 'चलनम् ,.......' १० नाम '**चल**' के हैं ॥

५ अतिरिक्तः, समधिकः (२ त्रि), '**अतिरिक्त फालतू**' के २ नाम हैं ॥

६ दृढसन्धिः, संहतः (२ त्रि), '**अच्छी तरह मिले या जुटे हुए**' के २ नाम हैं ॥

७ कर्कशम् (+ कक्खटम् , खक्खटम्), कठिनम्, क्रूरम्, कठोरम्, निष्ठुरम्, दृढम्, जठरम्, मूर्त्तिमत् , मूर्त्तम् (९ त्रि), '**कठोर, कड़े**' के ९ नाम हैं ॥

८ प्रवृद्धम् , प्रौढम् , एधितम् (३ त्रि), '**बढ़े हुए**' के ३ नाम हैं ॥

९ पुराणम् , प्रतनम् , प्रत्नम् , पुरातनम् , चिरन्तनम् (५ त्रि), '**प्राचीन, पुराने**' के ५ नाम हैं ॥

---

१. 'खक्खटं' इति 'कक्खटं' इति च पाठान्तरे ॥

१ प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥
नूत्नश्च २ सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ।
३ अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम् ॥ ७८ ॥
४ प्रत्यक्षे[1] स्यादैन्द्रियक ५ मप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।
६ [2]एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥ ७९ ॥
अप्येकसर्ग एकाग्र्योऽप्येकायनगतोऽपि सः ।
७ पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या—

१ प्रत्यग्रः, अभिनवः, नव्यः, नवीनः, नूतनः, नवः, नूत्नः (७ त्रि), **'नवीन, नये'** के ७ नाम हैं ॥

२ सुकुमारम्, कोमलम्, मृदुलम्, मृदु (४ त्रि), **'कोमल, मुलायम'** के ४ नाम हैं ॥

३ अन्वक्, अन्वक्षम्, अनुगम्, अनुपदम् (महे० के मतसे ४ नपुंसक तथा अव्यय और क्षी० स्वा० के मतसे 'अन्वक्, अन्वक्ष, अनुपद' ये ३ अव्यय और 'अन्वक्ष, अनुपद' ये २ नपुंसक), **'बाद पीछे'** के ४ नाम हैं ॥

४ प्रत्यक्षम् (+ समक्षम्), ऐन्द्रियकम् (२ त्रि), **'इन्द्रियसे ग्राह्य** (ग्रहण करने योग्य)' के २ नाम हैं। (**'जैसे**— 'कर्णेन्द्रियका ग्राह्य शब्द, नेत्रेन्द्रियका ग्राह्य घटपटादिका रूप,……') ॥

५ अप्रत्यक्षम् (+ अनध्यक्षम्, अत्यध्यक्षम्), अतीन्द्रियम् (२ त्रि), **'इन्द्रियसे अग्राह्य** (नहीं ग्रहण करने योग्य), के २ नाम हैं। (**जैसे**… परमाणु,…') ॥

६ एकतानः, अनन्यवृत्तिः एकाग्रः (+ ऐकाग्रः), एकायनः, एकसर्गः, एकाग्र्यः, एकायनगतः (७ त्रि), **'एकाग्र'** के ७ नाम हैं ॥

७ आदिः (नि० पु), पूर्वः, पौरस्त्यः, प्रथमः, आद्यः (+ आदिमः, अग्र्यः, अग्रिमः, अग्रीयः । ४ त्रि), **'पहला, प्रथम'** के ५ नाम हैं ॥

---

१. 'स्यादैन्द्रियकमनध्यक्षमतीन्द्रियम्' इति '—मत्यध्यक्षमतीन्द्रियम्' इति च पाठान्तरे॥

२. '—वृत्तिरेकाग्रैकायनावपि' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अथाख्रियाम् ॥ ८० ॥

अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः ।

२ मोघं निरर्थकं ३ स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्वणम् ॥ ८१ ॥

४ साधारणं तु सामान्य ५ मेकाकी [1]त्वेक एककः ।

६ [2]भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥

७ [3]उच्चावचं नैकभेद ८ मुच्चण्डमविलम्बितम् ।

९ अरुन्तुदं तु मर्मस्पृक्

---

१ अन्तः (पु न), जघन्यम्, चरमम्, अन्त्यः, पाश्चात्यः, पश्चिमः (+ अन्तिमः । ५ त्रि), **'अन्त (आखीर) वाले'** के ६ नाम हैं ॥

२ मोघम्, निरर्थकम् (२ त्रि), **'निष्फल, बेकाम'** के २ नाम हैं ॥

३ स्पष्टम् (+ विस्पष्टम्), स्फुटम् (+ प्रस्फुटम्), प्रव्यक्तम् (+ व्यक्तम्), उल्वणम् (४ त्रि), **'स्पष्ट'** के ४ नाम हैं । (किसीके मतसे 'स्पष्टम्, स्फुटम्' ये २ नाम **'स्पष्ट'** के और 'प्रव्यक्तम्, उल्वणम्' ये २ नाम **'खुलासा, साफ'** के हैं') ॥

४ साधारणम्, सामान्यम् (२ त्रि), **'साधारण, मामूली'** के २ नाम हैं ॥

५ एकाकी (= एकाकिन्), एकः, एककः, (+ एकलः । ३ त्रि), **'अकेले'** के ३ नाम हैं ॥

६ भिन्नः (भिन्नके पर्यायवाचक सब शब्द), अन्यतरः (+ एकतरः), एकः, त्वः, अन्यः, इतरः (६ त्रि), **'भिन्न, दूसरे, अलग'** के ६ नाम हैं ॥

७ उच्चावचम्, नैकभेदम् (२ त्रि), **'अनेक प्रकारवाले'** के २ नाम हैं ॥

८ उच्चण्डम्, अविलम्बितम् (+ अविलम्बयम् । २ त्रि), **'जल्दबाज, शीघ्रता करनेवाले'** के २ नाम हैं ॥

९ अरुन्तुदः, मर्मस्पृक् (= मर्मस्पृश् । २ त्रि), **'मर्मस्थलको पीड़ा देनेवाले'** के २ नाम हैं ॥

---

१. एकलः' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'एकतरः' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बनम्' इति पाठान्तरम् ॥

—१ अबाधं तु निरर्गलम् ॥ ८३ ॥

२ प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठु च ।

३ वामं शरीरं सव्यं स्या ४ दपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥

५ संकटं ना तु संबाधः ६ कलिलं गहनं समे ।

७ सकीर्णं संकुलाकीर्णं ८ मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥

९ [1]ग्रन्थितं संदितं दृब्धं—

---

१ अबाधम्, निरर्गलम् (+उद्दामम्, उच्छृङ्खलम्, निरङ्कुशम् । २ त्रि), **'अबाध'** अर्थात् 'बिना रोक-टोकवाले' के २ नाम हैं ॥

२ प्रसव्यम्, प्रतिकूलम्, अपसव्यम्, अपष्ठु (+अपष्ठुरम्, विलोमम्, प्रतीपम्, विपरीतम् । ४ त्रि), **'प्रतिकूल, उलटा'** के ४ नाम हैं ॥

३ सव्यम् (त्रि), **'शरीरके वाम भाग'** का १ नाम है ॥

४ अपसव्यम् (त्रि), **'शरीरके दाहिने भाग'** का १ नाम है ॥

५ संकटम् (त्रि), संबाधः (नि० पु), **'तङ्ग रास्ता, या गली आदि'** के २ नाम हैं ॥

६ कलिलम्, गहनम् (२ त्रि), **'दुष्प्रवेश्य (मुश्किलसे प्रवेश करने योग्य) रास्ता, गली' जङ्गल आदि'** के २ नाम हैं ॥

७ संकीर्णम् (+कीर्णम्), संकुलम् (+आकुलम्), आकीर्णम् (३ त्रि), **'सभा, देवदर्शन या मेले आदिके कारण मनुष्य आदिसे ठसाठस भरे हुए स्थान आदि'** के ३ नाम हैं। ('किसी २ के मतसे 'कलिलम्, ……' ५ नाम और किसीके मतसे 'संकटम्,……' ७ नाम एकार्थक हैं) ॥

८ मुण्डितम्, परिवापितम् (२ त्रि), **'मुण्डित'** अर्थात् 'मुण्डन किये हुए' के २ नाम हैं ॥

९ ग्रन्थितम् (+गुन्थितम्, ग्रथितम्), संदितम् (+गुम्फितम्), दृब्धम् (३ त्रि), **'गुथी हुई माला आदि'** के ३ नाम हैं ॥

---

१. अत्र—"ग्रन्थितम्' इत्यपि पाठः । 'गुम्फितं गुफितं चे'त्यपि पाठः" इति मदे० । "ग्रन्थितम्, इति कश्चित्'—इति पीयूषव्याख्या ।—'मथितं मर्दितम्, इति पाठे 'मृद क्षोदे' अनेकार्थत्वाद्ग्रन्थने' इति स्वामी, इति मुकुट" इति दाधिमथाः । किन्तु मुकुटोक्तं क्षी० स्वा० वचनं तट्टीकायां नोपलभ्यत इत्यवधेयम् ॥

—१ विसृतं विस्तृतं ततम् ।
२ अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात् ३ प्राप्तप्रणिहिते समे ॥ ८६ ॥
४ वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते ।
५ नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धक्षिप्तेरिताः समाः ॥ ८७ ॥
६ परिक्षिप्तं तु निवृतं ७ मूषितं मुषितार्थकम् ।
८ प्रवृद्धप्रसृते ९ न्यस्तनिसृष्टे १० गुणिताहते ॥ ८८ ॥
११ निदिग्धोपचिते १२ गूढगुप्ते १३ गुण्ठितरूषिते ।

---

१ विसृतम्, विस्तृतम्, ततम्, (३ त्रि), **'फैले हुए'** के ३ नाम हैं ॥

२ अन्तर्गतम्, विस्मृतम् (२ त्रि), **'भूले हुए'** के २ नाम हैं ॥

३ प्राप्तम्, प्रणिहितम् (२ त्रि), **'पाये हुए'** के २ नाम हैं ॥

४ वेल्लितः, प्रेङ्खितः, आधूतः, चलितः, आकम्पितः, धुतः (६ त्रि), **'थोड़ासा कँपे हुए'** के ६ नाम हैं ॥

५ नुत्तः, नुन्नः, अस्त, निष्ठ्यूतः (+ निष्ठ्यूतः), आविद्धः, क्षिप्तः, ईरितः (७ त्रि), **'भेजे या किसी काममें लगाये हुए'** के ७ नाम हैं ॥

६ परिक्षिप्तम्, निवृतम् (+ वलयितम्, परिवेष्टितम्, परीतम् । (२ त्रि), **'खाई या दिवाल आदिसे घिरे हुए'** के २ नाम हैं ॥

७ मूषितम्, मुषितम् (मुषितके पर्यायवाचक सब शब्द । २ त्रि), **'चुराए हुए'** के २ नाम हैं ॥

८ प्रवृद्धम्, प्रसृतम् (२ त्रि), **'पसारे हुए'** के २ नाम हैं ॥

९ न्यस्तम्, निसृष्टम् (२ त्रि), **'फेंके हुए'** के २ नाम हैं ॥

१० गुणितम्, आहतम् (२ त्रि), **'गुणा किये हुए अङ्क या बटी (बरी) हुई रस्सी आदि'** के २ नाम हैं ॥

११ निदिग्धम्, उपचितम् (२ त्रि), **'बढ़े (पुष्ट) हुए'** के २ नाम हैं ॥

१२ गूढम्, गुप्तम् (२ त्रि), **'गुप्त'** के २ नाम हैं ॥

१३ गुण्ठितम् (+ गुण्डितम्), रूषितम् (२ त्रि), **'धूल आदिमें लिपटे हुए'** के २ नाम हैं । (**जैसे**—'पदातिरन्तर्गिरिरेणुरूषितः' किरात १।३४') ॥

१ द्रुतावदीर्णे २ उद्गूर्णोद्यते ३ [1]काचितशिक्यिते ॥ ८९ ॥
४ घ्राणघ्राते ५ दिग्धलिप्ते ६ समुदक्तोद्धृते समे ।
७ वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥
८ रुग्णं भुग्ने ९ ऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते ।
१० स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं ११ ह्रीणह्रीतौ तु लज्जिते ॥ ९१ ॥

---

१ द्रुतम् , अवदीर्णम् (२ त्रि), 'पिघले हुए' के २ नाम हैं ॥

२ उद्गूर्णम् , उद्यतम् (२ त्रि), 'उठाए हुए खड्ग आदि, उठाकर तौल आदि का अन्दाजा किये हुए, या लोके हुए गेंद आदि' के २ नाम हैं ॥

३ काचितम् , शिक्यितम् (२ त्रि), 'छिक्कहरपर रक्खे हुए' (पाठभेद-से—कारितम् , शिक्षितम् (२ त्रि), 'सिखलाये हुए' के') २ नाम हैं ॥

४ घ्राणम् , घ्रातम् (२ त्रि), 'सूँघे हुए' के २ नाम हैं ॥

५ दिग्धम् , लिप्तम् (२ त्रि), 'लिपे हुए स्थान आदि' के २ नाम हैं ॥

६ समुदक्तम् , उद्धृतम् (२ त्रि), 'नदी, तालाब, कूँए आदिसे निकाले हुए पानी आदि' के २ नाम हैं ॥

७ वेष्टितम् , वलयितम् , संवीतम् , रुद्धम् , आवृतम् (५ त्रि), 'चारो तरफसे घेरे हुए' के ५ नाम हैं ॥

८ रुग्णम् , भुग्नम् (२ त्रि) 'व्यथित या टूटे हुए' के २ नाम हैं ॥

९ निशितम् (+ निशातम्), क्ष्णुतम् , शातम् (+ शितम्), तेजितम् (४ त्रि), 'सान आदि देकर तेज किए हुए तलवार, भाला, चाकू आदि' के ४ नाम हैं ॥

१० विनाशोन्मुखम् (भा० दी०), पक्वम् (२ त्रि), 'पके हुए या शीघ्र नष्ट होनेवाले' के २ नाम हैं ॥

११ ह्रीणः, ह्रीतः, लज्जितः (३ त्रि), 'लजाये हुए' के ३ नाम हैं ॥

---

१. 'कारितशिक्षिते' इति पाठान्तरम् ॥

१ वृत्ते तु[1] वृतवावृत्तौ २ संयोजित उपाहितः ।
३ प्राप्यं गम्यं समासाद्यं ४ स्यन्नं रीणं स्नुतं स्रुतम् ॥ ९२ ॥
५ संगूढः स्यात्संकलितो ६ ऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।
७ विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥
८ अवरीणो[2] धिक्कृतश्चाप्य ९ वध्वस्तोऽवचूर्णितः ।

---

१ वृत्त, वृतः, वावृत्तः (+ व्यावृत्तः । ३ त्रि), 'स्वयंवर आदि में स्वीकार किये हुए वर आदि' के ३ नाम हैं ॥

२ संयोजितः (— संयोगिनः), उपाहितः (२ त्रि), 'जोड़े हुए' के २ नाम हैं ॥

३ प्राप्यम्, गम्यम्, समासाद्यम् (३ त्रि), 'जो मिल सके उस' के ३ नाम हैं ॥

४ स्यन्नम्, रीणम्, स्नुतम्, स्रुतम् (४ त्रि), 'टपके, चूए या बहे हुए जल आदि' के ४ नाम हैं ॥

५ संगूढः, संकलितः (२ त्रि), 'जोड़े हुए अङ्क आदि' के २ नाम हैं ॥

६ अवगीतः, ख्यातगर्हणः (२ त्रि), 'संसार-प्रसिद्ध निन्दावाले' के २ नाम हैं ॥

७ विविधः, बहुविधः (+ बहुरूपः), नानारूपः (+ नानाविधः) पृथग्विधः (+ पृथग्रूपः । ४ त्रि), 'अनेक प्रकार के पदार्थ आदि' के नाम हैं ॥

८ अवरीणः, धिक्कृतः (२ त्रि) 'धिक्कारे हुए' के २ नाम हैं ॥

९ अवध्वस्तः (+ अपध्वस्तः), अवचूर्णितः (२ त्रि) 'चूर्ण किये हुए' के २ नाम हैं ॥

---

१. व्रियते वृतः । वर्तते वृत्यते वा वृत्तः । वावृतः, वृतु वावृतु वरणे (वर्तते) इत्यमबुद्ध्वा 'वृतव्यावृत्तौ' इति पेठुः, लक्ष्येऽपि—ततो वावृत्तमानसेति (माना सेति………) इति भट्टिः (४२८)' इति क्षी० स्वा० । किन्तु सांप्रतिके भट्टिपुस्तके 'वावृत्यमानासौ' इति पाठ उपलभ्यते । 'वृतव्यावृत्तौ' इति मही० सम्मतं पाठान्तरम् ॥

२. 'धिक्कृतश्चाप्यपध्वस्तः' इति पाठान्तरम् ॥

१ अनायासकृतं फाण्टं २ स्वनितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥
३ बद्धे संदानितं¹मूतमुद्दितं संदितं सितम् ।
४ निष्पक्वे क्वथितं ५ पाके²क्षीराज्यहविषां श्रृतम् ॥ ९५ ॥
६ निर्वाणो मुनिवह्न्यादौ ७ निर्वातस्तु गतेऽनिले ।
८ पक्वं परिणते ९ गूनं हन्ने १० मीढं तु मूत्रिते ॥ ९६ ॥
११ पुष्टं तु पुषितं—

---

१ अनायासकृतम् (भा० ई०), फाण्टम् (२ त्रि), 'बिना परिश्रम से तैयार होनेवाले त्रिफला आदिके काढ़ा विशेष" के २ नाम हैं ॥

२ स्वनितम् , ध्वनितम् (२ त्रि), 'ध्वनित' अर्थात् 'अव्यक्त शब्द' के २ नाम हैं ॥

३ बद्धम् , संदानितम् , मूतम् (+ मूर्णम्), उद्दितम् (+ उद्दितम्), संदितम् , सितम् (+ यन्त्रितम् , नियमितम् । ६ त्रि), 'बँधे हुए' के ६ नाम हैं ॥

४ निष्पक्वम् , क्वथितम् (२ त्रि), 'अच्छी तरह पकाए या उबाले हुए' के २ नाम हैं ॥

५ श्रृतम् (त्रि), 'पके हुए दूध, घी और हविष्य आदि या पाक-मात्र' का १ नाम है । (जैसे—'श्रृतं क्षीरम् ,·········अर्थात् 'पका हुआ दूध,·········') ॥

६ निर्वाणः (त्रि), 'मुक्तिप्राप्त मुनि या बुझी हुई अग्नि आदि' का का १ नाम है ॥

७ निर्वातः (त्रि), 'बिना हवाके स्थान आदि' का १ नाम है ॥

८ पक्वम् , परिणतम् (२ त्रि), 'पके हुए' के २ नाम हैं ॥

९ गूनम् , हन्नम् (२ त्रि), 'पाखाना किए हुए' के २ नाम हैं ॥

१० मीढम् , मूत्रितम् (२ त्रि), 'पेशाब किए हुए' के २ नाम हैं ॥

११ पुष्टम् , पुषितम् (२ त्रि), 'पाले हुए, के २ नाम हैं ॥

---

१. 'मूर्णमुदितं' इति पाठान्तरम् ।   २. 'क्षीराज्यपयसां' इति पाठान्तरम् ॥

—१ सोढे[1] क्षान्त २ मुद्वान्तमुद्गते।
३ दान्तस्तु दमिते ४ शान्तः शमिते ५ प्रार्थितेऽर्दितः॥ ९७॥
६ ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते ७ छन्नश्छादिते ८ [2]पूजितेऽञ्चितः।
९ पूर्णस्तु पूरिते १० क्लिष्टः क्लिशिते ११ ऽवसिते सितः॥९८॥
१२ प्रुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे १३ तष्टत्वष्टौ तनूकृते।
१४ वेधितच्छिद्रितौ विद्धे १५ विन्नवित्तौ विचारिते॥ ९९॥

---

१ सोढम्, क्षान्तम् (२ त्रि), 'क्षमा किए हुए' के २ नाम हैं॥

२ उद्वान्तम् (+ उद्धानम्, उद्धानम्), उद्गतम् (२ त्रि), 'वमन (उल्टी) किये हुये' के २ नाम हैं॥

३ दान्तः, दमितः (२ त्रि)'दमन किए हुए वत्स आदि' के २ नाम हैं॥

४ शान्तः, शमितः (२ त्रि), 'शान्त किये गये' के २ नाम हैं॥

५ प्रार्थितः, अर्दितः (२ त्रि), 'प्रार्थना किये हुए' के २ नाम हैं॥

६ ज्ञप्तः, ज्ञपितः (२ त्रि), 'जनाए हुये' के २ नाम हैं॥

७ छन्नः, छादितः (२ त्रि), 'ढके (छिपाये) हुए' के २ नाम हैं॥

८ पूजितः, अञ्चितः (अर्चितः। २ त्रि), 'पूजा किए हुए' के २ नाम हैं॥

९ पूर्णः, पूरितः (२ त्रि), 'पूरा किए हुए' के २ नाम हैं॥

१० क्लिष्टः, क्लेशितः (२ त्रि), 'क्लेश पाए हुए' के २ नाम हैं॥

११ अवसितः, सितः (२ त्रि), 'समाप्त' के २ नाम हैं॥

१२ प्रुष्टः, प्लुष्टः, उषितः, दग्धः (४ त्रि), 'जले हुए' के ४ नाम हैं॥

१३ तष्टः, त्वष्टः (२ त्रि), 'वसूले आदिसे छीलकर पतली की हुई लकड़ी आदि' के २ नाम हैं॥

१४ वेधितः, छिद्रितः, विद्धः (३ त्रि), 'वर्मी या सूई आदि से छेदे हुए' के ३ नाम हैं॥

१५ विन्नः, वित्तः, विचारितः (+ आलोचितः। ३ त्रि), 'सोचे हुए' के ३ नाम हैं॥

---

१. 'क्षान्तमुद्धानमुद्गते' इति 'क्षान्तमुद्वानमुद्गते' इति च पाठान्तरे।

२. 'पूजितेऽर्चितः' इति पाठान्तरम्॥

१ निष्प्रभे विगतारोकौ २ विलीने विद्रुतद्रुतौ ।
३ सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ ४ दारिते भिन्नभेदितौ ॥१००॥
५ ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसंतते ।
६ स्यादर्हिते नमस्यितनमसितमपचायितार्चितापचितम् ॥१०१॥
७ वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरितं च ।
८ संतापितसंतप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ॥१०२॥
९ हृष्टे मत्तस्तृप्तः प्रह्लन्नः प्रमुदितः प्रीतः ।

---

१ निष्प्रभः, विगतः, अरोकः (३ त्रि), 'बिना प्रभावाले' के ३ नाम हैं ॥

२ विलीनः, विद्रुतः, द्रुतः (३ त्रि), 'स्वयं पिघले हुए बर्फ आदि' के ३ नाम हैं ॥

३ सिद्धः, निर्वृत्तः, निष्पन्नः (३ त्रि), 'सिद्ध हुए काम आदि' के ३ नाम हैं ॥

४ दारितः, भिन्नः, भेदितः (३ त्रि), 'फाड़े (अलग किये, चिरे) हुए लकड़ी या कपड़े आदि' के ३ नाम हैं ।

५ ऊतम् , स्यूतम् , उतम्, तन्तुसंततम् , (भा० वी० । ४त्रि) 'बुने हुए कपड़े, बोरे, पाट आदि' के ४ नाम हैं ॥

६ अर्हितम् , नमस्यितम् , नमसितम्, अपचायितम् , अर्चितम्, अपचितम् (६ त्रि), 'प्रणाम किये गये देवता, माता-पिता आदि गुरुजन' के ६ नाम हैं ॥

७ वरिवसितम्, वरिवस्यितम्, उपासितम्, उपचरितम् (४ त्रि), पूजित (पूजा किये गये) या सेवित देवता, माता-पिता आदि गुरुजन' के ४ नाम हैं ॥

८ संतापितः, संतप्तः, धूपितः, धूपायितः, दूनः (५ त्रि) 'तपाये या गर्म किए हुए सोना-चाँदी आदि' के ५ नाम हैं ॥

९ हृष्टः, मत्तः, तृप्तः, प्रह्लन्नः, प्रमुदितः, प्रीतः (६ त्रि), 'खुश सन्तुष्ट' के ६ नाम हैं ॥

१ छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् ॥१०३॥
२ स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम्।
३ लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च ॥१०४॥
४ अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम्।
५ आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ॥१०५॥
६ त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च।
७ अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितञ्च परिभूते ॥१०६॥
८ त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे।
९ उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् ॥१०७॥

---

१ छिन्नम्, छातम्, लूनम्, कृत्तम्, दातम्, दितम्, छितम्, वृक्णम् (८ त्रि), 'काटे हुए काष्ठ आदि' के ८ नाम हैं॥

२ स्रस्तम्, ध्वस्तम्, भ्रष्टम्, स्कन्नम्, पन्नम्, च्युतम्, गलितम् (७ त्रि) 'गीरे हुए' के ७ नाम हैं॥

३ लब्धम्, प्राप्तम्, विन्नम्, भावितम्, आसादितम्, भूतम् (६ त्रि), 'पाये हुए' के ६ नाम हैं॥

४ अन्वेषितम्, गवेषितम्, अन्विष्टम्, मार्गितम्, मृगितम् (५ त्रि) 'ढूँढे (खोजे) हुये' के ५ नाम हैं॥

५ आर्द्रम्, सार्द्रम्, क्लिन्नम्, तिमितम्, स्तिमितम्, समुन्नम्, उत्तम् (७ त्रि) 'भींगे हुए' के ७ नाम हैं॥

६ त्राणम्, त्रातम्, रक्षितम्, अवितम्, गोपायितम्, गुप्तम् (५ त्रि), 'रक्षा किये (बचाये) हुए' के ६ नाम हैं॥

७ अवगणितम्, अवमतम्, अवज्ञातम्, अवमानितम्, परिभूतम् (५ त्रि), 'अपमान किये हुए' के ५ नाम हैं॥

८ त्यक्तम्, हीनम्, विधुतम्, समुज्झितम्, धूतम्, उत्सृष्टम् (६ त्रि), 'छोड़े हुए' के ६ नाम हैं॥

९ उक्तम्, भाषितम्, उदितम्, जल्पितम्, आख्यातम्, अभिहितम्, लपितम् (७ त्रि), 'कहे हुए' के ७ नाम हैं॥

१ बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ।
२ ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥
[1]संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।
३ ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९ ॥
अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि ।
४ [2]भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगिलितखादितप्सातम् ॥ ११० ॥
अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्तं ।
५ [3]ब्रह्मण्यो ब्राह्मणहितो ६ वीतदम्भस्त्वकल्मषः (३)

---

१ बुद्धम्, बुधितम्, मनितम्, विदितम्, प्रतिपन्नम्, अवसितम्, अवगतम् (७ त्रि), 'माने या समझे हुये' के ७ नाम हैं ॥

२ ऊरीकृतम् (+ उरीकृतम्), उररीकृतम्, अङ्गीकृतम्, आश्रुतम् (+ प्रतिश्रुतम्), प्रतिज्ञातम्, संगीर्णम्, विदितम् (+ संविदितम्), संश्रुतम्, समाहितम्, उपश्रुतम्, उपगतम् (११ त्रि), 'स्वीकार (मंजूर) किये हुए' के ११ नाम हैं ॥

३ ईलितम्, शस्तम्, पणायितम्, पनायितम्, प्रणुतम्, पणितम्, पनितम्, गीर्णम्, वर्णितम्, अभिष्टुतम्, ईडितम्, स्तुतम् (१२ त्रि), 'स्तुति (बड़ाई) किये हुए' के १२ नाम हैं ।

४ भक्षितम्, चर्वितम्, लीढम् (+ लिप्तम्), प्रत्यवसितम्, गिलितम्, खादितम्, प्सातम्, अभ्यवहृतम्, अन्नम्, जग्धम्, ग्रस्तम्, ग्लस्तम्, अशितम्, भुक्तम् (१४ त्रि), 'खाये, चबाये, चाटे, घोंटे (निगले) हुए' के १४ नाम हैं ॥

५ [ब्रह्मण्यः, ब्राह्मणहितः (२ त्रि), 'ब्राह्मणके लिए हित' के २ नाम हैं]

६ [वीतदम्भः, अकल्मषः (२ त्रि), 'निष्पाप, दम्भसे रहित' के २ नाम हैं] ॥

---

१. 'संगीर्णं संविदितं संश्रुत' मित्यपि क्वचित्पाठः' इति महे० ॥

२. 'भक्षितचर्वितलिप्तप्रत्यवसित—' इति पाठान्तरम् ॥

३. 'ब्रह्मण्यो······धीमुखे' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां 'वाच्यं च—ब्रह्मण्यो······धीमुखे' इत्येवं मूलमात्रमुपलभ्यते । अस्य च प्रकृतोपयोगितयाऽयं मया मूले क्षेपकत्वेन स्थापितः ॥

१ असंमतः प्रणाय्यः स्या २ च्चक्षुष्यः प्रियदर्शनः (४)
३ वैरागिको विरागार्हः ४ संशितस्तु सुनिश्चितः (५)
५ ईर्ष्यालुः कुहनो ६ गोष्ठश्वोऽन्यद्वेष्टा स्वगेहगः (६)
७ तीक्ष्णोपायेन योऽन्विच्छेत्स आयःशूलिको जनः (७)
८ गेहेशूरे गृहेनर्दी पिण्डीशूरो ९ ऽथ संस्कृतः (८)
व्युत्पन्नप्रहतक्षुण्णा १० अन्वेष्टाऽनुपदी समौ (९)
११ नीलीरागः स्थिरस्नेहो १२ हरिद्रारागकोऽन्यथा (१०)
१३ आसीन उपविष्टःस्या १४ दूर्ध्वस्थोर्ध्वंदमौस्थिते (११)

---

१ [असंमतः, प्रणाय्यः (२ त्रि), 'असंमत' के २ नाम हैं] ॥

२ [चक्षुष्यः, प्रियदर्शनः (२ त्रि), 'देखनेमें प्रिय' के २ नाम हैं] ॥

३ [वैरागिकः, विरागार्हः (२ त्रि), 'विराग के योग्य' के २ नाम हैं]

४ [संशितः, सुनिश्चितः (२ त्रि) 'सुनिश्चित' के २ नाम हैं) ॥

५ [ईर्ष्यालुः, कुहनः (२ त्रि), 'ईर्ष्या करनेवाले' के २ नाम हैं] ॥

६ [गोष्ठश्वः (त्रि), 'घरबैठे दूसरेसे द्वेष करनेवाले' का १ नाम है]

७ [आयःशूलिकः (त्रि), 'सरल उपायसे भी होने योग्य कामको तीक्ष्ण (कठोर) उपायसे करनेवाले' का १ नाम है] ॥

८ [गेहेशूरः, गेहेनर्दी (= गेहेनर्दिन्), पिण्डीशूरः (३ त्रि) 'घरमें ही बहादुर बननेवाले' के ३ नाम हैं] ॥

९ [संस्कृतः, व्युत्पन्नः, प्रहतः, क्षुण्णः (४ त्रि), 'शास्त्रादिसे संस्कृत, व्युत्पन्न' के ४ नाम हैं] ॥

१० (अन्वेष्टा (= अन्वेष्टृ), अनुपदी (= अनुपदिन् । २ त्रि), 'खोज (अनुसन्धान) करनेवाले' के २ नाम हैं) ॥

११ (नीलीरागः, स्थिरस्नेहः (२ त्रि), 'स्थिर (पक्के) प्रेमवाले' के २ नाम हैं) ॥

१२ [हरिद्रारागकः (त्रि), 'अस्थिर (कच्चे) प्रेमवाले' का १ नाम है] ॥

१३ [आसीनः, उपविष्टः (२ त्रि), 'बैठे हुए' के २ नाम हैं] ॥

१४ [ऊर्ध्वस्थः, ऊर्ध्वंदमः, स्थितः (३ त्रि) 'खड़े या ठहरे हुये' के ३ नाम हैं] ॥

१ उत्पश्य उन्मुखे २ गृह्यः पक्ष्ये (क्ष्ये) न्युब्जस्त्वधोमुखे' (१२)
४ क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः ॥१११॥
[1]क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुप्रकर्षार्थाः ।
५ साधिष्ठद्राघिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठह्रसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥११२॥
बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये ।
६ [2]'ग्राम्ये ग्रामेयकग्रामीणा ७ आच्छिन्नो बलाद्धृते (१३)
८ चोरिते मुषितं मुष्टं ९ स्थपुटं तु नतोन्नतम् (१४)
१० उत्पाटितोन्मूलितार्थमुद्धृतं—

---

१ [उत्पश्यः, उन्मुखः (२ त्रि), 'उन्मुख' के २ नाम हैं] ॥

२ [गृह्यः, पक्षः (+पक्ष्यः । २ त्रि), 'पक्ष (तरफदार)' के २ नाम हैं] ॥

३ [न्युब्जः, अधोमुखः (२ त्रि) 'कुबड़ा या नीचे मुख झुकाये हुए' के २ नाम हैं] ॥

४ क्षेपिष्ठः, क्षोदिष्ठः, प्रेष्ठः, वरिष्ठः, स्थविष्ठः, बंहिष्ठः, (६ त्रि), 'बहुत जल्द, बहुत खोटा या छोटा, बहुत प्रिय, बहुत बड़ा, बहुत मोटा, और बहुत ज्यादा' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

५ साधिष्ठः, द्राघिष्ठः, स्फेष्ठः, गरिष्ठः, ह्रसिष्ठः, वृन्दिष्ठः (६ त्रि), 'बहुत भला, बहुत लम्बा, बहुत स्थिर, बहुत भारी, बहुत छोटा और बहुत प्रधान' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

६ [ग्राम्यः, ग्रामेयकः, ग्रामीणः (३), 'देहाती' के ३ नाम हैं] ॥

७ [आच्छिन्नः, बलाद्धृतः (२ त्रि), बलपूर्वक (जबर्दस्ती से) पकड़े या छिने हुए' के २ नाम हैं] ॥

८ [चरितम् , मुषितम् , मुष्टम् (३ त्रि), 'चुराये हुए' के ३ नाम हैं] ॥

९ [स्थपुटम् , नतोन्नतम् (२ त्रि), 'ऊँचे-नीचे' के २ नाम हैं] ॥

१० [उत्पाटितम् , उन्मूलितम् , उद्धृतम् (३ न), 'उखाड़े हुए' के ३ नाम हैं] ॥

---

१. 'बहुलप्रकर्षार्थाः' इति पाठान्तरम् । 'पीवर' इति पाठस्त्वयुक्तः छन्दोभङ्गात् । 'पीव' इति पाठे नान्तो युक्तः' इति मा० दी० । परमत्रार्याछन्दसो लक्षणस्य सर्वथा सत्तु समन्वयेन च्छन्दोभङ्गाभावाच्चिन्त्यैव युक्तिः ।

२. 'ग्राम्ये······स्फुटे'' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां 'वाच्यं च—'ग्राम्ये··· स्फुटे' इत्येवं मूलमात्रमुपलभ्यते । अस्य च प्रकृतोपयोगितयाऽयं मया मूले क्षेपकत्वेन स्थापितः ।

—१ बर्हिते वृढम् (१५)
२ आचितं निचितं ३ पूर्णं पूरितं ४ निभृतं भृतम् (१६)
५ प्रतिश्रितं प्रविष्टं स्या ६ दन्तर्गडु निरर्थके (१७)
७ न्यक्षिप्तं स्यादधःक्षिप्तं ८ तिर्यगूर्ध्वमुदक्षितम् (१८)
९ स्पष्टेऽचितं १० चतुर्थं तु तुरीयं तुर्यं ११ मास्थिते (१९)
आकारे श्लिष्टसंपृक्तः १२ खचिते जटितभूषितौ (२०)
१३ प्रचर्चितं प्रतीष्टं १४ द्वेष्यामूष्यःक्षिगताः समाः (२१)
१५ श्यानं शीने—

---

१ [बर्हितम् , वृढम् (२ त्रि), 'बढ़े हुए' के २ नाम हैं] ॥

२ [आचितम् , निचितम् (२ त्रि), 'घटे हुए' के २ नाम हैं] ॥

३ [पूर्णम् , पूरितम् (२ त्रि), 'पूरे हुए' के २ नाम हैं] ॥

४ [निभृतम् , भृतम् (२ त्रि), 'वश में रहनेवाले' के २ नाम हैं] ॥

५ [५ प्रतिश्रितम् , प्रविष्टम् (२ त्रि), 'प्रवेश किये (घुसे) हुए' के २ नाम हैं ॥]

६ [अन्तर्गडु, निरर्थकम् (२ त्रि), 'निरर्थक, बेमतलब' के २ नाम हैं] ॥

७ [न्यक्षितम् , अधःक्षिप्तम् (२ त्रि), 'नीचे फेंके हुए' के २ नाम हैं] ॥

८ [उदक्षितम् (त्रि), 'उपर फेंके हुए' का १ नाम है] ॥

९ [स्पष्टम् , अचितम् (२ त्रि), 'स्पष्ट' के २ नाम हैं] ॥

१० [चतुर्थम् , तुरीयम् , तुर्यम् (३ त्रि), 'चौथे' के ३ नाम हैं] ॥

११ [श्लिष्टसंपृक्तः (त्रि), 'स्थायी आकारवाले' का १ नाम है] ॥

१२ [खचितः, जुरितः, भूषितः (३ त्रि), 'रत्न-जवाहिरात आदि से जड़े हुए भूषण आदि' के ३ नाम हैं] ॥

१३ [प्रचर्चितम् , प्रतीष्टम् (२ त्रि), 'चन्दनादि छिड़के हुए स्थान आदि' के २ नाम हैं] ॥

१४ [द्वेष्यः, अमूष्यः, अक्षिगतः (३ त्रि), 'आँखमें गड़े हुए, वैरी' के तीन नाम हैं] ॥

१५ [श्यानम् , शीनम् , (२ त्रि), 'जमे हुए घी आदि' के २ नाम हैं] ॥

१— अन्विते‌ऽन्वीतं २ प्रकाशप्रकटौ स्फुटे'(२२)
इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

२ अथ संकीर्णवर्गः ।

३ प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णे लिङ्गमुन्नयेत् ।

---

१ [अन्वितम् , अन्वीतम् (२ त्रि), 'युक्त, सहित' के २ नाम हैं] ॥

२ [प्रकाशः, प्रकटः, स्फुटः (३ त्रि), 'प्रकट, स्पष्ट' के ३ नाम हैं] ॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

२ अथ संकीर्णवर्गः ।

३ पूर्वोक्त शब्दोंके आपसमें संकीर्ण होने (मिल जाने) के भयसे पहले नहीं कहे हुए शब्दोंके संग्रहके वास्ते 'प्रकृति—' इस श्लोकसे द्वितीय 'संकीर्ण-वर्ग' का आरम्भ करते हैं। संकीर्ण अर्थ और संकीर्ण लिङ्गसे आरब्ध होनेके कारण 'संकीर्णवर्ग' नामके इस प्रकरणमें 'प्रकृति १, प्रत्यय २ आदि (आदि'से रूपभेद ३, साहचर्य ४, के अर्थका संग्रह है) से लिङ्गोंको समझना चाहिये।' ("प्रत्येकके क्रमशः उदाहरण। १ला प्रकृत्यर्थ जैसे—अपरस्पराः (त्रि), इस उदाहरणमें 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' (पा० सू० २।४।२६) इस सूत्रसे पर (आगे) वाले शब्दके लिङ्गका अतिदेश होनेसे यहाँ (अपरस्पर शब्दमें) 'पर' शब्दके त्रिलिङ्ग होनेके कारण 'अपरस्पर' शब्द भी त्रिलिङ्ग है। इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये। २रा प्रत्ययार्थ जैसे—'शान्तिः, कृतिः, चितिः, विपत्तिः,......' (स्त्री), 'हसितम् , हसनम् , जल्पितम् , शयनम् ....' (४ न), 'आकरः, रामः, सन्धिः,.........' (३ पु) इन उदाहरणोंमें 'स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग और पुंलिङ्ग' में क्तिन्, आदि प्रत्ययोंके होनेसे ये शब्द भी क्रमशः स्त्रीलिङ्ग आदिमें प्रयुक्त होते हैं। इसी तरह अन्यान्य (३ रा रूपभेद और ४था साहचर्यके) उदाहरणका भी स्वयं तर्क कर लेना चाहिये")

१ कर्म क्रिया २ तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥
३ साकल्यासङ्गवचने [1]पारायणतुरायणे ।
४ यदृच्छा स्वैरिता ५ हेतुशून्या[2] त्वास्या विलक्षणम् ॥ २ ॥
६ शमथस्तु शमः शान्ति ७ र्दान्तिस्तु दमथो दमः ।
८ [3]अवदानं कर्म वृत्तं—

---

१ कर्म (=कर्मन् न), क्रिया (स्त्री), 'काम' के २ नाम हैं ॥

२ अपरस्परम् (१ले अर्थमें नपुं० और दूसरे अर्थमें त्रि०[4]) 'लगातार काम होते रहना, और लगातार काम करनेवाला' इन दो अर्थोंमें है ॥

३ पारायणम् , तुरायणम् (+परायणम् , +त्रि[5] । २ न), 'पूर्ण कथन (कहना, वक्तव्य) और प्रासङ्गिक (अवसरके अनुकूल) कथन' का क्रमशः १—१ नाम हैं ॥

४ यदृच्छा, स्वैरिता (२ स्त्री), 'स्वतन्त्रता' के २ नाम हैं ॥

५ विलक्षणम् (न), 'विचित्र' अर्थात् 'निष्कारण ठहरने' का १ नाम है ॥

६ शमथः, शमः (२ पु), शान्तिः (स्त्री), 'शान्ति' के तीन नाम हैं ॥

७ दान्तिः (स्त्री), दमथः, दमः (२ पु) 'इन्द्रियोंको अपने वशमें करने' के ३ नाम हैं ॥

८ अवदानम् (+अपदानम्), कर्मवृत्तम् (भा० दी० । २ न) 'बीते हुए काम, अच्छे काम' के २ नाम हैं ॥

---

१. "परायणतुरायणे" इति "पारायणपरायणे" इति च पाठान्तरे ॥

२. "स्वास्या" इति पाठान्तरम् ॥

३. "अवदानं कर्म वृत्तं (कर्मवृत्तं)" इति "अपदानं—" इति च पाठान्तरे ॥

४. प्रथमार्थे (क्रियासातत्ये) 'अपरस्पर'शब्दस्य क्लीबत्वं यथा—'अपरस्परं गच्छन्ति स्त्रियः, पुरुषाः, कुलानि वा'। द्वितीयार्थे (क्रियावत्सातत्ये) 'अपरस्पर'शब्दस्य त्रिलिङ्गत्वं यथा—अपरस्पराः स्त्रियः, अपरस्पराणि कुलानि, अपरस्परोऽन्वयः;………' ॥

५. 'पारायण' शब्दस्य क्लीबत्वमात्रे यथा—

"रत्नपारायणं नाम्ना लङ्केयं मम मैथिलि" इति भट्टिः ५।८९ ॥

'परायण' शब्दस्य त्रिलिङ्गत्वे यथा—

"अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्विबोधिता" इति कु० सं० ४।१॥

—१ [1]काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥
२ वशक्रिया संवननं ३ मूलकर्म तु कार्मणम् ।
४ विधूननं विधुवनं ५ तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥
६ पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं [2]हस्तवारणमित्यपि ।
७ [3]सेवनं सीवनं स्यूतिः ८ विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥
९ आक्रोशनमभीषङ्गः १० संवेदो वेदना न ना ।
११ संमूर्च्छनमभिव्याप्तिः—

१ काम्यदानम् (+कामदानम्), प्रवारणम् (+प्रचारणम् । २ न) 'मनचाहा' दान देने' के २ नाम हैं ॥

२ वशक्रिया (स्त्री), संवननम् (+संवपनम्, संवदनम् । न) 'मन्त्र-मणि आदिसे वशमें करने' के २ नाम हैं ॥

३ मूलकर्म (=मूलकर्मन्, भा० दी०), कार्मणम् (२ न), 'जड़ी-बूटी आदिसे उच्चाटन, मारण, मोहन आदि करने' के २ नाम हैं ॥

४ विधूननम् (+विधुननम्), विधुवनम् (२ न), 'कँपाने' के २ नाम हैं ॥

५ तर्पणम्, प्रीणनम्, अवनम् (३ न), 'तृप्त करने' के ३ नाम हैं ॥

६ पर्याप्तिः (स्त्री), परित्राणम्, हस्तवारणम् (+हस्तधारणम् । ३ न), 'मारने के लिये उद्यत (तैयार) को रोकने' के ३ नाम हैं ॥

७ सेवनम् (+सेवः पु), सीवनम् (२ न), स्यूतिः (स्त्री), 'सिलाई करने' के ३ नाम हैं ॥

८ विदरः (पु), स्फुटनम् (+स्फोटनम् । न), भिदा (स्त्री), 'फटने या अलग होने' के ३ नाम हैं ॥

९ आक्रोशनम् (न), अभीषङ्गः (+अभिषङ्गः । पु), 'गाली या शाप देने' के २ नाम हैं ॥

१० संवेदः (पु) वेदना (स्त्री न), 'अनुभव' के २ नाम हैं ॥

११ संमूर्च्छनम् (न), अभिव्याप्तिः (स्त्री), 'व्याप्त होने' अर्थात् 'चारों तरफसे बढ़ने या भर जाने' के २ नाम हैं ॥

१. 'कामदानं' इति पाठान्तरम् । २. 'हस्तधारम्' इति पाठान्तरम् ॥
३. 'सेवस्तु' इति पाठान्तरम् ॥

—१ याच्ञा भिक्षाऽर्थनाऽर्दना ॥ ६ ॥

२ वर्धनं छेदने ३ऽथ द्वे [1]आनन्दनसभाजने ।
आप्रच्छन्न ४ मथाम्नायः संप्रदायः ५ क्षये क्षिया ॥ ७ ॥
६ ग्रहे ग्राहो ७ वशः कान्तौ ८ [2]रक्ष्णस्त्राणे ९ रणः क्वणे ।
१० व्यधो वेधे ११ पचा पाके १२ हवो हूतौ १३ वरो वृतौ ॥ ८ ॥
१४ ओषः प्लोषे १५ नयो नाये—

---

१ याच्ञा, भिक्षा, अर्थना, अर्दना (४ स्त्री), 'माँगने' के ४ नाम हैं ॥

२ वर्धनम्, छेदनम्, (२ न), 'काटने' के २ नाम हैं ॥

३ आनन्दनम् (+ आमन्त्रणम्), सभाजनम्, आप्रच्छन्नम् (३ न), 'मित्र या गुरुजन आदिके आनेपर अभ्युत्थान (उठकर अगवानी), आलिङ्गन आदि और कुशल-प्रश्न आदि द्वारा उनके सत्कार करने' के ३ नाम हैं ॥

४ आम्नायः संप्रदायः (२ पु), रिवाज, कुलक्रमागत (खान्दानी) रहन-सहन या गुरु-परम्परागत उपदेश आदि' के २ नाम हैं ॥

५ क्षयः (पु), क्षिया (स्त्री), 'घटने या कम होने' के २ नाम हैं ॥

६ ग्रहः, ग्राहः (२ पु), 'ग्रहण करने, लेने' के २ नाम हैं ॥

७ वशः (पु), कान्तिः (स्त्री), 'चाहना इच्छा' के २ नाम हैं ॥

८ रक्षणः (+ रक्षा स्त्री), त्राणः (२ पु), 'रक्षा' के २ नाम हैं ॥

९ रणः, क्वणः (२ पु), 'शब्द करने' के २ नाम हैं ॥

१० व्यधः, वेधः, (२ पु), 'छेदने' के २ नाम हैं ॥

११ पचा (+ पक्तिः । स्त्री), पाकः (पु), 'पकाने' के २ नाम हैं ॥

१२ हवः (पु), हूतिः (स्त्री), 'पुकारने या बुलाने' के २ नाम हैं ॥

१३ [3]वरः (पु), वृतिः (स्त्री), 'घेरे या तप, सेवा आदिसे प्रसन्न होकर देवता, गुरु आदिके वरदान देने' के २ नाम हैं ॥

१४ ओषः, प्लोषः (+ प्रोषः । २ पु), 'दाह' के २ नाम हैं ॥

१५ नयः, नायः (२ पु), 'नीति' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'आमन्त्रणसभाजने इति पाठान्तरम् ॥ २. 'रक्ष' इत्यपपाठः' इति क्षी० स्वा० ॥

३. तथा च कात्यः—तपोभिरिष्यते यस्तु देवेभ्यः स वरो मतः' । इति ॥

१—ज्यानिर्जीर्णौ २ भ्रमो भ्रमौ ।
३ स्फातिर्वृद्धौ ४ प्रथा ख्यातौ ५ स्पृष्टिः पृक्तौ ६ स्नवः स्रवे ॥ ९ ॥
७ [1]एधा समृद्धौ ८ स्फुरणे स्फुरणा ९ प्रमितौ प्रमा ।
१० प्रसूतिः प्रसवे ११ श्च्योते प्राघारः १२ [2]क्लमथः क्लमे ॥१०॥
१३ उत्कर्षोऽतिशये १४ सन्धिः श्लेषे १५ विषय [3]आश्रये ।

---

१ ज्यानिः, जीर्णिः, (२ स्त्री), 'पुराना होने' के २ नाम हैं ॥
२ भ्रमः (पु), भ्रमिः (स्त्री), 'भ्रमण करने' के २ नाम हैं ॥
३ स्फातिः, वृद्धिः (२ स्त्री), 'बढ़ने' के २ नाम हैं ॥
४ प्रथा, ख्यातिः, (२ स्त्री), 'प्रसिद्धि' के २ नाम हैं ॥
५ स्पृष्टिः, पृक्तिः (२ स्त्री), 'स्पर्श करने' के २ नाम हैं ॥
६ स्नवः, स्रवः (२ पु), 'धीरे-धीरे चूने' के २ नाम हैं ॥
७ एधा (+ विधा), समृद्धिः (२ स्त्री), 'बढ़ने' के २ नाम हैं ॥
८ स्फुरणम् (+ स्फुलनम्, स्फोरणम्, स्फारणम्, स्फरणम् । न), स्फुरणा (स्त्री), 'फरकने' के २ नाम हैं ॥
९ प्रमितिः, प्रमा (२ स्त्री), 'यथार्थ ज्ञान' के २ नाम हैं ॥
१० प्रसूतिः (स्त्री), प्रसवः (पु), 'बच्चा जनने (पैदा करने)' के २ नाम हैं ॥
११ श्च्योतः, प्राघारः (२ पु), 'पानी आदिके धारासे चूने या बहने' के २ नाम हैं ॥
१२ क्लमथः, क्लमः (२ पु), 'ग्लानि, खेद' के २ नाम हैं ॥
१३ उत्कर्षः, अतिशयः (२ पु), 'उत्कर्ष, बड़ाई' के २ नाम हैं ॥
१४ सन्धिः, श्लेषः (२ पु), 'जोड़, मेल' के २ नाम हैं ॥
१५ विषयः, आश्रयः (+ आशयः । २ पु), 'आश्रय, अवलम्ब' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'विधा समृद्धौ' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'क्लमथुः' इत्यपपाठः' इति क्षी० स्वा० ॥
३. 'आशये' इति पाठान्तरम् ॥

१ क्षिपायां क्षेपणं २ गीर्णिर्गिरौ ३ [1]गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥
४ उन्नाय उन्नये ५ श्रायः श्रयणे ६ [2]जयने जयः।
७ निगादो निगदे ८ मादो मद ९ उद्वेग उद्भ्रमे ॥ १२ ॥
१० विमर्दनं परिमलोऽ ११ भ्युपपत्तिरनुग्रहः।
१२ [3]निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यात्—

१ क्षिपा (स्त्री), क्षेपणम् (न), 'प्रेरणा करने, चलाने या फेंकने' के २ नाम हैं ॥

२ गीर्णिः, गिरिः (२ स्त्री), 'निगलने' अर्थात् 'घोंटने' के २ नाम हैं ॥

३ गुरणम् (+ गूरणम्, गोरणम् । न), उद्यमः (पु), 'उद्यम, उद्योग' के २ नाम हैं ॥

४ उन्नायः, उन्नयः (२ पु), 'उन्नति या ऊहा' के २ नाम हैं ॥

५ श्रायः (पु), श्रयणम् (न), 'सेवा' के २ नाम हैं ॥

६ जयनम् (न), जयः (पु), 'जीत, विजय' के २ नाम हैं। ('क्षी० स्वा० सम्मत पाठभेदसे—'जपनम् (न), जपः (पु), 'जप' के २ नाम हैं') ॥

७ निगादः, निगदः (२ पु), 'स्पष्ट कहने' के २ नाम हैं ॥

८ मादः, मदः (२ पु), 'मद, हर्ष' के २ नाम हैं ॥

९ उद्वेगः, उद्भ्रमः (२ पु), 'घबराहट' के २ नाम हैं ॥

१० विमर्दनम् (न), परिमलः (पु), 'शरीरमें कुङ्कुम, चन्दन या उबटन आदिको लगाने' के २ नाम हैं ॥

११ अभ्युपपत्तिः (स्त्री), अनुग्रहः (पु) 'अनुग्रह' अर्थात् भलाई करने या बुराई से बचाने' के २ नाम हैं ॥

१२ निग्रहः (पु), (+ निरोधः, मा० दी० पु), 'निग्रह' अर्थात् 'बुराई करने और भलाईसे बचाने (रोकने)' का १ नाम है। ('पाठभेदसे—"विग्रहः, विरोधः (२ पु), 'विरोध' (वैर)' के २ नाम हैं") ॥

१. 'गूरणमुद्यमे' इति पाठान्तरम्। २. 'जपने जपः' इति क्षी० स्वा० सम्मतं पाठान्तरम् ॥

३. अयं पाठो महे० सम्मतः। 'निग्रहस्तु विरोधः' इति क्षी० स्वा० पुस्तकपाठः, तत्र '—निरोध' इति पाठ्यम्। 'विग्रहो विरोधो वा' इति क्षी० स्वा०। 'निग्रहस्तु निरोधः' इति मा० दी० पाठः समीचीनो भाति ॥

—१ अभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥
२ मुष्टिबन्धस्तु संग्राहो ३ डिम्बे डमरविप्लवौ ।
४ बन्धनं[1] प्रसितिश्चारः ५ स्पर्शः स्प्रष्टोपतप्तरि ॥ १४ ॥
६ निकारो विप्रकारः स्या ७ दाकारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ।
८ परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥
९ अपहारस्त्वपचयः १० समाहारः समुच्चयः ।

१ अभियोगः, अभिग्रहः (२ पु) 'युद्ध आदि में ललकारने' के २ नाम हैं ॥

२ मुष्टिबन्धः, संग्राहः (२ पु) 'मुट्ठी बाँधने या प्रतिमल्ल आदिको पकड़ने' के २ नाम हैं ॥

३ डिम्बः, डमरः, विप्लवः (३ पु), 'प्रलय टूटना (डाका), या हथियारों की लड़ाई' के ३ नाम हैं । (जिसे बालक रस्सी लपेटकर नचाते हैं, उस 'लट्टु' अर्थमें भी 'डिम्ब' शब्द का प्रयोग श्रीहर्षने नैषधचरितमें किया है[2]) ॥

४ बन्धनम् (न), प्रसितिः (+प्रसृतिः । स्त्री), चारः (+स्वारः । पु) 'बन्धन' के ३ नाम हैं ॥

५ स्पर्शः (+स्पशः), स्प्रष्टा (=स्प्रष्टृ), उपतप्ता (=उपतप्तृ । ३ पु), 'संतप्त या उपताप रोगसे पीड़ित' के ३ नाम हैं ॥

६ निकारः, विप्रकारः (२ पु), 'अपकार, बुराई' के २ नाम हैं ॥

७ आकारः, इङ्गः (२ पु), इङ्गितम् (न), 'मतलब के अनुसार चेष्टा' के ३ नाम हैं ॥

८ परिणामः, विकारः (२ पु), विकृतिः, विक्रिया (२ स्त्री), 'विकार, स्वभावके बदलने' के ४ नाम हैं । ('किसी-किसी के मतसे २-२ शब्द एकार्थक हैं') ॥

९ अपहारः, अपचयः (२ पु), 'छीन लेने या घटने' के २ नाम हैं ॥

१० समाहारः, समुच्चयः (२ पु), 'बटोरने इकट्ठा या ढेरी करने' के २ नाम हैं ॥

१. 'प्रसृतिः स्वारः स्पशः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तद्यथा—'बालेन नक्तं समयेन युक्तं रौप्यं लसड्डिम्बमिवेन्दुबिम्बम् ।'
इति नै० च० २२-५१

१ प्रत्याहार उपादानं २ विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥
३ अभिहारोऽभिग्रहणं ४ निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
५ अनुहारोऽनुकारः स्या ६ दर्थस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥
७ प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात् ८ प्रवहो गमनं बहिः ।
९ वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥
१० हिंसाकर्माऽभिचारः स्या११ज्जागर्या जागरा द्वयोः ।

---

१ प्रत्याहारः (पु), उपादानम् (न), 'इन्द्रियोंको अपने (इन्द्रियोंके) विषयोंसे हटाकर वशीभूत करने' के २ नाम हैं ॥

२ विहारः, परिक्रमः (२ पु), 'पैदल टहलने' के २ नाम हैं ॥

३ अभिहारः (+अभ्याहारः । पु), अभिग्रहणम् (न), 'चुराने' के २ नाम हैं ॥

४ निर्हारः (पु), अभ्यवकर्षणम् (न) 'पर आदिमें चुभे (गड़े) हुए काँटे आदिको निकालने' २ नाम हैं ॥

५ अनुहारः, अनुकारः (२ पु), 'अनुकरणम् (नकल) करने' के २ नाम हैं ॥

६ व्ययः (पु), 'खर्च' का १ नाम है ॥

७ प्रवाहः (पु), प्रवृत्तिः (स्त्री), 'पानी आदि तरल पदार्थोंके निरन्तर बहने' के २ नाम हैं' ॥

८ प्रवहः (पु) 'जलादि के बाहर निकलने (बहने)' के १ नाम हैं ॥

९ वियामः, वियमः, यामः, यमः, संयामः, संयमः (६ पु), 'संयम' अर्थात् 'योगके संयमनामक अङ्ग-विशेष' के ६ नाम हैं। ('क्षी० स्वा० के मत से 'अनेक तरहके यम करने, उपरति (त्याग) मात्र और संयम करने' के क्रमशः २-२ नाम हैं') ॥

१० हिंसाकर्म (=हिंसाकर्मन् न। भा० दी०), अभिचारः (पु), 'हिंसा आदि करने' के २ नाम हैं॥

११ जागर्या (+जागरिया, जागर्तिः । स्त्री), जागरा (स्त्री पु), 'जागने के २ नाम हैं ॥

१ विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः २ स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥
३ निर्वेश उपभोगः स्यात् ४ परिसर्पः परिक्रिया ।
५ विधुरं तु प्रविश्लेषे ६ ऽभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥
७ संक्षेपणं समसनं ८ पर्यवस्था विरोधनम् ।
९ परिसर्या परीसारः १० स्यादास्था त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥
११ विस्तारो विग्रहो व्यासः १२ स च शब्दस्य विस्तरः ।
१३ [1]संवाहनं मर्दनं स्याद्—

१ विघ्नः, अन्तरायः, प्रत्यूहः (३ पु), 'विघ्न' के ३ नाम हैं ॥

२ उपघ्नः, अन्तिकाश्रयः (भा० दी० । २ पु), 'समीप रहने आश्रय करने' के २ नाम हैं ॥

३ निर्वेशः, उपभोगः (२ पु), 'उपभोग' के २ नाम हैं ॥

४ परिसर्पः (पु), परिक्रिया (स्त्री), 'परिवार आदि इष्टजनोंसे घिरे रहने' के ४ नाम हैं ॥

५ विधुरम् (न), प्रविश्लेषः (पु), 'परिवार आदि इष्टजनों से अलग होने' के २ नाम हैं ॥

६ अभिप्रायः, छन्दः, आशयः (३ पु०), 'आशय, भाव, मतलब' के ३ नाम हैं ॥

७ संक्षेपणम् , समसनम् (२ न), 'संक्षेप (लाघव, थोड़ा हलका) करने' के २ नाम हैं ॥

८ पर्यवस्था (स्त्री), विरोधनम् (न), 'विरोध करने' के २ नाम हैं ॥

९ परिसर्या (स्त्री), परीसारः (+परिसारः । पु), 'सब तरफ जाने' के २ नाम हैं ॥

१० आस्था, आसना, स्थितिः (३ स्त्री,) 'टिकाव या स्थिति' के ३ नाम हैं ॥

११ विस्तारः, विग्रहः व्यासः (३ पु) 'फैलाव' के ३ नाम हैं ॥

१२ विस्तरः (पु), 'शब्द के फैलाव' का १ नाम है ॥

१३ संवाहनम् (+संवहनम्), मर्दनम् (२ न), 'शरीर को दबाने' के २ नाम हैं ॥

१. 'स्यान्मर्दनं संवहनम्' इति भा० दी० संमतं पाठान्तरम् ॥

—१ विनाशः स्यादृदर्शनम् ॥ २२ ॥
२ संस्तवः स्यात्परिचयः ३ प्रसरस्तु विसर्पणम्।
४ नीवाकस्तु प्रयामः स्यात् ५ सन्निधिः सन्निकर्षणम् ॥२३॥
६ लवोऽभिलावो लवने ७ निष्पावः पवने पवः।
८ प्रस्तावः स्यादवसर ९ स्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
१० प्रजनः स्यादुपसरः ११ [१]प्रश्रयप्रणयौ समौ।

---

१ विनाशः (पु), अदर्शनम् (न), 'अन्तर्धान होने या छिप जाने' के २ नाम हैं ॥

२ संस्तवः, परिचयः (२ पु), 'परिचय' अर्थात् 'जान-पहिचान' के २ नाम हैं ॥

३ प्रसरः (पु), विसर्पणम् (न), 'घाव (व्रण) आदि के थाला' (फैलाव) के २ नाम हैं ॥

४ नीवाकः, प्रयामः (२ पु), 'धान्य आदिको एकत्रित करने' के २ नाम हैं ॥

५ सन्निधिः (पु), सन्निकर्षणम् (न), 'पास, समीप करने' के २ नाम हैं ॥

६ लवः, अभिलावः (२ पु), लवनम् (न) 'काटने' के ३ नाम हैं ॥

७ निष्पावः (पु), पवनम् (न), पवः (पु), 'धान आदि अन्नको ओसाने या सूप आदिसे फटककर भूसा अलग करने' के ३ नाम हैं ॥

८ प्रस्तावः, अवसरः (२ पु), 'अवसर' प्रसङ्ग, प्रस्ताव' के २ नाम हैं ॥

९ त्रसरः (+ तसरः। पु) सूत्रवेष्टनम् (न) 'कपड़ा बुननेके लिये जुलाहा आदी सूत लपेटने (ताना-पाई करने)' के २ नाम हैं ॥

१० प्रजनः, उपसरः (२ पु), 'पहली बार गर्भ धारण करने' के २ नाम हैं ॥

११ प्रश्रयः (+ प्रसरः), प्रणयः (२ पु), 'प्रेम, प्रीति' के २ नाम हैं ॥

---

१. प्रसरप्रणयौ' इति पाठान्तरम् ॥

१ धीशक्तिर्निष्क्रमो २ऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥
३ प्रत्युत्क्रमः[1] प्रयोगार्थः ४ प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
५ स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः ६ संभ्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥
७ प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भः—

---

१ धीशक्तिः (स्त्री), निष्क्रमः (पु), 'बुद्धिके सामर्थ्य' के २ नाम हैं । ('सुननेकी इच्छा १, सुनना २, ग्रहण करना ३, धारण करना (स्थिर अर्थात् याद रखना) ४, ऊहा (तर्क) ५, अपोह ६, विज्ञान ७, और तत्त्वज्ञान ८, 'ये ८ बुद्धिके गुण[2] हैं') ॥

२ संक्रमः (पु न), दुर्गसंचरः (+दुर्गसंचारः । पु), 'किलामें जाने, दुर्ग (किला) के मार्ग' के २ नाम हैं ॥

३ प्रत्युत्क्रमः (+प्रत्युत्क्रान्तिः स्त्री) प्रयोगार्थः (+प्रयुद्धार्थः । 'प्रयोग' (+प्रयुद्ध) के पर्यायवाचक सब शब्द । २ पु), 'कार्यारम्भमें पहली बार प्रयोग करने या युद्धके लिये अच्छी तरह उद्योग करने' के २ नाम हैं ॥

४ प्रक्रमः, उपक्रमः (२ पु), 'पहली बार आरम्भ करने' के २ नाम हैं ॥

५ अभ्यादानम् (न), उद्धातः (+उपोद्धातः[3]), आरम्भः (२ पु), 'आरम्भमात्र' के ३ नाम हैं । ('भा० दी० के मतसे 'प्रक्रमः,......' ६ नाम 'आरम्भ' के ही हैं') ॥

६ संभ्रमः (पु), त्वरा (+त्वरिः । स्त्री), 'शीघ्रता, जल्दीबाजी' के २ नाम हैं ॥

७ प्रतिबन्धः, प्रतिष्टम्भः (२ पु), 'कार्य आदिमें रुकावट पड़ने' के २ नाम हैं ॥

---

१. 'प्रयुद्धार्थः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तम्—'शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
ऊहापोहौ च विज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः' ॥ १ ॥ इति ॥

३. 'उपोद्धात'लक्षणं यथा—
'चिन्तां प्रकृतिसिद्धार्थामुपोद्धातः प्रचक्षते' ॥ इति ॥

—१ अवनायस्तु [1] निपातनम्।
२ उपलम्भस्त्वनुभवः ३ समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥
४ विप्रलम्भो विप्रयोगो ५ विलम्भस्त्वतिसर्जनम्।
६ विश्रावस्तु प्रतिख्यातिऽरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥
८ निपाठनिपठौ पाठे ९ तेमस्तेमौ समुन्दने।
१० आदीनवास्रवौ क्लेशे ११ मेलके सङ्गसङ्गमौ ॥ २९ ॥
१२ [2]संवीक्षणं विचयनं मार्गणं [3]मृगणा मृगः।

---

१ अवनायः (पु), निपातनम् (+नियातनम्। न), 'नाचे झुकने' के २ नाम हैं॥

२ उपलम्भः, अनुभवः (२ पु), 'अनुभव प्राप्ति' के २ नाम हैं॥

३ समालम्भः (पु), विलेपनम् (न), 'चन्दन आदि लपेटने' के २ नाम हैं॥

४ विप्रलम्भः, विप्रयोगः (२ पु), 'अलग होने' के २ नाम हैं॥

५ विलम्भः (पु), अतिसर्जनम् (न), 'बहुत देने' के २ नाम हैं॥

६ विश्रावः (पु), प्रतिख्यातिः (+प्रविख्यातिः। स्त्री), 'बहुत प्रसिद्धि' के २ नाम हैं॥

७ अवेक्षा (स्त्री), प्रतिजागरः (पु), 'किसी वस्तु आदिकी निगरानी (देखभाल) करने' के २ नाम हैं॥

८ निपाठः, निपठः, पाठः (३ त्रि), 'पढ़ने' के ३ नाम हैं॥

९ तेमः, स्तेमः (२ पु), समुन्दनम् (न), 'पानी आदिसे भींगने' के ३ नाम हैं॥

१० आदीनवः, आस्रवः (+आश्रवः), क्लेशः (३ पु), 'दुःख' के ३ नाम हैं॥

११ मेलकः (+मेलः), सङ्गः, सङ्गमः (३ पु), 'मेल, मिलाप' के ३ नाम हैं॥

१२ संवीक्षणम् (+अन्वीक्षणम्, अन्वेषणम्, गवेषणम्), विचयनम्, मार्गणम् (३ न), मृगणा (+मृगया। स्त्री), मृगः (पु), 'ढूढ़ने, खोजने' के ५ नाम हैं॥

---

१. 'नियातनम्' इति पाठान्तरम्॥ २. 'अन्वीक्षणमन्वेषणम्' इत्येके पेठुः' इति क्षी०स्वा०॥
३. 'मृगया' इति मुकुटः॥

१ परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥
२ निर्वर्णनं तु निध्यानं[1] दर्शनालोकनेक्षणम् ।
३ प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥
४ उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।
५ अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थकाः ॥ ४२ ॥
६ स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।
७ पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥
८ प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ।

---

१ परिरम्भः (+ परीरम्भः), परिष्वङ्गः, संश्लेषः (३ पु), उपगूहनम् (न), 'आलिङ्गन करने या लिपटने' के ४ नाम हैं ।

२ निर्वर्णनम् , निध्यानम् , दर्शनम् , आलोकनम् , ईक्षणम् (+ आलोकनक्षणम् । ५ न), 'देखने' के ५ नाम हैं ॥

३ प्रत्याख्यानम् , निरसनम् (२ न), प्रत्यादेशः (पु), निराकृतिः (स्त्री), 'मना करने' के ४ नाम हैं ॥

४ उपशायः, विशायः (२ पु), 'पहरेदार आदिके बारी २ से सोने' के २ नाम हैं ॥

५ अर्तनम् (न), ऋतीया, हृणीया (+ हृणिया), घृणा (३ स्त्री), 'घृणा' के ४ नाम हैं ॥

६ व्यत्यासः विपर्यासः व्यत्ययः, विपर्ययः (+ विपर्यायः । ४ पु), 'उलटा, क्रमरहित' के ४ नाम हैं ॥

७ पर्ययः, अतिक्रमः, अतिपातः, उपात्ययः (४ त्रि), 'अतिक्रम' (क्रम को छोड़कर आगे बढ़ने)' के ४ नाम हैं ॥

८ प्रतिशासनम् (न), 'नौकर आदिको बुलाकर कहीं भेजने या किसी काममें लगाने' का १ नाम है ॥

---

१. दर्शनालोकलक्षणम्' इत्यपि पाठः' इति महे० ॥

१ स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥
२ निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्घनः।
३ स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥
४ आविधो विध्यते येन तत्र ५ विष्वक्समे निघः।
६ उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥
७ निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु।
८ आरत्यवरतिविरतय उपरामे९ऽस्त्रियां तु निष्ठेवः ॥ ३७ ॥
निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि।

---

१ संस्तावः (पु), 'यज्ञमें ब्राह्मणोंकी स्तुति करनेके लिये नियत स्थान-विशेष' का १ नाम है ॥

२ उद्घनः (पु), 'ठेहा' अर्थात् 'जिस लकड़ीपर रखकर दूसरी लकड़ी छीलते हैं उस नीचेवाली लकड़ी' का १ नाम है ॥

३ स्तम्बघ्नः, स्तम्बघनः (२ पु), 'घास काटने के हथियार खुरपा आदि, या तीनीके धानको झटका देकर झाड़नेके लिये बाँस या छड़ीमें बाँधे हुए दौरी आदि बर्तन' के २ नाम हैं ॥

४ आविधः (पु), 'बर्मा' का १ नाम है ॥

५ निघः (पु), 'सब तरफ से एक समान जमे या लगाये हुए पेड़ आदि' का १ नाम है ॥

६ उत्कारः, निकारः (२ पु), 'धान आदि अन्नको ओसाने या फटकने' के २ नाम हैं ॥

७ निगारः, उद्गार, विक्षावः, उद्ग्राहः (४ पु), निगलने' (घोंटने), वमन (उल्टी, कय) करने, छींकने और डकारने' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

८ आरतिः, अवरतिः, विरतिः (३ स्त्री), उपरामः (पु), 'रुकने' के ४ नाम हैं ॥

९ निष्ठेवः (पु न), निष्ठ्यूतिः (स्त्री), निष्ठेवनम्, निष्ठीवनम् (२ न), 'थूकने' के ४ नाम हैं ॥

१ जवने जूतिः २ सातिस्त्ववसाने स्या३दथ ज्वरे जूर्तिः ॥ ३८ ॥
४ उद्ग्रजस्तु पशुप्रेरण५मकरणिरित्यादयः शापे ।
६ गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ॥ ३९ ॥
७ आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ।
८ माणवानां तु माणव्यं ९ सहायानां सहायता ॥ ४० ॥
१० हल्या हलानां ११ ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ।
१२ द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठ्यमनुक्रमात् ॥ ४१ ॥

---

१ जवनम् (न), जूतिः (स्त्री), 'वेग' के २ नाम हैं ॥

२ सातिः (स्त्री), अवसानम् (न), 'समाप्ति, अन्त' के २ नाम हैं ॥

३ ज्वरः (पु), जूर्तिः (स्त्री), 'ज्वर, बुखार' के २ नाम हैं ।

४ उद्ग्रजः (पु), पशुप्रेरणम् (भा० दी०, न), 'पशुओंको हाँकने ललकारने या किसी तरह प्रेरणा करने' के २ नाम हैं ॥

५ अकरणिः (स्त्री), आदि ('आदिसे अजननिः, स्त्री; अवग्राहः, निग्राहः, २ पु,······'), 'शाप देने' का १ नाम है ॥

६ औपगवकम् (न), आदि ('आदिसे गार्गकम् , दाक्षकम् , २ न;······' 'औपगव 'उपगु' के गोत्रमें उत्पन्न आदि' (आदिसे 'गार्ग्य, दाक्षि,······') के समूह' का १ नाम है ॥

७ आपूपिकम् , शाष्कुलिकम् (२ न), आदि (आदिसे 'साक्तुकम् , चाणकम् , २ न'······'), 'पूआ, पुड़ी आदि (आदिसे 'सत्तू , चना···') के समूह (ढेरी)' का १—१ नाम है ॥

८ माणव्यम् (न), 'लड़कोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

९ सहायता (स्त्री), 'सहायोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥

१० हल्या (स्त्री), 'हलोंके समूह' का १ नाम है ॥

११ ब्राह्मण्यम् , वाडव्यम् (२ न). 'ब्राह्मणोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥

१२ पार्श्वम् , पृष्ठ्यम् (२ न), 'पशुओं (पँजरीकी हड्डियों) और पीठोंके समूह' का क्रमशः १—१ नाम है । (इन दोनोंका यज्ञमें स्मरण होता है अत एव ये दोनों यज्ञ-विषयक हैं') ॥

१ खलानां खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यकं नृणाम् ।
ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ॥ ४२ ॥
अपि- साहस्रकारीषवार्मणाथर्वणादिकम् ।

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ नानार्थवर्गः ।

३ नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः ।
भूरि प्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

---

१ खलिनी, खल्या (२ स्त्री), 'खलिहानके समूह' के २ नाम हैं ॥

२ मानुष्यकम् , ग्रामता, जनता, धूम्या, पाश्या, गल्या (५ स्त्री), 'साहस्रम् , कारीषम् , वार्मणम् , आथर्वणम् (पु० ५ न), आदि (आदिसे 'चार्मणम् , आङ्गारम् ,……'), 'मनुष्य, ग्राम, जन, धूम, पाश (जाल), बड़ा काश, हजार, कँडरा (उपला या गोहरा), कवचधारा, अथर्वण, आदि (आदिसे चमड़ा, अङ्गार,……), इनके समूह' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

३. अथ नानार्थवर्गः ।

३ वक्ष्यमाण (आगे कहे जानेवाले) इस कान्तादि (आदिसे—खान्त शान्त, श्रान्त,………) वर्ग में अनेक अर्थवाले भी कई शब्द कहे गये हैं जो पहलेके पर्यायों में नहीं कहे गये हैं और पण्डित-जनोंने काव्य-पुराण आदि ग्रन्थोंमें 'पृथुक, गरुत्मत् , रजस्' आदि जिन शब्दों का बहुधा प्रयोग किया है वे (पृथुक, गरुत्मत् , रजस् आदि) शब्द पहले स्वर्गवर्ग आदिके पर्यायोंमें तथा यहाँ भी कहे गये हैं। (जैसे—पृथुक शब्द 'पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः' (२।५।३८) यहाँ 'बालक' अर्थमें और 'पृथुकः स्याच्चिपिटकः' (२।९।४७) यहाँ 'चिवड़ा' अर्थमें कहे जानेपर भी इस नानार्थवर्गमें 'पृथुक-

अथ कान्ताः शब्दाः ।

१ आकाशे त्रिदिवे नाको २ लोकस्तु भुवने जने ।

त्रिविष्टपमकौ' (३।३।३) उक्त दोनों (बालक और चिउड़ा) अर्थों में फिर कहा गया; 'गरुत्मत्' शब्द 'गरुत्मान्' गरुडस्तार्क्ष्यो—' (१।१।२९) यहाँ 'गरुड़' अर्थमें और '—नीडोद्भवा गरुत्मन्तो पित्सन्तो नभसङ्गमाः' (२।५।३४) यहाँ 'पक्षी' अर्थमें कहे जानेपर भी इस नानार्थवर्गमें 'पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मन्तौ' (३।१।५८) उक्त दोनों (पक्षी और गरुड़) अर्थोंमें फिर कहा गया; 'तमस्' शब्द 'तमस्तु' राहुः स्वर्भानुः—' (१।३।२६) यहां 'राहु' अर्थमें, 'गुणाः सत्त्वं रजस्तमः' (१।५।२९) यहाँ 'सत्त्वादि गुण' अर्थमें और 'अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः' (१।८।३) यहाँ 'अन्धकार' अर्थमें कहे जानेपर भी इस नानार्थवर्गमें 'राहौ ध्वान्ते गुणे तमः' (३।१।२३१) उक्त तीनों (राहु, सत्त्वादि गुण और अन्धकार) अर्थोंमें पुनः कहा गया; इसी तरह विद्वान् जन अन्यान्य उदाहरणोंका भी तर्क कर लें') । यद्यपि 'जम्बुक' शब्दके क्रमशः 'स्यार, वरुण' और 'बालिश' शब्दके 'मूर्ख, बालक' ये २-२ अर्थ हैं तथापि इन्हें पण्डित-जनोंने क्रमशः 'स्यार और मूर्ख' इन्हीं १-१ अर्थोंमें उक्त (जम्बुक और बालिश) शब्दोंका प्रयोग किया है, अन्य दो (वरुण और बालक) अर्थोंमें नहीं, अत एव ग्रन्थकारने भी वैसा ही किया है (अर्थात् जैसे—'जम्बुक' शब्दको 'सृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरव-जम्बुकाः (२।५।५) यहाँपर 'स्यार' अर्थमें कहकर इस नानार्थवर्गमें जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ' (३।१।३) 'स्यार और वरुण' दोनों अर्थोंमें कहा है । इसी तरह 'बालिश' शब्दको भी 'अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः' (३।१।४८) यहाँ 'मूर्ख' अर्थमें कहकर इस नानार्थवर्गमें 'शिशावज्ञे च बालिशः' (३।१।२१८) 'मूर्ख और बालक' दोनों अर्थोंमें कहा है । इसी तरह अन्यान्य उदाहरणों का तर्क करना चाहिये') ।

अथ कान्ताः शब्दाः ।

१ 'नाकः' (पु) के स्वर्ग, आकाश, २ अर्थ हैं ॥

२ 'लोकः' (पु) भुवन (संसार), जन, २ अर्थ हैं ॥

१ पद्ये यशसि च श्लोकः २ शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥
३ जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ ४ पृथुकौ चिपिटार्भकौ ।
५ [1]आलोकौ दर्शनद्योतौ ६ भेरीपटहमानकौ ॥ ३ ॥
७ उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः ८ कलङ्कोऽङ्कापवादयोः ।
९ तक्षको नागवर्धक्योः १० रर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥
११ मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः ।
१२ स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥
१३ उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ।
१४ कमण्डलौ च चरकः—

१ 'श्लोकः' (पु) के पद्य, यश, २ अर्थ हैं ।

२ 'सायकः' (पु) के बाण, तलवार, २ अर्थ हैं ॥

३ 'जम्बुकः' (पु) के स्यार, वरुण, २ अर्थ हैं ॥

४ 'पृथुकः' (पु) के चिउड़ा, बालक, २ अर्थ हैं ॥

५ 'आलोकः' (पु) के दर्शन (देखना), प्रकाश, २ अर्थ हैं ॥

६ 'आनकः' (+ आणकः । पु) के भेरी, नगाड़ा, २ अर्थ हैं ॥

७ 'अङ्कः' (पु) के उत्सङ्ग (क्रोड, गोदी), चिह्न, २ अर्थ हैं ॥

८ 'कलङ्कः' (पु) के चिह्न लाञ्छन, २ अर्थ हैं ॥

९ 'तक्षकः' (पु), के 'तक्षक' नामका सर्प, बढ़ई २ अर्थ हैं ॥

१० 'अर्कः' (पु) के स्फटिक मणि, सूर्य, मदार या एकवन (आक नामक पौधा), ३ अर्थ हैं ॥

११ 'कः' (पु) के हवा, ब्रह्मा, सूर्य, ३ अर्थ; 'कम्' (न) के शिर, पानी, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'पुलाकः' (पु) के तीनी (नीवार) धान या धानकी भूसी, संक्षेप, भक्त (भात) का अवयव, ३ अर्थ हैं ॥

१३ 'पेचकः' (पु) के उल्लू, हाथीकी पूँछकी जड़ (मांस-पिण्ड-विशेष), २ अर्थ हैं ॥

१४ 'करकः' (पु) के कमण्डलु, कमोरी (ओला), २ अर्थ हैं ॥

[1] 'आलोको दर्शनद्योतौ भेरीपटहमाणकौ' इति पाठान्तरम् ॥

—१ सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥

२ किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च ३ शूककीटे च वृश्चिकः ।

४ प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥

५ स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेऽपि च ।

६ ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशातक्यथ ७ कट्फले ॥ ८ ॥

सिते च खदिरे सोमवल्कः स्या ८ दथ सिह्लके ।

तिलकल्के च पिण्याको ९ [1]बाह्लिकं रामठेऽपि च ॥ ९ ॥

१० महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ।

११ रुक्तापशङ्कास्वातङ्कः १२ स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥ १० ॥

१३ जैवातृकः शशाङ्केऽपि—

---

१ 'विनायकः' (पु) के बुद्धदेव, गणेश, गरुड, गुरु, विघ्न, ५ अर्थ हैं ॥

१ 'किष्कुः' (पु) के हाथभर, बित्ताभर (प्रमाण-विशेष), २ अर्थ हैं ॥

३ 'वृश्चिकः' (पु) के बिच्छू, आठवीं राशि (लग्न), भौंरा, केकड़ा, ओषधि-विशेष, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'प्रतीकः' (त्रि) का प्रतिकूल, १ अर्थ और 'प्रतीकः' (पु) का अवयव (हिस्सा), १ अर्थ है ॥

५ 'भूतिकम्' (न) के चिरायता, 'रोहिस' नामक घास, भूतृण, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'कोशातकी' (स्त्री) के चिचिंडा, तरोई या परवल, २ अर्थ हैं ॥

७ 'सोमवल्कः' (पु) के कायफल, दुधिया (सफेद) खैर २ अर्थ हैं ॥

८ 'पिण्याकः' (पु) के लोहबान, तिलकी खली, २ अर्थ हैं ॥

९ 'बाह्लिकम्' (+ बाह्लीकम् । न) के हींग, बाह्लीक देश का (काबुली) घोड़ा, कुंकुम, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'कौशिकः' (पु) के इन्द्र, गुग्गुलु, उल्लू पक्षी, सँपेरा, ४ अर्थ हैं ॥

११ 'आतङ्कः' (पु) के रोग, ताप, शङ्का, मुरज बाजेका शब्द, ४ अर्थ हैं ॥

१२ 'क्षुल्लकः' (त्रि) के क्षुद्र, नीच, जैनसम्प्रदायका तपस्वि-विशेष, २ अर्थ हैं ॥

१३ 'जैवातृकः' (पु) का चन्द्रमा, १ अर्थ और 'जैवातृकः' (त्रि) के आयुष्मान् (चिरजीवी), कृश, भेषज, ३ अर्थ हैं ॥

---

१. 'बाह्लीकम्' इति पाठान्तरम् ॥

—१ खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ।
२ व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना ३ यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥
४ ¹शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्वानः ५ स्वर्णेऽपि गैरिकम् ।
६ पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्या ७ दलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥
८ शीलान्वयावनूके द्वे ९ शल्के शकलवल्कले ।
१० साष्टे शते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥
दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री ११ कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ।
दम्भेऽप्य १२ थ पिनाकोऽस्त्री शूलशङ्करधन्वनोः ॥ १४ ॥

---

१ 'वर्तकः' (पु) के खुर (घोड़े का खुर), 'बत्तक' नामका पक्षी, २ अर्थ हैं ॥

२ 'पुण्डरीकः'(पु) के बाघ, आग, दिग्गज, ३ अर्थ और 'पुण्डरीकम्' (न) के सफेद छाता, औषध-विशेष, श्वेत कमल, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'दीपकः' (+दीप्यकः । पु) के अजमोदा जवाइन, मोरशिखा, चिराग, ३ अर्थ और 'दीपकम्' (न) का दीपकालङ्कार, १ अर्थ है ॥

४ 'शालावृकः' (+सालावृकः । पु) के बन्दर, स्यार, कुत्ता, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'गैरिकम्' (न) के सुवर्ण (सोना), गेरू (एक प्रकारका धातु-विशेष), २ अर्थ हैं ॥

६ 'व्यलीकम्' (न) के पीडा, वैलक्ष्य, २ अर्थ हैं ॥

७ 'अलीकम्' (न) के अप्रिय, झूठ (असत्य), ललाट, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'अनूकम्' (न) के शील, वंश, २ अर्थ हैं ॥

९ 'शल्कम्' (न) के खण्ड (टुकड़ा या हिस्सा), छिलका २ अर्थ हैं ॥

१० 'निष्कः' (पु न) के १०८ अशर्फी सोनेका बना हुआ छातीका भूषण (चन्द्रहार, सिकड़ी, हलका आदि) सोनेका पल (४ भरी सोना), मोहर, (अशर्फी), ४ अर्थ हैं ॥

११ 'कल्कः' (पु न) के मैला (विट्), पाप, दम्भ, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'पिनाकः' (पु न) के शङ्करजीका त्रिशूल, शङ्करजीका धनुष, धूलि-की वर्षा, ३ अर्थ हैं ॥

---

१. 'सालावृकाः' इति पाठान्तरम् ॥

१ धेनुका तु करेण्वां च २ मेघजाले च कालिका ।
३ कारिका[1] यातनावृत्त्योः ४ कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥
करिहस्तेऽङ्गुली पद्मबीजकोश्यां ५ त्रिषूत्तरे ।
वृन्दारकौ रूपिमुख्यावेके मुख्यान्यकेवलाः ॥ १६ ॥
७ स्याद्दाम्भिकः कौकुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः ।
८ लालाटिकः[2] प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥

---

१ 'धेनुका' (स्त्री) के हथिनी, नयी ब्याई हुई गाय, २ अर्थ और 'धेनुकः' (पु) का दान-विशेष, १ अर्थ है ॥

२ 'कालिका' (स्त्री) के मेघजाल (बरसाती समय, मेघ-समूह, नया मेघ), या स्वर्ण आदिका दोष (कालिमा), सुरा (मदिरा), काली देवी, ४ अर्थ हैं ॥

३ 'कारिका' (स्त्री) के यातना (बहुत बुरी तरहसे कष्ट भोगना), कारिका (जैसे—मुक्तावली, वाक्यपदीय, साहित्यदर्पण आदिमें), नटी, कृति, नापितादिका कर्म (हजामत आदि), ५ अर्थ हैं ॥

४ 'कर्णिका' (स्त्री) के कानका भूषण (कनफूल, ऐरन, आदि), हाथीकी सूँड, हाथके बीचकी अंगुलि, कमलका छत्ता (जिसमें कमलगट्टे रहते हैं), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'वृन्दारकः' (त्रि) के मनोहर या अनेक रूप धारण करनेवाला मायावी, श्रेष्ठ, देवता, ६ अर्थ हैं ॥

६ 'एकः' (त्रि) के प्रधान, दूसरा, केवल (सिर्फ), पहला अङ्क, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'कौकुटिकः' (त्रि) के दम्भ करनेवाला, पाससे चेष्टा आदिको देखनेवाला, २ अर्थ हैं ॥

८ 'लालाटिकः' (त्रि) के स्वामीके ललाट (+ भाव) को देखनेवाला (इसलिये कि स्वामी क्या आज्ञा देते हैं, स्वामीका मेरे ऊपर कैसा भाव है,…) भृत्य, काम करने में असमर्थ, २ अर्थ हैं ॥

---

१. यातनाकृत्योः' इति पाठान्तरम् ॥   २. 'प्रभोर्भावदर्शी' इति पाठान्तरम् ॥

१ [१]'भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम् (२३)
२ सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टकः (२४)
३ पाको पक्तिशिशु ४ मध्यरत्ने नेतरि नायकः (२५)
५ पर्यङ्कः स्यात्परिकरे६ [२]स्याद्व्याघ्रेऽपि च लुब्धकः (२६)
७ पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि८गुरौ देश्ये च देशिकः (२७)
९ खेटको ग्रामफलकौ१०धीवरेऽपि च जालिकः (२८)

१ ['कटकः' (पु न) के पहाड़के बीचका भाग, कङ्कण (कँगना), चक्र, ३ अर्थ हैं] ॥

२ ['कण्टकः' (त्रि) के सूई, काँटा या टूँड़ आदिका नोक (आगेवाला हिस्सा), क्षुद्र (छोटा) वैरी, रोमाञ्च (रोंआका खड़ा होना), ३ अर्थ हैं] ॥

३ ['पाकः' (पु) के पकाना, बालक, २ अर्थ हैं] ॥

४ ['नायकः' (पु) के मालाके बीचवाली मनियाँ (सुमेरु), नेता (किसी कामके आगे चलनेवाला मुखिया आदि), २ अर्थ हैं] ॥

५ ['पर्यङ्कः' (पु) के परिकर (नौकर आदि आत्मीय जन), पलङ्ग या मचान, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['लुब्धकः' (त्रि) के बाघ, लोभी, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['पेटकः' (त्रि) के समूह, पिटारी (बक्स, झपोली आदि), २ अर्थ हैं] ॥

८ ['देशिकः' (त्रि) के गुरु, देशमें होनेवाला पदार्थ (जैसे—देशिकं वासः, देशिका, पुत्तलिका, देशिकोऽश्वः, ······), २ अर्थ हैं] ॥

९ ['खेटकः' (त्रि) के ग्राम, ढाल, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['जालिकः' (त्रि) के मल्लाह, ग्रामज अलि, जालकी वृत्तिसे जीविका करनेवाला, ३ अर्थ हैं] ॥

१. 'भूभृन्नितम्ब······दर्पास्मदारणो' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यानेऽमरविवेकपुस्तके च मूलमात्रमुपलभ्यते । 'मृद्भाण्डे···द्रवके' (पृ० ४२९) इत्येष क्षेपकांशश्च क्षी० स्वा० व्याख्यायामेवोपलभ्यत इत्यतोऽयमप्यंशःक्षेपकरूपेणैव मया मूले निक्षिप्त इत्यवधेयम् ॥

२. 'आर्द्रायामपि लुब्धकः' इति पाठान्तरम् ॥

१ पुष्परेणौ च किञ्जल्कः २ शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च (२९)
३ स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका ४ वार्द्धकं भाववृन्दयोः (३०)
५ करिण्यां चापि गणिका ६ दारकौ बालभेदकौ (३१)
७ अन्धेऽप्यनेडमूकः स्या ८ ट्टङ्कौ दर्पाश्मदारणौ (३२)
९ मृद्भाण्डेऽप्युद्भिका १० मन्थे खजका रसदर्वके (३३)

इति कान्ताः शब्दाः ।

अथ खान्ताः शब्दाः ।

११ मयूखस्त्विट्करज्वाला १२ स्वलिबाणौ शिलीमुखौ ।
१३ शङ्खो निधौ ललाटास्थ्नि कम्बौ न स्त्री—

---

१ ['किञ्जल्कः' (त्रि) के फूलका पराग, कमल-केसर, २ अर्थ हैं] ॥

२ ['शुल्कः' (पु न) के स्त्रीका धन, रुपया (महसूल, कर, फीस आदि), २ अर्थ हैं] ॥

३ ['उत्कलिका' (स्त्री) के नदी आदिकी तरङ्ग, हँसी-मजाक, उत्कण्ठा, ३ अर्थ हैं] ॥

४ ['वार्द्धकम्' (त्रि) के बुढ़ापा, बूढ़ोंका समूह, २ अर्थ हैं] ॥

५ ['गणिका' (स्त्री) के हथिनी, वेश्या, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['दारकः' (पु) के लड़का, भेद करनेवाला, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['अनेडमूकः' (पु) के अन्धा, मूर्ख (कहने-सुननेमें अशिक्षित), शठ, ३ अर्थ हैं] ॥

८ ['टङ्कः' (पु) के दर्प, पत्थरको चीरनेवाली टाँकी, २ अर्थ हैं] ॥

९ ['उद्भिका' (स्त्री) के मिट्टीका मद्य भाण्ड-विशेष, कुटिरी, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['खजकः' (पु) के मथनीका डण्डा, कलछुल, युद्ध, ३ अर्थ हैं] ॥

इति कान्ताः शब्दाः ।

अथ खान्ताः शब्दाः ।

११ 'मयूखः' (पु) के शोभा, किरण, ज्वाला, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'शिलीमुखः' (पु) के भौंरा, बाण, २ अर्थ हैं ॥

१३ 'शङ्खः' (पु) के निधि (खजाना-विशेष), ललाटकी हड्डी, २ अर्थ और 'शङ्खः' (पु न) का शङ्ख, १ अर्थ है ॥

—१ इन्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥
२ घृणिज्वाले अपि शिखे—

इति खान्ताः शब्दाः।

अथ गान्ताः शब्दाः।

—३ शैलवृक्षौ नगावगौ।
४ आशुगौ वायुविशिखौ ५ शरार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥
६ पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च ७ पूगः क्रमुकवृन्दयोः।
८ पशावऽपि मृगा ९ वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥ २० ॥
१० परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि।
११ गजेऽपि नागमातङ्गौ—

---

१ 'खम्' (न), के इन्द्रिय, शून्य, आकाश, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'शिखा' (स्त्री) के किरण, ज्वाला, मोरकी शिखा, शिखामात्र (चोटी), ४ अर्थ हैं ॥

इति खान्ताः शब्दाः।

अथ गान्ताः शब्दाः।

३ 'नगः, अगः' (२ पु) के पहाड़, पेड़, २ अर्थ हैं ॥

४ 'आशुगः' (पु) के वायु, बाण, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'खगः' (पु) के बाण, सूर्य, पक्षी, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'पतङ्गः' (पु) के पक्षी, सूर्य, २ अर्थ हैं ॥

७ 'पूगः' (पु) के सुपारी (कसैली), समूह, २ अर्थ हैं ॥

८ 'मृगः' (पु) के पशु, हरिण, पाँचवाँ नक्षत्र, याचना, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'वेगः' (पु) के प्रवाह, तेजी, २ अर्थ हैं ॥

१० 'परागः' (पु) के फूलका पराग, स्नान करने योग्य सुगन्धित चूर्ण (पाउडर), धूलि, विख्याति, पर्वत, ५ अर्थ हैं ॥

११ 'नागः' (पु) के हाथी, साँप, नागकेसर, ३ अर्थ और 'मातङ्गः' (पु) के हाथी, चण्डाल, २ अर्थ हैं ॥

—१ अपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥
२ सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ।
३ योगः सन्नहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥
४ भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः ।
५ चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले त्रिषु ॥ २३ ॥
६ कपौ च प्लवगः ७ शापे त्वभिषङ्गः पराभवे ।
८ यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥
९ स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ।
लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौः १० लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥

---

१ 'अपाङ्गः' (पु) के तिलक, नेत्रका प्रान्त (किनारा), २ अर्थ हैं ॥

२ 'सर्गः' (पु) के स्वभाव, त्याग, निश्चय, काव्यके प्रकरण (जैसे—वाल्मीकि, नैषध, माघ, किरात, रघुवंश आदिका प्रकरण), सृष्टि, ५ अर्थ हैं ॥

३ 'योगः' (पु) के कवच, साम-दाम आदि उपाय, ध्यान (चित्तको एकाग्र करना), संगति, युक्ति, विश्वासघातक, ६ अर्थ हैं ॥

४ 'भोगः' (पु) के सुख, स्त्री आदिकी मजदूरी या वेतन, साँपका फण, साँपका शरीर, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'सारङ्गः' (पु) के चातक पक्षी, हरिण, हाथी, ३ अर्थ और 'सारङ्गः' (त्रि) का चितकाबर, १ अर्थ है ॥

६ 'प्लवगः' (पु) के बन्दर, मेढक, सूर्यका सारथि, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'अभिषङ्गः' (पु) के शाप, पराभव, शपथ, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'युगः' (पु) के रथ-गाड़ी आदिका जुआठ (जुवा), १ अर्थ और 'युगम्' (न) के युग (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग), जोड़ा, २ अर्थ हैं ॥

९ 'गौः' (= गो, लक्ष्यानुसार पु स्त्री) के स्वर्ग, बाण, पशु (गाय, बैल, साँढ़ आदि), वाक् (बोली), वज्र, दिशा (पूर्व, पश्चिम आदि), आँख, सूर्य, पृथ्वी, पानी १० अर्थ हैं । (लक्ष्यानुसार पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग जैसे—स्वर्ग, बाण, पशु (बैल) आदिके पुंलिङ्ग रहनेपर 'गो' शब्द पुंलिङ्ग; वाक्, पशु (गाय, बाछी), दिशा आदिके स्त्रीलिङ्ग रहनेसे 'गो' शब्द स्त्रीलिङ्ग होना') ॥

१० 'लिङ्गम्' (न) के चिह्न, लिङ्ग (पुरुषके पेशाबका रास्ता), २ अर्थ हैं ॥

१ शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च २ वराङ्गं मूर्द्धगुह्ययोः।
३ भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्त्तिषु ॥ २६ ॥

इति गान्ताः शब्दाः।

अथ घान्ताः शब्दाः।

४ परिघः परिघातेऽस्त्रे ऽ५प्योघो वृन्देऽम्भसां रये।
६ मूल्ये पूजाविधावर्घो ७ऽहोदुःखव्यसनेष्वघम् ॥ २७ ॥
८ [1]त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः—

इति घान्ताः शब्दाः।

---

१ 'शृङ्गम्' (न) के प्राधान्य, शिखर (पहाड़की चोटी), सींग, ३ अर्थ हैं॥

२ 'वराङ्गम्' (न) के मस्तक, गुह्येन्द्रिय या योनि (स्त्रीके पेशाबका रास्ता), २ अर्थ हैं ॥

३ 'भगम्' (न) के शोभा, इच्छा, माहात्म्य (प्रशंसा या बड़ाई), सामर्थ्य, यत्न, सूर्य, यश, धर्म, ८ अर्थ और 'भगः' (पु) का सूर्य, १ अर्थ है॥

इति गान्ताः शब्दाः

अथ घान्ताः शब्दाः

४ 'परिघः' (+ पलिघः । पु) के 'परिघ' नामका हथियार (लोहा मढ़ी हुई लाठी), योग-भेद, २ अर्थ हैं ॥

५ 'ओघः' (पु) के समूह, जलका प्रवाह, शीघ्रतासे नाचना, परम्परा, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'अर्घः' (पु) के मूल्य (कीमत), पूजा-विधि (अतिथि आदिके आनेपर या देव-पूजामें किया हुआ 'अर्घ' नामका सत्कार-विशेष, २ अर्थ है ॥

७ 'अघम्' (न) के पाप, दुःख, व्यसन (जुआ खेलने आदिकी आदत), ३ अर्थ हैं ॥

८ 'लघुः' (त्रि) के इष्ट, कम, २ अर्थ हैं ॥

इति घान्ताः शब्दाः।

---

१. 'त्रिष्विष्टेऽपि' इति पाठान्तरम् ॥

अथ चान्ताः शब्दाः ।

—१ काचाः शिक्यमृद्भेददृग्रुजः ।
२ [1]विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः ३ पावके शुचिः ॥ २८ ॥
मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।
४ अभिष्वङ्गेस्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

इति चान्ताः शब्दाः ।

अथ छान्ताः शब्दाः ।

५ 'प्रसन्ने भल्लुकेऽप्यच्छो ६ गुच्छः स्तबकहारयोः (३४)
७ परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः' (३५)

इति छान्ताः शब्दाः ।

अथ चान्ताः शब्दाः ।

१ 'काचः' (पु) के सिकहर, काच, आँखका रोग-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'प्रपञ्चः' (पु) के विपर्यास (उलटा-पुलटा), शब्द का फैलाव, संझट ३ अर्थ हैं ॥

३ 'शुचिः' (पु) के आग, आषाढ मास, मन्त्री, शृङ्गार रस, ४ अर्थ और 'शुचिः' (त्रि) के सफेद वस्तु, पवित्र, शुद्ध चित्तवाला, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'रुचिः' (स्त्री) के अभिष्वङ्ग (राग), स्पृहा (चाह), सूर्य आदि की किरण, शोभा, ४ अर्थ हैं ॥

इति चान्ताः शब्दाः ।

अथ छान्ताः शब्दाः ।

५ ['अच्छः' (पु) के प्रसन्न, भालू, स्फटिक मणि, ३ अर्थ हैं] ॥

६ ['गुच्छः' (पु) के फूल-फल आदिका गुच्छा, ३२ या ७० लड़ीका हार-विशेष, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['कच्छः' (पु) के कपड़े आदिको पहिरना, अञ्चल, २ अर्थ और 'कच्छः' (त्रि) का पानीका किनारा, १ अर्थ है] ॥

इति छान्ताः शब्दाः ।

---

१. 'विपर्यासे च विस्तारे' इति पाठो युक्तः' इति क्षी० स्वा० ॥

अथ जान्ताः शब्दाः।

१ कोकिताक्ष्यर्वाहिभुजौ २ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः।
३ अजा विष्णुहरच्छागा ४ गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः॥ ३० ॥
५ धर्मराजौ जिनयमौ ६ कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम्।
७ बलजे क्षेत्रपूर्द्वारे बलजा वल्गुदर्शना॥ ३१ ॥
८ समे क्ष्मांशे रणेऽप्याजिः ९ प्रजा स्यात्सन्ततौ जने।
१० अब्जौ शंखशशांकौ च ११ स्वके नित्ये निजं त्रिषु॥ ३२ ॥

इति जान्ताः शब्दाः।

अथ जान्ता शब्दाः।

१ 'अहिभुक्' (+ अहिभुज् पु) के मोर, गरुड २ अर्थ हैं॥

२ 'द्विजः' (पु) के दाँत, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों वर्ण, अण्डज (चिड़िया, साँप, मछली, मगर आदि), ३ अर्थ हैं॥

३ 'अजः' (पु) के विष्णु, शिवजी, छाग (खस्सी), रघुके पुत्र ('अज' नामका रघुवंशी राजा), ब्रह्मा, कामदेव, ६ अर्थ हैं॥

४ 'व्रजः' (पु) के गोष्ठ (गौओंके ठहरनेका स्थान गोशाला आदि), रास्ता, समूह, ३ अर्थ हैं॥

५ 'धर्मराजः' (पु) के जिन (बुद्धदेव), यमराज, युधिष्ठिर, ३ अर्थ हैं॥

६ 'कुञ्जः' (पु न) के हाथी का दाँत, कुञ्ज (लता आदिसे गलीके समान बना हुआ स्थान विशेष), २ अर्थ हैं॥

७ 'बलजम्' (न) के खेत्र, नगरका फाटक या द्वार, २ अर्थ और 'बलजः' (त्रि) का देखने में प्रिय लगनेवाला, १ अर्थ है॥

८ 'आजिः' (स्त्री) के बराबर (समतल) जमीन, युद्ध, २ अर्थ हैं॥

९ 'प्रजाः' (स्त्री) के सन्तान (पुत्र या पुत्री), प्रजा (रैयत), २ अर्थ हैं॥

१० 'अब्जः' (पु) के शंख, चन्द्रमा, धन्वन्तरि, ३ अर्थ और 'अब्जम्' (न) का कमल, १ अर्थ है॥

११ 'निजम्' (त्रि) के आत्मीय (अपना), नित्य, २ अर्थ हैं॥

इति जान्ताः शब्दाः।

अथ ज्ञान्ताः शब्दाः ।

१ पुंस्यात्मनि[1] प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः
२ संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना ॥ ३३ ॥
३ [2]'दोषज्ञौ वैद्यविद्वांसौ ४ज्ञो विद्वान् सोमजोऽपि च (३६)
५ विज्ञौ प्रवीणकुशलौ ६ कालज्ञौ ज्ञानिकुक्कुटौ' (३७)

इति ज्ञान्ताः शब्दाः ।

अथ टान्ताः शब्दाः ।

७ काकेभगण्डौ करटौ ८ गजगण्डकटी कटौ ।
९ शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥

अथ ज्ञान्ताः शब्दा ।

१ 'क्षेत्रज्ञः' (पु) का आत्मा, १ अर्थ और 'क्षेत्रज्ञ' (त्रि) का क्षेत्रज्ञ (शरीर को जाननेवाला ज्ञानी पुरुष । + प्रधान), १ अर्थ है ।

२ 'संज्ञा' (स्त्री) के चेतना (होश, ज्ञान), नाम हाथ-भौं आदिका इशारा, गायत्री, सूर्य की स्त्री, ५ अर्थ हैं ॥

३ ['दोषज्ञः' (पु) के वैद्य, विद्वान् , २ अर्थ हैं] ॥

४ ['ज्ञः' (पु) के विद्वान् , 'बुध' नामका ग्रह, ब्रह्मा, ३ अर्थ हैं] ॥

५ ['विज्ञः' (पु) के प्रवीण (निपुण), चतुर, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['कालज्ञः' (पु) के ज्ञानी, मुर्गा, २ अर्थ हैं] ॥

इति ज्ञान्ताः शब्दाः ।

अथ टान्ताः शब्दाः ।

७ 'करटः' (पु) के कौआ, हाथियोंका कपोल (गाल) २ अर्थ हैं ॥

८ 'कटः' (स्त्री) के हाथियोंका कपोल, कमर, २ अर्थ हैं ॥

९ 'शिपिविष्टः' (+ शिपिविष्टः, शितिपिष्टः । पु) के खल्वाट (रोग

---

१. 'प्रधाने' इति पाठान्तरम् ॥

२. दोषज्ञौ······कुक्कुटौ' इत्ययं क्षेपकांशः माहेश्वरीव्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यते इत्यतोऽस्य प्रकृतोपयोगितयाऽयं मूले स्थापितः ॥

१ देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा २ दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ।
३ रसे कटुः कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥
४ रिष्टं क्षेमाशुभाभावे ५ ष्वरिष्टे तु शुभाशुभे ।
६ मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥
अयोघने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ।
७ सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥
८ अत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो ९ मूले लग्नकचे जटा ।

आदिके कारण जिसके शिरके बाल गिर गये हों), खराब चमड़ेवाला (+ नपुंसक पुं० स्त्री०), शिवजी विष्णुजी, ४ अर्थ हैं ॥

१ 'त्वष्टा' (= त्वष्टृ पु), के विश्वकर्मा (देवताओंका बढ़ई या कारीगर), बारह सूर्योंमें से एक सूर्य, बढ़ई, ३ अर्थ हैं ॥

२ दिष्टम्' (न) का भाग्य, १ अर्थ और 'दिष्टः' (पु) का समय, १ अर्थ है ॥

३ 'कटुः' (पु) का कड़ुवा, १ अर्थ; 'कटु' (न) का नहीं करने योग्य' १ अर्थ और 'कटुः' (त्रि) के मत्सर (दूसरे की भलाईसे द्वेष करना), तीक्ष्ण, १ अर्थ हैं ॥

४ 'रिष्टम्' (न) के कल्याण, अशुभका अभाव, २ अर्थ हैं ॥

५ 'अरिष्टम्' (पु) के शुभ, अशुभ, २ अर्थ हैं ॥

६ 'कूटम्' (न पु) के माया, निश्चल (आकाशादि), हरिना आदि फँसानेका का यन्त्र-विशेष (जाल आदि), कपट, असत्य, गल्ला (अन्न आदि की ढेरी), लोहेका हथौरा, पहाड़की चोटी, हलके आगेवाला भाग, ९ अर्थ हैं ॥

७ 'त्रुटि' (स्त्री) के छोटी इलायची, समय-भेद, न्यूनता (कमी) संशय, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'कोटिः' (स्त्री) के धनुषके दोनों छोर, प्रकर्ष, कोण करोड़ (संख्या-विशेष), ४ अर्थ हैं ॥

९ 'जटा' (स्त्री) के पेड़ आदिकी जड़, जटा (मुनि आदिके सटे हुए बाल), जटामासी, ३ अर्थ हैं ॥

१ व्युष्टिः फले समृद्धौ च २ दृष्टिर्ज्ञानेऽक्ष्णि दर्शने ॥ ३८ ॥
३ इष्टिर्यागेच्छयोः ४ [1]सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ।
५ कष्टे तु कृच्छ्रगहने ६ दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥
पटुर्द्वौ वाच्यलिङ्गौ च—
७ [2]"पोटा दासी द्विलिङ्गा च ८ घृष्टी घर्षणसूकरौ (३८)
९ घटा गोष्ठ्यां हस्तिपङ्क्तौ १० कुपीटमुदरे जले' (३९)

इति टान्ताः शब्दाः ।

अथ ठान्ताः शब्दाः ।

—११ नीलकण्ठः शिवेऽपि च ।

---

१ 'व्युष्टिः' (स्त्री) के फल (प्रयोजन), समृद्धि, २ अर्थ हैं ॥

२ 'दृष्टिः' (स्त्री) के ज्ञान, आँख, देखना, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'इष्टिः' (स्त्री) के यज्ञ, इच्छा, २ अर्थ हैं ॥

४ 'सृष्टम्' (+ सृष्टिः स्त्री । त्रि), के निश्चित बहुत (काफी), छोड़ा हुआ, बनाया हुआ, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'कष्टम्' (त्रि) के दुःख, गहन (मुश्किलसे करने योग्य काम आदि), २ अर्थ हैं ॥

६ 'पटुः' (त्रि) के चतुर, निरालसी, रोग, ३ अर्थ हैं] ॥

७ ['पोटा' (स्त्री) के दासी, स्त्री पुरुषकेचिह्नोंसे युक्त स्त्री, २ अर्थ है]॥

८ ['घृष्टिः' (पु) के घिसना, सूअर, २ अर्थ हैं] ॥

९ ['घटा' (स्त्री) के सभा, हाथियोंकी कतार, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['कुपीटम्' (न) के पेट, पानी, २ अर्थ हैं] ॥

इति टान्ताः शब्दाः ।

अथ ठान्ताः शब्दाः ।

११ 'नीलकण्ठः' (पु) के शिवजी, मोर, २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'सृष्टिर्निश्चिते बहुले त्रिषु' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'पोटा''''''जले इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यत इत्य-तोऽयं प्रकृतोपयोगितया क्षेपकत्वेनात्र स्थापितः ॥

१ पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥
२ निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः ३ काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।
४ त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि ५ कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः ॥ ४१ ॥

इति टान्ताः शब्दाः ।

अथ डान्ताः शब्दाः ।

६ दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद् ७ गुडो गोलेक्षुपाकयोः ।
८ सर्पमांसात्पशू व्याडौ ९ गोभूवाचस्त्विडा इलाः ॥ ४२ ॥
१० क्ष्वेडा वंशशलाकापि ११ नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ।

---

१ 'कोष्ठः' (पु) के कोष्ठ (पेटके भीतरका एक भाग), कोठिला या बखार, घरका भीतरी भाग, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'निष्ठा' (स्त्री), के निष्पत्ति (सिद्धि), नाश, आखीर, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'काष्ठा' (स्त्री) के वृद्धि, मर्यादा, पूर्व आदि दिशा, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'ज्येष्ठ.' (त्रि) के बहुत उत्तम, बड़ा भाई आदि, वृद्ध, ३ अर्थ और 'ज्येष्ठः' (पु) का ज्येष्ठ महीना, १ अर्थ है ॥

५ 'कनिष्ठः' (त्रि) बालक, छोटा भाई आदि, थोड़ा ३ अर्थ हैं ॥

इति टान्ताः शब्दाः ।

अथ डान्ता शब्दाः ।

६ 'दण्डः' (पु न) के डण्डा, सजा, २ अर्थ हैं ॥

७ 'गुडः' (पु) के मिट्टीकी गोली, गुड, २ अर्थ हैं ॥

८ 'व्याडः' (पु) के साँप, बाघ, २ अर्थ हैं ॥

९ 'इडा, इला' (२ स्त्री) के गौ, पृथ्वी, वचन, बुधकी स्त्री, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'क्ष्वेडा' (स्त्री) के पिंजड़ा-दौरी आदि बनाने के लिये बाँस आदिको छीलकर चिकनी और पतली की हुई शलाका, सिंहकी गर्जना, २ अर्थ हैं ॥

११ 'नाडी' (स्त्री) के छः क्षण (एक घटी या २४ मिनट) का समय-विशेष, नाडी (नस), नाल (डंठल), ३ अर्थ हैं ॥

१ काण्डोऽस्त्री दण्डबाणार्ववर्गावसरवारिषु ॥ ४३ ॥
२ स्याद्भाण्डमश्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने ।
३ [1]"संघातग्रासयोः पिण्डी द्वयोः पुंसि कलेवरे (५०)
४ गण्डौकपोलविस्फोटौ ५ मुण्डकं त्रिषु मुण्डिते' (५१)

इति डान्ताः शब्दाः ।

अथ ढान्ताः शब्दाः ।

६ भृशप्रतिज्ञयोर्बाढं ७ प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥
८ शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ—

---

१ 'काण्डः' (पु न) के दण्ड, बाण, निन्दित, वर्ग (प्रकरण, जैसे-वाल्मीकीयमें-बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड,··· अमरकोषमें —प्रथमकाण्ड,···), अवसर, पानी, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'भाण्डम्' (न) के घोड़ेका भूषण, बर्तन, व्यापार आदिमें लगाये हुए बनिये आदिका मूल धन, ३ अर्थ हैं ॥

३ ['पिण्डी' (स्त्री पु) के समूह, ग्रास, २ अर्थ और 'पिण्डी' (पु) का शरीर, १ अर्थ है] ॥

४ ['गण्डः' (पु) के गाल, विस्फोट (फोड़ा आदि), २ अर्थ हैं] ॥

५ ['मुण्डकम्' (+ मुण्डम् । त्रि) के मुण्डित, शिर, २ अर्थ हैं] ॥

इति डान्ताः शब्दाः ।

अथ ढान्ताः शब्दाः ।

६ 'बाढम्' (न) का अत्यन्त, १ अर्थ और 'बाढम्' (अ०) के प्रतिज्ञा, स्वीकार, २ अर्थ हैं ॥

७ 'प्रगाढम्' (न) के अत्यन्त, कष्ट, २ अर्थ हैं ॥

८ 'दृढः' (त्रि) के समर्थ, मोटा या पुष्ट, अच्छी तरह, ३ अर्थ हैं ॥

---

[1] 'संघात···मुण्डिते' इति क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यते इति प्रकृतोऽयोगितयाऽयं मया मूले क्षेपकत्वेन निहितः ॥

—१ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ।

इति ढान्ताः शब्दाः।

अथ णान्ताः शब्दाः।

२ भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे ३ बाणो बलिसुते शरे॥ ४५॥

४ कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे ५ संघाते प्रमथे गणः।

६ पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च॥ ४६॥

७ मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशौर्यसन्ध्यादिके गुणः।

८ निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षणः॥ ४७॥

९ वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु चाक्षरे।

---

१ 'व्यूढः' (त्रि) के रचित, मिला हुआ (संहत), २ अर्थ हैं॥

इति ढान्ताः शब्दाः।

अथ णान्ताः शब्दाः।

१ 'भ्रूणः' (पु) के बालक, स्त्रीका गर्भ, २ अर्थ हैं॥

३ 'बाणः' (पु) के बलिका पुत्र (बाणासुर), बाण, २ अर्थ हैं॥

४ 'कणः' (पु) के अत्यन्त सूक्ष्म (पानीकी छोटी २ बूँदें, मोतीके दाने,···), धान्य (अन्न) की खुद्दी, २ अर्थ हैं॥

५ 'गणः' (पु) के समूह, शिवजीके दूत, सेनाकी संज्ञा-विशेष, ३ अर्थ हैं॥ (देखिये—२।८।८१ की टिप्पणी)

६ 'पणः' (पु) के जुआ आदिमें दावपर रक्खा हुआ धन आदि, वेतन या मजदूरी, कीमत, धन, ४ अर्थ हैं॥

७ 'गुणः' (पु) के धनुषकी ताँत, रूप-रस आदि २४ गुण, सत्त्व-रजस्—तमस् ३ गुण, बहादुरी, चातुर्य-पाण्डित्य आदि गुण, सन्धि-विग्रह आदि (पृ० २६९) ६ गुण, इन्द्रिय, ६ अर्थ हैं॥

८ 'क्षणः' (पु) के निकम्मा होकर बैठे रहना, एक घडीका बारहवाँ हिस्सा या ३ मिनटका समय—विशेष, उत्सव, ३ अर्थ हैं॥

९ 'वर्णः' (पु) के ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र ये ४ जाति, सफेद-लाल-पीला आदि रंग तथा स्तुति (व्रत, गुण, गीतका ताल-विशेष, यश) ये अर्थ और 'वर्णम्' (न) का अक्षर, १ ही अर्थ है॥

१ अरुणो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु ॥ ५८ ॥
२ स्थाणुः शर्वेऽप्यथ ३ द्रोणः काकेऽप्याजौ ४ रवे रणः ।
५ ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ५९ ॥
६ ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा [1]भ्रुवोः ।
७ हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ६० ॥
त्रिषु पाण्डौ च हरिणः ८ स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ।
९ तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे १० जुगुप्साकरुणे घृणे ॥ ६१ ॥
११ वणिक्पथे च विपणिः १२ सुरा प्रत्यक्च वारुणी ।

---

१ 'अरुणः' (पु) का सूर्य, सूर्यका सारथि, सन्ध्या समयकी लालिमा, कुष्ठ, ४ अर्थ और 'अरुणः' (त्रि) का लाल रङ्गवाला, १ अर्थ है ॥

२ 'स्थाणुः' (पु) के शिवजी, ठूंठ (बिना डाल-पातका सूखा हुआ पेड़) आदि स्थिर पदार्थ, २ अर्थ है ॥

३ 'द्रोणः' (पु) के कौआ, द्रोणाचार्य, द्रोण (परिमाण-विशेष), ३ अर्थ हैं ॥

४ 'रणः' (पु) के लड़ाई, शब्द, २ अर्थ हैं ॥

५ 'ग्रामणीः' (पु) का नाई (हजाम), १ अर्थ और 'ग्रामणीः' (त्रि) के श्रेष्ठ, ग्रामका स्वामी (सरपञ्च, डीहा), २ अर्थ हैं ॥

६ 'ऊर्णा' (स्त्री) के ऊन (भेंड़ आदिका रोंआ), दोनों भौंहोंके बीचवाला भाग, २ अर्थ हैं ॥

७ 'हरिणी' (स्त्री) के मृगी, सोनेकी मूर्ति, हरे रंगवाली, ३ अर्थ और 'हरिणः' (त्रि) के पाण्डु (कुछ २ पीलापन लिये सफेद) रंग, हरिना, २ अर्थ हैं ॥

८ 'स्थूणा' (स्त्री) के घरका खम्भा, लोहेकी मूर्त्ति, रोग-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'तृष्णा' (स्त्री) के स्पृहा (अभिलाषा), प्यास, २ अर्थ हैं ॥

१० 'घृणा' (स्त्री) के घृणा (नफरत), करुणा, २ अर्थ हैं ॥

११ 'विपणिः' (स्त्री) के बाजार (कटरे) की गली, दूकान, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'वारुणी' (स्त्री) के मदिरा, पश्चिम दिशा, २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'भ्रुवौ' इति पाठान्तरम् ॥

१ करेणुरिभ्यां स्त्री नेभे २ द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥
३ शरणं गृहरक्षित्रोः ४ श्रीपर्णं कमलेऽपि च ।
५ विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु ॥ ५३ ॥
६ प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ।
७ करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥
८ प्राण्युत्पादे संसरणमसंबाधचमूगतौ ।
घण्टापथेऽथ वान्तान्ने [1]समुद्गिरणमुन्नये ॥ ५५ ॥
१० अतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः ।

---

१ 'करेणुः' (स्त्री) का हथिनी, १ अर्थ और 'करेणुः' (पु) का हाथी, १ अर्थ है ॥

२ 'द्रविणम्' (न) के बल, धन, २ अर्थ हैं ॥

३ 'शरणम्' (न) के मकान (घर), रक्षक, २ अर्थ हैं ॥

४ 'श्रीपर्णम्' (न) के कमल, अरणि (यज्ञमें रगड़कर आग पैदा करने योग्य काष्ठ–विशेष), २ अर्थ हैं ॥

५ 'तीक्ष्णम्' (न) के विष, लड़ाई, लोहा, ३ अर्थ और 'तीक्ष्णम्' (त्रि) का तेज हथियार आदि, १ अर्थ है ॥

६ 'प्रमाणम्' (न) के हेतु (जैसे—पहाड़पर अग्निका अनुमान करनेमें धुआँ हेतु है,···), सीमा (हद), शास्त्रकी इयत्ता, प्रमाता, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'करणम्' (न) के कामकी सिद्धिमें अत्यंत उपकारक (जैसे—मारनेमें बाण–तलवार आदि), क्षेत्र, शरीर, इन्द्रिय, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'संसरणम्' (न) के प्राणियोंकी उत्पत्ति, सेनाका निर्विघ्न आगे बढ़ना, राजमार्ग (सड़क), ३ अर्थ हैं ॥

समुद्गिरणम्' (+समुद्धरणम् । न) के उल्टी (वमन, कय) किया हुआ अन्न आदि, किसी चीजको ऊपर खींचना या उठाना, उखाड़ना, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'विषाणम्' (त्रि) के सींग, हाथीका दाँत, २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'समुद्धरणमुद्गिरे' इति पाठान्तरम् ।

१ प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रह्वे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥
२ संकीर्णौ [1]निचिताशुद्धा३विरिणं शून्यमूषरम् ।
४ [2]'सेतौ च वरणो ५ वेणी नदीभेदे कचोच्चये' (४२)

इति णान्ताः शब्दाः ।

अथ तान्ताः शब्दाः ।

६ देवसूर्यौ विवस्वन्तौ ७ सरस्वन्तौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥
८ पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मन्तौ ९ शकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
१० अग्न्युत्पातौ धूमकेतू ११ जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥

---

१ **'प्रवणम्'** (त्रि) के ढालू जमीन, नम्र, २ अर्थ और **'प्रवणः'** (पु) का चौरास्ता, १ अर्थ है ॥

२ **'संकीर्णः'** (त्रि) के व्याप्त (फैला या भरा हुआ), अशुद्ध (दो जातियोंका मेल), २ अर्थ हैं ॥

३ **'इरिणम्'** (+ इरणम् , ईरणम् , ईरिणम् , विरिणम् । न) के खाली स्थान, ऊसर जमीन, २ अर्थ हैं ॥

४ [**'वरणः'** (पु) के पुल, बाँस या तार, काँटा आदिका घेरा, २ अर्थ हैं] ॥

५ [**'वेणी'** (स्त्री), के नदी-विशेष केशकी चोटी २ अर्थ हैं] ॥

इति णान्ताः शब्दाः ।

अथ तान्ताः शब्दाः ।

६ **'विवस्वान्'** (= विवस्वत् पु), के देवता, सूर्य हैं ॥

७ **'सरस्वान्'** (= सरस्वत् पु) के नद (शोणभद्र, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि), समुद्र, २ अर्थ हैं ॥

८ **'गरुत्मान्'** (= गरुत्मत् पु) के पक्षी, गरुड़ २ अर्थ हैं ॥

९ **'शकुन्तः'** (पु) के गिद्ध, चिड़िया-मात्र २ अर्थ हैं ॥

१० **'धूमकेतुः'** (पु) के आग, भविष्यमें होनेवाले उत्पातका सूचक तारा-विशेष, २ अर्थ हैं ॥

११ **'जीमूतः'** (पु) के बादल पहाड़ २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'निचिताशुद्धावीरिणम्' इति पाठान्तरम्' ॥

२. सेतौ ''' कचोच्चये' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यानेऽपि मूलमात्रमुपलभ्यते ॥

१ हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे २ मरुतौ पवनामरौ ।
३ यन्ता हस्तिपके सूते ४ भर्ता धातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥
५ यानपात्रे शिशौ पोतः ६ प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ।
७ ग्रहभेदे ध्वजे केतुः ८ पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥
९ स्थपतिः कारुभेदेऽपि १० भूभृद्भूमिधरे नृपे ।
११ मूर्द्धाभिषिक्तो भूपेऽपि १२ ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥
१३ विष्णावप्यजिताव्यक्तौ—

---

१ 'हस्तः' (पु) के हाथ, हस्त नामक तेरहवाँ नक्षत्र, २ अर्थ हैं ॥

२ 'मरुत्' (पु) के वायु, देवता, २ अर्थ हैं ॥

३ 'यन्ता' (= यन्तृ पु) के हाथीवान, सारथि (कोचवान, एक्कावान, ड्राइवर आदि), २ अर्थ हैं ॥

४ 'भर्ता' (= भर्तृ पु), ब्रह्मा, पोषण (रक्षा) करनेवाला, पति, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'पोतः' (पु) के जहाज, बालक, २ अर्थ हैं ॥

६ 'प्रेतः' (पु) के प्रेत (योनि–विशेष) मरा हुआ जीव, २ अर्थ हैं ॥

७ 'केतुः' (पु) के केतु नामका ग्रह, पताका २ अर्थ हैं ॥

८ 'सुतः' (पु) के राजा पुत्र, २ अर्थ हैं ॥

९ 'स्थपतिः' (पु) के बढ़ई, कंचुकी, बृहस्पतिके मन्त्रसे यज्ञ करनेवाले, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'भूभृत्' (पु) के पहाड़, राजा, २ अर्थ हैं ॥

११ 'मूर्द्धाभिषिक्तः' (पु), के राजा, प्रधान, मन्त्री, क्षत्रियमात्र ब्राह्मण जातिके पितासे क्षत्रिय जातिकी मातामें उत्पन्न संतान, ५ अर्थ हैं ॥

१२ 'ऋतुः' (पु) के स्त्रियोंका मासिक धर्म, हेमन्त आदि (१।४।१३ में उक्त) छः ऋतु २ अर्थ हैं ॥

१३ 'अजितः' (पु) के विष्णु, शिवजी, २ अर्थ और 'अजितः' (त्रि) का नहीं हारा हुआ १ अर्थ, तथा 'अव्यक्तः' (पु) के विष्णु, शिवजी, मूर्ख, ३ अर्थ; 'अव्यक्तम्' (न) महदादिक, आत्मा २ अर्थ और 'अव्यक्तम्' (त्रि) का अस्पष्ट, १ अर्थ हैं ॥

१—सूतस्त्वष्टरि सारथौ ।
२ व्यक्तः प्राज्ञेऽपि ३ 'दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥
४ क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे[2] क्षत्रियायां च शूद्रजे ।
५ वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कार्त्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥
६ आनर्त्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्विशेषयोः ।
७ कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥
८ [3]श्लेष्मादिरसरक्तादिमहाभूतानि तद्गुणाः ।

---

१ 'सूतः' (पु) के बढ़ई, सारथि, क्षत्रिय जातिके पितासे ब्राह्मण जातिकी मातामें उत्पन्न संतान, वन्दी, पारा, ५ अर्थ और 'सूतः' (त्रि) के जन्मा (पैदा) हुआ, प्रेरित, २ अर्थ हैं ॥

२ 'व्यक्तः' (पु) के विद्वान्, स्पष्ट, २ अर्थ हैं ॥

३ 'दृष्टान्तः' (पु) के तर्क आदि शास्त्र, उदाहरण, २ अर्थ हैं ॥

४ 'क्षत्ता' (= क्षत्तृ पु), के सारथि, द्वारपाल, शूद्र जातिके पितासे क्षत्रिय जातिकी मातामें उत्पन्न संतान, वेश्या-पुत्र, नियुक्त, ब्रह्मा, ६ अर्थ हैं ॥

५ 'वृत्तान्तः' (पु) के प्रकरण (अवसर), प्रकार (तरह, भाव, यथा-पाँच प्रकारके छः प्रकारके,······) साकल्य (पूरा २), बात, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'आनर्तः' (पु) के लड़ाई, नाचघर, देश-विशेष (पश्चिम समुद्रके पासकी द्वारावती अर्थात् द्वारकापुरी), ३ अर्थ हैं ॥

७ 'कृतान्तः' (पु) के यमराज, सिद्धान्त, भाग्य, पापकर्म, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'धातुः' (पु) के कफ आदि (थूक, खखार, पित्त, आदि), रस (भोजन करने बाद उत्पन्न अन्नादिका विकार-विशेष), खून आदि (चर्बी, मज्जा, वीर्य, मांस, पीव, हड्डी आदि), पृथ्वी आदि, (जल तेज, वायु, आकाश), पञ्च महाभूत, उन (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) के गुण (गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द), इन्द्रिय (आँख आदि पूर्वोक्त (१।५।८) ११ इन्द्रिय), हरताल, मैनसिल, गेरू आदि पत्थरके विकारसे उत्पन्न धातुः भूः, एध,

---

१. 'दृष्टान्ताउभे' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'वेश्यायां च' इत्यपपाठश्छन्दोभङ्गात् ।
३. 'श्लेष्मादिरस्थिरक्तादिमहाभूतानि' इति पाठान्तरम् ॥

इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥
१ कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ।
२ कासूसामर्थ्ययोः शक्तिः३मूर्त्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥
४ विस्तारवल्ल्योर्व्रततिः५र्वसती रात्रिवेश्मनोः ।
६ क्षयार्चयोरपचितिः ७ सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥
८ [1]अर्तिः पीडाधनुष्कोट्योः९जातिःसामान्यजन्मनोः ।
१० प्रचारस्यन्दयो रीतिः—

पच आदि शब्दोत्पत्तिके कारण--भूत व्याकरणशास्त्रसम्मत धातु, सोना-चाँदी-ताँबा-पीतल आदि धातु, ९ अर्थ हैं ॥

१ 'शुद्धान्तः' (पु) के रनिवास (राजाका महल—जहाँ सब कोई नहीं जा सकता ऐसा राजाकी रानियोंका निवासगृह), राजाकी स्त्रियाँ, अशौचका अन्त, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'शक्तिः' (स्त्री) के बर्छी, सामर्थ्य, २ अर्थ हैं ॥

३ 'मूर्त्तिः' (स्त्री) के कठोरता, शरीर, २ अर्थ हैं ॥

४ 'व्रततिः' (स्त्री) के विस्तार, लता, २ अर्थ हैं ॥

६ 'अपचितिः' (स्त्री) के क्षय, पूजा, खर्च, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'सातिः' (स्त्री) के दान (गज-मदका जल), अन्त, २ अर्थ हैं ॥

८ 'अर्तिः' (+ आर्त्तिः । स्त्री) के दुःख, धनुषका दोनोंका किनारा (छोर) २ अर्थ हैं ॥

९ 'जातिः' (स्त्री) के सामान्य अर्थात् जाति (जैसे—गोत्व, ब्राह्मणत्व, आदि), जन्म, मालती नामका फूल, छन्द, जातीफल, गोत्र, आँवला, ७अर्थ हैं ॥

१० 'रीतिः' (स्त्री) के रिवाज (रस्म, लोकाचार), छन्द, धीरे २ बहना, टपकना, पीतल, लोहेकी मैल (मण्डूर), वैदर्भी आदि (गौडी, पाञ्चाली, लाटिका) काव्यके रसादि-संबन्धी चार[2] रीति, ५ अर्थ हैं ॥

१. 'आर्तिः' इति पाठान्तरम् ॥

२. तदुक्तं विश्वनाथेन—'पदसंघटना रीतिरङ्गसंस्थाविशेषवत् ।
उपकर्त्री रसादीनां, सा पुनः स्याच्चतुर्विधा ॥
वैदर्भी चाथ गौडी च पाञ्चाली लाटिका तथा' ।
इति सा० द० ९।६।४४-६४५ ॥

—१ ईतिर्डिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥
२ उदयेऽधिगमे प्राप्तिः ३त्रेता त्वग्नित्रये युगे ।
४ वीणाभेदेऽपि महती ५ भूतिर्भस्मनि संपदि ॥ ६९ ॥
६ नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्यथ संगरे ।
सङ्गे सभायां समितिः ८ क्षयवासावपि [1]क्षिति ॥ ७० ॥
९ रवेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ।
१० जगती जगति च्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥

---

१ 'ईतिः' (स्त्री) के विप्लव (बहुत वर्षा होना, सूखा पड़ना अर्थात् वर्षाका न होना; टिड्डी, मुसे, सुग्गेका, लगना, राजाका पास आना; ये ६ [2]उपद्रव), परदेश जाना, २ अर्थ हैं ॥

२ प्राप्तिः' के उत्पत्ति, पाना, २ अर्थ हैं ॥

३ 'त्रेता' (स्त्री) के दक्षिण, गार्हपत्य और हवनीय नामके तीन अग्नि-विशेष, त्रेता नामक युग, २ अर्थ हैं ॥

४ 'महती' (स्त्री) के नारद ऋषिकी वीणा, महत्त्वसे युक्त (बड़ी) स्त्री, २ अर्थ हैं ॥

५ 'भूतिः' (स्त्री) के भस्म (राख), सम्पत्ति, हाथीका श्रृङ्गार, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'भोगवती' (स्त्री) के दर्पोंकी नदी, सर्पोंकी नगरी (पाताल), २ अर्थ हैं ॥

७ 'समितिः' (स्त्री) के युद्ध, सङ्ग, सभा ३ अर्थ हैं ॥

७ 'क्षितिः' (स्त्री) के विनाश, निवास, पृथ्वी कालभेद, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'हेतिः' (स्त्री) के सूर्यकी किरण, हथियार, आगकी ज्वाला ३ अर्थ हैं ॥

१० 'जगती (स्त्री) के संसार, बारह अक्षर के (जैसे—वंशस्थ, तोटक, इन्द्रवंशा आदि) छन्द, पृथ्वी, जल, ४ अर्थ हैं ॥

---

१. क्षितिः' इति पाठान्तरम् ॥

२. ईतयश्च षड् भवन्ति । ता यथा —

'अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुकाः ।
प्रत्यासन्नाश्च राजानःषडेता ईतयः स्मृताः' ॥ इति ।

क्वचित्तु—स्वचक्रं परचक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः इत्येवमुत्तरार्द्धं दृश्यते ॥

१ [1]पङ्क्तिश्छन्दोऽपि दशमं २ स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः।
३ पत्तिर्गतौ च ४ मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः॥ ७२॥
५ प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च ६ कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः।
७ सिकताः स्युर्वालुकापि ८ वेदे श्रवसि च श्रुतिः॥ ७३॥

'पङ्क्ति' (स्त्री) के दश अक्षरके (जैसे—चम्पकमाला, मनोरमा, मत्ता आदि) छन्द, पंक्ति (कतार), २ अर्थ हैं॥

२ 'आयतिः' (स्त्री) के प्रभाव, उत्तर काल, २ अर्थ है॥

३ 'पत्तिः' (स्त्री) के चलना, योद्धा, सेना-विशेष (१० २९२ या २।८।८०) पैदल ४ अर्थ हैं॥

४ 'पक्षतिः' (स्त्री) का पक्ष (शुक्ल या कृष्ण) की प्रथम तिथि अर्थात् प्रतिपदा, चिड़िया आदिके पङ्खकी जड़, २ अर्थ हैं॥

५ 'प्रकृतिः' (स्त्री) के योनि, लिङ्ग (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसक), स्वभाव, शिल्पी (कारीगर), नागरिक-मन्त्री, आदि, गुणसाम्य, ६ अर्थ हैं॥

६ 'वृत्तिः' (स्त्री) के कैशिकी आदि (आरभटी, शाश्वती, भारती) काव्य-सम्बन्धी चार [2]वृत्ति, जीविका, सूत्रादिका अर्थ हैं॥

७ 'सिकताः' (स्त्री नि० ब० व०) के बालू, बालूसे युक्त स्थान या देश चीनी, ३ अर्थ हैं॥

८ 'श्रुतिः' (स्त्री) के वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद), कान, वार्ता, ३ अर्थ हैं॥

---

१. पंक्तिश्छन्दो दशापि स्यात्' इति पाठान्तरम्॥

२. भारती शाश्वती चैव कैशिक्यारभटी तथा।
चतस्रो वृत्तयश्चैताः यासु नाट्यं प्रतिष्ठितम्॥ इति।

दशरूपकेऽपि 'तद्व्यापारात्मिका वृत्तिश्चतुर्धा, तत्र कैशकी' (दशरू० २।४७) इत्यारभ्य 'चतुर्थी भारती सापि वाच्या नाटकलक्षणे (दशरू० २।६० इत्यन्तेन तद्भेदा) उक्त अग्रे च—

'शृङ्गारे कैशिकी वीरे सात्वत्यारभटी पुनः।
रसे रौद्रे च बीभत्से वृत्तिःसर्वत्र भारती'॥ (दशरू० २।६१)

इत्यनेन कस्याः कोपयोग इति कथितम्॥

१ वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ।
२ गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि ३ धृतिर्धारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥
४ बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि ।
५ [1]वासिता स्त्रीकरिण्योश्च ६ वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥
वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिष्व ७ प्सु च घृतामृते ।
८ कलधौतं रूप्यहेम्नो ९ र्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥
१० श्रुतं शास्त्रावधृतयो ११ र्युगपर्याप्तयोः कृतम् ।
१२ अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥

---

१ 'वनिता' (स्त्री) के अत्यन्त प्यारी स्त्री, स्त्रीमात्र, २ अर्थ हैं ॥

२ 'गुप्तिः' (स्त्री) के जमीनका गढा (गुफा या सुरङ्ग), जेलखाना, रक्षा ३ अर्थ हैं ॥

३ 'धृतिः' (स्त्री) के धारण, धैर्य, योग-विशेष, यज्ञ, पुष्टि, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'बृहती' (स्त्री) के रेंगनी (भटकटैया), नव अक्षर का (जैसे–मणिबन्ध,···) छन्द, बड़ी, विश्वावसुकी वीणा, वस्त्र विशेष ५ अर्थ हैं ॥

५ 'वासिता' (+ वाशिता । स्त्री) के स्त्री, हथिनी, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वार्ता' (स्त्री) के जीविका, बात, २ अर्थ और 'वार्तम्' (त्रि) के सारहीन (निस्तत्त्व, निर्बल), नीरोग, २ अर्थ हैं ॥

७ 'घृतम्' (न) के घी, पानी, २ अर्थ और 'घृतम्' (त्रि) का प्रदीप्त, १ अर्थ तथा 'अमृतम्' (न) के अमृत, पानी, घी, यज्ञ-शेष, अयाचित, मोक्ष ६ अर्थ और 'अमृतः' (पु) के धन्वन्तरि, देवता, २ अर्थ हैं ॥

८ 'कलधौतम्' (न) चाँदी, सोना, २ अर्थ हैं ॥

९ 'निमित्तम्' (न) के कारण, चिह्न, २ अर्थ हैं ॥

१० 'श्रुतम्' (न) का शास्त्र, १ अर्थ और 'श्रुतम्' (त्रि) का सुना हुआ, १ अर्थ है ॥

११ 'कृतम्' (न) के सत्ययुग, पर्याप्त (पूरा, काफी); २ अर्थ हैं ॥

१२ 'अत्याहितम् (न) के बड़ा भय, जीनेकी आशा छोड़कर किया हुआ बहुत बड़ा साहस, २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'वाशिता' इति पाठान्तरम् ॥

१ युक्ते क्ष्मादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु।
२ वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥
३ महद्राज्यं च ४ वगीतं जन्ये स्याद् गर्हिते त्रिषु।
५ श्वेतं रूप्येऽपि ६ रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥
७ [1]त्रिष्वतो ८ जगदिङ्गेऽपि ९ रक्तं नील्यादि रागि च।

---

१ 'भूतम्' (न) के युक्त (उचित), पृथ्वी आदि (जल, वायु, तेज और आकाश), सत्य, ३ अर्थ और 'भूतम्' (त्रि) के प्राणी, बीता हुआ, सदृश, प्राप्त, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'वृत्तम्' (न) के श्लोक आदि पद्यमात्र (जिनमें मात्राकी नहीं किन्तु वर्णोंकी गणना हो वह पद्यविशेष[2]), चरित्र, २ अर्थ और 'वृत्तः' (त्रि) के बीता हुआ, दृढ (मजबूत), गोलाकार, अधीत (पढ़ा हुआ), ४ अर्थ हैं ॥

३ 'महत्' (त्रि) का बड़ा, १ अर्थ और 'महत्' (न) का राज्य, १ अर्थ है ॥

४ 'अवगीतम्' (न) का जनापवाद, १ अर्थ और 'अवगीतः' (त्रि) के सिद्धान्त, निन्दित, दुष्ट (+ दृष्ट अर्थात् देखा गया), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'श्वेतम्' (न) का चाँदी १ अर्थ; 'श्वेतः' (त्रि) का सफेद पदार्थ, १ अर्थ; 'श्वेतः' (पु) के द्वीप-विशेष, पर्वत-विशेष, २ अर्थ और + 'श्वेता' (स्त्री) के कौड़ी, काष्ठपाटली, शङ्खिनी, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'रजतम्' (न) सोना, चाँदी, २ अर्थ और 'रजतम्' (त्रि) का सफेद वर्णवाला पदार्थ १ अर्थ है ॥

७ यहाँसे सब तान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

८ 'जगत्' (त्रि) का जङ्गम, १ अर्थ; 'जगत्' (न) का संसार, १ अर्थ और 'जगत्' (पु) का वायु, १ अर्थ है ॥

९ 'रक्तम्' (न) का लाल रंग, खून, कुङ्कुम, ३ अर्थ, 'रक्तः' (त्रि) के अनुरक्त, रँगा हुआ कपड़ा आदि, २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'त्रिष्वितो' इति पाठान्तरम् ॥ २. एतच्च द्रष्टव्यं छन्दोमञ्जर्यां 'पद्यं चतुष्पदी' त्यादिश्लोके प्रथमस्तबके।

१ अवदातः सिते पीते शुद्धे २ बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥
३ युक्तेऽतिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतो ४ ऽथ संस्कृतम् ।
कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्य ५ नन्तोऽनवधावपि ॥ ८१ ॥
६ ख्याते हृष्टे प्रतीतो ७ ऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ।
८ विविक्तौ पूतविजनौ ९ मूर्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥
१० द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ ११ शिती धवलमेचकौ ।
१२ सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥
१३ पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते ।

---

१ 'अवदातः' (त्रि) के सफेद, पीला, शुद्ध, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'सितः' (त्रि) बँधा हुआ, समाप्त, श्वेत, (सफेद) पदार्थ, ३ अर्थ हैं ।

३ 'अभिनीतः' (त्रि) के कृत्रिम (बनावटी, नकली), अत्युत्तम, सहनशील, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'संस्कृतम्' (त्रि) के बनाया (संस्कार किया) हुआ, उत्तम, भूषित, ३ अर्थ और 'संस्कृतम्' (न) का पाणिन्यादि के लक्षणोंसे सिद्ध अर्थात् संस्कृत भाषा, १ अर्थ है ॥

५ 'अनन्तः' (त्रि) का अन्तरहित, १ अर्थ, 'अनन्तः' (पु) के शेषनाग, विष्णु, २ अर्थ और 'अनन्तम्' (न) का आकाश, १ अर्थ है ॥

६ 'प्रतीतः' (त्रि) के प्रसिद्ध, प्रसन्न, जाना हुआ, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'अभिजातः' (त्रि) के श्रेष्ठ कुलमें उत्पन्न (खान्दानी), विद्वान्, न्याययुक्त, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'विविक्तः' (त्रि) के पवित्र, एकान्त, विवेकवाला, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'मूर्च्छितः' (त्रि) के मूर्ख, वृद्धिसे युक्त, बेहोश, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'शुक्तः' (त्रि) के खट्टा (काँजी), कठोर, २ अर्थ हैं ॥

११ 'शितिः' (त्रि) के सफेद, काला, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'सत्' (त्रि) के सत्य, साधु (सज्जन), विद्यमान, प्रशस्त (उत्तम), पूजित, धीर, मान्य, ७ अर्थ हैं ॥

१३ 'पुरस्कृतः' (त्रि) के पूजित, शत्रुसे आक्रान्त, आगे किया हुआ, श्रेष्ठ, ४ अर्थ हैं ।

१ निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥
२ जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिता ३ उत्थितास्त्वमी ।
वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना ४ आदृतौ सादरार्चितौ ॥ ८५ ॥
५ [1]कर्मविपाकेऽपि गति ६र्गर्मुद्धेम्न्युल्बणे तृणे (५३)
७ ऋतमुञ्छशिले सत्ये शोभनेऽपि विवक्षितम् (५४)
८ उदास्थितः प्रतीहारे चरभेदे ९ समाहितः (५५)
ध्यानस्थे चाप्य १० [2]नीकस्थो गजलक्षणवेदिनि (५६)
११ श्रद्धारचनयोर्भक्तिर्गौण्यां वृत्तौ च सेवने (५७)

१ 'निवातः' (त्रि) के निवासस्थान, वायुसे रहित देश–स्थान आदि, हथियारसे अभेद्य कवच, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'उच्छ्रितः' (त्रि) के उत्पन्न, अभिमानी, बढ़ा हुआ, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'उत्थितः' (त्रि) के वृद्धिवाला, प्रवृत्त (लगा हुआ, तैयार), उत्पन्न, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'आदृतः' (त्रि) के सत्कारसे युक्त, आदर पाया हुआ, २ अर्थ हैं ॥

५ ['गतिः' (स्त्री) के कर्म-विपाक, गमन, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['गर्मुत्' (पु) के सोना, स्पष्ट, तृण; ३ अर्थ हैं] ॥

७ ['ऋतम्' (न) के उञ्छशिल (खेत या खलिहान आदिसे अन्नका १–१ दाना चूँगना), सत्य, सुन्दर, ३ अर्थ हैं] ॥

८ ['उदास्थितः' (पु) का प्रतीहार(द्वार),दूत–विशेष, अध्यक्ष, ३ अर्थ हैं ॥

९ ['समाहितः' (त्रि) के ध्यानमें मग्न, आहित, प्रतिज्ञात, समाधान करनेवाला, ४ अर्थ हैं] ॥

१० ['अनीकस्थः' ([3]पु) के युद्धमें स्थित, हाथी के लक्षणों को जाननेवाला, राजरक्षक, ३ अर्थ हैं] ॥

११ ['भक्तिः' (स्त्री) के श्रद्धा, रचना-विशेष, गौणी वृत्ति, सेवा करना, ४ अर्थ हैं]।

---

१. 'कर्मविपाकेऽपि······स्थितिः' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां दुर्गवचनत्वेनोपक्रम्यत इति प्रकृतोपयोगितयाऽत्र क्षेपकत्वेन निहितः ।

२. तान्तशब्देषु थान्तशब्दपठनमनुचितं प्रतिभाति ॥

३. थकारान्तः कथमुक्तः क्षी० स्वा० ॥

१ आप्तौ लब्धप्रत्ययितौ २ नप्ता पुत्र्याश्च पुत्रयोः (४८)
३ समूहोत्पन्नयोर्जात ४ महिर्जिदच्युतेन्द्रयोः (४९)
५ सौतिकेऽपि प्रपातो ६ ऽथावपातावतटावटौ (५०)
७ समित्सङ्गे रणेऽपि स्त्री ८ व्यवस्थायामपि स्थितिः' (५१)

इति तान्ताः शब्दाः ।

अथ थान्ताः शब्दाः ।

९ अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।
१० [1]निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥

---

१ ['आप्तः' (त्रि) के लब्ध (मिला हुआ), विश्वस्त, २ अर्थ हैं] ॥

२ ['नप्ता' (= नप्तृ पु), का पोता (पुत्रका पुत्र), नाती (पुत्रीका पुत्र), २ अर्थ हैं] ॥

३ ['जातम्' (न) का समूह, १ अर्थ और 'जातम्' (त्रि) का उत्पन्न, १ अर्थ है] ॥

४ ['अहिजित्' (पु) के विष्णु, इन्द्र, २ अर्थ हैं] ॥

५ ['प्रपातः' (पु) के पहाड़ का झरना, लेटना, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['अवपातः' (पु) के अतट (बिना किनारावाला), गढा, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['समित्' (स्त्री) के संग, युद्ध, २ अर्थ हैं] ॥

८ ['स्थितिः' (स्त्री) के व्यवस्था, निवासस्थान, टिकाव, ३ अर्थ हैं] ॥

इति तान्ताः शब्दाः ।

अथ थान्ताः शब्दाः ।

९ 'अर्थः' (पु) के कहनेयोग्य, धन, वस्तु, प्रयोजन, (उद्देश्य, मतलब), निवृत्ति, ५ अर्थ हैं ॥

१० 'तीर्थम्' (न) के कूपादिके पासका जलाशय (गढा । + सीढी मुकु० । + निदान अर्थात् उपाय), बौद्धशास्त्रसे भिन्न शास्त्र, ऋषिसे सेवित जल, गुरु, यज्ञ, पुण्यक्षेत्र, यज्ञशाला, स्त्री-रज, योनि, पात्र, दर्शन, ११ अर्थ हैं ॥

---

१. 'निदानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे' इति पाठान्तरम् ॥

१ समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे हितेऽपि च।
२ दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ ३ वीथी पद्व्यपि ॥ ८७ ॥
४ आस्थानीयत्नयोरास्था ५ प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः।
६ [1]"शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थः ७ संस्थाऽऽधारे स्थितौ मृतौ (५२)

इति थान्ताः शब्दाः।

अथ दान्ताः शब्दाः।

८ अभिप्रायवशौ छन्दा ९ वब्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥
१० अपवादौ तु निन्दाज्ञे ११ दायादौ सुतबान्धवौ।
१२ पादा रश्म्यङ्घ्रितुर्यांशा १३ श्चन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः ॥ ८९ ॥

१ 'समर्थः' (त्रि) के बलवान्, सम्बद्ध अर्थ, हित, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'दशमीस्थः' (त्रि) के क्षीण रागवाला (प्रेमहीन), वृद्ध, २ अर्थ हैं ॥

३ 'वीथी' (स्त्री) के रास्ता (गली), पङ्क्ति (कतार), गृहप्रान्त, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'आस्था' (स्त्री) के सभा, उपाय, आलम्बन, अपेक्षा, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'प्रस्थः' (पु) के शिखर (कँगूरा), परिमाण-विशेष (सेर), २ अर्थ हैं ॥

६ ['ग्रन्थः' (पु) के शास्त्र, धन, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['संस्था' (स्त्री) के आधार, स्थिति, मृति, संस्था (सभा, सोसायटी आदि), ४ अर्थ हैं] ॥

इति थान्ताः शब्दाः।

अथ दान्ताः शब्दाः।

८ 'छन्दः' (पु) के अभिप्राय, वश, २ अर्थ हैं ॥

९ 'अब्दः' (पु) के मेघ, वर्ष, पर्वत विशेष, मोथा, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'अपवादः' (पु) के निन्दा, आज्ञा, विश्रम्भ, निरवकाश (बाधक) सूत्रादि, ४ अर्थ हैं ॥

११ 'दायादः' (पु) के पुत्र, परिवार, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'पादः' (पु) के किरण, पैर, चौथाई हिस्सा, ३ अर्थ हैं ॥

१३ 'तमोनुत्' (= तमोनुद् पु) के चन्द्र, अग्नि, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥

१. 'अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा व्याख्यानेऽमरविवेकमूलपुस्तके तद्व्याख्याने चोपलभ्यते ॥

१ निर्वादो जनवादेऽपि २ शादो जम्बालशष्पयोः ।
३ आरावे रुदिते त्रातर्याक्रन्दो दारुणे रणे ॥ १० ॥
४ स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि ५ सूदः स्याद् व्यञ्जनेऽपि च ।
६ गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो ७ हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ११ ॥
८ प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम् ।
९ स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु ॥ १२ ॥

---

१ 'निर्वादः' (पु) के जनापवाद, सिद्धान्त, २ अर्थ हैं ॥

२ 'शादः' (पु) के कीचड़ (पङ्क), घास २ अर्थ हैं ॥

३ 'आक्रन्दः' (पु) के कष्ट युक्त शब्द, रोना, रक्षक, भयङ्कर युद्ध, ४ अर्थ हैं ॥

४ 'प्रसादः' (पु) के अनुग्रह, प्रसन्नता, काव्य का [1]गुण-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'सूदः' (त्रि) के व्यञ्जन (कढ़ी, बरी, तरकारी आदि), रसोइयादार, २ अर्थ हैं ॥

६ 'गोविन्दः' (पु) के गोष्ठ (गोशाला) का मालिक, विष्णु, बृहस्पति, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'आमोदः' (पु) के हर्ष, दूर ही से चित्तको आकर्षित करनेवाला कस्तूरी आदिका गन्ध, २ अर्थ और 'मदः' (पु) के हर्ष, कस्तूरी, वीर्य (शुक्र), गर्व (अहङ्कार), हाथीका मद, ५ अर्थ हैं ॥

८ 'ककुदः' (पु न) के प्राधान्य, राज-चिह्न (छत्र, चँवर आदि), बैल या साँड़का डील, पहाड़की चोटी, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'संवित्' (= संविद् स्त्री) के ज्ञान, संभाषा (संभाषण । + संकेत), कर्मका नियम या व्यवस्थापन, लड़ाई, नाम, तोषण, आचार, प्रतिज्ञा, ८ अर्थ हैं ।

---

१. विश्वनाथेन प्रसादलक्षणमुक्तं यथा—

'चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः ।
स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च' ॥ इति सा० द० ६ । ६३१ ॥

काव्यप्रकाशे च—'शुष्केन्धनाग्निवत्स्वच्छजलवत्सहसैव यः ।
व्याप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः' ॥ इति ॥

१ धर्मे रहस्युपनिषत् २ स्यादृतौ वत्सरे शरत् ।
३ पदं व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माङ्घ्रिवस्तुषु ॥ ९३ ॥
४ गोष्पदं सेविते माने ५ प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ।
६ त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू ७ मृदू चातीक्ष्णकोमलौ ॥ ९४ ॥
८ मूढाल्पापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युः ९ द्वौ तु शारदौ ।
प्रत्यग्राप्रतिभौ १० विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥

इति दकारान्ताः शब्दाः ।

अथ धकारान्ताः शब्दाः ।

११ व्यामो वटश्च न्यग्रोधौ—

---

१ 'उपनिषत्' (= उपनिषद् स्त्री) के धर्म, एकान्त, वेदान्त (ग्रन्थ-विशेष), ३ अर्थ हैं ॥

२ 'शरत्' (= शरद् स्त्री) के शरद् ऋतु (पृ० ४२), वर्ष, २ अर्थ हैं ॥

३ 'पदम्' (न) के व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, पैर, शब्द (सुबन्त और तिङन्त), वाक्य, एक वस्तु, व्यवसाय, अपदेश, १० अर्थ हैं ॥

४ 'गोष्पदम्' (न) के गौओंसे सेवित स्थान, गौके चरणतुल्य प्रमाण-वाला गड्ढा २ अर्थ हैं ॥

५ 'आस्पदम्' (न) के प्रतिष्ठाका स्थान, काम, २ अर्थ हैं ॥

६ 'स्वादुः' (त्रि) के इष्ट, मधुर, स्वादिष्ट, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'मृदुः' (त्रि) के तेजोहीन, कोमल, २ अर्थ हैं ॥

८ 'मन्दः' (त्रि) के अल्प, बेवकूफ भाग्यहीन, शिथिल, स्वच्छन्द, रोगी, शनि, ७ अर्थ हैं ॥

९ 'शारदः' (त्रि), के नया (टटका), डरपोक (ढिठाई से हीन), शरद् ऋतुमें उत्पन्न, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'विशारदः' (त्रि) के विद्वान् , प्रतिभावाला, २ अर्थ हैं ॥

इति दान्ताः शब्दाः ।

अथ धान्ताः शब्दाः ।

११ 'न्यग्रोधः' (पु) के व्याम (अँकवारभर अर्थात् फैलाये हुए दोनों हाथोंके घेरेका प्रमाण–विशेष), बरगद (बड़) का पेड़, २ अर्थ हैं ॥

—१ उत्सेधः काय उन्नतिः ।
२ पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥
३ परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ।
४ बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाऽधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥
५ स्युः समर्थनलीवाकनियमाश्च समाधयः ।
६ दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥
मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ।

---

१ 'उत्सेधः' (पु) के शरीर, उन्नति (ऊँचाई), २ अर्थ हैं ॥

'विवधः, वीवधः' (२ पु) के बहँगी या काँवर, रास्ता, बोझ, ३ अर्थ ॥

३ 'परिधिः' (पु) के यज्ञ-सम्बन्धी पेड़ (पलाश, शमी आदि) की शाखा, परिवेष नामका सूर्यके चारों तरफवाला घेरा, गोलाई, २ अर्थ हैं ॥

४ 'आधिः' (पु) के बन्धक (ऋण लेनेके समय विश्वासके लिये महाजनके पास रखी हुई चीज अर्थात् थाती, धरोहर), आपत्ति, मानसिक पीड़ा, अधिष्ठान, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'समाधिः' (पु) के समर्थन, चुप रहना, नियम (अपनेको ब्रह्मरूप[1] समझना), ३ अर्थ हैं ॥

६ 'अनुबन्धः' (पु) के दोष लगाना, नष्ट होनेवाले (प्रकृति, प्रत्यय, आगम, आदेश आदिमें इत्संज्ञा होनेपर लुप्त होनेवाले) अक्षर (जैसे—एध, डुपचष् , सु, औट् , तिप् , ङीप् , णुट् .तुट् , धुट् , नुम् ,···में क्रमशः अकार, डु तथा अष् , उ,···वर्ण), पिता आदि श्रेष्ठोंकी आज्ञा माननेवाला बालक, प्रकरणागत विषयोंका अनुवर्तन (जैसे – वैरानुबन्धः,···) ४ अर्थ हैं ॥

---

१. सूतसंहितायां समाधिलक्षणमुक्तन्तथा—
　'सोऽहं ब्रह्म न संसारी न मत्तोऽन्यत्कदाचन ।
　इति विद्यात्स्वमात्मानं स समाधिः प्रकीर्तितः' ॥ इति ॥
अन्यच्च—समाधिस्तु समाधानं जीवात्मपरमात्मनोः ।
　ब्रह्मण्येव स्थितायां स समाधिः प्रत्यगात्मनः ॥ इति ।
भगवता पतञ्जलिना योगसूत्रेऽपि—
　'तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः'॥ इति यो० सू० ४ । ३ इति ॥

१ विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि २ परिच्छेदे बिलेऽवधिः ॥ ९९ ॥
३ विधिर्विधाने दैवेऽपि ४ प्रणिधिः प्रार्थने चरे।
५ बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि ६ स्कन्धः समुदयेऽपि च ॥ १०० ॥
७ देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम्।
८ विधा विधौ प्रकारे च ९ साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥
१० वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च ११ सुधा लेपोऽमृतं स्नुही।
१२ संधा प्रतिज्ञा मर्यादा १३ श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥
१४ मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेऽपि—

---

१ 'विधुः' (पु) के विष्णु, चन्द्रमा, कर्पूर, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'अवधिः' (पु) के समान (हद), बिल या गढ़ा, समय, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'विधिः' (पु) के विधान (कानून), भाग्य, ब्रह्मा, समय, प्रकार, ५ अर्थ हैं॥

४ 'प्रणिधिः' (पु) के याचना करना, दूत, २ अर्थ हैं ॥

५ 'बुधः' (पु) के पण्डित, बुधनामक ग्रह २ अर्थ और 'वृद्धः' (त्रि) के पण्डित, पुराना या बूढ़ा, बढ़ा हुआ, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'स्कन्धः' (पु) के समूह, सैन्यभाग, काण्ड (शाखा, डाल), कन्धा, राजा, ५ अर्थ हैं ॥

७ 'सिन्धुः' (पु) के सिन्धुदेश, नद-विशेष (यह पञ्जाब-में है), समुद्र, ३ अर्थ और 'सिन्धुः' (स्त्री) का नदी, १ अर्थ है ॥

८ 'विधा' (स्त्री) के विधि, प्रकार (तरह, जैसे-द्विविधा, त्रिविधा,… …), हाथी-घोड़े आदिका भोजन, वेतन, वृद्धि ५ अर्थ हैं ॥

९ 'साधुः' (त्रि) के रमणीय, सज्जन (महात्मा), बनियाँ, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'वधूः' (स्त्री) के पत्नी, पतोहू (पुत्र-भतीजा आदिकी स्त्री), स्त्री-मात्र ३ अर्थ हैं ॥

११ 'सुधा' (स्त्री) के लेप, अमृत, सेंहुड, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'संधा' (स्त्री) के स्वीकार, मर्यादा, प्रतिज्ञा, ३ अर्थ हैं ॥

१३ 'श्रद्धा' (स्त्री) के आदर, काङ्क्षा, २ अर्थ हैं ॥

१४ 'मधु' (न) के मदिरा फूलका रस, शहद, दूध ४ अर्थ और 'मधुः' (पु) के वसन्त (चैत–वैशाख) ऋतु, मधु नामका दैत्य, चैत्र महीना, एक प्रकारका पेड़, ४ अर्थ हैं ॥

—१ अन्धं तमस्यपि ।

२ अतस्त्रिषु ३ समुन्नद्धौ पण्डितंमन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥

४ ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपे निर्देशे ५ ऽथावलम्बितः ।

अविदूरोऽप्यवष्टब्धः ६ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ॥ १०४ ॥

७ 'लेशेऽपि गन्धः ८ संबाधः गुह्यसंकुलयोरपि (५३)

९ बाधा निषेधे दुःखेऽपि १० ज्ञातृचान्द्रसुरा बुधाः' (५४)

इति धान्ताः शब्दाः ।

---

१ 'अन्धम्' (न) का अन्धकार, १ अर्थ और 'अन्धः' (त्रि) का अन्धा, १ अर्थ है ॥

२ यहाँसे आगे सब तान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

३ 'समुन्नद्धः' (त्रि) के स्वयं पण्डित न होते हुए भी अपनेको पण्डित समझनेवाला, अभिमानी, २ अर्थ हैं ॥

४ 'ब्रह्मबन्धुः' (त्रि) के निन्दा, (जैसे—हे ब्रह्मबन्धो ! दुष्टोऽसि, ...), निर्देश, २ अर्थ हैं ॥

५ 'अवष्टब्धः' (त्रि) के अवलम्बित (आश्रित), समीप (पासवाला), बँधा हुआ, रुका हुआ ४ अर्थ हैं ॥

६ 'प्रसिद्ध ' (त्रि), के विख्यात, सुशोभित, २ अर्थ हैं ॥

७ ['गन्धः' (पु) के लेश, गन्ध (सुवास), २ अर्थ हैं] ॥

८ ['संबाध' (पु) के गुह्य, सङ्कुल (भीड़ आदिसे ठसाठस भरा हुआ), २ अर्थ हैं] ॥

९ ['बाधा' (स्त्री) के निषेध, दुःख, २ अर्थ हैं ॥

१० ['बुधः' (पु) के जाननेवाला, बुध नामका ग्रह, देवता, ३ अर्थ हैं] ॥

इति धान्ताः शब्दाः ।

---

१. अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने मूलमात्रमुपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितया क्षेपकत्वेन स्थापितः ॥

अथ नान्ताः शब्दाः ।

१ सूर्यवह्नी चित्रभानू २ भानू रश्मिदिवाकरौ ।
३ भूतात्मानौ धातृदेहौ ४ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥
५ ग्रावाणौ शैलपाषाणौ ६ पत्त्रिणौ शरपक्षिणौ ।
७ तरुशैलौ शिखरिणौ ८ शिखिनौ वह्निबर्हिणौ ॥ १०६ ॥
९ प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहा १० वथ सादिनौ ।
द्वौ सारथिहयारोहौ ११ वाजिनोऽश्वेषुपक्षिणः ॥ १०७ ॥
१२ कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्य १३ थ हायनाः ।
वर्षार्चिर्व्रीहिभेदाश्च १४ चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः ॥ १०८ ॥

अथ नान्ताः शब्दाः ।

१ 'चित्रभानु' (पु) के सूर्य, अग्नि, २ अर्थ हैं ॥

२ 'भानु' (पु) के किरण, सूर्य, २ अर्थ हैं ॥

३ 'भूतात्मा' (= भूतात्मन् पु) के ब्रह्मा, शरीर, २ अर्थ हैं ॥

४ 'पृथग्जनः' (पु) के मूर्ख, नीच, २ अर्थ हैं ॥

५ 'ग्रावा' (= ग्रावन् पु) के पहाड़, पत्थर, २ अर्थ हैं ॥

६ 'पत्री' (= पत्रिन् पु) के बाण, पत्ती, बाज चिड़िया, रथिक, पहाड़, ५ अर्थ हैं ॥

७ 'शिखरी' (= शिखरिन् पु), के पहाड़, २ अर्थ हैं ॥

८ 'शिखी' (= शिखिन् पु) के मोर, अग्नि, पेड़, मुर्गा, पत्ती, बाण, केतु नामका ग्रह, ७ अर्थ हैं ॥

९ 'प्रतियत्नः' (पु) के लिप्सा, वन्दी–ग्रहणादि, संस्कार, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'सादी' (= सादिन् पु) के सारथि, घुड़सवार, २ अर्थ हैं ॥

११ 'वाजी' (= वाजिन् पु) के घोड़ा, बाण, पत्ती, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'अभिजनः' (पु) के वंश (खान्दान), जन्म-भूमि, ख्याति, कुलसमूह, ४ अर्थ हैं ॥

१३ 'हायनः' (पु) के वर्ष, किरण, नीवार (तिन्नी) आदि अन्न, ३ अर्थ हैं ॥

१४ 'विरोचनः' (पु) के चन्द्र, अग्नि, सूर्य, ३ अर्थ हैं ॥

१ [1]क्लेशेऽपि वृजिनो २ विश्वकर्मार्कसुरशिल्पिनोः ।
३ आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥
४ [2]शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः ।
५ अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ॥ ११० ॥
६ [3]घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ।
७ इनः सूर्ये प्रभौ ८ राजा मृगाङ्के क्षत्रिये नृपे ॥ १११ ॥
९ वाणिन्यौ नर्तकीदूत्यौ १० स्रवन्त्यामपि वाहिनी ।

---

१ 'वृजिनः' (पु) का क्लेश (+ केश), 'वृजिनम्' (न) का पाप, रक्तचर्म २ अर्थ और 'वृजिनः' (त्रि) का कुटिल, १ अर्थ है ॥

२ 'विश्वकर्मा' (= विश्वकर्मन् पु) के सूर्य, देवताओंका कारीगर (बढ़ई), २ अर्थ हैं ॥

३ 'आत्मा' (= आत्मन् पु) के यत्न, धैर्य, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर, क्षेत्रज्ञ (ज्ञानी पुरुष), ७ अर्थ हैं ॥

४ 'घनाघनः' (पु) के इन्द्र, घातुक (हिंसा करनेवाला) मतवाला हाथी, बरसनेवाला साल (वर्ष), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'अभिमानः' (पु) के धन आदिका घमण्ड, ज्ञान, प्रेम, हिंसा, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'घनः' (पु) के बादल, कड़ापन, लोहेका मुद्गर, बाहुल्य, मुस्त, ५ अर्थ और 'घनः' (त्रि) के कठोर, सघन, काँसेका बाजा, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'इनः' (पु) के सूर्य, प्रभु या समर्थ, श्रेष्ठ, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'राजा' (= राजन् पु) के चन्द्रमा, क्षत्रिय, राजा, स्वामी, यक्ष, इन्द्र, ६ अर्थ हैं ॥

९ 'वाणिनी' (स्त्री) के नाचनेवाली वेश्या आदि, दूती, चतुर स्त्री, मतवाली स्त्री, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'वाहिनी' (स्त्री) के नदी, सेना, सेनाका भेद-विशेष (२।८।८१ का चक्र), ३ अर्थ हैं ॥

---

१. 'केशे' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'शक्रघातुकमत्तेभवर्षुकाब्दा घनाघनाः' इति पाठान्तरम् ॥

३. कश्चित्तु —'घनो······निरन्तरे' इत्ययमंशः 'अभिमानो······हिंसयोः' इत्यस्यानन्तरं पठ्यते ॥

१ ह्लादिन्यौ वज्रतडितौ २ वन्द्यायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥
३ त्वग्देहयोरपि तनुः ४ सूनाऽधोजिह्विकापि च ।
५ क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥
मन्दे ६ ऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ।
७ [1]वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ॥ ११४ ॥
८ उत्साहने च [2]हिंसायां सूचने चापि गन्धनम् ।
९ आतञ्चनं प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥

---

१ 'ह्लादिनी' (स्त्री) के वज्र (इन्द्रका अस्त्र-विशेष), बिजली, २ अर्थ हैं ॥

२ 'कामिनी' (स्त्री) के वन्दा (बाँदा अर्थात् पेड़के ऊपर ही उत्पन्न काष्ठ–विशेष), स्त्री, काम (इच्छा) करनेवाली स्त्री, विलासिनी स्त्री, ४ अर्थ हैं ॥

३ 'तनुः' (स्त्री) के त्वचा (छाल, चमड़ा), शरीर, २ अर्थ और 'तनुः' (त्रि) के कृश, थोड़ा, विरल, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'सूना' (स्त्री) के गलेकी घाँटी, प्राणियोंका वधस्थान, सन्तान, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'वितानम्' (न पु) के यज्ञ, विस्तार, चँदोवा, ३ अर्थ और 'वितानम्' (त्रि) के तुच्छ, मन्द, २ अर्थ हैं ॥

६ 'केतनम्' (न) के कार्य, पताका, निमन्त्रण (मित्रोंको उत्सव आदिमें बुलाना), निवास, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'ब्रह्म' (= ब्रह्मन् न) के ऋग्, यजुष्, साम ये तीनों वेद, तत्त्व, तप, ब्रह्म, ४ अर्थ और 'ब्रह्मा' (= ब्रह्मन् पु) के ब्राह्मण, ब्रह्मा, २ अर्थ हैं ॥

८ 'गन्धनम्' (न) के उत्साहित करना, हिंसा करना, आशय प्रकट करना, (+ हिंसा-प्रयुक्त सूचना क्षी० स्वा०), प्रकाशन, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'आतञ्चनम्' (न) के जोरन डालना (औंटे दूधमें दही छोड़कर दही जमाना । + गलाये हुए सोनेमें दूसरे द्रव्यके साथ अवचूर्णन करना क्षी० स्वा०), वेग, तर्पण (तृप्त) करना, ३ अर्थ हैं ॥

---

१. 'वेदास्तत्त्वं' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'हिंसार्थसूचने' इति क्षी० स्वा० इति पाठान्तरम् ॥

१ व्यञ्जन[1] लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ।
२ स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥
३ स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।
४ अवकाशे स्थितौ स्थानं ५ क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥
६ उत्थानं पौरुषे तन्त्रे सन्निविष्टोद्गमेऽपि च ।
७ व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥
८ मारणे मृतसंस्कारे गतौ[2] द्रव्येऽर्थदापने ।
निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥

---

१ 'व्यञ्जनम्' (न) के चिह्न, दाढ़ी–मूँछ (हजामत), तेमन (दही कढ़ी, बरी बरा आदि) अवयव, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'कौलीनम्' (न) के लोकापवाद, पशु (भेंड़ा आदि) पक्षियों (मुर्गा-तीतर आदि) आदिकी लड़ाई, कुलीनता, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'उद्यानम्' (न) के निकलना, बागीचा, प्रयोजन, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'स्थानम्' (न) के अवकाश, स्थिति, सादृश्य (बराबरी), ज्योंका त्यों रहना (न घटना न बढ़ना), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'देवनम्' (न) के क्रीडा आदिमें जीतनेकी इच्छा, व्यवहार, २ अर्थ और 'देवनः' (पु) का जुवा (द्यूत) १ अर्थ है ॥

६ उत्थानम्' (न) के पुरुषार्थ, तन्त्र (सैन्य, अपने मण्डल अर्थात् राज्य–विषयक चिन्ता, या पारिवारिक काम), ऊँचा उठना (उन्नति करना), पुस्तक, युद्ध, सिद्धान्त, ६ अर्थ हैं ॥

७ 'व्युत्थानम्' (न) के तिरस्कार, चोरी आदि विरुद्ध आचरण, स्वतन्त्रता, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'साधनम्' (न) के मरना (पारा आदिका शोधना), मरे हुएका संस्कार (दाह आदि) करना, जाना, धन, धन दिलाना (+ द्रव्यका उपपादन) धन पैदा करना, उपाय, पीछे २ चलना, सैन्य, मेढ़्र, १० अर्थ हैं ॥

---

१. लाञ्छनश्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'द्रव्योपपादने' इति पाठान्तरम् ॥

१ निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ।
२ व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२० ॥
३ पक्ष्माक्षिलोम्नि किञ्जल्के तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि ।
४ तिथिभेदे क्षणे पर्व ५ वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥
६ अकार्यगुह्ये कौपीनं ७ मैथुनं संगतौ रते ।
८ प्रधानं परमात्मा धीः ९ प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥
१० प्रसूनं पुष्पफलयोः—

---

१ 'निर्यातनम्' (न) के वैरशुद्धि (शत्रु से बदला लेना), दान, धरोहर (थाती) को वापस करना, ३ अर्थ हैं।

२ 'व्यसनम्' (न) के विपत्ति, नीचे गिरना, (अवनति होना), कामजन्य (शिकार, जुआ, मदिरा-पान, स्त्रीसङ्ग आदिसे उत्पन्न) दोष, क्रोधजन्य (कठोर वचन, कठिन दण्ड आदिसे उत्पन्न) दोष, निष्फल उद्यम, अशुभ भाग्य का बुरा फल, ६ अर्थ हैं ॥

३ 'पक्ष्म' (=पक्ष्मन् न) के बरौनी (आँखका रोंआ), किञ्जल्क (कमलकेसर), सूत आदिका बहुत महीना हिस्सा, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'पर्व' (पर्वन् न) के तिथि-भेद (अमावस्या-पूर्णिमा आदि, प्रतिपद् और पञ्चदशी अर्थात् अमावस्या पूर्णिमाकी सन्धि), उत्सव, ग्रन्थका अंश (जैसे—आदिपर्व, वनपर्व, आदि), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'वर्त्म' (वर्त्मन् न) के पपनी (आँखको ढाकनेवाला चमड़ा, पलक,), रास्ता २ अर्थ हैं ॥

६ 'कौपीनम्' (न) के नहीं करने योग्य, लँगोटी, गुह्य (शिश्न), ३ अर्थ हैं ॥

७ 'मैथुनम्' (न) के स्त्री आदिका सम्बन्ध, स्त्रीके साथ संभोग करना, २ अर्थ हैं ॥

८ 'प्रधानम्' (न) के परमात्मा, बुद्धि, मुख्य, साङ्ख्यशास्त्रोक्त प्रकृति, राजाका प्रधान सहाय, ५ अर्थ हैं ॥

९ 'प्रज्ञानम्' (न) के बुद्धि, चिह्न २ अर्थ हैं ॥

१० 'प्रसूनम्' (न) के फूल, फल, २ अर्थ हैं ॥

—१ निधनं कुलनाशयोः ।
२ क्रन्दने रोदनाह्वाने ३ वर्ष्म देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥
४ गृहदेहत्विट्प्रभावा धामान्य५थ चतुष्पथे ।
सन्निवेशे च संस्थानं ६ लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥
७ आच्छादने संपिधानमपवारणमित्युभे ।
८ आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥
९ अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ।
१० रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि ११ वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥
१२ तलिनं विरले स्तोके १३ वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ।
१४ समानाः सत्समैके स्युः—

---

१ 'निधनम्' (न) के कुल (वंश), नाश, २ अर्थ हैं ॥

२ 'क्रन्दनम्' (न) के रोना, पुकारना, २ अर्थ हैं ॥

३ 'वर्ष्म' (=वर्ष्मन् न) के शरीर, प्रमाण, २ अर्थ हैं ॥

४ 'धाम' (धामन् न) के घर, शरीर, तेज, प्रभाव, जन्म, शक्ति, ६ अर्थ हैं ॥

५ 'संस्थानम्' (न) के चौरास्ता, अवयव-विभाग, आकृति, मरना ४ अर्थ हैं ॥

६ 'लक्ष्म' (=लक्ष्मन् न) के चिह्न, प्रधान, २ अर्थ हैं ॥

७ 'आच्छादनम्' (न) के अच्छी तरह छिपना (अन्तर्धान होना) कपड़े आदिसे ढाँकना २ अर्थ हैं ॥

८ 'आराधनम्' (न) के साधन प्राप्ति होना, संतुष्ट करना, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'अधिष्ठानम्' (न) के पहिया, ग्राम, प्रभाव, आक्रमण, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'रत्नम्' (न) के अपने जातिवालों (सामान्य वर्ग) में श्रेष्ठ, मणि (जवाहरात), २ अर्थ हैं ॥

११ 'वनम्' (न) के पानी, जङ्गल, निवास, घर, ४ अर्थ हैं के

१२ 'तलिनम्' (त्रि) के विरल, थोड़ा, स्वच्छ, ३ अर्थ हैं ॥

१३ इसके आगे सब नान्त शब्द वाच्यलिङ्ग (त्रिलिङ्ग) हैं ॥

१४ 'समानः' (त्रि) के पण्डित, समान (तुल्य), मुख्य, ३ अर्थ 'समानः' (पु) का नाभि-मण्डलमें रहनेवाली वायु, १ अर्थ हैं ॥

—१ पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥
२ हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ ३ वेगिशूरौ तरस्विनौ।
४ अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्गतावपि ॥ १२८ ॥
५ [1]'लेख्यं भूम्यादिदानार्थं यातनाऽऽज्ञा च शासनम् (५५)
६ निदानमवसानेऽपि ७ सार्थे वार्धुषिके धनी (५६)
८ कक्षापटेऽपि कौपीनं ९ [2]न ना ज्ञानेऽपि बाधना (५७)
१० द्युम्नं बले—

१ 'पिशुनः' (त्रि) के दुष्ट, चुगलखोर, २ अर्थ हैं ॥

२ 'हीनः, न्यूनः' (२ त्रि) के कम, निन्दनीय, २ अर्थ हैं ॥

३ 'तरस्वी' (=तरस्विन् त्रि) के वेगवान्, शूरवीर, २ अर्थ हैं ॥

४ 'अभिपन्नः' (त्रि) के अपराधी, शत्रुसे आक्रान्त, विपत्तिमें पड़ा हुआ, ३ अर्थ हैं ॥

५ ['शासनम्' (न) के राजासे मिली हुई भूमि आदि जागीर, शास्त्र (जैसे-'अथ धर्मानुशासनम्' यो० सू० १।१), आज्ञा, राज्य-लेख्य-भेद, शासन (दण्ड देना), ५ अर्थ हैं] ॥

६ ['निदानम्' (न) के अवसान (अन्त), रोग-निर्णय, आदि कारण, कारणमात्र, कारण समूह, शुद्धि, रोग ७ अर्थ हैं] ॥

७ ['धनी' (=धनिन् पु) के सूदखोर (ब्याजपर रुपया देनेवाला महाजन), बनियोंका झुण्ड, धनवान्, ३ अर्थ हैं ॥

८ ['कौपीनम्' (न) के नहीं करने योग्य, गुह्य (लिङ्ग), लंगोटी, ३ अर्थ हैं] ॥

९ ['बाधना' (स्त्री) के प्रतिरोध (रोक), स्वभाविक ज्ञान, हेत्वाभास-भेद, पीड़ा, न्यायोक्त, ५ अर्थ और पा० भे० से +'वेदना' (स्त्री) के ज्ञान, दुःख, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['द्युम्नम्' (न) के बल, धन २ अर्थ हैं ॥

१ 'लेख्यं......लाञ्छनम्' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायां मूलमात्रमुपलभ्यते इति प्रकृतोपयोगितयाऽत्र स्थापितः।

२ 'न ना खेदेऽपि वेदना' इति पाठान्तरम्।

१—अथ भार्यापि जनी २ दोषेऽपि लाञ्छनम्' (५८)

इति नान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

३ कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहतावपि ।
४ परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥
५ गोधुग्गोष्ठपती गोपौ ६ हरविष्णू वृषाकपी ।
७ बाष्पमूष्माश्रु[१] 'कशिपुस्त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥
९ तल्पं शय्याऽट्टदारेषु १० स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम्[२] ।

---

१ ['जनी' (स्त्री) के सीमन्तिनी (कश-वेशसे युक्त स्त्री), बहू २ अर्थ हैं] ॥

२ ['लाञ्छनम्' (न) के दोष, चिह्न, नाम, ३ अर्थ हैं] ॥

इति नान्ताः शब्दाः ।

अथ पान्ताः शब्दाः ।

३ 'कलापः' (पु) के भूषण (गहना), मोरका पंख, तरकस (बाण रखने के लिये चमड़े आदिकी बनी हुई झोली–तूणीर), संहत (मिला हुआ), ४ अर्थ हैं ॥

४ 'परीवापः' (पु) के तम्बू कनात आदि, बीज बोना, थाला, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'गोपः' (पु) के गौ दुहनेवाला, गोशालाका स्वामी (अहीर), देश या कुलका अध्यक्ष, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वृषाकपिः' (पु) के शिवजी, विष्णु भगवान् , अग्नि, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'कशिपुः' (पु) के अन्न, वस्त्र, २ अर्थ हैं ॥

९ 'तल्पम्' (न) के शय्या, अटारी, स्त्री ३ अर्थ हैं ॥

१० 'विटपः' (पु न) के गुच्छा, विस्तार, शाखा, ३ अर्थ हैं ॥

---

१. 'कशिपू' इत्यपपाठ' इति क्षा० स्वा० ॥

२. 'अस्त्रियाम्' इत्यस्य 'कशिपु–तल्प' शब्दाभ्यां सम्बन्धपरके मा० दी० महे० वचने तु 'कशिपुर्भोज्यवस्त्रयोः' (अने० संग्रह ३।४७१) इति हेमचन्द्राचार्योक्त्या, 'कशिपुर्भक्ता-

१ प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥
भेद्यलिङ्गा अमी२कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी।
३ "कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाह्नोऽष्टमेऽशके' (५९)

इति पान्ताः शब्दाः।

अथ फान्ताः शब्दाः।

४ [२] रवर्णे पुंसि रेफः स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः ॥ १३२ ॥
५ 'शिफाशिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि (६०)

---

१ 'प्राप्तरूपः, स्वरूपः, अभिरूपः' (३ त्रि) के विद्वान्, मनोहर २ अर्थ हैं॥

२ 'कच्छपी' (स्त्री) के सरस्वतीकी वीणा, कछुही, २ अर्थ हैं॥

३ 'कुतपः' (पु) के ऊनी कपड़ा, दिनका आठवाँ हिस्सा, २ अर्थ हैं]॥

इति पान्ताः शब्दाः।

अथ फान्ताः शब्दाः।

४ 'रेफः' (पु) के रेफः अर्थात् 'र' अक्षर, १ अर्थ और 'रेफः' (त्रि) का निन्दित, १ अर्थ है॥

५ 'शिफा' (स्त्री) के शिखा, नदी, जटामसी, माता, ४ अर्थ हैं]॥

च्छदा—' (अभि० रत्न० ३।१२१) इति हलायुधोक्त्या, 'कशिपुर्भक्ताच्छादनयोरेकोक्त्या पृथक् तयोः पुंसि' (मेदि० पृ० १०८ श्लो० १८) इति मेदिन्युक्त्या च 'कशिपु'शब्दस्य; 'तल्पमट्टे शय्याकलत्रयोः' (अने० संग्र० २।२९८) इति हेमचन्द्राचार्योक्त्या, 'तल्पमट्टे कलत्रे च शयनीये च न द्वयोः' (मेदि० पृ० १०८ श्लो० ६) इति मेदिन्युक्त्या च 'तल्प' शब्दस्य च पुंस्त्वस्यैव लाभाच्चिन्त्यं ॥

१. 'कुतपो······ऽशके' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्या मूलमात्रे माहेश्वर्यां मूले चोपलभ्यते ॥

२. 'रवर्णे······लिङ्गकः' इत्ययमंशः भा० दी० महे० मूले पठित्वा व्याख्यातः,'शिफा······कीर्तितः' इत्ययमंशश्च महे० व्याख्याने मूलमात्रे पठ्यते। क्षी० स्वा० व्याख्यायां तु 'रवर्णे······कीर्तितः' इति सर्वोऽप्यंशः मूलमात्रमेव पठ्यते।

१ शफं मूले तरूणां स्याद्गवादीनां खुरेऽपि च (९१)
२ गुम्फः स्याद् गुम्फने बाहोरलङ्कारे च कीर्तितः (९२)

इति फान्ताः शब्दाः।

अथ [1]बा (भा) न्ताः शब्दाः।

३ अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने।
४ कम्बुर्ना वलये शङ्खे ५ द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥
६ पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुंबहुत्वेऽपि पूर्वजान्।
७ [2]चित्रपुङ्खेऽपि कादम्बो ८ नितम्बोऽद्रितटे कटौ (९४)

१ ['शफम्' (न) के पेड़की जड़, पशुओं का खुर, २ अर्थ हैं] ॥

२ ['गुल्फः' (पु) के फूल माला आदिका गूंथना, हाथका भूषण, २ अर्थ हैं] ॥

इति फान्ताः शब्दाः।

अथ वा (बा) न्ताः शब्दाः।

३ 'गन्धर्वः' (पु) का जन्म और मरणके मध्य समयमें स्थित प्राणी, मृगविशेष, पुंस्कोकिल, घोड़ा, स्वर्गके (हाहा, हूहू आदि) गायक, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'कम्बुः' (पु) के कङ्कण, शङ्ख, गज, घोंघा या सितुही, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'द्विजिह्वः' (पु) के साँप, चुगलखोर, २ अर्थ हैं ॥

६ 'पूर्वः' (त्रि) का पहला (जैसे—पूर्वो ग्रामः, पूर्वं वनम्,......), १ अर्थ; + 'पूर्वा' (स्त्री) पूर्व दिशा, १ अर्थ और 'पूर्वे' (पु नि० ब० व०) का पुरखा (पुराने वंशवाले, पुरनिआं), ब्रह्मा, २ अर्थ हैं ॥

७ ['कादम्बः' (पु) के चित्र पंखवाला पक्षि-विशेष (कलहंस), बाण, २ अर्थ हैं] ॥

८ ['नितम्बः' (पु) के, पहाड़का किनारा, कटि (चूतड़), २ अर्थ हैं] ॥

१. बयोः सावर्ण्याद्वान्ता बान्ताश्च शब्दा अत्र उक्ताः ॥
२. 'चित्रपुङ्खेऽपि......फले' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यमानः प्रकृतोपयोगितयाऽत्र स्थापितः ॥

१ दर्वी फणापि २ बिम्बोऽस्त्री मण्डले चाकृतौ फले' (६४)

इति वा (बा) न्ताः शब्दाः ।

अथ भान्ताः शब्दाः ।

३ कुम्भौ घटेभमूर्धांशौ ४ डिम्भौ तु शिशुबालिशौ ॥ १३४ ॥
५ स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ ६ शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ।
७ कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा ८ विस्रम्भः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥
९ स्याद्भेर्यां दुन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ।
१० स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥
११ क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना—

---

१ ['दर्वी' (स्त्री) के साँपका फणा, कलछुल, २ अर्थ हैं] ॥

२ ['बिम्बः' (+ बिम्बः । पु न) के सूर्यादिका मण्डल, आकृति, प्रतिबिम्ब, बिम्बिका-फल (कुनरुन, त्रिकोलका फल), ४ अर्थ हैं] ॥

इति वा (बा) न्ताः शब्दाः ।

अथ भान्ताः शब्दाः ।

'कुम्भः' (पु) के घड़ा, हाथीके मस्तकका कुम्भ (मांस-पिण्ड-विशेष), कुम्भ नामका ग्यारहवाँ राशि, वेश्या-पति, कुम्भकर्णका पुत्र, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'डिम्भः' (पु) के बालक, मूर्ख, २ अर्थ हैं ॥

५ 'स्तम्भः' (पु) के खम्भा, जड़ता, २ अर्थ हैं ॥

६ 'शम्भुः' (पु) के ब्रह्मा, शिवजी, पूज्य, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'गर्भः' (पु) के कुक्षि (कोख), गर्भमें रहनेवाला बच्चा या गर्भ, बालक, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'विस्रम्भः' (+ विश्रम्भः । पु) के शृङ्गार-याचना, विश्वास, २ अर्थ हैं ॥

९ 'दुन्दुभिः' (पु) के भेरी बाजा, वरुण, दुन्दुभि नामका दैत्य, ३ अर्थ और 'दुन्दुभिः' (स्त्री) का लड़कों का खिलौना-विशेष, १ अर्थ है ॥

१० 'कुसुम्भम्' (न) के बर्रे (कुसुम) का फूल, सोना, २ अर्थ और 'कुसुम्भः' (पु) का कमण्डलु, १ अर्थ है ॥

११ 'नाभिः' (पु) के क्षत्रिय, जीतनेकी इच्छा करनेवाला या प्रधान

—१ सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ।
२ सभा संसदि सभ्ये च　३ त्रिष्वध्यक्षेऽपि वल्लभः ॥ १३७ ॥

इति भान्ताः शब्दाः ।

अथ मान्ताः शब्दाः ।

४ किरणप्रग्रहौ रश्मी ५ कपिभेकौ प्लवङ्गमौ ।
६ इच्छामनोभवौ कामौ ७ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १३८ ॥
८ धर्माः　पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ।
९ उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥

राजा, पहियेके बीचवाला भाग, ३ अर्थ और 'नाभिः' (स्त्री) कस्तूरीकामद, १ अर्थ है ॥

१ 'सुरभिः' (स्त्री) का गौ, १ अर्थ; 'सुरभिः' (पु) के वसन्त ऋतु, जातीफल, चम्पा, ३ अर्थ और 'सुरभिः' (त्रि) के सुगंधित, मनोहर, २ अर्थ हैं ॥

२ 'सभा' (स्त्री) के सभा (बैठक, कमेटी), द्यूत; मन्दिर, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'वल्लभः' (त्रि) के अध्यक्ष, प्रिय, हैं ॥

इति भान्ताः शब्दाः ।

अथ मान्ताः शब्दाः ।

४ 'रश्मिः' (पु) के किरण, रस्सी २ अर्थ हैं ॥

५ 'प्लवङ्गमः' (पु) के बन्दर, मेढक, २ अर्थ हैं ॥

६ 'कामः' (पु) के इच्छा, कामदेव, काम्य, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'पराक्रमः' (पु) के सामर्थ्य उद्योग, २ अर्थ हैं ॥

८ 'धर्मः' (पु न) के पुण्य (यज्ञ, अहिंसा आदि), आचार (जैसे—धर्मशास्त्र, आदि), स्वभाव, उपक्रम, उपनिषत् , न्याय (जैसे—धर्माधिकारी, धर्माध्यक्ष,…), ६ अर्थ औ 'धर्मः' (पु) के यमराज, सोमलताका पान करनेवाला, जिन, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'उपक्रमः' (पु) के उपायको सोचकर किया हुआ आरम्भ, मन्त्रीके शील-परीक्षा करनेका उपाय, चिकित्सा, ३ अर्थ हैं ॥

१ वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो २ नागरो वणिक् ।
नैगमौ [१]द्वौ ३ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ॥ १५० ॥
४ शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः ५ क्रान्तौ च विक्रमः ।
६ स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे ७ जिह्मस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १५१ ॥
८ [२]उष्णेऽपि घर्मः ९ श्रेष्ठालङ्कारे भ्रान्तौ च विभ्रमः ।
१० गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च ११ जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ॥ १५२ ॥
१२ क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ।

---

१ 'निगमः' (पु) के वाणिज्य, पुर (ग्राम), वेद, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'नैगमः' (त्रि) के वेद-सम्बन्धी, नगर-वासी, २ अर्थ और 'नैगमः' (पु) के उपनिषद्, बनियाँ, २ अर्थ हैं ॥

३ 'रामः' (पु) के बलदेवजी (कृष्णजीके बड़े भाई), परशुरामजी, रामचन्द्रजी, ३ अर्थ और 'रामः' (त्रि) के नीला, सुन्दर, सफेद, बागीचा, ४ अर्थ हैं ॥

४ 'ग्रामः' (पु) के शब्द आदि (पूर्व) में रहे तो समूह (जैसे—शब्दग्रामः, गुणग्राम अर्थात् क्रमशः शब्द-समूह, गुण-समूह,...), गाँव, स्वर-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'विक्रमः' (पु) के क्रान्ति (आक्रमण), पराक्रम, २ अर्थ हैं ॥

६ 'स्तोमः' (पु) के स्तोत्र, यज्ञ, समूह, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'जिह्मः' (पु) के कुटिल, आलसी, २ अर्थ हैं ॥

८ 'घर्मः' (पु) के धूप (घाम, रौदा) पसीना, २ अर्थ हैं ॥

९ 'विभ्रमः' (पु) के हाव, भ्रान्ति, शोभा, पद्यका अलङ्कार विशेष, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'गुल्मः' (पु) के गुल्म (प्लीहा या कब्ज) रोग, कुश, बाळ, डाळ आदि का गुच्छा, सेना-विशेष(२।८।८१ का चक्र), किला आदिका रक्षास्थान, ४ अर्थ हैं ॥

११ 'जामिः' (+ यामिः । स्त्री) के बहन (भगिनी), कुलस्त्री, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'क्षमा' (स्त्री) के पृथ्वी, माफी, २ अर्थ; 'क्षमम्' (न) का योग्य, १ अर्थ और 'क्षमम्' (त्रि) के शक्त (समर्थ), हित, २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'द्वाविति ब्राह्मणस्य नैगमत्वे निषेधः' इति क्षी० स्वा० ॥

२. 'उष्णेऽपि......विभ्रमः' इति क्षेपकांशः मा० दी० मूलव्याख्ययोर्नोपलभ्यते ॥

१ त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा ॥ १४३ ॥
२ ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु ।
३ सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये ४ प्रधाने प्रथमस्त्रिषु ॥ १४४ ॥
५ वामौ वल्गुप्रतीपौ ६ द्वावधमौ न्यूनकुत्सितौ ।
७ जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् ॥ १४५ ॥
८ 'भ्रमो मूर्च्छा तक्षभाण्डमजिराम्बुविनिर्गमः (६५)
९ ध्यामौ धूम्रास्फुटौ—

---

१ 'श्यामः' (त्रि) के हरित् (नीला रंग) वाला, काला रंगवाला, २ अर्थ; 'श्यामः' (पु) के काला रंग, नीला रंग, प्रयागका 'अक्षयवट' नामक वटवृक्ष, मेघ, वृद्धदारक (औषध-विशेष), पिक, ६ अर्थ; 'श्यामा' (स्त्री) के शारिवा (सरिवन) नामक ओषधि, रात, सोमलता, गुन्द्रा, यमुना, तिधारा ओषधि, सोलह वर्षकी स्त्री, बिना बच्चा पैदा की हुई स्त्री, ८ अर्थ और 'श्यामम्' (न) के मिर्च, समुद्री नमक, २ अर्थ हैं ॥

२ 'ललामम्' (+ ललाम=ललामन् । न) के पूँछ, घोड़ा आदिके ललाटका चित्र (चिह्न-विशेष), घोड़ा, घोड़ेका गहना, पताका, प्रधान, श्रङ्ग, रमणीय, प्रभाव, १० अर्थ हैं ॥

३ 'सूक्ष्मम्' (न) के अध्यात्म, कपट, २ अर्थ; 'सूक्ष्मः' (पु) का अणि, १ अर्थ और 'सूक्ष्मः' (त्रि) का अत्यन्त महीन या छोटा, १ अर्थ है ॥

४ 'प्रथमः' (त्रि) के पहला, प्रधान, २ अर्थ हैं ॥

५ 'वामः' (त्रि) के सुन्दर, प्रतिकूल, शिवजी, पयोधर, बायाँ, शत्रु, ६ अर्थ हैं ॥

६ 'अधमः' (त्रि) के थोड़ा, नीच (निन्दित), २ अर्थ हैं ॥

७ 'यातयामम्' (त्रि) के पुराना, उपभोग किया हुआ (जूठा या बासी), २ अर्थ हैं ॥

८ 'भ्रमः' (पु) के मूर्च्छा (बेहोशी), तक्षभाण्ड, जलका निर्गम, ३ अर्थ हैं] ॥

९ 'ध्यामः' (पु) के धुआँ, अस्पष्ट, २ अर्थ हैं ॥

—१ भीमा रुद्रभीषणपाण्डवाः' (६६)

इति मान्ताः शब्दाः ।

अथ यान्ताः शब्दाः ।

२ तुरङ्गगरुडौ तार्क्ष्यौ ३ निलयापचयौ क्षयौ ।
४ श्वशुर्यौ देवरश्यालौ ५ भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ॥ १४६ ॥
६ पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ ७ स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः ।
८ तिष्यः पुष्ये कलियुगे ९ पर्यायोऽवसरे क्रमे ॥ १४७ ॥
१० प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ।
रन्ध्रे शब्दे—

१ ['भीमः' (पु) के शिवजी, भयङ्कर, भीमसेन (युधिष्ठिरका भाई), अमलवेंत ४ अर्थ हैं] ॥

इति मान्ताः शब्दाः ।

अथ यान्ताः शब्दाः ।

२ 'तार्क्ष्यः' (पु) के घोड़ा, गरुड़, सर्प, गरुड़का बड़ा भाई, ४ अर्थ हैं ॥

३ 'क्षयः' (पु) के घर, कमी (नाश), कल्पान्त, रोग-विशेष, ४ अर्थ हैं ॥

४ 'श्वशुर्यः' (पु) के देवर (पतिका छोटा भाई), शाला (स्त्रीका भाई), २ अर्थ हैं ॥

५ 'भ्रातृव्यः' (पु) के भाईका लड़का, शत्रु, २ अर्थ हैं ॥

६ 'पर्जन्यः' (पु) के गर्जता हुआ मेघ, इन्द्र, मेघका गर्जना, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'अर्यः' (पु) के स्वामी, वैश्य, २ अर्थ हैं ॥

८ 'तिष्यः' (पु) के पुष्य नामका आठवां नक्षत्र, कलियुग, २ अर्थ हैं ॥

९ 'पर्यायः' (पु) के अवसर, सिलसिला (क्रम), प्रकार, निर्माण, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'प्रत्ययः' (पु) के अधीन, शपथ (कसम), ज्ञान, विश्वास, कारण, आचार, प्रसिद्ध, छिद्र, प्रत्यय (जैसे—सन् , क्यच् , काम्यच् , तिप् , तस् , झि, सु, औट् , जस् ,······), २ अर्थ हैं ॥

—१ अथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ॥ १४८ ॥
२ स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते ।
३ समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ॥ १४९ ॥
४ व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ।
५ अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि ॥ १५० ॥
युद्धायत्योः संपरायः ७ पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ।
८ पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च सन्नयौ ॥ १५१ ॥
९ संघाते सन्निवेशे च संस्त्यायः १० प्रणयास्त्वमी ।
[1]विश्रम्भयाच्ञाप्रेमाणो ११ विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥ १५२ ॥
१२ विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ।

---

१ 'अनुशयः' (पु) के बड़ा द्वेष, पछतावा, २ अर्थ हैं ॥

२ 'स्थूलोच्चयः' (पु) के असंपूर्णता, हाथियोंका मध्यम (न बहुत कम न बहुत अधिक) गतिसे चलना, पहाड़का बड़ा ढोका (चट्टान), ३ अर्थ हैं ॥

३ 'समयः' (पु) के शपथ, आचार, काल, सिद्धान्त, भाषा, बुद्धि, निर्देश, संकेत, ८ अर्थ हैं ॥

४ 'अनयः' (पु) के जुआ आदि खेलनेकी बुरी आदत, दुर्भाग्य, विपत्ति, अन्याय, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'अत्ययः' (पु) के उल्लङ्घन, कष्ट, दोष, दण्ड, बड़ा उत्पात, ५ अर्थ हैं ॥

६ 'संपरायः' (पु) के युद्ध, आपत्ति, उत्तर काल, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'पूज्यः' (पु) के श्वशुर, पूजा करने योग्य, २ अर्थ हैं ॥

८ 'सन्नयः' (पु) के सेनाके पीछे रहनेवाली सेना, समूह, २ अर्थ हैं ॥

९ 'संस्त्यायः' (पु) के समूह, स्थान-विशेष, विस्तार ३ अर्थ हैं ॥

१० 'प्रणयः' (पु) के विश्वास, याचना, प्रेम, परिचय, ४ अर्थ हैं ॥

११ 'समुच्छ्रयः' (पु) के विरोध, ऊँचाई, २ अर्थ हैं ॥

१२ 'विषयः' (पु) के देश, स्थान, शब्द आदि (स्पर्श, रूप, रस, गन्ध । इनमें कानका शब्द, त्वचाका स्पर्श, नेत्रका रूप, जिह्वाका रस और नाक का गन्ध विषय है), ३ अर्थ हैं ॥

---

१. 'विस्रम्भयाच्ञाप्रेमाणः' इति पाठान्तरम् ।

१ निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री २ सभायां च प्रतिश्रयः॥ १५२॥
३ प्रायो भूम्न्यन्तगमने ४ मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि।
५ रहस्योपस्थयोर्गुह्यं ६ सत्यं शपथतथ्ययोः॥ १५४॥
७ वीर्यं बले प्रभावे च ८ द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये।
९ धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ १० भाग्यं कर्म शुभाशुभम्॥ १५५॥
११ [1]कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं १२ विशल्या दन्तिकाऽपि च।

---

१ 'कषायः' (पुनः) के काढ़ा, कषाय (कसाव) रस, गेरुआ रंग, ३ अर्थ हैं॥

२ 'प्रतिश्रयः' (पु) के सभा, आश्रय, २ अर्थ हैं॥

३ 'प्रायः' (पु) के अधिकतर, अन्तिम यात्रा (मरना, जैसे 'प्रायोपवेशः कृतः' अर्थात् मर गया,······), अनशन (भोजन-त्याग करना), तुल्य ४ अर्थ हैं॥

४ 'मन्युः' (पु) के दीनता, यज्ञ, क्रोध, ३ अर्थ हैं॥

५ 'गुह्यम्' (न) के रहस्य, उपस्थ (योनि, लिङ्ग), २ अर्थ हैं॥

६ 'सत्यम्' (न) के कसम (शपथ), सत्य, २ अर्थ हैं॥

७ 'वीर्यम्' (न) के बल, प्रभाव, तेज, शुक्र (पुरुषका धातु), ४ अर्थ हैं॥

८ 'द्रव्यम्' (न) के भव्य (योग्य), गुणाश्रय (गन्ध आदि गुणका आश्रय-पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन, ये ९ द्रव्य[2]), धन, विलेप, ओषधि, ५ अर्थ हैं॥

९ 'धिष्ण्यम्' (न) के स्थान, गृह, नक्षत्र, अग्नि, शक्ति, ५ अर्थ हैं। (क्षी० स्वा० के मतमें अग्नि अर्थ में 'धिष्ण्यः' (पु) है)॥

१० 'भाग्यम्' (न) के पूर्व जन्मका किया हुआ शुभ या अशुभ कर्म, ऐश्वर्य, २ अर्थ हैं॥

११ 'गाङ्गेयम्' (न) के कशेरु, सुवर्ण, २ अर्थ और 'गाङ्गेयः' (पु) का भीष्म पितामह, १ अर्थ है॥

१२ 'विशल्या' (स्त्री) के दन्ती (ओषधि-विशेष), आगकी लपट, गुडुच, त्रिपुटा ओषधि, ४ अर्थ हैं॥

---

१. 'कसेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं' इति पाठान्तरम्॥

२. तदुक्तमन्नम्भट्टेन तर्कसङ्ग्रहे—'तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव' इति॥

१ वृषाकपायी श्रीगौर्यो २ रभिख्या नामशोभयोः ॥ १५६ ॥
३ आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ।
उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः ॥ १५७ ॥
४ छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ।
५ कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभबन्धने ॥ १५८ ॥
६ कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ।
७ जन्यं स्याज्जनवादेऽपि ८ [1]जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ॥ १५९ ॥
९ [2]गर्ह्याधीनौ च वक्तव्यौ १० कल्यौ सज्जनिरामयौ ।

---

१ वृषाकपायी' (स्त्री) के लक्ष्मीजी, पार्वतीजी, जीवन्ती नामका ओषधि-विशेष, शतावर, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'अभिख्या' (स्त्री) के नाम, शोभा, यश, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'क्रिया' (स्त्री) के कार्य, निष्कृति (प्रायश्चित्त), शिक्षा, पूजा, विचार, साम आदि (दान, दण्ड, विभेद) चार उपाय, काम, चेष्टा, रोग आदि की चिकित्सा, ९ अर्थ हैं ॥

४ 'छाया' (स्त्री) के सूर्यकी स्त्री, शोभा, प्रतिबिम्ब, छाँह, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'कक्ष्या' (स्त्री) के राजगृह आदिकी ड्योढ़ी, करधनी (स्त्रियोंके कमरका भूषण), हाथियोंका हौदा, गद्दा आदि कसनेकी डोरी, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'कृत्या' (स्त्री) के क्रिया, देवता-विशेष ('मारी' नामक), २ अर्थ और 'कृत्या' (त्रि) के धन स्त्री भूमि आदिसे शत्रुका भेद्य (फोड़ने योग्य) दुष्ट आदि, कार्य, २ अर्थ हैं ॥

७ 'जन्यः' (पु । + न) के जनापवाद, उत्पात, युद्ध, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'जघन्यः' (त्रि) के अन्त (+ अन्त्य), नीच, निन्दित, शिश्न (लिङ्ग), ४ अर्थ हैं ॥

९ 'वक्तव्यः' (त्रि) के निन्दित, हीन (+ वश), कहने योग्य, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'कल्यः' (त्रि) के उपाय-युक्त (तैयार, सजा हुआ), नीरोग, २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'जघन्योऽन्ते' इति पाठान्तरम् ॥ २. 'गुह्याधीनौ' इति पाठान्तरम् ॥

१ [1]आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ २ पुण्यं तु चार्वपि ॥ १६० ॥
३ रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि ४ वदान्यो वल्गुवागपि ।
५ न्याय्येऽपि मध्यं ६ सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ॥ १६१ ॥
७ [2]"सर्वज्ञभिषजौ वैद्या ८ वात्मा कामश्च हृच्छयौ (६७)
९ फलकल्याणयोर्भव्यं १० योग्यं सांप्रतिके त्रिषु (६८)
११ क्रियाचारातिक्रमेऽपि १२ जलाधारेऽपि चाशयः (६९)

१ 'अर्थ्यः' (त्रि) के बुद्धिमान् (+ धार्मिक), अर्थसे युक्त, न्यायसे युक्त, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'पुण्यम्' (त्रि) के मनोहर, पवित्र, २ अर्थ और 'पुण्यम्' (न) के सुकृत, धर्म, २ अर्थ हैं ॥

३ 'रूप्यम्' (त्रि) का सुन्दर रूपवाला, १ अर्थ और 'रूप्यम्'(न) के सोनेका सिक्का (अशर्फी, गिन्नी आदि), चांदीका सिक्का (रुपया, अठन्नी आदि), २ अर्थ हैं ॥

४ 'वदान्यः' (+ वदन्यः । त्रि) के मधुर बोलनेवाला, बहुत दान देनेवाला, २ अर्थ हैं ॥

५ 'मध्यम्' (त्रि) के न्याय्य (न्यायसे युक्त), कमर, बीच, अधम, ४ अर्थ हैं ॥

६ 'सौम्यम्' (त्रि) के सुन्दर, उग्रताहीन, सोम देवतावाला हविष्य आदि, ३ अर्थ और 'सौम्यः' (पु) का बुध नामका ग्रह, १ अर्थ है ॥

['वैद्यः' (पु) के सर्वज्ञ (सब कुछ जाननेवाला अर्थात् पण्डित), भिषक (दवा करनेवाला वैद्य, डाक्टर, हकीम आदि), २ अर्थ हैं] ॥

८ ['हृच्छयः' (पु) के आत्मा, कामदेव, २ अर्थ हैं] ॥

९ ['भव्यम्' (न) के फल, कल्याण, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['योग्यम्' (त्रि) के योगार्ह, उचित, निपुण, समर्थ, ४ अर्थ 'योग्यः' (पु) के पुष्य नक्षत्र, १ और 'योग्यम्' (न) का ऋद्धि औषध, १ अर्थ है ॥

११ 'क्रिया' (स्त्री) के आचारातिक्रम, आरम्भ, आदि (३ ३।१५९ में उक्त) १० अर्थ हैं] ॥

१२ ['आशयः' (पुं) के जलाधार, अभिप्राय, कटहल ३ अर्थ हैं] ॥

१. 'आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'सर्वज्ञभिषजौ'........'सरित्' इति क्षेपकांशः महेश्वरव्याख्यायां, दुर्गवचनत्वेन क्षी० स्वा० व्याख्यायाञ्चोपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितया क्षेपकत्वेन मूले निहितः ॥

१ दैत्याचार्येऽपि धिष्ण्यो ना २ काषायः सुरभावपि (७०)
३ चन्द्रोदयो वितानेऽपि ४ स्यादाम्नायोऽन्वये श्रुतौ (७१)
५ शीताशिते शिते शैत्यं ६ जात्यं कुलजकान्तयोः (७२)
७ व्यवायो व्यवधौ च स्यात् ८ कुल्या कुलवधूः सरिद्' (७३)

इति यान्ताः शब्दाः ।

अथ रान्ताः शब्दाः ।

९ निवहावसरौ वारौ १० संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।
११ गुरू गोष्पतिपित्राद्यौ १२ द्वापरौ युगसंशयौ ॥ १६२ ॥

---

१ ['धिष्ण्यः' (पु) के शुक्र, अग्नि, २ अर्थ और 'धिष्ण्यम्' (न) के स्थान, नक्षत्र, घर, बल, ४ अर्थ हैं] ॥

२ ['काषायः' (पु) के सुगन्धि, कसाव रस, २ अर्थ हैं ॥

३ ['चन्द्रोदयः' (पु) के वितान (चँदोवा), चन्द्रमाका उदय, चन्द्रोदय रस (औषध–विशेष), ३ अर्थ हैं] ॥

४ ['आम्नायः' (पु) के (वंश, खान्दान), वेद, उपदेश, अर्थ हैं] ॥

५ ['शैत्यम्' (न) के ठंडक, दौर्बल्य, तीक्ष्णता, ३ अर्थ हैं] ॥

६ ['जात्यम्' (न) के कुलीन, सुन्दर, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['व्यवायः' (पु) के व्यवधान, मैथुन, २ अर्थ हैं] ॥

८ ['कुल्या' (स्त्री) के कुलवधू , छोटी नदी (नहर), २ अर्थ हैं] ॥

इति यान्ताः शब्दाः ।

अथ रान्ताः शब्दाः ।

९ 'वारः' (पु) के समूह, अवसर, सूर्य, चन्द्र, मङ्गल आदि सात दिन, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'संस्तरः' (पु) के शय्या या कुशादिकी चटाई आदि, यज्ञ २ अर्थ हैं ॥

११ 'गुरुः' (पु) बृहस्पति, पिता आदि (माता, बड़ा भाई आदि- बड़े लोग पढ़ाने वाला ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'द्वापरः' (पु) के द्वापर युग, संशय, २ अर्थ हैं ॥

१ प्रकारौ भेदसादृश्ये २ आकारविङ्गिताकृती ।
३ किंशारू [1]सस्यशूकेषू ४ मरू धन्वधराधरौ ॥ १६३ ॥
५ अद्रयो द्रुमशैलार्काः ६ स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ।
७ ध्वान्तारिदानवा वृत्रा ८ बलिहस्तांशवः कराः ॥ १६४ ॥
९ प्रदरा भङ्गनारीरुग्बाणा १० अस्राः कचा अपि ।
११ अजातश्रृङ्गो गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना न तूबरौ ॥ १६५ ॥
१२ स्वर्णेऽपि राः १३ परिकरः पर्यङ्कपरिवारयोः ।

१ 'प्रकारः' (पु) के भेद (तरह), सादृश्य (बराबरी), २ अर्थ हैं ॥

२ 'आकारः' (पु) के चेष्टा, आकृति (आकार, डीलडौल), २ अर्थ हैं ॥

३ 'किंशारुः' (पु) के कान आदि (यव आदि) का टूंड, बाण २ अर्थ हैं ॥

४ 'मरु' (पु) के मरुस्थल (राजपुताने के निर्जल स्थान), पहाड़, २ अर्थ हैं ॥

५ 'अद्रिः' (पु) के पेड़, पहाड़, सूर्य, ३ अर्थ है ॥

६ 'पयोधरः' (पु) के स्त्रीका स्तन, मेघ, कोषकार, कशेरु, नारियल, ५ अर्थ हैं ।

७ 'वृत्रः' (पु) के अन्धकार, शत्रु, वृत्रासुर, पर्वत-भेद, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'करः' (पु) के कर (मालगुजारी, टैक्स, कौड़ी, आदि), हाथ, किरण, हाथी का सूंड़, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'प्रदरः' (पु) के भङ्ग, स्त्रीका-रोग-विशेष, बाण ३ अर्थ हैं ॥

१० 'अस्रः' (पु) के केश, कोण, २ अर्थ और 'अस्रम्' (न) के आंसू खून, २ अर्थ हैं ॥

११ 'तूबरः' (+ तुवरः । पु) के भूंड (समय आने पर भी सींग) जिसका नहीं जमा हो वह) गौ, समय (अवस्था) आनेपर भी दाढी-मूंछ जिसका नहीं जमा हो वह पुरुष, कषाव रस, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'राः' (= रै पु) के स्वर्ण (सोना), धन, २ अर्थ हैं ॥

१३ 'परिकरः' (पु) के पर्यङ्क, परिवार, मन्त्री आदि परिजन, समूह, विवेक, आरम्भ, यत्न, ७ अर्थ हैं ॥

१. 'धान्यशूकेषु' इति पाठान्तरम् ॥

१ मुक्ताशुद्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ स तु त्रिषु ॥ १६६ ॥
कर्बुरेऽथ प्रतिज्ञाऽऽजिसंविदापत्सु संगरः ।
४ वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो ५ मित्रो रवावपि ॥ १६७ ॥
७ मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरुर्गुह्येऽप्यवस्करः ।
८ आडम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते ॥ १६८ ॥
९ [1]अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च ।
१० स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोशे परिच्छदे ॥ १६९ ॥

१ 'तारः' (पु) के मुक्ताशुद्धि, निर्मल मोती, तैरना, वानर-भेद, ४ अर्थ; 'तारम्' (न स्त्री) के नक्षत्र, आँखकी पुतली, २ अर्थ; 'तारम्' (न) का चाँदी, १ अर्थ; + 'तारा' (स्त्री) के बुद्धदेवी, बालि (सुग्रीवके भाई) की स्त्री, बृहस्पतिकी स्त्री, ३ अर्थ और 'तारम्' (त्रि) का ऊँचा शब्द, १ अर्थ है ।

२ 'शारः' (पु) का वायु, १ अर्थ और 'शारः' (त्रि) का चितकाबर, १ अर्थ है ॥

३ 'संगरः' (पु) के प्रण, युद्ध, क्रियाकार, आपत्ति, विष, ५ अर्थ और 'संगरम्' (न) का शमीफल, १ अर्थ है ।

४ 'मन्त्रः' (पु) के वेद-भेद (मन्त्र), सलाह, २ अर्थ हैं ॥

५ 'मित्रः' (पु) का सूर्य, १ अर्थ और 'मित्रम्' (न) का दोस्त, १ अर्थ है ॥

६ 'स्वरुः' (पु) के यज्ञ-स्तम्भको छीलते समय पहली बार गिरा हुआ काष्ठ-खण्ड, इन्द्रका वज्र, २ अर्थ (क्षी० स्वा० मतसे—यज्ञ, बाण, यज्ञ स्तम्भ, खण्ड, वज्र, ५ अर्थ) हैं ॥

७ 'अवस्करः' (पु) के उपस्थ (भग, लिङ्ग), विष्ठा, २ अर्थ हैं ।

८ 'आडम्बरः' (पु) के बाजाका शब्द, हाथियोंका गर्जना, समारम्भ (आडम्बर), ३ अर्थ हैं ॥

९ 'अभिहारः' (पु) के अभियोग, चोरी, कवच आदिको धारण करना, ३ अर्थ हैं ।

१० 'परीवारः' (पु) के परिजन (कुटुम्ब, भृत्य आदि), तलवारकी म्यान, उपकरण (सहायक सामग्री), ३ अर्थ हैं ॥

१. 'अभिहारो……च' इत्यंशः क्षी० स्वा० अव्याख्यातः, (२) रघुकोशान्तर्गतश्च मूलमात्रमेवोपलभ्यते ।

१ विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम् ।
२ द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे ॥ १७० ॥
३ विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुर्ना पिङ्गले त्रिषु ।
४ सारो बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु ॥ १७१ ॥
५ दुरोदरो द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम् ।
६ महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुन्नपुंसकम् ॥ १७२ ॥
७ मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ।
८ देवाद्वृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं मनाक्प्रिये ॥ १७३ ॥

---

१ 'विष्टरः' (पु) के पेड़, कुशाकी मुट्ठी (जिसमें २५ कुशा हों[1]), पीढ़ा (पाटा) मृगचर्म आदि आसन, ३ अर्थ हैं ।

२ 'प्रतीहारः' (पु) के द्वार, द्वारपाल, २ अर्थ और 'प्रतीहारी' (स्त्री) का द्वारपालिका, १ अर्थ है ॥

३ 'बभ्रुः' (पु) के बड़ा, नेवला, विष्णु, मुनि, ३ अर्थ और 'बभ्रुः' (त्रि) के पिङ्गल वर्णवाला (भूरा), अग्नि, शूली, ३ अर्थ हैं ॥

४ 'सारः' (पु) के बल, स्थिरअंश, (सारिल लकड़ी आदि), २ अर्थ, 'सारम्' (न) का न्याययुक्त, १ अर्थ और 'सारः' (त्रि) का उत्तम, १ अर्थ है ॥

५ 'दुरोदरः' (+ दरोदरः । पु) के द्यूतकार (नालदार अर्थात् जुआ खेलानेवाला), दाव, २ अर्थ और 'दुरोदरम्' (न) का जुआ, १ अर्थ है ॥

६ 'कान्तारः' (पु न) के बड़ा जङ्गल, कठिन रास्ता, बिल, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'मत्सरः' (पु) का दूसरेकी उन्नति आदि शुभ कर्मोंसे द्वेष करना, १ अर्थ और 'मत्सरः' (त्रि) के दूसरेकी उन्नति आदि शुभ कर्मोंसे द्वेष करनेवाला, कृपण, २ अर्थ हैं ॥

८ 'वरः' (पु) के वरदान (देवता आदिसे प्राप्त अभीप्सित फल), दामाद, विट, ३ अर्थ; 'वरः' (त्रि) का श्रेष्ठ, १ अर्थ और 'वरम्' (न । + अव्य० क्षी०) का थोड़ा प्रिय (जैसे—'वरं कूपशताद्वापी,······'), १ अर्थ है ॥

---

१. 'विष्टरप्रमाणं यथा—'पञ्चविंशतिदर्भाणां वेण्यग्रे ग्रन्थिभूषिता । विष्टरः सर्वयज्ञेषु लक्षणं परिकीर्तितम्' ॥ इति ।

१ वंशाङ्कुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना ।
२ ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् ॥ १७४ ॥
३ यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ।
शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ॥ १७५ ॥
४ शर्करा कर्परांशेऽपि ५ यात्रा स्याद्यापने गतौ ।
६ इरा भूवाक्सुराप्सु स्यात् ७'तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १७६ ॥
८ धात्री स्यादुपमातापि क्षितिरप्यामलक्यपि ।
९ क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ॥ १७७ ॥

---

१ 'करीरः' (पु न) का बाँसका कोंपड़ (अङ्कुर), १ अर्थ और 'करीरः' (पु) के करील पेड़ (इसमें पत्ते नहीं होते हैं), घड़ा, २ अर्थ हैं ॥

२ 'प्रतिसरः' (पु) के सेनाका पिछला हिस्सा, मन्त्र-भेद, माला, कङ्कण, ४ अर्थ; 'प्रतिसरः' (पु न) के मण्डल, विवाह-कालमें हाथमें बँधा हुआ कङ्कण (माङ्गलिक सूत्र-विशेष) या राखी, २ अर्थ और 'प्रतिसरः' (त्रि) का नियोज्य (भृत्यादि), १ अर्थ है ॥

३ 'हरिः' (पु) के यमराज, वायु, इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता (सुग्गा) साँप, वानर, मण्डूक (मेढक), लोकान्तर (परलोक), १४ अर्थ और 'हरिः' (त्रि) के हरा रंग, कपिल रंग, २ अर्थ हैं ॥

४ 'शर्करा' (स्त्री) के छोटे २ कङ्कण या ठिकरा, शक्कर, रोग-विशेष, टुकड़ा, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'यात्रा' (स्त्री) के समय बिताना (+ भोजनादि विधान, जैसे—'प्राणयात्रा,……'), चलना, देव-दर्शन आदि करना, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'इरा' (स्त्री) के पृथ्वी, बात (वचन), मदिरा, जल, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'तन्द्रा' (+ तन्द्री । स्त्री) के नींद, श्रमादिसे इन्द्रियोंका अपने-अपने काममें शिथिल होना, २ अर्थ हैं ॥

८ 'धात्री' (स्त्री) के धाई, पृथ्वी, आँवला, माता ४ अर्थ हैं ॥

९ 'क्षुद्रा' (स्त्री) के किसी अङ्गसे हीन स्त्री, नटी, वेश्या, मधुमक्खी,

---

१. 'तन्द्री' इति पाठान्तरम् ।

त्रिषु क्रूरेऽधमेऽल्पेऽपि क्षुद्रं १ मात्रा परिच्छदे ।
अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कार्त्स्न्येऽवधारणे ॥ १७८ ॥
२ आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं ३ कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।
४ योग्यभाजनयोः पात्रं ५ पत्रं वाहनपक्षयोः ॥ १७९ ॥
६ निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं ७ शस्त्रमायुधलोहयोः ।
८ स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं ९ क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ॥ १८० ॥
१० मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं—

भटकटैया (रेंगनी), ५ अर्थ और 'क्षुद्र' (त्रि) के क्रूर, गरीब (निर्धन), नीच, ३ अर्थ हैं ॥

१ 'मात्रा' (स्त्री) के परिच्छद या सामग्री (जैसे—महामात्रः,…), थोड़ा, परिमाण, अक्षरके अवयव (इकार, ईकार, उकार,…), कानका भूषण-विशेष, ५ अर्थ और 'मात्रम्' (न) के साकल्य (जैसे—हस्तमात्रं वस्त्रम्,…), अवधारण (केवल, जैसे—पयोमात्रमस्ति,…), २ अर्थ हैं ॥

२ 'चित्रम्' (न) के फोटो (तस्वीर), आश्चर्य, चितकाबर, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'कलत्रम्' (न) के कमर, स्त्री, २ अर्थ हैं ॥

४ 'पात्रम्'(न) के योग्य (जैसे—पात्रे दानं कर्तव्यम्,…), बर्तन, दो तटों का बीच, स्रुवा-चमस आदि, राजमंत्री, पत्ता, नाटक करनेवाला (एक्टर), ७ अर्थ हैं ॥

५ 'पत्रम्' (न) के वाहन (घोड़ा, हाथी, ऊँट आदि सवारी), पङ्ख, पत्ता, बाण, पक्षी, ५ अर्थ हैं ॥

६ 'शास्त्रम्' (न) के आदेश, व्याकरण आदि ६ शास्त्र, २ अर्थ हैं ॥

७ 'शस्त्रम्' (न) के हथियार, लोहा, २ अर्थ हैं ॥

८ 'नेत्रम्' (न) के पेड़की सोर (जड़), वस्त्र, मथनीकी रस्सी, आँख, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'क्षेत्रम्' (न) के स्त्री, शरीर[1], खेत, सिद्ध-मुनि आदिका स्थान ४ अर्थ हैं ॥

१० 'पोत्रम्' (न) के सूअरका मुख, हलका मुख (अगला भाग), वस्त्र, ३ अर्थ हैं ॥

---

१. तदुक्तं भगवता श्रीकृष्णेनार्जुनं प्रति—

'इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते' । गीता १३ । १ ॥

—१ गोत्रं तु नाम्नि च ।
२ सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च ॥ १८१ ॥
३ अजिरं विषये कायेऽप्य४म्बरं व्योम्नि वाससि ।
५ चक्रं राष्ट्रेऽप्य६क्षरं तु मोक्षेऽपि ७ क्षीरमप्सु च ॥ १८२ ॥
८ स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ ९ द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ।
१० गुहादम्भौ गह्वरे द्वे ११ रहोऽन्तिकमुपह्वरे ॥ १८३ ॥

---

१ 'गोत्रम्' (न) के नाम, गोत्र (वंश, कुल), संभावनाके योग्य बोध, जङ्गल, क्षेत्र, रास्ता, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'सत्रम्' (न) के आच्छादन (ढाँकना), यज्ञ, सर्वदा दान करना, जङ्गल, दम्भ, ५ अर्थ हैं ॥

३ 'अजिरम्' (न) के विषय (रूप, रस, गन्ध आदि), शरीर, आँगन (चौक), हवा, मेढक, ५ अर्थ हैं ॥

४ 'अम्बरम्' (न) के आकाश, कपड़ा, २ अर्थ हैं ॥

'चक्रम्' (न) के राज्य, सेना, पहिया, आयुध-विशेष, समूह, कुम्भारका चाक, पानीकी भौंरी, ७ अर्थ और 'चक्रः' (पु) का चकवा पक्षी, १ अर्थ है ॥

६ 'अक्षरम्' (न) के मोक्ष, परब्रह्म, वर्ण (क ख ग घ आदि वर्ण, किसी भी भाषाके अक्षर), आकाश, धर्म, तप, मूल कारण, चिचिड़ा (अपामार्ग), ८ अर्थ हैं ॥

७ 'क्षीरम्' (न) के पानी, दूध, २ अर्थ हैं ॥

८ 'भूरि' (न) का सोना १ अर्थ; 'भूरिः' (पु) के कृष्णजी, शिवजी, ब्रह्मा, ३ अर्थ और 'भूरि' (त्रि) का अधिक (काफी), १ अर्थ तथा 'चन्द्रः' (पु) के सोना, चन्द्रमा, सुन्दर, कबीला (औषध-विशेष), पानी, ५ अर्थ हैं ॥

९ 'गोपुरम्' (न) के द्वारमात्र, नगरका द्वार, मोथा, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'गह्वरम्' (न) के गुफा, दम्भ, निकुञ्ज, गहन, ४ अर्थ हैं ॥

११ 'उपह्वरम्' (न) के एकान्त, समीप, २ अर्थ हैं ॥

१ पुरोऽधिकमुपर्यग्राण्य २ गारे नगरे पुरम् ।
मन्दिरं चाथ ३ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ॥ १८४ ॥
४ दरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे ५ वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ।
६ तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ॥ १८५ ॥
७ [१]औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने ।
८ पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले ॥ १८६ ॥
व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः ।
९ अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये ॥ १८७ ॥

---

१ 'अग्रम्' (न) के आगे (सामने), एक पल (४ भरी) का प्रमाण-विशेष, ऊपर, आलम्बन, समूह, प्रान्त, ६ अर्थ और 'अग्रम्' (त्रि) के अधिक' प्रधान, पहला, ३ अर्थ हैं ।

२ 'पुरम्' (न) के घर, नगर (शहर, बड़ा ग्राम), २ अर्थ और 'पुरः' (पु) के गुग्गुल, १ अर्थ तथा 'मन्दिरम्' (न) के घर, नगर, २ अर्थ हैं ॥

३ 'राष्ट्रः' (पु न) के देश, उपद्रव, २ अर्थ हैं ॥

४ 'दरः' (पु न) के डर, गढा, २ अर्थ हैं ॥

५ 'वज्रः' (पु न) के हीरा, वज्र (इन्द्रका आयुध-विशेष), २ अर्थ हैं ॥

६ 'तन्त्रम्' (न) के प्रधान, सिद्धान्त, जुलाहा (कपड़ा बुननेवाली जाति-विशेष), सामग्री, वेदकी एक शाखा, कारण, उत्तम औषध, ७ अर्थ हैं ॥

७ 'औशीरः' (पु । + न० क्षी० स्वा०), का चँवरका दण्ड, १ अर्थ; 'औशीरम्' (न) के शयन, आसन (+ शयन और आसन दोनोंका समुदाय क्षी० स्वा०), उशीर (खश) से उत्पन्न, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'पुष्करम्' (न) के हाथीकी सूँड़का आगेवाला हिस्सा, बाजाके भाण्डका मुख, पानी, आकाश, तलवारका फल, कमल, 'पुष्कर क्षेत्र' नामक तीर्थ विशेष, पुष्करमूल औषध, ८ अर्थ हैं ॥

९ 'अन्तरम्' (न) के अवकाश (खाली), अवधि, पहिरनेका कपड़ा आदि, अन्तर्धान (छिपना), भेद (फरक), तादर्थ्य (उसके लिये, जैसे—

---

१. 'औशीरं चामरे दण्डे' इति पाठान्तरम् ।

छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च ।
१ मुस्तेऽपि पिठरं २ राजकशेरुण्यपि नागरम् ॥ १८८ ॥
३ शार्वरं त्वन्धतमसे [1]घातुके भेद्यलिङ्गकम् ।
४ गौरोऽरुणे सिते पीते ५ व्रणकार्येऽप्यरुष्करः ॥ १८९ ॥
६ जठरः कठिनेऽपि स्या ७ दधस्तादपि चाधरः ।
८ अनाकुलेऽपि चैकाग्रो ९ व्यग्रो व्यासक्त आकुले ॥ १९० ॥

ओदनान्तरस्तण्डुलः अर्थात् भातके लिये चावल है, ...), छिद्र, आत्मीय (अपना), विना, बाहर, अवसर, बीच, अन्तरात्मा, सादृश्य, अन्य, १५ अर्थ हैं ॥

१ 'पिठरम्' (न) के मोथा घास, स्थाली (बटलोई), मथनी ३ अर्थ हैं ॥

२ 'नागरम्' (न) के सोंठ, नागरमोथा, २ अर्थ और 'नागरः' (त्रि) के नगरवासी या नगरमें होनेवाला, चतुर, २ अर्थ हैं ॥

३ 'शार्वरम्' (न) का घोर अन्धकार १ अर्थ; 'शार्वरम्' (त्रि) का घातुक, १ अर्थ और 'शार्वरः' (पु) का घातुक हाथी, १ अर्थ है ॥

४ 'गौरः' (त्रि) के अरुण, सफेद (गोर), पीला, विशुद्ध, ४ अर्थ; 'गौरः' (पु) के पीला सरसों, चन्द्रमा, २ अर्थ और 'गौरः' (पु न) का पद्मकेसर, १ अर्थ है ॥

५ 'अरुष्करः' (पु) का 'भेलावा' नामकी ओषधि, १ अर्थ और 'अरुष्करः' (त्रि) का घाव करनेवाला, १ अर्थ है ॥

६ 'जठरः' (त्रि) का कठोर, १ अर्थ; 'जठरः' (पु न) का पेट, १ अर्थ और 'जठरः' (पु) का बूढ़ा, १ अर्थ है ॥

७ 'अधरः' (त्रि) के नीचे, हीन, २ अर्थ और 'अधरः' (पु) का ओठ, १ अर्थ है ॥

८ 'एकाग्रः' (त्रि) के अनाकुल (स्वस्थ), एकान्त, २ अर्थ हैं ॥

९ 'व्यग्रः' (त्रि) के अनेक कार्योंमें फँसा हुआ (चञ्चल), व्याकुल, २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'घातुकेभे नृलिङ्गकम्' इति पाठान्तरम् । २. 'व्रणकार्येऽप्यरुष्करः' इति पाठान्तरम् ।

१ उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्याद २ नुत्तरः ।
एषां विपर्यये श्रेष्ठे ३ दूरानात्मोत्तमाः पराः ॥ १२१ ॥
४ स्वादुप्रियौ तु मधुरौ ५ क्रूरौ कठिननिर्दयौ ।
६ उदारो दातृमहतो ७ रितरस्त्वन्यनीचयोः ॥ १९२ ॥
८ मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः ९ शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः ।
१० [१]आसारो वेगवद्वर्षं सैन्यप्रसरणं तथा (७४)
११ धाराम्बुपाते चोत्कर्षेऽश्वो १२ कटाहे तु कर्परः (७५)

---

१ 'उत्तरः' (त्रि) के ऊपर, उत्तर दिशामें होनेवाला, श्रेष्ठ, ३ अर्थ; 'उत्तरम्' (न) का जवाब, १ अर्थ; 'उत्तरः' (पु) का विराट राजाका पुत्र, १ अर्थ और + 'उत्तरा' (स्त्री) के उत्तर दिशा, अभिमन्यु (अर्जुनके पुत्र) की स्त्री, २ अर्थ हैं ॥

२ 'अनुत्तरः' (त्रि) के नीचे, उत्तरके अतिरिक्त (भिन्न) दिशामें होनेवाला, नीच, श्रेष्ठ, ४ अर्थ और 'अनुत्तरम्' (न) का निरुत्तर, १ अर्थ है ॥

३ 'परः' (त्रि) के दूर, शत्रु, उत्तम, दूसरा (अपनेसे भिन्न), ४ अर्थ और 'परम्' (न) का केवल, १ अर्थ है ॥

४ 'मधुरः' (त्रि) के स्वादिष्ट, प्रिय, २ अर्थ; 'मधुरः' (पु) का मीठा, १ अर्थ और + 'मधुरा' (स्त्री) का सौंफ, १ अर्थ है ॥

५ 'क्रूरः' (त्रि) के कठिन, निर्दय, घोर, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'उदारः' (त्रि) के दाता, बड़ा, चतुर, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'इतरः' (त्रि) के दूसरा, नीच, २ अर्थ हैं ॥

८ 'स्वैरः' (त्रि) के मन्द, स्वतन्त्र, २ अर्थ हैं ॥

९ 'शुभ्रम्' (त्रि) के उद्दीप्त (प्रकाशमान), श्वेत वर्णवाला, २ अर्थ और 'शुभ्रम्' (न) का सफेद रंग, १ अर्थ है ॥

१० ['आसारः' (पु) के जोरसे वर्षा होना, सेनाका फैलना, २ अर्थ हैं] ॥

११ ['धारा' (स्त्री) के धारसे पानी आदिका गिरना, तलवार आदि की धार, घोड़ेकी गति-विशेष, सेनाग्रभाग, ४ अर्थ हैं] ॥

१२ ['कर्परः' (पु) के कटाह (बड़ी कड़ाही), शस्त्र-विशेष, कपाल, ३ अर्थ हैं]॥

---

१. 'अयं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितयाऽत्र स्थापितः।

१ बन्धुरं सुन्दरे नम्रे २ गिरिर्गेन्दुकशैलयोः (७६)
३ चरुः स्थाल्यां हविःपक्वा ४ धीरः कातरे चले' (७७)

इति रान्ताः शब्दाः ।

अथ लान्ताः शब्दाः ।

५ चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ॥ १९३ ॥
६ द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ।
७ कृतान्तानेहसोः काल ८ श्चतुर्थेऽपि युगे कलिः ॥ १९४ ॥
९ स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः १० प्रावारेऽपि च कम्बलः ।

---

१ ['बन्धुरम्' (त्रि) के सुन्दर, नम्र, २ अर्थ हैं] ॥

२ ['गिरिः' (पु) के गेंदा, पहाड़, आँखका रोग-विशेष, ३ अर्थ और 'गिरिः' (त्रि) का पूज्य, १ अर्थ है] ॥

३ ['चरुः' (पु) के बटलोही, हविष्यका पाक, २ अर्थ हैं] ॥

४ ['अधीरः' (त्रि) के कातर, अधीर (चञ्चल अर्थात् धैर्यहीन २ अर्थ हैं] ॥

इति रान्ताः शब्दाः ।

अथ लान्ताः शब्दाः ।

५ 'मौलिः' (पु स्त्री) के चूड़ा, मुकुट, बँधा हुआ केश (बाल), ३ अर्थ हैं ॥

६ 'पीलुः' (पु) के अखरोटका पेड़, हाथी, बाण, ३ अर्थ और 'पीलु' (न) का अखरोटका फल तथा फूल, २ अर्थ हैं ॥

७ 'कालः' (पु) के यमराज, समय, मृत्यु, काला, ४ अर्थ हैं ॥

८ 'कलिः' (पु) के कलियुग, लड़ाई झगड़ा, २ अर्थ और 'कलिः' (स्त्री) का फूलकी कली (कोंढ़ी), १ अर्थ है ॥

९ 'कमलः' (पु) का मृग-विशेष, १ अर्थ और 'कमलम्' (न) के कमलका फूल, पानी, तांबा, आकाश, औषध, ५ अर्थ हैं ॥

१० 'कम्बलः' (पु) का दुपट्टा (चादर), हाथी, सास्ना (गाय या बैलके गलेमें लटकता हुआ चमड़ा, लोर), कीड़ा (कृमि), ४ अर्थ और 'कम्बलम्' (न) का पानी, कम्बल, २ अर्थ हैं ॥

१ करोपहारयोः पुंसि ¹बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ॥ १९५ ॥
२ स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः।
३ वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ॥ १९६ ॥
४ भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः।
५ मलोऽस्त्री पापविट्किट्टान्य ६ स्त्री शूलं रुगायुधम् ॥ १९७ ॥
७ शङ्कावपि द्वयोः कीलः ८ पालिः स्त्र्यश्र्यङ्कपङ्क्तिषु।
९ कला शिल्पे कालभेदेऽपि—

---

१ 'बलिः' (+वलिः। पु) के राजाका कर (कौड़ी, टैक्स, मालगुजारी), उपहार (भेंट, नजर), 'बलि'नामक दैत्य, चँवरका दण्ड, ४ अर्थ और 'बलिः' (स्त्री) के बुढ़ापेसे चमड़ेका सिकुड़ना, घरमें लगा हुआ काष्ठ-विशेष, पेटी (पेटके चमड़ेकी सिकुड़न), ३ अर्थ हैं ॥

२ 'बलम्' (न) के मोटाई, सामर्थ्य (ताकत), सेना, रूप, ४ अर्थ और 'बलः' (पु) के कौआ, बलराम (कृष्णजीके बड़े भाई), 'बल'नामका दैत्य (जिसे इन्द्रने मारा था), ३ अर्थ हैं ॥

३ 'वातूलः' (+वातुलः। पु) का वायुसमूह (आँधी), १ अर्थ और 'वातूलः' (त्रि) का बातूनी (बहुत बात करनेवाला), १ अर्थ है ॥

४ 'व्यालः' (त्रि) का शठ, १ अर्थ और 'व्यालः' (पु) के हिंसक जन्तु, साँप, बदमाश हाथी, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'मलः' (पु न) के पाप, मैला (विष्ठा), मैल, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'शूलम्' (पु न) के शूल नामक रोग-विशेष, हथियार (त्रिशूल), २अर्थ हैं॥

७ 'कीलः' (पु स्त्री) के खूँटा आदि, आगकी ज्वाला, शङ्कु, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'पालिः' (+पाली। स्त्री) के कोना या धार, अङ्क (गोद) पङ्क्ति, श्मश्रु (दाढ़ी-मूँछ) से युक्त स्त्री, प्रान्त, पुल, कल्पित भोजन, बड़ाई, कर्णलता, प्रस्थ, १० अर्थ हैं ॥

९ 'कला' (स्त्री) के कारीगरी (यह ६४ प्रकारकी होती है। एतदर्थ परिशिष्ट देखिये), ३० काष्ठाका (८ सेकेण्ड ; पृ० ३४ में उक्त) समय-विशेष, मूल धनकी वृद्धि (सूद), सोलहवाँ हिस्सा, चन्द्र-कला, ५ अर्थ हैं ॥

---

१. 'वलिः' इति पाठान्तरम्।

—१ आली सख्यावली अपि ॥ १९८ ॥
२ अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि ।
३ बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलोऽग्नौ शितौ त्रिषु ॥ १९९ ॥
४ लीला विलासक्रिययो ५ रुपला शर्करापि च ।
६ शोणितेऽम्भसि कीलालं ७ मूलमाद्ये शिफोभयोः[१] ॥ २०० ॥
८ जालं समूह आनायगवाक्षक्षारकेष्वपि ।
९ शीलं स्वभावे सद्वृत्ते १० सस्ये हेतुकृते फलम् ॥ २०१ ॥

१ 'आलिः' (स्त्री) के सखी, पङ्क्ति, २ अर्थ हैं ॥

२ 'वेला' (स्त्री) के चन्द्रमाके उदय होनेपर समुद्रका बढ़ना, समय, मर्यादा, तट, बुधकी स्त्री, धनियोंका भोजन, बिना दुःखका मरना, ७ अर्थ हैं ॥

३ 'बहुलाः' (स्त्री, ताराओंके बहुत होनेसे नित्य बहुवचन है) के कृत्तिका नामका तीसरा नक्षत्र, गौ, २ अर्थ; 'बहुलः' (पु) के अग्नि, कृष्णपक्ष, २ अर्थ और 'बहुलः' (त्रि) के काला वर्ण, बहुत, २ अर्थ हैं ॥

४ 'लीला' (स्त्री) के विलास, केलि, शृङ्गारभावसे उत्पन्न क्रिया-विशेष, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'उपला' (स्त्री) के शिकडी (पत्थरका छोटा २ कङ्कड़), खाँड़ या चीनी, २ अर्थ और 'उपलः' (पु) के पत्थर, रत्न, २ अर्थ हैं ॥

६ 'कीलालम्' (न) खून, पानी, २ अर्थ हैं ॥

७ 'मूलम्' (न) के पहला, जड़, मूल नामक उन्नीसवाँ नक्षत्र, (+ मूल-धन), समीप (जैसे—वृक्षमूले तिष्ठति,……), ४ अर्थ हैं ॥

८ 'जालम्' (न) के समूह, जाल (फन्दा), गवाक्ष (खिड़की, जँगला), बिना खिली हुई कली, दम्भ, ५ अर्थ और 'जालः' (पु) का कदम्बका पेड़, १ अर्थ है ॥

९ 'शीलम्' (न) के स्वभाव, सदाचरण (अच्छी रहन), २ अर्थ हैं ॥

१० 'फलम्' (न) के धान्य वृक्ष आदिका फल, फल (लाभ; जैसे—यज्ञका फल स्वर्ग,……), बाणकी नोक, जातीफल, त्रिफला (आँवला, हर्रे, बहेड़ा), कंकोल, सम्पत्ति, ७ अर्थ हैं ॥

१. 'शिफार्थयोः' इति पाठान्तरम् ।

१ छर्दिर्नेत्ररुजोः क्लीबं समूहे पटलं न ना ।
२ अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं ३ स्याच्चामिषे पलम् ॥ २०२ ॥
४ औौर्वानलेऽपि पातालं ५ 'चेलं वस्त्रेऽधमे त्रिषु ।
६ कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २०३ ॥
७ निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः ।
८ पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ॥ २०४ ॥
९ प्रवालमङ्कुरेऽप्यस्त्री १० त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ।
११ करालो दन्तुरे तुङ्गे १२ चारौ दक्षे च पेशलः ॥ २०५ ॥

---

१ 'पटलम्' (न) के छप्पर, आँखका रोग-विशेष, २ अर्थ और 'पटलम्' (न स्त्री) का समूह, १ अर्थ है ॥

२ 'तलम्' (पु न) के नीचे (जैसे—रसातलम् , पादतलम् ,……), स्वरूप, पृष्ठ भाग (जैसे—भूतलम् , करतलम् ,……), ३ अर्थ हैं ॥

३ 'पलम्'[२] (न) के मांस, चार भरीका प्रमाण-विशेष, समय-विशेष (१ घटीका ६० भाग), ३ अर्थ हैं ॥

४ 'पातालम्' (न) के वड़वानल, नागलोक (पाताल), बिल, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'चैलम्' (+चेलम् । न) का कपड़ा, १ अर्थ और 'चैलः' (त्रि) का नीच, १ अर्थ है ॥

६ 'कुकूलम्' (न) का कील आदिसे भरा गढा, १ अर्थ और 'कुकूलः' (पु) का भूसेकी आग (भवर), १ अर्थ है ॥

७ 'केवलम्' (अव्यय) का सिर्फ, १ अर्थ और 'केवलम्' (त्रि) के एक (अकेला, जैसे—केवलोऽयं याति,……), समूचा (जैसे—केवला भिक्षुकाः,……), २ अर्थ हैं ॥

८ 'कुशलम्' (न) के पर्याप्ति (सामर्थ्य), कल्याण, पुण्य, ३ अर्थ और 'कुशलम्' (त्रि) का शिक्षित (चतुर), १ अर्थ है ॥

९ 'प्रवालम्' (न पु) के नया पल्लव[२], मूँगा, वीणाका दण्ड, ३ अर्थ हैं ॥

१० 'स्थूलम्' (त्रि) के मोटा, जड़ (मूर्ख), २ अर्थ हैं ॥

११ 'करालः' (त्रि) के दाँतुल, ऊँचा, भयङ्कर, ३ अर्थ हैं ॥

१२ 'पेशलः' (त्रि) के सुन्दर, चतुर, २ अर्थ हैं ॥

---

१ 'चेलम्' इति पाठान्तरम् । २. 'अङ्कुरोऽत्र किसलयः' इति क्षी० स्वा० व्या० ।

१ मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्या २ ल्लोलश्चलसतृष्णयोः ।
३ 'कुलं गृहेऽपि ४ तालाङ्के कुबेरे चैककुण्डलः (७८)
५ स्त्रीभावावज्ञयोर्हेला ६ हेलिः सूर्ये ७ रणे हिलिः (७९)
८ हालः स्यान्नृपतौ मद्ये ९ शकलच्छेदयोर्दलम् (८०)
१० तूलिश्चित्रोपकरणशलाकातूलशाटयोः (८१)
११ तुमुलं व्याकुले शब्दे १२ शष्कुली कर्णपाल्यपि' (८२)

इति लान्ताः शब्दाः ।

अथ वान्ताः शब्दाः ।

१३ दवदावौ वनारण्यवह्नी—

---

१ 'बालः' (+ वालः । त्रि) के मूर्ख, बालक, केश, नेत्रवाला औषध, हाथी–घोड़ेकी पूँछके बालका गुच्छा, ५ अर्थ हैं ॥

२ 'लोलः' (त्रि) के चञ्चल, चाहनासे युक्त, २ अर्थ हैं ॥

३ ['कुलम्' (न) के घर, देह, देश, वंश, परिवार, ५ अर्थ हैं] ॥

४ ['एककुण्डलः' (पु) के बलभद्र, कुबेर, २ अर्थ हैं] ॥

५ ['हेला' (स्त्री) के स्त्रीका भाव-विशेष; अवज्ञा, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['हेलिः' (पु) के सूर्य, आलिङ्गन, २ अर्थ हैं] ॥

७ ['हिलिः' (पु) के लड़ाई, भाव-सूचन, २ अर्थ हैं] ॥

८ ['हालः' (पु) के शालिवाहन (+ सातवाहन) राजा, १ अर्थ और + 'हाला' (स्त्री) का मदिरा, १ अर्थ है] ॥

९ ['दलम्' (न) के टुकड़ा, पत्ता, २ अर्थ हैं] ॥

१० ['तूलिः' (स्त्री) के चित्र बनानेकी कूँची, तोशक, २ अर्थ हैं] ॥

११ ['तुमुलम्' (न) का रण आदिमें जन-समूहादि से ठसाठस भरा हुआ, १ अर्थ और 'तुमुलः' (पु) का बहेड़ेका पेड़, १ अर्थ है] ॥

१२ ['शष्कुली' (स्त्री) के कर्णपाली, (कानका पर्दा), पूड़ी, २ अर्थ हैं] ॥

इति लान्ताः शब्दाः ।

अथ वान्ताः शब्दाः ।

१३ 'दवः, दावः' (२ पु) के वन, दावानल (लकड़ियोंकी रगड़से उत्पन्न हुई जङ्गलकी आग), २ अर्थ हैं ॥

—१ जन्महरौ भवौ ॥ २०६ ॥
२ मन्त्री सहायः सचिवौ ३ पतिशाखिनरा धवाः ।
४ अवयः शैलमेषार्का ५ आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ॥ २०७ ॥
६ भावः [१]सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ।
७ स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ॥ २०८ ॥
८ अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृतावपि निह्नवः ।
९ उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसरे मह उत्सवः ॥ २०९ ॥
१० अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये ।
११ स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये ॥ २१० ॥

---

१ 'भवः' (पु) के जन्म लेना, शिवजी, प्राप्ति, सत्ता, संसार, कल्याण, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'सचिवः' (पु) के मन्त्री (बुद्धि-सचिव), सहायक (कर्म-सचिव), २ अर्थ हैं ॥

३ 'धवः' (पु) के पति, धवका पेड़, नर, धूर्त, ४ अर्थ हैं ॥

४ 'अविः' (पु) के पहाड़, भेंड़ा, सूर्य, नाथ (स्वामी), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'हवः' (पु) के आज्ञा, पुकारना, यज्ञ ३ अर्थ हैं ॥

६ 'भावः' (पु) के सत्ता, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा, जन्म, वस्तु, क्रिया, लीला, विभूति, पण्डित, जन्तु, रतिवेग, १३ अर्थ हैं ॥

७ 'प्रसवः' (पु) के उत्पत्ति, फल, फूल, गर्भसे पैदा होना, सन्तान, ५ अर्थ हैं ॥

८ 'निह्नवः' (पु) के अविश्वास, व्यर्थ बोलना (बकना), शठता, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'उत्सवः' (पु) के उन्नति, क्रोध, इच्छाका वेग, आनन्दका अवसर (विवाह आदि उत्सव), ४ अर्थ हैं ॥

१० 'अनुभावः' (पु) के प्रभाव, सज्जनोंके ज्ञानका निर्णय, भाव-सूचन, ३ अर्थ हैं ॥

११ 'प्रभवः' (पु) के जन्मकारण (जैसे—पुत्रादिका जन्म कारण माता-पिता,······), प्रथम उपलब्धिका स्थान (जैसे—'गङ्गाप्रभवः हिमवान्' अर्थात् गङ्गाके प्रथमोपलब्धिका स्थान हिमालय है,·········), २ अर्थ हैं ॥

---

१. 'स्वत्वस्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु' इति पाठान्तरम् ।

१ शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे[1] पारशवो मतः ।
२ ध्रुवो भभेदे क्लीबं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ॥ २११ ॥
३ स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने ।
४ स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि[2] नीवी परिपणेऽपि च ॥ २१२ ॥
५ शिवा गौरीफेरवयो ६ द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ।
७ द्रव्यासुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ॥ २१३ ॥

---

१ 'पारशवः' (+पाराशवः । पु) के शूद्र जातिकी मातामें ब्राह्मण जातिके पितासे उत्पन्न सन्तान, परशु (फरसा, कुल्हाड़ी) अस्त्र, २ अर्थ हैं ॥

२ 'ध्रुवः' (पु) के ध्रुव तारा, वट, वसु, योग भेद, शिवजी, शङ्कु, कील, ७ अर्थ; 'ध्रुवम्' (न) का निश्चित (जैसे—ध्रुवं मूर्खोऽयम् ,.........), १ अर्थ और 'ध्रुवम्' (त्रि) के निरन्तर (जैसे—जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च (गीता २ । २७),......), तर्क, आकाश, ३ अर्थ हैं ॥

३ 'स्वः' (पु) के ज्ञाति (जाति, जैसे—दशमुखानीव भान्ति 'स्वाः', ...) आत्मा (जैसे—हृदि स्वमवलोकयन् ,......), २ अर्थ; 'स्वम्' (त्रि) का आत्मीय, १ अर्थ और 'स्वः' (पु न) का धन, १ अर्थ है । ('इस 'स्व' शब्दके ज्ञाति और धन अर्थमें 'राम' शब्दकी तरह और आत्मा और आत्मीय अर्थमें 'सर्व' शब्दकी तरह रूप [3]होते हैं') ॥

४ 'नीवी' (+नीविः । स्त्री) के फुफुती (स्त्रियोंके नाभिके नीचेवाली वस्त्र-ग्रन्थि) राजपुत्रादिके धनका अदल-बदल बनियोंका मूलधन, ३ अर्थ हैं ॥

५ 'शिवा' (स्त्री) के पार्वतीजी, सियारिन, स्यार, शमी वृक्ष, आँवला, भुँई आँवला ओषधि, ६ अर्थ हैं ॥

६ 'द्वन्द्वम्' (न । +पु) के लड़ाई, जोड़ी (युग्म, युगल), रहस्य, ३ अर्थ हैं ॥

७ 'सत्त्वम्' (न) के वस्तु, प्राण, अधिक पराक्रम होना, ३ अर्थ और 'सत्त्वम्' (न पु) का प्राणी १ अर्थ है ॥

---

१. 'पाराशवः पुमान्' इति पाठान्तरम् । २. 'नीविः' इति पाठान्तरम् ।

३. आत्मात्मीयार्थयोः स्वशब्दः 'स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्' (पा० सू० १।१।३५) इति सर्वनामसंज्ञकस्तेन 'सर्व'वद्रूपम् । ज्ञातिधनार्थयोस्तु सर्वनामसंज्ञाऽभावाद् रामशब्दवद्रूपमित्यवधेयम् ॥

१ [1]'क्लीबं नपुंसकं षण्ढे वाच्यलिङ्गमविक्रमे।
२ [2]'अत्यध्वगातिप्रणतौ प्राध्वौ प्राध्वं तु बन्धने' (८३)

इति वान्ताः शब्दाः।

अथ शान्ताः शब्दाः।

३ द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ ४ द्वौ चराभिमरौ स्पशौ॥ २४॥
५ द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ ६ द्वौ वंशौ कुलमस्करौ।
७ रहःप्रकाशौ वीकाशौ—

१ 'क्लीबम्' (न) का नपुंसक (हिजड़ा) १ अर्थ और 'क्लीबम्' (त्रि) का सामर्थ्यहीन, १ अर्थ है॥

२ ['प्राध्वः' (पु) के रास्ताको चलकर पूरा किया हुआ, अतिनम्र, २ अर्थ और 'प्राध्वम्' (न) का बन्धन, १ अर्थ है]॥

इति वान्ताः शब्दाः।

अथ शान्ताः शब्दाः।

३ 'विट्' (= विश पु) के वैश्य, मनुष्य, प्रवेश ३ अर्थ हैं॥

४ 'स्पशः' (पु) के दूत, युद्ध, २ अर्थ हैं॥

५ 'राशिः' (पु) के ढेरी, मेष आदि (१।१।२७ में उक्त) बारह राशि, २ अर्थ हैं॥

६ 'वंशः' (पु) के कुल (खान्दान), बाँस, संघ, पीठकी रीढ़ ४ अर्थ हैं॥

७ 'वीकाशः' (+ विकाशः। पु) के एकान्त, प्रकाश (स्पष्ट व्यक्त), २ अर्थ हैं॥

---

१. अयं (क्लीबशब्दः)ओष्ठ्योऽत्र भ्रमात्पठितः' इति भा० दी०, 'बवयोः सावर्ण्यादस्यात्र पाठः' इति महे० वचनं च चिन्त्यम्। 'कृपणक्षुद्रकक्लीबक्षुद्रा……' इति, क्लीबो वर्षवरः षण्ढः……इति, क्लीबो विक्रमहीनेऽपि……(अभि० रत्न० क्रमशः २।१९२, २।२७५, ५।२४) इति हलायुधात्, 'क्लीबोऽपौरुषषण्ढयोः' (अने० संग्र० २।५३२) इति वान्तप्रकरणहैमात् 'पापे क्लीबं नपुंसके षण्ढेऽन्यवदविक्रमे' इति मेदिन्याश्च वान्तस्यै (दन्त्यौष्ठ्यस्यै) व 'क्लीब' शब्दस्योपलब्ध्या सर्वेषां भ्रमकल्पनानौचित्यात्॥

२. 'अत्यध्वगा………बन्धने' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामेवोपलभ्यत इति प्रकृतोपयोगितया मूले क्षेपकत्वेन निहितः॥

—१ निर्वेशो भृतिभोगयोः ॥ २१५ ॥
२ कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ।
३ पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्या ४ त्कुशमप्सु च ॥ २१६ ॥
५ दशावस्थानेकविधाप्या ६ शा तृष्णापि चायता ।
७ वशा स्त्री करिणी च स्याद् ८ दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ॥ २१७ ॥
९ स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि ।
१० प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि—

१ 'निर्वेशः' (पु) के वेतन, उपभोग, २ अर्थ हैं ॥

२ 'कीनाशः' (पु) के यमराज, वानर, २ अर्थ और 'कीनाशः' (त्रि) के क्षुद्र, कर्षक (किसान), २ अर्थ हैं ॥

३ 'अपदेशः' (पु) के व्याज (बहाना । + स्थान), लक्ष्य, निमित्त ३ अर्थ हैं ॥

४ 'कुशम्' (न) का पानी, १ अर्थ और 'कुशः' (पु) के रामचन्द्रजी-का पुत्र, कुश, द्वीप, जोती (बैल आदिके गलेमें बांधनेके लिये जुवाठकी रस्सी), ४ अर्थ हैं ॥

५ 'दशा' (स्त्री) के अवस्था (दशा), अनेक तरह, दीपकी बत्ती, ३ अर्थ और 'दशाः' (स्त्री नि० ब० व०) का कपड़ेकी धारी (किनारी, दसी), १ अर्थ है ॥

६ 'आशा' (स्त्री) के तृष्णा (चाह, आशरा, उमीद), पूर्व आदि दिशा, २ अर्थ हैं ॥

७ 'वशा' (स्त्री) के स्त्री, हथिनी, बाँझ गौ, लड़की, वशमें रहनेवाली, ५ अर्थ हैं ॥

८ 'दृक्' (= दृश् स्त्री) के ज्ञान, नेत्र, बुद्धि, ३ अर्थ और 'दृक्' (= दृश् त्रि) का ज्ञाता (जाननेवाला), १ अर्थ है ॥

९ 'कर्कशः' (त्रि) के साहसी, कठोर, रूखा, दृढ, निर्दय, कृपाण, क्रूर, ७ अर्थ और 'कर्कशः' (पु) के तलवार, कबीला ओषधि, गन्ना, कासमर्द (गुल्मभेद महे० । + वेसवारभेद क्षी० स्वा० भा० दी०), ४ अर्थ हैं ॥······

१० 'प्रकाशः' (पु) के बहुत प्रसिद्ध, घाम, उजाला, हँसी, ४ अर्थ हैं ॥

—१ शिशावज्ञे च बालिशः ॥ २१८ ॥
२ [1]कोशोऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः (८४)
३ [2]नाशः क्षये तिरोधाने ४ जीवितेशः प्रिये यमे (८५)
५ नृशंसखड्गौ निस्त्रिंशा ६ वंशुः सूर्योंऽशवः कराः (८६)
७ आशुर्ना शालिशीघ्रार्थे ८ पाशो बन्धनशस्त्रयोः' (८७)

इति शान्ताः शब्दाः ।

अथ षान्ताः शब्दाः ।

९ सुरमत्स्यावनिमिषौ १० पुरुषावात्ममानवौ ।

---

१ 'बालिशः' (पु) के बालक, मूर्ख, २ अर्थ हैं ॥

२ ['कोशः' (पु न) के फूलकी कोंढ़ी (कलिका), तलवार की म्यान, खज़ाना, दिव्य (शपथ-भेद), अर्थ हैं] ॥

३ ['नाशः' (पु) के क्षय, अन्तर्धान (छिपना), २ अर्थ हैं] ॥

४ ['जीवितेशः' (पु) के प्रिय (पति आदि), यमराज, २ अर्थ हैं] ॥

५ ['निस्त्रिंश' (पु) के क्रूर, तलवार, २ अर्थ हैं] ॥

६ ['अंशुः' (पु) के सूर्य, किरण, सूत आदिका पतला हिस्सा, ३ अर्थ हैं] ॥

७ ['आशु' (न) के व्रीहि (धान्य-भेद), शीघ्र, २ अर्थ हैं] ॥

८ ['पाशः' (पु) के बन्धन, वरुणका हथियार या फाँस, २ अर्थ हैं] ॥

इति शान्ताः शब्दाः ।

अथ षान्ताः शब्दाः ।

९ 'अनिमिषः' (पु) के देवता, मछली, २ अर्थ हैं ॥

१० 'पुरुषः' (पु) के क्षेत्रज्ञ (ज्ञानी), मनुष्य (पुरुष), पुन्नाग वृक्ष, ३ अर्थ हैं ॥

---

१. 'कोशो······दिव्ययोः' इत्ययमंशः मा० दी० क्षी० स्वा० मूलपुस्तके नोपलभ्यते नापि ताभ्यां व्याख्यातः, क्षी० स्वा० व्याख्याने दुर्गवचनत्वेन समुपलभ्यते । महे० मूले व्याख्यायां च समुपलभ्यते ॥

२. 'नाशः······शस्त्रयोः' इत्यंशः क्षी० स्वा० व्याख्याने दुर्गवचनत्वेनोपलभ्यमानः प्रकृतोपयोगितयाऽत्र क्षेपकत्वेन स्थापितः ॥

१ काकमत्स्यात्खगौ ध्वाङ्क्षौ २ कक्षौ तु तृणवीरुधौ ॥ २१९ ॥
३ अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ ४ प्रैषः प्रेषणमर्दने ।
५ पक्षः[1] सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः ॥ २२० ॥
७ शुक्ले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः ।
८ [2]कोषोऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः ॥ २२१ ॥
९ द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षो१०ऽथाक्षमिन्द्रिये ।
ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ॥ २२२ ॥

१ 'ध्वाङ्क्षः' (पु) के कौआ, मछलीको खानेवाला पक्षी (बगुला), भिक्षुक, तक्षक सर्प, कपासके बीज निकालनेका यन्त्र-विशेष, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'कक्षः' (पु) के घास, लता, काँख जङ्गल, ४ अर्थ हैं ॥

३ 'अभीषुः' (+ अभीशुः । पु) के रस्सी (घोड़े आदिका बागडोर), किरण, २ अर्थ हैं ॥

४ 'प्रैषः' (+ प्रेषः । पु) के भेजना, पीडा, २ अर्थ हैं ॥

५ 'पक्षः' (पु) के सहाय, पखवारा (आधा महीना अर्थात् कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष), पार्श्व, ग्रह, साध्य, अवरोध, केश आदिसे परे (आगे) रहनेपर समूह (जैसे—केशपक्षः, काकपक्षः,.........), बल, मित्र, पंख, रुचि विकल्पित (जैसे—भवदीयः पक्षः, अस्मदीयः पक्षः,......), १२ अर्थ हैं ॥

६ 'उष्णीषः' (पु । + न) के पगड़ी, किरीट (मुकुट) २ अर्थ हैं ॥

७ 'वृषः' (पु) के बहुत पराक्रमवाला (+ अण्डकोश), चूहा, श्रेष्ठ, धर्म, वृष नामका दूसरा राशि, बैल, ६ अर्थ हैं ॥

८ 'कोषः' (+ कोशः, पु न) के फूलकी बिना खिली हुई कली (कोंढ़ी), तलवारकी म्यान, खजाना दिव्य (शपथ-भेद), ४ अर्थ हैं ॥

९ 'आकर्षः' (पु) के जुआ, जुआ खेलनेका पाशा, सतरंज आदि खेलने की बिसात, (कपड़ा या पटरी आदि), खींचना, इन्द्रिय, ५ अर्थ हैं ॥

१० 'अक्षम्' (न) के इन्द्रिय, तूतिया, सोचरखार, ३ अर्थ और 'अक्षः'

१. 'सहायेऽप्युष्णीषं' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'कोषो ......दिव्य योः' इत्ययमर्धोऽशो महे० पुस्तके नोपलभ्यते नापि तेन व्याख्यातः ह क्षी० स्वा० मा० दी० मूलेलभ्यते व्याख्यातश्च ताभ्याम् ॥

१ कर्षूर्वार्ता करीषाग्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनी।
२ पुंभावे तत्क्रियायां च पौरुषं ३ विषमप्सु च ॥ २२३ ॥
४ उपादानेऽप्यामिषं स्या ५ दपराधेऽपि [1]किल्बिषम्।
६ स्याद् वृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ॥ २२४ ॥
७ प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा ८ भिक्षा सेवाऽर्थना भृतिः।
९ त्विट् शोभाऽपि १० त्रिषु परे ११ न्यक्षं कार्त्स्न्यनिकृष्टयोः ॥२२५॥

(पु) के जुआ खेलनेका पाशा, कर्ष (सोलह मासा, प्रमाण-विशेष), पहिया, बहेड़ा, व्यवहार (आय व्ययका विचार अर्थात् लेन देन), ५ अर्थ हैं ॥

१ 'कर्षूः' (पु) का खेती (जीविका), उपला (गोहरा, गोइंठा) का अङ्गार, २ अर्थ और 'कर्षूः' (स्त्री) का नहर, १ अर्थ है।

२ 'पौरुषम्' (न) के पुरुषका भाव, पुरुषका कर्म (पुरुषार्थ), तेज ३ अर्थ और 'पौरुषम्' (त्रि) का पोरसा (हाथ उठाये हुए मनुष्यके साढ़े चार हाथका प्रमाण विशेष) १ अर्थ है ॥

३ 'विषम्' (न) के जल, जहर, २ अर्थ हैं ॥

४ 'आमिषम्' (न पु) के उपादान (घूस, रिश्वत), भोग्य वस्तु, संभोग, मांस, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'किल्बिषम्' (+ किल्मिषम् । न) के अपराध, पाप, रोग, ३ अर्थ हैं ॥

६ 'वर्षम्' (पु न) के वर्षा, जम्बूद्वीपके खण्ड (१ । १ । ६ में उक्त भारत आदि नव वर्ष), वर्ष (साल), ३ अर्थ और 'वर्षाः' (स्त्री नि० ब० व०) का वर्षा ऋतु, १ अर्थ है ॥

७ 'प्रेक्षा' (स्त्री) के नाच, देखना (+ नाच देखना), बुद्धि, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'भिक्षा' (स्त्री) के सेवा, याचना, वेतन, भिक्षा में मिला हुआ पदार्थ, ४ अर्थ हैं ॥

९ 'त्विट्' (= त्विष् स्त्री) के शोभा, वचन, तेज, ३ अर्थ हैं ॥

१० यहांसे आगे सब षकारान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

११ 'न्यक्षम्' (त्रि) के साकल्य, नीच, २ अर्थ 'न्यक्षः' (पु) का परशुराम, १ अर्थ है।

१. 'किल्मिषम्' इति पाठान्तरम्।

१ प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो २ रूक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिक्कणे ।
३ [1]व्याजसंख्याशरव्येषु लक्षं ४ घोषो रवव्रजौ (८८)
५ कपिशीर्षं भित्तिशृङ्गे ६ऽनुतर्षश्चषकः सुरा (८९)
७ दोषो वातादिके दोषा रात्रौ ८ दक्षोऽपि कुक्कुटे (९०)
९ शुण्डाग्रभागे गण्डूषो द्वयोश्च मुखपूरणे' (९१)

इति षान्ताः शब्दाः ।

अथ सान्ताः शब्दाः ।

१० रविश्वेतच्छदौ हंसौ—

---

१ 'अध्यक्षः' (त्रि) के प्रत्यक्ष, अधिकारी (मालिक,) २ अर्थ हैं ॥

२ 'रूक्षः' (त्रि) के प्रेमरहित, रूखा, २ अर्थ हैं ॥

३ ['लक्षम्' (न) के व्याज, लाख संख्या, निशाना, ३ अर्थ हैं] ॥

४ ['घोषः' (पु) के शब्द (हल्ला, आवाज़), अहीरोंके रहनेका स्थान, २ अर्थ हैं] ॥

५ ['कपिशीर्षम्' (न) के दिवालका ऊपरी भाग, शृङ्ग, अर्थ हैं] ॥

६ ['अनुतर्षः' (पु) के मदिरा पीनेका प्याला, मदिरा, अभिलाषा, तृष्णा, ४ अर्थ हैं] ॥

७ ['दोषः' (पु) के वात आदि (पित्त, कफ) तीन दोष, दोष (अपराध), २ अर्थ और 'दोषा' (अव्य०) का रात, १ अर्थ है] ॥

८ ['दक्षः' (पु) का मुर्गा, १ अर्थ और 'दक्षः' (त्रि) का चतुर, १ अर्थ है ॥

९ ['गण्डूषः' (पु) के हाथीके सूंड़का आगेवाला भाग, १ अर्थ और 'गण्डूषः' (पु स्त्री) का कुल्ला (मुखमें पानी भरना), १ अर्थ है] ॥

इति षान्ताः शब्दाः ।

अथ सान्ताः शब्दाः ।

१० 'हंसः' (पु) के सूर्य, हंस पक्षी, [2] योगि-भेद, ३ अर्थ हैं ॥

---

१. 'व्याज……मुखपूरणे' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्यायामुपलभ्यमानः प्रकृतोपयोगितया मूले क्षेपकत्वेन स्थापितः ॥

२. तदुक्तम्—'कुटीचको बहूदको हंसश्चैव तृतीयकः ।
चतुर्थो परमो हंसो योग्यः पश्चात्स उत्तमः' ॥ इति हारीतः ॥

—१ सूर्यवह्नी विभावसू ॥ २२६ ॥
२ वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ ३ सारङ्गाश्च दिवौकसः ।
४ शृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ॥ २२७ ॥
५ पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ।
६ देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने धने वसु ॥ २२८ ॥
७ विष्णौ च वेधाः ८ स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः ।
९ लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये १० हिंसा चौर्यादिकर्म च ॥ २२९ ॥

१ 'विभावसुः' (पु) के सूर्य, अग्नि, २ अर्थ हैं ॥

२ 'वत्सः' (पु) के गौका बछुवा या पुत्र आदि (बच्चा), वर्ष, २ अर्थ और 'वत्सम्' (न) का छाती, १ अर्थ है ॥

३ 'दिवौकसः' (= दिवौकस् पु) के चातक पक्षी, देवता, २ अर्थ हैं ॥

४ 'रसः' (पु) के शृङ्गार आदि (१।७।१७ में उक्त) नव रस, विष, वीर्य, कसाव आदि (१।५।९ में उक्त) छ रस, राग (जैसे—रसिकस्त-रुणः,······), पिघलना, पारा, जल, स्वाद, ९ अर्थ हैं ॥

५ 'उत्तंसः, अवतंसः' (२ पु) के कानका भूषण, भूषणमात्र, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वसुः' (पु) के धर आदि आठ वसु (१ धर, २ ध्रुव, ३ सोम, ४ अहन् (दिन), ५ वायु, ६ अग्नि, ७ प्रत्यूष, ८ प्रभास; ये आठ वसु[1] हैं), अग्नि, किरण, राजा, जोती (जुआठमें बंधी हुई बैल के गले में बांधने की रस्सी), ५ अर्थ; 'वसु' (न) के रत्न, धन, वृद्धि औषध, स्वर्ण, ४ अर्थ और 'वसुः' (त्रि) का मधुर, १ अर्थ है ॥

७ 'वेधाः' (=वेधस् पु) के विष्णु, ब्रह्मा, पण्डित. ३ अर्थ हैं ॥

८ 'आशीः' (= आशिस् स्त्री) के आशीर्वाद, सर्पका दाँत, २ अर्थ हैं ॥

९ 'लालसा' (स्त्री) के प्रार्थना, उत्सुकता, अधिक चाह, याचना, ४ अर्थ हैं ॥

१० 'हिंसा' (स्त्री) के चोरी आदि (बांधना, कराना) बुरा काम, मारना, २ अर्थ हैं ॥

---

१. तदुक्तम्—'धरो ध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवानिलोऽनलः ।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टाविति स्मृताः' ॥ १ ॥
इति भा० आ० ६६०—' इति वाचस्पत्य० पृ० ४८९१ ॥

१ प्रसूरश्वापि २ भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते ।
३ ज्वालाभासौ न पुंस्यर्चिः४ज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु ॥ २३० ॥
५ पापापराधयोरागः ६ खगबाल्यादिनोर्वयः ।
७ तेजः पुरीषयोर्वर्चो ८ महस्तूत्सवतेजसोः ॥ २३१ ॥
९ रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे१०राहौ ध्वान्ते गुणे तमः ।
११ छन्दः पद्येऽभिलाषे च१२तपः कृच्छ्रादिकर्म च ॥ २३२ ॥
१३ सहो बलं सहा मार्गो—

---

१ 'प्रसूः' (स्त्री) के घोड़ी, माता, केला, लता, ४ अर्थ हैं ॥

२ 'रोदस्यौ' (=रोदसी स्त्री), 'रोदसी' (= रोदस् न । २ नि० द्विव) का, जमीन-आसमान, १ अर्थ है ॥

३ 'अर्चिः' (= अर्चिस् स्त्री न) के ज्वाला, किरण या कान्ति, २ अर्थ हैं ॥

४ 'ज्योतिः' (= ज्योतिस् न) के नक्षत्र, प्रकाश, दृष्टि, ज्योतिष शास्त्र, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'आगः' (= आगस् न) के पाप, अपराध, २ अर्थ हैं ॥

६ 'वयः' (= वयस् न) के चिड़िया, अवस्था (बाल्य, यौवन, वार्द्धक्य आदि), २ अर्थ हैं ॥

७ 'वर्चः' (= वर्चस् न) के तेज, विट् (मैला, पाखाना), रूप, ३ अर्थ हैं ॥

८ 'महः' (= महस् न । + महः = मह पु) के उत्सव, तेज, २ अर्थ हैं ॥

९ 'रजः' (= रजस् न । + रजः = रज पु) के रजोगुण, स्त्रीका मासिक आर्तव, २ अर्थ हैं ॥

१० 'तमाः' (= तमस् पु) का राहु ग्रह, १ अर्थ और 'तमः' (तमस् न) के अन्धकार, तमोगुण, शोक (मोह, मूर्च्छा), ३ अर्थ हैं ॥

११ 'छन्दः' (= छन्दस् न), पद्य (श्लोक आदि), अभिलाषा, वेद, स्वच्छन्दता, ४ अर्थ हैं ॥

१२ 'तपः' (= तपस् न) का तपस्या (कृच्छ्र, चान्द्रायण आदि कठिनव्रत), तपोलोक, धर्म, ३ अर्थ 'तपाः' (पु) के माघ महीना, शिशिर ऋतु, २ अर्थ हैं ॥

१३ 'सहः' (= सहस् न) के बल, ज्योतिष्, २ अर्थ और 'सहाः' (= सहस् पु) के मार्ग (अगहन) महीना, हेमन्त ऋतु, २ अर्थ हैं ॥

—१ नभः खं श्रावणो नभाः ।
२ ओकः सद्माश्रयश्चौकाः ३ पयः क्षीरं पयोऽम्बु च ॥ २३३ ॥
४ ओजो दीप्तौ बले ५ स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये ।
६ तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेऽप्य७तस्त्रिषु ॥ २३४ ॥
८ विद्वान्विदंश्च९बीभत्सो हिंस्रोऽप्य१०तिशये त्वमी ।
वृद्धप्रशस्ययोर्ज्यायान्—

---

१ 'नभः' (= नभस् न) का आकाश, १ अर्थ और 'नभाः' (= नभस् पु) के श्रावण महीना, मेघ (बादल), पिकदान (उगलदान), नाक, मृणालसूत्र, वर्षा ऋतु, ६ अर्थ हैं ॥

२ 'ओकः' (= ओकस् । न + ओकः = ओक पु) का मकान, १ अर्थ और 'ओकाः' (= ओकस् पु) का आश्रयमात्र, १ अर्थ है ॥

३ 'पयः' (= पयस् न) के दूध, पानी, २ अर्थ हैं ॥

४ 'ओजः' (= ओकस् न) के दीप्ति, बल, प्रकाश (उजाला), ३ अर्थ हैं ॥

५ 'स्रोतः' (= स्रोतस् न) के इन्द्रिय, सोत (नदी आदिका बहाव), २ अर्थ हैं ॥

६ 'तेजः' (= तेजस् न) के प्रभाव, दीप्ति, बल, वीर्य (मनुष्यका शरीरस्थ धातु), [1]असहन, ५ अर्थ हैं ॥

७ यहांसे आगे सब सकारान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥

८ 'विद्वान्' (= विद्वस् त्रि) के पण्डित, आत्मज्ञानी, प्राज्ञ, ३ अर्थ हैं ॥

९ 'बीभत्सः' (त्रि) के हिंसक या क्रूर, भयङ्कर (डरावना), २ अर्थ और 'बीभत्सः' (पु) के बीभत्स रस ('यह पृ० ७३ में उक्त शृङ्गार आदि नवरसों के अन्तर्गत है'), १ अर्थ है ॥

१० 'ज्यायान्' (= ज्यायस् त्रि) के अत्यन्त बूढा, बहुत प्रशंसा करने योग्य, २ अर्थ हैं ॥

---

१. तदुक्तं साहित्यदर्पणे विश्वनाथेन—

'अधिक्षेपापमानादेः प्रयुक्तस्य परेण यत् ।
प्राणात्ययेऽप्यसहनं तत्तेजः समुदाहृतम्' ॥ १ ॥

इति सा० द० ३ । ९७ ॥

—१ कनीयांस्तु युवाल्पयोः ॥ २३५ ॥

२ वरीयांस्तूरुवरयोः ३ साधीयान्साधुबाढयोः।

इति सान्ताः शब्दाः।

अथ हान्ताः शब्दाः।

४ दलेऽपि बर्हं ५ निर्बन्धोपरागार्कादयो ग्रहाः ॥ २३६ ॥

६ द्वार्यापीडे क्वाथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके।

७ तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहोऽपि च ॥ २३७ ॥

८ पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः।

९ दारेषु च गृहाः—

---

१ 'कनीयान्' (= कनीयस् त्रि) के बहुत युवा, बहुत छोटा, २ अर्थ हैं ॥

२ 'वरीयान्' (= वरीयस् त्रि) के बहुत बड़ा, बहुत श्रेष्ठ, २ अर्थ हैं ॥

३ 'साधीयान्' (= साधीयस् त्रि) के बहुत साधु (अच्छा), बहुत ज्यादा, २ अर्थ हैं ॥

इति सान्ताः शब्दाः।

अथ हान्ताः शब्दाः।

४ 'बर्हम्' (न पु) के पत्ता, मोरका पंख, २ अर्थ हैं ॥

५ 'ग्रहः' (पु) के ग्रहण करना, सूर्य-चन्द्र-ग्रहण, सूर्य आदि ग्रह (सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु ये नव 'ग्रह'[1] हैं), ३ अर्थ हैं ॥

६ 'निर्व्यूहः' (पु) के द्वार, शिखा या चोटीमें बाँधनेकी माला, काढ़ेका रस, खूंटी, ४ अर्थ हैं ॥

७ 'प्रग्रहः, प्रग्राहः' (२ पु) के तर्जी (तराजूके दण्डीकी रस्सी), घोड़े आदिका बागडोर या लगाम, २ अर्थ हैं ॥

८ 'परिग्रहः' (पु) के पत्नी (स्त्री), परिजन, लेना, वृक्षादिकी जड़, शाप या शपथ, राहुग्रस्त सूर्य, ६ अर्थ हैं ॥

९ 'गृहाः' (नि० पु० ब० व०) का स्त्री, १ अर्थ और 'गृहम्' (न पु) का घर, १ अर्थ है ॥

---

१. तदुक्तम्—'सूर्यश्चन्द्रो मङ्गलश्च बुधश्चापि बृहस्पतिः।
शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति नव ग्रहाः ॥ १ ॥ इति वाचस्प० पृ० २७४५ ॥

—१ श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ॥ २३८ ॥
२ व्यूहो वृन्देऽप्य३हिर्वृत्रेऽप्य४ग्नीन्द्वर्कास्तमोपहाः ।
५ परिच्छदे नृपार्हेऽर्थे परिबर्हः—

इति हान्ताः शब्दाः ।

अथाव्ययाः शब्दाः ।

—६ अव्ययाः परे ॥ २३९ ॥
७ आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ।
८ आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽ९प्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ॥ २४० ॥

---

१ 'आरोहः' (पु) के स्त्रीकी कमर या चूतड़, पहाड़ आदिपर चढ़ना, पेड़ आदिकी ऊँचाई, ३ अर्थ हैं ॥

२ 'व्यूहः' (पु) के समूह, सेनाकी स्थिति विशेष, तर्क, बनावट (रचना), ४ अर्थ हैं ॥

३ 'अहिः' (पु) के वृत्रासुर, साँप, २ अर्थ हैं ॥

४ 'तमोपहः' (पु) के अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, जिन, ४ अर्थ हैं ॥

५ 'परिबर्हः' (पु) के सामग्री, राजाका छत्र-चामर आदि चिह्न, धन, ३ अर्थ हैं ॥

इति हान्ताः शब्दाः ।

अथाव्ययाः शब्दाः ।

६ यहाँसे आगे नानार्थवर्गके अन्ततक सब शब्द अव्यय हैं ॥

७ 'आङ्' के थोड़ा, अभिव्याप्ति (व्याप्तकर), सीमा (हद), धातु-योगसे उत्पन्न अर्थ, ४ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदाहरण—१ आपिङ्गलः, २ आरत्नगात्, ३ आसमुद्रं क्षितीशानाम् (रघु० १।५), ४ आक्रामति,…') ॥

८ 'आ' (इसकी प्रगृह्यसंज्ञा[1] होती है) के स्मरण, वाक्य, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ आ एवं नु मन्यसे, २ आ एवं किल तत ,………') ॥

९ 'आः' के कोप, पीड़ा, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदाहरण—१ आः पाप ! एकम् अधुनापि प्रलपसि, २ आः शीतम् ,………') ॥

---

१. 'निपात एकाजनाङ्' (पा० सू० १।१।१४) इति सूत्रेणाङ्भिन्नस्य आ' इत्यस्यैव प्रगृह्य संज्ञा विधीयते । तस्यां च तस्यां वक्ष्यमाणटीकोक्तोदाहरणद्वये 'वृद्धिरेचि' (पा०सू० ६।१।८८) इति सूत्रेण वृद्धिर्न भवति, किन्तु 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' (पा० सू० ६।१।१२५) इति प्रकृतिभाव एवेति प्रगृह्यसंज्ञाफलमित्यवधेयम् ॥

१ पापकुत्सेषदर्थे कु २ धिङ् निर्भर्त्सननिन्दयोः ।
३ चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये ॥ २४१ ॥
४ स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादौ ५ प्रकर्षे लङ्घनेऽप्यति ।
६ स्वित्प्रश्ने च वितर्के च ७ तु स्याद्भेदेऽवधारणे ॥ २४२ ॥

---

१ 'कु' के पाप, कुत्सा (निन्दा), थोड़ा, ३ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०— १ कुकृत्यम् , कुकर्म, २ कुभार्योऽयम् , ३ कोष्णम्.........') ॥

२ 'धिक्' के धमकाना निन्दा, २ अर्थ हैं । (क्रमशः उदा०—१ धिक् त्वां शासनार्हं विस्मृतार्थम् , धिक् तार्किकान् , २ धिग् वारवधूगामिनं त्वाम् ,.........') ॥

३ 'च' के अन्वाचय (जहां दो कामोंमें-से एक काम अप्रधान हो वह), समाहार (समूह) इतरेतरयोग (एकाधिकका आपसमें मिल जाना), समुच्चय (परस्पर निरपेक्ष क्रियाओंका आपसमें अन्वय होना), विनियोग, तुल्ययोगिता, कारण, ७ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ भिक्षामट गाश्चानय, २ पाणी च पादौ च पाणिपादम् , संज्ञा च परिभाषा च संज्ञापरिभाषम् , ३ धवश्च खदिरश्च धवखदिरौ हरिश्च हरश्च हरिहरौ, ४ ईश्वरं च गुरुं च भजस्व, पठति पचति च मैत्रः, ५ अहं च त्वं च वृत्रहन्त्संयुज्याव सनिभ्य आ (निरु० १।४।११), ६ ध्यातश्चोपस्थितश्च, ७ ग्रामश्च गन्तव्यः आतपश्च अर्थात् आतपात्कथं ग्रामो गम्यते,.........) ॥

४ 'स्वस्ति' के आशीर्वाद, कल्याण, पुण्य, मङ्गल, ४ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ स्वस्ति भवद्भ्यः, २ स्वस्ति प्रजाभ्यः, स्वस्ति गच्छ, ३ स्वस्तिमान् स्वर्गमाप्नोति, स्वस्ति काममिदं तव, ४ स्वस्ति श्रीकुसुमपुरात्-(मुद्रा०),...' ॥

५ 'अति' के प्रकर्ष (अतिशय), लङ्घन, २ अर्थ हैं । (क्रमशः उदा०— १ अत्युत्तमं भोजनम् , २ मर्यादामतिक्रामसि कुरुः,.........') ॥

६ 'स्वित्' के प्रश्न, वितर्क, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ किं स्विन्मङ्गलमस्ति तावकगृहे, २ अधः स्विदासीदुपरि स्विदासीत् ,......') ॥

७ 'तु' के भेद (कमी-वेशी), निश्चय, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०— १ क्षीरान्मांसं तु पुष्टिकृत् , २ भीमस्तु पाण्डवानां रौद्रः, भोजनं तु रुचिप्रियम् ....)' ॥

१ सकृत् सहैकवारे २ चाप्यारराद्-दूरसमीपयोः ।
३ प्रतीच्यां चरमे पश्चा४दुताप्यर्थविकल्पयोः ॥ २४३ ॥
४ पुनः सहार्थयोः शश्वत् ६ साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ।
७ खेदानुकम्पासंतोषविस्मयामन्त्रणे [1]वत ॥ २४४ ॥

१ 'सकृत्' के साथ, एक बार सर्वदा, ३ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०— १ 'सकृद्गच्छन्ति बालकाः' सह गच्छन्तीत्यर्थः, २ सकृदध्ययनाद्विस्मर्यते पाठः, ३ 'सकृद्युवानो गीर्वाणाः' देवाः सदा युवानो भवन्तीत्यर्थः,······') ॥

२ 'आरात्' के दूर, समीप, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ आराद् दुर्जनसंसर्गात्त्याज्यः श्रेयोऽभिलाषुकैः, २ 'सज्जार्थं स्थापयेदारात्' समीपे स्थापयेदित्यर्थः, ······') ॥

३ 'पश्चात्' के पश्चिम दिशा, अन्तिम, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०— १ पश्चादस्तमितो रविः, पश्चादस्ताद्रिः' पश्चिम इत्यर्थः, पश्चाद्गच्छति······') ॥

४ 'उत' के समुच्चय, प्रश्न, विकल्प, वितर्क, ४ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ उत भीम उतार्जुनः, २ उत दण्डः पतिष्यति, ३ उत पर्वतं भिन्द्यात्, उत त्रुट्येद्वज्रः, ४ स्थाणुरुत पुरुषः,······') ॥

५ 'शश्वत्' के बारम्बार, साथ, नित्य (सदा), ३ अर्थ हैं। (क्रमशः उदा०—१ 'शश्वद्गच्छति' अनेकवारं गच्छतीत्यर्थः, २ शश्वद्भुञ्जते, ३ शाश्वतं वैरम् ,······') ॥

६ 'साक्षात्' के प्रत्यक्ष (सामने), तुल्य, २ अर्थ हैं। (क्रमशः उदा०—१ साक्षात्पश्यति परमात्मानं योगीश्वरः, २ 'इयं साक्षाद्रमा' लक्ष्मीतुल्येत्यर्थः,······') ॥

७ 'वत' (+ बत) के खेद, अनुकम्पा (दया), सन्तोष, विस्मय, आमन्त्रण, ५ अर्थ हैं। (क्रमशः उदा०—१ अहो बत महद्दुःखम् , २ बत निःस्वोऽसि त्वम् , ३ बत पवित्राकिञ्चिवः, बत प्राप्ता सीता, अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः (कु० सं० ३।२०), अहो बतायं ध्रुव आप देशम् , बत वितरत तोयं तोयवाहा नितान्तरम् , एहि बत सौम्य,······') ॥

१. 'बत' इति पाठान्तरम् ॥

१ हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः ।
२ प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः ॥ २४५ ॥
३ इति [1]हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु ।
४ प्राच्यां पुरस्तात् प्रथमे पुरार्थेऽग्रत इत्यपि ॥ २४६ ॥
५ यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मानेऽवधारणे ।

---

१ 'हन्त' के हर्ष, दया, वाक्यारम्भ, विषाद, ४ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ हन्त जीवामो वयम् , २ हन्त दीनो रक्षणीयः, ३ हन्त ते कथयिष्यामि (गीता १०।१९), ४ हन्त जातमजातारेः प्रथमेन त्वयारिणा (शिशु० वध २।१०१),………') ॥

२ 'प्रति' प्रतिनिधि, वीप्सा (व्याप्त करनेकी इच्छा), लक्षण, 'आदि' से—इत्थंभूताख्यान, भाग, प्रतिदान, ६ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अभिमन्युरर्जुनं प्रति, अभिमन्युं प्रति परीक्षित् , २ तीर्थं तीर्थं प्रति याति, वृक्षं वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत्, ३ वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत् , ४ साधुर्देवदत्तो मातरं प्रति, ५ यदत्र मां प्रति स्यात्तद्दीयताम् , ६ माषानस्मै तिलेभ्यः प्रति प्रयच्छति,……') ॥

३ 'इति' के हेतु, प्रकरण, प्रकाश (+प्रकर्ष), 'आदि' से—इस तरह, समाप्ति, विवक्षा, नियम, स्वरूप, ७ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ हन्तीति पलायते, २ गौरश्वो हस्तीति जातिः, ३ 'इति पाणिनिः' पाणिनिलोके प्रकाश इत्यर्थः, ४ क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः (शिशु०वध १।३), ५ धर्ममाचरेदिति, अ अ इति (पा० सू० ८।४।६८), ६ तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् (पा० सू० ५।२।९४), ७ वृद्धिरित्येव या सा वृद्धिः,……') ॥

४ 'पुरस्तात्' के पूर्व दिशा, पहले (प्रथम), बीता हुआ (भूतकाल), पहले (आगे), ४ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ पुरस्ताद् द्वारम् पूर्वस्यां दिशीत्यर्थः, २ पुरस्ताद्भुङ्क्ते प्रथमं भुङ्क्त इत्यर्थः, ३ पुरस्ताद्रामोऽभूत् , ४ पित्रोः पुरस्तात् क्रीडति शिशुः,……') ॥

५ 'यावत् , तावत्' के साकल्य (जितना, उतना), अवधि (हद), प्रमाण, अवधारण (निश्चय), ४ अर्थ हैं । ('दोनोंके क्रमशः उदा०—१ मम

---

१. 'हेतुप्रकरणप्रकर्षादिसमाप्तिषु' इति पाठान्तरम् ॥

१ मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथो अथ ॥ २५७ ॥
२ वृथा निरर्थकाविध्योः ३ नानाऽनेकोभयार्थयोः ।
४ नु पृच्छायां विकल्पे च ५ पश्चात्सादृश्ययोरनु ॥ २५८ ॥

यावत्कार्यमस्ति तावत्कुरु, यावदध्यापितं तावत्पठितम्, २ यावद्गन्ता तावत्तिष्ठ, ३ यावत्सुवर्णं तावद्दत्तम्, यावद्दत्तं तावद्भुक्तम्, ४ यावदमत्रं ब्राह्मणानामामन्त्रयस्व,……') ॥

१ 'अथो, अथ' के[1] मङ्गल, अनन्तर (बाद), आरम्भ, प्रश्न, कार्त्स्न्य, अधिकार, प्रतिज्ञा, अन्वादेश (एक बार कहे हुएको फिर कहना), समुच्चय, ९ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ अथ परस्मैपदानि, अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (ब्र० सू० १।१।१), २ स्नानं कृत्वाऽथ भुञ्जीत, ३ अथ शब्दानुशासनम् पात० भा० १।१ आह्नि० १ पस्प०), ४ अथ वक्तुं समर्थोऽस्त्वम्, ५ अथ क्रतून् ब्रूमः, ६ अथ स्नानविधिः, ७ गौडो भवानथेति ब्रूमः, ८ अथो इमं वेदमध्यापय अथो एनं छन्दोऽपि, ९ अथो खल्वाहुः, भीमोऽथार्जुनः,……') ॥

२ 'वृथा' के व्यर्थ (निष्फल), अविधि (विधिसे हीन), २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ वृथा दुग्धोऽनड्वान्, २ प्रतिभाव्यं वृथा दानमाक्षिकं सौरिकं च यत् (मनुः ८।१५९),……') ॥

३ 'नाना' के अनेक (बहुत), उभय, विना, ३ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ नानाविधाः पुरुषाः, २ नानाविधं न सज्जेत, नानापक्षावमर्शः संशयः, ३ 'नाना नारीं निष्फला लोकयात्रा' नारीं विना लोकयात्रा निष्फला भवतीत्यर्थः,……') ॥

४ 'नु' के प्रश्न, विकल्प, वितर्क, ३ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ को नु धावति, को नु भवान्, २ भीमो नु फाल्गुनो नु योद्धा, देवदत्तो नु यज्ञदत्तो नु पण्डितः, ३ स्थाणुर्नु पुरुषो नु, अहिर्नु रज्जुर्नु,……') ॥

५ 'अनु' के पश्चात् (बाद), सादृश्य (समानता), लक्षण, तत्त्वाख्यान, भाग, वीप्सा, लम्बाई, ७ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ राममनुगच्छति लक्ष्मणः, २ पितरमनुकरोति बालः, ३ वृक्षमनुद्योतते, ४ साधु देवदत्तो मातरमनु, ५ यदत्र मामनु स्यात्तद्दीयताम्, ६ वृक्षं वृक्षमनुसिञ्चति, ७ अनुगङ्गं काशी,……') ॥

१. 'ओंकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा। कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ'॥ १॥
इत्यभियुक्तोक्त्या 'अथ' शब्दस्य माङ्गलिकत्वम् ॥

१ प्रश्नावधारणानुज्ञाऽनुनयामन्त्रणे ननु ।
२ गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासम्भावनास्वपि ॥ २४९ ॥
३ उपमायां विकल्पे वा ४ सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ।
५ अमा सह समीपे च ६ कं वारिणि च मूर्धनि ॥ २५० ॥

---

१ 'ननु' के प्रश्न, अवधारण, अनुज्ञा (आज्ञा), आमन्त्रण, वाक्यारम्भ, आक्षेप प्रत्युक्ति (प्रत्युत्तर, जवाब), ७ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ ननु पठति छात्रः, २ नन्वद्य गच्छामो वयम् , ३ नन्वादिश, ४ ननु चण्डि प्रसीद मे, ५ नन्वपोहः प्रसूयते, ६ ननु किमर्थमागतस्त्वम् , अकार्षीः गृहकार्यं ? ननु करोमि भोः, पठसि पुस्तकम् ? ननु पठामि भोः,······') ॥

२ 'अपि' के निन्दा, समूह (भी), प्रश्न, शङ्का, संभावना, इष्टप्रश्न, आक्षेप, युक्त पदार्थ (वस्तु), ८ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ अपि सिञ्चेत्पलाण्डुम्, २ श्रियं पालय पुत्रमपि, रामो वनं याति लक्ष्मणोऽपि, ३ अपि, गच्छसि गृहम्?, अपि जानासि किञ्चित्त्वम् ?, ४ अपि प्रसादेन्दुष्टो नृपतिः अपि चौरोऽयम् ५ पर्वतमपि शिरसा भिन्द्यात् , ६ 'अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं जलान्यपि स्नानविधिक्षमाणि ते। अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे—' (कु० सं० ५।३३), ७ अपि गृहाण मां चेदम् , ८सर्पिषोऽपि स्यात् ,······) ॥

३ 'वा' के उपमा, विकल्प, समूह, ३ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ भीमोऽन्तको वा समरे गदापाणिरदृश्यत, सर्पो वा क्रुद्धः' सर्प इव क्रुद्धः' इत्यर्थः, २ यवैर्व्रीहिभिर्वा यजेत, ३ 'सा वा शम्भोस्तदीया वा मूर्तिर्जलमयी मम (कु० सं० २।६०) 'न तुनाथामूर्तिरित्यर्थः, वायुर्वाथ मेदर्वाथ दहनो वा,...') ॥

४ 'सामि' के आधा निन्दित, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ सामि संमीलिताक्षी, २ सामि कृतमकृतं स्यात् , सामिकृतमकल्याणकारि,······') ॥

५ 'अमा' के साथ, पास, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ 'पुत्रेणामा भुङ्क्ते' सहेत्यर्थः, २ अमा भावोऽमात्यः,······') ॥

६ 'कम्' के पानी, शिर (मस्तक), सुख, ३ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ कजं कमलम् , २ कजाः केशाः, ३ कंयुः,······') ॥

१ इवेत्थमर्थयोरेवं २ नूनं तर्केऽर्थनिश्चये ।
३ तूष्णीमर्थे सुखे जोषं ४ किं पृच्छायां जुगुप्सने ॥ २५१ ॥
५ नाम प्राकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।
६ अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ॥ २५२ ॥

---

१ 'एवम्' के इवार्थ (सदृश), इस तरह, उपदेशादि, निर्देश, निश्चय, स्वीकार, ६ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अग्निरेवं द्विजोऽग्निरिवेत्यर्थः, २ एवं वादिनि देवर्षौ (कु० सं० ६।८४), ३ एवमर्थमिदं, ४ एवं तावत्, ५ एवमेतत्, ६ एवं कुर्मः,·······') ॥

२ 'नूनम्' के तर्क, अर्थका निश्चय, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ नूनं शरत्फुल्ला हि काशाः, नूनमयतियच्छवनां प्रियः, २ क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने, नूनं हन्तास्मि रावणम् ,·······') ॥

३ 'जोषम्' के मौन (चुप रहना), सुख, २ अर्थ हैं । (क्रमशः उदा०—१ 'जोषमास्व' मौनमास्स्वेत्यर्थः, २ जोषमास्ते जितेन्द्रियः, जोषमासीत वर्षासु'·······') ॥

४ 'किम्' के प्रश्न, निन्दा, २ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ किंकरोषि ?, किं गतोऽसौ ?, २ स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं, हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः (किरा० १।५),·······') ॥

५ 'नाम' (= नामन्), के प्राकाश्य (प्रकट, नाम, संज्ञा), संभावनाके योग्य, क्रोध, द्वेषपूर्वक स्वीकार करना, निन्दा, झूठा, विस्मय, ७ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ हिमालयो नाम नगाधिराजः (कु० सं० १।१), २ कथं भविष्यति संगरो नाम, ३ ममापि नाम रावणस्य नरवानरैर्मृत्युः, ४ शत्रोः सकाशाद् गृह्णाति नाम, एवमस्तु नाम, ५ को नामायं प्रलपति मे विशतः सभायाम् , को नामायं सवितुरुदयः, ६ दृष्टेऽधरे रोदिति नाम तन्वी, ७ अन्धो नाम गिरिमारोहति,······ ') ॥

६ 'अलम्' के भूषण, पर्याप्त (काफी), शक्ति, वारण (मना करना), व्यर्थ, ५ अर्थ हैं । ('क्रमशः उदा०—१ अलङ्कृतां कन्यां प्रयच्छेत् , २ 'अलमस्यस्य धनं' बह्वित्यर्थः, ३ अलं हरिः' समर्थ इत्यर्थः, अलं मल्लो मल्लाय, ४ अलमतिप्रसङ्गेन, अलं महीपाल तव श्रमेण—(रघु० २।३४),·······') ॥

१ हुं वितर्के परिप्रश्ने २ समयाऽन्तिकमध्ययोः ।
३ पुनरप्रथमे भेदे ४ निर्निश्चयनिषेधयोः ॥ २५३ ॥
५ स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ।
६ ऊरर्युरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ॥ २५४ ॥
७ स्वर्गे परे च लोके स्वः—

---

१ 'हुम्' के वितर्क, प्रश्न, भय, भर्त्सन (डराना), अनिच्छा, ५ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ हुं पयो हुं मृगतृष्णा, चैत्रो हुं मैत्रो हुम् , २ हुं देवदत्तोऽयम् हुं तस्य त्वं सुहृत्, ३ हूं राक्षसोऽयम् , ४ हुं निर्लज्जः, ५ हुं हुं मुञ्च माम् ,……') ॥

२ 'समया' के समीप, बीच, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ रामं समयाऽस्ते लक्ष्मण, समया ग्रामं नदी, २ 'ग्रामं समयाऽस्ते' ग्राममध्य इत्यर्थः, 'समया शैलयोर्ग्रामः' शैलयोर्मध्य इत्यर्थः, ……') ॥

३ 'पुनः' (=पुनर्) के फिर, भेद (विशेष), २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ पुनरागतः, २ किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा (गीता ९।३३), ………')

४ 'निः' (=निर्) के निश्चय, निषेध, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ निष्पन्नं कार्यम् , निरुक्तम् , २ निर्धनो वणिक, निर्मर्यादः,……') ॥

५ 'पुरा' के प्रबन्ध, बहुत दिन पहले, आनेवाला (आगामी) निकट समय, ३ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ 'पुराधीयते' निरन्तरमपाठीदित्यर्थः, २ पुरापि न नव पुराणम् , पुरातनम् , ३ 'गच्छ पुरा देवो वर्षति'[1] समनन्तरं वर्षिष्यतीत्यर्थः,………') ॥

६ 'ऊररी, ऊरी उररी' ३ के विस्तार, स्वीकार, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ 'ऊररीकृत्य, ऊरीकृत्य, उररीकृत्य वा पटं' विस्तार्येत्यर्थः, २ 'ऊररीकृत्य ऊरीकृत्य उररीकृत्य वाऽज्ञां गच्छति' स्वीकृत्य गच्छतीत्यर्थः,……') ॥

७ 'स्वः' (=स्वर्) के स्वर्ग, परलोक, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—स्वर्लोकलोकेतरदुर्लभानि, स्वर्भोगमत्रापि सृजन्त्यमर्त्याः, स्वर्णदीस्वर्णपद्मिन्याः—(नैष० च० क्रमशः ३।१६, ३।२१, २०।३९), २ स्वर्गतस्य जनस्य पारलौकिकं कुर्यात् , स्वर्गतस्य क्रिया कार्या पुत्रैः परमभक्तितः,………') ।

---

१. अत्र 'यावत्पुरानिपातयोर्लट्' (पा० सू० ३।३।४) इत्यनेन लट्लकारः ॥

—१ वार्तासंभाव्ययोः किल।
२ निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासाऽनुनये खलु ॥ २५५ ॥
३ समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः।
४ नामप्रकाश्ययोःप्रादु५र्मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ॥ २५६ ॥

---

१ 'किल' के वार्ता, सम्भावनाके योग्य, हेतु, झूठ (असत्य), अरुचि, ५ अर्थ हैं ('क्रमशः उदा०—१ जघान कंसं किल वासुदेवः, २ अर्जुनः किल विजेष्यते कुरून्, ३ स किल कथिरेव मुक्तवान्, ४ गोत्रस्खलितं किलाश्रुतं कृत्वा, ५ त्वं किल योत्स्यसे, ·········') ॥

२ 'खलु' के निषेध, वाक्यालङ्कार, जिज्ञासा (जानने की इच्छा), अनुनय ४ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ खलु रुदित्वा, खलु कृत्वा, २ एतत्खल्वाहुः, ३ स खल्वधीते शब्दशास्त्रम्, ४ न खलु न खलु मुग्धे साहसं कार्यमेतत् (नागा० ना० २।१०), ·········') ॥

३ 'अभितः' (=अभितस्) के समीप, दोनों तरफ, शीघ्र, साकल्य, सामने, ५ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ वाराणसीमभितो गङ्गा, अभितो ग्रामं वसति' समीप इत्यर्थः, २ अभितः कुरु चामरौ, ३ अभितः पठ, अभितो गच्छ' शीघ्रमित्यर्थः, ४ 'व्याप्नोत्यभितो रजः' सर्वत इत्यर्थः, ५ आपतन्तमभितोऽरिमपश्यत्, ···')।

४ 'प्रादुः' (=प्रादुस्) के नाम, प्रकट, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ विष्णोर्दश[1] प्रादुर्भावाः दश नामानीत्यर्थः, २ प्रादुरासीद् बुद्धिर्वादिनः, ···')।

५ 'मिथः' (=मिथस्) के अन्योन्य (परस्पर, आपस), एकान्त, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ मिथः प्रहारं कुर्वतः, वसिष्ठकौण्डिन्यमैत्रावरुणानां मिथो न विवाहः, २ मिथो मन्त्रयते.··· ···') ॥

---

१. पुराणसमुच्चये दशावतारा उक्ताः—

'मत्स्योऽभूद्धुतभुग्दिने मधुसिते कूर्मो विधौ माधवे
वाराहो गिरिजासुते नभसि यद् भूते सिते माधवे।
सिंहो भाद्रपदे सिते हरितिथौ श्रीवामनो माधवे
रामो गौरितिथावतः परमभूद्रामो नवम्यां मधोः ॥ १ ॥
कृष्णोऽष्टम्यां नभसि सिततरे चाश्विने यद्दशम्यां
बुद्धः कल्की नभसि समभूच्छुक्लषष्ठ्यां क्रमेण।
अह्नो मध्ये वामनो रामरामौ मत्स्यः क्रोडश्चापराह्णे विभागे।
कूर्मः सिंहो बौद्धकल्की च सायं कृष्णो रात्रौ कालसाम्ये च पूर्वे ॥ २ ॥
इति नि० सिन्धु० पृ० ९२ परि० २।

१ तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे २ हा विषादशुगर्तिषु ।
३ अहहेत्यद्भुते खेदे ४ हि हेताववधारणे ॥ २५७ ॥

इत्यव्ययाः शब्दाः ।
इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

---

१ 'तिरः' (=तिरस्) के अन्तर्धान (छिपना), तिर्छा, २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ इति व्याहृत्य विबुधान्विश्वयोनिस्तिरोदधे (कु० सं० २। ६२), २ तिरोवर्तते भास्करः,······') ॥

२ 'हा' के विषाद, शोक, दुःख, ३ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ हा गतो रमणीयः कालः, २ हा वनं गतो रामचन्द्रः, ३ हा हतोऽस्मि मन्दभाग्यः,···') ॥

३ 'अहह' (+ अहहा) के अद्भुत, खेद, २ अर्थ हैं। (क्रमशः उदा०— १ अहह बुद्धिप्रकर्षो नृपालस्य, २ अहह नीतो मया व्यसनेनामूल्यः, कालः, अहह हता विधवा बाला,······') ॥

४ 'हि' के हेतु, अवधारण (निश्चय), २ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०— १ अग्निरत्रास्ति धूमो हि दृश्यते, २ चन्द्रो हि शीतलः,······') ॥

विशेष:—'नानार्थ अव्यय' शब्दों के अव्ययमात्र होनेसे अन्य प्रकरणोंके समान ('अव्य०') इस तरह प्रत्येक शब्दके बाद नहीं लिखा गया है, अतः ३।३।२४० से ३।३।२५७ तक के प्रत्येक शब्दोंको 'अव्यय' समझना चाहिए ॥

इस 'नानार्थवर्ग' में ग्रन्थकारके अतिरिक्त 'अनेकार्थसंग्रह, मेदिनीकोष, विश्वकोष, अभिधानरत्नमाला,······' कोषग्रन्थोंमें लिखित अतिप्रसिद्ध अर्थ तथा ग्रन्थकारके लिखित 'च, तु, अपि,······' शब्दसे संगृहीत-टीकाकारोंके सम्मत बाहरी अर्थ भी लिखे गये हैं। कहीं-कहीं आवश्यकीय स्थलोंमें उदाहरण आदि भी दिये गये हैं। टीका बढ़नेके भयसे उन्हें पृथक् लिखना या सर्वथा त्याग करना अनुचित-सा प्रतीत होनेसे एकत्र ही लिखा गया है। यद्यपि पूर्वोक्त अव्यय शब्द भी 'कान्त, खान्त, गान्त आदि क्रमसे ही कहे गये हैं तथापि इन नानार्थ अव्यय शब्दोंको 'कान्त अव्यय शब्द, खान्त अव्यय शब्द,······' टीकावृद्धिके भयसे नहीं कहा गया है। पाठकगण स्वयं कान्त, खान्त, गान्त,······' अव्ययों को समझ लें ॥

इत्यव्ययाः शब्दाः ।
इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

४. अथाव्ययवर्गः ।

१ चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ।
५ मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृत्समाः ॥ १ ॥
३ स्राग्झटित्यञ्जसाऽह्नाय द्राङ् मङ्क्षु सपदि द्रुते ।
४ बलवत्सुष्ठु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥ २ ॥
५ पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च वर्जने ।
६ यत्तद्यतस्ततो हेतौ ७ साकल्ये तु चिच्चन ॥ ३ ॥
८ कदाचिज्जातु ९ सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ।
१० आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं ११ व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥

---

४. अथाव्ययवर्गः ।

१ चिराय, चिररात्राय, चिरस्य, (+ आद्य शब्दसे—चिरेण, चिरात्, चिरम्, चिरे) ३ का 'देर' अर्थ है ।

२ मुहुः (= मुहुस्) पुनः पुनः (= पुनः पुनर्) शश्वत्, अभीक्ष्णम्, असकृत्, ५ का 'बारबार' अर्थ है ॥

३ स्राक्, झटिति, अञ्जसा, अह्नाय, द्राक्, मङ्क्षु, सपदि, ७ के 'झटपट' 'उसी समय' अर्थ है ॥

४ बलवत्, सुष्ठु, किमुत, सु, अति, अतीव, ६ का 'अतिशय' अर्थ है ॥

५ पृथक्, विना, अन्तरेण, ऋते, हिरुक्, नाना, ६ का 'वर्जन' (विना) अर्थ है ॥

६ यत्, तत्, यतः (= यतस्) ततः (ततस् + येन, तेन), ४ का 'कारण' अर्थ है ॥

७ चित्, चन, २ का 'असाकल्य' (असम्पूर्णता) अर्थ है ॥

८ कदाचित्, जातु, २ का 'कभी' अर्थ है ॥

९ सार्धम्, साकम्, सत्रा, समम्, सह (+ सजूः = सजुष्), ५ का 'साथ' अर्थ हैं ॥

१० प्राध्वम्, १ का 'अनुकूलता' अर्थ है ॥

११ वृथा, मुधा, २ का 'व्यर्थ' अर्थ है ॥

१ आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमूत च ।
२ तु हि च स्म ह वै पादपूरणे ३ पूजने स्वति ॥ ५ ॥
४ दिवाऽह्नीत्य५थ दोषा च नक्तं च रजनावपि ।
६ तिर्यगर्थे साचि तिरोऽप्य७थ सम्बोधनार्थकाः ॥ ६ ॥
स्युः पाट् प्याडङ्ग हे है भोः ८ समया निकषा हिरुक् ।
९ अतर्किते तु सहसा स्यात् १० पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥
११ स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा ।
१२ किञ्चिदीषन्मनागल्पे १३ प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥
१४ [1]व वा यथा तथैवैवं साम्ये—

---

१ आहो (+ अहो), उताहो, किमुत, किम्, किमु, उत, ५ का 'वितर्क करना, विकल्प' अर्थ है ॥

२ तु, हि, च, स्म, ह, व, ६ श्लोक के चरण को पूरा करने में' प्रयुक्त होते हैं ॥

३ सु, अति, २ का 'पूजा बड़ाई' अर्थ है ॥

४ दिवा, १ का 'दिन में' अर्थ है ॥

५ दोषा, नक्तम् (+ उषा) २ का 'रात में' अर्थ है ॥

६ साचि, तिरः (= तिरस्) २ का 'तिर्छा' अर्थ है ॥

७ पाट्, प्याट्, अङ्ग, हे, है, भोः (= भोस्), ६ का 'सम्बोधन' (पुकारना, बुलाना) अर्थ है ॥

८ समया, निकषा, हिरुक्, ३ का 'समीप' अर्थ है ॥

९ सहसा, १ का 'एकाएक' अर्थात् अतर्कित (विना विचार किये) अर्थ है ॥

१० पुरः (पुरस्) पुरतः (= पुरतस्), अग्रतः (= अग्रतस्), ३ का 'आगे पहले' अर्थ है ॥

११ स्वाहा, श्रौषट्, वौषट्, वषट्, स्वधा, ये ५ 'देवताओंको हविष्य देनेमें' प्रयुक्त होते हैं, (इनमें 'स्वधा' शब्द, 'पितरोंको कव्य देनेमें' प्रसिद्ध है) ॥

१२ किञ्चित्, ईषत्, मनाक्, ३ का 'थोड़ा' अर्थ है ॥

१३ प्रेत्य, अमुत्र, २ का 'परलोक' अर्थ है ॥

१४ व (+ वत्), वा, यथा, तथा, इव, एवम्, ६ का 'समानता' (बराबरी, उपमा, सादृश्य) अर्थ है ॥

---

१. 'वद्वा' इति पाठान्तरम् ।

—१ अहो ही च विस्मये ।
२ मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां ३ सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥
४ दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्दे५ऽथान्तरेऽन्तरा ।
अन्तरेण च मध्ये स्युः ६ प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥
७ युक्ते द्वे सांप्रतं स्थाने८ऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ।
९ अभावे नह्य नो नापि १० मास्म माऽलं च वारणे ॥ ११ ॥
११ पक्षान्तरे चेद्यदि च१२तत्त्वे त्वद्धाऽञ्जसा द्वयम् ।
१३ प्राकाश्ये प्रादुराविः स्या१४दोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

---

१ अहो, ही, २ का 'आश्चर्य' अर्थ है ॥

२ तूष्णीम् , तूष्णीकाम् , २ का 'चुप, मौन' अर्थ है ॥

३ सद्यः (सद्यस्), सपदि, २ का 'इसी समय' (अभी) अर्थ है ॥

४ दिष्ट्या, समुपजोषम् (+ शम् , अपजोषम् , उपयोषम्), २ का 'आनंद' अर्थ है ॥

५ अन्तरे, अन्तरा, अन्तरेण, ३ का 'मध्य, बीज' अर्थ हैं ॥

६ प्रसह्य, १ का 'हठ' (बलात्कारपूर्वक) अर्थ है ॥

७ सांप्रतम् , स्थाने, २ का 'युक्त, उचित' अर्थ है ॥

८ अभीक्ष्णम् , शश्वत् , २ का 'निरन्तर, लगातार' अर्थ है ॥

९ नहि, [1]अ, नो, न, ४ का 'नहीं' अर्थ है ॥

१० मास्म, मा, अलम् , ३ का 'वारण, मना करना' अर्थ है ॥

११ चेत् , यदि, २ का 'पक्षान्तर' (यह वा वह, अथवा) अर्थ है ॥

१२ अद्धा, अञ्जसा, २ का 'तत्त्व' (ठीक-ठीक विषय) अर्थ है ॥

१३ प्रादुः (= प्रादुस्), आविः (= आविस्), २ का 'प्रकट' अर्थ है ॥

१४ ओम् , एवम् , परमम् , ३ का 'स्वीकार, अनुमिति' अर्थ है ॥

---

१. 'नञोऽयमकारः' इति वदतो भानुजिदीक्षितस्योक्तिस्तु—'अशब्दः स्यादभावेऽपि स्वल्पार्थप्रतिषेधयोः । अनुकम्पायाश्च यथा—' (मेदि० पृष्ठ० १९३ श्लो० २) इति मेदिनीवचनात् , 'अ स्यादभावे स्वल्पार्थे त्रिष्णावेष त्वनव्ययम्' (अने० सं० परिशिष्टकाण्डे श्लो० १) इति हैमवचनात् , 'अ स्यादभावे स्वल्पार्थे—' इति विश्वाच्च चिन्त्या । अत एव श्री० स्वा० उक्तस्य 'विप्रवत्त ब्रूषे' इति विवरणात्मकस्य 'अविप्र इव भाषसे' इति समस्तवाक्यस्य सङ्गतिरित्यवधेयम् ॥

१ समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ।
२ [1]अकामानुमतौ काम३मसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥
४ ननु च स्याद्विरोधोक्तौ ५ कच्चित्कामप्रवेदने ।
६ निःषमं दुःषमं गर्ह्ये ७ यथास्वं तु यथायथम् ॥ १४ ॥
८ मृषा मिथ्या च वितथे ९ यथार्थं तु यथातथम् ।
१० स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥
११ प्रागतीतार्थकं १२ नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।
१३ संवद्वर्षे१४ऽवरे त्वर्वा१५गामेवं १६स्वयमात्मना ॥ १६ ॥

---

१ समन्ततः (= समन्ततस्), परितः (= परितस्), सर्वतः (= सर्वतस्), विष्वक् , ४ का 'चारों (सब) तरफ' अर्थ है ॥

२ कामम् , १ का 'बिना इच्छासे स्वीकार (अनुमति)' अर्थ है ॥

३ अस्तु, १ का 'असूया-पूर्वक स्वीकार' अर्थ है ॥

४ ननु च[2] (+ नाम), १ का 'विरोधोक्ति' अर्थ है ॥

५ कच्चित् , १ का 'इष्ट प्रश्न' अर्थ है ॥

६ निःषमम् , दुःषमम् , २ का 'निन्दनीय' अर्थ है ॥

७ यथास्वम् , यथायथम् , २ का 'यथायोग्य' अर्थ है ॥

८ मृषा, मिथ्या, २ का 'असत्य' अर्थ है ॥

९ यथार्थम् , यथातथम् , २ का 'सत्य' अर्थ है ॥

१० एवम् , तु, पुनः (= पुनर्), वै, वा, ५ का 'निश्चय' अर्थ है ॥

११ प्राक् , १ का 'बीता हुआ, पहले समयमें' अर्थ है ॥

१२ नूनम् , अवश्यम् , २ का 'निश्चय' (जरूर) अर्थ है ॥

१३ संवत् , १ का 'वर्ष, साल' अर्थ है ॥

१४ अर्वाक् , १ का 'पुराने समयके बाद' अर्थ है ॥

१५ आम् , एवम् , २ का 'हाँ' अर्थ है ॥

१६ स्वयम् , १ का 'आपसे आप' अर्थ है ॥

---

१. 'आकामानुमतौ' इति पाठान्तरम् ।

२. 'ननु च' निपातद्वयस्य समाहारद्वन्द्वः' इति मा० दी० ।

१ अल्पे नीचैर्२महत्युच्चैः ३ प्रायो भूम्न्य४द्रुते शनैः ।
५ सना नित्ये ६ बहिर्बाह्ये ७ स्मातीते८ऽस्तमदर्शने ॥१७॥
९ अस्ति सत्त्वे १० [1]रुषोक्तावु ११ ऊं प्रश्ने१२ऽनुनये त्वयि ।
१३ [2]हुं तर्के १४ स्यादुषा रात्रेरवसाने १५ नमो नतौ ॥१८॥
१६ पुनरर्थेऽङ्ग १७ निन्दायां दुष्ठु १८ सुष्ठु प्रशंसने ।
१९ सायं साये २० प्रगे प्रातः प्रभाते २१ निकषाऽन्तिके ॥१९॥

---

१ नीचैः (= नीचैस्), १ का 'छोटा, धीरे-धीरे, नीचे' अर्थ है ॥
२ उच्चैः (= उच्चैस्), १ का 'ऊँचा, अधिक, जल्दी-जल्दी' अर्थ है ॥
३ प्रायः (= प्रायस्), १ का 'बाहुल्य, अधिकतर' अर्थ है ।
४ शनैः (= शनैस्), १ का 'धीरे-धीरे' अर्थ है ॥
५ सना (+ सनत् , सनात्), १ का 'नित्य' अर्थ है ॥
६ बहिः (= बहिस्), १ का 'बाहर' अर्थ है ॥
७ स्म, १ का 'बीता हुआ' अर्थ है ॥
८ अस्तम् , १ का 'अस्त' (नहीं दिखाई देना) अर्थ है ॥
९ अस्ति, १ का 'है' अर्थ है ॥
१० उ (+ उम्), १ का 'क्रोधसे कहना' अर्थ है ॥
११ ऊं (= ऊम्) १ का 'पूछना' (+ क्रोधसे पूछना क्षी० स्वा०) अर्थ है ॥
१२ अयि, १ का 'शान्त करना, रूठे हुएको मनाना' अर्थ है ॥
१३ हुम् (+ स्यात् 'जैसे—स्याद्वादिनो जैनाः'), १ का 'तर्क' अर्थ है ॥
१४ उषा, १ का 'रात्रिका अन्त, सबेरा' अर्थ है ॥
१५ नमः (= नमस्), १ का 'प्रणाम' अर्थ है ॥
१६ अङ्ग, १ का 'फिर' अर्थ है ॥
१७ दुष्ठु, १ का 'निन्दा' अर्थ है ॥
१८ सुष्ठु, १ का 'बड़ाई, प्रशंसा' अर्थ है ॥
१९ सायम् , १ का 'सायंकाल, साँझ' अर्थ है ॥
२० प्रगे, प्रातः (= प्रातर्), २ का 'प्रातःकाल, सुबह' अर्थ है ॥
२१ निकषा, १ का 'समीप' अर्थ है ॥

---

१. 'रुषोक्तावु' इति पाठान्तरम् ।   २. 'तर्के स्यात्' इति पाठान्तरम् ।

१ परुत्परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति ।
२ अद्यात्राह्न्यथ ३थ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥
तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ।
४ उभयद्युश्चोभयेद्युः ५ परे त्वह्नि परेद्यवि ॥ २१ ॥
६ ह्यो गते७ऽनागतेऽह्नि श्वः ८परश्वस्तु परेऽहनि ।
९ तदा तदानीं १० युगपदेकदा ११ सर्वदा सदा ॥ २२ ॥
१२ एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं १३ तथा ।

---

१ परुत्, परारि ऐषमः (= ऐषमस्), क्रमशः १ १ का 'परसाल, परियार साल, इस वर्ष' १–१ अर्थ हैं ॥

२ अद्य, १ का 'आज' अर्थ है ॥

३ पूर्वेद्युः (= पूर्वेद्युस), उत्तरेद्युः (= उत्तरेद्युस्), अपरेद्युः (= अपरेद्युस्), अधरेद्युः (= अधरेद्युस्), अन्येद्युः (= अन्येद्युस्), अन्यतरेद्युः (= अन्यतरेद्युस्) इतरेद्युः (= इतरेद्युस्), क्रमशः १–१ का 'पूर्व' (पहले बीता हुआ) दिन, उत्तर (आगे आनेवाला) दिन, पर (आगामी) दिन, हीन (बीता हुआ) दिन, अन्य (दूसरे) किसी दिन, दो दिनोंमे-से किसी एक दिन, इतर (दूसरे) दिन' १–१ अर्थ है ।

४ उभयद्युः (= उभयद्युस्), उभयेद्युः (= उभयेद्युस्), २ का 'दो दिन' अर्थ है ॥

५ परेद्यवि, १ का 'आनेवाला दिन' अर्थ है ॥

६ ह्यः (= ह्यस्), १ का 'बीता हुआ कल' अर्थ है ॥

७ श्वः (= श्वस्), १ का 'आनेवाला कल' अर्थ है ॥

८ परश्वः (परश्वस्), १ का 'आनेवाला परसों' अर्थ है ॥

९ तदा, तदानीम् , २ का 'तब' अर्थ है ॥

१० युगपत् (=युगपद् । + युगपत्), एकदा, २ का 'एक समय' अर्थ है ॥

११ सर्वदा, सदा, २ का 'हमेशा, हर समय' अर्थ है ॥

१२ एतर्हि, संप्रति, इदानीम् , अधुना, सांप्रतम् , ५ का 'इस समय' अर्थ है ॥

१३ तथा, १ का 'समुच्चय (और) उस तरह' २ अर्थ हैं ॥

१ दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ।

२ सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः ।

१ 'प्राक्' के 'पूर्व दिशामें १, पूर्व दिशासे २, पूर्व दिशा ३, पूर्व देशमें ४, पूर्व देशसे ५, पूर्व देश ६, पूर्वकालमें ७, पूर्व कालसे ८, पूर्व काल ९, ये ९ अर्थ हैं। ('क्रमशः उदा०—१ 'प्राग्वसति' पूर्वस्यां दिशि वसतीत्यर्थः। २ 'प्रागागतः' पूर्वस्या दिश आगत इत्यर्थः। ३ 'प्रागस्ति' पूर्वा दिगस्तीत्यर्थः। ४ 'प्राग्वसति' पूर्वस्मिन्देशे वसतीत्यर्थः। ५ 'प्रागागतः' पूर्वस्माद्देशादागत इत्यर्थः। ६ 'प्राग्गतः' पूर्वस्मिन्काले गत इत्यर्थः। ७ 'प्रागासीत्' पूर्वस्मिन्काल आसीदित्यर्थः। ८ 'प्राक् प्रचलितेयं प्रथास्ति' पूर्वस्मात्कालादियं प्रथा प्रचलतीत्यर्थः। ९ 'प्राग्वर्तते' पूर्वकालो वर्तते इत्यर्थः' इसी तरह 'उदक्' के उत्तर दिशामें,······९ अर्थ, 'प्रत्यक्' के पश्चिम दिशामें······९ अर्थ, 'अवाक्' के दक्षिण दिशा में······९ अर्थ होते हैं। उनके उदाहरण भी उसी तरह समझ लेना चाहिये ॥)।

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

५. अथ लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ।

२ पाणिनि आदि ऋषियोंके निर्मित लिङ्ग-विधान करनेवाले शास्त्रों अर्थात् सूत्रों ('जैसे—स्त्रियां क्तिन् (पा० सू० ३।३।९४), 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' (पा० सू० ३।३।११८) 'नपुंसके भावे क्तः' (पा० सू० ३।३।११४), 'अदन्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः' (वार्त्ति०), ······') के सहित, सन् आदि (आदिसे—क्यच्,···) कृत्, तद्धित और समाससे उत्पन्न प्रत्ययोंसे बननेवाले प्रायः पहले नहीं कहे हुए शब्दोंसे इस 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग' में संकीर्णवर्गके समान लिङ्गका तर्क करना चाहिये। ('क्रमशः उदा०—१ सन्' प्रत्यय से उत्पन्न शब्द जैसे—तितिक्षा, जुगुप्सा, पिपासा······, २ 'आदि' शब्दसे संगृहीत 'क्यच्'

[१]अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

१   लिङ्गशेषविधिर्व्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

प्रत्ययसे उत्पन्न शब्द जैसे—पुत्रकाम्या,…। ३ 'कृत्' प्रत्ययसे उत्पन्न शब्द जैसे—श्वपाकः, कुम्भकारः, सरसिजम् ,……। ४ 'तद्धित' प्रत्ययसे उत्पन्न शब्द जैसे—औपगवः, वैयाकरणः, नैयायिकः, गार्ग्यः, वात्स्यः,…। ५ 'समास' प्रत्यय ('टच् , अच् , अ…') से उत्पन्न शब्द जैसे—वायुसखोऽनलः, धर्मराजः, ब्रह्मवर्चसम् , अर्धर्चः,……')। 'संकीर्णवर्ग' के समान लिङ्ग समझना चाहिये अर्थात् 'संकीर्णवर्ग' में जिस तरह प्रकृति और प्रत्यय के अर्थ आदि (क्रियाविशेषण,……) से लिङ्गका तर्क किया गया है उसी तरह यहाँ भी तर्क करना चाहिये । (उदा०—१ प्रकृतिके अर्थसे जैसे—'अर्धर्चाः पुंसि च' (पा० सू० २।४।३१) इस सूत्रसे 'अर्धर्चः, अर्धर्चम्' यहांपर 'अर्धर्च' शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग,………। २ प्रत्ययके अर्थसे जैसे—'स्त्रियां क्तिन्' (पा० सू० ३।३।९४) इस सूत्रसे 'कृतिः, संपत्तिः, विपत्तिः, भूतिः, ये शब्द स्त्रीलिङ्ग और ३ 'आदि' शब्दसे संगृहीत क्रिया-विशेषणसे जैसे—'साधु भवति, शोभनं पचति,……' में साधु और शोभन शब्द नपुंसक हुए हैं, उसी तरह इस 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग' में भी समझना चाहिये ॥

१ यदि पहले और यहाँ कहे हुए वाक्योंसे बाध (निषेध) नहीं किया गया हो तो शेष लिङ्गका विधान अपने विषयमें व्यापक होता है अर्थात् अपवाद (बाधक) विषयको छोड़कर सर्वत्र सामान्यतः उक्त लिङ्ग होता है। ('उदा०—'स्वर्गयागादिमेघाब्धि—' (३।५।११) इस वाक्यसे स्वर्ग-पर्याय शब्दको सामान्यतः पुंल्लिंग कहा गया है तथापि 'स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः । सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्' (१।१।६) इस अपवाद वचनसे 'स्वर्' शब्दको अव्यय, 'द्यो, दिव्' शब्दको स्त्रीलिङ्ग, और 'त्रिविष्टप' शब्दको नपुंसक कहनेके कारण ये (स्वर् द्यो, दिव् , त्रिविष्टप) शब्द पुंल्लिङ्गमें प्रयुक्त नहीं होते, किन्तु उक्त विशेष वचन के अनुसार क्रमशः 'अव्यय, स्त्रीलिङ्ग, और नपुंसकलिङ्ग' में ही प्रयुक्त होते हैं, ग्रन्थ बढ़नेके

१. 'अनुक्तौ इति पाठान्तरम् ।

अथ स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

१ स्त्रिया२मीदूद्विरामैकाच्सयोनि३प्राणिनाम च ॥ २ ॥
३ नाम[1] विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीह्रियाम् ।

भयसे उन स्वरादि शब्दों की भिन्न लिङ्गमें यहाँ पुनः नहीं कहा गया है । २ उदा०—पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः' (३।५।११) इस सामान्य वचनसे 'भेद, अनुचर, पर्याय' के सहित 'सुर और असुर' पुँल्लिङ्ग हैं' ऐसा कहा गया तथापि'······दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्' (१।१।५) इस अपवाद वचनसे 'दैवत' शब्दको पुंल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग और 'देवता' शब्दको स्त्रीलिङ्ग कहा गया है, अतः इन (दैवत, देवता) शब्दोंको छोड़कर 'सुर, असुर' के पर्याय आदि शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं । इस 'लिंगादिसंग्रहवर्ग' में विशेष वचन सामान्य वचनका बाधक होता है । ('जैसे—'अदन्तैर्द्विगुरेकार्थः (३।५।३) इस सामान्य वचनसे अदन्त शब्दसे आगे रहनेपर एकार्थ द्विगुको स्त्रीलिङ्ग कह कर 'न स पात्रयुगादिभिः' (३।५।३) इस विशेष वचन से 'पात्र, युग, भुवन' आदि शब्दोंके आगे रहनेपर स्त्रीलिङ्गका निषेध किया गया है, अत एव 'अष्टाध्यायी, त्रिलोकी, दशमूली' आदि शब्दोंके समान 'पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्, त्रिभुवनम्,······शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं होते हैं') ॥

अथ स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँ से आगे 'पुंस्त्वे······' (३।५।११) तक 'स्त्रियाम्' का अधिकार होनेसे यहाँसे 'पुंस्त्वे······' (३।५।११) के मध्यवर्ती (बीचवाले) सब शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥

२ एक अच् वाले ईकारान्त १, ऊकारान्त २; तथा योनि (भग) सहित प्राणियों के नाम ३ स्त्रीलिंग होते हैं । (क्रमशः उदा०—१ धीः, श्रीः, ह्रीः, ······ । २—भ्रूः, स्नूः, द्रूः, जूः, भूः,······ । ३ माता (= मातृ), दुहिता (= दुहितृ), याता (= यातृ), प्रसूः, स्वसा (= स्वसृ), योषित्, करेणुः, सुरभिः,·········') ॥

३ विद्युत् (बिजली) १, निशा (रात्रि) २, वल्ली (लता) ३, वीणा

---

१. 'विद्युन्निशावल्लीवाणीदिग्भूनदीह्रियाम्' इति पाठान्तरम् ।

१ अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभिः॥ ३॥
२ तल्वृन्दे येनिकट्यत्राः—

(+ वाणी[1]) ४, दिक् (दिशा) ५, भू (जमीन) ६, नदी ७ ह्री (लाज + धी[2] अर्थात् बुद्धि), के नामवाले शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ विद्युत्, चपला, सौदामिनी, तडित्,……। निशा, रात्रिः, यामिनी,……। ३ वल्ली, व्रतती, लता,…… । ४ वीणा, वल्लकी, विपञ्ची, कच्छपी…… । + वाणी, भारती, ब्राह्मी, वाक्,……। ५ दिक्, ककुप्, आशा, हरित्……। ६ भूः, पृथ्वी, मही, इला,……। ७ नदी, सरित्, आपगा,……। ८ व्रीडा, लज्जा, त्रपा, ……। + धीः, बुद्धिः, मतिः, शेमुषी, चित्, संवित्,……') ॥

१ अदन्त (ह्रस्व अकारान्त) शब्द ('जैसे—मूल, लोक, अक्षर, अध्याय, ……') के उत्तर पदमें रहनेपर समाहार (समूह) अर्थमें द्विगु समास-संज्ञक शब्द स्त्रीलिङ्ग[3] होते हैं। ('जैसे—दशमूली, त्रिलोकी, पञ्चाक्षरी, अष्टाध्यायी, ……')। किन्तु पात्र, युग आदि (भुवन, पुर,……) अदन्त शब्द उत्तर पदमें रहनेपर द्विगु समास-संज्ञक शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं[4] होते हैं। ('जैसे—पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्[5], त्रिभुवनम् त्रिपुरम्, ……')। 'अदन्त' ग्रहणसे 'पञ्चकुमारि, दशधेनु……' में और 'एकार्थ' (समाहार) ग्रहण करनेसे पञ्चकपालः, पञ्चकपालौ, पञ्चकपालाः,……,' में स्त्रीलिङ्ग नहीं होता है॥

२ समूह में १ तल् प्रत्ययान्त, और य २, इनि ३, कट्य ४, त्र ५, प्रत्य-

१. 'ल्यवृन्तं…' (२।५।५) इति वक्ष्यमाणवचनेनैव 'वीणा'पर्यायाणां 'कच्छपी-विपञ्ची'त्यादीनां स्त्रीत्वसिद्धौ 'वीणा' ग्रहणस्याकिञ्चित्करत्वात्, तत्स्थाने 'वाणी' शब्द, पाठ एव समुचितस्तत्पर्यायाणां 'ब्राह्मी, गीर्भारती'त्यादिशब्दानां स्त्रीत्वनिर्देशावश्यकत्वादि-त्यवधेयम्।

२. 'स्त्रियामीदूद्विरामैकाच्' (३।५।२) इति वचनेनैव 'ह्री'पर्यायवतां 'लज्जादीनां' स्त्रीत्वसिद्धौ 'ह्री' शब्दस्यात्राकिञ्चित्करत्वात् तत्स्थाने 'धी'शब्दपाठ एव समुचितः, 'धी'पर्या-यवतां 'चित्संविदा'दीनां स्त्रीत्वबोधकवचनावश्यकत्वादित्यवधेयम्।

३. 'अदन्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः' (वार्ति० १५५६) इति भाष्येष्टेः।

४. 'पात्राद्यन्तस्य न' (वार्त्ति० १५५९) इति भाष्येष्टेः।

५. 'समासान्ताः' (पा० सू० ५।४।६८) इति सूत्रभाष्ये तु 'त्रिपुरी'ति दृश्यते।

—१ [1]वैरमैथुनिकादिवुन्।

२ [2]स्त्रीभावादावनिक्तिण्वुल्णच्ण्वुच्क्यब्युजिञक्निशाः ॥ ४ ॥

यान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ ग्रामता, जनता, बन्धुता, देवता,......। २ पाश्या, वात्या,......। ३ खलिनी, शाकिनी, डाकिनी, पद्मिनी,......। ४ रथकट्या,......। ५ गोत्रा,......')। 'वृन्द' ग्रहण करनेसे मुख्यः, दण्डी (= दण्डिन्)' यहां स्त्रीलिङ्ग नहीं हुआ है।

१ वैर १, मैथुनिक २ आदि अर्थमें विहित वुन्' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। 'आदि' शब्दसे वीप्सामें विहित 'पादशतस्य—' (पा० सू० ५।४।१), दण्डव्ययसर्गयोश्च' (पा० सू० ५ । ४ । २) से विहित 'वुन्' प्रत्ययान्त भी स्त्रीलिङ्ग होता है। ('क्रमशः उदा०—१ अश्वमहिषिका, काकोलूकिका,......। २ अत्रिभरद्वाजिका. कुत्सकुशिकिका,......। 'आदि'से 'संगृहीतके क्रमशः उदा०—१—२ द्विपदिकां, द्विशतिकाम् वा ददाति, दण्डितो वा,......। 'वुन्' ग्रहण 'वुञ्'का उपलक्षण है अतः 'काठिकया काशिका, गार्तिकया श्लाघते,...... यहाँ भी स्त्रीलिङ्ग होना है')।

२ 'स्त्रियां क्तिन्' (पा० सू० ३ । ३ । ९४) के 'स्त्रियाम्' का अधिकार कर भाव आदि अर्थमें विहित 'अनि १, क्तिन् २, ण्वुल् ३, णच् ४, ण्वुच् , ५, क्यप् ६, युच् ७, इञ् ८, अङ् ९, नि (+ अ) १०, श ११, प्रत्यय जिसके अन्तमें हों, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। 'क्रमशः उदा०—१ अकरणिः, अजननिः,...। २ कृतिः, भूतिः, चितिः,...... । ३ प्रच्छर्दिका, प्रवाहिका, आसिका, ...। ४ व्यावक्रोशी, व्यात्युक्षी, व्यावहासी,......। ५ शायिका, इक्षुभक्षिका ......। ६ व्रज्या, इज्या, समज्या, निषद्या, ब्रह्महत्या,......। ७ कारणा, हारणा, आसना', कामना,......। ८ वापिः, वासिः, कारिः, राणिः,......। ९ पचा- भिदा, घटा, मृदा,......। १० ग्लानिः, म्लानि, अरणिः, धमनिः,......। + चिकीर्षा, पुत्रकाम्या,......। ११ क्रिया, इच्छा,........') 'स्त्रीभावादौ' ग्रहण करनेसे, मृषोद्यम् यहाँपर स्त्रीलिङ्ग नहीं होता है।

---

१. 'वैरमैथुनकादिवुः' इति पाठान्तरम्।

२. ....क्यब्युजिञङ्दशाः' इति पाठान्तरम्।

१ [1]उणादिषु निरूरीश्च ङ्याबूङन्तं चलं स्थिरम् ।
२ तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्लवाणा दिक् ॥ ५ ॥
३ घञो ञः सा क्रियाऽस्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी ।
श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥

---

१ उणादिमें विहित 'निर् १, ऊर् २, ई ३, प्रत्ययान्त शब्द तथा चल (जङ्गम) अथवा अचल (स्थावर) जो 'ङी (ङीष् वा ङीप्) ४ आप् (टाप्) ५, ऊङ् ६' प्रत्ययान्त शब्द वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ श्रेणिः, श्रोणिः, ज्यानिः,…… । २ कर्पूः, चमूः, अलाबूः, जम्बूः,…… । ३ लक्ष्मीः, अवीः, तरीः, तन्त्रीः,……। ४ चल (जङ्गम) जैसे–नारी,……। अचल (स्थावर) जैसे–कदली, कन्दली,……। ५ चल (जगङ्गम) जैसे–शिवा, रमा, गङ्गा,…। अचल (स्थावर) जैसे—खट्वा, माला,…… । ६ चल (जङ्गम) जैसे—ब्रह्मबन्धूः, वामोरूः, करभोरू,…… । अचल (स्थावर) जैसे—कर्कन्धूः, अलाबूः,……') ॥

२ खेलमें 'मुष्टि पल्लव' आदि (मुसल, दण्ड,……') का प्रहरण (प्रहार, मार) इसका है, इस अर्थमें 'ण' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—मौष्टा, पाल्लवा, मौसला, दण्डा,……') ॥

३ दण्डपात इस फाल्गुनी तिथि में है १, श्येनपात (बाजका गिरना) इस मृगया (शिकार) क्रिया में है २, तैलपात (तेलका गिरना) इस स्वधा (पिण्ड-दान) क्रिया में है ३, इस अर्थमें 'घञ्' प्रत्ययान्तसे विहित 'ञ' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ दण्डपातोऽस्यां फाल्गुन्यां तिथौ विद्यते इति दाण्डपाता फाल्गुनी तिथिः । २ श्येनपातोऽस्यां मृगयायाम् , इति श्यैनंपाता मृगया । ३ तैलपातोऽस्यां स्वधायाम् इति तैलंपाता स्वधा') 'इति दिक्' कहने से मुसलपातोऽस्यामिति 'मौसलपाता' भूमिः आदि का संग्रहण है ॥

---

१. 'उणादिष्वनिरूरीश्च' इति पाठान्तरम् एतत्पाठे 'धरणिः, धमनिः, शरणिः' इत्याद्युदाहरणं ज्ञेयम् ॥

१ स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षाऽपचये यदि ।
२ लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥
सिध्रका [1]सारिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका ।
तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमाढयः ॥ ८ ॥

---

१ अपचय (न्यूनता, कमी) विवक्षित रहनेपर मृणाली आदि (कुम्भी प्रणाली,······) शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । ('जैसे— अल्पं मृणालं (थोड़ा मृणाल (मृणाली, कुम्भी, प्रणाली, मुसली, छत्री, पटी, तटी, मठी, वंशी, गृह्यकाण्डी,······' (। 'काचित्' ग्रहण करनेसे 'अल्पो वृक्षः' इति विग्रहे 'वृक्षकः' पुंलिङ्ग ही होता है स्त्रीलिङ्ग नहीं होता ॥

१ 'ह्यावृडन्तम्' (३ । ५ । ५) इत्यादिसे उक्त लिङ्गवाले कुछ शब्दोंको भी सुखपूर्वक लिङ्ग-ज्ञानके लिये 'कान्त, खान्त,······' के क्रमसे कहते हैं । [2]लङ्का (रावणकी राजधानी), शेफालिका (निर्गुण्डी), टीका (ग्रन्थादिकी व्याख्या), धातकी (धव वृक्ष-विशेष), पञ्जिका (सम्पूर्ण पदोंकी व्याख्या), आढकी (अरहर, जिसकी दाल होती है), सिध्रका ('सीध'नामका वृक्ष-विशेष), सारिका (+ शारिका । मैना पक्षी), हिक्का (हिचकी आना), प्राचिका (वनमक्खी । + पक्षि-विशेष क्षी० स्वा०) उल्का (लुक्क) पिपीलिका (चींटी या दीमक । + जो अप्रसिद्ध है या पहले अनुक्त है वही यहाँपर तत्तन्नाम-निर्देश-पूर्वक कहा गया है अतः 'शनैर्याति पिपीलकः' यहाँ पुंल्लिङ्गका निषेध नहीं हुआ, इसी तरह सर्वत्र समझना), तिन्दुकी (तेंदू वृक्ष), कणिका (परमाणु, अतिसूक्ष्म या गेहूँ आदिका आटा, जयपर्ण वृक्ष या अरणि वृक्ष), भङ्गिः (रचना, कौटिल्य-भेद) सुरङ्गा (सुरङ्ग) सूचि (सुई) माढिः (दैन्य या दैन्य-प्रकाशन, पत्रशिरा अर्थात् पत्तेकी नस । + देशः कवच क्षी०

---

१. 'शारिका' इति पाठान्तरम् ॥

२. 'ह्यावृडन्तम्' (३।५।५) इति सिद्धे नामानुशासनार्थो लङ्कादीनां पाठः । मध्यादीनामुभयानुशासनार्थः । शेफालिकादीनां तु व्यर्थः स्वपर्यायपठितत्वात्' इति मा० दी० ।

पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरत् ।
सातिः कन्था तथाऽऽसन्दी नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥
झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिध्मला ।
लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥

इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

अथ पुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ पुंस्त्वे २ सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।

स्वा०), पिच्छा (मोचरस अर्थात् सेमर का गोंद । + भात आदिका माँड), वितण्डा (बखेड़ा), काकिणी (+ काकिनी । चौथाई पैसा, दुकड़ा), चूर्णिः (अष्टाध्यायीका पातञ्जल भाष्य), शाणी (सनका वस्त्र-विशेष महे०, कसौटी, सान अर्थात् शस्त्रको तेज करनेका यन्त्र-विशेष । + 'काणी' अर्थात् संकोच), द्रुणी (गोजर । + कच्छपी), दरत् (म्लेच्छ जाति), सातिः (समाप्तिः), कन्था (चिथड़ा), आसन्दी (एक प्रकारका आसन, या बेंतका आसन), नाभिः, (पेटकी ढोंढी), राजसभा (राजाकी सभा), झल्लरी (हुडुक बाजा), चर्चरी (ताली या गान-विशेष), पारी (हाथीके पैर बाँधनेकी रस्सी, पान-भाण्ड घड़ा आदि), होरा (लग्न, लग्नार्द्ध, जातक), लट्वा (आमका गौरैया पक्षी, करञ्ज फल, वाद्य-विशेष), सिध्मला (सूखी मछली, गीली खुजली, मल । + सफेद कुष्ठ रोग त्री० स्वा०), लाक्षा (लाह), लिक्षा (जुआ-का अण्डा, लीख), गण्डूषा (+ गण्डूषः पु । पानीसे मुख भरना, कुल्ला), गृध्रसी (ऊरु-सन्धिमें होनेवाला वातरोग-विशेष), चमसी (उड़द या मसूर आदिका बेसन, काष्ठका बना हुआ यज्ञपात्र-विशेष । + प्रणीतापात्र महे०), मसी (स्याही), ये ४२ शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं ॥

इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

अथ पुंलिङ्गसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे 'द्विहीने………' (३ । ५ । २२) के पूर्व 'पुंस्त्वे' इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) सब शब्द पुंलिङ्ग होते हैं ॥

२ भेद और अनुचरके सहित १ सुर (देवता) तथा २ असुर (दैत्य)

१ स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः ॥ ११ ॥

के पर्यायोंके सहित सब शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१सुरके पर्याय जैसे—अमरः, निर्जरः, देवः, त्रिदशः, विबुधः,……। भेद जैसे—तुषिताः, साध्याः, आभास्वराः, इन्द्रः, शक्रः, बिडौजाः; सूर्यः, आदित्यः, रविः; ब्रह्मा, स्वयम्भूः; विष्णुः, शौरिः; रुद्रः, शम्भुः;……। अनुचर जैसे—हाहाः, हूहूः, तुम्बुरुः, मातलिः, जयः, विजयः, चण्डः, प्रचण्डः, विष्वक्सेनः; नन्दी (=नन्दिन्), महाकालः, भृङ्गी (=भृङ्गिन्), गणाः, प्रमथाः;……। २ असुर (दैत्य) के पर्याय जैसे—दैत्याः, दैतेयाः, दानवाः, पूर्वदेवाः,……। भेद जैसे—बलिः, नमुचिः, जम्भः, विरोचनः प्रह्लादः,……। अनुचर जैसे—कूष्माण्डः, मुण्डः, कुम्भः,……') ॥

१ स्वर्ग १, याग (यज्ञ) २, अद्रि (पहाड़) ३, मेघ (बादल) ४, अब्धि (समुद्र) ५, द्रु (पेड़) ६, काल (समय) ७, असि (तलवार) ८, शर (बाण) ९, और अरि (शत्रु) १०, इनके पर्याय और भेदवाचक शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। (क्रमशः उदा०—१ पर्याय जैसे—स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः,……। २ पर्याय जैसे—यागः, क्रतुः, रूढतन्तुः,……। भेद जैसे—अग्निष्टोमः, अतिरात्रः, अश्वमेधः,……। ३ पर्याय जैसे—अद्रिः, गिरिः, पर्वतः,……। भेद जैसे—सुमेरुः, मेरुः, हिमालयः, विन्ध्यः, सह्यः,……। ४ पर्याय जैसे—मेघः, अम्बुदः, घनः, वारिदः,……। भेद जैसे—पुष्करावर्तकः,……। ५ पर्याय जैसे—अब्धिः, समुद्रः, नदीनः, सागरः, अर्णवः,……। भेद जैसे—क्षीरोदः, लवणोदः, दध्युदः,……। ६ पर्याय जैसे—द्रुः, नगः, वृक्षः,……। भेद जैसे—वटः, आम्रः, प्लक्षः, खदिरः, विल्वकः,……। ७ पर्याय जैसे—कालः, समयः, दिष्टः,……। भेद जैसे—मासः, पक्षः, ऋतुः,……। ८ पर्याय जैसे—असिः, खड्गः, करवालः, मण्डलाग्रः,……। भेद जैसे—नन्दकः, चन्द्रहासः,……। ९ पर्याय जैसे—शरः, बाणः, इषुः, विशिखः……। भेद जैसे—नाराचः, काण्डः, भल्लः,……। १० पर्याय जैसे—अरिः, रिपुः, शत्रुः, द्वेषणः,……। भेद जैसे—आततायी (=आततायिन्),……') ॥

१ [1]करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ।
२ अह्नाहन्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥
३ श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ।

---

१ कर (कौड़ी या राजाका कर अर्थात् मालगुजारी, किरण,) १, गण्ड (गाल) २ ओष्ठ (ओठ) ३, दोः (=दोष् । हाथ) ४, दन्त (दाँत) ५, कण्ठ (गला) ६, केश (बाल) ७, नख (नाखून) ८, स्तन (थन) ९, इनके पर्याय और भेदके सहित शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ करः, राजभागः, रश्मिः, मयूखः, ······ । २ गण्डः, कपोलः, कटः, ······। ३ ओष्ठः, रदनच्छदः, अधरः, ······ । ४ दोः (= दोष्), प्रवेष्टः, बाहुः, भुजः, ······। ५ दन्तः, दशनः, रदः, रदनः, ······ । ६ कण्ठः, गलः, ······। ७ केशः, वालः, चिकुरः, ······ । ८ नखः, पुनर्भवः, कररुहः, ······। ९ स्तनः, पयोधरः, कुचः, ······') ॥

२ 'अह्न १, अहन् २' शब्द जिसके अन्तमें हों वे शब्द, विष-भेदके वाचक शब्द ३, 'रात्रि' शब्द हो अन्तमें जिनके ऐसे असंख्यापूर्वक (संख्या-वाचक शब्द पूर्व में न रहें ऐसे) शब्द ४, पुंल्लिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ पूर्वाह्णः, सायाह्नः, अपराह्णः, मध्याह्नः, ······ । २ द्व्यहः, त्र्यहः, उत्तमाहः, परमाहः, ······। ३ वत्सनाभः, सौराष्ट्रिकः, ब्रह्मपुत्रः, शौक्लिकेयः, कालकूटः, हलाहलः, ······। ४ अहोरात्रः, सर्वरात्रः, दीर्घरात्रः, वर्षारात्रः, ······)। 'प्रागसंख्यकाः' (असंख्यापूर्वक) ग्रहण करने से 'पञ्चरात्रम् द्विरात्रम् , त्रिरात्रम् ······में संख्यावाचक शब्द पूर्वमें रहनेसे पुंल्लिङ्ग नहीं होता है') ॥

३ श्रीवेष्ट (+ श्रीपिष्ट) आदि गोंद के वाचक शब्द १, अस् २, और अन् ३, हो अन्तमें जिनके ऐसे अबाधित (किसीसे बाध न हुआ हो) शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ श्रीविष्टः (+ श्रीपिष्टः) सरलः, द्रवः, ······ । 'आद्य' शब्दसे 'श्रीवासः, वृकधूपः, ······' का और 'च' शब्दसे गुग्गुलुः, वृकधूपः······' का संग्रह होने से ये शब्द भी पुंल्लिङ्ग होते हैं' । २ वेधाः (= वेधस्) पुरोधाः (पुरोधस्) उशनाः (= उशनस्), अङ्गिराः

---

१. 'करगण्डौष्ठदोर्दण्डकण्ठकेशनखस्तनाः' इति पाठान्तरम् ।

१ कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

२ कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी ३ अथ ।

पथनयसटोपान्ताः—

(= अङ्गिरस्), चन्द्रमाः (चन्द्रमस्), ······ । ३ कृष्णवर्मा (= कृष्णवर्मन्), प्रतिदिवा (= प्रतिदिवन्), मघवा (=मघवन्), प्लीहा (प्लीहन्), ······') । 'अबाधित' ग्रहण करनेसे 'अप्सरसः (= अप्सरस्), जलौकसः (= जलौकस्), सुमनसः (= सुमनस्),······' ये असन्त शब्द, तथा 'लोम (= लोमन्), साम (= सामन्), वर्म (= वर्मन्), ······' ये नान्त शब्द पुल्लिङ्ग नहीं होते हैं ॥

१ 'कशेरु, जतु, वस्तु' शब्दको छोड़कर अन्य 'तु १, रु २' अन्तमें हों जिनके ऐसे शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ तन्तुः, मन्तुः, हेतुः, सक्तुः, धातुः, सेतुः,······ । २ कुरुः, रुरुः, मरुः, तरुः,······') । 'कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा' [१]इसके कहनेसे इदं 'कशेरु' जलज कन्द विशेष, 'जतु' लाख, इदं 'वस्तु' यहाँपर 'कशेरु, जतु, वस्तु' शब्द पुंल्लिङ्ग नहीं होते हैं ॥

२ 'क १, ष २, ण ३, भ ४, म ५, र ६' ये ६ वर्ण जिस अदन्त शब्द के उपान्त (अन्तवाले वर्णके अव्यवहित पूर्व) में रहें वे शब्द विशेष, पुल्लिङ्ग होते हैं । (क्रमशः उदा०— १ अङ्कः, कलङ्कः, लोकः, स्फटिकः, शक्कः, वराटकः, ······। २ ओषः, प्लोषः, माषः, पञ्जुः, निकषः, तुषः, रोषः, + +। + ३ गणः, शणः, कणः, पाषाणः, गुणः, + + । ४ कुम्भः, कलभः, दर्भः, शलभः, + + । ५ आचामः, धूमः, होमः, ग्रामः, गुल्मः, व्यामः, + + । ६ अङ्कुरः, दरः, झर्झरः, + +') ॥

३ 'प १, थ २, न ३, य ४, स ५, ट ६' ये ६ वर्ण जिनके उपान्त (अन्तके वर्णके अव्यवहित पूर्व) में रहें वे शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०— १ सूपः, बाष्पः, कलापः, यूपः कूपः, ········· । २ रोमन्थः, शपथः, सार्थः,

---

१. 'कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा' इति व्यर्थम् । 'अबाधिताः' इत्यस्यान्वयेनैव सामञ्जस्यात् । वस्तुतस्तु 'अबाधिताः' इत्यपि व्यर्थम् । 'विशेषैर्यद्यबाधितः' (३ । ५ । १) इत्यनेनैव निर्वाहात् । अत एव दारादिषु निर्वाहः' इति मा० दी० 'कशेर्वाद्युपलक्षणं 'दारुमञ्जु' प्रभृतीनाम् । कशेरु अस्थिविशेषस्तृणविशेषो वा, जतु लाक्षा' इति महे० ॥

—१ गोत्राख्यशाश्चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥
२ नाम्न्यकर्तरि भावे च घञजप्नङ्णघाथुचः ।
३ ल्युः कर्तरीमनिज्भावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः ॥ १५ ॥

नाथः,……। ३ फेनः, हायनः, स्तनः, जनः, इनः,……। ४ अपनयः, विनयः, प्रणयः, आयः, व्ययः, तन्तुवायः,……। ५ रसः, हासः, कुत्सः, वत्सः,……। ६ वटः, कटः, सरटः,……। महे० मु० के मतसे 'अथ' शब्दको आदिमें रहनेसे 'यद्यदन्ताः' इसका सम्बन्ध 'पथनयसटोपान्ताः' में नहीं होता, अतः 'पायुः, वायुः, गोमायुः,……' अदन्तसे भिन्न शब्द भी पुंल्लिङ्ग होते हैं) ॥

१ गोत्राख्य (गोत्रके वाचक) शब्द क्षी० स्वा० के मतसे अपत्य प्रत्ययान्त १, और चरण (वेद-शाखा) के वाचक शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ काश्यपः वसिष्ठः, गौतमः,……। क्षी० स्वा० के मतसे + वासिष्ठः, गार्ग्यः, दाक्षिः,……। २ कठः, बह्वृचः, छन्दोगः, कलापः……') ॥

२ नाम, कर्तृभिन्न कारक और भावमें विहित 'घञ् १, अच् २, अप् ३, नङ् ४, ण ५, घ ६, अथुच् ७, प्रत्यय जिनके अन्तमें हों वे शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ प्रासः, वेदः, प्रासादः, प्रकारः, मायः, भावः, पाकः, त्यागः,……। २ अयः, चयः, नयः,……। ३ पचः, करः, गरः, लवः, स्तवः, प्लवः,……। ४ यज्ञः प्रश्नः, यत्नः,…… ('नङ्, के उपलक्षण होनेसे 'नन्' प्रत्ययान्त भी पुंल्लिङ्ग होता है, जैसे—स्वप्नः,……) । ५ न्यादः,……। ६ प्रहरः, विघसः, गोचरः उरश्छदः, प्रच्छदः,……। ७ वेपथुः, श्वयथुः, आनन्दथुः,……') ॥

३ कर्तामें विहित 'ल्यु' प्रत्ययान्त १, भावमें विहित 'इमनिच्' २ और 'क' ३, प्रत्ययान्त तथा [1]प्रादिसे ४, और अन्यसे ५, परे घुसंज्ञक धातुसे विहित 'कि' प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं । ('क्रमशः उदा०—१ नन्दनः, रमणः,

---

१. अत्र 'प्रादि' शब्देन द्वाविंशतिरुपसर्गा गृह्यन्ते यथा—'प्र १, परा २, अप ३, सम् ४, अनु ५, अव ६, निस् ७, निर् ८, दुस् ९, दुर् १०, वि ११, आङ् १२, नि १३, अधि १४, अपि १५, अति १६, सु १७, उत् १८, अभि १९, प्रति २०, परि २१, उप २२' इत्येते 'उपसर्गाः क्रियायोगे' (पा० सू० १।४।५९) इत्यनेनोपसर्गसंज्ञका भवन्ति ।

१ द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते ।
२ कान्तःसूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥
३ वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च [1]कुडङ्गकः ।
पुङ्खो[2]न्यूङ्खः समुद्गश्च विटपट्टघटाः खटाः ॥ १७ ॥

मधुसूदनः, जनार्दनः,…… । २ प्रथिमा (= प्रथिमन्), छविमा (= छविमन्), गरिमा (= गरिमन्), महिमा (= महिमन्),……। ३ मस्थः, आखूत्थः,…। ४ (प्रादिसे परे घुसंज्ञक धातुसे विहित 'कि' प्रत्ययान्त) जैसे—प्रधिः, निधिः, व्याधिः, आधिः, उपधिः,…… । ५ (अन्यसे परे घुसंज्ञक धातुसे विहित 'कि' प्रत्ययान्त, जैसे—जलधिः, अब्धिः,……') । 'घोः किः' इसीसे सर्वत्र पुंल्लिङ्ग हो जाता, अतः 'प्रादितोऽन्यतः' यह पद व्यर्थ ही है ॥

१ समाहार अर्थसे भिन्न द्वन्द्व समासमें 'अश्ववडव' शब्द पुंल्लिङ्ग होता है । (जैसे—अश्वश्च वडवा च 'अश्ववडवौ') ॥

२ 'सूर्य १, चन्द्र २, के पर्याय, और 'अयस्' ३ शब्दसे परे (आगे) रहनेपर 'कान्त' शब्द पुंल्लिङ्ग होता है । ('क्रमशः उदा०—१ सूर्यकान्तः, अर्ककान्तः,भास्करकान्तः,…… । २ चन्द्रकान्तः,शशिकान्तः,इन्दुकान्तः,… । ३ अयस्कान्तः') ॥

३ अब 'कान्त, खान्त……' के क्रमसे 'पुंल्लिङ्गसंग्रह' के अन्ततक पुंल्लिङ्ग शब्दोंको कहते हैं । वटकः (बारा), अनुवाकः (वेद-भेद, ऋक् और यजुष् का समूह), रल्लकः (पश्म-कम्बल, रोंआदार कम्बल), कुडङ्गकः (+ कुटङ्गकः । वृक्ष-लतासे गहन स्थान), पुङ्खः (बाणके नीचेवाला भाग), न्यूङ्खः (+ न्युङ्खः । सामवेदके भा० दी० के मतसे ६ और क्षी० स्वा० के मतसे १६ ओंकार), समुद्गः (सम्पुट, डब्बा), विटः (कामी अनुचर, धूर्त), पट्टः (पीढ़ा, काठका आसन-विशेष। + पनही आदि क्षी०स्वा०),घटः (काठकी तराजू, परीक्षा करनेकी तराजू), खटः (अन्धा कूवां, तृण, प्रहार), कोट्टः (किला), अरघट्टः

[1] 'कुटङ्गकः' इति पाठान्तरम् ॥ [2] 'न्युङ्खः' इति पाठान्तरम् ॥

कोट्टारघट्टहट्टाश्च[1] पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।
गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥
हतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः ।
[2]कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ ॥ १९ ॥
आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः ।
[3]पूरक्षुरप्रचुकाश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

(बड़ा कुआँ । + कोट्टारः, घट्टः, अर्थ क्रमशः नगरका कूप, घाट, भा० दी०), हट्टः (बाजार), पिण्डः (कवल या पिण्ड), गोण्डः (नाभि । + गौडः अर्थात् गुड का बना पदार्थ या गौड देश), पिचण्डः (+ पिचिण्डः । पेट), गडुः (गाल स्त्री० स्वा०, गलगण्ड रोग महे०), करण्डः (समुद्र स्त्री० स्वा०, बांसका कोठिला आदि भाण्ड-विशेष भा० दी० महे०), लगुडः (लाठी), वरण्डः (समूह, मुखरोग), किणः (घावका चिह्न, मांस-ग्रन्थि, घट्ठा), घुणः (घुन), हतिः (भाथी), सीमन्तः (केश-वेश), हरित् (हरा रंग), रोमन्थः (पगुरी), उद्गीथः (साम-भेद), बुद्बुदः (बुल्ला, पानीमें वर्षा आदि पड़ने या खौलनेपर होनेवाला क्षणिक जल-विकार), कासमर्दः (गुल्म-भेद महे०, वेसवार अर्थात् एक प्रकारका मसाला या छौंक), अर्बुदः (दश करोड़, आबू पहाड़, रोग-विशेष । + अर्दनिः अर्थात् अग्नि), कुन्दः (कुन्द फूल या शिल्प-भाण्ड), फेनः (फेन, गाज), स्तूपः (माटी आदिका ढेर स्त्री० स्वा०, + यज्ञमें वध्य पशु बाँधनेका काष्ठ-विशेष), यूपः (यज्ञमें पशु बाँधनेका काष्ठ-विशेष । + पूपः अर्थात् पूआ), आतपः, (घाम), नाभिः (क्षत्रिय), कुणपः (मुर्दा-विशेष । + कणपः, अर्थात् प्रास-विशेष), क्षुरः (छूरा), केदरः (एक प्रकारका व्यावहारिक पदार्थ), पूरः (पानीका प्रवाह), क्षुरप्रः (+ क्षुरप्रः । बाण-भेद), चुक्रः (चुक, शाक-विशेष), गोलः (गोला, पिण्ड), हिङ्गुलः (+ हिङ्गुलुः । इंगुर), पुद्गलः (आत्मा, जैनसिद्धान्तसम्मत आकाशादि द्रव्य),

१. 'पिण्डगोडपिचण्डवत्' इति 'पिचिण्डिवत्' इति च पाठान्तरे ।
२. 'कासमर्दोऽर्दनिः कुन्दः फेनस्तूपौ सपूपकौ' इति पाठान्तरम् ।
३. 'पूरक्षुरप्रचुक्राश्च' इति 'गोलहिङ्गुलपुद्गलाः' इति पाठान्तरम् ।

वेतालभल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि[1] पट्टिशः।
कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः॥ २१॥
इति पुंलिङ्गसंग्रहः।

अथ नपुंसकलिङ्गसंग्रहः।

१ [2]द्विहीनेऽन्यच्च २ खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम्।
शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम्॥ २२॥
[3]फलहेमशुल्बलोहसुखदुःखशुभाशुभम्।
जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम्॥ २३॥

वेतालः (प्रेत-विशेष), भल्लः (भालू, बाण-विशेष, पटा), मल्लः (कुश्ती लड़नेमें चतुर), पुरोडाशः (यज्ञसम्बन्धी पूआ, हविष्य-विशेष,) पट्टिशः (+पट्टिसः। अस्त्र-विशेष), कुल्माषः (आधा गीला यव या उड़द आदि), रभसः (हर्ष, वेग, पौर्वापर्यका विचार), कटाहः (कराह), पतद्ग्रहः (पीकदान). ये ५५ शब्द पुंलिङ्ग होते हैं॥ इति पुंलिङ्गसंग्रहः।

अथ नपुंसकलिङ्गसंग्रहः।

१ यहाँसे आगे 'पुंनपुंसकयोः' (३।५।३२) के पहले तक 'द्विहीने' इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। 'अन्यत्' ग्रहण करनेसे जो बाधित न हों वे ही शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं॥

२ खम् (इन्द्रिय) १, अरण्यम् (वन) २, पर्णम् (पत्ता) ३, श्वभ्रम् (पाताल, बिल) ४, हिमम् (बर्फ) ५, उदकम् (पानी) ६, शीतम् (ठण्ढा) ७, उष्णम् (गर्म) ८, मांसम् (मांस) ९, रुधिरम् (खून) १०, मुखम् (मुँह) ११, अक्षि (आँख) १२, द्रविणम् (धन) १३, बलम् (सेना) १४, फलम् (आम आदिका फल। +हलम् अर्थात् जोतनेवाला हल) १५, हेम (=हेमन्। सुवर्ण) १६, शुल्बम् (तामा) १७, लोहम् (लोहा) १८, सुखम् (सुख) १९, दुःखम् (दुःख) २०, शुभम् (शुभ) २१, अशुभम् (अशुभ) २२, जलपुष्पम् (पानीमें होनेवाले फूल) २३, लवणम् (नमक) २४, व्यञ्जनम् (तरकारी आदि) २५, अनुलेपनम् (लेप-भेद) २६; ये २६ शब्द

---

१. 'पट्टिसः' इति मुकुटः इति महे०। २. 'द्विहीनेऽन्यश्च' इति पाठान्तरम्।
३. 'हलहेम—' इति पाठान्तरम्।

१ "भयामृतशकृद्वक्त्रचापाभरणलाङ्गलम् (९२)

और इनके पर्यायवाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग (मा० दी० ने इनके पर्यायवाचक शब्दोंको नपुंसक नहीं[2] कहा है) होते हैं । 'क्रमशः उदा०—१ प्रथमार्थक (इन्द्रिय पर्याय) जैसे—१ खम् , इन्द्रियम् , करणम् , हृषीकम् ,…… । १ द्वितीयार्थक (आकाश-पर्याय) जैसे—खम् , आकाशम् , गगनम् , अम्बरम् ,…… । २ अरण्यम्, कान्तारम् , वनम्, विपिनम् ,…… । ३ पर्णम् , दलम् , पत्त्रम् ,…… । ४ श्वभ्रम्, बिलम् , विवरम् , पातालम् ,……। ५ हिमम्, प्रालेयम्, तुहिनम्,…… । ६ उदकम्, जलम्, पानीयम्, तोयम्,… । ७ शीतम्, शिशिरम्,……। ८ उष्णम्, घर्मम्, ……। ९ मांसम्, पिशितम्, तरसम्,…… । १० रुधिरम्, रक्तम्,……। ११ मुखम्, आननम् , वदनम्, आस्यम् , वक्त्रम्,……। १२ अक्षि, नयनम्, नेत्रम्, …… । १३ द्रविणम् , धनम्, स्वापतेयम् ,……। १४ बलम्, सैन्यम्, अनीकम्,……। १५ फलम्, आम्रम्, कपित्थम्, …… । १६ हेम (=हेमन्), सुवर्णम् , हाटकम् , स्वर्णम्,…… । १७ (लोह-भेद) जैसे—शुल्वम् , ताम्रम् औदुम्बरम्,……। १८ लोहम्, कालायसम्, अश्मसारम्,……। १९ सुखम्, उपजोषम् , शान्तम्, शर्म (=शर्मन्) शातम्, …… । २० दुःखम्, कष्टम्, कृच्छ्रम् , आभीलम् ……। २१ शुभम्, कल्याणम् , कुशलम् , पुण्यम् , सुकृतम् ,…… । २२ अशुभम् , पापम् , दुष्कृतम्,……। २३ (जलपुष्प भेद) जैसे—कमलम्, कैरवम् , कुमुदम् , कह्लारम्, उत्पलम्, ……। २४ (लवण-भेद) जैसे—लवणम्, सैन्धवम्, विडम्, रुचकम् ,……। २५ व्यञ्जनम्, तेमनम्, निष्ठानम्, उपसेचनम्, मस्तु,…… । और २६ (अनुलेपन-भेद) जैसे—अनुलेपनम् , कुङ्कुमम् , अग्निशिखम् , काश्मीरम् , चन्दनम्, ……') ॥

१ [भयम्(डर),अनृतम् (झूठा । + 'अमृतम्' अर्थात् अमृत), शकृत् (मैला), वक्त्रम् (मुख । + 'वस्तु' अर्थात् चीज, पदार्थ), चापम् (धनुष), आभरणम्

१. 'भया…प्रयुज्यते' इत्ययं क्षेपकांशः क्षी० स्वा० व्याख्याने समुपलभ्यमानः प्रकृतोपयुक्ततयाऽत्र मूले स्थापितः । तत्र-'भयामृतशकृद्वस्तु' इति पाठान्तरमप्यस्ति ।

२. तथा च मा० दी०—'द्वाभ्यां हीने कर्णवि…' इत्याद्युक्त्वा 'तत्र काश्चिदर्शयति क्षमिति—' इत्यादि ।

दार्वौषधमृधापत्यहृदयोदरकाकुदम् (१३)
पत्तनाजिरशृङ्गान्नद्वारबर्होडुमानसम् (१४)
ध्वान्तं चाव्यक्तलिङ्गं च भणितौ यत्प्रयुज्यते' (१५)
१ कोट्याः शतादिसङ्ख्यान्या वा लक्षा नियुतं च तत्।
२ द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥

(भूषण), लाङ्गलम् (हल), दारु (लकड़ी), औषधम् (दवा), मृधम् (युद्ध), अपत्यम् (सन्तान), हृदयम् (हृदय), उदरम् (पेट), काकुदम् (तालु), पत्तनम् (नगर), अजिरम् (आँगन), शृङ्गम् (सींग या शिखर) अन्नम् (अनाज), द्वारम् (दरवाजा), बर्हम् (मोरका पङ्ख), उडु (नक्षत्र), मानसम् (मनका भाव या कर्म वा मानसरोवर तालाब), ध्वान्तम् (अन्धकार) और अव्यक्त (अस्फुट) लिङ्गवाले जो शब्द कहनेमें प्रयुक्त होते हैं वे सब शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं] ॥

१ 'कोटि' शब्द को छोड़कर अन्य 'शत आदि संख्या-वाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे— शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, अर्बुदम्, लक्षम्,…। और 'लक्षा' शब्द विकल्पसे नपुंसकलिङ्ग होता है पक्षमें स्त्रीलिङ्ग 'लक्षा' होता है। उसी (लक्षा) का पर्याय 'नियुतम्' भी नपुंसकलिङ्ग है। [1]'कोटि' शब्द स्त्रीलिङ्ग है। 'शतादि' ग्रहण करनेसे 'विंशतिः, नवतिः, सप्ततिः,……, नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

२ अस् १, इस् २, उस् ३, अन् ४, अन्त में हो जिनके ऐसे दो अच् (स्वर) वाले शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। और 'अन' अन्तमें हो जिसके ऐसे 'कर्ता' से भिन्न शब्द ५, नपुंसकलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१यशः(= यशस्), पयः (= पयस्), मनः (= मनस्),तपः (= तपस्),……। २ सर्पिः (= सर्पिस्), ज्योतिः (= ज्योतिस्), = हविः (= हविष्), ……। ३ धनुः (= धनुस्), वपुः (= वपुस्), यजुः (= यजुस्), + +। ४वर्म (= वर्मन्), चर्म (= चर्मन्), कर्म (= कर्मन्), साम (सामन्), ……। ५ गमनम्,

१. 'कोटि-लक्षा' शब्दयोस्त्रीलिङ्गत्वे उदाहरणम्—
'कियती पञ्चसहस्री कियती लक्षाऽथ कोटिरपि कियती।
औदार्योन्नतमनसां रत्नमती वसुमती कियती' ॥ १ ॥ इति।

१ त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्सङ्ख्ययान्वितम् ।
२ पात्राद्यदन्तरेकार्थो द्विगुर्लक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥
३ द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ—

रमणम्, साधनम्, पचनम्,……')। 'कर्तृभिन्न' ग्रहण करनेसे 'रमणः, मधुसूदनः, मदनः,……' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

१ शेष (पूर्वोक्तसे बचा हुआ अर्थात् अबाधित) त्रान्त ('त्र' अन्तमें हो जिनके वे) १, स २, ल (+न) ३, उपधा[1] (अन्त के पूर्व) में हो जिनके वे शब्द, संख्यावाचक शब्द पूर्वमें जिनके हों ऐसे 'रात्र' शब्द अर्थात् संख्यापूर्वक 'रात्र' शब्दान्त शब्द ४, नपुंसकलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ (त्रान्त) जैसे—वहित्रम्, वस्त्रम्, पात्रम्, अमत्रम्,…। २ (सोपध) जैसे—त्रपुसम्, बिसम्, अन्धतमसम्, बुसम्,……। ३ (लोपध) जैसे—कुलम्, मूलम्, तूलम्, शूलम्,……,। +३ (नोपध) जैसे—भुवनम्, वनम्,……)। ४ (संख्या-पूर्वक रात्र-शब्दान्त) जसे—पञ्चरात्रम्, त्रिरात्रम्, षड्रात्रम्,……') ३ 'शिष्ट' ग्रहण करनेसे 'पुत्रः, वृत्रः, हंसः, कंसः, वत्सः, कालः, गलः (+जनः, श्येनः, स्वप्नः),………' और 'संख्या' ग्रहण करनेसे 'अर्धरात्रः, मध्यरात्रः, पूर्वरात्रः,……' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

२ 'पात्र' आदि अदन्त शब्दोंके साथ एकार्थ (समाहार अर्थवाले) द्विगु शब्द लक्ष्यके अनुसार नपुंसकलिङ्ग होते हैं। (जसे—पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्, त्रिभुवनम्,……')। 'पात्रादि' ग्रहण करनेसे 'त्रिलोकी, त्रिवेदी,………' 'एकार्थ' ग्रहण करनेसे 'पञ्चकपालः (पाँच कपालमें पकाया हुआ) पुरोडाशः,……' और 'लक्ष्यानुसारतः' ग्रहण करनेसे 'त्रिपुरी, पञ्चमूली,……' नपुंसकलिङ्ग नहीं होते हैं ॥

३ द्वन्द्व समासमें एकत्व (एकार्थक अर्थात् समाहार) १, और अव्ययीभाव समासवाले शब्द २, नपुंसकलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—पाणिपादम्, शिरोग्रीवम्, मार्दङ्गिकपाणविकम्,………। २ अधिस्त्रि, अधिगोपम्, द्विमुनि, त्रिमुनि, तिष्ठद्गु,……') ॥

---

१. 'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा' (पा० सू० १।१।६५) इत्यनेनान्त्यात्पूर्वो वर्ण 'उपधा' संज्ञको भवति ।

—१ पथः सङ्ख्याऽव्ययात्परः ।
२ षष्ठ्याश्छाया बहूनां चेद्विच्छायं ३ संहतौ सभा ॥ २६ ॥
शालार्थापि परा राजाऽमनुष्यार्थादराजकात् ।

१ 'संख्या १, अव्यय २, से परे कृतसमासान्त'[1] (समासान्त 'अच्' प्रत्ययान्त) 'पथिन्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है । (क्रमशः उदा०—१ द्विपथम् , त्रिपथम् ,······ । २ विपथम् , कापथम् ,······') । 'संख्याऽव्यय' ग्रहण करनेसे 'धर्मपथः,······में 'पथः' (कृतसमासान्त) ग्रहण करनेसे 'अतिपन्थाः, सुपन्थाः,······' में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ षष्ठ्यन्त (षष्ठी विभक्ति जिसके अन्तमें रहे उस) से परे कृतसमासान्त 'छाया' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है, यदि वह छाया बहुतोंकी[2] रहे तब । ('जैसे—इक्षुच्छायम् , वीनां पक्षिणां छाया विच्छायम् , वृक्षाणां छाया वृक्षच्छायम् ,······') । 'बहूनां चेत्' (बहुतोंकी छाया रहे तब) ग्रहण करनेसे 'वृक्षस्य च्छाया वृक्षच्छाया,······' में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ षष्ठ्यन्तसे परे (आगे) रहनेपर समूहार्थक (समूह अर्थवाला) 'सभा' शब्द १, षष्ठ्यन्तसे परे रहनेपर गृहार्थक (गृह अर्थवाला) और 'अपि' शब्दसे समूहार्थक 'सभा' शब्द अराजक ('राजन्' शब्दसे भिन्न) राजार्थक (राज-पर्यायवाले) २, अमनुष्यार्थक (मनुष्य अर्थसे भिन्न) ३, नपुंसकलिङ्ग होता है । ('क्रमशः उदा०—१ दासीसभम् , ब्राह्मणसभम् ,······ । २ नृपसभम् , इनसभम् , प्रभुसभम् ,······ । ३ रक्षःसभम् , पिशाचसभम् , ······') । 'संहतौ' (समूहार्थक) ग्रहण करनेसे 'दासीनां सभा गृहम्' इस विग्रहमें 'दासीसभा' यहाँपर, 'षष्ठ्याः' (षष्ठ्यन्तसे परे रहनेपर) ग्रहण करनेसे 'नृपतिविषये सभा 'नृपतिसभा' यहाँपर, नृणां पतिर्यस्यां सा नृपतिः सा चासौ सभा च' यह विग्रहकर कर्मधारय समास करनेसे 'नृपतिसभा' यहाँपर, 'अराजक' ('राजन्' शब्दसे भिन्न) ग्रहण करनेसे चन्द्रगुप्तके राज-

१. मूले 'पथ' शब्दोपादानं कृतसमासान्तस्यैव पथिन्' शब्दस्य ग्राहकशक्तिपरम् ।
२. अत एव 'इक्षुच्छायनिषादिन्यः······' (रघु० ४ । २०) इत्येव समीचीनः पाठः ।

दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः ॥ २७ ॥
१ उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ।
कोपज्ञकोपक्रमादि २ कन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥
३ भावेनणकचिद्भ्योऽन्ये समूहे भावकर्मणोः ।

विशेष होनेके कारण 'चन्द्रगुप्तस्य सभा' इस षष्ठीतत्पुरुषमें भी 'चन्द्रगुप्तसभा' यहाँपर, नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

१ 'उपज्ञा और उपक्रम' का प्राथम्य प्रकाशन करना हो तो षष्ठ्यन्तसे परे उपज्ञान्त (जिसके अन्तमें 'उपज्ञा' शब्द हो वह) शब्द १, 'उपक्रमान्त' (जिस के अन्तमें 'उपक्रम' शब्द हो वह) शब्द २, नपुंसकलिङ्ग होता है। ('क्रमशः उदा०—१ कस्योपज्ञा कोपज्ञं सर्गः, चन्द्रोपज्ञमसंज्ञकं व्याकरणम्, पाणिन्युप-ज्ञमकालकं व्याकरणम्,……। २ कस्योपक्रमः कोपक्रमः सृष्टिः, नन्दोपक्रमाणि मानानि,……')। 'तदादित्वप्रकाशने' ग्रहण करनेसे 'देवदत्तोपज्ञा मृन्मयः प्रकारः, देवदत्तोपक्रमो रथः,……' में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ 'उशीनर देशकी जो कन्था' इस अर्थमें संज्ञा (नाम) गम्यमान रहे तब षष्ठ्यन्तसे परे 'कन्था' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है। ('जैसे—सौशमिकन्थम्, आह्विककन्थम्,……')। 'उशीनर' ग्रहण करनेसे 'दाक्षिकन्था' (यह नाम बाह्लीक देशमें प्रसिद्ध है) यहाँपर, और 'नाम' ग्रहण करनेसे 'चैत्रकन्था' (यह संज्ञा नहीं है) यहाँपर नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ न, ण, क, चित् ('च' की जिसमें[1] इत्संज्ञा हुई हो) प्रत्ययसे भिन्न जो भावमें विहित[2] कृत्संज्ञक अदन्त प्रत्यय १, और समूह अर्थमें भाव-कर्ममें विहित जो अकारान्त तद्धित प्रत्यय २, तदन्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ भृतम्, भवनीयम्, भवितव्यम्, भव्यम्, ब्रह्मभूयम्, सांराविणं वर्तते, सांकूटिनं वर्तते,……'। २ (समूहमें तद्धित) जैसे—भैक्षम्, औपग-वकम्, कैदार्यम्, कैदारकम्, राजकम्, यौवतम्, औक्षकम्,……। भावमें—

१. प्रत्ययादौ वर्तमानस्य चस्य 'चुटू' (पा० सू० १।३।७) इत्यनेन प्रत्ययादेरन्ते वर्तमानस्य च 'हलन्त्यम्' (पा० सू० १।३।३) इत्यनेनेत्संज्ञा विधीयते।

२. 'कृदतिङ्' (पा० सू० ३।१।९३) इत्यनेन कृत्संज्ञा विधीयते।

अद्न्तप्रत्ययाः १ पुण्यसुदिनाभ्यां त्वह्नः परः ॥ २९ ॥

२ क्रियाऽव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्थतोटके।

³चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्म योजनम् ॥ ३० ॥

राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृती कवेः।

गौरवम्, शौचम्,······कर्ममें—शौक्ल्यम्, शाठ्यम्, चौर्यम्, ······')। 'नणकचिद्धयोऽन्ये' ग्रहण करनेसे 'प्रश्नः, यत्नः, स्वप्नः, न्यादः, आखूत्थः, विघ्नः, चयः, जयः, कारणा, हारणा, ······' [2]में नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

१ पुण्य १, सुदिन २, शब्दसे परे [3]कृतसमासान्त 'अहन्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है। ('क्रमशः उदा०—१ पुण्याहम्, २ सुदिनाहम्')। 'अह्नः' ग्रहण करनेसे पुण्यानि अहानि यस्मिन्मासि स 'पुण्याहा' (= पुण्याहन्) यहाँपर नपुंसकलिङ्ग नहीं होता है ॥

२ क्रिया १ और अव्यय २ के विशेषण नपुंसकलिङ्ग और एकवचन होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ मृदु पचति, मन्दं करोति, सुखं तिष्ठन्ति योगिनः, ······। २ रम्यं श्वः, सुखदं प्रातः, ······') ॥

३ अब नपुंसकलिङ्गवाले कुछ शब्दोंको कण्ठरवसे स्वयं कह रहे हैं। 'उक्थम्' (सामभेद), तोटकम् (१० अक्षरवाले 'पङ्क्ति' जातीय वृत्तका छन्दो-विशेष), चोचम् (जूठा छोड़ा हुआ, तालफल, कदली-फल), पिच्छम् (मोरका पंख। + 'उक्तम्' अर्थात् एक अक्षरवाला 'उक्ता' जातीय 'श्री' आदि छन्दो-विशेष क्षी० स्वा०। + 'मुक्तम्' अर्थात् छूटा हुआ मा० दी०), गृहस्थूणम् (घरमें लगा हुआ खम्भा), तिरीटम् (शिरका बेठन, साफा, पगड़ी आदि, शिरका भूषण), मर्म (= मर्मन्, सन्धिस्थान, हृदय आदि मर्म स्थल), योजनम् (चार कोसका लम्बे रास्ते आदिका प्रमाण-विशेष), राजसूयम् (राजसूय नामका यज्ञ-विशेष), वाजपेयम् (वाजपेय नामका यज्ञ-विशेष), गद्यम् (कवि रचित बिना छन्दकी शब्द-योजना, जैसे-दशकुमार, कादम्बरी आदि ग्रन्थों में है), पद्यम् (कवि-रचित छन्दसे युक्त

---

१. 'चोचमुक्तम्' इति क्षी० स्वा० पाठान्तरम्। मा० दी० तु 'मुक्तम्' इति पाठे 'मुच्लृ मोचने' इत्यस्माद् 'क्त' प्रत्ययेन साधितवान्।

२. 'चित—चयनं श्वयथुः' इति क्षी० स्वा० वदाहरणं चिन्त्यम्। तस्यादन्तत्वाभावात्।

३. मूले 'अह्नः' इति कृतसमासान्तस्याहन्शब्दस्यानुकरणम्।

[1]माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ॥ ३१ ॥
लोकायतं हरितालं[2] विदलस्थालबाह्लिकम् ।

इति नपुंसकलिंगसंग्रहः ।

अथ पुन्नपुंसकलिंगसंग्रहः ।

१ पुन्नपुंसकयोः शेषोऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

श्लोक आदि, जैसे—रघुवंश, कुमारसंभव, नैषधचरित, आदि काव्यादि ग्रन्थोंमें है), माणिक्यम् (रत्न, जवाहिर), भाष्यम् (जिसमें सूत्रके अनुसार पदोंकी व्याख्या हो और अपने पदकी भी विवेचना की गई हो ऐसा ग्रंथ-विशेष[3], जैसे—पा० सू० पर पातञ्जलभाष्य, वेदान्तसूत्रपर शाङ्करभाष्य,······), सिन्दूरम् (सिन्दूर), चीरम् (कपड़ा), चीवरम् (मुनियोंका वस्त्र), पिञ्जरम् (+ पञ्जरम् । चिड़िया आदि पालनेका पिंजड़ा), लोकायतम् (तर्क), हरितालम् (हरताल नामका औषध विशेष), विदलम् (बाँसका बर्तन-विशेष), स्थालम् (भोजनपात्र विशेष), बाह्लिकम् (बह्लु देशमें होनेवाला, कुङ्कुम । + 'बाह्लवम्' अर्थात् बह्लु देशसे होनेवाला), ये ११ शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं ॥

इति नपुंसकलिंगसंग्रहः ।

अथ पुन्नपुंसकलिंगसंग्रहः ।

१ यहाँसे आगे 'स्त्रीपुंसयोः······' (३।५३७) के पहले 'पुन्नपुंसकयोः' इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) शेष (पूर्वोक्तसे भिन्न) शब्द 'पुंल्लिंग और नपुंसकलिंग' होते हैं ॥

२ अर्धर्चः अर्धर्चम् (ऋचाका आधा), पिण्याकः पिण्याकम् (तिलकी खली), कण्टकः कण्टकम् (काँटा), मोदकः मोदकम् (मिठाई, लड्डू···), तण्डकः

१. '······पञ्जरम्' इति पाठान्तरम् । २. 'विदल स्थालबाह्लवम्' इति पाठान्तरम् ।

३. 'भाष्य'लक्षणं पराशरपुराणे उक्तं तद्यथा—

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः ।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः' ॥ १ ॥ इति ।

मोदकस्तण्डकष्टङ्कः शाटकः [1]कर्पटोऽर्बुदः ।
[2]पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥
कुष्ठं मुण्डं शीधु [3]बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेम कुट्टिमम् ।

तण्डकम् (परिष्कार क्षी० स्वा०, उपताप-विशेष महे० । + 'दण्डकः दण्डकम्' अर्थात् कुण्ड या कपड़ा बुनने का काष्ठ-विशेष), टङ्कः टङ्कम् (पत्थर चीरनेकी टाँकी), शाटकः शाटकम् (साड़ी), कर्पटः कर्पटम् (स्थान-भेद या वस्त्र भेद । + 'खर्वटः खर्वटम्' अर्थात नदी और पहाड़से मिश्रित स्थान [4]महे० भा० दी०, ४०० ग्रामोंका संग्रहस्थान क्षी० स्वा०), अर्बुदः अर्बुदम् (आँखका रोग-विशेष, दस करोड़की संख्या), पातकः पातकम् (ब्रह्महत्या आदि पाप), उद्योगः उद्योगम् (उद्योग), चरक चरकम् (चरक नामका वैद्यक ग्रन्थ । + 'वरकः वरकम्' अर्थात बुना हुआ कपड़ा), तमालः तमालम् (तम्बाकू, सुर्ती), आमलकः आमलकम् (आँवलेका फल), नडः नडम् (भीतरी बिल, नरसल नामका तृण-विशेष), कुष्ठम् कुष्ठः (कोढ़ रोग), मुण्डम् मुण्डः (शिर), शीधु शीधुः (मदिरा), बुस्तम् बुस्तः (+ वुस्तम् वुस्तः, पुस्तम् पुस्तः, श्वस्तम् श्वस्तः, चुस्तम् चुस्तः । मांसकी पुड़ी क्षी० स्वा०, भूना हुआ मांस, कटहल आदिका सारभाग), क्ष्वेडितम् क्ष्वेडितः ('वीरोंका सिंहके समान गर्जना,) क्षेम क्षेमः (= क्षेमन् । कुशल), कुट्टिमम् कुट्टिमः (मणि-पत्थर आदि जड़ा हुआ फर्श), संगमम् संगमः (दो नदी आदिका मिलाना), शतमानम् शतमानः ([5]चार रुपयाभरका प्रमाण-विशेष), अर्मम् अर्मः (आँखका रोग-विशेष), शम्बलम् शम्बलः (+ सम्बलम् सम्बलः । रास्ते का कलेवा), अव्ययम् अव्ययः (व्ययका न होना,

---

१. 'खर्वटोऽर्बुदः' इति पाठान्तरम् ।

२. 'पातकोद्योगवरकतमालामलका' इति पाठान्तरम् ।

३. 'वुस्तम् , चुस्तम , पुस्तम्, श्वस्तम्' इति पाठान्तराणि ।

४. 'खर्वट'लक्षणं यथा—

'यत्रैकतो भवेद्ग्रामो नगरं चैकतः स्मृतम् ।
मिश्रं तु खर्वटं नाम नदीगिरिसमाश्रयम्' ॥ १ ॥ इति ।

५. 'शतमान'लक्षणं स्मृतावुक्तं तद्यथा—

'द्वे कृष्णले रूप्यमाषो धरणं षोडशैव ते ।
शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च' ॥ १ ॥ इति ।

संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥
कवियं [1]कन्दकर्पासं पारावारं युगन्धरम् ।
[2]यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूषं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥
१ अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।
तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत् ॥ ३६ ॥

इति पुन्नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

लिङ्ग और संख्यासे रहित सब लिङ्गों और वचनोंमें तुल्यरूपवाला ('अव्यय' [3]संज्ञक शब्द-भेद), ताण्डवम् ताण्डवः (नाचना), कवियम् कवियः (लगाम), कन्दम् कन्दः (+ कर्म । सूरन कन्दा कण्डा आदि कन्द), कर्पासम् कर्पासः (कपास, रूई), पारम् पारः (नदी आदिका पार अर्थात् दूसरा किनारा), अवारम् अवारः (नदी आदिके इधरका किनारा), युगन्धरम् युगन्धरः (जिसमें घोड़े बैल आदि जोते जाते हैं वह रथका लम्बा काष्ठ-विशेष), यूपम् यूपः (यज्ञमें पशु बाँधनेका खम्भा । + 'पूयम् पूयः' अर्थात् पीब), प्रग्रीवम् प्रग्रीवः (खिड़की), पात्रीवम् पात्रीवः (यज्ञ-पात्र-विशेष), यूषम् यूषः (माँड़), चमसः चमसम् (यज्ञ-पात्र-विशेष), चिक्कसः चिक्कसम् (यज्ञ-पात्र-विशेष महे०, यवका आटा क्षी० स्वा०), ये ४० शब्द पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होते हैं ॥

१ अर्धर्चादिगण में 'घृत' आदि शब्दके जो पुंल्लिङ्ग आदि (नपुंसकलिङ्ग) कहे गये हैं, वे निश्चय वैदिक हैं अर्थात् उनका वेदमें ही प्रयोग होता है । अतएव यहाँ लोकमें वे नहीं कहे गये हैं । यदि प्रमाद आदिसे लोकमें भी दोनों लिङ्ग के प्रयोग मिल जायँ तो शेष (अवशिष्ट) शब्दोंके समान उनका भी पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्गमें प्रयोग होता है ॥

इति पुन्नपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

१. 'कर्मकर्पासम्' इति पाठान्तरम् ।   २. 'पूयम्' इति पाठान्तरम् ।

३. 'अव्यय'लक्षणं 'तद्धितश्चास०' (पा० सू० १ । १ । ३७) इति सूत्रीयपातञ्जलभाष्य उक्तं तथा—

'सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्' ॥ १ ॥ इति ॥

अथ स्त्रीपुंलिङ्गसंग्रहः।

१ स्त्रीपुंसयो २ रपत्यान्ता ३ द्विचतुःषट्पदोरगाः।
जातिभेदाः ४ पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह ५ मल्लकः॥ ३७॥
[1]ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः।

अथ स्त्रीपुंलिङ्गसंग्रहः।

१ यहाँसे आगे 'स्त्रीनपुंसकयोः······' (३।५।३९) के पहले तक 'स्त्री-पुंसयोः' का अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) शब्द 'स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग' होते हैं॥

२ 'अपत्य' अर्थमें विहित प्रत्यय जिनके अन्तमें हों वे शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं। ('जैसे—'उपगोरपत्यम् औपगवः औपगवी; इसी तरह गार्ग्यः गार्गी, वैदेहः वैदेही, वासिष्ठः वासिष्ठी,···')। इनमें पहला 'औपगव' शब्द पुंलिङ्ग और दूसरा 'औपगवी' शब्द स्त्रीलिङ्ग है, इसी तरह अन्यत्र भी समझना चाहिये॥

३ जाति-भेद द्विपद (दो पैरवाले) १, चतुष्पद (चार पैरवाले) २, षट्पद (छः पैरवाले) ३, और उरग (सर्प) शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ मानुषः मानुषी, ब्राह्मणः ब्राह्मणी, शूद्रः शूद्रा, पुरुषः पुरुषी,······। २ सिंहः सिंही, अजः अजा, मृगः मृगी, व्याघ्रः व्याघ्री, मार्जारः मार्जारी,······। ३ भ्रमरः भ्रमरी, भृङ्गःभृङ्गी, षट्पदः षट्पदी,······। ४ उरगः उरगी, नागः नागी, सर्पः सर्पिणी,······')॥

४ स्त्री-योग के साथ पुंस् (पुरुष) वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग होते हैं। ('जैसे—मातुलः मातुलानी-मातुली, इन्द्रः इन्द्राणी,······')। (कोई २ व्याख्याकार 'पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः' इसका सम्बन्ध पूर्वके ही साथ करते हैं)॥

५ अब कुछ स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग शब्दोंको स्वयं कहते हैं—'मल्लकः, मल्लिका (पुष्प-लता-विशेष, बेलाका फूल), ऊर्मिः (पानीका तरङ्ग। + मुनिः अर्थात् ऋषि तपस्विनी), वराटकः वराटिका (कौड़ी), स्वातिः (+ स्वाती। स्वाती नामका पन्द्रहवाँ नक्षत्र), वर्णकः वर्णिका (चन्दन), झाटलिः (पलाश वृक्षके तुल्य वृक्ष-विशेष), मनुः मनायी-मनावी-मनुः (मनुस्मृतिके निर्माता

---

१. 'मुनिर्वराटकः' इति पाठान्तरम्।

मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंल्लिङ्गसंग्रहः।

अथ स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः।

१ स्त्रीनपुंसकयो २ र्भावक्रिययोः ष्यञ् क्वचिच्च वुञ्।
औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ्प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥
३ षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछायाशालासुरानिशाः।

मनु या मनुष्य, मानुषी), मूषः मूषा (सोना-चाँदी आदि धातु गलाने की घरिया), सृपाटः सृपाटी (परिमाण-भेद), कर्कन्धूः (बेर-), यष्टिः (छड़ी, लाठी), शाटः शाटी (साड़ी), कटः कटी (कमर), कुटः कुटी (कुटिया), ये शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंल्लिङ्ग होते हैं। (इनमें एक रूपवाले शब्द दोनों लिङ्गमें तुल्यरूप होते हैं) ॥

इति स्त्रीपुंल्लिङ्गसंग्रहः।

अथ स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः।

१ यहाँसे आगे 'त्रिपु' (३।५।४१) के पहले 'स्त्रीनपुंसकयोः' इसका अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) शब्द 'स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग' होते हैं ॥

२ भाव और कर्ममें विहित ष्यञ् १ और वुञ् २ प्रत्ययान्त शब्द कहीं-कहीं (सर्वत्र नहीं किन्तु लक्ष्यानुसार) स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ (ष्यञ् प्रत्ययान्त) जैसे—औचित्यम् औचिती, मैत्र्यम् मैत्री, सामग्र्यम् सामग्री, आर्हन्त्यम् आर्हन्ती,……। २ (वुञ् प्रत्ययान्त) का 'वैरमैथुनकादिवुञ्' (३।५।४) में उदाहरण दिया गया है')। 'क्वचित्' (कहीं २ सर्वत्र नहीं) ग्रहण करनेसे 'शौक्ल्यम्, ब्राह्मण्यम्, रामणीयकम्, साहाय्यकम्, शैष्योपाध्यायिका, गार्गिका, काठिका……' यहाँपर दोनों लिङ्ग (स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) नहीं होते हैं ॥

३ षष्ठ्यन्त पूर्वपदमें रहनेपर सेना १, छाया २, शाला ३, सुरा ४, निशा ५, विकल्पसे स्त्रीलिङ्ग (स्त्रीलिङ्ग और पक्षमें नपुंसकलिङ्ग) होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ नृसेनम् नृसेना, राजसेनम् राजसेना,……। २ वृक्षच्छायम् वृक्षच्छाया, कुड्यच्छायम् कुड्यच्छाया,……। ३ गोशालम् गोशाला, पाठ-

स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥

१ आबन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् ।

त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

२ त्रिषु ३ पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ ।

इति त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

४ परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥

शालम् पाठशाला, पाकशालम् पाकशाला,……। ४ श्वसुरम् श्वसुरा,……। ५ श्वनिशम् श्वनिशा,……') ॥

१ 'आप् १, अन् २, प्रत्ययान्त शब्द उत्तरपदमें (आगे) रहें तो द्विगु समासमें वे शब्द 'नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग' होते हैं तथा 'अन्' प्रत्ययके 'न्' का लोप होता है । ('क्रमशः उदा०—१ त्रिखट्वम्‌त्रिखट्वी,……। २ त्रितक्षम्, त्रितक्षी,……') ॥

इति स्त्रीनपुंसकलिङ्गसंग्रहः ।

अथ त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

२ यहाँसे आगे 'परवल्लिङ्ग……' (३।५।४२) के पहले 'त्रिषु' का अधिकार होनेसे इसके मध्यवर्ती (बीचवाले) सब शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं ॥

३ यहाँ स्वयं कुछ त्रिलिङ्ग शब्दोंको कहते हैं—पात्री पात्रम् पात्रः (बर्तन), पुटी पुटम् पुटः (ढक्कन), वाटी वाटम् वाटः (आच्छादन, घेरा), पेटी पेटम् पेटः (बेंत आदिका बक्स), कुवलः कुवली कुवलम् (बेरका फल), दाडिमः दाडिमी दाडिमम् (अनार), ये ६ शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं ॥

इति त्रिलिङ्गसंग्रहः ।

४ स्वप्रधान (उभयपदप्रधान) इतरेतर द्वन्द्व समासमें १, और तत्पुरुष समासमें २, पर (आगे) वाले शब्दके समान लिङ्ग होता है । जैसे—इमे कुक्कुटमयूर्यौ, इमौ मयूरीकुक्कुटौ;……। २ अयं कुलब्राह्मणः, इदं ब्राह्मणकुलम्; इयमर्धपिप्पली, अयं धान्यार्धः; इयं सर्पभीतिः, इदं सर्पभयम्;……') ॥

१ अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः ।
तद्धितार्थो द्विगुः सङ्ख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥
२ बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम् ।
३ [1]गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ॥ ४४ ॥

---

१ अर्थान्त ('अर्थ' शब्द जिसके अन्तमें हो वह) १, प्र २, आदि (अति ३, सु ४, ······), अलम् ५, प्राप्त ६, आपन्न ७, पूर्वमें जिनके रहें वे शब्द, तद्धितार्थ द्विगु ८, संख्यावाचक ९, सर्वनाम १०, संख्यान्त (संख्या-वाचक शब्द जिनके अन्तमें रहें वे) ११, सर्वनामान्त (सर्वनाम जिनके अन्तमें रहे वे) १२, शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ द्विजार्था माला, द्विजार्थः सूपः, द्विजार्थं पयः,······ । २ प्रगत आचार्यः प्राचार्यः, ······ । ('आदि' से संगृहीत । ३ अतिक्रान्तः मालामतिमालः, अतिखट्वः,···। ४ सुपूज्यः, सुकुलम्, सुनगरी, ······)। ५ अलमर्थं विकायं अलञ्जीविकः, ······ । ६ प्राप्तजीविको भृत्यः, प्राप्तग्रामं कुलम् , ······ । ७ आपन्नजीविको मनुष्यः, आपन्नजीविका दासी,······। ८ पञ्चकपालः, पुरोडाशः, पञ्चकपालं पयः,······ । ९ एको विप्रः, एका वधूः, एकं वस्त्रम्; द्वौ बालकौ, द्वे बालिके, द्वे वाससी, बहवो विप्राः, बह्व्यः विप्रपत्न्यः, बहूनि वस्त्राणि; ······ । १० सर्वः, सर्वा, सर्वम्; पूर्वः, पुरुषः, पूर्वा दिक्, पूर्वं नगरम्; ······ । ११ ऊनत्रयो ब्राह्मणः, ऊनतिस्रो वध्वः, ऊनत्रीणि वस्त्राणि; ······ । १२ परमसर्वः, परमसर्वा, परमसर्वम् ; ······') ॥

२ 'दिङ्नाम' से भिन्न बहुव्रीहि त्रिलिङ्ग होता है। ('जैसे—बहुधनः, बहुधना, बहुधनम्; ······')। 'आदिङ्नाम्नाम्' के ग्रहण करनेसे 'उत्तरस्यां पूर्वस्यां च मध्ये या दिक् सा 'उत्तरपूर्वा' दिक्,······' में त्रिलिङ्ग नहीं होता है ॥

३ गुण १, द्रव्य २, क्रिया ३, का योगनिमित्त है जिनका वे शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, शुक्लं वस्त्रम् । कृष्णो देहः, कृष्णा तनुः, कृष्णं शरीरम्; ······ । २ दण्डी पुरुषः, दण्डिनी स्त्री, दण्डि कुलम्; ······। ३ पाचको विप्रः, पाचिका ब्राह्मणी, पाचकं विप्रकुलम्;······')॥

---

१. 'गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधयः' इति पाठान्तरम् ।

१ कृतः कर्तर्यसंज्ञायां २ कृत्याः कर्तरि कर्मणि।
३ अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः॥ ४५॥
४ षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम्।

१ कर्ता अर्थमें विहित संज्ञाभिन्न (नामको छोड़कर) 'कृत्' प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिंग होते हैं। (जैसे—कर्ता पुरुषः, कर्त्री स्त्री, कर्तृ कलत्रम्; कुम्भकारः पुरुषः, कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कलत्रम् ;······')। 'असंज्ञायाम्' ग्रहण करनेसे 'ग्रहः, व्याघ्रः, धनञ्जयः, हरिः, प्रजा, ······' में और 'कर्तरि' ग्रहण करनेसे 'कृतिः, ······' में त्रिलिङ्ग नहीं होता है॥

२ कर्ता १ और कर्म २ अर्थमें विहित संज्ञाभिन्न 'कृत्य' प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं। ('क्रमशः उदा०—१ वास्तव्यः, वास्तव्या, वास्तव्यम्;···'। २ कर्तव्यो धर्मः, कर्तव्या गुरुजनसेवा, कर्तव्यं सन्ध्योपासनम् ; ······')। 'कर्तृकर्मणोः' के ग्रहण करनेसे स्थातव्यं त्वया, ब्रह्मभूयम्, एधितव्यं त्वया...' में त्रिलिङ्ग नहीं होता है॥

३ 'उससे रँगा गया है' आदि ('आदि' से 'आगत १, युक्त २, देवता ३, इष्ट ४, ······') अर्थमें विहित 'अण्' १, आदि प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं। (जैसे—हारिद्रः पटः, हारिद्री शाटी, हारिद्रं वस्त्रम् ; कौसुम्भम्, कौसुम्भी, कौसुम्भः, लाक्षिकः, लाक्षिकी, लाक्षिकम् ; ······। ('आदि' से संगृहीत १ 'आगत' अर्थमें जैसे—माथुरो विप्रः, माथुरी महिषी, माथुरं वस्त्रम् ;······। २ कार्तिकी पौर्णमासी, कार्तिको मासः, कार्तिकं दिनम्;···। ३ ऐन्द्रो मन्त्रः, ऐन्द्री ऋक्, ऐन्द्रं हविः ···'। ४ वासिष्ठो मन्त्रः, वासिष्ठी ऋक्, वासिष्ठं साम;···')। इसी तरह अन्यान्य अर्थ और उदाहरणोंका तर्क स्वयं कर लेना चाहिये')॥

४ [१] षट्संज्ञक १, युष्मद् २, अस्मद् ३, अव्यय ४, और तिङन्त ५, शब्द तीनों लिङ्गोंमें समान रूपवाले होते हैं। (क्रमशः उदा०—१ कति पुरुषाः, कति स्त्रियः, कति वस्त्राणि; पञ्च षट् सप्त अष्टौ वा ब्राह्मणाः, पञ्च षट् सप्त अष्टौ वा ब्राह्मण्यः, पञ्च षट् सप्त अष्टौ वा वस्त्राणि; ······। २-३ त्वम् अहं वा पुरुषः, त्वम् अहं वा स्त्री, त्वम् अहं वा कुलम् ;·········। ४ उच्चैः

१. 'डति च' (पा० सू० १।१।२५) इत्यनेन 'कति' शब्दस्य, ष्णान्ताः षट्' (पा० सू० १।१।२४) इत्यनेन च 'पञ्चन्, षट्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्' आदि नान्तशब्दानां 'षट्' संज्ञा विधीयते।

१ परं विरोधे २ शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

नीचैः पुरस्तात् पश्चाद् वा प्रासादः, उच्चैः नीचैः पुरस्तात् पश्चाद्वा पाठशाला, उच्चैः नीचैः पुरस्तात् पश्चात् वा गृहम् ,…… । ५ पुरुषः पचति, स्त्री पचति, कुलं पचति:……') ॥

१ लिङ्ग-विधायक वचनोंको यदि आपसमें विरोध (दो या अधिक वचनों से दो या अधिक लिङ्ग प्राप्त) हों तो पर (अन्त) वाला लिङ्ग होता है । ('जैसे—'धीः, भूः,……' में 'स्त्रियामीदूद्विरामैकाच्' (३।५।२) चरितार्थ है और 'कर्ता, पाचकः,……' में 'कृतः कर्तर्यसंज्ञायाम्' (३।५।४५) चरितार्थ है, फिर 'नीः, लूः' यहाँ दोनोंकी (१ ले वचनसे स्त्रीलिङ्ग और २ रे वचनसे त्रिलिङ्गकी) प्राप्ति है तब पर (आगेवाले) वचनसे उक्त लिङ्ग (त्रिलिङ्ग) ही होगा । इसी तरह अन्यान्य उदाहरणोंका तर्क कर लेना चाहिये') ॥

२ शेष (बाकी) लिङ्ग शिष्टोंके प्रयोगके अनुसार जानना चाहिये । ('जैसे—१ 'चालनी तितउः पुमान्' (२।९।२६) इस वचनसे 'तितउ' शब्दको पुंल्लिङ्ग कहा गया, किन्तु 'तितउ परिवपनं भवति' (पा० भा० पृ० ४२) इस भाष्यके प्रयोगसे 'तितउ' शब्द नपुंसकलिङ्ग भी होता है । २ 'कलिका कोरकः पुमान्' (१।४।१६) इस वचनसे 'कोरक' शब्दको पुंल्लिङ्ग कहा गया है तो भी 'कोरकाणि' इस माघ कविके प्रयोगसे वह 'कोरक' शब्द नपुंसकलिङ्ग भी होता है') । यहाँ जो नहीं कहा गया है उसे लक्ष्यसे समझना चाहिये । ('उदा०-१ अव्यक्त गुण-लिङ्गमें नपुंसकलिङ्ग होता है, जैसे—किं तस्या 'जातं' पुमान् स्त्री वा'… । २ 'तयप्' प्रत्ययान्त धर्मवृत्ति शब्द स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक-लिङ्ग होते हैं, जैसे—वर्णानां चतुष्टयी, वर्णानां चतुष्टयम् , वेदानां त्रयी, वेदानां त्रयम् ,…… । छन्द (वेद) में स्वार्थविहित 'अण्' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं, जैसे—गायत्री एव गायत्रम् , अनुष्टुबेवानुष्टुभम् ,…… । ४ 'श्तिप्' अन्तमें हो जिसके ऐसा इक् (इ, उ, ऋ, लृ) अन्तवाला शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है, जैसे—इयं वृद्धिः, इयं पचतिः,…… । ५ 'प्रमाण' आदि शब्द नित्य नपुंसक-लिङ्ग होते हैं, जैसे—वेदाः प्रमाणम् , स्मृतयः प्रमाणम् ,……') ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

काण्डसमाप्तिः—

१ [1]इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।
सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना' परपर्यायके
'अमरकोषे' तृतीयः 'सामान्यकाण्डः' समाप्तः ।

काण्डसमाप्तिः—

१ श्री 'अमरसिंह' के बनाये हुए 'नामलिङ्गानुशासन' (अमरकोष) नामके ग्रन्थमें 'सामान्यकाण्ड' नामका तीसरा प्रकरण अङ्गसहित समर्थित होकर पूर्ण हुआ॥

बुधस्य सन्देहहरो बुधाग्रयः शास्त्राधिनाथो बुध 'लोकनाथः' ।
शास्त्रार्थकान्तारहरिप्रवीरो विपक्षपक्षस्य हि 'पूर्णचन्द्रः' ॥ १ ॥
वेदाङ्गषट्शास्त्रसमुद्रपारङ्गतैर्बुधैश्चापि प्रभातवन्द्यः ।
स्वान्तेवसत्पूरितभू 'त्रिवेदी श्रीदेवनारायण' नामधेयः ॥ २ ॥
शिरसैतद्गुरुश्रेष्ठपादाब्जद्वन्द्वरेणुभिः।घनाभिलम्बसज्ज्ञानादित्यनष्टमनस्तमाः॥३॥
'विहार' प्रान्त 'आरा' ख्ये मण्डले पावने शुभे ।
'केसठ' ग्रामवास्तव्य 'रामस्वार्थ' सुधीसुतः ॥ ४ ॥
'हरगोविन्दमिश्रा'ख्यो 'नामलिङ्गानुशासनीम्' ।
व्याख्यां 'मणिप्रभा'नाम्नीं व्यधाद्बालोपयोगिनीम् ॥ ५ ॥
गुरुप्रसादसंलब्धज्ञानेन निर्मिता शुभा । पूज्यश्रीगुरुपादाब्जेष्वेव भूयः समर्पिता ॥ ६॥
नेत्राङ्काङ्कशशाङ्कसंमितसमे श्रीवैक्रमे वत्सरे
भाद्रे मास्यसिते दले वसुतिथौ सौम्ये निशीथक्षणे ।
कोषस्या'मरसिंह'पण्डितकृतेर्व्याख्या सुपूर्णा शुभा
भूयाच्छात्रगणस्य बोधकृतये लोकस्य विघ्नोज्झनिः ॥ ७ ॥

इति पण्डितप्रवरश्री'रामस्वार्थमिश्र'तनूज-श्री 'हरगोविन्दमिश्र'विरचितायां 'मणिप्रभा'ख्या'मरकोष' व्याख्यायां तृतीयः 'सामान्यकाण्डः' समाप्तः ।

---

१. 'इत्यमर''''''समर्थितः' इत्ययं श्लोकः केवलं महेश्वरेणैव व्याख्यातः । मा० दी० मूले, क्षी० स्वा० व्याख्यायां च [ ] ईदृक्कोष्ठे मूलमात्रमुपलभ्यत इत्यवधेयम् ।

२. 'व वा यथा तथेवैवम्' (३।४।९) इति ग्रंथकारोक्तेरत्र 'वा' शब्द इवार्थक इत्यवधेयम् ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

परिशिष्टम्

आदित्याः (१।१।१०)—हरिवंशोक्ता द्वादशादित्यकथाऽत्रोच्यते, तथा हि—
'मरीचात्कश्यपाज्जातास्तेऽदित्या दक्षकन्यया। तत्र शक्रश्च विष्णुश्च जज्ञाते पुनरेव ह॥
अर्यमा चैव धाता च त्वष्टा पूषा च भारत। विवस्वान् सविता चैव मित्रो वरुण एव च॥
अंशो भगश्चातितेजा आदित्या द्वादश स्मृताः'। इति शब्दकल्पद्रुमकोशः॥

काश्यान्त्वन्य एव द्वादशादित्याः विद्यन्त इत्युक्तं काशीखण्डे। तथा हि—
इति काशीप्रभावज्ञो जगच्चक्षुस्तमोनुदः। कृत्वा द्वादशधाऽऽत्मानं काशीपुर्यां व्यवस्थितः॥
लोलार्क उत्तरार्कश्च शाम्बादित्यस्तथैव च। चतुर्थो द्रुपदादित्यो वृद्धकेशवसञ्ज्ञकौ॥
दशमो? विमलादित्यो गङ्गादित्यस्तथैव च। द्वादशश्च यमादित्यः काशीपुर्यां घटोद्भव॥
तमोऽधिकेभ्यो दुष्टेभ्यः क्षेत्रं रक्षन्त्यमी सदा'।

इति काशीखण्डे अ० ४६; वाचस्पत्याभिधानस्य ३८०६ तमे पृष्ठे॥

यथा वा—विष्णुधर्मोत्तरे भारते चोक्ता द्वादशादित्याः—
'धाता मित्रोऽर्यमा रुद्रो वरुणः सूर्य एव च। भगो विवस्वान् पूषा च सविता दशमस्तथा॥
एकादशस्तथा त्वष्टा विष्णुर्द्वादश उच्यते'। इति॥

द्वादशमासभेदेनान्य एव द्वादशादित्या आदित्यहृदये उक्तास्तेऽत्र निर्दिश्यन्ते।
तथा हि—
'अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा। चैत्रे मासि च वेदज्ञो वैशाखे तपनः स्मृतः॥
ज्येष्ठे मासि तपेदिन्द्र आषाढे तपते रविः। गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा॥
इषे हिरण्यरेताश्च कार्तिके च दिवाकरः। मार्गशीर्षे तपेच्चैत्रः पौषे विष्णुः सनातनः॥
इत्येते द्वादशादित्याः काश्यपेयाः प्रकीर्तिताः'।
इति वाचस्पत्याभिधानस्य ६९६ तमे पृष्ठे॥

विश्वेदेवाः (१।१।१०)—विश्वेदेवा दश प्रोक्तास्तेषां नामान्युल्लिख्यन्ते।
तथा हि—
'ऋतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामः कालस्तथा धुरिः। रोचनोमाद्रवाश्चैव तथा चान्यः पुरूरवाः॥
विश्वेवा भवन्त्येते दश श्राद्धेषु पूजिताः'। इति वाचस्पत्याभिधाने ४९१६ तमे पृष्ठे॥
अन्यच्च वह्निपुराणे—
'ऋतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामः कालस्तथा ध्वनिः। रोचकश्चाद्रवाश्चैव तथा चान्यः पुरूरवाः॥

विश्वेदेवा भवन्त्येते दश सर्वत्र पूजिताः'॥ इति वह्निपुराणे गणनामाध्यायः'।
इति शब्दकल्पद्रुमकोशस्य ४४० पृष्ठे।

वसवः (१।१।१०)—वसवोऽष्टौ। ते यथा—

'धरो ध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवानिलोऽनलः। प्रत्यूषश्च प्रभासश्च **वसवोऽष्टा**विति स्मृताः'॥

इति 'भा० आ० ६६ अ०' इति वाचस्पत्याभिधानस्य ४८६३ तमे पृष्ठे।

धरो ध्रुवश्च सोमश्च विष्णुश्चैवानिलोऽनलः। प्रत्यूषश्च प्रभासश्च **वसवोऽष्टौ** क्रमात्स्मृताः'॥

इति भरतः। दक्षो द्वितीयजन्मनि षष्ठमन्वन्तरे असिक्न्यां पत्न्यां षष्टिः कन्या जनयामास। ताः प्रजापतिभ्यो दत्तवान्। धर्माय दश, तासां नामानि—'भानुर्लम्बा ककुद्यामिर्विश्वा साध्या मरुत्वती। वसुर्मुहूर्ता सङ्कल्पा। आसां मध्ये वसोरष्टौ वसवः पुत्रा जाताः। ते यथा—१ द्रोणः, २ प्राणः, ३ ध्रुवः, ४ अर्कः, ५ अग्निः ६ दोषः, ७ वास्तुः ८ विभावसुश्चेति'[१]।

मतान्तरोक्ता अष्टौ वसवो यथा—

'१ धरः, २ ध्रुवः, ३ सोमः, ४ सावित्रः, ५ अनिलः, ६ अनलः, ७ प्रत्यूषः, ८ प्रभासश्चेति' महाभारते दानधर्मः। अपि च—

'आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोऽनलः। प्रत्यूषश्च प्रभासश्च **वसवोऽष्टौ** प्रकीर्तिताः'॥

इति वह्निपुराणे काश्यपीयप्रजासर्गनामाध्यायः। कूर्मपुराणे १४ तमाध्यायश्चेति॥

तुषिताः (१।१।१०) गणदेवताभेदे १२ मन्वन्तरभेदे भिन्ननामानो यथा—

'पूर्वमन्वन्तरे श्रेष्ठा द्वादशासन् सुरोत्तमाः। तुषिता नाम तेऽन्योन्यमूचुर्वैवस्वतोऽन्तरे॥
उपस्थितेऽतियशसश्चाक्षुषस्यान्तरे मनोः। समवायीकृताः सर्वे समागम्य परस्परम्॥
आगच्छत द्रुतं देवा अदितिं संप्रविश्य वै। मन्वन्तरे प्रसूयामस्तत्र श्रेयो भविष्यति॥
एवमुक्त्वा तु ते सर्वे चाक्षुषस्यान्तरे मनोः। मारीचात्कश्यपाज्जातास्तेऽदित्या दक्षकन्यया॥
तत्र विष्णुश्च शक्रश्च जज्ञाते पुनरेव च। अर्यमा चैव धाता च त्वष्टा पूषा तथैव च॥
विवस्वान् सविता चैव मित्रो वरुण एव। अंशो भगश्चादितिजा आदित्या द्वादश स्मृताः॥
चाक्षुषस्यान्तरे पूर्वमासन् ये तुषिताः सुराः।
वैवस्वतोऽन्तरे ते वै आदित्या द्वादश स्मृताः॥'

इति हरिवंशे ३याध्यायः॥ तथा चादित्यरूपा द्वादश—

'प्राणापानावुदानश्च समानो व्यान एव च। चक्षुः श्रोत्रं रसो घ्राणस्पर्शौ बुद्धिर्मनस्तथा॥

---

१. अत्रैवाग्रे प्रत्येकस्य सन्ततिवर्णनं नाम चाग्रे विस्तरेण वर्णितम्।

द्वादशैते तु तुषिता देवाः स्वारोचिषेऽन्तरे'। इति सारसुन्दरीवचनाद् द्वादश।
तोषः प्रतोषः सन्तोषो भद्रश्शान्तिरिडस्पतिः। इध्मः कविर्विभुः स्वाहासुदेवो रोचनो द्विषट्॥
तुषिता नाम ते देवा आसन् स्वायम्भुवेऽन्तरे'॥
इति शब्दार्थचिन्तामणिधृतवाक्योक्त्या षट्त्रिंशत्॥
इति वाचस्पत्याभिधानस्य ३३३७ तमे पृष्ठे, शब्दकल्पद्रुमस्य ६४० पृष्ठे च॥

ये च द्वादश इति मन्यन्ते, त एकैकमन्वन्तरापेक्षया द्वादशेति वर्णयन्ति समष्ट्यभिप्रायेण षट्त्रिंशदिति विवेकः। तदभिप्रायेणैव 'षट्त्रिंशत्तुषिता मताः' इत्युक्तं टिप्पणे इत्यवधेयम्॥

आभास्वराः (१।१।१०)—आभास्वराः[1] द्वादश। तथाहि—

'आत्मा ज्ञाता दमो दान्तः शान्तिर्ज्ञानं शमस्तपः।
कामः क्रोधो मदो मोहो द्वादशाभास्वरा इमे'॥

इति वाचस्पत्याभिधाने ७५८ तमे पृष्ठे, शब्दकल्पद्रुमस्य १७९ तमे पृष्ठे च॥

अनिलः (१।१।१०)—अग्निपुराणे वायोरूनपञ्चाशन्नामान्युक्तानि, तानीह प्रोच्यन्ते। तथा हि—

'एकज्योतिश्च द्विज्योतिस्त्रिज्योतिर्ज्योतिरेव च। एकशक्रो द्विशक्रश्च त्रिशक्रश्च महाबलः॥
इन्द्रश्च मत्यदृश्यश्च ततः प्रतिसकृत्परः। मितश्च संमितश्चैव सुमितश्च महाबलः॥
ऋतजित्सत्यजिच्चैव सुषेणः सेनजित्तथा। अतिमित्रोऽनमित्रश्च पुरुमित्रोऽपराजितः॥
ऋतश्च ऋतवाहश्च धर्ता च धरुणो ध्रुवः। विधारणो नाम तथा देवदेवो महाबलः॥
ईदृक्षश्चाप्यदृक्षश्च एते दश मिताशिनः। प्रतिनः प्रसदृक्षश्च सभरश्च महायशाः॥
धाता दुर्गो धृतिर्भीमस्त्वभियुक्तस्त्वपात्सहः। द्युतिर्वपुरनाधृष्योऽथ वासः कामो जयो विराट्॥
इत्येकोनाश्च पञ्चाशन्मरुतः पूर्वसम्भवाः'॥ इति वह्निपुराणे गणनामाध्यायः॥

हेमाद्रौ दानखण्डे वायुपुराणोक्तान्येकोनपञ्चाशन्मरुन्नामानि, तेषां सप्त गणाश्चोक्तास्तेऽत्र निर्दिश्यन्ते। तथा हि—मरुन्नामानि तु वायुपुराणे—

'ततस्तेषां तु नामानि मातापित्रोः ? प्रचक्रतुः। तद्विधैः कर्मभिश्चैव मरुतान्तौ पृथक् पृथक्॥
शुक्रज्योतिस्तथाऽऽदित्यश्चित्रज्योतिस्तथाऽपरः।
सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मान् सत्यहा ऋतपास्तथा॥

---

१. इदं 'आभास्वराश्चतुःषष्टिः' इति टिप्पणीवचनविरुद्धमपि ६४ भेदानां क्वाप्यनुपलम्भेद्वादशैवात्र निर्दिष्टाः। ६४ भेदान् सूचयतो विदुषः परं कृतज्ञो भवेयम्।

प्रथमोऽयं गणः प्रोक्तो द्वितीयं तु निबोधत । ऋतजित्सत्यजिच्चैव सुषेणः सेनजित्तथा ॥
अन्तिमित्रो ह्यमित्रश्च दूरेमित्रस्तथा परः । गण एष द्वितीयस्तु तृतीयोऽयं निबोधत ॥
ऋतः सत्यो ध्रुवो धर्ता विधर्ताऽथ विधारयः । धरुणश्च तृतीये तु चतुर्थं मे निबोधत ॥
ध्वान्तश्च धुनिश्चैव सभरश्च तथा गणः । ईदृक्षासः पुरुषश्चैव ! अन्यादृक्षास एव नः ॥
संमिताः समदृक्षासः प्रतिदृक्षास वै गणः । मरुतेन्द्रः सरभसस्तथा देवविशोऽपरः ॥
यज्ञश्चैवानुवर्त्मानस्तथाऽन्यो मानुषीविशः । दैत्यदेवाः समाख्याताः सप्तैते सप्तका गणाः ॥
एते ह्येकोनपञ्चाशन्मरुतो नामतः स्मृताः' ॥ इति हेमाद्रौ दानखण्डे ७७६ तमे पृष्ठे ॥

वायवः पञ्चैवेति केचिदाहुस्तेऽत्र लिख्यन्ते । तथा हि—'वायुश्च पञ्चभूतान्तर्गतभूतविशेषः । तद्विशेषविवरणं यथा-वायवः प्राणापानसमानव्यानोदानाः । तत्र १ प्राणो नाम प्राग्गमनवान्नासाग्रवर्ती, २ अपानो नाम अवाग्गमनवान् पाय्वादिस्थानवर्ती, ३ व्यानो नाम विष्वग्गमनवान् अखिलशरीरवर्ती, ४ उदानो नाम कण्ठस्थानीय ऊर्ध्वगमनवानुत्क्रमणवायुः, ५ समानो नाम शरीरमध्यगताशितपीतान्नादिसमीकरणकरः (समीकरणन्तु परिपाककरणं रसरुधिरशुक्रपुरीषादिकरणम्) इति ।

अन्ये तु '१ नाग २ कूर्म ३ कृकर ४ देवदत्त ५ धनञ्जया'ख्याः पञ्चान्ये वायवः सन्तीत्याहुः । तत्र १ नाग उद्गिरणकरः, २ कूर्मो निमीलनादिकरः, ३ कृकरः क्षुधाकरः, ४ देवदत्तो जृम्भणकरः, ५ धनञ्जयः पोषणकरः । एतेषां प्राणादिष्वन्तर्भावात्पञ्चैवेति केचित्' । इति शब्दकल्पद्रुमकोषः २४१ पृष्ठे । वाचस्पत्युक्तान्येकोनपञ्चाशद्वायुनामानि तत्रैव शब्दकल्पद्रुमकोषे १६४–१६८ तमे पृष्ठे 'अनिल' शब्दविवरणे सविस्तरं द्रष्टव्यानि ॥

महाराजिकाः (१।१।१०)—एषां विंशत्यधिकशतद्वयं भेदाः सन्ति ॥

साध्याः (१।१।१०)—साध्या द्वादशविधास्तेषां नामानि यथा—

'मनो मन्ता तथा प्राणो नरोऽपानश्च वीर्यवान् । निर्भयो नरकश्चैव दंशो नारायणो वृषः ॥

प्रभुश्चेति समाख्याताः साध्या द्वादश देवताः' ।

इति वाचस्पत्याभिधानस्य ५२७९ तमे पृष्ठे ॥

रुद्राः (१।१।१०)—रुद्रा एकादश सन्ति । ते यथा—१ अजः, २ एकपाद्, ३ अहिब्रध्नः, ४ पिनाकी, ५ अपराजितः, ६ त्र्यम्बकः, ७ महेश्वरः,

८ वृषाकपिः, ९ शम्भुः, १० हरणः, ११ ईश्वरश्चेति, इति महाभारते दानधर्मः ॥
अपि च—

'अजैकपादहिर्बुध्न्यो विरूपाक्षः सुरेश्वरः । जयन्तो बहुरूपश्च त्र्यम्बकोऽप्यपराजितः ॥
वैवस्वतश्च सावित्रो हरो रुद्रा इमे स्मृताः' । इति जटाधरः ॥ अन्यच्च—
अजैकपादहिर्बुध्नस्त्वष्टा रुद्रश्च वीर्यवान् । त्वष्टुश्चैवात्मजः पुत्रो विश्वरूपो महातपाः ॥
हरश्च बहुरूपश्च त्र्यम्बकश्चापराजितः । वृषाकपिश्च शम्भुश्च कपर्दी रैवतस्तथा ॥
एकादशैते कथिता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः' । इति गारुडे ६ तमेऽध्याये ॥

अग्निपुराणे 'त्वष्ट्'स्थाने 'कृत्तिवासाः' इत्युक्तम् ॥ अन्यच्च—
'अजैकपादहिर्बुध्न्यो विरूपाक्षोऽथ रैवतः । हरश्च बहुरूपश्च त्र्यम्बकश्च सुरेश्वरः ॥
सावित्र्यश्च जयन्तश्च पिनाकी चापराजितः । एते रुद्राः समाख्याता एकादश गणेश्वराः
इति मात्स्ये ५ मेऽध्याये' इति शब्दकल्पद्रुमकोषस्य १६७ तमे पृष्ठे ॥

हेमाद्रौ ब्रह्माण्डपुराणे अष्टैव रुद्राः समाख्यातास्तेऽत्र यथाक्रमं स्त्रीपुत्रनामसहिता निर्दिश्यन्ते । तथा हि—

रुद्रो भवश्च शर्वश्च ईशः पशुपतिस्तथा । भीम उग्रो महादेव एते रुद्राः प्रकीर्तिताः ॥
जटिलाश्चर्मवसनाः सर्वे खट्वाङ्गशूलिनः । तेषां भार्याश्च पुत्रांश्च नामतः कथयामि ते ॥
सौवर्चलाऽङ्गवादा च विकेशी च शिवा तथा ।
स्वाहा दिशा च दीक्षा च रोहिणी च तथा क्रमात् ॥
ताश्च स्त्रीवेषधारिण्यः सर्वाभरणभूषिताः । रुद्रपत्न्य इमास्त्वासौ पुत्रांश्च शृणु नारद ॥
शनैश्चरश्च शुक्रश्च लोहिताङ्गो मनोजवः । वसन्तः स्वगः सन्तानो बुधश्चैव यथाक्रमम्' ॥
इति हेमाद्रेर्दानखण्डे ७४५ तमे पृष्ठे ॥

षडभिज्ञः (१।१।१४)—अभिधर्मकोषोक्ताः षडभिज्ञा यथा—

१ ऋद्धि-श्रोत्र-मनः-पूर्वनिवास-च्युत्युपपत्क्षयेत् ज्ञानसाक्षा क्रियाभिज्ञा षड्विधाः । २ दिव्यश्रोत्रज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा । ३ चेतःपर्यायज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा । ४ पूर्वनिवासानुस्मृतिज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा । ५ च्युत्युपपादनज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा । ६ आश्रवक्षयज्ञानसाक्षात्क्रियाभिज्ञा' । इति अभिधर्मकोषः ७।४२ ॥

दशबलः (१।१।१४)—अभिधर्मकोषे दशबलानि बुद्धस्यान्यान्येवोक्तानि । तानि यथा—

'स्थानाध्यक्षाविमोक्षेषु क्षान्तौ च प्रतिपत्सु वा । दश द्वे संवृतिज्ञाने षड्वा दश वा क्षये ॥

१ स्थानास्थानज्ञानबलम् । २ कर्मविपाकज्ञानबलम् । ३—३ ध्यान—विमोक्ष—

समाधि-समापत्तिज्ञानबलानि। ७ सर्वत्रगामिनीप्रतिपज्ज्ञानबलम्। ८—९ पूर्व-निवासबलम्, च्युत्युत्पादनबलञ्च। १० आस्रवक्षयज्ञानबलम्'। इति अभिध-र्मकोषः ७।२९॥

अष्टमूर्तिः (श्लो० १४—१।१।३४)—अथाष्टमूर्तेः प्रत्येकमूर्तिनामान्युच्यन्ते। तथा हि—१ 'क्षितिमूर्तिः शर्वः, २ जलमूर्तिर्भवः, ३ अग्निमूर्ती रुद्रः, ४ वायुमूर्ति-रुग्रः, ५ आकाशमूर्तिर्भीमः, ६ यजमानमूर्तिः पशुपतिः, ७ चन्द्रमूर्तिर्महादेवः, ८ सूर्यमूर्तिरीशानश्चेति तन्त्रशास्त्रम्। एताः शरभरूपिशिवस्याष्टपादा इति कालि-कापुराणम्॥ अन्यच्च—

'अथाग्नी रविरिन्दुश्च भूमिरापः प्रभञ्जनः। यजमानः खमष्टौ च महादेवस्य मूर्त्तयः'॥
इति 'शब्दमाला' इति शब्दकल्पद्रुमस्य १४९ तमे पृष्ठे॥

सप्तमातरः (श्लो० १६—१।१।३५)—भरतेन सप्त मातर उक्तास्तथा हि—

'ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री रौद्री वाराहिकी तथा।
कौबेरी चैव कौमारी **मातरः सप्त** कीर्तिताः'॥ इति।

अन्याश्च सप्तमातरो यथा—

'आदौ माता गुरोः पत्नी ब्राह्मणी राजपत्निका।
गावी धात्री तथा पृथ्वी सप्तैता मातरः स्मृताः'॥ इति॥

अन्यत्राष्टमातरोऽप्युक्तास्तथा हि—

'ब्राह्मी माहेश्वरी चैव वाराही वैष्णवी तथा।
कौमारी चैव चामुण्डा चर्चिकेत्यष्ट **मातरः**'॥ इति॥

श्राद्धतत्त्वे बह्वृचपरिशिष्टे गौर्यादिषोडशमातरोऽप्युक्तास्ता यथा—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
शान्तिः पुष्टिर्धृतिस्तुष्टिरात्मदेवतया सह।
आदौ विनायकः पूज्यः अन्ते च कुलदेवताः॥ इति॥

वैष्णवपूज्यास्त्वन्या एव षोडश मातरः उक्तास्तथा हि—

'यत्र मातृगणाः पूज्यास्तत्र होताः प्रपूजयेत्। सदा भगवती पौर्णमासी पद्मान्तरङ्गिका॥
गङ्गा कलिन्दतनया गोपी वृन्दावती तथा। गायत्री तुलसी वाणी पृथिवी गौश्च वैष्णवी॥
श्रीयशोदा देवहूतिदेवकीरोहिणीमुखाः। श्रीसीता द्रौपदी कुन्ती अपरा या महर्षयः॥
रुक्मिण्याद्यास्तथा चाष्टमहिषी याश्च ता अपि'।

इति पाद्मे उत्तरखण्डे ७८ तमेऽध्याये' इति शब्दकल्पद्रुमस्य ६९० तमे पृष्ठे॥

दुर्गाः (११।३७)—दुर्गासप्तशत्यां नव दुर्गा उक्ताः । तथा हि—
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी । तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीतथा । सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥
नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः'। इति दुर्गासप्तशतीकवचम् ३—५ ॥

निधिः (श्लो० ३०—१।१।७१) मूले नवनिधय उक्ताः । किन्तु हारावल्यां 'खर्वश्च निधयो नव' इत्यस्य स्थाने 'वर्चोऽपि निधयो नव' इति पाठ उपलभ्यते । मार्कण्डेयपुराणे तु 'वर्च' इति हित्वाऽष्टावेवोक्ता' इति भरतः । तल्लक्षणं फलञ्च मार्कण्डेयपुराणस्य ६८ तमेऽध्याये द्रष्टव्यम् ॥

सन्ध्या (१।४।३)—मुहूर्तचिन्तामणौ, तद्व्याख्यायां पीयूषधारायां चोक्तं सन्ध्यालक्षणं निर्दिश्यते । तथा हि—

'सन्ध्या त्रिनाडीप्रमितार्कबिम्बादर्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र ।
चेद्याम्यसौम्ये अयने क्रमात्स्तः पुण्यौ तदानीं परपूर्वघस्रौ' ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणिः ३।७॥ अत्र पीयूषधाराख्यटीकाकारः । 'तदाह वराहः—

अर्धास्तमितानुदितात्सूर्यादस्पष्टभं नभो यावत् ।
तावत्सन्ध्याकालश्चिह्नैरेतैः फलं ब्रूयात्' ॥ इति ॥

सन्ध्ययोर्लक्षणान्तरे । तत्प्रमाणमाह नारदः—
'अर्द्धास्तमनसन्ध्या हि घटिकात्रयसंमिता । तत्रैवार्द्धोदयात्प्रातर्घटिकात्रयसंमिता' ॥इति॥
स्कन्दपुराणेऽपि—

'उदयात्प्राक्तनी सन्ध्या घटिकात्रयमुच्यते ।
सोऽयं सन्ध्या त्रिघटिका हस्तादुपरि भास्वतः' ॥ इति ॥

अत्र सन्ध्यालक्षणेऽर्द्धास्तमितानुदितवाक्यस्य स्कन्दपुराणीयवाक्यस्य च यव-व्रीहिवद्विकल्पः' इति ॥

कल्पः (१।४।२१)—त्रिंशत्कल्पस्य ब्रह्मणो मासो जायते । तेषाञ्च त्रिंश-त्कल्पानां नामान्यत्र निर्दिश्यन्ते । तथा हि—'अथ कल्पदानं मत्स्यपुराणे—
'कल्पानुकीर्तनं वक्ष्ये सर्वपापप्रणाशनम् । यस्यानुकीर्तनादेव वेदपुण्येन युज्यते ॥
प्रथमः श्वेतकल्पस्तु द्वितीयो नीललोहितः । वामदेवस्तृतीयस्तु ततो रथन्तरोऽपरः ॥
रौरवः पञ्चमः प्रोक्तः षष्ठः प्राण इति स्मृतः। सप्तमोऽथ बृहत्कल्पः कन्दर्पोऽष्टम उच्यते ॥
सद्योऽथ नवमः प्रोक्त ईशानो दशमः स्मृतः । ध्यान एकादशः प्रोक्तस्तथा सारस्वतोऽपरः॥
त्रयोदश उदानस्तु गारुडोऽथ चतुर्दशः । कूर्मः पञ्चदशो ज्ञेयः पौर्णमासी प्रजायते ॥

षोडशो नारसिंहस्तु समानस्तु ततः परः। आग्नेयोऽष्टादशः प्रोक्तः सोमकल्पस्तथा परः॥
मानवो विंशतिः प्रोक्तस्तत्पुमानिति चापरः। वैकुण्ठश्चापरस्तद्वल्लक्ष्मीकल्पस्तथा परः॥
चतुर्विंशस्तथा प्रोक्तः सावित्रीकल्पसंज्ञकः। पञ्चविंशतिमो घोरो वाराहस्तु ततोऽपरः॥
सप्तविंशोऽथ वैराजो गौरीकल्पस्तथाऽपरः। माहेश्वरस्तथा प्रोक्तस्त्रि रो यत्र घातितः॥
पितृकल्पस्तथा ते तु या कुहूर्ब्रह्मणः स्मृता। इत्ययं ब्रह्मणो मासः सर्वपापप्रणाशनः'॥

इति हेमाद्रौ दानखण्डे ७८२ तमे पृष्ठे॥

भैरवम् (१।७।१९)—अयं भैरवशब्दः पुंल्लिङ्गत्वे देवविशेषस्य वाचकः। तस्य चाष्टौ भेदाः सन्ति। ते यथा—१ असिताङ्गः, २ रुरुः, ३ चण्डः, ४ क्रोधः, ५ उन्मत्तः, ६ कुपितः, ७ भीषणः, ८ संहारश्चेति॥

द्वीपः (१।१०।८—अग्निपुराणे सप्त द्वीपा उक्ताः। ते च लवणादिभिः सप्तसमुद्रैरावृता इत्युक्तम्। तथा हि—

'जम्बूप्लक्षाह्वयौ द्वीपौ शाल्मलिश्चापरो महान्।
कुशः क्रौञ्चस्तथा शाकः पुष्करश्चेति सप्तमः॥
एते द्वीपाः समुद्रैस्तु सप्त सप्तभिरावृताः। लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिदुग्धजलैः समम्'॥

इत्यग्निपुराणम् अध्यायः १०८ श्लो० १—२॥

नल्वः—गव्यूतिः (२।१।१८)—हेमाद्रौ दानखण्डे 'नल्व-गव्यूति' लक्षणान्युक्तानि। तथा हि—

'जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः। प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते॥
त्रसरेणुस्तु विज्ञेयो अष्टौ ये परमाणवः। त्रसरेणवस्तु ते अष्टौ रथरेणुस्तु स स्मृतः॥
रथरेणवस्तु ते अष्टौ बालाग्रं तत्स्मृतं बुधैः। बालाग्राण्यष्ट लिक्षा तु यूका लिक्षाष्टकं बुधैः॥
अष्टौ यूका यवं प्राहुरङ्गुलं तु यवाष्टकम्। द्वादशाङ्गुलमात्रा वै वितस्तिस्तु प्रकीर्तिता॥
अङ्गुष्ठस्य प्रदेशिन्या व्यासः प्रादेश उच्यते। तालः स्मृतो मध्यमया गोकर्णश्चाप्यनामया॥
कनिष्ठया वितस्तिस्तु द्वादशाङ्गुलिका स्मृता। रत्निरङ्गुलपर्वाणि विज्ञेयस्त्वेकविंशतिः॥
चत्वारि विंशतिश्चैव हस्तः स्यादङ्गुलानि तु।
किष्कुः स्मृतो द्विरत्निस्तु द्विचत्वारिंशदङ्गुलः॥
षण्णवत्यङ्गुलैश्चैव धनुर्दण्डः प्रकीर्तितः। धनुर्दण्डयुगं नाडिर्ज्ञेयो ते पवाङ्गुलैः॥
धनुषा त्रिशता नल्वमाहुः संख्याविदो जनाः। धनुः सहस्रे द्वे चापि गव्यूतिरुपदिश्यते॥
अष्टौ धनुःसहस्राणि योजनं तु प्रकीर्तितम्॥

मार्कण्डेयपुराणे—

'परमाणुः परं सूक्ष्मं त्रसरेणुर्महीरजः। बालाग्रं चैव लिक्षा च यूका चाथ यवोऽङ्गुलम्॥

क्रमादष्टगुणान्याहुर्यवा अष्टौ ततोऽङ्गुलम् ।
षडङ्गुलं पदं प्राहुर्वितस्तिर्द्विगुणं स्मृतम् ॥
द्वे वितस्ती ततो हस्तो ब्रह्मतीर्थं द्विचेष्टनैः ।
चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो नालिका तद्युगेन तु ॥
क्रोशो धनुस्सहस्रे द्वे गव्यूतिश्च चतुर्गुणा ।
द्विगुणं योजनं तस्मात्प्रोक्तं संख्यानकोविदैः ॥

इति हेमाद्रौ दानखण्डे १३१–१३२ तमे पृष्ठे ॥

पर्वतः (२।३।१)—अथ प्रसङ्गाद्गरुडपुराणोक्तसप्तकुलपर्वतानां नामान्युल्लिख्यन्ते । तथा हि—

त्रिकोणे संस्थितो मेरुरधः कोणे च मंदरः ।
दक्षकोणे च कैलासो वामकोणे हिमाचलः ॥
निषधश्चोर्ध्वरेखायां दक्षायां गन्धमादनः ।
रमणो वामरेखायां सप्तैते कुलपर्वताः ॥

इति गरुडपुराणे १५ अ० ६०–६१ श्लो० ॥

यमः (२।७।४८)—अत्रिस्मृतौ तु यमा दश उक्ताः । तथा हि—
'आनृशंस्यं क्षमा सत्यमहिंसादानमार्जवम् ।
प्रीतिः प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश' ॥ इति अत्रिस्मृतिः १।४८ ॥

नियमाः (२।७।४९) अत्रिस्मृतौ नियमा दशसंख्यका उक्ताः । तथा हि—
'शौचमिज्या तपो दानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रहौ ।
व्रतमौनोपवासं च स्नानं च नियमा दश' ॥ इति अत्रिस्मृतिः १।४९ ॥

दुर्गः (२।८।१७)—दुर्गस्य नवधात्वं शुक्रनीतावुक्तमत्र प्रोच्यते, तथा हि—

'षष्ठं दुर्गप्रकरणं प्रवक्ष्यामि समासतः ।
खातकण्टकपाषाणैर्दुष्पथं दुर्गमैरिणम् ॥
परितस्तु महाखातं पारिखं दुर्गमेव तत् ।
इष्टकोपलमृद्भित्तिप्राकारं पारिघं स्मृतम् ॥
महाकण्टकवृक्षौघैर्व्याप्तं तद्वनदुर्गमम् ।
जलाभावस्तु परितो धन्वदुर्गं प्रकीर्तितम् ॥

जलदुर्गं स्मृतं तज्ज्ञैरासमन्तान्महाजलम् ।
सुवारिपृष्ठोच्चतरं विविक्ते गिरिदुर्गमम् ॥
अभेद्यं व्यूहविद्वीरव्याप्तं तत्सैन्यदुर्गमम् ।
सहायदुर्गं तज्ज्ञेयं शूरानुकूलबान्धवम्' ॥

एतेषु किमपेक्षया कस्य श्रेष्ठत्वमित्यपि तत्रैव—

'पारिखादैरिणं श्रेष्ठं पारिघं तु ततो वनम् ।
ततो धन्वं जलं तस्माद्गिरिदुर्गं ततः स्मृतम् ॥
सहायसैन्यदुर्गे तु सर्वदुर्गप्रसाधके ।
ताभ्यां विनाऽन्यदुर्गाणि निष्फलानि महीभुजाम् ॥

श्रेष्ठं तु सर्वदुर्गेभ्यः सेनादुर्गं स्मृतं बुधैः' ॥ इति शुक्रनीतिः ४।६।१–८ ॥

राज्याङ्गानि (२।८।१८)—शुक्रनीत्यां सप्त राज्याङ्गान्युक्तानि । तथा हि–

'स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।
सप्ताङ्गमुच्यते राज्यं तत्र मूर्द्धा नृपः स्मृतः ॥
दृगमात्यः सुहृच्छ्रोत्रं मुखं कोशो बलं मनः ।
हस्तौ पादौ दुर्गराष्ट्रौ राज्याङ्गानि स्मृतानि हि' ॥

इति शुक्रनीतिः १।६१–६२ ॥

गतयोऽमूः पञ्च (२।८।४९)—शुक्रनीत्यामश्वस्यैकादश गतय उक्ता-स्तथा हि—

'चकितं रेचितं वल्गितकं धौरितमाप्लुतम् ।
तुरं मन्दं च कुटिलं सर्पणं परिवर्तनम् ॥

एकेदशास्कन्दितञ्च' । इति शुक्रनीतिः २।१३४–१३५ ॥

लोकः (३।३।२)—'भुवनार्थक लोक' शब्दस्य गरुडपुराणे सप्त भेदा उक्तास्तथा हि—

'......सप्त लोकाः प्रकीर्तिताः ॥

भूर्लोकं नाभिमध्ये तु भुवर्लोकं तदूर्ध्वके । स्वर्लोकं हृदये विद्यात्कण्ठदेशे महस्तथा ॥ जनलोकं वक्त्रदेशे तपोलोकं ललाटके । सत्यलोकं ब्रह्मरन्ध्रे—'

इति गरुडपुराणे ११५ । ५७—५९ ॥

'भूर्भुवः स्वर्भेदेन त्रय एव लोका' इत्यपि परे ।

प्रमाणम् (३।२।५४)—मतभेदेन 'प्रमाण'स्य संख्यात्वेऽनेकमतम् । तथा हि—

'प्रत्यक्षमेके चार्वाकाः, [1]कणाद[2]सुगतौ पुनः ।
प्रत्यक्षमनुमानञ्च, साङ्ख्याः शब्दं च [3]ते अपि ॥
[4]न्यायैकदेशिनोऽप्येवमुपमानं च [5]केचन ।
अर्थापत्त्या सहैतानि चत्वार्याह प्रभाकरः ॥
अभावषष्ठान्येतानि [6]भाट्टा वेदान्तिनस्तथा ।
सम्भवैतिह्ययुक्तानि तानि पौराणिका जगुः' ॥ इति ॥

तलम् (३।३।२०२)—अधोऽर्थक 'तल' शब्दस्य गरुडपुराणे सप्त भेदा उक्तास्ते यथा—

'पादाधस्तात्तलं ज्ञेयं पादोर्ध्वं वितलं तथा ।
जानुनोः सुतलं विद्धि सक्थिदेशे महातलम् ॥
तलातलं सक्थिमूले गुह्यदेशे रसातलम् ।
पातालं कटिसंस्थं च—' इति गरुडपुराणे १५।५६—५७ ॥

अग्निपुराणे सप्त तलान्युक्तानि । तथा हि—

अतलं वितलं चैव नितलं च गभस्तिमत् । महाख्यं सुतलं चैव पातालं चापि सप्तमम् ॥

प्रसङ्गतस्तत्रत्यभूमिवर्णान्यप्युच्यन्ते—

कृष्णपीतारुणाः शुक्लशर्कराः शैलकाञ्चनाः । भूमयस्तेषु रम्येषु—

इति अग्निपुराणम् १२०।१-३ ॥

कला (३।३।१९८)—चतुष्षष्टिः कलाः शैवतन्त्रोक्ता यथा-'गीतम् १, वाद्यम् २, नृत्यम् ३, नाट्यम् ४, आलेख्यम् ५, विशेषकच्छेद्यम् ६, तण्डुलकुसुमबलिप्रकाराः ७, पुष्पास्तरणम् ८, दशनवसनाङ्गरागाः ९, मणिभूमिकाकर्म १०, शयनरचनम् ११, उदकवाद्यमुदकघातः १२, चित्रयोगाः १३, माल्यग्रन्थविकल्पाः १४, शेखरापीडयोजनम् १५, नेपथ्ययोगाः १६, कर्णपत्रभङ्गाः १७, सुगन्धियुक्तिः १८,

---

१. वैशेषिकः । २. बुद्धः । ३. प्रत्यक्षानुमाने ।
४. न्यायसारस्य भूषणाख्यटीकाकारः । ५. अन्ये नैयायिकाः ।
६. कुमारिलभट्टानुयायिनः ।

भूषणयोजनम् १९, ऐन्द्रजालम् २०, कौचुमारयोगाः २१, हस्तलाघवम् २२, चित्रशाकापूपभक्ष्यविकारक्रियाः २३, पानकरसरागासवयोजनम् २४, सूचीवायकर्म २५, सूत्रक्रीडा २६, वीणाडमरुकवाद्यानि २७, प्रहेलिका २८, प्रतिमाला २९, दुर्वचकयोगाः ३०, पुस्तकवाचनम् ३१, नाटकाख्यायिकादर्शनम् ३२, काव्यसमस्यापूरणम् ३३, पत्रिकावेत्रबाणविकल्पाः ३४, तर्ककर्माणि ३५, तक्षणम् ३६, वास्तुविद्या ३७, रूप्यरत्नपरीक्षा ३८, धातुवादः ३९, मणिरागज्ञानम् ४०, आकरज्ञानम् ४१, वृक्षायुर्वेदयोगाः ४२, मेषकुक्कुटलावकयोगविधिः ४३, शुकशारिकाप्रलापनम् ४४, उत्सादनम् ४५, केशमार्जनकौशलम् ४६, अक्षरमुष्टिकाकथनम् ४७, म्लेच्छितकविकल्पाः ४८, देशभाषाज्ञानम् ४९, पुष्पशकटिकानिर्मितिज्ञानम् ५०, यन्त्रमातृकाधारणमातृका ५१, संवाच्यम् ५२, मानसकाव्यक्रिया ५३, अभिधानकोशः ५४, छन्दोज्ञानम् ५५, क्रियाविकल्पाः ५६, छलितकयोगाः ५७, वस्त्रगोपनानि ५८, द्यूतविशेषः ५९, आकर्षक्रीडा ६०, बालक्रीडनकानि ६१, वैनायिकीनाम् ६२, वैजयिकीनाम् ६३, वैतालिकानाञ्च विद्यानां ज्ञानम् ६४, इति (श्रीमद्भागवते दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे अध्यायः ४५ श्लो० ३६ तमस्य 'श्रीधरी' व्याख्या ।।

शुक्रनीतौ तु एतद्भिन्ना एव कला उक्ताः । तथाहि—शुक्रनीत्युक्ताश्चतुःषष्टिः कला यथा—

कलानां तु पृथङ्नाम लक्ष्म चास्तीह केवलम् ।
पृथक् पृथक् क्रियाभिर्हि कलाभेदस्तु जायते ।
यां यां कलां समाश्रित्य तन्नाम्ना जातिरुच्यते ।।
हावभावादिसंयुक्तं नर्तनं तु कला स्मृता ।
अनेकवाद्यकरणे ज्ञानं तद्वादने कला ॥
वस्त्रालङ्कारसन्धानं स्त्रीपुंसोश्च कला स्मृता ।
अनेकरूपाविर्भावकृतिज्ञानं कला स्मृता ॥
शय्यास्तरणसंयोगपुष्पादिग्रन्थनं कला ।
द्यूताद्यनेकक्रीडाभी रञ्जनन्तु कला स्मृता ।।
अनेकासनसन्धानै रतेर्ज्ञानं कला स्मृता ।
कलासप्तकमेतद्धि गान्धर्वे समुदाहृतम् ॥
मकरन्दासवादीनां मद्यादीनां कृतिः कला ।

शल्यगूढाहृतौ ज्ञानं शिराव्रणव्यधे कला ॥
हिङ्ग्वादिरससंयोगादन्नादिपचनं कला ।
वृक्षादिप्रसवारोपपालनादिकृतिः कला ॥
पाषाणधात्वादिदृतिस्तद्भस्मीकरणं कला ।
यावदिक्षुविकाराणां कृतिज्ञानं कला स्मृता ॥
धात्वौषधीनां संयोगक्रियाज्ञानं कला स्मृता ।
धातुसाङ्कर्यपार्थक्यकरणन्तु कला स्मृता ॥
संयोगपूर्वविज्ञानं धात्वादीनां कला स्मृता ।
क्षारनिष्कासनज्ञानं कलासंज्ञं तु तत्स्मृतम् ॥
कलादशकमेतद्धि ह्यायुर्वेदागमेषु च ।
शस्त्रसन्धानविक्षेपः पादादिन्यासतः कला ॥
सन्ध्याघाताकृष्टिभेदैर्मल्लयुद्धं कला स्मृता ।
बाहुयुद्धं तु मल्लानामशस्त्रं मुष्टिभिः स्मृतम् ॥
मृतस्य तस्य न स्वर्गो यशो नेहापि विद्यते ।
बलदर्पं विना शान्तं नियुद्धं यशसे रिपोः ॥
न कस्यासिद्धिं कुर्याद्धि प्राणान्तं बाहुयुद्धकम् ।
कृतप्रकृतकैश्चित्रैर्बाहुभिश्च सुघट्टैः ॥
सन्निपातावपातैश्च प्रमादोन्मथनैस्तथा ।
कृतं निपीडनं ज्ञेयं तन्मुक्तिस्तु प्रतिक्रिया ॥
कलाभिलक्षिते देशे यन्त्राद्यस्त्रनिपातनम् ।
वाद्यसंकेततो व्यूहरचनादि कला स्मृता ॥
गजाश्वरथगत्या तु युद्धसंयोजनं कला ।
कलापञ्चकमेतद्धि धनुर्वेदागमे स्थितम् ॥
विविधासनमुद्राभिर्देवतातोषणं कला ।
सारथ्यं च गजाश्वादेर्गतिशिक्षा कला स्मृता ॥
मृत्तिकाकाष्ठपाषाणधातुभाण्डादिसत्क्रिया ।
पृथक्कलाचतुष्कं तु चित्राद्यालेखनं कला ॥
तडागवापीप्रासादसमभूमिक्रिया कला ।

घट्याद्यनेकयन्त्राणां वाद्यानां तु कृतिः कला ॥
हीनमध्यादिसंयोगवर्णाद्यै रञ्जनं कला ।
जलवाय्वग्निसंयोगनिरोधैश्च क्रिया कला ॥
नौकारथादियानानां कृतिज्ञानं कला स्मृता ।
सूत्रादिरज्जुकरणविज्ञानन्तु कला स्मृता ॥
अनेकतन्तुसंयोगैः पटबन्धः कला स्मृता ।
वेधादिसदसज्ज्ञानं रत्नानां च कला स्मृता ॥
स्वर्णादीनां तु याथात्म्यविज्ञानञ्च कला स्मृता ।
कृत्रिमस्वर्णरत्नादिक्रियाज्ञानं कला स्मृता ॥
स्वर्णाद्यलङ्कारकृतिः कला लेपादिसत्कृतिः ।
मार्दवादिक्रियाज्ञानं चर्मणां तु कला स्मृता ॥
पशुचर्माङ्गनिर्हारक्रियाज्ञानं कला स्मृता ।
दुग्धदोहादिविज्ञानं घृतान्तं तु कला स्मृता ॥
सीवने कञ्चुकादीनां विज्ञानन्तु कलात्मकम् ।
बाह्वादिभिश्च तरणं कलासंज्ञं जले स्मृतम् ॥
मार्जने गृहभाण्डादेर्विज्ञानं तु कला स्मृता ।
वस्त्रसंमार्ज्जनं चैव क्षुरकर्मकले ह्युभे ॥
तिलमांसादिस्नेहानां कला निष्कासने कृतिः ।
सीराद्याकर्षणे ज्ञानं वृक्षाद्यारोहणे कला ॥
मनोनुकूलसेवायाः कृतिज्ञानं कला स्मृता ।
वेणुतृणादिपात्राणां कृतिज्ञानं कला स्मृता ॥
काचपात्रादिकरणविज्ञानं तु कला स्मृता ।
संसेचनं संहरणं जलानां तु कला स्मृता ॥
लोहाभिसारशस्त्रास्त्रकृतिज्ञानं कला स्मृता ।
गजाश्ववृषभोष्ट्राणां पल्याणादिक्रिया कला ॥
शिशोः संरक्षणे ज्ञानं धारणे क्रीडने कला ।
सुयुक्तताडनज्ञानमपराधिजने कला ॥
नानादेशीयवर्णानां सुसम्यग्लेखने कला ।

ताम्बूलरक्षादिकृतिर्विज्ञानं तु कला स्मृता ॥
आदानमाशुकारित्वं प्रतिदानं चिरक्रिया ।
कलासु द्वौ गुणौ ज्ञेयौ द्वे कले परिकीर्तिते ॥
चतुष्षष्टिः कला ह्येताः संक्षेपेण निदर्शिताः' ।

इति शुक्रनीतिः अध्यायः ४ प्रकरणम् ३ श्लोकाः ॥ ६५-९९ ॥

आचार्यास्तु कन्यकानां—(कामसूत्र १।१।१५) इति कामसूत्रीय 'जयमङ्गला' व्याख्योक्ताश्चतुष्षष्टिः कलास्तु भिन्ना एव । तत्रैवं जयमङ्गला—'शास्त्रान्तरे चतुष्षष्टिर्मूलकला उक्ताः, तत्र **कर्माश्रयाश्चतुर्विंशतिः** । तद्यथा—गीतम् १, नृत्यम् २, वाद्यम् ३, कौशललिपिज्ञानम् ४, वचनं चोदाहरणम् ५, चित्रविधिः ६, पुस्तकम् ७, पत्रच्छेद्यम् ८, माल्यविधिः ९, गन्धयुक्त्यास्वाद्यविधानम् १०, रत्नपरीक्षा ११, सीवनम् १२, रङ्गपरिज्ञानम् १३, उपकरणक्रिया १४, मानविधिः १५, आजीवज्ञानम् १६, तिर्यग्योनिचिकित्सितम् १७, मायाकृतपाषण्डसमयज्ञानम् १८, क्रीडाकौशलम् १९, लोकज्ञानम् २०, वैचक्षण्यम् २१, संवाहनम् २२, शरीरसंस्कारः २३, विशेषकौशलम् २४, चेति । **द्यूताश्रया विंशतिः**–तत्र **निर्जीवाः पञ्चदश,** तद्यथा—आयुःप्राप्तिः २५, अक्षविधानम् २६, रूपसंख्या २७, क्रियामार्गणम् २८, बीजग्रहणम् २९, नयज्ञानम् ३० करणज्ञानम् ३१ चित्राचित्रविधिः ३२ गूढराशिः ३३, तुल्याभिहारः ३४, क्षिप्रग्रहणम् ३५, अनुप्राप्तिलेखस्मृतिः ३६, अग्निक्रमः ३७, छलव्यामोहनम् ३८, ग्रहादानम् ३९, चेति । **सजीवाः पञ्च,** तद्यथा—उपस्थानविधिः ४०, युद्धम् ४१, रुतम् ४२, गतम् ४३, नृत्तम् ४४ चेति । **शयनोपचारिकाः षोडश,** तद्यथा—पुरुषस्यभावग्रहणम् ४५, स्वरागप्रकाशनम् ४६, प्रत्यङ्गदानम् ४७, नखदन्तयोर्विचारो ४८, नीवीस्रंसनम् ४९, गुह्यस्य संस्पर्शनानुलोम्यम् ५०, परमार्थकौशलम् ५१, हर्षणम् ५२, समानार्थताकृतार्थता ५३, अनुप्रोत्साहनम् ५४, मृदुक्रोधप्रवर्तनम् ५५, सम्यक्क्रोधनिवर्तनम् ५६ क्रुद्धप्रसादनम् ५७, सुप्तपरित्यागः ५८, चरमस्वापविधिः ५९, गुह्यगूहनम् ६०, इति । **चतस्र उत्तरकलाः,** तद्यथा—साश्रुपातं रमणाय शापदानम् ६१, शपथक्रिया ६२, प्रस्थितानुगमनम् ६३, पुनःपुनर्निरीक्षणम् ६४, चेति चतुःषष्टिर्मूलकलाः । आस्वेव निविष्टानामवान्तरकलानामष्टादशाधिकानि पञ्चशतान्युक्तानि । तत्र कर्मद्यूताश्रयाः प्रायश आबालं गच्छन्ति, ता एवान्यथा

विभज्य चतुष्षष्टिरङ्गोक्ताः, यास्तु शयनोपचारिका उत्तरकलाश्च, ताः प्रायशस्तन्त्रस्याङ्गतां प्रतिपद्यन्त इति पाञ्चालिक्यामेव चतुःषष्ट्यामवान्तरकला वेदितव्याः, ताश्च यथाप्रस्तावं वक्ष्यन्ते' इति ॥

तन्त्रावापौपयिकीं चतुष्षष्टिमाह—'गीतम् १, वाद्यम् २, नृत्यम् ३, आलेख्यम् ४, विशेषकच्छेद्यम् ५, तण्डुलकुसुमबलिविकाराः ६, पुष्पास्तरणम् ७ दशनवसनाङ्गरागः ८, मणिभूमिकाकर्म, ९, शयनरचनम् १०, उदकवाद्यम् ११, उदकाघातः १२, चित्राश्च योगाः १३, माल्यग्रन्थनविकल्पाः १४, शेखरकापीडयोजनम् १५, नेपथ्यप्रयोगाः १६, कर्णपत्रभङ्गाः १७, गन्धयुक्तिः १८, भूषणयोजनम् १९, ऐन्द्रजालाः २०, कौचुमाराश्च योगाः २१, हस्तलाघवम् २२, विचित्रशाकयूपभक्ष्यविकारक्रिया २३, पानकरसरागासवयोजनम् २४, सूचीवायकर्माणि २५, सूत्रक्रीडा २६, वीणाडमरुकवाद्यानि २७, प्रहेलिका २८, प्रतिमाला २९, दुर्वाचकयोगाः ३०, पुस्तकवाचनम् ३१, नाटकाख्यायिकादर्शनम् ३२, काव्यसमस्यापूरणम् ३३, पट्टिकावेत्रवानविकल्पाः ३४, तक्षकर्माणि ३५, तक्षणम् ३६, वास्तुविद्या ३७, रूप्यरत्नपरीक्षा ३८, धातुवादः ३९, मणिरागाकरज्ञानम् ४०, वृक्षायुर्वेदयोगाः ४१, मेषकुक्कुटलावकयुद्धविधिः ४२, शुकसारिकाप्रलापनम् ४३, उत्सादने संवाहने केशमर्दने च कौशलम् ४४, अक्षरमुष्टिकाकथनम् ४५, म्लेच्छितविकल्पाः ४६, देशभाषाज्ञानम् ४७, पुष्पशकटिका ४८, निमित्तज्ञानम् ४९, यन्त्रमातृका ५०, धारणमातृका ५१, संपाठ्यम् , ५२, मानसी काव्यक्रिया, ५३, अभिधानकोषः ५४, छन्दोज्ञानम् ५५, क्रियाकल्पः ५६, छलितकयोगाः ५७, वस्त्रगोपनानि ५८, द्यूतविशेषः ५९, आकर्षक्रीडा ६०, बालक्रीडनकानि ६१, वैनायिकीनां ६२, वैजयिकीनां ६३, व्यायामिकीनां च विद्यानां ज्ञानम् ६४, इति चतुःषष्टिरङ्गविद्याः कामसूत्रावयविनः इति कामसूत्रम् १।३।१६) ॥

इति परिशिष्टम् ।

मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका

ख

शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.	शब्दाः	का.	व.	श्लो.
पृथक्	३	४	३	पेटक	२	१०	२९	प्याट्	३	४	७
पृथक्पर्णी	२	४	९२	पेटा	२	१०	२९	प्रकाण्ड	१	४	२७
पृथगात्मता	१	४	३१	पेटी	३	५	४२	,,	२	४	१०
पृथग्जन	२	१०	१६	पेलव	३	१	६६	प्रकाम	२	९	५७
,,	३	३	१०५	पेशल	२	१०	१९	प्रकार	३	३	१६३
पृथग्विध	३	१	९३	,,	३	३	२०५	प्रकाश	१	३	३४
पृथिवी	२	१	३	पेशिन्	२	५	३७	,,	३	३	२१८
पृथु	२	९	३७	पैठर	२	९	४५	प्रकीर्णक	२	८	३१
,,	२	९	४०	पैतृष्वसेय	२	६	२५	प्रकीर्य	२	४	४८
,,	३	१	६०	पैतृष्वस्रीय	२	६	२५	प्रकृति	१	४	२९
पृथुक	२	५	३८	पैत्र (अहोरात्र)	१	४	२१	,,	१	७	३७
,,	२	९	४७	पोटगल	२	४	१६२	,,	२	८	१८
,,	३	३	३	,,	२	४	१६३	,,	३	३	७३
पृथुरोमन्	१	१०	१७	पोटा	२	६	१५	प्रकोष्ठ	२	६	८०
पृथुल	३	१	६०	पोत	२	५	३८	प्रक्रम	३	२	२६
पृथ्वी	२	१	३	,,	३	३	६०	प्रक्रिया	२	८	३१
,,	२	९	३७	पोतवणिज्	१	१०	१२	प्रक्वण	१	६	२५
,,	२	२	४०	पोतवाह	१	१०	१२	प्रक्वाण	१	६	२५
पृथ्वीका	२	४	१२५	पोताधान	१	१०	१९	प्रक्ष्वेडन	२	८	८७
पृदाकु	१	८	६	पौत्र	३	३	१८१	प्रगण्ड	२	६	८०
पृश्नि	२	६	४८	पोत्रिन्	२	५	२	प्रगतजानुक	२	६	४७
पृश्निपर्णी	२	४	९२	पौण्डर्य	२	४	१२७	प्रगल्भ	३	१	२५
पृषत	१	१०	६	पौत्री	२	६	२९	प्रगाढ	३	३	२४४
पृषत	१	१०	६	पौर	२	४	१६६	प्रगुण	३	१	७२
,,	२	५	१०	पौरस्त्य	३	१	८०	प्रगे	३	४	१९
पृषत्क	२	८	८६	पौरुष	२	६	८७	प्रग्रह	२	८	११९
पृषदश्व	१	१	६२	,,	३	३	२२३	,,	३	३	२३७
पृषदाज्य	२	७	२४	पौरोगव	२	९	२७	प्रग्राह	३	३	२३७
पृष्ठ	२	६	७८	पौर्णमास	२	७	४८	प्रग्रीव	३	५	३५
पृष्ठ्य	२	८	४६	पौर्णमासी	१	४	७	प्रघण	२	२	१२
,,	३	२	४१	पौलस्त्य	१	१	६९	प्रघाण	२	२	१२
पेचक	२	५	१५	पौलि	२	९	४७	प्रचक्र	२	८	९६
,,	३	३	६	पौष	१	४	१५	प्रचलायित	३	१	३२

इत्यमरकोषमूलस्थशब्दानामकारादिशब्दानुक्रमणिका समाप्ता ॥

अमरकोष-क्षेपकटीकास्थ-शब्दानामकारादिक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका

इत्यमरकोषक्षेपक-मूलस्थशब्दानामकाराद्यनुक्रमणिका समाप्ता ।